श्रीः ।

चक्रदत्तनामकमहावैद्यप्रणीतः

चक्रदत्तः ।

पदार्थबोधिन्याख्यया भाषाटीकया सहितः ।

अस्येदं

वेरीनिवासिपण्डितराजवैद्यरविदत्तशास्त्रिद्वारा भाषांतरं कारयित्वा

अन्यविद्वद्वरैः संशोध्य च

गौडकुलावतंसेन

श्रीयुतभगीरथात्मजेन हरिप्रसादशर्मणा

मुम्बय्यां

निर्णयसागराख्यमुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीतः ।

शकाब्दाः १८१५ संवत् १९५०.

प्रस्तावना.

विदित हो कि लोकोंमें सब शास्त्रोंसे वैद्यकशास्त्र अत्यंत उपयुक्त व श्रेष्ठ है. क्योंकि जो यह मनुष्यशरीर है सो अतिदुर्लभ ८४ लक्ष योनियोंमें कालगतिके क्षणक्षणमें भ्रमण करनेवाले कालचक्रके वशसे पापपुण्योंकी समानतासे प्राप्त होता है. और इस शरीरसे चाहै धर्म, अर्थ, काम और मोक्षभी प्रयाससे प्राप्त होवैंगे ऐसा अधिकार है; परंतु शरीर तौ जन्मसे लेकर बूढेपनेपर्यंत नित्यही अनेकविध रोगोंसे जर्जर होता रहता है. और अनेकविध पीड़ाओंसे क्षणमात्रभी सुख नहीं होता इससे कुछ कार्य करनेकूं असमर्थ ऐसा केवल दुःख पाता है. शरीरकी स्वस्थता तौ वैद्यकशास्त्रविना और वैद्यविना नहीं होती, इसवास्ते शारीरक विषयमें प्राचीनमुनियोंनें अष्टांगहृदयादि अनेक ग्रंथ रचे हैं. तथापि उन्होंकी भाषा बहुत कठिन है, सब वैद्योंको मालूम नहीं पड़ती. जो संस्कृतमें बड़े विद्वान् हैं वेही जानते हैं. और दूसरा कारण यह है कि चरकादि ग्रंथ प्राचीन हैं. प्राचीन कालमें मनुष्योंकी शरीरस्थिति, प्रकृति, आयुर्दाय, आहार इत्यादि जो था उसमें अब परिक्षीण कालवशसे बहुत अंतर पड़ रहा है, इसवास्ते प्राचीन ग्रंथोंमें जो रसायन, मात्रा, आसव, चूर्ण, कषाय, लेप इत्यादिकोंका मात्रा प्रमाणादि मान जितना लिखा है तितनाही आजकल क्षीणशक्तिवाले मनुष्य होनेसे उन्होंको उपयुक्त नहीं होसकता, प्रकृतिके अनुसार न्यून अधिक होना चाहिये, यह विचार इस चक्रदत्त ग्रंथमें ग्रंथकारनें योग्य रीतिसे किया है. उसमें लिखा है कीः—

चरकादौ पुरा प्रोक्ता बस्तयो ये सहस्रशः ।
न तेऽत्र संगृहीताः स्युः पुंसां प्रकृतिमानतः ॥

अर्थ—चरकादि ग्रंथोंमें जो हजारहां बस्ति और आदिशब्दसे निरूह आदि लिखे हैं तिन्होंका इस ग्रंथमें पुरुषोंके प्रकृतिमान देखकर संग्रह नहीं किया अर्थात् जो उपयुक्त थे उन्होंकाही संग्रह किया है. तात्पर्य यह है कि, यह ग्रंथ अत्यंत उपयुक्त और विद्वन्मान्य है. इस ग्रंथमें ज्वराधिकारसे लेकर अंतपर्यंत ७९ अधिकार हैं. उन प्रत्येक अधिकारोंमें तिस तिस रोगपर अनेकविध उपाय कहे हैं. कितनेक अधिकारोंमें मात्रा आदि बनानेके वख्त सिद्ध मंत्रभी रक्खे हैं. तथा बालकोंको पहले महीनेसे एक बरसपर्यंत और पीछेही होनेवाले अपस्मारादि रोगोंमें बालग्रहशांतिमंत्र, ग्रहपीड़ाशांतिमंत्र, सुखप्रसूतिमंत्र इत्यादि अच्छेप्रकारसे लिखे हैं, वह सूचीपत्रमें देखनेसे मालूम पड़ेंगे. इसकी भाषाटीका होवै तो लोगोंपर बहुत उपकार होजावै ऐसा मेरे विद्वान् मित्रोंनें बहुत दिनोंसे कहा था सो मनमें रखकर मैंनें अब इस ग्रंथका सुलभ भाषानुवाद वेरीनिवासि पंडित राजवैद्य रविदत्तशास्त्रीसे करवायके और दूसरे पंडितोंके द्वारा शुद्ध करवायके प्रसिद्ध निर्णयसागर छापखानेमें सुंदर टायपके अक्षरोंसे ग्लेज कागजपर छापकर तय्यार किया है. इसकी सुलभता और सुंदरपना पुस्तक देखनेसे मालूम पड़ेगी. ऐसा यह सर्वोपयुक्त पुस्तक जो संग्रहमें रक्खा जावै तो सर्व विद्वान् तथा साधारण मनुष्योंकाभी बहुतही उपयोग होवैगा इसमें संशय नहीं. अब विद्वान् गुणग्राही महाशयोंके प्रति मेरे परिश्रमको देखकर इस ग्रंथका आदर करना ऐसी सविनय प्रार्थना है.

हरिप्रसाद भगीरथजी,
कालकादेवीरोड़, रामवाड़ी, मुंबई.

चक्रदत्तविषयानुक्रमः ।

ज्वराधिकारः १

ज्वरातीसाराधिकारः २

अतीसाराधिकारः ३

ग्रहण्यधिकारः ४

अर्शोऽधिकारः ५

अग्निमांद्याधिकारः ६

क्रिमिरोगाधिकारः ७

पांडुरोगाधिकारः ८

रक्तपित्ताधिकारः ९

राजयक्ष्माधिकारः १०

कासरोगाधिकारः ११

हिक्काश्वासाधिकारः १२

स्वरभेदाधिकारः १३

अरोचकाधिकारः १४

छर्द्यधिकारः १५

तृष्णाधिकारः १६

मूर्च्छाधिकारः १७

मदात्ययाधिकारः १८

श्रीः ।

चक्रदत्तनामकमहावैद्यप्रणीतः

चक्रदत्तः ।

पदार्थबोधिन्याख्यया भाषाटीकया सहितः ।

अस्येदं

वेरीनिवासिपण्डितराजवैद्यरविदत्तशास्त्रिद्वारा भाषांतरं कारयित्वा

अन्यविद्वद्वरैः संशोध्य च

गौडकुलावतंसेन

श्रीयुतभगीरथात्मजेन हरिप्रसादशर्मणा

मुम्बय्यां

निर्णयसागराख्यमुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीतः ।

शकाब्दाः १८१५ संवत् १९५०.

प्रस्तावना.

विदित हो कि लोकोंमें सब शास्त्रोंसे वैद्यकशास्त्र अत्यंत उपयुक्त व श्रेष्ठ है. क्योंकि जो यह मनुष्यशरीर है सो अतिदुर्लभ ८४ लक्ष योनियोंमें कालगतिके क्षणक्षणमें भ्रमण करनेवाले कालचक्रके वशसे पापपुण्योंकी समानतासे प्राप्त होता है. और इस शरीरसे चाहै धर्म, अर्थ, काम और मोक्षभी प्रयाससे प्राप्त होवैंगे ऐसा अधिकार है; परंतु शरीर तौ जन्मसे लेकर बूढ़ेपनेपर्यंत नित्यही अनेकविध रोगोंसे जर्जर होता रहता है. और अनेकविध पीड़ाओंसे क्षणमात्रभी सुख नहीं होता इससे कुछ कार्य करनेकूं असमर्थ ऐसा केवल दुःख पाता है. शरीरकी स्वस्थता तौ वैद्यकशास्त्रविना और वैद्यविना नहीं होती, इसवास्ते शारीरक विषयमें प्राचीनमुनियोंनें अष्टांगहृदयादि अनेक ग्रंथ रचे हैं. तथापि उन्होंकी भाषा बहुत कठिन है, सब वैद्योंको मालूम नहीं पड़ती. जो संस्कृतमें बड़े विद्वान् हैं वेही जानते हैं. और दूसरा कारण यह है कि चरकादि ग्रंथ प्राचीन हैं. प्राचीन कालमें मनुष्योंकी शरीरस्थिति, प्रकृति, आयुर्दाय, आहार इत्यादि जो था उसमें अब परिक्षीण कालवशसे बहुत अंतर पड़ रहा है, इसवास्ते प्राचीन ग्रंथोंमें जो रसायन, मात्रा, आसव, चूर्ण, कषाय, लेप इत्यादिकोंका मात्रा प्रमाणादि मान जितना लिखा है तितनाही आजकल क्षीणशक्तिवाले मनुष्य होनेसे उन्होंको उपयुक्त नहीं होसकता, प्रकृतिके अनुसार न्यून अधिक होना चाहिये, यह विचार इस चक्रदत्त ग्रंथमें ग्रंथकारनें योग्य रीतिसे किया है. उसमें लिखा है कीः—

चरकादौ पुरा प्रोक्ता बस्तयो ये सहस्रशः ।
न तेऽत्र संगृहीताः स्युः पुंसां प्रकृतिमानतः ॥

अर्थ—चरकादि ग्रंथोंमें जो हजारहां बस्ति और आदिशब्दसे निरूह आदि लिखे हैं तिन्होंका इस ग्रंथमें पुरुषोंके प्रकृतिमान देखकर संग्रह नहीं किया अर्थात् जो उपयुक्त थे उन्होंकाही संग्रह किया है. तात्पर्य यह है कि, यह ग्रंथ अत्यंत उपयुक्त और विद्वन्मान्य है. इस ग्रंथमें ज्वराधिकारसे लेकर अंतपर्यंत ७९ अधिकार हैं. उन प्रत्येक अधिकारोंमें तिस तिस रोगपर अनेकविध उपाय कहे हैं. कितनेक अधिकारोंमें मात्रा आदि बनानेके वख्त सिद्ध मंत्रभी रक्खे हैं. तथा बालकोंको पहले महीनेसे एक बरसपर्यंत और पीछेही होनेवाले अपस्मारादि रोगोंमें बालग्रहशांतिमंत्र, ग्रहपीड़ाशांतिमंत्र, सुखप्रसूतिमंत्र इत्यादि अच्छेप्रकारसे लिखे हैं, वह सूचीपत्रमें देखनेसे मालूम पड़ेंगे. इसकी भाषाटीका होवै तो लोगोंपर बहुत उपकार होजावै ऐसा मेरे विद्वान् मित्रोंनें बहुत दिनोंसे कहा था सो मनमें रखकर मैंनें अब इस ग्रंथका सुलभ भाषानुवाद वेरीनिवासि पंडित राजवैद्य रविदत्तशास्त्रीसे करवायके और दूसरे पंडितोंके द्वारा शुद्ध करवायके प्रसिद्ध निर्णयसागर छापखानेमें सुंदर टायपके अक्षरोंसे ग्लेज कागजपर छापकर तय्यार किया है. इसकी सुलभता और सुंदरपना पुस्तक देखनेसे मालूम पड़ेगी. ऐसा यह सर्वोपयुक्त पुस्तक जो संग्रहमें रक्खा जावै तो सर्व विद्वान् तथा साधारण मनुष्योंकाभी बहुतही उपयोग होवैगा इसमें संशय नहीं. अब विद्वान् गुणग्राही महाशयोंके प्रति मेरे परिश्रमको देखकर इस ग्रंथका आदर करना ऐसी सविनय प्रार्थना है.

हरिप्रसाद भगीरथजी,
कालकादेवीरोड, रामवाड़ी, मुंबई.

चक्रदत्तविषयानुक्रमः ।

ज्वराधिकारः १

ज्वरातीसाराधिकारः २

अतीसाराधिकारः ३

ग्रहण्यधिकारः ४

अर्शोऽधिकारः ५

अग्निमांद्याधिकारः ६

क्रिमिरोगाधिकारः ७

पांडुरोगाधिकारः ८

रक्तपित्ताधिकारः ९

शूलाधिकारः २६

परिणामशूलाधिकारः २७

उदावर्ताधिकारः २८

गुल्माधिकारः २९

हृद्रोगाधिकारः ३०

मूत्रकृच्छ्राधिकारः ३१

मूत्राघाताधिकारः ३२

नासारोगाधिकारः ५७

नेत्ररोगाधिकारः ५८

शिरोरोगाधिकारः ५९

असृग्दराधिकारः ६०

योनिव्यापदधिकारः ६१

स्त्रीरोगाधिकारः ६२

बालरोगाधिकारः ६३

विषाधिकारः ६४

श्रीः ।

चक्रदत्तः ।

भाषानुवादसमलंकृतः ।

ज्वराधिकारः १

(१) गुणत्रयविभेदेन मूर्तित्रयमुपेयुषे ।
त्रयीभुवे त्रिनेत्राय त्रिलोकीपतये नमः ॥ १ ॥
नानायुर्वेदविख्यातसद्योगैश्चक्रपाणिना ।
क्रियते संग्रहो गूढवाक्यबोधकवाक्यवान् ॥ २ ॥

श्रीमद्देवीपदद्वंद्वं प्रत्यूहव्यूहनाशनम् ।
तं नमामि नतिर्यस्य वितरत्युत्तमां मतिम् ॥
श्रीमद्गुरून् नमस्कृत्य रविदत्तेन धीमता ।
वैद्येन चक्रदत्तस्य भाषाटीका विरच्यते ॥

(१ मंगलम्) सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इन भेदोंकरके तीन मूर्तियोंकों धारण करनेवाले त्रिलोकीकों उत्पन्न करनेवाले और त्रिलोकीके स्वामी ऐसे महादेवजीकों प्रणाम है । चक्रपाणि वैद्य अनेक प्रकारके आयुर्वेदमें विख्यातरूप उत्तम योगोंकरके गूढ वाक्यकों प्रकट करनेमें समर्थरूप संग्रह अर्थात् ग्रंथकों करता है ।

(२) रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनन्तरमौषधम् ।
ततः कर्म भिषक् पश्चाज्ज्ञानपूर्वं समाचरेत् ॥३॥
नवज्वरे दिवास्वप्नस्नानाऽभ्यङ्गान्नमैथुनम् ।
क्रोधप्रवातव्यायामकषायांश्च विवर्जयेत् ॥ ४ ॥

(२ परिभाषा) आदिमें रोगकी परीक्षा पीछे ओषध और ज्ञानपूर्वक चिकित्साकर्मकों वैद्य करै । नवीनज्वरमें दिनका सोना तेल आदिका मलना अन्नका खाना स्त्रीसंग क्रोध ज्यादह पवन कसरत काढा इन सबकों वर्जित करै ।

(३) ज्वरे लङ्घनमेवादावुपदिष्टमृते ज्वरात् ।
क्षयाऽनिलभयक्रोधकामशोकश्रमोद्भवात् ॥ ५ ॥
आमाशयस्थो हत्वाग्निं सामो मार्गान्पिधापयन् ।
विदधाति ज्वरं दोषस्तस्माल्लङ्घनमाचरेत् ॥ ६ ॥
अनवस्थितदोषाग्नेर्लङ्घनं दोषपाचनम् ।
ज्वरघ्नं दीपनं काङ्क्षारुचिलाघवकारकम् ॥ ७ ॥
प्राणाविरोधिना चैनं लङ्घनेनोपपादयेत् ।
बलाधिष्ठानमारोग्यं यदर्थोऽयं क्रियाक्रमः ॥ ८ ॥

(३ लङ्घनाधिकारी) ज्वरविषै आदिमें लंघन कहाहै परंतु क्षय वात भय क्रोध काम शोक परिश्रम इन्होंसें उपजे ज्वरमें लंघन नहीं करना । आमसहित दोष आमाशयमें स्थित हो अग्निकों नष्ट कर और शरीरके द्वारोंकों आच्छादित कर ज्वरकों करताहै इस कारणसें इसमें लंघन करना अवश्य है । जिसकै अनवस्थित दोष और अग्नि हो उस पुरुषका लंघन दोषोंकों पकाताहै ज्वरकों नाशताहै अग्निकों प्रकाश करताहै और अन्नकी इच्छा रुचि शरीरका हलकापन इन्होंकों करताहै । प्राणोंकों दुःख नहीं होसकै ऐसे लंघन ज्वरवालाकों करावै बलका अधिष्ठान आरोग्य है जिसकेवास्ते यह क्रियाक्रम अर्थात् चिकित्सा है ।

(४) तत्तु मारुतक्षुत्तृष्णामुखशोषभ्रमान्विते ।
कार्यं न बाले वृद्धे वा न गर्भिण्यां न दुर्बले ॥९॥
वातमूत्रपुरीषाणां विसर्गे गात्रलाघवे ।
हृदयोद्गारकण्ठास्यशुद्धौ तन्द्राक्लमे गते ॥ १० ॥
स्वेदे जातेऽरुचौ चापि क्षुत्पिपासासहोदये ।
कृतं लङ्घनमादेश्यं निर्व्यथे चान्तरात्मनि ॥ ११ ॥
पर्वभेदोऽङ्गमर्दश्च कासः शोषो मुखस्य च ।
क्षुत्प्रणाशोऽरुचिस्तृष्णा दौर्बल्यं श्रोत्रनेत्रयोः १२
मनसः संभ्रमोऽभीक्ष्णमूर्ध्ववातस्तमो हृदि ।
देहाग्निबलहानिश्च लङ्घनेऽतिकृते भवेत् ॥१३॥

(४ लङ्घननिषेधः) वायु भूख तृषा मुखशोष भ्रम इन्होंसें युक्त हुये मनुष्य बालक वृद्ध गर्भिणी दुर्बल इन्होंकों लंघन नहीं कराना । अधोवायु मूत्र विष्ठा ये अच्छी तरह उतरैं शरीर हलका होवै हृदय ढकार कंठ मुख इन्होंकी शुद्धि होवै तंद्रा और ग्लानि नहीं रहै । पसीना उपजै रुचि उत्पन्न होवै भूख और प्यास साथ उपजै और अंतरात्मामें पीडा नहीं हो तबतक लंघन करना उचित है । संधियोंका टूटना अंगका मर्दन होना खांसी मुखका शोष भूखका नाश अरुचि तृषा कान और नेत्रोंमें दुर्बलपना मनका भ्रम वायुका अत्यंत उपरकों चलना हृदयमें अंधेरा देह अग्नि बल इन्होंका नाश ये सब लक्षण अत्यंत लंघन करनेमें उपजते हैं ।

(५) सद्योभुक्तस्य वा जाते ज्वरे सन्तर्पणोत्थिते ।
वमनं वमनार्हस्य शस्तमित्याह वाग्भटः ॥ १४ ॥
कफप्रधानानुत्क्लिष्टान्दोषानामाशयस्थितान् ।
बुद्ध्वा ज्वरकरान्काले वम्यानां वमनैर्हरेत् ॥१५॥
अनुपस्थितदोषाणां वमनं तरुणे ज्वरे ।
हृद्रोगं श्वासमानाहं मोहं च कुरुते भृशम् ॥ १६ ॥
तृष्यते सलिलं चोष्णं दद्याद्वातकफज्वरे ।
सद्योत्थे पैत्तिके चाथ शीतलं तिक्तकैः शृतम् १७
दीपनं पाचनं चैव ज्वरघ्नमुभयं च तत् ।
स्रोतसां शोधनं बल्यं रुचिस्वेदप्रदं शिवम् ॥१८॥

(५ वमनादि) तत्काल भोजन करनेवालाकों अथवा अच्छी तरह तृप्त होनेसें उपजे ज्वरवालाकों और वमन करनेके योग्य मनुष्यकों वमन कराना श्रेष्ठ है ऐसे वाग्भट कहाता है । कफ है प्रधान जिन्होंमें बढे हुये आमाशयमें स्थित और ज्वरकों करनेवाले ऐसे दोषोंकों जानकर समयपर वमनके योग्य मनुष्योंके दोषोंकों वमनसें हरै । अनुपस्थित अर्थात् नहीं निश्चय दोषवालोंके तरुण ज्वरमें वमन कराना हृद्रोग श्वास अफारा मोह इन्होंकों अत्यंत करता है । वातज्वरमें और कफज्वरमें तृषावाला मनुष्यके अर्थ गरम पानी देना तत्काल उपजे पित्तज्वरमें कडुवे ओषधोंसें पकाके शीतल किया पानी देना । यह दोनों प्रकारका पानी दीपन है पाचन है और ज्वरकों नाशता है स्रोतोंकों शोधता है बलकों करताहै रुचि और पसीनाकों देता है और हितकों करता है ।

(६) मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरैः ।
शृतशीतं जलं दद्यात्पिपासाज्वरशान्तये ॥ १९ ॥
मुख्यभेषजसम्बन्धो निषिद्धस्तरुणे ज्वरे ।
तोयपेयादिसंस्कारे निर्दोषं तेन भेषजम् ॥ २० ॥
यदप्सु शृतशीतासु षडङ्गादि प्रयुज्यते ।
कर्षमात्रं ततो दत्त्वा साधयेत्प्रास्थिकेऽम्भसि २१
अर्धशृतं प्रयोक्तव्यं पाने पेयादिसंविधौ ।
वमितं लङ्घितं काले यवागूभिरुपाचरेत् ॥ २२ ॥
यथास्वौषधसिद्धाभिर्मण्डपूर्वाभिरादितः ।
लाजपेयां सुखजरां पिप्पलीनागरैः शृताम्॥२३॥
पिबेज्ज्वरी ज्वरहरां क्षुद्वानल्पाग्निरादितः ।
पेयां वा रक्तशालीनां पार्श्वबस्तिशिरोरुजि ॥२४॥
श्वदंष्ट्राकण्टकारिभ्यां सिद्धां ज्वरहरां पिबेत् ।
कोष्ठे विबद्धे सरुचि पिबेत्पेयां शृतां ज्वरी॥२५॥
मृद्वीकापिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
पञ्चमूल्या लघीयस्या गुर्व्या ताभ्यां सधन्यया२६
कणया यूषपेयादि साधनं स्याद्यथाक्रमम् ।
वातपित्ते वातकफे त्रिदोषे श्लेष्मपित्तजे ॥ २७ ॥
यवागूः स्यात्त्रिदोषघ्नी व्याघ्रीदुस्पर्शगोक्षुरैः ।
कर्षार्धं वा कणाशुण्ठ्योः कल्कद्रव्यस्य वा पलम्२८
विनीय पाचयेद्युक्त्या वारिप्रस्थेन चापराम् ।
षडङ्गपरिभाषैव प्रायः पेयादिसंमता ॥ २९ ॥
यवागूमुचिताद्भक्ताच्चतुर्भागकृतां वदेत् ।

(६ षडङ्गपानीयम्) अथ षडंगपानी नागरमोथा पित्तपापडा खस लालचंदन नेत्रवाला सोंठ इन्होंमें पकाके शीतल किया पानी पिपासाज्वर अर्थात् तृषावाला ज्वरकों हरताहै तरुणज्वरमें मुख्य ओषध नहीं देना पानी और पेया-आदिके संस्कारमें ओषध दोषरहित होजाताहै । जो पकाके शीतल किये पानीकों ६४ तोलेभर ले उसमें एक तोला-भर षडंगपानी मिलाके पकानेमें आधाभाग बाकी रख पन्ना और पेयाआदि विषे प्रयुक्त करना वमनसें युक्त कियेकों और लंघनसें युक्त कियेकों समयपर यवागू अर्थात् गुडयाणी देनी । आदिमें मंडपूर्वक और यथायोग्य ओषधोंसें सिद्ध करी ऐसी लाजपेया अर्थात् धानकी खीलोंकी पेया बनाय तिसमें पीपल और सोंठ मिलाके पकावै यह सुखसें जरतीहै । और ज्वरकों हरतीहै इसकों मंदअग्निवाला ज्वररोगी आदिनें पीवै अथवा पसली बस्ति शिर

इन्होंमें शूल हो तो लाल चावलोंकी पेयाकों पीवै । गोखरू और कटेहलीसें सिद्ध करी पेयाकों पीवै यह ज्वरकों हरतीहै । मनुक्का पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंसें सिद्ध करी पेयाकों कोष्ठके बंधेमें और शूलके उपजनेमें ज्वरवाला पीवै । लघुपंचमूल बृहत्पंचमूल दशमूल धनियांसहित पीपल इन्होंकरके क्रमसें यूष और पेयाआदिकों सिद्ध करै । वातपित्त वातकफ त्रिदोष कफपित्त इन्होंमें कटेली धमासा गोखरू इन्होंसें सिद्ध करी यवागू अर्थात् गुड्याणी त्रिदोषकों हरतीहै । पीपल और सोंठ आधा कर्ष अथवा कल्कद्रव्य एक पल इन्होंकों चौंसठ तोलेभर पानीमें युक्तिसें पकानेसें दूसरी यवागू बनतीहै । प्रायताकरके पेयाआदिमें कलिंगपरिभाषा मानी है यथायोग्य उचित भोजनसें चार भाग करीं यवागूकों कहै ।

(७)सिक्थकै रहितो मण्डः पेया सिक्थसमन्विता
यवागूर्बहुसिक्था स्याद्विलेपी विरलद्रवा ।
अन्नं पञ्चगुणे साध्यं विलेपी तु चतुर्गुणे ॥ ३१ ॥
मण्डश्चतुर्दशगुणे यवागूः षड्गुणेऽम्भसि ।
पांशुधाने यथा वृष्टिः क्लेदयत्यतिकर्दमम् ॥३२ ॥
तथा श्लेष्मणि संवृद्धे यवागूः श्लेष्मवर्धिनी ।
गदात्यये मद्यनित्ये ग्रीष्मे पित्तकफाधिके ॥ ३३ ॥
ऊर्ध्वगे रक्तपित्ते च यवागूरहिता ज्वरे ।
तत्र तर्पणमेवाग्रे प्रदेयं लाजशक्तुभिः ॥ ३४ ॥

(७ यवागूविधिः) सिक्थ अर्थात् किनकोंसें रहित मंड होताहै और किनकोंसें सहित पेया होतीहै बहुतसे किनकोंवाली यवागू होतीहै अल्प द्रववाली विलेपी होतीहै । पांचगुना पानीमें अन्न पकाना योग्य है और चौगुना पानीमें विलेपी सिद्ध होतीहै चौदहगुना पानीमें मंड बनताहै छहगुना पानीमें यवागू बनतीहै । जैसे रेतमें वर्षा होनेसें कीचड होजातीहै तैसे कफके बढनेमें यवागू कफकों बढातीहै । मदात्ययरोगमें नित्य मदिरा पीनेमें ग्रीष्म ऋतु अर्थात् ज्येष्ठ और आषाढमें पित्त और कफकी अधिकतावाले ज्वरमें ऊर्ध्वगत रक्तपित्तमें यवागू हित नहीं करतीहै । तहां प्रथम धानकी खीलके सत्तुओंकरके तर्पण देना योग्यहै ।

(८) ज्वरापहैः फलरसैर्युक्तं समधुशर्करम् ।
द्रवेणालोडितास्ते स्युस्तर्पणं लाजशक्तवः ॥ ३५ ॥
श्रमोपवासानिलजे हितो नित्यं रसौदनः ।
मुद्गयूषौदनश्चापि देयः कफसमुद्भवे ॥ ३६ ॥
स एव सितया युक्तः शीतपित्तज्वरे हितः ।
रक्तशाल्यादयः शस्ताः पुराणाः षष्टिकैः सह३७
यवाग्वोदनलाजार्थे ज्वरितानां ज्वरापहाः ।
मुद्गामलकयूषस्तु वातपित्तात्मके हितः ॥ ३८ ॥
ह्रस्वमूलकयूषस्तु कफवातात्मके हितः ।
निम्बमूलकयूषस्तु हितः पित्तकफात्मके ॥ ३९ ॥
मुद्गान्मसूरांश्चणकान्कुलत्थांश्चाढकानपि ।
आहारकाले यूषार्थे ज्वरिताय प्रदापयेत् ॥४०॥
पटोलपत्रं वार्ताकं कुलकं कारवेल्लकम् ।
कर्कोटकं पर्पटकं गोजिह्वां बालमूलकम् ॥ ४१ ॥
पत्रं गुडूच्याः शाकार्थे ज्वरिताय प्रदापयेत् ।
ज्वरितो हितमश्नीयाद्यद्यप्यस्यारुचिर्भवेत् ॥४२॥
अन्नकाले ह्यभुञ्जानः क्षीयते म्रियतेऽपि वा ।

(८ पित्तज्वरेषु पाचनम्) ज्वरकों हरनेवाले फलके रसोंमें शहद और खांड मिलाके द्रवकरकै आलोडित किये धानकी खीलोंके सत्तु तर्पण कहातेहैं । परिश्रम लंघन वायु इन्होंसें उपजे ज्वरमें नित्यप्रति मांसके रसमें मिलाकै चावलोंकों खाना उचित है । कफमें उपजे ज्वरमें मूंगोंके यूषके संग चावलोंका खाना उचित है मिश्रीसें संयुक्त किया यही यूष शीतपित्तज्वरमें हित है । यवागू चावलपाक खील इन्होंकों बनानेके अर्थ रक्तशालि आदि और पुराने सांठी चावल श्रेष्ठ हैं ये ज्वरवालोंके ज्वरकों हरतेहैं । मूंग और आंवलोंका यूष वातपित्तसें उपजे ज्वरमें देना लघुपंचमूलका यूष कफवातसें उपजे ज्वरमें देना हित है । नींबकी जडका यूष पित्तकफसें उपजे ज्वरमें देना हित है । मूंग मसूर चने कुलथी मोठ इन्होंका यूष बनाय समयपर ज्वरवालेकों देना । परवलके पत्ते वार्ताक अर्थात् कटेलीभेद मीठा परवल करेला ककोडा पित्तपापडा गोभी कचीमूली गिलोयके पत्ते इन्होंकी शाक ज्वरवालाकों देने । ज्वरवाला मनुष्यके अरुचिभी हो तवभी हित पदार्थकों खावै क्योंकी अन्नके समयमें नहीं भोजन करनेवाला ज्वररोगी क्षीण होजाताहै अथवा मरजाताहै ।

(९)अरुचौ मातुलुङ्गस्य केसरं साज्यसैन्धवम्४३
धात्रीद्राक्षासितानां वा कल्कमास्येन धारयेत् ।
सातत्यात्स्वाद्वभावाद्वा पथ्यं द्वेष्यत्वमागतम् ४४

कल्पनाविधिभिस्तैस्तैः प्रियत्वं गमयेत्पुनः ।
ज्वरितं ज्वरमुक्तं वा दिनान्ते भोजयेल्लघु ॥४५॥
श्लेष्मक्षये विवृद्धोष्मा बलवाननलस्तदा ।
गुर्वभिष्यन्धकाले च ज्वरी नाद्यात्कथंचन॥४६॥
नहि तस्याहितं भुक्तमायुषे वा सुखाय वा ।
लङ्घनं स्वेदनं कालो यवाग्वस्तिक्तको रसः॥४७॥
पाचनान्यविपक्वानां दोषाणां तरुणे ज्वरे ।
आसप्तरात्रं तरुणं ज्वरमाहुर्मनीषिणः ॥ ४८ ॥
मध्यं द्वादशरात्रं तु पुराणमत उत्तरम् ।
पाचनं शमनीयं वा कषायं पाययेत्तु तम् ॥४९॥
ज्वरितं षडहेऽतीते लघ्वन्नप्रतिभोजितम् ।
सप्ताहात्परतोऽस्तब्धे सामे स्यात्पाचनं ज्वरे ५०
निरामे शमनं स्तब्धे सामे नौषधमाचरेत् ।
लालाप्रसेको हृल्लासहृदयाशुद्ध्यरोचकाः ॥ ५१ ॥
तन्त्रालस्याविपाकास्यवैरस्यं गुरुगात्रता ।
क्षुन्नाशो बहुमूत्रत्वं स्तब्धता बलवाञ्ज्वरः ॥ ५२ ॥
आमज्वरस्य लिङ्गानि न दद्यात्तत्र भेषजम् ।
भेषजं ह्यामदोषस्य भूयो ज्वलयति ज्वरम् ॥५३॥
मृदौ ज्वरे लघौ देहे प्रचलेषु मलेषु च ।
पक्वं दोषं विजानीयाज्ज्वरे देयं तदौषधम् ॥५४॥

(९ अरुचौ लेहादि) अरुचिमें विजोराका केसर घृत सेंधानमक इन्होंकों अथवा आंवला दाख मिश्री इन्होंके कल्ककों मुखमें धारण करै । निरंतरपनेसें अथवा स्वादके अभावसें द्वेषभावकों प्राप्त हुआ पथ्यकों तिसतिस अनेक प्रकारकी विधि करकै फिर सुंदरपनाकों प्राप्त करै । ज्वरवालाकों अथवा ज्वरसें छोडाहुआकों दिनके अंतमें हलका भोजन देना कफके क्षय होनेमें गरमी वढती है तब पेटका अग्नि बलवान् होताहै । समयविना भारा और अभिष्यंदी पदार्थकों ज्वरवाला कभीभी नहीं खावै तिसकों भोजन करना आयुके और सुखके अर्थ हितकारी नहीं है। लंघन स्वेदन समय यवागू कडुआ रस ये सब विनापकेहुये दोषोंके पाचन अर्थात् पकानेवाले हैं । सातरात्रिपर्यंत ज्वरकों पंडित तरुणज्वर कहते हैं और बारह रात्रिपर्यंत मध्यज्वर कहते हैं और तिस्सें उपरंत पुराणज्वर कहते हैं । ज्वरवाला पाचन अथवा शमनरूपी काढा पीवै और छह दिन व्यतीत होचुकें तब हलका अन्नका भोजन देना । सात दिनसें उपरंत साधारण और आमसहित ऐसे ज्वरमें पाचन देना और आमरहित ज्वरमें शमन देना कठोर और आमसहित ऐसे ज्वरमें औषध नहीं देना । लाल पडै मुखसें थूक गेरै हृदय शुद्ध नहीं हो रुचि उपजै नहीं तंद्रा और आलस्य होवै दोष पकै नहीं मुखमें रस जाता रहै शरीर भारी रहै भूखका नाश हो मूत्र बहुत उतरै कठोरपना हो और बलवान् ज्वर हो ये लक्षण आमज्वरके हैं तहां औषध नहीं देना । आमज्वरवालेकों दिया ओषध फिर ज्वरकों प्रकाशित करता है ज्वर हलका होवै और शरीर हलका होवै मल प्रचलित होवै । तब दोष पकाहुआ जानना तिस ज्वरमें औषध देना ।

(१०) नागरं देवकाष्ठं च धन्याकं बृहतीद्वयम् ।
दद्यात्पाचनकं पूर्वं ज्वरिताय ज्वरापहम् ॥५५॥
पीतांबुर्लङ्घितः क्षीणोजीर्णी भुक्तः पिपासितः ।
न पिबेदौषधं जन्तुः संशोधनमथेतरत् ॥ ५६ ॥
वीर्याधिकं भवति भेषजमन्नहीनं
हन्यात्तदामयमसंशयमाशु चैव ।
तद्बालवृद्धयुवतीमृदुभिश्च पीतं
ग्लानिं परां नयति चाशु बलक्षयं च ॥५७॥
अनुलोमोऽनिलः स्वस्थ्यं क्षुत्तृष्णासुमनस्कता ।
लघुत्वमिन्द्रियोद्गारशुद्धिजीर्णौषधाकृतिः ॥५८॥
क्लमो दाहाङ्गसदनं भ्रमो मूर्च्छा शिरोरुजा ।
अरतिर्बलहानिश्च सावशेषौषधाकृतिः ॥ ५९ ॥
औषधशेषे भुक्तं पीतं च तथौषधं सशेषेऽन्ने ।
प्रकरोति गदोपशमं प्रकोपयत्यन्यरोगांश्च ॥६०॥
शीघ्रं विपाकमुपयाति बलं न हिंस्या-
दन्नावृतं न च मुहुर्वदनान्निरेति ।
प्राग्भूक्तसेवितमथौषधमेतदेव
दद्याच्च वृद्धशिशुभीरुवराङ्गनाभ्यः ॥ ६१ ॥

(१०सामान्यज्वरे) अथ सब प्रकारके ज्वरमें सोंठ देवदार धनियां दोनों कटेली इन्होंका पाचन ज्वरवालेकों देना यह ज्वरकों हरता है । पानीकों पीयेहुये लंघन कियेहुये क्षीण अजीर्णवाला भोजनकिये हुये तृषावाला ऐसे मनुष्य औषधकों और शोधन औषधकों नहीं पीवै । अन्नसें हीन हुआ औषध अधिक वीर्यवाला होताहै वह निश्चयसें रोगकों हरता है बालक बूढा युवति स्त्री कोमल पुरुष इन्होंने पान किया वह औषध अत्यंत ग्लानिकों करता है और बलकों शीघ्र नाशता है । वायु आनुकूल हो शरीर स्वस्थ हो भूख और

तृषा लगै और मनकी प्रसन्नता हो शरीर हलका हो इंद्रियें स्वच्छ हों ढकार आवै नहीं ये सब जीर्ण हुआ औषधके लक्षण हैं । ग्लानि हो दाह हो अंगोंकी शिथिलता होवै भ्रम और मूर्च्छा हो शिरमें शूल उपजै मन बिगडजावै बलकी हानि हो ये लक्षण हों तो औषध बाकी रहा जानना । औषधके बाकी रहनेमें भोजन और पान और शेष रहे अन्नमें औषध रोगकों शांत नहीं करता है किंतु अन्य रोगोंकों प्रकुपित करता है । अन्नसें आच्छादित किया औषध शीघ्र पकजाताहै और बलकों नष्ट नहीं करता है और मुखसें वारंवार नहीं निकसता है । पूर्वोक्त यह औषध बूढा बालक डरपोक सुंदरस्त्री इन्होंकों देना ।

(११) मात्राया नास्त्यवस्थानं दोषमग्निं बलं वयः।
व्याधिं द्रव्यं च कोष्ठं च वीक्ष्य मात्रां प्रयोजयेत्६२
उत्तमस्य पलं मात्रा त्रिभिश्चाक्षैश्च मध्यमे ।
जघनस्य पलार्धेन स्नेहकाथ्यौषधेषु च ॥ ६३ ॥
कर्षादौ तु पलं यावद्दद्यात्षोडशिकं जलम् ।
ततस्तु कुडवं यावत्तोयमष्टगुणं भवेत् ॥ ६४ ॥
क्वाथ्यद्रव्यपले कुर्यात्प्रस्थार्धं पादशेषितम् ।

(**११ मात्राप्रयोगविधिः**) औषधकी मात्राका नियम नहीं है किंतु दोष अग्नि बल अवस्था व्याधि औषध कोष्ठ इन्होंकों देखकर मात्राकों प्रयुक्त करे । स्नेह क्वाथ औषध इन्होंमें उत्तम मात्रा एकपल अर्थात् चार तोले तीन तोलेकी मात्रा मध्यम है दो तोलेकी मात्रा कनिष्ठ है । एक तोला औषधसें चार तोले औषधपर्यंत सोलहगुण पानी देना और चार तोलेसें सोलह तोलेपर्यंत औषधमें आठगुणा पानी देना । चार तोलेभर औषधकों बत्तीस तोलेभर पानीमें पकाकै चौथाई भाग शेष रहैं ।

(१२)द्वात्रिंशन्माषकैर्माषश्चरकस्य तु तैः पलम्६५
अष्टचत्वारिंशता स्यात्सुश्रुतस्य तु माषकः ।
द्वादशभिर्धान्यमाषैश्चतुःषष्ट्या तु तैः पलम्॥६६॥
एतच्च तुलितं पञ्चरक्तिमाषात्मकं पलम् ।
चरकार्धपलोन्मानं चरके दशरक्तिकैः ॥ ६७ ॥
माषैः पलं चतुःषष्ट्या यद्भवेत्तत्तथेरितम् ।
तस्मात्पलं चतुःषष्ट्या माषकैर्दशरक्तिकैः ॥ ६८ ॥
चरकानुमतं वैद्यैश्चिकित्सासूपयुज्यते ।

(**१२ औषधे माषादि प्रमाणम्**) चरकमुनिके मतमें बत्तीस उडदोंका मासा होता है । और अठतालीस मासोंका पल होता है । सुश्रुतके मतमें बारह उडदोंका मासा होता है और चौंसठ मासोंका पल होता है । यह तोल पांचरत्तीवाले मासोंकरकै पल है चरकका आधा पलके उन्मान है चरकमें दश रत्तियोंका मासा कहा है । चौंसठ मासोंका जो पल होता है वह प्रकाशित किया वैद्यजन चरकके मतकों चिकित्सामें प्रयुक्त करते हैं ।

(१३)विल्वादिपञ्चमूलस्य क्वाथः स्याद्वातिके ज्वरे
पाचनं पिप्पलीमूलं गुडूची विश्वजोऽथवा ।
किराताब्दामृतोदीच्यबृहतीद्वयगोक्षुरैः ॥ ७० ॥
सस्थिराकलसीविश्वैः क्वाथो वातज्वरापहः ।
रास्ना वृक्षादनी दारु सरलं सैलवालुकम् ॥७१॥
कषायः शर्कराक्षौद्रयुक्तो वातज्वरापहः ।
प्रक्षेपः पादिकः क्वाथ्यात्स्नेहे कल्कसमो मतः७२
परिभाषामिमामन्ये प्रक्षेपेऽप्यूचिरे यथा ।
कर्षश्चूर्णस्य कल्कस्य गुटिकानां च सर्वशः ७३
द्रवशुक्त्या स लेढव्यः पातव्यश्च चतुर्द्रवः ।
मात्रा क्षौद्रघृतादीनां स्नेहे क्वाथेषु चूर्णवत्॥७४॥
विल्वादिपञ्चमूली च गुडूच्यामलके तथा ।
कुस्तुम्बुरुसमो ह्येष कषायो वातिके ज्वरे ॥ ७५ ॥
पिप्पलीशारिवाद्राक्षाशतपुष्पाहरेणुभिः ।
कृतः कषायः सगुडो हन्याच्छ्वसनजं ज्वरम् ७६
गुडूची शारिवा द्राक्षा शतपुष्पा पुनर्नवा ।
सगुडोऽयं कषायः स्याद्वातज्वरविनाशनः ॥७७॥
द्राक्षा गुडूची काश्मर्यं त्रायमाणाः सशारिवाः ।
निःक्वाथ्य सगुडं क्वाथं पिबेद्वातज्वरापहम्॥७८॥
शतावरीगुडूचीभ्यां स्वरसो यन्त्रपीडितः ।
गुडप्रगाढः शमयेत्सद्योऽनिलकृतं ज्वरम् ॥७९॥

(**१३ वातज्वरे**) अथ वातज्वरकी चिकित्सा बेलफल अरनी टेंटू पाटला कंभारी इन्होंका काढा वातज्वरमें देना अथवा पीपलामूल गिलोय सोंठ इन्होंका काढा वातज्वरमें पाचन है । चिरायता नागरमोथा गिलोय नेत्रवाला दोनों कटेली गोखरू शालपर्णी पृष्ठपर्णी इन्होंका काढा वातज्वरकों नाशता है । रासन अमरवेल देवदार सरलवृक्ष एलवाल इन्होंके काढामें खांड और शहद मिलायके पीवै तो वातज्वरका नाश होता है । क्वाथमें चौथाई भाग औषध डालना स्नेहमें बराबर भाग कल्क डालना इस तोलकों डालनेमें जैसे कहते है तैसे दिखाते है । चूर्ण कल्क गोली

इन्होंमांहसें एकको दशमासेभर लेके आठ तोलेभर द्रव पदार्थमें मिलायके चाटै और चौगुना द्रवपदार्थमें मिलायके पीवै । शहद और घृत आदिकी मात्रा स्नेहमें और क्काथमें चूरणकी तरह है बेलफल अरनी टेंटू पाडल कंभारी गिलोय आंवला धनियां ये सब बराबर भाग लेकै किया काढा वातज्वरमें हित है पीपल सारिवा अनंतमूल दाख सौंफ रेणुका इन्होंके काढामें गुड मिलाय पीनेसें वातज्वरका नाश होता है। गिलोय सारिवा अनंतमूल दाख सौंफ सांठी इन्होंका काढामें गुड मिलाय पीनेसें वातज्वरका नाश होता है। दाख गिलोय कंभारी त्रायमाण अर्थात् वनपसा शारिवा अनंतमूल । इन्होंके क्काथमें गुड मिलाय पीनेसें वातज्वरका नाश होता है । शतावरी और गिलोयके रसको यंत्रसें निकाल तिसमें गुड डाल पीनेसें वातज्वर शीघ्र दूर होता है ।

(१४) कलिङ्गं कट्फलं मुस्तं पाठां तिक्तकरोहिणीं।
पक्वं सशर्करं पीतं पाचनं पैत्तिके ज्वरे ।
सक्षौद्रं पाचनं पैत्ते तिक्ताब्देन्द्रयवैः कृतम् ॥८०॥
लोध्रोत्पलामृतापद्मशारिवाणां सशर्करः ।
क्काथः पित्तज्वरं हन्यादथवा पर्पटोद्भवः ॥८१॥
पटोलयवनीक्काथो मधुना मधुरीकृतः ।
तीव्रपित्तज्वरामर्दी पानात्तृड्दाहनाशनः ॥ ८२ ॥
दुरालभापर्पटकप्रियङ्गु-
भूनिम्बवासाकटुरोहिणीनाम् ।
जलं पिबेच्छर्करयावगाढं
तृष्णास्रपित्तज्वरदाहयुक्तः ॥ ८३ ॥
त्रायमाणा च मधुकं पिप्पलीमूलमेव च।
किराततिक्तकं मुस्तं मधुकं सविभीतकम् ॥८४॥
सशर्करं पीतमेतत्पित्तज्वरनिवर्हणम् ।
मृद्वीका मधुकं निम्बं कटुका रोहिणी समा।
अवश्यायस्थितं पाक्यमेतत्पित्तज्वरापहम् ॥८५॥
एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः ।
किं पुनर्यदि युज्येत चन्दनोदीच्यनागरैः ॥ ८६ ॥
विश्वाम्बुपर्पटोशीरघनचन्दनसाधितम् ।
दद्यात्सुशीतलं वारि तृट्छर्दिज्वरदाहनुत् ॥८७॥
पर्पटामृतधात्रीणां क्काथः पित्तज्वरापहः ।
द्राक्षारग्वधयोश्चापि काश्मर्याश्चाथवा पुनः॥८८॥
द्राक्षाभयापर्पटकाब्दतिक्ता-
क्काथं सशम्पाकफलं विदध्यात् ।
प्रलापमूर्च्छाभ्रमदाहशोष-
तृष्णान्विते पित्तभवे ज्वरे तु ॥ ८९ ॥

(१४ पित्तज्वरे) अथ पित्तज्वरकी चिकित्सा इंद्रजव कायफल नागरमोथा पाठा कुटकी इन्होंको पानीमें पकाय खांड डाल पित्तज्वरमें देवै यह पाचन है । कुटकी इंद्रजव नागरमोथा इन्होंको पानीमें अग्निसें जो सदा शहद डाल पीवै पित्तज्वरमें यह पाचन है। लोध कमलके फूल गिलोय पद्माक शारिवा अनंतमूल इन्होंका खांडसहित क्काथ अथवा खांड सहित पित्तपापडाका क्काथ पित्तज्वरको हरताहै । परवल इंद्रजव इनका क्काथ बनाय तिसमें शहद डाल पीनेसें दारुण पित्तज्वर तृषा दाह इन्होंका नाश होताहै । धमासा पित्तपापडा कांगनी चिरायता वांसा कुटकी इन्होंका काढा बनाय तिसमें खांड डाल पीवै तो तृषा रक्तविकार पित्तज्वर इन्होंका नाश होताहै । त्रायमाण मुलहटी पीपलामूल चिरायता नागरमोथा महुवा बहेडा इन्होंके काढामें खांड डाल पीवै तो पित्तज्वरका नाश होता है । मुनक्का मुलहटी नींबकी छाल कुटकी हरडै ये सब बराबर भाग ले पानीमें पकाय ओसमें रात्रिभर धरके पीछे पीनेसें पित्तज्वरको नाशता है । अकेला पित्तपपाडाही पित्तज्वरको नाशनेमें श्रेष्ठ है और लालचंदन नेत्रवाला सोंठ इन्होंसें युक्त किया पित्तपापडा पित्तज्वरको शीघ्र हरताहै इसमें संशय नहीं । सोंठ नेत्रवाला पित्तपापडा खस नागरमोथा लालचंदन इन्होंमें सिद्ध किया शीतल पानी तृषा छर्दि ज्वर इनको नाशताहै । पित्तपापडा गिलोय आंवला इन्होंका क्काथ पित्तज्वरको हरता है अथवा दाख अमलतास कंभारी इन्होंका क्काथ पित्तज्वरको हरताहै । मुनक्कादाख हरडै पित्तपापडा नागरमोथा कुटकी अमलतास इन्होंका क्काथ प्रलाप मूर्च्छा भ्रम दाह शोष तृषा इन्होंसें युत हुये पित्तज्वरमें देना ।

(१५) व्युषितं धन्याकजलं प्रातः पीतं सशर्करं पुंसां
अन्तर्दाहं शमयत्यचिराद्दूरप्ररूढमपि ॥ ९० ॥
पित्तज्वरेण तप्तस्य क्रियां शीतां समाचरेत् ।
विदारी दाडिमं लोध्रं दधित्थं बीजपूरकम् ९१
एभिः प्रदिह्यान्मूर्धानं तृड्दाहार्तस्य देहिनः ।
घृतभृष्टाम्लपिष्टा च धात्रीलेपाच्च दाहनुत्॥९२॥

अम्लपिष्टैः सुशीतैर्वा पलाशतरुजैर्लिहेत् ।
बदरीपल्लवोत्थेन फेनेनारिष्टकस्य च ॥ ९३ ॥
कालेयचन्दनानन्तायष्टीबदरकाञ्जिकैः ।
सघृतैः स्याच्छिरोलेपस्तृष्णादाहार्तिशान्तये ९४
उत्तानसुप्तस्य गभीरताम्र-
कांस्यादिपात्रं प्रणिधाय नाभौ ।
तत्राम्बुधाराबहुला पतन्ती
निहन्ति दाहं त्वरितं सुशीता ॥ ९५ ॥
शीतकाञ्जिकवस्त्रावगुण्ठनं दाहनाशनम् ।
जिह्वातालुगलक्लोमशोषे मूर्ध्नि तु दापयेत् ।
केशरं मातुलुङ्गस्य मधुसैन्धवसंयुतम् ॥ ९६ ॥

(१५ पैत्तिकज्वरिणः शीतक्रिया) धनियांके पानीकों रात्रिभर धरकै प्रातःकाल तिसमें खांड डाल पीवै तो पुरुषोंका भयंकर अंतर्दाह शीघ्र दूर होताहै । पित्तज्वरसें तप्त हुये मनुष्यकी शीतल क्रिया करनी विदारीकंद अनार लोध कैथ विजोरा इन्होंकों पानीसें पीस तृषा और दाहसें पीडित हुआ मनुष्यके माथापर लेप करै । घृतमें अथवा नींबूके रसमें आंवलाकों पीस लेप करनेसें दाह दूर होता है। केशूके फूलोंकों नींबूके रसमें पीस शीतल लेप करै अथवा बडवेरीके पत्तोंके कल्कसें अथवा नींबके पत्तोंकों पानीमें पीस तिसके झागसें लेप करै तो दाह दूर होता है । दारुहलदी सुपेद चंदन धमासा मुलहटी बडवेरीके पत्ते इन्होंकों कांजीमें पीस तिसमें घृत मिलाय शिरपर लेप करनेसें तृषा और दाहका नाश होता है । मनुष्यकों सीधा शयन कराकै तिसकी नाभी अर्थात् सूंडीपर तांवा अथवा कांसीके ऊंचे पात्रकों स्थापित कर तिसमें ऊंचासें बहुतसा पानीकी शीतल धारा गेरै तो दाहकों शीघ्र नाशती है । शीतल पदार्थमें वा कांजीमें वस्त्रकों भिगोयके शरीरपर धरै तो दाह नष्ट होता है । जीभ तालु गल पिपासास्थान इन्होंके शोषमें शिरपर विजोराकी केसरमें शहद और सेंधानमक मिलाय लेप करै ।

(१६) मातुलुङ्गशिफाविश्वब्राह्मीग्रन्थिकसंभवम् ।
कफज्वरेऽम्बु सक्षारं पाचनं वा कणादिकम् ९७
पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् ।
मरिचैलाजमोदेन्द्रपाठारेणुकजीरकम् ॥ ९८ ॥
भार्गी महानिम्बफलं हिङ्गुरोहिणिसर्षपम् ।
विडङ्गातिविषे मूर्वा चेत्ययं कीर्तितो गणः॥९९॥
पिप्पल्यादिः कफहरः प्रतिश्यारोचकानिलान् ।
निहन्याद्दीपनो गुल्मशूलघ्नस्त्वामपाचनः॥१००॥
कटुकं चित्रकं निम्बं हरिद्रातिविषे वचाम् ।
कुष्ठमिन्द्रयवं मूर्वां पटोलं चापि साधितम्१०१
पिबेन्मरिचसंयुक्तं सक्षौद्रं श्लैष्मिके ज्वरे ।
निम्बविश्वामृतादारु शटीभूनिम्बपौष्करम् १०२
पिप्पल्यौ बृहती चेति क्वाथो हन्ति कफज्वरम् ।
सिन्धुवारदलक्वाथं शोषणं कफजे ज्वरे ॥१०३॥
जङ्घयोश्च बले क्षीणे कर्णे वा पिहिते पिबेत् ।
आमलक्यभया कृष्णा चित्रकश्चेत्ययं गणः ।
सर्वज्वरकफातङ्कभेदी दीपनपाचनः ॥ १०४ ॥
त्रिफलापटोलवासा
च्छिन्नरुहातिक्तरोहिणीषड्ग्रन्थाः ।
मधुना श्लेष्मसमुत्थे
दशमूलीवासकस्य वा क्वाथः ॥ १०५ ॥
मुस्तं वत्सकबीजानि त्रिफला कटुरोहिणी ।
परूषकाणि च क्वाथः कफज्वरविनाशनः॥१०६॥

(१६ कफज्वरे) अथ कफज्वरकी चिकित्सा विजोराकी जड सोंठ ब्राह्मी पीपलामूल इन्होंके क्वाथमें जवाखार मिलाय कफज्वरमें पीवै अथवा कणादिक पाचनकों पीवै । पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिरच इलायची अजमोद इंद्रजव पाठा रेणुका जीरा नारंगी बकायण नींबके बीज हींग हरडै हीरसम वायविडंग अतीस मरोरफली यह कणादिक अर्थात् पिप्पल्यादिगण कहा है। यह पिप्पल्यादिगण कफकों हरता है और पीनस अरोचक वातरोग इन्होंकों नाशताहै अग्निकों जगाता है गुल्म और शूलकों दूर करताहै और आमकों पकाता है । कुटकी चीता नींब हलदी अतीस वच कूट इंद्रजव मरोरफली परवल । इन्होंका क्वाथ बनाय तिसमें मिरचोंका चूरण और शहद मिलाय कफज्वरमें पीवै । नींब सोंठ गिलोय देवदार कचूर चिरायता पौहकरमूल दोनों पीपल बडीकटेली इन्होंका क्वाथ कफज्वरकों हरताहै । संभालूकी छालका क्वाथ कफज्वरमें शोषण करताहै और जंघाओंमें बल नहीं रहै और कान आच्छादित होजावै तबभी यह क्वाथ पीनेसें हित होता है । आंवला हरडै पीपल चीता यह गण सवज्वर कफ इनकों दूर करताहै दीपन और पाचन है । त्रिफला परवल बांसा गिलोय कुटकी वच इन्होंके क्वाथमें अथवा दशमूल और

वांसाके क्वाथमें शहद मिलाय पीवै तौ कफज्वर शांत होवै नागरमोथा इंद्रजव त्रिफला कुटकी फालसा इन्होंका क्वाथ कफज्वरकों नाशताहै ।

(१७) कट्फलं पौष्करं शृङ्गी कृष्णा च मधुना सह।
कासश्वासज्वरहरः श्रेष्ठो लेहः कफान्तकृत्१०७
कर्षश्चूर्णस्य कल्कस्य गुटिकानां च सर्वशः।
द्रवशुक्त्या स लेढव्यः पातव्यश्च चतुर्द्रवः १०८
ऊर्ध्वजत्रुगरोगघ्नी सेयं स्यादवलेहिका ।
अधोरोगहरी या तु सा पूर्वं भोजनान्मता १०९
क्षौद्रोपकुल्यासंयोगः कासश्वासज्वरापहः ।
प्लीहानं हन्ति हिक्कां च बालानां च प्रशस्यते ११०
संसृष्टदोषेषु हितं संसृष्टमथ पाचनम् ।

(१७ चातुर्भद्रावलेहिका) अथ चातुर्भद्रावलेहिका कायठल पौहकरमूल काकडाशींगी पीपल इन्होंकों शहमें मिलाय चाटनेसें खांसी श्वास ज्वर कफ इन्होंका नाश होताहै । चूरण कल्क गोली इन्होंमाहसें एकएककों दशमासेभर लेकै तोलेभर द्रवपदार्थमें मिलाकै चाटै और चारगुने द्रवपदार्थमें मिलाकै पीवै । सायंकालमें ग्रहण करी चटनी ऊपरका जोताके रोगोंकों हरती है और जो भोजनसें पहले ग्रहण करी हुई चटनी है वह नीचाके रोगोंकों हरती है । पीपल और शहदका संयोग खांसी श्वास ज्वर तिल्लीरोग हिचकी इन्होंकों नाशता है और बालकोंकों श्रेष्ठ है । संसृष्ट अर्थात् मिले हुये दोषोंमें मिला हुआ पाचन हित है ।

(१८)विश्वामृताब्दभूनिम्बैः पञ्चमूलीसमन्वितैः ।
कृतः कषायो हन्त्याशु वातपित्तोद्भवं ज्वरम् १११
त्रिफलाशाल्मलीरास्नाराजवृक्षाटरूषकैः ।
शृतमम्बु हरेत्तूर्णं वातपित्तोद्भवं ज्वरम् ॥११२॥
किराततिक्तममृताद्राक्षामामलकीं शठीम् ।
निःक्वाथ्य पित्तानिलजे क्वाथं तं सगुडं पिबेत् ११३

(१८ नवाङ्गः) अथ नवांग क्वाथ सोंठ गिलोय नागरमोथा चिरायता शालपर्णी पृष्टपर्णी छोटी कटेली बडी कटेली गोखरू इन्होंका क्वाथ वातपित्तसे उपजे ज्वरकों नाशता है । त्रिफला शंभल रासन अमलतास वांसा इन्होंका काथ वातपित्तज्वरकों हरता है । चिरायता गिलोय मुनक्का आंवला कचूर इन्होंके क्वाथमें गुड मिला वातपित्तज्वरमें पीवै ।

(१९) निदिग्धिकाबलारास्नात्रायमाणमृतायुतैः ।
मसूरविदलैः क्वाथो वातपित्तज्वरं जयेत्॥११४॥
गुडूची पर्पटं मुस्तं किरातं विश्वभेषजम् ।
वातपित्तज्वरे देयं पञ्चभद्रमिदं शुभम् ॥११५॥
मधुकं सारिवे द्राक्षा मधुकं चन्दनोत्पलम् ।
काश्मरी पद्मकं लोध्रं त्रिफलां पद्मकेशरम् ११६
परूषकं मृणालं च न्यसेदुत्तमवारिणि ।
मधुलाजसितायुक्तं तत्पीतमुषितं निशि॥११७॥
वातपित्तज्वरं दाहतृष्णामूर्च्छावमिभ्रमान् ।
शमयेद्रक्तपित्तं च जीमूतानिव मारुतः॥११८॥

(१९ कंटकार्यादिः) अथ कंटकार्यादि कटेली खरैंहटी रासन त्रायमाण गिलोय मसूरकी दाल इन्होंका क्वाथ वातपित्तज्वरकों जीतताहै । गिलोय पित्तपापडा नागरमोथा चिरायता सोंठ यह पंचभद्र क्वाथ वातपित्तज्वरमें देना । मुलहटी दोनों शारिवा मुनक्का महुवा लालचंदन कमल कंभारी पद्माक लोध त्रिफला कमलकेसर फालसा कमलकी डंडी इन्होंकों उत्तम पानीमें स्थापित करै पीछे रात्रिभर धरकै शहद और धानकी खीलोंका चूरण मिश्री मिला पीवै । यह वातपित्तज्वर दाह तृषा मूर्च्छा छर्दि भ्रम रक्तपित्त इन्होंकों शांत करताहै जैसे बादलोंकों वायु ।

(२०) पटोलं चन्दनं मूर्वा तिक्ता पाठामृतागणः ।
पित्तश्लेष्मारुचिच्छर्दिज्वरकण्डूविषापहः॥११९॥
गुडूची निम्बधान्याकं पद्मकं चन्दनानि च ।
एष सर्वज्वरान्हन्ति गुडूच्यादिस्तु दीपनः ।
हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनः॥१२०॥

(२० पटोलादिर्गुडूच्यादिश्च) परबल लालचंदन मरोरफली कुटकी पाठा गिलोय यह गण पित्त कफ अरुचि छर्दि ज्वर खाज विष इन्होंकों नाशताहै । यह पटोलादि गण है गिलोय नींब धनियां पद्माक लालचंदन यह गुडूच्यादि सबज्वरोंकों हरताहै दीपन है । थुकथुकी अरुचि छर्दि पिपासा दाह इन्होंकों नाशता है ।

(२१)किरातं नागरं मुस्तं गुडूचीं च कफाधिके।
पाठोदीच्यामृणालैस्तु सह पित्ताधिके पिबेत्१२१

(२१ चातुर्भद्रकपाठासप्तकौ) चिरायता सोंठ नागरमोथा गिलोय यह कफाधिकज्वरमें देना और पाठा नेत्रवाला कमलकी डंडी यह पित्ताधिक ज्वरमें देना ।

(२२) कण्टकार्यमृता भार्गी नागरेन्द्रयवासकम् ।
भूनिम्बं चन्दनं मुस्तं पटोलं कटुरोहिणी ॥१२२॥
काषायं पाययेदेतत्पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ।
दाहतृष्णारुचिच्छर्दिकासहृत्पार्श्वशूलनुत् १२३
सपत्रपुष्पवासाया रसः क्षौद्रसितायुतः ।
कफपित्तज्वरं हन्ति सास्रपित्तं सकामलम्१२४
पटोलं पिचुमर्दश्च त्रिफला मधुकं बला ।
साधितोऽयं कषायः स्यात्पित्तश्लेष्मोद्भवे ज्वरे २५

(२२ अमृताष्टकः) कटेली गिलोय भारंगी सोंठ इंद्रजव धमासा चिरायता लालचंदन नागरमोथा परवल कुटकी यह क्वाथ पीनेसें पित्तकफज्वर दाह तृषा अरुचि छर्दि खांसी हृच्छूल पसलीशूल इन्होंकों नाशता है । यह कंटकार्यादि गण है। पत्ते और फूलोंसहित वांसाका रस निकाल तिसमें शहद और मिश्री मिला पीवै तो कफपित्त-ज्वर रक्तपित्त कामला इन्होंका नाश होताहै । परवल नींब त्रिफला मुलहटी खरैंहटी इन्होंका क्वाथ बना पित्तकफ-ज्वरमें पीवै ।

(२३) गुडूचीन्द्रयवारिष्टपटोलं कटुरोहिणी ।
नागरं चन्दनं मुस्तं पिप्पलीचूर्णसंयुतम् ॥१२६॥
अमृताष्टक इत्येष पित्तश्लेष्मज्वरापहः ।
हृल्लासारोचकच्छर्दितृष्णादाहनिवारणः ॥१२७॥
पटोलयवधन्याकं मुद्गामलकचन्दनम् ।
पैत्तिके श्लेष्मपित्तोत्थे ज्वरे तृट्च्छर्दिदाहनुत् ॥

क्षुद्रामृताभ्यां सह नागरेण
सपौष्करं चैव किराततिक्तम् ।
पिबेत्कषायं त्विह पञ्चतिक्तं
ज्वरं निहन्त्यष्टविधं समग्रम् ॥ १२९ ॥

(२३ अमृताष्टकम्) गिलोय इंद्रजव नींब परवल कुटकी सोंठ लालचंदन नागरमोथा इन्होंका क्वाथमें पीपलका चूरण मिला पीवै । यह अमृताष्टक पित्तकफ-ज्वरकों नाशता है और थुकथुकी अरोचक छर्दि तृषा दाह इनकों दूर करता है । परवलके पत्ते धनियां मूंग आंवला लालचंदन इन्होंका क्वाथ पित्तज्वरमें और कफपित्तज्वरमें तृषा छर्दि दाह इनकों नाशता है । छोटी कटेली गिलोय सोंठ पोहकरमूल चिरायता यह पंचतिक्त क्वाथ है । यह पी-नेसें आठ प्रकारके ज्वरकों नाशता है ।

(२४) सशर्करामक्षमात्रां कटुकामुष्णवारिणा ।
पीत्वा ज्वरे जयेज्जन्तुः कफपित्तसमुद्भवम् १३०
दीपनं कफविच्छेदि वातपित्तानुलोमनम् ।
ज्वरघ्नं पाचनं भेदि श्रृतं धान्यपटोलयोः १३१
कफवातज्वरे स्वेदान्कारयेद्रूक्षनिर्मितान् ।
स्रोतसां मार्दवं कृत्वा नीत्वा पावकमाशयम् ॥
हत्वा वातकफस्तम्भं स्वेदो ज्वरमपोहति॥१३२॥
खर्परभृष्टपटस्थितकाञ्जिकसिक्तो हि वालुकास्वेदः
शमयति वातकफामयमस्तकशूलाङ्गभङ्गादीन् ॥
मुस्तनागरभूनिम्बं त्रयमेतत्त्रिकार्षिकम् ।
कफवातामशमनं पाचनं ज्वरनाशनम् ॥१३४॥

(२४ क्षुद्रादिः) खांडसहित एक तोलाभर कु-टकीकों गरमपानीके संग पीनेसें कफपित्तज्वरका नाश होता है । धनियां और परवलका क्वाथ अग्निकों प्रकाशता है कफकों नाशता है वातपित्तकों अनुकूल करता है ज्वरकों हरता है पाचन है भेदन करता है । कफवातज्वरमें रूक्ष पदार्थोंसें निर्मित किया स्वेद अर्थात् पसीना देना स्रो-तोंकों कोमलकर और अग्निकों पक्काशयमें प्राप्तकर । वात और कफके स्तंभकों नष्ट कर पसीना ज्वरकों नष्ट करता है। खापरीपर अथवा तवा आदिपर वालूरेतकों तपाकै पीछे वस्त्रमें घाल कांजीसें सींच शरीरकों सेकै । यह वालुकास्वेद वातकफरोग मस्तकशूल अंगभंग इन आदिकों शांत करता है । नागरमोथा सोंठ चिरायता ये तीनों दश दश मासेभर लेने यह कफ वात आम इनकों शांत करता है पाचन है और ज्वरकों नाशता है ।

(२५) पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरम्
दीपनीयः स्मृतो वर्गः कफानिलगदापहः १३५
पिप्पलीभिः श्रृतं तोयमनभिष्यन्दि दीपनम् ।
वातश्लेष्मविकारघ्नं प्लीहज्वरविनाशनम् ॥१३६॥

आरग्वधग्रन्थिकमुस्ततिक्ता-
हरीतकीभिः क्वथितः कषायः ।
सामे सशूले कफवातयुक्ते
ज्वरे हितो दीपनपाचनश्च ॥ १३७ ॥

(२५ पंचकोलम्) पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ यह गण अग्निकों जगाता है कफ और वातके रोगोंकों नाशता है । पीपलका क्वाथ कफकों नहीं करता है अग्निकों

जगाता है वातकफके रोगकों नाशता है और तिल्लीस-हित ज्वरकों हरता है । अमलतास पीपलामूल नागरमोथा कुटकी हरडै इन्होंका क्वाथ आमशूल कफवात इन्होंसें युत हुये ज्वरमें हित करता है ।

(२६) क्षुद्रामृतानागरपुष्कराह्वयैः
कृतः कषायः कफमारुतोद्भवे
सश्वासकासारुचिपार्श्वरुक्करे
ज्वरे त्रिदोषप्रभवे च शस्यते ॥ १३८ ॥

(२६ क्षुद्रादिगणः) छोटीकटेली गिलोय सोंठ पोहकरमूल इन्होंका क्वाथ कफवातसें उपजा और श्वास खांसी अरुचि पसली इन्होंमें शूल करनेवाले ऐसे ज्वरमें और त्रिदोषसें उपजे ज्वरमें श्रेष्ठ है ।

(२७)दशमूलीरसः पेयः कणायुक्तः कफानिले ।
अविपाकेऽतिनिद्रायां पार्श्वरुक्श्वासकासके१३९
मुस्तं पर्पटकः शुण्ठी गुडूची सदुरालभा ।
कफवातारुचिच्छर्दिदाहशोषज्वरापहः ॥ १४० ॥
दारुपर्पटभार्ग्यब्दवचाधान्यककट्फलैः ।
साभयाविश्वभूतिक्तैः क्वाथो हिङ्गुमधूत्कटः १४१
कफवातज्वरे पीतो हिक्काश्वासगलग्रहान् ।
कासशोषप्रसेकांश्च हन्यात्तरुमिवाशनिः ॥१४२॥
मात्राक्षौद्रघृतादीनां स्नेहे क्वाथेषु चूर्णवत् ।
माक्षिकं हिङ्गु सिन्धूत्थं जरणाद्यास्तु शाणिकाः
मातुलुङ्गफलकेशरो धृतः
सिन्धुजन्ममरिचान्वितो मुखे ।
हन्ति वातकफरोगमास्यगं
शोषमाशु जडतामरोचकम् ॥ १४४ ॥

(२७ मधूकसारादिः) कफवातज्वर अविपाक अत्यंत नींद पसलीशूल श्वास खांसी इन्होंमें दशमूलके रसविषै पीपलका चूरण मिला पीना । नागरमोथा पित्तपापडा सोंठ गिलोय धमासा इन्होंका क्वाथ कफवात अरुचि छर्दि दाह शोष इन्होंसें युत हुये ज्वरकों नाशता है । देवदार पित्तपापडा भारंगी नागरमोथा वच धनियां कायफल हरडै सोंठ करंजुवा इन्होंके क्वाथमें शहद और हींग मिलाकै कफवातज्वरमें पीवै । यह हिचकी श्वास गलग्रह खांसी शोष प्रसेक इन्होंकों नाशता है जैसे वृक्षकों वज्र । शहद और घृत आदिकी मात्रा स्नेहमें और क्वाथमें चूरणकी तरह जाननी और हींग तथा सेंधानमक एक मासाभर जीरा और पीपल आदि चार मासेभर मिलाने । विजोराका केशर सेंधानमक मिरच इनकों मिलाकै मुखमें धारण करै तो वातकफसें उपजा रोग मुखका शोष जडपना अरुचि इन्होंका शीघ्र नाश होता है । यहां मिलेहुये दोषोंसें उपजे ज्वरकी चिकित्सा समाप्त हुई ।

(२८) लङ्घनं वालुकास्वेदो नस्यं निष्ठीवनं तथा ।
अवलेहोऽञ्जनं चैव प्राक्प्रयोज्यं त्रिदोषजे १४५
सन्निपातज्वरे पूर्वं कुर्यादामकफापहम् ।
पश्चाच्छ्लेष्मणि संक्षीणे शमयेत्पित्तमारुतौ १४६
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा दशरात्रमथापि वा ।
लङ्घनं सन्निपातेषु कुर्यादारोग्यदर्शनात् ॥१४७॥
दोषाणामेव सा शक्तिर्लङ्घने या सहिष्णुता ।
नहि दोषक्षये कश्चित्सहते लङ्घनादिकम् १४८
आर्द्रकस्वरसोपेतं सैन्धवं सकटुत्रिकम् ।
आकण्ठं धारयेदास्ये निष्ठीवेच्च पुनः पुनः १४९
तेनास्यहृदयाच्छ्लेष्मामन्यापार्श्वशिरोगलात् ।
लीनोऽप्याकृष्यते शुष्को लाघवं चास्य जायते
पर्वभेदोऽङ्गमर्दश्च मूर्च्छाकासगलामयाः ।
मुखाक्षिगौरवं जाड्यमुत्क्लेशश्चोपशाम्यति १५१
सकृद्द्वित्रिचतुः कुर्याद्दृष्ट्वा दोषबलाबलम् ।
एतद्धि परमं प्राहुर्भेषजं सन्निपातिनाम् ॥१५२॥
मातुलुङ्गार्द्रकरसं कोष्णं त्रिलवणान्वितम् ।
अन्यद्वा सिद्धिविहितं तीक्ष्णं नस्यं प्रयोजयेत्१५३
तेन प्रभिद्यते श्लेष्मा प्रभिन्नश्च प्रसिच्यते ।
शिरोहृदयकण्ठास्यपार्श्वरुक् चोपशाम्यति १५४

(२८ अष्टाङ्गावलेहिका) लंघन वालुकास्वेद नस्य निष्ठीवन अवलेह अंजन ये सब त्रिदोषजज्वरमें प्रथम प्रयुक्त करने । सन्निपातज्वरमें प्रथम आम और कफकों हरनेवाला कर्म करना पीछे जब कफ क्षीण होजावै तब पित्त और वातकों शांत करै । तीन रात्रि अथवा पांच रात्रि अथवा दश रात्रि अथवा आरोग्य होनेतक सन्निपातमें लंघन करना । लंघनका जो सहना है वह दोषोंकीही शक्ति है दोषके क्षय होनेमें कोईभी मनुष्य लंघन आदिकों नहीं सह सक्ता है । अदरकके रसमें सेंधानमक सोंठ मिरच पीपल इनकों मिला कंठपर्यंत धारण करै पीछे वारंवार थूकताजावै तिसकरकै सन्निपातरोगीका हृदय कंधा पसली

शिर गल इन्होंसें कफ सूखकर लीन हुआ खींचा जाता है और शरीर हलका हो जाता है । और संधियोंका टूटना अंगमर्द मूर्च्छा खांसी गलरोग मुख और नेत्रका भारीपन जडपना ग्लानि इन्होंका नाश होता है । दोषके बल और अबलकों देखकर एक दो तीन चारवार करै । सन्निपात-वालोंकों यह परम औषध कहा है । विजोराका रसकों कछुक गरमकर तिसमें सेंधानमक मनयारीनमक कालान-मक इन्होंकों मिला नस्य देवै अथवा सिद्ध पुरुषोंनें कहा तीक्ष्ण नस्यकों प्रयुक्त करै । तिसकरकै कफ भेदित होता है और भेदित होकै निकसता है और शिर हृदय कंठ मुख पसली इन्होंमें उपजा शूल शांत होता है ।

(२९) मधूकसारसिन्धूत्थवचोषणकणाः समाः ।
श्लक्ष्णं पिष्ट्वाम्भसा नस्यं कुर्यात्संज्ञाप्रबोधनम् १५५
सैन्धवं श्वेतमरिचं सर्षपं कुष्ठमेव च ।
वस्तमूत्रेण पिष्टानि नस्यं तन्द्रीनिवारणम् १५६
शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैन्धवैः ।
अञ्जनं स्यात्प्रबोधाय सरसोनशिलावचैः॥१५७॥

(२९ मधूकसारादिगणः) महुवाका सार सेंधा-नमक वच मिरच पीपल ये सब बराबर ले पानीमें मि-हीन पीस नस्य देवै यह संज्ञाकों उपजाता है । सेंधानमक सुपेदमिरच अथवा सहोंजनाके बीज सिरसम कूट इ-न्होंकों बकराके मूत्रमें पीस नाकमें दिया नस्य तंद्राकों दूर करता है । शिरसका बीज गोमूत्र पीपल मिरच सेंधान-मक इन्होंसें किया अंजन अथवा ल्हसन मनशिल वच इ-न्होंसें किया अंजन सन्निपातमें संज्ञा करता है ।

(३०)कट्फलं पौष्करं शृङ्गी व्योषं यासश्च कारवी।
श्लक्ष्णचूर्णीकृतं चैतन्मधुना सह लेहयेत् १५८
एषावलेहिका हन्ति सन्निपातं सुदारुणम् ।
हिक्कां श्वासं च कासं च कण्ठरोगं नियच्छति
ऊर्ध्वगश्लेष्महरणे उष्णस्वेदादिकर्मणि ।
विरोध्युष्णे मधु त्यक्त्वा कार्यैषार्द्रकजै रसैः १६०

(३० अष्टांगावलेहिका) कायफल पौहकरमूल काकडाशींगी सोंठ मिरच पीपल धमासा कलोंजी इन्होंकों मिहीन चूरण कर शहदमें मिला चाटै । यह अवलेहिका अर्थात् चटनी दारुण सन्निपात हिचकी श्वास खांसी कंठरोग इन्होंकों दूर करती है । ऊपरके अंगोंका कफ हरनेमें गरम कर्तव्यरूपी स्वेद आदि कर्ममें विरोधी कर्म पदार्थमें शहदका त्याग कर अदरकके रससें चटनी बनानी ।

(३१) यवकोलकुलत्थानां मुद्गमूलकखण्डयोः ।
एकैकमुष्टिमाहृत्य पचेदष्टगुणे जले ॥ १६१ ॥
पञ्चमुष्टिक इत्येष वातपित्तकफापहः ।
शस्यते गुल्मशूले च श्वासे कासे क्षये ज्वरे१६२

(३१ पंचमुष्टिकः) जव बेर कुलथी मूंग मू-लीका टुकडा इनकी एक एक मूठी लेकै आठगुना पानी-में पकावे । यह पंचमुष्टिक वात पित्त कफ इनकों नाशता है और गल्म शूल श्वास खांसी क्षय ज्वर इन्होंमें श्रेष्ठ है ।

(३२) पञ्चमूलीकिरातादिर्गणो योज्यस्त्रिदोषजे ।
पित्तोत्कटे च मधुना कणया च कफोत्कटे १६३

(३२ चातुर्भद्रकपंचमूलम्) पंचमूल और कि-रात आदि गणकों पित्तकी अधिकतावाले त्रिदोषमें शह-दके संग और कफकी अधिकतावाले त्रिदोषमें पीपलके संग देवै ।

(३३)बिल्वस्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिकाः।
दीपनं कफवातघ्नं पञ्चमूलमिदं महत् ॥ १६४ ॥
शालिपर्णी पृश्निपर्णी बृहतीद्वयगोक्षुरम् ।
वातपित्तहरं वृष्यं कनीयः पञ्चमूलकम् ॥१६५॥
उभयं दशमूलं तु सन्निपातज्वरापहम् ।
कासे श्वासे च तन्द्रायां पार्श्वशूले च शस्यते ।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तं कण्ठहृद्ग्रहनाशनम् ॥१६६॥

(३३ दशमूलगणः) वेलवृक्षकी जड सोनापाठा गंभारी पाटला गारनी यह बृहत्पंचमूल दीपन है कफ और वातकों हरता है । शालपर्णी पृष्ठपर्णी दोनों कटेली गोखरू यह लघुपंचमूल वातपित्तकों हरता है वीर्यमें हित है । ये दोनों मिलकै दशमूल होता है यह सन्निपातज्वरकों हरता है और खांसी श्वास तंद्रा पसलीशूल इन्होंमें श्रेष्ठ है । पीपलका चूरणसें संयुक्त किया दशमूल कंठ और हृदयग्रह अर्थात् जकडबंधपनाकों हरता है ।

(३४) चिरज्वरे वातकफोल्बणे वा
त्रिदोषजे वा दशमूलमिश्रः ।
किराततिक्तादिगणः प्रयोज्यः
शुद्ध्यर्थिने वा त्रिवृताविमिश्रः ॥ १६७ ॥

(३४ चतुर्दशांगः) पुराना ज्वरमें अथवा वातकफकी आधिकतावाला ज्वरमें अथवा त्रिदोषज ज्वरमें दशमूलसें मिला किराततिक्तादिगण प्रयुक्त करना और शोधन करनेके अर्थ निशोत मिलाके प्रयुक्त करना ।

(३५) दशमूली शठी शृङ्गी पौष्करं सदुरालभम् ।
भार्गी कुटजबीजं च पटोलं कटुरोहिणी ॥१६८॥
अष्टादशाङ्ग इत्येष सन्निपातज्वरापहः ।
कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वासहिक्कावमीहरः ॥१६९॥
भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्द-
तिक्तेन्द्रबीजधनिकेभकणाकषायः ।
तन्द्रीप्रलापकसनारुचिदाहमोह-
श्वासादियुक्तमखिलं ज्वरमाशु हन्ति ॥१७०॥

(३५ अष्टादशांगगणः) दशमूल कचूर काकडाशिंगी पौहकरमूल धमासा भारंगी इंद्रजव परवल कुटकी यह अष्टादशांग सन्निपातज्वर खांसी हृद्ग्रह पसलीपीडा श्वास हिचकी छर्दि इनकों नाशता है । भूनिंब दारुहलदी दशमूल सोंठ मोथ कुटकी इंद्रजव धन्याक गजपीपल इनका काढा अति निद्रा अति बहकना कास अरुचि दाह मोह श्वास इन विकारोंसें युक्त सब प्रकारके ज्वरकों शीघ्र नाश करता है ।

(३६) मुस्तपर्पटकोशीरदेवदारुमहौषधम् ।
त्रिफलाधन्वयासश्च नीलीकम्पिल्लकं त्रिवृत् १७१
किराततिक्तकं पाठा बला कटुकरोहिणी ।
मधुकं पिप्पलीमूलं मुस्ताद्यो गण उच्यते १७२
अष्टादशाङ्गमुदितमेतद्वा सन्निपातनुत् ।
पित्तोत्तरे सन्निपाते हितं चोक्तं मनीषिभिः ॥
मन्यास्तम्भे उरोघाते उरःपार्श्वशिरोग्रहे ॥१७३॥

(३६ मुस्तादिगणः) नागरमोथा पित्तपापडा खस देवदार सोंठ त्रिफला धमासा नील कपिला निशोत चिरायता पाठा खरैंहटी कुटकी मुलहटी पीपलामूल यह मुस्तादिगण कहाता है । पूर्वोक्त अष्टादशांग अथवा यह मुस्तादिगण सन्निपातकों हरता है । पित्तकी अधिकतावाले सन्निपातमें और मन्यास्तंभ उरोघात उरोग्रह पार्श्वग्रह शिरोग्रह इन्होंमें बुद्धिमानोंनें हित कहा है ।

(३७) शठीपुष्करमूलं च व्याघ्री शृङ्गी दुरालभा ।
गुडूची नागरं पाठा किरातं कटुरोहिणी १७४
एष शठ्यादिको वर्गः सन्निपातज्वरापहः ।
कासहृद्ग्रहपार्श्वार्तिश्वासे तन्द्रयां च शस्यते १७५

(३७ शठ्यादिगणः) कचूर पोहकरमूल कटेली काकडाशींगी धमासा गिलोय सोंठ पाठा चिरायता कुटकी यह शठ्यादिगण सन्निपातज्वरकों नाशता है और उपद्रवोंसहित खांसी आदि सब रोगोंमें यह देना ।

(३८) बृहत्यौ पुष्करं भार्गी शठी शृङ्गी दुरालभा ।
वत्सकस्य च बीजानि पटोलं कटुरोहिणी १७६
बृहत्यादिर्गणः प्रोक्तः सन्निपातज्वरापहः ।
कासादिषु च सर्वेषु देयः सोपद्रवेषु च ॥१७७॥

(३८ बृहत्यादिगणः) दोनों कटेली पौहकरमूल भारंगी कचूर धमासा इंद्रजव परवल कुटकी यह बृहत्यादिवर्ग सन्निपातज्वरकों हरता है और उपद्रवोंसहित सब प्रकारकी खांसी आदि रोगोंमें देना ।

(३९)भार्गी पुष्करमूलं च रास्नां बिल्वं यवानिकाम्
नागरं दशमूलं च पिप्पलीं चाप्सु साधयेत् १७८
सन्निपातज्वरे देयं हृत्पार्श्वानाहशूलिनाम् ।
कासश्वासाग्निमन्दत्वं तन्द्रीं च विनिवर्तयेत् ॥
द्विपञ्चमूली षड्ग्रन्था विश्वगृध्रनखीद्वयात् ।
कफवातहरः क्वाथः सन्निपातहरः परः ॥१८०॥
कारवीपुष्करैरण्डत्रायन्तीनागरामृताः ।
दशमूलीशठीशृङ्गीयासभार्गीपुनर्नवाः ॥ १८१ ॥
तुल्या मूत्रेण निःक्वाथ्य पीताः स्रोतोविशोधनाः ।
अभिन्यासज्वरं घोरमाशु घ्नन्ति समुद्धतम् १८२
मातुलुङ्गाश्वभिद्बिल्वव्याघ्रीपाठोरुबूकजः ।
क्वाथो लवणमूत्राढ्योऽभिन्यासानाहशूलनुत् १८३
निद्रोपेतमभिन्यासं क्षीणं विद्याद्धतौजसम् ।
कण्ठरोधकफश्वासहिक्कासंन्यासपीडितः ॥१८४॥
मातुलुङ्गार्द्रकरसं दशमूलाम्भसा पिबेत् ।
व्योषाब्दत्रिफलातिक्तापटोलारिष्टवासकैः १८५
सभूनिम्बामृतायासैस्त्रिदोषज्वरनुज्जलम् ।

(३९ संनिपाते भेषजादि) भारंगी पोहकरमूल रास्ना बेलवृक्षकी जड अजमान सोंठ दशमूल पीपल इन्होंकों पानीमें साधै । हृदय पसली अफारा शूल इनरोगवालोंके सन्निपातज्वरमें देना और खांसी श्वास मंदाग्नि तंद्रा इनकों दूर करता है । दशमूल वच सोंठ दोनों प्रकारकी

बडवेरी यह क्वाथ कफवातकों और सन्निपातकों हरता है। अजमोद पोहकरमूल अरंड त्रायमाण सोंठ गिलोय दशमूल कचूर काकडाशींगी धमासा भारंगीं सांठी ये सब बराबर भाग ले गोमूत्रमें क्वाथ बना पीवै ये स्त्रोतोंकों शोधते हैं और दारुणरूपी तथा बढे हुए अभिन्यासज्वरकों शीघ्र नाशते हैं। विजोरा कनेर बेलवृक्षकी जड कटेली पाठा अरंडकी जड इन्होंका क्वाथ बना तिसमें सेंधानमक और गोमूत्र डाल देवै तो अभिन्यासज्वर अफारा शूल इन्होंका नाश होता है। नींदकरकै संयुक्त हुआ अभिन्यासकों हतौजस ओर क्षीण जानना। कंठका रुकना कफ श्वास हिचकी संन्यास इन्होंसें पीडित हुआ मनुष्य विजोराके रसकों दशमूलके रसमें मिला पीवै। सोंठ मिरच पीपल त्रिफला कुटकी परवल नींब वांसा चिरायता गिलोय धमासा इन्होंका क्वाथ त्रिदोषज ज्वरकों हरता है।

(४०) त्रिवृद्विशालात्रिफला कटुकारग्वधैः कृतः सक्षारो भेदनः क्वाथः पेयः सर्वज्वरापहः ।
स्वेदोद्गमे ज्वरे देयश्चूर्णो भृष्टकुलत्थजः ॥१८७॥
घर्षेज्जिह्वां जडां सिन्धुत्र्यूषणैः साम्लवेतसैः ।
उच्छुष्कां स्फुटितां जिह्वां द्राक्षया मधुपिष्टया १८८
लेपयेत्सघृतं चास्यं सन्निपातात्मके ज्वरे ।
काकजङ्घा जटा निद्रां जनयेच्छिरसि स्थिता १८९
सन्निपाते प्रकम्पन्तं प्रलपन्तं न बृंहयेत् ।
तृष्णादाहाभिभूतेऽपि न दद्याच्छीतलं जलम् १९०
सन्निपातज्वरस्यान्ते कर्णमूले सुदारुणः ।
शोथः संजायते तेन कश्चिदेव प्रमुच्यते ॥१९१॥
रक्तावसेचनैः पूर्वं सर्पिःपानैश्च तं जयेत् ।
प्रदेहैः कफपित्तघ्नैर्वमनैः कवलग्रहैः ॥ १९२ ॥
गैरिकं पांशुकं शुण्ठीवचाकटुककाञ्जिकैः ।
कर्णशोथहरो लेपः सन्निपातज्वरे भृशम् १९३
कुलत्थकट्फले शुण्ठी कारवी च समांशकैः ।
सुखोष्णैर्लेपनं कार्यं कर्णमूले मुहुर्मुहुः ॥ १९४ ॥

(४० संनिपाते त्रिवृदादयोऽन्ये क्वाथाः) निशोत इंद्रायण त्रिफला कुटकी अमलतास इन्होंका क्वाथमें जवाखार मिला पीवै तो दस्त पतला होता है और सब प्रकारका ज्वर नष्ट होता है। त्रिदोषज ज्वरमें पसीना आवै तो भूनीहुई कुलथीके चूरणकी मालिस करै जड हुई जीभकों सेंधानमक सोंठ मिरच पीपल अम्लवेतस इन्होंसें मलै अत्यंत सूखी हुई और फटी हुई जीभकों शहदमें दाखोंकों पीस घृतसें चुपडा हुआ मुखवालेकों सन्निपातज्वरमें लेप करै। काकजंघाकी जडका शिरपर स्थित करै तो नींदकों उपजाती है सन्निपातविषै कांपता हुआकों और बकवाद करताहुआकों पुष्ट ओषध नहीं देना। तृषा औ दाहसें संयुक्त होनेमें शीतल पानी नहीं देना। संनिपातज्वरके अंतमें कानकी जडविषै दारुण शोजा उपजै तो तिसकरकै कोईक मनुष्य बचता है। रक्तकों निकासनेकरकै और घृतके पीनेकरकै तिस कानका शोजाकों जीतै और कफपित्तकों नाशनेवाले लेप वमन ग्रास इन्होंसें जीतै। गेरू भीमसेनी कपूर सोंठ वच कंकोल कांजी इन्होंसें सन्निपातज्वरमें किया लेप कानका शोजाकों शीघ्र हरता है। कुलथी कायफळ सोंठ कलोंजी ये सब बराबर भाग ले पानीमें पीस अल्प गरम कर कर्णमूलपर वारंवार लेप करना। यहां सन्निपातज्वरकी चिकित्सा समाप्त हुई।

(४१) निदिग्धिकानागरकामृतानां
क्वाथं पिवेन्मिश्रितपिप्पलीकम् ।
जीर्णज्वरारोचककासशूल-
श्वासाग्निमान्द्यार्दितपीनसेषु ॥ १९५ ॥
हन्त्यूर्ध्वगामयं प्रायः सायं तेनोपयुज्यते ।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः क्वाथश्छिन्नरुहोद्भवः १९६
जीर्णज्वरकफध्वंसी पञ्चमूलीकृतोऽथवा ।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुक्रिमिरोगनुत्
जीर्णे ज्वरेऽग्निसादे च शस्यते गुडपिप्पली ।
कलिङ्गकाः पटोलस्य पत्रं कटुकरोहिणी ॥१९८॥
पटोलं शारिवा मुस्तं पाठा कटुकरोहिणी ।
निम्बं पटोलं त्रिफला मृद्वीका मुस्तवत्सकौ १९९
किराततिक्तममृता चन्दनं विश्वभेषजम् ।
गुडूच्यामलकं मुस्तमर्धश्लोकसमापनाः ॥२००॥
कषायाः शमयन्त्याशु पञ्च पञ्च विधाञ्ज्वरान् ।
सन्ततं सततान्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकान् ॥२०१॥
गुडप्रगाढां त्रिफलां पिवेद्वा विषमार्दितः ।
दीर्घपत्रककर्णाख्यं नेत्रं खदिरसंयुतम् ॥२०२॥
ताम्बूलैस्तद्दिने भुक्तं प्रातर्विषमनाशनम् ।
गुडूचीमुस्तधात्रीणां कषायं वा समाक्षिकम् २०३

(४१ निदिग्धिकादिगणः) कटेली सोंठ गि-

लोय इन्होंका क्वाथ बनाय तिसमें पीपलका चूरण मिला पीवै तो जीर्णज्वर अरोचक खांसी शूल श्वास मंदाग्नि अर्दितरोग पीनस इन्होंमें हित होता है । और प्रायताकरकै उपरले अंगोंके रोगोंकों नाशता है इस कारणसें सायंकालमें प्रयुक्त करना । गिलोयका क्वाथमें पीपलका चूरण मिला पीवै अथवा दशमूलके क्वाथमें पीपलका चूरण मिला पीवै तो जीर्णज्वर और कफका नाश होता है । और खांसी अजीर्ण अरुचि श्वास पांडु कृमिरोग इनकों नाशता है जीर्णज्वरमें और मंदाग्निमें गुडपिप्पली अर्थात् गुडसहित पीपल श्रेष्ठ है । इंद्रजव परवलके पत्ते कुटकी १ परवल शारिवा नागरमोथा पाठा कुटकी २ नींब परवल त्रिफला मुनक्का नागरमोथा कूडाकी छाल ३ चिरायता गिलोय लालचंदन सोंठ ४ गिलोय आंवला नागरमोथा ५ आधा आधा श्लोकमें समाप्त होनेवाले पांच क्वाथ पांच प्रकारके ज्वरोंकों शीघ्र शांत करते हैं । संतत सतत आन्येद्यु तृतीयक चतुर्थक ये पांच प्रकारके विषमज्वर हैं अथवा विषमज्वरसें पीडित हुआ मनुष्य गुडसें संयुक्त करी त्रिफलाकों पीवै । ल्हसन दालचिनी खैरकी जड इनकों नागरपानका टुकडामें धरकै प्रातःकाल खावै यह विषमज्वरकों नाशता है । अथवा गिलोय नागरमोथा आंवला इन्होंका क्वाथमें शहद मिला पीवै तो विषमज्वर दूर होताहै ।

(४२) मुस्तामलकगुडूची-
विश्वौषधकण्टकारिकाक्वाथः ।
पीतः सकणाचूर्णः
समधुर्विषमज्वरं हन्ति ॥ २०४ ॥
महौषधामृतामुस्तचन्दनोशीरधान्यकैः ।
क्वाथस्तृतीयकं हन्ति शर्करामधुयोजितः ॥२०५॥
वासाधात्र्युशीरादारुपथ्यानागरसाधितः ।
सितामधुयुतः क्वाथश्चातुर्थकनिवारणः ॥ २०६ ॥
मधुना सर्वज्वरनुच्छेफालीदलजो रसः ।
अजाजी गुडसंयुक्ता विषमज्वरनाशिनी ।
अग्निसादं जयेत्सम्यक् वातरोगांश्च नाशयेत्२०७
रसोनकल्कं तिलतैलमिश्रं
योऽश्नाति नित्यं विषमज्वरार्तः ।
विमुच्यते सोऽप्यचिराज्ज्वरेण
वातामयैश्चापि सुघोररूपैः ॥ २०८ ॥

प्रातः प्रातः ससर्पिर्वा रसोनमुपयोजयेत् ।
पिप्पलीं वर्धमानां वा पिबेत्क्षीररसाशनः २०९
षट्पलं वा पिबेत्सर्पिः पथ्यां वा मधुना पिबेत् ।
पयस्तैलं घृतं चैव विदारीक्षुरसं मधु ॥ २१० ॥
समर्घ पाययेदेतद्विषमज्वरनाशनम् ।
पिप्पली शर्करा क्षौद्रं घृतं क्षीरं यथाबलम्॥२११॥
खजेन मथितं पेयं विषमज्वरनाशनम् ।
पयसा वृषदंशस्य शकृद्वेगागमे पिबेत् ॥ २१२ ॥
वृषस्य दधिमण्डेन सुरया वा ससैन्धवम् ।
नीलिनीमजगन्धां च त्रिवृतां कटुरोहिणीम्२१३
पिबेज्ज्वरस्यागमने स्नेहस्वेदोपपादितः ।
सुरां समण्डां पानार्थे भक्षार्थे चरणायुधान्२१४
तित्तिरींश्च मयूरांश्च प्रयुञ्ज्याद्विषमज्वरे ।
अम्लोटजसहस्रेण दलेन सुकृतां पिबेत् ॥२१५॥
पेयां घृतप्लुतां जन्तुश्चातुर्थकहरां त्र्यहम् ।
सैन्धवं पिप्पलीनां च तण्डुलाः समनःशिलाः२१६
नेत्राञ्जनं तैलपिष्टं विषमज्वरनाशनम् ।
व्याघ्रीरसाहिङ्गुसमा नस्यं तद्वत्ससैन्धवा २१७
कृष्णाम्बरदृढावद्धं गुग्गुलूलूकपुच्छजः ।
धूपश्चातुर्थकं हन्ति तमः सूर्य इवोदितः ॥२१८॥
शिरीषपुष्पस्वरसो रजनीद्वयसंयुतः ।
नस्यं सर्पिःसमायोगाच्चातुर्थकज्वरं जयेत् २१९

(४२ मुस्तकादिगणः) नागरमोथा आंवला गिलोय सोंठ कटेली इन्होंका क्वाथमें पीपलाका चूरण और शहद मिला पीवै तो विषमज्वरका नाश होता है । सोंठ गिलोय नागरमोथा लालचंदन खस धनियां इन्होंका क्वाथमें खांड और शहद मिला पीवै तो तृतीयकज्वरका नाश होता है । वांसा आंवला शालपर्णी देवदार हरडै सोंठ इन्होंसें सिद्ध किया और मिश्री शहदसें संयुक्त किया क्वाथ चातुर्थक ज्वरकों नाशता है । संभालूकी छालके रसमें शहद मिला पीवै अथवा गुडमें जीराके चूरणकों मिला खावै तो विषमज्वरका नाश होता है । मंदाग्निकों अच्छीतरह जीतता है और वातके रोगोंकों नाशता है । विषमज्वरसें पीडित हुआ जो मनुष्य ल्हसनके कल्कमें तिलोंका तेल मिला नित्यप्रति खावै वह विषमज्वरसें और घोररूपी वातरोगोंसें छुट जाता है । प्रातःकालमें नित्यप्रति घृतसहित ल्हसनकों खावै अथवा दूधकों और मांसके रसकों खानेवाला वि-

षमज्वरी वर्धमानपिप्पलीकों पीवै अथवा षट्पल घृतकों पीवै अथवा हरडैकों शहदके संग चाटै अथवा दूध तेल घृत विदारीकंदका रस ईखका रस शहद इनकों मूर्च्छितकर पीवै यह विषमज्वरकों नाशता है । पीपल खांड शहद घृत दूध इनकों बलके अनुसार मंथासें मथकर पीवै यह विषमज्वरकों नाशता है । बिल्लीके विष्ठाकों दूधमें मिला विषमज्वरकों वेगके आगमनमें पीवै अथवा बैलके गोवरकों सेंधानमकसें मिला दहीका पानीके संग अथवा मदिराके संग पीवै । नील रानतुलसी निशोत कुटकी इन्होंके काथकों स्नेह और स्वेदसें उपपादित हुआ मनुष्य ज्वरके आगमनमें पीवै । पीनेमें मंडसहित मदिराकों पीवै खानेमें मुर्गाके मांसकों खावै तीतर और मोरके मांसकोंभी विषमज्वरसें प्रयुक्त करै । शाखोट वृक्षके हजार पत्तोंकरकै पेया बना तिसमें घृत मिला तीनदिन मनुष्य पीवै यह चातुर्थकज्वरकों नाशती है । सेंधानमक पीपलके दाने मनशिल इनकों तेलमें पीस नेत्रमें आंजै तो विषमज्वरका नाश होता है । कटेली पाठाकी जड हींग सेंधानमक इन्होंकों तेलमें पीस नस्य देवै तो विषमज्वरका नाश होता है । काला कपडामें गूगल और उल्लूका पुच्छ करडा बांधकै । दिया धूप चातुर्थकज्वरकों हरता है जैसे सूर्य अंधेराकों । शिरसके पुष्पका स्वरसमें हलदी और दारुहलदी मिलाकै घृतके संग दिया नस्य चातुर्थकज्वरकों जीतता है । अथवा अगस्त्यवृक्षके पत्ताका रसका नस्य चातुर्थकज्वरकों नाशता है ।

(४३) नस्यं चातुर्थकं हन्ति रसो वागस्त्यपत्रजः।
पलङ्कषा निम्बपत्रं वचा कुष्ठं हरीतकी ॥२२०॥
सर्षपाः सयवाः सर्पिर्धूपनं ज्वरनाशनम् ।
पुरध्यामवचासर्जनिम्बार्कागुरुदारुभिः ॥२२१॥
सर्वज्वरहरो धूपः कार्योऽयमपराजितः ।
बैडालं वा शकृद्योज्यं वेपमानस्य धूपने ॥२२२॥
अपामार्गजटा कट्यां लोहितैः सप्ततन्तुभिः ।
बद्धा वारे रवेस्तूर्णं ज्वरं हन्ति तृतीयकम् २२३
काकजङ्घा वला श्यामा ब्रह्मदण्डा कृताञ्जलिः ।
पृश्निपर्णी त्वपामार्गस्तथा भृङ्गरजोऽष्टमः ॥२२४॥
एपामन्यतनं मूलं पुष्पेणोद्धृत्य यत्नतः ।
रक्तसूत्रेण संवेष्ट्य बद्धमैकाहिकं जयेत् ॥ २२५ ॥
मूलं जयन्त्याः शिरसा धृतं सर्वज्वरापहम् ।
कर्मसाधारणं जह्यात्तृतीयकचतुर्थकौ ॥ २२६ ॥
आगन्तुरनुबन्धी हि प्रायशो विषमज्वरे।

(४३ अष्टांगधूपः) कणा गूगल नींबके पत्ते वच कूट हरडै सिरसम इंद्रजव घृत इन्होंका धूप ज्वरकों नाशता है । यह अष्टांगधूप है । गूगल रोहिषतृण वच राल नींब आक देवदार इन्होंका धूप सब प्रकारके ज्वरोंकों हरता है यह अपराजित धूप है । ज्वरसें कांपता हुआ मनुष्यकै धूप देनेमें बिलावकी विष्ठा प्रयुक्त करना । ऊंगाकी जडकों सात लालतागोंसें बांध रविवारके दिन कटिपर बांधै तो तृतीयकज्वर शीघ्र नष्ट होता है । काकजंघा अर्थात् मकोहविशेष खरैंहटी निशोत ब्रह्मदंडा पृश्निपर्णी ऊंगा भंगराका चूरण इन्होंमांहसें एक कोईसाकी जडकों पुष्य नक्षत्रमें जतनसें उखाड लालसूत्रसें वेष्टित कर बांधनेसें एकाहिकज्वर नष्ट होता है । अरनीकी जडकों शिरपर धारण करै तो सब प्रकारके ज्वर नष्ट होते हैं । तृतीयक और चातुर्थक ज्वरमें साधारण कर्मका त्याग करना । विशेषकरकै आगंतुक ज्वरभी विषमज्वरमें गिना जाता है ।

(४४)गङ्गाया उत्तरे कूले अपुत्रस्तापसो मृतः२२७
तस्मै तिलोदकं दद्यान्मुच्यत्येकाहिको ज्वरः ।
एतन्मन्त्रेण चाश्वत्थपत्रहस्तः प्रतर्पयेत् ॥ २२८ ॥
सोमं सानुचरं देवं समातृगणमीश्वरम् ।
पूजयन्प्रयतः शीघ्रं मुच्यते विषमज्वरात् ॥२२९॥
विष्णुं सहस्रमूर्धानं चराचरपतिं विभुम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण ज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥२३०॥

(४४ एकाहादि ज्वरनाशनमंत्रादि) गंगाजीके उत्तरतीरपर पुत्रसें रहित तपस्वी मरा है तिसकों तिलांजलि देवै तो एकाहिकज्वरसें मनुष्य छुटै । इस मंत्रकरकै पीपलका पत्ताकों हाथमें लेकै तर्पण करना । उमासहित अनुचरोंसहित मातृगणसहित ऐसे ईश्वर देवकी प्रभातमें पूजा करै तो विषमज्वरसें शीघ्र छुटता है । हजार मस्तकोंवाले चर और अचरके पति और समर्थ ऐसे विष्णुकी सहस्रनामसें स्तुति करै तो सबप्रकारके ज्वर शांत होते हैं ।

(४५) ज्वराः कषायैर्वमनैर्लङ्घनैर्लघुभोजनैः ।
रूक्षस्य येन शाम्यन्ति सर्पिस्तेषां भिषग्जितम्२३१

निर्दशाहमपि ज्ञात्वा कफोत्तरमलङ्घितम् ।
न सर्पिः पाययेत्प्राज्ञः शमनैस्तमुपाचरेत् २३२

(४५ काथाद्यैरगुणे घृतादि) क्काथ वमन लंघन हलका भोजन इन्होंसें रूक्ष मनुष्यका ज्वर शांत नहीं होवै तब घृतके देनेसें शांत होता है । कफकी अधिकतावाला और लंघनसें रहित ऐसे ज्वरवालाकों दशदिनसें उपरंत जानकै वैद्य घृतका पान नहीं करावे किंतु शमन औषधोंसें तिस ज्वरकी चिकित्सा करै ।

(४६) यावल्लघुत्वादशनं दद्यान्मांसरसेन तु ।
मांसार्थमेणलावादीन्युक्त्या दद्याद्विचक्षणः २३३
कुक्कुटांश्च मयूरांश्च तित्तिरिं क्रौञ्चमेव च ।
गुरूष्णत्वान्न शंसन्ति ज्वरे केचिच्चिकित्सकाः३४
लङ्घनेनानिलबलं ज्वरे यद्यधिकं भवेत् ।
भिषङ्मात्राविकल्पज्ञो दद्यात्तानपि कालवित्२३५
पिप्पल्यश्चन्दनं मुस्तमुशीरं कटुरोहिणी ।
कलिङ्गकास्तामलकी शारिवातिविषे स्थिरा२३६
द्राक्षामलकबिल्वानि त्रायमाणा निदिग्धिका ।
सिद्धमेतैर्घृतं सद्यो ज्वरं जीर्णमपोहति ॥२३७॥
क्षयं कासं शिरःशूलं पार्श्वशूलं हलीमकम् ।
अङ्गाभितापमग्निं च विषमं सन्नियच्छति २३८
पिप्पल्याद्यमिदं क्वापि तन्त्रे क्षीरेण पच्यते ।
यत्राधिकरणे नोक्तिर्गणे स्यात्स्नेहसंविधौ॥२३९॥
तत्रैव कल्कनिर्यूहाविष्येते स्नेहवेदिना ।
एतद्वाक्यबलेनैव कल्कसाध्यं परं घृतम् ॥२४०॥

(४६ विहितमांसादि) जितना हलका भोजन हो वह मांसका रसके साथ देवै और मांस खानेकी इच्छा हो तो मृग और लावा आदिकों युक्तिसें देवै। मुर्गा मोर तीतर कूज इन्होंके मांस भारी है इसकारणसें कितनेक वैद्य ज्वरमें देना नहीं चाहते । लंघन करकै ज्वरमें वायुका अधिक बल होवै तो मात्रा विकल्पकों जाननेवाला और कालकों जाननेवाला वैद्य मुर्गा आदिके भारी मांसकोंभी देवै । पीपल लालचंदन नागरमोथा खस कुटकी इंद्रजव स्याह मुसली शारिवा अतीस शालपर्णी । दाख आंवला बेलगिरी त्रायमाण कटेली इन्होंसें सिद्ध किया घृत जीर्णज्वरकों शीघ्र दूर करता है । और क्षय खांसी शिरका शूल पसलीशूल हलीमक अंगाभिताप विषमाग्नि इनकों दूर करता है । यह पिप्पल्यादि किसीक ग्रंथमें दूधसें पकाया जाता है जहां स्नेहविधानमें गणविषै अधिकरणमें वचन नहीं कहा हो तो तहां स्नेहकों जाननेवालाने कल्क और निर्यूह लेने । इस वाक्यके बलकरकै कल्कसाध्य घृत होता है ।

(४७) जलस्नेहौषधानां तु प्रमाणं यत्र नेरितम् ।
तत्र स्यादौषधात्स्नेहः स्नेहात्तोयं चतुर्गुणम् २४१
अनुक्ते द्रवकार्ये तु सर्वत्र सलिलं मतम् ।
घृततैलगुडादींश्च नैकाहादवतारयेत् ॥ २४२ ॥
व्युषितास्तु प्रकुर्वन्ति विशेषेण गुणान्यतः ।
स्नेहकल्को यदाङ्गुल्यावर्तितो वर्तिवद्भवेत् २४३
वह्नौ क्षिप्ते च नो शब्दस्तदा सिद्धिं विनिर्दिशेत्।
शब्देऽप्युपरमं प्राप्ते फेनस्योपरमे तथा ॥२४४॥
गन्धवर्णरसादीनां सम्पत्तौ सिद्धिमादिशेत् ।

(४७ जलादिप्रमाणाभाव) जहां पानी स्नेह औषध इन्होंका प्रमाण नहीं कहा है तहां औषधसें स्नेह और स्नेहसें पानी चौगुना लेना । जहां द्रवका नाम नहीं कहा है तहां सब जगह पानी लेना घृत तेल और गुड आदिकों एकदिनमें सिद्ध नहीं करै । एकदिनके अंतरसें किये विशेषरकै गुणोंकों करते हैं । जो स्नेहका कल्क अंगुलिसें आवर्तित किया बत्तीकी तरह हो जाता है और अग्निविषै गेरनेसें शब्दकों नहीं करै तब सिद्धि कहनी । शब्द शांत हो जावै और झागभी शांत हो जावै और गंध वर्ण रस इन आदिकी उत्पत्ति होवै तब सिद्धि कहनी ।

(४८)पञ्चकोलैः ससिन्धूत्थैः पलिकैः पयसा समम्
सर्पिःप्रस्थं शृतं प्लीहविषमज्वरगुल्मनुत् ।
अत्र द्रवान्तरानुक्ते क्षीरमेव चतुर्गुणम् ॥२४६॥
द्रवान्तरेण योगे हि क्षीरं स्नेहसमं भवेत् ।

(४८ क्षीरषट्पलकं घृतम्) पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ सेंधानमक ये चार चार तोले दूध और घृत चौंसठ चौंसठ तोले इन सबकों मिला घृतकों सिद्ध करै यह तिल्लीरोग विषमज्वर गुल्म इनकों नाशता है । यहां दूसरा द्रवपदार्थकों नहीं कहनेमें दूधही चौगुना लेना और दूसरा द्रवका योग हो तों स्नेहके बराबर दूध लेना ।

(४९) दशमूलीरसे सर्पिः सक्षीरे पञ्चकोलकैः
सक्षारैर्हन्ति तत्सर्वं ज्वरकासाग्निमन्दताः ।
वातपित्तकफव्याधीन्प्लीहानं चापि पाण्डुताम् ४८
काथ्याच्चतुर्गुणं वारि पादस्थं स्याच्चतुर्गुणम् ।
स्नेहात्स्नेहसमं क्षीरं कल्कस्तु स्नेहपादिकः २४९
चतुर्गुणं त्वष्टगुणं द्रवद्वैगुण्यतो भवेत् ।
पञ्चप्रभृति यत्र स्युर्द्रवाणि स्नेहसंविधौ ॥२५०॥
तत्र स्नेहसमान्याहुरर्वाक्च स्याच्चतुर्गुणम् ।

(४९ दशमूलषट्पलकं घृतम्) दशमूलका सर दूध पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ जवाखार इन्होंमें सिद्ध किया घृत ज्वर खांसी मंदाग्नि इन्होंकों और वातरोग पित्तरोग कफरोग तिल्लीरोग पांडुरोग इनकों नाशता है । यह दशमूल षट्पलकघृत है । काथके योग्यसें चौगुना पानी ले और पकनेमें चौथाई भाग शेष रहै तब स्नेहसें चौगुना लेवै स्नेह और दूध बराबर लेवै और स्नेहसें चौथाई भाग कल्क लेवै । और द्रवके दुगुनेपनेसें आठगुण लेवै जहां द्रवके विधानसें पांचसें आदि लेके होवै तहां स्नेहके समान कहे है और पहले चौगुना है ।

(५०) वासां गुडूचीं त्रिफलां त्रायमाणां यवासकम्
पक्त्वा तेन कषायेण पयसा द्विगुणेन च॥२५१॥
पिप्पलीमलमृद्वीकाचन्दनोत्पलनागरैः ।
कल्कीकृतैश्च विपचेद्धृतं जीर्णज्वरापहम् ॥२५२॥

(५० वासाद्यं घृतम्) वांसा गिलोय त्रिफला त्रायमाण धमासा इनका काथ बना और दुगुना दूध मिलाय । पीपल आंवला मुनक्का लालचंदन कमल सोंठ इन्होंका कल्क बना तिसमें घृतकों पकावै यह जीर्णज्वरकों नाशता है ।

(५१)गुडूच्याःकाथकल्काभ्यां त्रिफलायावृषस्य च
मृद्वीकाया बलायाश्च सिद्धाः स्नेहा ज्वरच्छिदः
ज्वरे पेयाः कषायाश्च सर्पिः क्षीरं विरेचनम् ।
षडहे षडहे देयं कालं वीक्ष्यामयस्य च ॥२५४॥
जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीरं स्यादमृतोपमम् ।
तदेव तरुणे पीतं विषवद्धन्ति मानवम् ॥२५५॥
कासाच्छ्वासाच्छिरःशूलात्पार्श्वशूलात्सपीनसात्
मुच्यते ज्वरितः पीत्वा पञ्चमूलीशृतं पयः २५६
द्रव्यादष्टगुणं क्षीरं क्षीरात्तोयं चतुर्गुणम् ।
क्षीरावशेषः कर्तव्यः क्षीरपाके त्वयं विधिः२५७
त्रिकण्टकबलाबिल्वगुडनागरसाधितम् ।
वर्चोमूत्रविबन्धघ्नं शोथज्वरहरं पयः ॥ २५८ ॥
वृश्चीरविश्ववर्षाभूपयश्चोदकमेव च ।
पचेत्क्षीरावशिष्टं तु तद्धि सर्वज्वरापहम्॥२५९॥
शीतं कोष्णं ज्वरे क्षीरं यथा स्वैरौषधैर्युतम् ।
एरण्डमूलसिद्धं वा ज्वरे सपरिकर्तिके ॥ २६० ॥
ज्वरिभ्यो बहुदोषेभ्य ऊर्ध्वं चाधश्च बुद्धिमान् ।
दद्यात्संशोधनं काले कल्पे यदुपदेक्ष्यते ॥२६१॥
मदनं पिप्पलीभिर्वा कलिङ्गैर्मधुकेन वा ।
युक्तमुष्णाम्बुना पीतं वमनं ज्वरशान्तये॥२६२॥
आरग्वधं वा पयसा मृद्वीकानां रसेन वा ।
त्रिवृतां त्रायमाणां वा पयसा ज्वरितः पिबेत्२६३
ज्वरक्षीणस्य न हितं वमनं न विरेचनम् ।
कामं तु पयसा तस्य निरूहैर्वा हरेन्मलान्२६४
प्रयोजयेज्ज्वरहरान्निरूहान्सानुवासनान् ।
पक्वाशयगते दोषे वक्ष्यन्ते ये च सिद्धिषु॥२६५॥
गौरवे शिरसः शूले विबद्धेष्विन्द्रियेषु च ।
जीर्णज्वरे रुचिकरं दद्याच्छीर्षविरेचनम् ॥२६६॥
अभ्यङ्गांश्च प्रदेहांश्च सस्नेहान्सानुवासनान् ।
विभज्य शीतोष्णकृतान्दद्याज्जीर्णज्वरे भिषक्२६७
तैराशु प्रशमं याति बहिर्मार्गगतो ज्वरः ।
लभन्ते सुखमङ्गानि बलं वर्णश्च वर्धते ॥ २६८॥

(५१ गुडूच्यादिघृतम्) गिलोयका काथ अथवा कल्कसें त्रिफलाके काथ अथवा कल्कसें वांसाके काथ अथवा कल्कसें मुनक्काके काथ अथवा कल्कसें खरैंहटीके काथ अथवा कल्कसें सिद्ध किये स्नेह ज्वरकों नाशते हैं । ये गिलोय आदि घृत है । ज्वरमें रोगके कालकों देख पेया काथ घृत दूध विरेचन औषध ये छह छह दिनमें देने । जीर्णज्वरमें कफकों क्षीण होनेपर दूध अमृतके समान है । तरुणज्वरमें पीया दूध मनुष्यकों विषकी तरह मारता है । पंचमूलमें पकाये दूधकों ज्वरवाला पीकै खांसी श्वास शिरका शूल पसलीशूल पीनस इन्होंसें मोहित होता है । द्रव्यसें आधगुना दूध दूधसें चौगुना पानी इनकों मिलाकै पकावै जब दूध मात्र शेष रहै तब ग्रहण करै दूधके पाकमें यह विधि है । गोखरू खरैंहटी बेलवृक्षकी जड गुड

सोंठ इन्होंमें सिद्ध किया काथ विष्ठा और मूत्रका बंधाकों नाशता है और शोजासहित ज्वरकों हरता है । सांठी सोंठ लालसांठी दूध पानी इनकों मिला पकावै जब दूध मात्र शेष रहै तब लेवै । यह सब प्रकारके ज्वरकों नाशता है । यथायोग्य औषधोंसें युत हुआ शीतल अथवा कछुक गरम दूध ज्वरमें हित है । अथवा परिकर्तिकासहित ज्वरमें अरंडकी जडसें सिद्ध किया दूध हित है । बहुत दोषोंसें युत हुये ज्वरवालोंके अर्थ बुद्धिमान् वैद्य समयपर कल्पमें कहाके अनुसार वमन व विरेचन देवै । मैनफल और पीपलकरकै अथवा इंद्रजव और महुवाकरकै युक्त किया और गरम पानीसें लिया वमन ज्वरकों शांत करता है । अथवा अमलतासकों दूधके संग अथवा मुनक्काके रसकी संग अथवा निशोतकों व त्रायमाणाकों दूधके संग ज्वरवाला पीवै । ज्वरसें क्षीण हुआ मष्यकों वमन और विरेचन हित नहीं है । जो इच्छा हो तो तिस रोगीके मलकों दूधकरकै निरूहबस्तिके द्वारा हरै । और ज्वरकों हरनेवाले अनुवासनसहित निरूहोंकों प्रयुक्त करै पक्वाशयमें प्राप्त होवै तो जो सिद्धियोंमें कहैंगे । शरीर भारी हो शिरमें शूल चलै इंद्रियां विशेष करकै बंध होवै ये लक्षण हो तब जीर्णज्वरमें रुचिकों करनेवाला शिरोविरेचन देवै । जीर्णज्वरमें वैद्य स्नेहसहित और अनुवासनसहित अभ्यंग और लेपोंका विभाग कर शीतल और गरम कर देवै । तिन्होंसें वहिरकों प्राप्त हुआ ज्वर शांत होता है अंगोंमें सुख होता है बल और वर्ण वढता है ।

(५२) सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्वा-
लाक्षानिशालोहितयष्टिकाभिः ।
तैलं ज्वरे षड्गुणतक्रसिद्ध-
मभ्यञ्जनाच्छीतविदाहनुत्स्यात् ॥ २६९ ॥
दध्नः ससारकस्यात्र तक्रं कट्वरमिष्यते ।
घृतवत्तैलपाकोऽपि तैले फेनोऽधिकः परः॥२७०॥

(५२ षट्कट्वरं तैलम्) साजी सोंठ कूट मरोरफली लाख हलदी मजीठ मुलहटी इन्होंके कल्कमें और छहगुना तक्रमें सिद्ध किया तेल मालिस करनेसें ज्वरमें शीत और दाहकों हरता है । घृतसहित दहीका तक्रकों कट्वर कहते हैं । घृतकी तरह तेलका पाक है तेलमें अधिक झाग आते है घृतमें झाग शांत होते हैं ।

(५३) मूर्वा लाक्षा हरिद्रे द्वे मञ्जिष्ठा सेन्द्रवारुणी ।
बृहती सैन्धवं कुष्ठं रास्ना मांसी शतावरी २७१
आरनालाढकेनैव तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
तैलमङ्गारकं नाम सर्वज्वरविमोक्षणम् ॥२७२॥

(५३ अंगारकतैलम्) मरोरफली लाख हलदी दारुहलदी मजीठ इंद्रायण बडीकटेली सेंधानमक कूट रासन वालछड शतावरी इन्होंके कल्कमें और तोलेभर कांजीमें तोलेभर कल्ककों पकावै यह अंगारकतेल सब प्रकारके ज्वरोंसें मनुष्यकों छुटाता है ।

(५४) लाक्षाहरिद्रामञ्जिष्ठाकल्कैस्तैलं विपाचयेत् ।
षड्गुणेनारनालेन दाहशीतज्वरापहम् ॥२७३॥
यवचूर्णार्धकुडवं मञ्जिष्ठार्धपलेन तु ।
तैलप्रस्थं शतगुणे काञ्जिके साधितं जयेत् २७४
ज्वरं दाहं महावेगमङ्गानां च प्रहर्षनुत् ।
सर्जकाञ्जिकसंसिद्धं तैलं शीताम्बुमर्दितम् २७५
ज्वरदाहापहं लेपात्सद्यो वातास्रदाहनुत् ।
चन्दनाद्यमगुर्वाद्यं तैलं चरककीर्तितम् ॥२७६॥
तथा नारायणं तैलं जीर्णज्वरहरं परम् ।
अभिघातो ज्वरो न स्यात्पानाभ्यङ्गेन सर्पिषः२७७
क्षतानां व्रणितानां च क्षतव्रणचिकित्सया ।
ओषधीगन्धविषजौ विषपीतप्रबाधनैः ॥ २७८ ॥
जयेत्कषायैर्मतिमान्सर्वगन्धकृतैस्तथा ।
अभिचाराभिशापोत्थौ ज्वरौ होमादिना जयेत् ॥
दानस्वस्त्ययनातिथ्यैरुत्पातग्रहपीडजौ ।
क्रोधजे पित्तजित्काम्या अर्थाः सद्वाक्यमेव च२८०
आश्वासेनेष्टलाभेन वायोः प्रशमनेन च ।
हर्षणैश्च शमं यान्ति कामक्रोधभयज्वराः २८१
कामात्क्रोधज्वरो नाशं क्रोधात्कामसमुद्भवः ।
याति ताभ्यामुभाभ्यां च भयशोकसमुद्भवः२८२
भूतविद्यासमुद्दिष्टैर्बन्धावेशनताडनैः ।
जयेद्भूताभिषङ्गोत्थं मनः सान्त्वैश्च मानसम्२८३
व्यायामं च व्यवायं च स्नानं चंक्रमणानि च ।
ज्वरमुक्तो न सेवेत यावन्नो वलवान्भवेत् २८४
देहो लघुर्व्यपगतक्लममोहतापः
पाको सुखे करणसौष्ठवमव्यथत्वम् ।

स्वेदः क्षवः प्रकृतिगामिमनोऽन्नलिप्सा
कण्डुश्च मूर्ध्नि विगतज्वरलक्षणानि ॥ २८५ ॥

इति ज्वरचिकित्साधिकारः १

(५४ लाक्षादितैलम्) लाख हलदी मजीठ इन्होंके कल्कोंसें तेलकों पकावै और पकनेके समय छहगुनी कांजी मिलावै यह दाह और शीतसहित ज्वरकों नाशता है। यह लाक्षादितेल है जवोंका चून ८ तोले मजीठ २ तोले तेल ६४ तोले कांजी १०० गुनी इन्होंमें साधित किया तेल महावेगवाला ज्वर दाह इनकों जीतता है और अंगोंके प्रहर्षकों नाशता है। राल और कांजीमें सिद्ध किया तेलकों शीतल जलसें मर्दित कर लेप करनेसें ज्वर दाह वातरक्तका दाह इन्होंकों नाशता है । चंदनादि तेल अगुर्वादितेल चरकने कहेहै तथा नारायणतेल ये तीनों जीर्णज्वरकों हरते हैं। घृतका नस्य पान मालिस इन्होंकरके अभिघातज्वर दूर होता है । क्षतवालोंकै और घाववालोंकै ज्वर उपजै तो क्षतकी और घावकी चिकित्सासें ज्वर दूर होता है । औषधीका गंध और विषसें उपजे ज्वरकों विषके पीनेकों नाशनेवाले काथोंसें और सब प्रकारके गंधोंसें किये काथोंसें वैद्य दूर करै। अभिचार अर्थात् मारनेका प्रयोग और शापकरकै उपजे ज्वरोंकों होमआदिसें जीतै। उत्पात और ग्रहकी पीडासें उपजे ज्वरकों दान पुण्याहवाचन अतिथिकी पूजा इन्होंसें जीतै। क्रोधसें उपजे ज्वरमें पित्तकों जीतनेवाली क्रिया करनी मनोवांछित प्रयोजनकी सिद्धि और सुंदर वचन आश्वास इष्ट वांछितका लाभ वायुका शमनकरकै और आनंदकरकै काम क्रोध भय इन्होंसें उपजे ज्वर शांत होतेहैं। कामसें क्रोधज्वरका नाश होताहै। क्रोधसें कामज्वरका नाश होताहै। इन दोनों प्रकारोंसें भय और शोकसें उपजा ज्वर शांत होताहै भूतविद्यामें कहे बंध आवेशन ताडन इन्होंकरकै भूतज्वरकों जीतै और मनकी शांतिकरकै मानसज्वरकों शांत करै । कसरत स्त्रीसंग स्नान फिरना इनकों ज्वरसें मुक्त हुआ मनुष्य जबतक बलवान् नहीं हो तबतक नहीं सेवै। शरीर हलका हो जावै और ग्लानि मोह ताप ये जाते रहैं मुख पकजावै इंद्रियें अच्छे रहैं और पीडा रहै नहीं पसीना और छींक आवै प्रकृतिके अनुसार मन होवै अन्नकी वांछा होवै और शिरमें खाज चलै ये सब लक्षण गया हुआ ज्वरके हैं।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितचक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां ज्वरचिकित्सा ।

अथ ज्वरातीसाराधिकारः २

अब ज्वरातिसारके अधिकारकों कहतेहै ।

(१) ज्वरातिसारे पेयादिक्रमः स्याल्लङ्घिते हितः ।
ज्वरातिसारी पेयां वा पिबेत्साम्लां शृतां नरः १
पृश्निपर्णीबलाबिल्वनागरोत्पलधान्यकैः ।
पाठेन्द्रयवभूनिम्बमुस्तपर्पटकामृताः ॥ २ ॥
जयन्त्याममतीसारं सज्वरं समहौषधाः ।

(१ उत्पलषट्कम्) ज्वरातिसारमें लंघन किये मनुष्यकों पेया आदिका क्रम हित है । ज्वारातिसारवाला मनुष्य नींबूका रसकरके मिश्रित करी और पृष्ठपर्णी खरैंहटी वेलगिरी सोंठ कमल धनियां इन्होंसें पकाई हुई पेयाकों पीवै। पाठा इंद्रजव चिरायता नागरमोथा पित्तपापडा गिलोय सोंठ इन्होंका काथ ज्वरसहित आमातिसारकों जीतता है।

(२) नागरातिविषामुस्तभूनिम्बामृतवत्सकैः ॥३॥
सर्वज्वरहरः काथः सर्वातीसारनाशनः ।
ह्रीवेरातिविषामुस्तबिल्वधान्यकनागरैः ॥ ४ ॥
पिबेत्पिच्छाविबन्धघ्नं शूलदोषामपाचनम् ।
सरक्तं हन्त्यतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम् ॥ ५ ॥

(२ ह्रीवेरादिः) सोंठ अतीस नागरमोथा चिरायता गिलोय कूडा इन्होंका काथ सब प्रकारके ज्वरकों और सब प्रकारके अतिसारकों नाशता है । नेत्रवाला अतीस नागरमोथा वेलगिरी धनियां सोंठ इन्होंका काढा पिच्छा और बंधाकों नाशता है और शूल दोष आम इनकों पकाता है। यह रक्तातिसार ज्वरातिसार अतिसार इनकों नाशता है।

(३) गुडूच्यतिविषाधान्यशुण्ठीबिल्वाब्दवालकैः ।
पाठाभूनिम्बकुटजचन्दनोशीरपद्मकैः ॥ ६ ॥
कषायः शीतलः पेयो ज्वरातीसारशान्तये ।
हृल्लासारोचकच्छर्दिपिपासादाहनाशनः ॥ ७ ॥

(३ गुडूच्यादिः) गिलोय अतीस धनियां सोंठ बेलगिरी नागरमोथा नेत्रवाला पाठा चिरायता इंद्रजव लालचंदन खस पद्माक इन्होंका शीतल काढा बनाय पीवै यह ज्वरातिसारकों शांत करता है । और थुकथुकी अरोचक छर्दि पिपासा दाह इन्होंका नाश होता है ।

(४) उशीरं बालकं मुस्तं धन्याकं विश्वभेषजम् ।
समङ्गाधातकीलोध्रं बिल्वं दीपनपाचनम् ॥ ८ ॥
हन्त्यरोचकपिच्छामं विबन्धं सातिवेदनम् ।
सशोणितमतीसारं सज्वरं वाथ विज्वरम् ॥ ९ ॥

(४ उशीरादिः) खस नेत्रवाला नागरमोथा धनियां सोंठ मजीठ धायके फूल लोध बेलगिरी इन्होंका काढा दीपन पाचन है और अरोचक पिच्छा आम विबंध पीडासहित और रक्तसहित ज्वरसहित अथवा ज्वररहित ऐसे अतिसारकों नाशता है ।

(५) पञ्चमूलीबलाबिल्वगुडूचीमुस्तनागरैः ।
पाठाभूनिम्बह्रीवेरकुटजत्वक्फलैः शृतम् ॥ १० ॥
हन्ति सर्वानतीसाराञ्ज्वरदोषं वमिं तथा ।
सशूलोपद्रवं श्वासं कासं हन्यात्सुदारुणम्॥ ११॥
कलिङ्गातिविषाशुण्ठीकिराताम्बुयवासकम् ।
ज्वरातीसारसन्तापं नाशयेदविकल्पतः ॥ १२ ॥
वत्सकं कट्फलं दारु रोहिणी गजपिप्पली ।
श्वदंष्ट्रा पिप्पली धान्यं बिल्वं पाठा यवानिका १३
द्वावप्येतौ सिद्धियोगौ श्लोकार्धेनाभिभाषितौ ।
ज्वरातीसारशमनौ विशेषाद्दाहशातनौ ॥ १४ ॥
नागरामृतभूनिम्बबिल्वबालकवत्सकैः ।
समुस्तातिविषोशीरैर्ज्वरातीसारहृज्जलम् ॥ १५ ॥
मुस्तकबिल्वातिविषापाठाभूनिम्बवत्सकैः क्वाथः ।
मकरन्दगर्भयुक्तो ज्वरातिसारौ जयेद्धोरौ ॥१६॥
घनजलपाठातिविषापथ्योत्पलधान्यरोहिणीविश्वैः
सेन्द्रयवैः कृतमम्भः सातीसारं ज्वरं जयति १७

(५ पंचमूल्यादिः) पंचमूल खरैंहटी बेलगिरी गिलोय नागरमोथा सोंठ पाठा चिरायता नेत्रवाला कूडाकी छाल इंद्रजव इनोंका काढा सब प्रकारके अतिसार ज्वर दोष छर्दि शूल उपद्रवसहित श्वास और भयंकर खांसी इनोंकों नाशताहै । इन्द्रजव अतीस सोंठ चिरायता नेत्रवाला जवासा इनोंका काढा ज्वरातिसारके संतापकों निश्चय नाशता है । कूडाकी छालि कायफल देवदार हरडै गजपीपल गोखरू धनियां बेलगिरी पाठा अजमायन आधा आधा श्लोककरके कहे हुये ये दोनों सिद्धयोग ज्वरातिसारकों शांत करते हैं और विशेषकरके दाहकों नाशते हैं । सोंठ गिलोय चिरायता बेलगिरी नेत्रवाला कूडाकी छालि नागरमोथा अतीस खश इन्होंका काढा ज्वरातिसारकों नाशता है । नागरमोथा बेलगिरी अतीस पाठा चिरायता कूडाकी छालि आंबकी गुठली इन्कोंका काढा भयंकर ज्वर और अतिसारकों जीतता है । नागरमोथा नेत्रवाला पाठा अतीस हरडै कमल धनियां कुटकी सोंठ इंद्रजव इन्होंका काढा ज्वरातिसारकों जीतता है ।

(६) कलिङ्गबिल्वजम्ब्वाम्रकपित्थं सरसाञ्जनम् ।
लाक्षाहरिद्रे ह्रीवेरं कट्फलं शुकनासिकाम् १८
लोध्रं मोचरसं शङ्खं धातकीवटशुङ्गकम् ।
पिष्ट्वा तण्डुलतोयेन वटकानक्षसम्मितान् ॥१९॥
छायाशुष्कान्पिबेच्छीघ्रं ज्वरातीसारशान्तये ।
रक्तप्रसादनाश्चैते शूलातीसारनाशनाः ॥ २० ॥
उत्पलं दाडिम्बत्वक्च पद्मकेशरमेव च ।
पिबेत्तण्डुलतोयेन ज्वरातीसारनाशनम् ॥ २१ ॥

(६ कलिंगाद्यगुटिका) इन्द्रजव बेलगिरी जामन आंब कैथ रसोत लाख हलदी दारुहलदी नेत्रवाला कायफल कंभारी लोध मोचरस शंख धायके फूल वडके कोंपल इन्होंकों चावलके पानीसें पीस एक एक तोलेकी गोली बनाय छायामें सुखाय ज्वरातिसारकी शांतिके अर्थ शीघ्र पीवै । ये गोली रक्तकों शुद्ध करती है और शूलसहित अतिसारकों नाशती है । कमल अनारकी छालि कमलकेशर इन्होंकों चावलका पानीके संग पीवै । यह ज्वरातिसारकों नाशता है ।

(७) व्योषं वत्सकबीजं च निम्बभूनिम्बमार्कवम् ।
चित्रकं रोहिणीं पाठां दार्वीमतिविषां समाम् २२
श्लक्ष्णचूर्णीकृतान्सर्वांस्तत्तुल्यां वत्सकत्वचम् ।
सर्वमेकत्र संयुज्य प्रपिबेत्तण्डुलाम्बुना ॥ २३ ॥
सक्षौद्रं वा लिहेदेतत्पाचनं ग्राहिभेषजम् ।
तृष्णारुचिप्रशमनं ज्वरातीसारनाशनम् ॥ २४ ॥
कामलां ग्रहणीदोषान् गुल्मं प्लीहानमेव च ।
प्रमेहं पाण्डुरोगं च श्वयथुं च विनाशयेत् ॥२५॥

दशमूलीकषायेण विश्वमक्षसमं पिबेत् ।
ज्वरे च वातिसारे च सशोथे ग्रहणीगदे ॥ २६ ॥
विडङ्गातिविषामुस्तं दारु पाठा कलिङ्गकम् ।
मरीचेन समायुक्तं शोथातीसारनाशनम् ॥२७॥
किराताब्दामृताविश्वचन्दनोदीच्यवत्सकैः ।
शोथातिसारशमनं विशेषाज्ज्वरनाशनम् ॥२८॥
किराताब्दामृतोदीच्यमुस्तचन्दनधान्यकैः ।
शोथातिसारतृड्दाहशमनो ज्वरनाशनः ॥ २९ ॥

इति ज्वरातिसाराधिकारः २

(७ व्योषाद्यं चूर्णं) सोंठ मिरच पीपल इन्द्रजव चिरायता नींब भंगरा चीता हरडै अथवा कुटकी पाठा दारुहलदी अतीस ये सब बराबर ले महीन चूरण कर तिस चूरणके समान कूडाकी छालीका चूरण मिलाय चावलका पानीसें पीवै अथवा शहदमें मिलायके चाटै । यह पाचन है दस्तकों बांधता है तृषाकों और अरुचिकों शांत करता है और ज्वरातिसारकों नाशता है । और कामला ग्रहणीदोष गुल्म तिल्लीरोग प्रमेह पांडुरोग शोजा इन्होंकों नाशता है । दशमूलका काढाके संग एक तोलाभर सोंठकों पीवै । ज्वरमें अतिसारमें और शोजामें और ग्रहणीदोषमें सुख होता है । वायविडंग अतीस नागरमोथा देवदार पाठा इन्द्रजव मिरच इन्होंका काढा शोजासहित अतिसारकों नाशता है । चिरायता नागरमोथा गिलोय सोंठ लालचंदन नेत्रवाला कूडाकी छालि इन्होंका काढा शोजासहित अतिसारकों शांत करता है और विशेषकरके ज्वरकों नाशता है । चिरायता नागरमोथा गिलोय नेत्रवाला भद्रमोथा चंदन धनियां इन्होंका काढा शोजासहित अतिसार तृषा दाह ज्वर इन्होंकों नाशता है ।

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां ज्वरातिसारचिकित्सा ।

अतीसाराधिकारः ३

अब अतिसारके अधिकारकों कहते है ।

(१) आमपक्वक्रमं हित्वा नातिसारे क्रिया यतः ।
अतः सर्वातिसारेषु ज्ञेयं पक्वामलक्षणम् ॥ १ ॥
मज्जत्यामा गुरुत्वाद्विट् पक्वा तूत्प्लवते जले ।
विनातिद्रवसंघातशैत्यश्लेष्मप्रदूषणात् ॥ २ ॥
शकृद्दुर्गन्धिसाटोपविष्टम्भार्तिप्रसेकिनः ।
विपरीतं निरामं तु कफात्पक्वं च मज्जति ॥ ३ ॥
आमे विलङ्घनं शस्तमादौ पाचनमेव च ।
कार्यं चानाशनस्यान्ते प्रद्रवं लघुभोजनम् ॥ ४ ॥
लङ्घनमेकं मुक्त्वा न चान्यदस्तीह भेषजं बलिनः।
समुदीर्णं दोषचयं शमयति तत्पाचयत्यपि च ५
ह्रीवेरशृङ्गवेराभ्यां मुस्तपर्पटकेन वा ।
मुस्तोदीच्यशृतं तोयं देयं वापि पिपासवे ॥ ६ ॥
भुक्तेऽन्नकाले क्षुत्क्षामं लघून्यन्नानि भोजयेत् ।
औषधसिद्धाः पेया लाजानां सक्तवोतिसारहिता
वस्त्रप्रस्रुतमण्डः पेयश्च मसूरयूषश्च ।
गुर्वी पिण्डी खरात्यर्थं लघ्वी सैव विपर्ययात्॥८॥
शक्तूनामाशु जीर्येत मृदुत्वादवलेहिका ।

(१ पक्वामलक्षणम्) आमकों पकानेका क्रमके विना अतिसारमें जिस कारणसें क्रिया नहीं है इसवास्ते सब प्रकारके अतिसारोंमें पक्व हुआ आमका लक्षण जानना । भारीपनसें कच्ची विष्ठा जलमें डूब जाती है और पक्की विष्ठा जलपर तिरती रहती है। क्योंकी अत्यंत द्रवके संघातसें वर्जित और शीतलता व कफकरकै दूषित होनेसें पेटमें गुडगुडा शब्द विष्टंभ इन्होंसें युत हुआ सेकवालेकी विष्ठा दुर्गंधित होती है इस्सें विपरीत आमरहित होता है और कफकरकै पक्व हुई विष्ठा पानीमें डूबती है। आमातिसारमें प्रथम लंघन श्रेष्ठ है पीछे पाचन करना पीछे लंघन करनेवालेकों द्रवरूप हलका भोजन देना । बलवाला अतिसाररोगीकों एक लंघनसें और दूसरा औषध नहीं है । वह लंघन बढा हुआ दोषके समूहकों शांत करता है और पकाता हैं । नेत्रवाला अदरक इनका पानी नागरमोथा पित्तपापडा इन्होंका पानी अथवा नागरमोथा और नेत्रवालामें पकाया पानी तृषावालाकों देना । अन्नके समयमें भोजनके वास्ते भूखसें पीडितकों हलके अन्न भोजन कराने व ओषधोंसें सिद्ध करी पेया व धानकी खीलोंके सत्तु ये अतिसारमें हित हैं । वस्त्रमाहके छानाहुआ मंड पेया मसूरका यूष येभी हित हैं । पिंडी भारी है अत्यंत तीक्ष्ण है और विपरीतपनेसें वही हलकी है । सत्तुवोंकी अवलेहिका (चटनी) कोमलपनेसें शीघ्र जरती है ।

(२) शालिपर्णी पृश्निपर्णी बृहती कण्टकारिका ९
बलाश्वदंष्ट्राबिल्वानि पाठा नागरधान्यकम् ।

एतदाहारसंयोगे हितं सर्वातिसारिणाम् ॥१०॥
शालिपर्णीबलाबिल्वैः पृश्निपर्ण्या च साधिता ।
दाडिमाम्ला हिताः पेयाः पित्तश्लेष्मातिसारिणाम्
यवागूमुपभुञ्जानो नतु व्यञ्जनमाचरेत् ।
शाकमांसफलैर्युक्ता यवाग्वोऽम्लाश्च दुर्जराः १२
धान्यपञ्चकसंसिद्धो धान्यविश्वकृतोऽथवा ।
आहारो भिषजा योज्यो वातश्लेष्मातिसारिणाम्
वातपित्ते पञ्चमूल्या कफे वा पञ्चकोलकैः ।
धान्योदीच्यशृतं तोयं तृष्णादाहातिसारनुत् १४
आभ्यामेव सपाठाभ्यां सिद्धमाहारमाचरेत् ।
दोषाः संनिचया यस्य विदग्धाहारमूर्च्छिताः १५
अतिसाराय कल्पन्ते भूयस्तान्संप्रवर्तयेत् ।
न तु संग्रहणं दद्यात्पूर्वमामातिसारिणे ॥ १६ ॥
दोषा ह्यादौ बध्यमाना जनयन्त्यामयान्वहून् ।
शोथपाण्ड्वामयप्लीहकुष्ठगुल्मोदरज्वरान् ॥ १७ ॥
दण्डकालसकाध्मानान् ग्रहण्यर्शोगदांस्तथा ।
क्षीणधातुबलार्तस्य बहुदोषोऽतिनिस्रुतः ॥ १८ ॥
आमोऽपि स्तम्भनीयः स्यात्पाचनान्मरणं भवेत् ।
स्तोकं स्तोकं विबन्धं वा सशूलं योऽतिसार्यते१९
अभयापिप्पलीकल्कैः सुखोष्णैस्तं विरेचयेत् ।

(२ बृहच्छालिपर्ण्यादिः) शालपर्णी पृष्ठपर्णी बडी कटेली छोटी कटेली खरैंहटी गोखरू वेलगिरी पाठा सोंठ धनियां इन्होंकों भोजनके संग खानेसें सब अतिसारवालोंकों हित होता है । यह बृहच्छालपर्ण्यादि है । शालपर्णी खरैंहटी वेलगिरी पृष्ठपर्णी इन्होंसें साधित करी अनार और नींबूके रससें युत करी पेया पित्तकफके अतिसारवालोंकों हित है । यह शालपर्ण्यादि है । यवागू (गुडयाणी)कों भोजन करता हुआ व्यंजनकों नहीं खावै । क्योंकी शाक मांस फल इन्होंसें युत करी यवागू दुर्जर होतीहै । वातकफके अतिसारवालोंकों धान्यपंचकमें सिद्ध किया अन्न अथवा सोंठमें सिद्ध किया भोजन देना । वातपित्तके अतिसारमें पंचमूलसें सिद्ध किया पानी और कफके अतिसारमें पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंसें सिद्ध किया पानी अथवा धनियां और नेत्रवालासें सिद्ध किया पानी तृषा दाह अतिसार इनकों नाशता है । धनियां नेत्रवाला पाठा इन्होंसें सिद्ध किया आहारकों देवै । जिस मनुष्यके विदग्ध हुआ आहारसें मूर्च्छित हुये और बढे हुये दोष अतिसारकों करते हैं फिर तिन्होंकों प्रवर्तित करै । आमातिसारवालाकों प्रथम संग्रहण कुब्ज करनेवाला औषध नहीं देना । आदिमें बढते हुये दोष बहुतसे रोगोंकों उपजाते हैं । शोजा पांडुरोग तिल्लीरोग कुष्ठ गुल्मरोग उदररोग ज्वर इन्होंकों और दंडक अलसक आध्मान ग्रहणी ववासीर इन रोगोंकों उपजाते हैं । क्षीण हुआ धातु और बलसें पीडित हुआ मनुष्यकै अत्यंत निकसा हुआ बहुत दोष हो तो आमभी स्तंभित करना योग्य है और पाचनसें मरण होता है । अल्प अल्प अथवा बंधा हुआ और शूलसहित दस्त जिसकै निकसै तिसकों हरडै और पीपलके सुखपूर्वक गरम किये कल्कसें विरेचन देवै ।

(३)धन्याकं नागरं मुस्तं वालकं बिल्वमेव च २०
आमशूलविबन्धघ्नं पाचनं वह्निदीपनम् ।
इदं धान्यचतुष्कं स्यात्पित्ते शुण्ठीं विना पुनः २१
पिप्पलीं नागरं धान्यं भूतिकं चाभयां वचाम् ।
ह्रीवेरभद्रमुस्तानि बिल्वं नागरधान्यकम् ॥२२॥
पृश्निपर्णी श्वदंष्ट्रा च समङ्गा कण्टकारिका ।
तिस्रः प्रमथ्या विहिताः श्लोकार्धैरतिसारिणाम्
कफपित्ते च वाते च क्रमादेताः प्रकीर्तिताः ।
संज्ञा प्रमथ्या ज्ञातव्या योगे पाचनदीपने ॥२४॥
त्र्यूषणातिविषाहिङ्गुबलासौवर्चलाभयाः ।
पीत्वोष्णेनाम्भसा हन्यादामातीसारमुद्धतम् २५
अथवा पिप्पलीमूलपिप्पलीद्वयचित्रकान् ।
सौवर्चलवचाव्योषहिङ्गुप्रतिविषाभयाः ॥ २६ ॥
पिबेच्छ्लेष्मातिसारार्तश्चूर्णिताश्चोष्णवारिणा ।
हरिद्रादिं वचादिं वा पिबेदामेषु बुद्धिमान् ॥२७॥
खण्डयूषयवागूषु पिप्पल्यादिं प्रयोजयेत् ।
तक्रे कपित्थचाङ्गेरीमरिचाजाजिचित्रकैः ॥ २८ ॥
सुपक्वः खण्डयूषोऽयमयं काम्बलिकोऽपरः ।
दध्याम्लो लवणस्नेहतिलमाससमन्वितः ॥२९॥
नागरातिविषामुस्तैरथवा धान्यनागरैः ।
तृष्णातीसारशूलघ्नं पाचनं दीपनं लघु ॥ ३० ॥
पाठावत्सकबीजानि हरीतक्यो महौषधम् ।
एतदामसमुत्थानमतीसारं सवेदनम् ॥ ३१ ॥
कफात्मकं सपित्तं च वर्चो बध्नाति च ध्रुवम् ।
पयस्युत्क्वाथ्य मुस्तां वा विंशतिं भद्रकाह्वयाः३२

क्षीरावशिष्टं तत्पीतं हन्यादामं सवेदनम् ।
पक्कोऽसकृदतीसारो ग्रहणीमार्द्दवाद्यदा ॥ ३३ ॥
प्रवर्तते तदा कार्यः क्षिप्रं सांग्राहिको विधिः ।
पञ्चमूलीबलाविश्वधान्यकोत्पलबिल्वजाः ॥३४॥
वातातिसारिणे देयास्तक्रेणान्यतमेन वा ।

(३ धान्यपंचकम्) धनियां सोंठ नागरमोथा नेत्रवाला वेलगिरी इन्होंका पाचन आम शूल बंधा इन्होंकों नाशता है और अग्निकों जगाता है। पित्तके अतिसारमें सोंठके विना धान्यचतुष्क कहाता है । पीपल सोंठ धनियां करंजुवा हरडै वच नेत्रवाला नागरमोथा वेलगिरी सोंठ धनियां पिठवन गोखरू मजीठ कटेली ऐसे आधा आधा श्लोककरके तीन प्रमथ्या कही है। कफ पित्त वात इन्होंमें क्रमसें ये कही है। पाचन दीपन योगमें प्रमथ्यासंज्ञा जाननी योग्य है। सोंठ मिरच पीपल अतीस हींग खैरेंहटी काला नमक इन्होंके चूरणकों गरम पानीसें पीवै तो दारुणरूपी आमातिसार नष्ट होवै। अथवा पीपलामूल छोटी पीपल बडी पीपल चीता कालानमक वच सोंठ मिरच पीपल हींग अतीस हरडै इन्होंका चूरण कर गरम पानीके संग कफके अतिसारसें पीडित हुआ मनुष्य पीवै। हरिद्रादिगणकों अथवा वचादिगणकों आमातिसारमें बुद्धिमान् पीवै। खंडयूष यवागू इन्होंमें पिप्पलादिगणकों प्रयुक्त करै। गौका तक्र कैथ चूका मिरच जीरा चीता इनकों मिलाके पकावै यह खंडयूष है और इसीकों कांबलिक कहते हैं परंतु दही नींबूका रस नमक स्नेह तिल मांस इन्होंसें युत होनेमें कांबलिक होता है। सोंठ अतीस नागरमोथा अथवा धनियां और सोंठ इन्होंसें किया पाचन तृषा अतिसार शूल इनकों नाशता है दीपन है और हलका है। पाठा इंद्रजव हरडै सोंठ इन्होंका पाचन आमसें उपजा और पीडासहित ऐसे अतिसारकों कफका अतिसार और पित्तका अतिसारसंबंधी मलकों निश्चय बांधता है। नागरमोथाके वीस किनकोंका अथवा भद्रमोथाके वीस किनकोंका दूधमें क्राथ बनावै। जब दूध मात्र शेष रहै तब पीनेसें पीडासहित आमातिसारका नाश होता है पका हुआ अतिसार जब ग्रहणीमार्गसें वारंवार प्रवृत्त होवै तब शीघ्रही सांग्राहिक अर्थात् मलकों बंध करनेकी विधि करनी। पंचमूल खैरेहटी सोंठ धनियां कमल वेलगिरी इन्होंकों एक कोईसा तक्रके संग वातका अतिसारवालाके अर्थ देवै ॥

(४) कञ्चटजम्बूदाडिमशृङ्गाटकपत्रबिल्वह्रीवेरम् ।
जलधरनागरसहितं गङ्गामपि वेगिनीं रुन्ध्यात् ।
कृत्वालवालं सुदृढं पिष्टैर्वामलकैर्भिषक् ॥ ३६ ॥
आर्द्रकस्वरसेनाशु पूरयेन्नाभिमण्डलम् ।
नदीवेगोपमं घोरमतीसारं निरोधयेत् ॥ ३७ ॥
किराततिक्तकं मुस्तं वत्सकं सरसाञ्जनम् ।
पिबेत्पित्तातिसारघ्नं सक्षौद्रं वेदनापहम् ॥ ३८ ॥
पलं वत्सकबीजस्य श्रपयित्वा जलं पिबेत् ।
यो रसाशी जयेच्छीघ्रं सपैत्तं जठरामयम् ॥३९॥
मधुकं कट्फलं लोध्रं दाडिमस्य फलत्वचम् ।
पित्तातिसारे मध्वाक्तं पाययेत्तण्डुलाम्बुना ॥४०॥
कुटजातिविषा मुस्तं हरिद्रा पर्णिनीद्वयम् ।
सक्षौद्रशर्करं शस्तं पित्तश्लेष्मातिसारिणाम्॥४१॥
कुटजत्वक्फलं मुस्तं क्राथयित्वा जलं पिबेत् ।
अतीसारं जयत्याशु शर्करामधुयोजितम् ॥ ४२ ॥
बिल्वचूतास्थिनिर्यूहः पीतः सक्षौद्रशर्करः ।
निहन्याच्छर्द्यतीसारं वैश्वानर इवाहुतिम् ॥४३॥
पटोलयवधन्याकक्राथः पेयः सुशीतलः ।
शर्करामधुसंयुक्तश्छर्द्यतीसारनाशनः ॥ ४४ ॥
प्रियङ्ग्वञ्जनमुस्ताख्यं पाययेत्तु यथाबलम् ।
तृष्णातिसारच्छर्दिघ्नं सक्षौद्रं तण्डुलाम्बुना ४५
कलिङ्गकवचामुस्तं दारु सातिविषं समम् ।
कल्कं तण्डुसतोयेन पिबेत्पित्तानिलामयी ॥४६॥
कुटजं दाडिमं मुस्तं धातकीबिल्वबालकम् ।
लोध्रचन्दनपाठाश्च कषायं मधुना पिबेत् ॥४७॥
सामे सशूले रक्तेऽपि पिच्छास्रावेषु शस्यते ।
कुटजादिरिति ख्यातः सर्वातीसारनाशनः ॥४९
समङ्गातिविषा मुस्तं विश्वं ह्रीवेरधातकी ।
कुटजत्वक्फलं बिल्वं क्राथः सर्वातिसारनुत् ५०
दलोत्थः स्वरसः पेयो हिज्जलस्य समाक्षिकः ।
जयत्याममतीसारं क्राथो वा कुटजत्वचः ॥५१॥
वटारोहं तु संपिष्य श्लक्ष्णं तण्डुलवारिणा ।
तं पिबेत्तक्रसंयुक्तमतीसाररुजापहम् ॥ ५२ ॥
तण्डुलजलपिष्टाङ्कोठमूलकर्षार्धपानमपहरति ।
सर्वातिसारग्रहणीरोगसमूहं महाघोरम् ॥ ५३ ॥
कल्कः कोमलबोलदलात्पीतोऽतिसारहा ।
कुटजत्वक्कृतः क्राथो घनीभूतः सुशीतलः ५४

लोहितोतिविषायुक्तः सर्वातीसारनुद्भवेत् ।
वदन्त्यत्राष्टमांशेन क्वाथादतिविषारजः ॥ ५५ ॥
प्रक्षिप्यत्वात्पादिकं तु लेहादिति च नो मतिः ।

(**४ कंचटादिः**) गजपीपल जामन अनार सिंघाडा तेजपात वेलगिरी नेत्रवाला नागरमोथा सोंठ इन्होंका चूरण वेगवाली गंगाकोंभी रोकता है और अतिसारकी कौन कथा है । अथवा आंवलोंकी पीठी बनाय सुंदर दृढरूप आंवला बनाय पीछे अदरकके स्वरसकरकै नाभिमंडलकों पूरित करै । ऐसे करनेकरकै नदीका वेगके समान और घोररूप अतिसार रुक जाता है । चिरायता नागरमोथा कूडा रसोत इन्होंके क्वाथमें शहद डाल पीवै तो पित्तके अतिसारकी पीडा दूर होती है । चार तोलेभर इंद्रजवोंकों पानीमें पकाकै पीवै और मांसके रसका भोजन करै तो पित्तका अतिसार दूर होवै । मुलहटी कायफल लोध अनारकी छाल अनारका फल इन्होंके चूरणमें शहद डाल चावलोंका पानीके संग पित्तके अतिसारविषै पीवै । कूडा अतीस नागरमोथा हलदी सालवन पिठवन इन्होंके चूरणमें शहद मिला चाटै यह पित्त और कफके अतिसारवालोंकों श्रेष्ठ है । कूडाकी छाल इंद्रजव नागरमोथा इन्होंका क्वाथ बनाय तिसमें खांड और शहद डाल पीनेसें अतिसारका शीघ्र नाश होता है । वेलगिरी और आंबकी गुठलीका क्वाथ बनाय तिसमें शहद और खांड डाल पीवै तो छर्दिसहित अतिसारका नाश होवै जैसे अग्निकरकै आहुतिका । परवल इंद्रजव धनियां इन्होंके क्वाथकों अच्छीतरह शीतल कर तिसमें खांड और शहद डाल पीवै तो छर्दिसहित अतिसारका नाश होता है । कांगनी रसोत अथवा काला सहोंजना नागरमोथा इनकों बलके अनुसार लेकै तिसमें शहद डाल चावलोंका पानीके संग पीवै तो तृषा अतिसार छर्दि इनका नाश होता है । इंद्रजव वच नागरमोथा देवदार अतीस ये सब बराबर भाग ले कल्क बनाय चावलका पानीके संग वातपित्तसें उपजा अतिसाररोगी पीवै । कूडा अनार नागरमोथा धायके फूल वेलगिरी नेत्रवाला लोध लालचंदन पाठा इन्होंका काढा बनाय तिसमें शहद डाल पीवै । आमातिसार शूलसहित अतिसार रक्तातिसार पिच्छास्राव इन्होंमें श्रेष्ठ है । यह कुटजादि काढा है सब प्रकारके अतिसारोंकों नाशता है । मजीठ अतीस नागरमोथा सोंठ नेत्रवाला धायके फूल कूडाकी छाल इंद्रजव वेलगिरी इन्होंका क्वाथ सब प्रकारके अतिसारकों नाशता है । परेलके पत्तोंका स्वरसमें शहद डाल पीनेसें अथवा कूडाकी छालका क्वाथमें शहद डाल पीनेसें आमातिसारका नाश होता है वडके कोंपलोंकों चावलोंका पानीके संग मिहीन पीस तक्रमें मिला पीवै तो अतिसारकी पीडा नष्ट होती है । अंकोलकी जडकों चावलके पानीसें पीस कल्क बनाय पांच मासे लेनेसें सब प्रकारके अतिसार ग्रहणी भयंकर रोगसमूह इन्होंका नाश होता है । बंबूलके कोमल पत्तोंका कल्क बनाय पीनेसें व कूडाकी छालका घनरूप क्वाथ बनाय तिसकों अच्छीतरह शीतल कर पीवै तो अतिसारका नाश होता है । मजीठ और अतीसका क्वाथ सब प्रकारके अतिसारोंकों नाशता है । क्वाथसें आठमां हिस्सा अतीसका चूरण डालना ऐसे कहते है । और लेहसे अतीसका चूरण चौथा हिस्सा डालना ऐसे मेरी बुद्धि है ।

(५) सदार्व्यङ्कोटपाठानां मूलं त्वक् कुटजस्य च
शाल्मलीशालनिर्यासधातकीलोध्रदाडिमम् ।
पिष्ट्वाक्षसम्मितान्कृत्वा वटकांस्तण्डुलाम्बुना ५७
तेनैव मधुसंयुक्तानेकैकान्प्रातरुत्थितः ।
पिबेदत्ययमापन्नो विड्विसर्गेण मानवः ।
अङ्कोटवटको नाम्ना सर्वातीसारनाशनः ॥५८॥
पयस्यर्धोदके छागे ह्रीवेरोत्पलनागरैः ।
पेया रक्तातिसारघ्नी पृश्निपर्ण्या च साधिता ५९
रसाञ्जनं सातिविषं कुटजस्य फलं त्वचम् ।
धातकी श्रृङ्गवेरं च प्रपिबेत्तण्डुलाम्बुना ॥६०॥
क्षौद्रेण युक्तं नुदति रक्तातीसारमुल्बणम् ।
मन्दं दीपयते चाग्निं शूलं चापि निवर्तयेत् ६१
विडङ्गातिविषा मुस्तं दारु पाठा कलिङ्गकम् ।
मरिचेन समायुक्तं शोथातीसारनाशनम् ॥६२॥

(**५ अंकोटवटकः**) दारुहलदी अंकोलकी जड पाठाकी जड कूडाकी छाल शंभलका गूंद शालका गूंद धायके फूल लोध अनार ये सब एक एक तोलाभर ले चावलोंका पानीसें पीस कल्क बनाय तिसमें शहद डाल वडे बनावै । फिर प्रभातमें ऊठ अतिसारसें पीडित हुआ मनुष्य पीवै यह अंकोटवटक सब प्रकारके अतिसारोंकों नाशता है । आधा पानीसें युत हुये बकरीके दूधमें नेत्रवाला कमल सोंठ पिठवन इन्होंकों मिला सिद्ध करी पेया रक्तातिसारकों नाशती है । रसोत अतीस इंद्रजव कूडाकी

छाल धायके फूल अदरख इन्होंकों चावलोंका पानीके साथ पीवै । शहदसें युत किया यह भयंकर रक्तातिसारकों नाशता है और मंदाग्निकों दीप्त करता है और शूलकों दूर करता है । वायविडंग अतीस नागरमोथा देवदार पाठा इंद्रजव मिरच इन्होंका क्वाथ शोजासहित अतिसारकों नाशता है ।

(६) सवत्सकः सातिविषः सबिल्वः
सोदीच्यमुस्तैश्चकृतः कषायः ।
सामे सशूले सह शोणिते च
चिरप्रवृत्तेऽपि हितोऽतिसारे ॥ ६३ ॥
कषायो मधुना पीतस्त्वचो दाडिमवत्सकात् ।
सद्यो जयेदतीसारं सरक्तं दुर्निवारकम् ॥ ६४॥
गुडेन खादयेद्बिल्वं रक्तातीसारनाशनम् ।
आमशूलविबन्धघ्नं कुक्षिरोगविनाशनम् ॥ ६५ ॥
बिल्वाब्दधातकीपाठाशुण्ठीमोचरसाः समाः ।
पीता रुन्धन्त्यतीसारं गुडतक्रेण दुर्जयम् ॥६६॥
शल्लकीबदरीजम्बुप्रियालाम्रार्जुनत्वचः ।
पीताः क्षीरेण मध्वाढ्याः पृथक् शोणितनाशनाः ॥
जम्ब्वाम्रामलकीनां तु पल्लवानथ कुट्टयेत् ।
संगृह्य स्वरसं तेषामजाक्षीरेण योजयेत् ॥ ६८ ॥
तं पिबेन्मधुना युक्तं रक्तातीसारनाशनम् ।
बिल्वं छागपयःसिद्धं सितामोचरसान्वितम् ६९
कलिङ्गचूर्णसंयुक्तं रक्तातीसारनाशनम् ।
ज्येष्ठाम्बुना तण्डुलीयं पीतं च ससितामधु ७०
पीत्वा शतावरीकल्कं पयसा क्षीरभुग्जयेत् ।
रक्तातिसारी पीत्वा च तया सिद्धं घृतं नरः७१

(६ वत्सकादिः) कूडा अतीस वेलगिरी नेत्रवाला नागरमोथा इन्होंसें किया क्वाथ आमातिसार शूलसहित अतिसार रक्तातिसार और वहुत कालसें उपजा अतिसार इन्होंमें हित करता है । अनारकी छाल और कूडाकी छालके क्वाथमें शहद डाल पीवै तो भयंकररूपी रक्तातिसार दूर होवै । गुडके संग वेलगिरीकों खावै तो रक्तातिसारका नाश होवै और आमशूल विबंध ये दूर होवैं और कुक्षिरोगका नाश होवै । वेलगिरी नागरमोथा धायके फूल पाठा सोंठ मोचरस ये सब बराबर भाग ले गुडसहित तक्रके संग पीवै तो भयंकर अतिसार दूर होता है । शाल वडवेर जामन चिरोंजी आंव कौहवृक्ष इन्होंकी छाल अलग अलग ले दूध और शहदसें युत कर पीवै तो रक्तकों नाशती है । जामन आंव आंवला इन्होंके पत्तोंकों कूट स्वरसकों ग्रहण कर बकरीका दूधमें मिलावै पीछे शहदसें युत कर पीवै तो रक्तातिसारका नाश होवै । बकरीके दूधमें वेलगिरीकों सिद्ध कर तिसमें मिश्री और मोचरस मिलाय पीछे इंद्रजवोंका चूरण डाल पीवै तो रक्तातिसारका नाश होता है । चौलाईकों पीस तिसमें मिश्री और शहद डाल चावलोंका पानीके संग पीवै और शतावरीके कल्ककों दूधके संग पीकै दूधका भोजन करनेवाला मनुष्य रक्तातिसारकों जीतै । अथवा शतावरीके कल्क करकै सिद्ध किया घृतकों रक्तातिसारवाला पीवै तो सुख होता है ।

(७)कुटजस्य पलं ग्राह्यमष्टभागजले शृतम् ।
तथैव विपचेद्भूयो दाडिमोदकसंयुतम् ॥ ७२ ॥
यावच्चैवं लसीकाभं शृतं तमुपकल्पयेत् ।
तस्यार्धकर्षं तक्रेण पिबेद्रक्तातिसारवान् ॥ ७३ ॥
अवश्यमरणीयोऽपि मृत्योर्याति न गोचरम् ।
क्वाथतुल्यं दाडिमाम्बुभागाबुक्तौ समं यतः॥७४॥
कल्कस्तिलानां कृष्णानां शर्कराभागसंयुतः ।
आजेन पयसा पीतः सद्यो रक्तं नियच्छति ७५
गुददाहे प्रपाके वा पटोलमधुकाम्बुना ।
सेकादिकं प्रशंसन्ति छागेन पयसापि वा ॥७६॥
गुदभ्रंशे प्रकर्तव्या चिकित्सा तत्प्रकीर्तिता ।
अवेदनं सुसम्पक्कं दीप्ताग्नेः सुचिरोत्थितम् ।
नानावर्णमतीसारं पुटपाकैरुपाचरेत् ॥ ७७ ॥
स्निग्धं घनं कुटजवल्कमजन्तुजग्ध-
मादाय तत्क्षणमतीव च पोथयित्वा ।
जम्बूपलाशपुटतण्डुलतोयसिक्तं
बद्धं कुशेन च बहिर्घनपङ्कलिप्तम् ॥७८॥
सुस्विन्नमेतदवपीड्य रसं गृहीत्वा
क्षौद्रेण युक्तमतिसारवते प्रदद्यात् ।
कृष्णात्रिपुत्रमतपूजित एष योगः
सर्वातिसारहरणे स्वयमेव राजा ॥ ७९॥
स्वरसस्य गुरुत्वेन पुटपाकपलं पिबेत् ।
पुटपाकस्य पाकोऽयं बहिरारक्तवर्णता॥ ८० ॥

(७ कुटजपुटपाकः) चार तोलेभर कूडाकों ले आठगुना पानीमें पकावै फिर तैसेही अनारका रस मि-

लाके पकावै । जब पककै ल्हस्सीके समान हो जावै तब ग्रहण कर आधा तोलाभर लेकै तक्रके संग पीवै तो रक्तातिसारका नाश होता है । इसके प्रतापसें निश्चय मरनेके योग्य मनुष्यभी नहीं मरता है । क्काथके बराबर अनारका रस लेना । काले तिलोंका कल्कमें खांडका एक भाग मिलाय बकरीका दूधके संग पीवै तो शीघ्र रक्तातिसार दूर होता है । गुदाके दाहमें अथवा गुदाके पाकमें परवल और मुलहटी आदिका पानीसें सेक आदि करना श्रेष्ठ है अथवा बकरीका दूधसें सेक आदिका करना श्रेष्ठ है । गुदभ्रंश अर्थात् कांचके निकसनेमें यही चिकित्सा करनी कही है । दीप्त अग्निवाला मनुष्यकों पिडासें रहित और पका हुआ और बहुत कालसें उपजा और अनेक वर्णोंवाला ऐसा अतिसारकों पुटपाकोंसें चिकित्सित करै । चिकना करडा और कीडा आदिसें नहीं दग्ध हुआ ऐसा कूडावृक्षकी छालकों ग्रहण कर शीघ्र कूटकर जामनके पत्तोंसें लपेट चावलोंका पानीसें सींच और कुशाकरकै बांध बाहिर करडी गारासें लीप कर तिस गोलाकों अग्निमें पकाय पीछे निचोड रसकों ग्रहण कर तिसमें शहद डाल अतिसारवाला रोगीकों देवै । यह योग कृष्णात्रिके पुत्रके मतसें पूजित है और सब प्रकारके अतिसारोंके हरनेमें आपही राजा है । स्वरसके भारीपनकरकै पुटपाकके रसकों पलभर पीवै । बाहिरसें सब तर्फ रक्तवर्ण होजावै तब पुटपाकका पकना जानना ।

(८) त्वक् पिण्डं दीर्घवृन्तस्य काश्मरीपत्रवेष्टितम् ।
मृदावलिप्तं सुकृतमङ्गारेष्ववकूलयेत् ॥ ८१ ॥
स्विन्नमुद्धृत्य निष्पीड्य रसमादाय यत्नतः ।
शीतीकृतं मधुयुतं पाययेदुदरामये ॥ ८२ ॥
शतं कुटजमूलस्य क्षुण्णं तोयार्मणे पचेत् ।
क्काथे पादावशेषेऽस्मिँल्लेहं पूते पुनः पचेत् ॥८३॥
सौवर्चलयवक्षारबिडसैन्धवपिप्पली ।
धातकीन्द्रयवाजाजीचूर्णं दत्वा पलद्वयम् ॥८४॥
लिह्याद्बदरमात्रं तच्छृतं क्षौद्रेण संयुतम् ।
पक्वापक्वमतीसारं नानावर्णं सवेदनम् ।
दुर्वारं ग्रहणीरोगं जयेच्चैव प्रवाहिकाम् ॥ ८५ ॥

(८ कुटजलेहः) पीला लोधवृक्षकी छालका गोला बनाय तिसकों खंभारीके पत्तोंसें लपेट माटीकी गारासें बाहिर लीप अंगारोंसें पकावै । पीछे निकासके निचोड जतनसें रसकों ग्रहण कर शीतल होनेपर तिसमें शहद डाल अतिसाररोगमें पान करावै । कूडाकी छालकों चारसौ ४०० तोलेभर लेकै कूट एक द्रोणभर पानीमें पकावै । जब चौथा हिस्सा क्काथ पकनेमें बाकी रहै तब वस्त्रमांहसें छान फिर पकावै । पीछे काला नमक इलायची जवाखार मनयारीनमक सेंधानमक पीपल धायके फूल इंद्रजव जीरा इन्होंका चूरण कर आठ तोलेभर मिलाके शीतल होनेपर शहदसें युत कर बेरके प्रमाण चाटै । पका हुआ नहीं पका हुआ अनेकवर्णवाला और शूलसहित और भयंकर ऐसा अतिसार प्रवाहिका और ग्रहणीरोग इन्होंकों नाशता है ।

(९) तुलामथार्द्रां गिरिमल्लिकायाः
संक्षुद्य पक्त्वा रसमाददीत ।
तस्मिन्सुपूते पलसम्मितानि
श्लक्ष्णानि पिष्ट्वा सह शाल्मलेन ॥ ८६ ॥
पाठां समङ्गातिविषां समुस्तां
बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनाम् ।
प्रक्षिप्य भूयो विपचेत्तु ताव-
द्दर्वीप्रलेपः स्वरसस्तु यावत् ॥ ८७ ॥
पीतस्त्वसौ कालविदा जलेन
मण्डेन वाजापयसाऽथवाऽपि ।
निहन्ति सर्वं त्वतिसारमुग्रं
कृष्णं सितं लोहितपीतकं वा ॥ ८८ ॥
दोषं ग्रहण्या विविधं च रक्तं
शूलं तथार्शांसि सशोणितानि ।
असृग्दरं चैवमसाध्यरूपं
निहन्त्यवश्यं कुटजाष्टकोऽयम् ॥ ८९ ॥

(९ कुटजाष्टकः) सपेद कूडावृक्षकी ४०० तोलेभर गीलीछालकों लेकै कूट और पकाय रसकों ग्रहण करै पीछे छान तिसमें मिहीन पिसेहुये और चार चार तोले परिमाणसें युत मोचरस सोनापाठा मजीठ अतीस नागरमोथा वेलगिरी धायके फूल इन सबका चूरण डाल फिर पकावै । जब कडछीपर चिपनेलगै और स्वसरूप रहै तब ग्रहण करै । पीछे समयकों जाननेवाला मनुष्य पानीके साथ अथवा मंडके साथ अथवा बकरीका दूधके साथ पीवै । यह भयंकर अतिसार अथवा काला सुपेद लाल पीला ऐसा अतिसार ग्रहणीरोग और अनेक प्रका-

रका रक्तदोष शूल रक्तसहित ववासीर और असाध्यरूपी प्रदर अर्थात् पैरा इन्होंकों यह कुटजाष्टक नाशता है।

(१०) तुलाद्रव्ये जलद्रोणो द्रोणे द्रव्यतुला मता। वत्सकस्य च बीजानि दार्व्याश्च त्वच उत्तमाः ९० पिप्पली शृङ्गवेरं च लाक्षा कटुकरोहिणी। षड्भिरेभिर्घृतं सिद्धं पेयं मण्डावचारितम्। अतीसारं जयेच्छीघ्रं त्रिदोषमपि दारुणम् ॥९१॥

(१० षडङ्गघृतम्) तुला अर्थात् ४०० तोलेभर औषधमें द्रोण अर्थात् १०२४ तोले पानी देना और द्रोणभर पानीमें एक तुलाभर अर्थात् ४०० तोले औषध देना। इंद्रजव दारुहलदीकी छाल त्रिफला पीपल अदरख लाख कुटकी इन छह ओषधोंकरके सिद्ध किया घृत मंडके संग पीना। यह त्रिदोषसें उपजा भयंकर अतिसारकोंभी शीघ्र नाशता है।

**(११) क्षीरिद्रुमाभिरुरसे विपक्वं
तज्जैश्च कल्कैः पयसा च सर्पिः।
सितोपलार्धं मधु पादयुक्तं
रक्तातिसारं शमयत्युदीर्णम् ॥ ९२ ॥
जीर्णेऽमृतोपमं क्षीरमतीसारे विशेषतः। छागं तु भेषजैः सिद्धं देयं वा वारिसाधितम्॥९३॥ बालं बिल्वं गुडं तैलं पिप्पलीविश्वभेषजम्। लिह्याद्वाते प्रतिहते सशूले सप्रवाहिके ॥९४॥ पयसा पिप्पलीकल्कः पीतो वा मरिचोद्भवः। त्र्यहात्प्रवाहिकां हन्ति चिरकालानुबन्धिनीम्९५ कल्कः स्याद्बालबिल्वानां तिलकल्कश्च तत्समः। दध्नः साराम्लः स्नेहाढ्यः खण्डो हन्यात्प्रवाहिकाम् बिल्वोषणं गुडं लोध्रं तैलं लिह्यात्प्रवाहणे ॥९६॥
दध्ना ससारेण समाक्षिकेण
भुञ्जीत निश्चारकपीडितस्तु।
सुतप्तकुप्यक्वथितेन वापि
क्षीरेण शीतेन मधुप्लुतेन ॥ ९७ ॥
दीप्ताग्निर्निष्पुरीषो यः सार्यते फेनिलं शकृत्। स पिबेत्फाणितं शुण्ठीदधितैलपयोघृतम्॥ ९८॥ शोथं शूलं ज्वरं तृष्णां श्वासं कासमरोचकम्। छर्दिं मूर्च्छां च हिक्कां च दृष्ट्वातीसारिणं त्यजेत्। वहुमेही नरो यस्तु भिन्नविट्को न जीवति ९९ स्नानाभ्यङ्गावगाहांश्च गुरुस्निग्धातिभोजनम्। व्यायाममग्निसन्तापमतिसारी विवर्जयेत् १००**

इत्यतीसारचिकित्सा।

(११ क्षीरिद्रुमाद्यं घृतम्) पीपल और शतावरीके रसमें इन्होंका कल्क और दूध मिलाय घृतकों सिद्ध करै पीछे मिश्री आधाभाग और शहद चौथाई भाग मिलाय पीनेसें भयंकर रक्तातिसार दूर होजाता है। जीर्णज्वरमें दूध अमृतके समान है और अतिसारमें विशेषकरकै अमृतके समान है औषधोंसें सिद्ध किया अथवा पानीसें सिद्ध किया बकरीका दूध देना उचित है। कच्ची वेलगिरी गुड तेल पीपल सोंठ इन्होंकों शूल और प्रवाहिकासहित वातकों प्रतिहत होनेमें चाटै। पीपलके कल्ककों अथवा मिरचोंके कल्ककों दूधके संग पीवै तो तीन दिनमें पुराणी प्रवाहिकाका नाश होता है। कच्ची वेलगिरीका कल्कमें तिलोंका कल्क बराबर भाग मिलाय और तिसमें दहीका सार और स्नेह मिलावै यह खंड प्रवाहिकाकों नाशता है। वेलगिरी मिरच गुड लोध तेल इन्होंका अवलेह बनाय प्रवाहिकामें चाटै दहीके सारमें शहद मिलाय भोजन करै। गर्मकरा पात्रमें क्वथित किया दूधकों शीतल कर तिसमें शहद डाल पीवै। दीप्तअग्निवाला और मलसें रहित ऐसा जो मनुष्य झागोंसहित मलका दस्त उतारै वह सोंठ दही तेल दूध घृत इन्होंके फाणितकों पीवै। शोजा शूल ज्वर तृषा श्वास खांसी अरुचि छर्दि मूर्च्छा हिचकी इन्होंसें युत हुआ अतिसाररोगीकों देखकर त्यागै। बहुतवार मूतै और जिसका भिन्नरूपी मल हो ऐसा अतिसारवाला नहीं जीवता। स्नान अभ्यंग जलआदिमें तिरना भारीभोजन चिकनाभोजन अत्यंतभोजन कसरत और अग्निका संताप इन्होंकों अतिसाररोगी वर्जित करै।

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायपुत्रपंडितरविदत्तशास्त्रि-राजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायामतिसारचिकित्सा।

अथ ग्रहण्यधिकारः ४

अब ग्रहणीअधिकार कहते है।

(१) ग्रहणीमाश्रितं दोषमजीर्णवदुपाचरेत्। अतीसारोक्तविधिना तस्यामं च विपाचयेत् ॥१॥ शरीरानुगते सामे रसे लङ्घनपाचनम्।

विशुद्धामाशयायास्मै पञ्चकोलादिभिर्युतम् ।
दद्यात्पेयादिलघ्वन्नं पुनर्योगांश्च दीपकान् ॥ २ ॥
कपित्थबिल्वचाङ्गेरी तक्रदाडिमसाधिता ।
पाचनी ग्रहणी पेया सवाते पाञ्चमूलिकी ॥३॥
ग्रहणीदोषिणां तक्रं दीपनं ग्राहि लाघवात् ।
पथ्यं मधुरपाकित्वान्न च पित्तप्रकोपनम् ॥ ४ ॥
कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्षाच्चैव कफे हितम् ।
वाते स्वाद्वम्लसान्द्रत्वात्सद्यस्कमविदाहितम् ५

शुण्ठीं समुस्तातिविषां गुडूचीं
पिबेज्जलेन क्थितां समांशाम् ।
मन्दानलत्वे सततामताया-
मामानुबन्धे ग्रहणीगदे च ॥ ६ ॥

धन्याकातिविषोदीच्ययवानीमुस्तनागरम् ।
बलाद्विपर्णी बिल्वं च दद्याद्दीपनपाचनम् ॥७॥

(१ ग्रहणीप्रकारः) ग्रहणीमें आश्रित हुआ दोषकी अजीर्णकी तरह चिकित्सा करै तहां अतिसारमें कही विधिकरकै आमकों पकावै । शरीरके अनुगत हुआ आमसहित रसमें लंघन और पाचन हित है । विशेषकरकै शुद्ध हुआ है आमाशय जिसका ऐसे मनुष्यकों पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन आदिसें युक्त हुआ । पेया आदि हलका अन्न देकै फिर दीप्त करनेवाले योगोंकों देवै । कैथ वेलगिरी चूका तक्र अनारका रस इन्होंमें साधित करी पेया पाचन करती है मलकों बांधती है और वातसहित दोषमें पंचमूलसें युत करी पेया देनी । ग्रहणीदोषवालोंकों तक्र दीपन है मलकों बांधता है हलका है पथ्य है और मधुर पाकवाला होनेसें पित्तकों नहीं कोपता है । कसैला गर्म विकासी और रूषा होनेसें कफमें हित है स्वादु आम्ल सांद्रपनेसें तत्कालका बनाय तक्र वातमें हित है । सोंठ नागरमोथा अतीस गिलोय ये सब बराबर भाग लेकै पानीके संग पीवै तो मंदाग्नि आमदोष आमसें युत हुआ ग्रहणीदोष इन्होंमें हित है । धनियां अतीस नेत्रवाला अजमान नागरमोथा सोंठ खरैंहटी सालवन पिठवन वेलगिरी यह दीपन पाचन देना ।

(२) चित्रकं पिप्पलीमूलं द्वौ क्षारौ लवणानि च ।
व्योषहिङ्ग्वजमोदां च चव्यं चैकत्र चूर्णयेत् ॥८॥
गुटिका मातुलुङ्गस्य दाडिमाम्लरसेन वा ।
कृता विपाचयत्यामं दीपयत्याशु चानलम् ॥९॥
सौवर्चलं सैन्धवं च विडमौद्भिदमेव च ।
सामुद्रेण समं पञ्च लवणान्यत्र योजयेत् ॥१०॥

श्रीफलशलाटुकल्को
नागरचूर्णेन मिश्रितः सगुडः ।
ग्रहणीगदमत्युग्रं
तक्रभुजा शीलितो जयति ॥ ११ ॥

जम्बूदाडिमशृङ्गाटपाठाकंचटपल्लवैः ।
पक्वं पर्युषितं बालबिल्वं सगुडनागरम् ॥ १२ ॥
हन्ति सर्वानतीसारान्ग्रहणीमतिदुस्तराम् ।
नागरातिविषामुस्तक्काथः स्यादामपाचनः ॥१३॥
चूर्णं हिङ्ग्वष्टकं वातग्रहण्यां तु घृतानि च ।

(२ चित्रगुटिका) चीता पीपलामूल जवाखार साजीखार सब प्रकारके नमक सोंठ मिरच पीपल हींग अजमोद और चव्य इन्होंकों मिलाकै चूरण करै । पीछे विजोराका रसकरकै अथवा अनार व नींबूका रसकरकै करी गोली आमकों पकाती है और अग्निकों शीघ्र जगाती है । कालानमक सेंधानमक मनयारीनमक रेहनमक खारीनमक यहां ये पांच नमक प्रयुक्त करने । कच्ची वेलगिरीके कल्कमें गुड और सोंठका चूरण तक्रकों भोजन करनेवाला खावै तो अत्यंत उग्ररूपी ग्रहणीरोग दूर होता है । जामन अनार सिंगाडा सोनापाठा चौलाई इन्होंके पत्तोंसें पकाया हुआ और वासी कचा बेलफल गुड सोंठ यह सब प्रकारके अतिसार भयंकर ग्रहणी इनकों नाशता है । सोंठ अतीस नागरमोथा इन्होंका क्काथ आमकों पकाता है वातकी ग्रहणीमें हिंगाष्टक चूरण और घृत हित है ।

(३)नागरातिविषामुस्तं धातकीं सरसाञ्जनम् १४
वत्सकत्वक्फलं बिल्वं पाठां कटुकरोहिणीम् ।
पिबेत्समांशं तच्चूर्णं सक्षौद्रं तण्डुलाम्बुना ॥१५॥
पैत्तिके ग्रहणीदोषे रक्तं यश्चोपवेश्यते ।
अर्शांस्यथ गुदे शूलं जयेच्चैव प्रवाहिकाम् ॥१६॥
नागराद्यमिदं चूर्णं कृष्णात्रेयेण पूजितम् ।
शीतकषायमानेन तण्डुलोदककल्पना ॥ १७ ॥
केऽप्यष्टगुणतोयेन प्राहुस्तण्डुलभावनाम् ।

(३ नागराद्यं चूर्णम्) सोंठ अतीस नागरमोथा धायके फूल रसोत कूडाकी छाल इंद्रजव वेलगिरी पाठा कुटकी ये सब बराबर भाग लेकै चूरण बनाय तिसमें श-

हद डाल चावलोंका पानीके संग पीवै । पित्तके ग्रहणीदोषमें जो मनुष्य रक्तका दस्त जावै तिसकों और ववासीर गुदामें शूल प्रवाहिका इन्होंका नाश होता है । यह नागराद्य चूरण कृष्णात्रेयनें पूजित किया है । शीत कषायके प्रमाण करकै चावलोंका पानीकी कल्पना है । कितनेक वैद्य आठगुण पानीमें चावलोंकों भावना देना ऐसा कहते हैं ।

(४) भूनिम्बकटुकाव्योषमुस्तकेन्द्रयवान्समान् १८
द्वौ चित्रकाद्वत्सकत्वग्भागान्षोडश चूर्णयेत् ।
गुडशीताम्बुना पीतं ग्रहणीदोषगुल्मनुत् ॥१९॥
कामलाज्वरपाण्डुत्वमेहारुच्यतिसारनुत् ।
गुडयोगाद्गुडाम्बु स्याद्गुडवर्णरसान्वितम् ॥ २० ॥
ग्रहण्यां श्लेष्मदुष्टायां वमितस्य यथाविधि ।
कट्वम्ललवणक्षारैस्तीक्ष्णैश्चाग्निं विवर्धयेत् ॥२१॥
समूलां पिप्पलीं क्षारौ द्वौ पञ्च लवणानि च ।
मातुलुङ्गाभयारास्नाशठीमरिचनागरम् ॥ २२ ॥
कृत्वा समांशं तच्चूर्णं पिबेत्प्रातः सुखाम्बुना ।
श्लैष्मिके ग्रहणीदोषे वलवर्णाग्निवर्धनम् ॥२३॥
एतैरेवौषधैः सिद्धं सर्पिः पेयं समारुते ।
भल्लातकं त्रिकटुकं त्रिफला लवणत्रयम् ॥ २४॥
अन्तर्धूमं द्विपलिकं गोपुरीषाग्निना दहेत् ।
सक्षारः सर्पिषा पेयो भोज्ये वाप्यवचारितः २५
हृत्पाण्डुग्रहणीदोषगुल्मोदावर्तशूलनुत् ।
सर्वजायां ग्रहण्यां तु सामान्यो विधिरिष्यते २६
चूर्णं मरिचमहौषध
कुटजत्वक्संभवं क्रमाद्द्विगुणम् ।
गुडमिश्रमथितपीतं
ग्रहणीदोषापहं ख्यातम् ॥ २७ ॥

(४ भूनिंबाद्यं चूर्णम्) चिरायता कुटकी सोंठ मिरच पीपल नागरमोथा इंद्रजव ये सब बराबर भाग और चीता २ भाग और कूडाकी छाल १६ भाग इन्होंका चूरण करै तिसकों गुडसहित शीतल पानीके संग पीवै । यह ग्रहणीदोष गुल्म कामला ज्वर पांडु प्रमेह अरुचि अतिसार इन्होंकों नाशता है । गुडके योगसें गुडका वर्ण और रससें युत हुआ गुडाम्बु अर्थात् गुडका शर्बत होताहै । कफसें दुष्ट हुई ग्रहणीमें वमन कराये हुये मनुष्यकों विधिके अनुसार कटु खट्टा सलोना खारा तीक्ष्ण इन्होंसें अग्निकों बढावै । पीपलामूल जवाखार साजीखार पांचोंनमक विजोरा हरडै रासन कचूर मिरच सोंठ ये सब बराबर भाग ले चूरण बनाय प्रातःकाल सुखरूपी पानीके संग पीवै । कफके ग्रहणीदोषमें यह बलवर्ण और अग्नि इन्होंकों बढाता है । इन्हीं ओषधोंसें सिद्ध किया घृत वातकी ग्रहणीमें पीना । भिलावा सोंठ मिरच पीपल त्रिफला कालानमक मनयारीनमक सेंधानमक ये आठ तोलेभर लेकै ऐसी विधिसें गौका गोवरके गोसोंकी अग्निसें जलावै कि धूमा भीतरही रहै । पीछे तिसमें जवाखार मिलाय घृतके संग पीवै अथवा भोजनके संग खावै यह हृद्रोग पांडु ग्रहणीदोष गुल्म उदावर्त शूल इन्होंकों नाशता है । सब दोषोंसें उपजा ग्रहणीदोषमें सामान्य विधि कही है । मिरच सोंठ कूडाकी छाल ये सब क्रमसें दुगुने दुगुने लेकै चूरण बनाय तिसमें गुड मिलाय मथितके संग पीवै तो ग्रहणीदोषका नाश होता है ।

(५) पाठाबिल्वानलव्योषजम्बूदाडिमधातकी ।
कटुकातिविषामुस्तदार्वीभूनिम्बवत्सकैः ॥ २८ ॥
सर्वैरेतैः समं चूर्णं कौटजं तण्डुलाम्बुना ।
सक्षौद्रं च पिबेच्छर्दिज्वरातीसारशूलवान् २९
तृड्दाहग्रहणीदोषारोचकानलसादजित् ।

(५ पाठाद्यं चूर्णम्) सोनापाठा वेलगिरी चीता सोंठ मिरच पीपल जामन अनार धायके फूल कुटकी अतीस नागरमोथा दारुहलदी चिरायता कूडाकी छाल येसब बराबर भाग ले और इन सबोंके बराबर इंद्रजवकों ले चूरण बनाय तिसमें शहद मिलाय चावलोंका पानीके संग पीवै । यह छर्दि ज्वर आतिसार शूल तृषा दाह ग्रहणीदोष अरोचक मंदाग्नि इन्होंकों जीतता है ।

(६) यवानीपिप्पलीमूलचतुर्जातकनागरैः ॥३०॥
मरिचाग्निजलाजाजीधान्यसौवर्चलैः समैः ।
वृक्षाम्लधातकीकृष्णाविल्वदाडिमतिन्दुकैः॥३१॥
त्रिगुणैः षड्गुणसितैः कपित्थाष्टगुणैः कृतः ।
चूर्णोऽतिसारग्रहणीक्षयगुल्मगलामयान् ॥ ३२ ॥
कासं श्वासारुचिं हिक्कां कपित्थाष्टमिदं जयेत् ।

(६ कपित्थाष्टकं चूर्णम्) अजमान पीपलामूल दालचिनी इलायची तेजपात नागकेसर सोंठ मिरच चीता नेत्रवाला जीरा धनियां कालानमक ये सब बराबर भाग

अमलवेत धायके फूल पीपल वेलगिरी अनार तेंदू ये तिगुने ले और कैथ आठगुणा ले । इन्होंका चूरण अतिसार ग्रहणी क्षय गुल्म गलरोग खांसी श्वास अरुचि हिचकी इन्होंकों नाशता है यह कपित्थाष्टक है ।

(७) कर्षोन्मिता तुगाक्षीरी चातुर्जातं द्विकार्षिकम् यवानीधान्यकाजाजीग्रन्थिव्योषं पलांशिकम् । पलानि दाडिमादष्टौ सितायाश्चैकतः कृतः॥३४॥ गुणैः कपित्थाष्टकवच्चूर्णोऽयं दाडिमाष्टकः ।

(**७ दाडिमाष्टकम्**) वंशलोचन एक तोला और दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर ये सब दो दो तोले और अजमान धनियां जीरा पीपलामूल सोंठ मिरच पीपल ये सब चार चार तोले अनार बत्तीस तोले मिश्री बत्तीस तोले यह दाडिमाष्टक कपित्थाष्टक चूरणकी तरह गुणोंकों करता है ।

(८) चतुःपलं सुधाकाण्डात्रिपलं लवणत्रयात् ३५ वार्ताकुकुडवश्चार्कादष्टौ द्वे चित्रकात्पले । दग्धानि वार्ताकुरसे गुडिका भोजनोत्तराः॥३६॥ भुक्तं भुक्तं पचन्त्याशु कासश्वासार्शसां हिताः । विषूचिकाप्रतिश्यायहृद्रोगघ्नाश्च ता हिताः॥३७॥

(**८ वार्ताकुगुटिका**) थोहरका कांडा १६ तोले सेंधानमक कालानमक मनयारीनमक ये १६ तोले वार्ताकु १६ तोले आककी जड १६ तोले चीता आठ ८ तोले इन्होंकों दग्धकर वार्ताकुके रसमें मिलाके गोली बनाय भोजनके ऊपर खावै तो भोजन कियेकों शीघ्रपचाती है और खांसी श्वास ववासीर इन्होंकों हित है । और विषूचिका हैजा पीनस हृद्रोग इन्होंकों नाशती है ।

(९) त्र्यूषणत्रिफलाकल्के बिल्वमात्रे गुडात्पले । सर्पिषोऽष्टपलं पक्त्वा मात्रां मन्दानलः पिबेत् ३८ मसूरस्य कषायेण बिल्वगर्भं पचेद्घृतम् । हन्ति कुक्ष्यामयान्सर्वान्ग्रहणीपाण्डुकामलाः ३९ केवलं व्रीहिप्राण्यङ्गक्राथो व्युष्टस्तु दोषलः ।

(**९ अष्टपलघृतम्**) सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला इन्होंके चार तोलेभर कल्कमें चार तोलेभर गुडकों मिलाय बत्तीस तोलेभर घृतकों पकाकै इसकी योग्य मात्राकों मंदअग्निवाला पीवै । मसूरका काढा करके वेलगिरीके गर्भमें घृतकों पकावै । यह सब प्रकारके कुक्षिरोग ग्रहणी पांडुरोग और कामला इन्होंकों नाशता है ।

(१०) विश्वौषधस्य गर्भेण दशमूलजले शृतम् । घृतं निहन्याच्छ्वयथुं ग्रहणीसामतामयम् ॥ ४० ॥ घृतं नागरकल्केन सिद्धं वातानुलोमनम् । ग्रहणीपाण्डुरोगघ्नं प्लीहकासज्वरापहम् ॥ ४१ ॥

(**१० शुंठीघृतम्**) सोंठका कल्क और दशमूलके काथमें घृतकों पकाय पीवै तो शोजा ग्रहणी आमदोष इन्होंका नाश होता है । सोंठके कल्कमें सिद्ध किया घृत वातकों अनुकूल करता है और ग्रहणी पांडुरोग तिल्लीरोग खांसी ज्वर इन्होंकों नाशता है ।

(११) चित्रकक्राथकल्काभ्यां ग्रहणीघ्नं शृतं हविः । गुल्मशोथोदरप्लीहशूलार्शोघ्नं प्रदीपनम् ॥ ४२ ॥

(**११ चित्रकघृतम्**) चीताका काथ और कल्कसें सिद्ध किया घृत ग्रहणीकों नाशता है और गुल्म शोजा उदररोग तिल्लीरोग शूल ववासीर इन्होंकों नाशता है ।

(१२) बिल्वाग्निचव्यार्द्रकशृङ्गवेर-
क्राथेन कल्केन च सिद्धमाज्यम् ।
सच्छागदुग्धे ग्रहणीगदोत्थे
शोथाग्निमान्द्यारुचिनुद्वरिष्ठम् ॥ ४३ ॥

(**१२ बिल्वाद्यं घृतम्**) वेलगिरी चीता चव्य अदरक इन्होंका क्राथ और कल्क करकै बकरीके दूधमें सिद्ध किया घृत ग्रहणीरोगसें उपजे शोजा मंदाग्नि अरुचि इन्होंकों नाशता है ।

(१३) नागरं पिप्पलीमूलं चित्रको हस्तिपिप्पली । श्वदंष्ट्रा पिप्पली धान्यं बिल्वं पाठा यवानिका ४४ चाङ्गेरीस्वरसे सर्पिः कल्कैरेतैर्विपाचितम् । चतुर्गुणे च दध्ना च तद्घृतं कफवातनुत् ॥४५॥ अर्शांसि ग्रहणीदोषं मूत्रकृच्छ्रं प्रवाहिकाम् । गुदभ्रंशार्तिमानाहं घृतमेतद्व्यपोहति ॥ ४६ ॥

(**१३ चांगेरीघृतम्**) सोंठ पीपलामूल चीता गजपीपल गोखरू पीपल धनियां वेलगिरी सोनापाठा अजमान इन्होंका कल्क और चूकाके स्वरसमें चौगुणी दहीके संग घृतकों पकावै वह घृत कफ और वातकों

नाशता है । और ववासीर ग्रहणीदोष मूत्रकृच्छ्र प्रवाहिका गुदभ्रंश आनाह इन्होंकोंभी दूर करता है ।

(१४) मरिचं पिप्पलीमूलं नागरं पिप्पली तथा।
भल्लातकं यवानी च विडङ्गं हस्तिपिप्पली॥४७॥
हिङ्गु सौवर्चलं चैव बिडसैन्धवदार्व्यथ ।
सामुद्रं सयवक्षारं चित्रको वचया सह ॥ ४८ ॥
एतैरर्धपलैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
दशमूलीरसे सिद्धं पयसा द्विगुणेन च ॥ ४९ ॥
मन्दाग्नीनां हितं सिद्धं ग्रहणीदोषनाशनम् ।
विष्टम्भमामं दौर्बल्यं प्लीहानमपकर्षति ॥ ५० ॥
कासं श्वासं क्षयं चैव दुर्नाम सभगन्दरम् ।
कफजान्हन्ति रोगांश्च वातजान्क्रिमिसम्भवान्५१
तान्सर्वान्नाशयत्याशु शुष्कं दार्व्यनलो यथा ।

(१४ मरिचाद्यं घृतम्) मिरच पीपलामूल सोंठ पीपल भिलावा अजमान वायविडंग गजपीपल हींग कालानमक मनयारीनमक सेंधानमक चव्य खारीनमक जवाखार चीता वच ये सब दो दो तोलेभर लेकै चौंसठ तोलेभर घृतकों पकावै परंतु दशमूलके रसमें और दुगुणा दूधमें सिद्ध करै । यह घृत मंदाग्निवालोंकों हित है और ग्रहणीदोषकों नाशता है । और विष्टंभरोग आमदोष दुर्बलपना तिल्लीरोग इन्होंकों दूर करता है । और खांसी श्वास क्षयरोग ववासीर भगंदर कफके रोग वातके रोग कृमिजरोग इन सबोंकों शीघ्र नाशता है जैसे सूखा काष्ठकों अग्नि ।

(१५) सौवर्चलं पञ्चकोलं सैन्धवं हपुषां वचाम्
अजमोदां यवक्षारं हिङ्गु जीरकमौद्भिदम् ।
कृष्णाजाजी सभूतीकं कल्कीकृत्य पलार्धकम्५३
आर्द्रकस्य रसं चुक्रं क्षीरं मस्त्वम्लकाञ्जिकम् ।
दशमूलकषायेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ५४ ॥
भक्तेन सह दातव्यं निर्भक्तं वा विचक्षणैः ।
क्रिमिप्लीहोदराजीर्णज्वरकुष्ठप्रवाहिकाम् ॥ ५५ ॥
वातरोगान्कफव्याधीन्हन्याच्छूलमरोचकम् ।
पाण्डुरोगं क्षयं कासं दौर्बल्यं ग्रहणीगदम् ॥५६॥
महाषट्पलकं नाम वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा।

(१५ महाषट्पलकघृतम्) कालानमक पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ सेंधानमक हाऊवेर वच अजमोद जवाखार हींग जीरा रेहनमक कलाजीरा करंजुवा ये सब दो दो तोलेभर लेकै कल्क बनाय और अदरकका स्वरस चुक्र दूध दहीका पानी खट्टारस कांजी दशमूलका काढा इन सबोंमें चौंसठ तोलेभर घृतकों पकावै पीछे भातके संग अथवा भातके विना देना कृमिरोग तिल्लीरोग उदररोग अजीर्ण ज्वर कुष्ठ प्रवाहिका वातरोग कफके रोग शूल अरोचक पांडुरोग क्षय खांसी दुर्बलपना ग्रहणीरोग इन्होंकों यह महाषट्पलक घृत नाशता है जैसे वृक्षकों इंद्रका वज्र ।

(१६) यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् ॥ ५७ ॥
धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ।
लवणं गुडमध्वारनालमस्तु क्रमादिह ॥ ५८ ॥

(१६ स्वल्पचुक्रम्) सुंदर पात्रमें दहीका पानी आदि गुड शहद कांजी इन्होंकों घाल पात्रकों ढक अन्नके समूहमें तीन रात्रिपर्यंत धरै वह शुक्त और चुक्र कहाताहै । गुड शहद कांजी दहीका पानी ये क्रमसें दुगुणे लेने ।

(१७) प्रस्थं तण्डुलतोयतस्तुषजला-
त्प्रस्थत्रयं चाम्लतः
प्रस्थार्धं दधितोऽम्लमूलकपला-
न्यष्टौ गुडान्मानिके ।
मान्यौ शोधितशृङ्गवेरसकला-
द्वे सिन्धवजाज्योः पले
द्वे कृष्णोषणयोर्निशापलयुगं
निक्षिप्य भाण्डे दृढे ॥ ५९ ॥
स्निग्धे धान्ययवादिराशिनिहितं
त्रीन्वासरान्स्थापयेत्
ग्रीष्मे तोयधरात्यये च चतुरो
वर्षासु पुष्पागमे ।
षट्शीतेऽष्टदिनान्यतः परमिदं
विस्राव्य संचूर्णयेत्
चातुर्जातपलेन संहितमिदं
शुक्रं च चुक्रं च तत् ॥ ६० ॥
हन्याद्वातकफामदोषजनिता-
न्नानाविधानामयान्

दुर्नामानिलगुल्मशूलजठरा-
न्हत्वानलं दीपयेत् ॥ ६१ ॥

(१७ बृहच्चुक्रसंधानम्) चावलोंका पानी चौंसठ तोले जवोंका पानी चौंसठ तोले बिजोराका रस १९२ तोले दहीं ३२ तोले चूका और मूली बत्तीस तोले शोधाहुआ अदरक चौंसठ तोले सेंधानमक और जीरा आठ तोले पीपल और काली मिरच आठ तोले हलदी १६ तोले इन सबकों दृढरूपी पात्रमें घाल । परंतु पात्र चिकना हो पीछे चावल और जव आदि अन्नके समूहमें स्थापित कर तीन दिनपर्यंत ज्येष्ठ आषाढ आश्विन कार्तिक इन महीनोंमें धरै श्रावण और भादुवामें चार दिनपर्यंत धरै चैत्र और वैशाखमें छः दिनपर्यंत धरै मंगशिर पौष माघ फागण इन्होंमें आठ दिनपर्यंत धरै इस्सें उपरंत इ-सकों स्त्रावितकर चूरण करै पीछे दालचिनी इलायची ते-जपात नागकेसर इन्होंका चूरण मिलावै वह शुक्त व चुक्र कहा । यह वातरोग कफरोग आमदोष इन्होंसें उ-पजे अनेक प्रकारके रोग ववासीर गुल्म शूल उदररोग इन्होंकों नाशता है और अग्निकों दीप्त करता है ।

(१८) यमान्यामलकं पथ्या मरिचं त्रिपलांशिकम्
लवणानि पलांशानि पंच चैकत्र चूर्णयेत् ॥६२॥
तत्र कंसासुतं जातं तक्रारिष्टं पिबेन्नरः ।
दीपनं शोथगुल्मार्शःक्रिमिमेहोदरापहम् ॥ ६३॥

(१८ तक्रारिष्टम्) अजमान आंवला हरडै मिरच ये सब बारह तोले पांचोंनमक चार तोले इन सबकों मिलाय चूरण करै । तिस चूरणकों तक्रमें मिलाय जमावै पीछे तक्रारिष्टकों पीवै । यह दीपन है सोजा गल्म ववासीर कृमिदोष उदररोग इन्होंकों नाशता है ।

(१९) वाट्यस्य दद्याद्यवशक्तुकानां
पृथक् पृथक् त्वाढकसंमितं च ।
मध्यप्रमाणानि च मूलकानि
दद्याच्चतुःषष्टिसकल्पितानि ॥ ६४ ॥
द्रोणेऽम्भसः प्लाव्य घटे सुधौते
दद्यादिदं भेषजजातयुक्तम् ।
क्षारद्वयं तुम्बुरुवस्तगन्धा-
धनीयकं स्याद्बिडसैन्धवं च ॥ ६५ ॥
सौवर्चलं हिङ्गु शिराटिका च
चव्यं च दद्याद्द्विपलप्रमाणम् ।
इमानि चान्यानि पलोन्मितानि
विजर्जरीकृत्य घटे क्षिपेच्च ॥ ६६ ॥
कृष्णामजाजीमुपकुंचिकां च
तथासुरीं कारविचित्रकं च ।
पक्षस्थितोऽयं बलवर्णदेह-
वयः करोऽतीव बलप्रदं च ॥ ६७ ॥
कां जीवयामीति यतः प्रवृत्त-
स्तत्कांजिकेति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ।
आयामकालाज्जरयेच्च भक्त-
मायामकेति प्रवदन्ति चैनम् ॥ ६८ ॥
दकोदरं गुल्ममथ प्लिहानं
हृद्रोगमानाहमरोचकं च ।
मन्दाग्नितां कोष्ठगतं च शूल-
मार्शोविकारान्सभगन्दरांश्च ॥ ६९ ॥
वातामयानाशु निहन्ति सर्वान्
संसेव्यमानं विविधान्नराणाम् ॥ ७० ॥

(१९ आयामकांजिकम्) पोहकरमूल और जवोंके सत्तुवोंकों पृथक् दोसौ छपन २५६ तोले लेवै और मध्य प्रमाणकी मूली चौंसठ तोले एक द्रोणभर पानीके सहित इन सबोंकों शुद्ध धोया हुआ घडामें घाल पीछे जवाखार साजीखार चिरफल वनतुलसी धनियां मनयारी-मनक सेंधानमक कालानमक हींग शिराटिका चव्य ये आठ तोले लेवै और अन्य वक्ष्यमाण औषध चार चार तोले ले इन सबकों कूट घडामें घालै।पीछे पीपल जीरा कलौंजी राई अजमोद चीता इन सबकों घालकै घडेके मुखकों बंधकर १५ दिनतक धरै यह बल वर्ण देह अवस्था इन्होंकों करता है और अत्यंत बलकों देता है । मै किनकों जीवाऊं ऐसें कहके प्रवृत्त हुआ यह कांजी है ऐसे वैद्यजन कहते हैं और यह आयाम अर्थात् एक पहरभरमें भोजनकों ज-राता है इस कारणसें इसकों आयामक कहते है । जलो-दर पेटका गोला तिल्लीरोग हृदयरोग अफरा अरोचक मंदाग्नि कोठाका शूल ववासीरके विकार भगंदर सब प्रकारके वायूके रोग इन्होंकों सेवनेसें शीघ्र दूर क-रता है ।

(२०) प्रस्थत्रयेणामलकीरसस्य
शुद्धस्य दत्त्वार्धतुलां गुडस्य।
चूर्णीकृतैर्ग्रन्थिकजीरचव्य-
व्योषेभकृष्णाहपुषाजमोदैः ॥ ७१ ॥
विडङ्गसिन्धुत्रिफलायमानी-
पाठाग्निधान्यैश्च पलप्रमाणैः।
दत्त्वा त्रिवृच्चूर्णपलानि चाष्टा-
वष्टौ च तैलस्य पचेद्यथावत् ॥ ७२ ॥
तं भक्षयेदक्षफलप्रमाणं
यथेष्टचेष्टं त्रिसुगन्धियुक्तम्।
अनेन सर्वे ग्रहणीविकाराः
सश्वासकासस्वरभेदशोथाः ॥ ७३ ॥
शाम्यन्ति चायं चिरमन्थराग्ने-
र्हतस्य पुंस्त्वस्य च वृद्धिहेतुः।
स्त्रीणां च वन्ध्यामयनाशनोऽयं
कल्याणको नाम गुडः प्रदिष्टः ॥ ७४ ॥
तैले मनाग्भर्जयन्ति त्रिवृदत्र चिकित्सकाः।
अत्रोक्तमानसाधर्म्यात् त्रिसुगन्धं पलं पृथक् ७५

(२० कल्याणगुडः) आंवलाका रस १९२ तोले शुद्ध किया गुड २०० तोले और पीपलामूल जीरा चव्य सोंठ मिरच पीपल गजपीपल हाऊवेर अजमोद वायविडंग सेंधानमक हरड बहेडा आंवला अजमान सोनापाठा चीता धनियां ये सब चार चार तोले लेने और निशोत ३२ तोले इन सबोंका चूर्ण बनाय और ३२ तोले तेलमें मिलाय विधिपूर्वक पकावै। पीछे दालचिनी इलायची तेजपात इन्होंका चूर्ण मिलाय एक तोलाभर औषधकों खावै। इस्सें सब प्रकारके ग्रहणीविकार श्वास खांसी स्वरभेद शोजा ये रोग नष्ट होते हैं। और बहुत कालसें अग्निकरके हत हुआ पुरुषपनेकों बढानेका कारण है और स्त्रियोंके वंध्यापनकों नाशता है। यह कल्याणगुड कहा। तेलमें निशोतके चूर्णकों वैद्य यहां भूनते हैं और यहां पूर्वोक्त तोलके अनुसार दालचिनी इलायची तेजपात ये तीनोंभी चार चार तोले लेने।

(२१) कूष्माण्डकानां रूढानां सुस्विन्नं
निष्कुलत्वचाम्।
सर्पिःप्रस्थे पलशतं ताम्रभाण्डे शनैः पचेत् ७६
पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रको हस्तिपिप्पली।
धान्यकानि विडङ्गानि यमानी मरिचानि च ७७
त्रिफला चाजमोदा च कलिङ्गाजाजि सैन्धवम्।
एकैकस्य पलं चैव त्रिवृदष्टपलं भवेत् ॥ ७८ ॥
तैलस्य च पलान्यष्टौ गुडपञ्चाशदेव तु।
प्रस्थैस्त्रिभिः समेतं तु रसेनामलकस्य तु ॥७९॥
यदा दार्वीप्रलेपस्तु तदैनमवतारयेत्।
यथाशक्ति गुडान्कुर्यात्कर्षकर्षार्धमानकान् ८०
अनेन विधिना चैव प्रयुक्तस्तु जयेदिमान्।
प्रसह्य ग्रहणीरोगान्कुष्ठान्यर्शोभगन्दरान् ८१
ज्वरमानाहहृद्रोगगुल्मोदरविषूचिकाः।
कामलापाण्डुरोगांश्च प्रमेहांश्चैव विंशतिम् ८२
वातशोणितवीसर्पान्दद्रुचर्महलीमकान्।
कफपित्तानिलान्सर्वान्प्ररूढांश्च व्यपोहति ॥८३॥
व्याधिक्षीणा वयःक्षीणाः स्त्रीषु क्षीणाश्च ये नराः
तेषां वृष्यं च बल्यं च वयःस्थापनमेव च ८४
गुडकल्याणकं नाम वन्ध्यानां गर्भदं परम्।
याऽम्लपित्ते विधातव्या गुडिका च क्षुधावती८५

(२१ कूष्मांडगुडकल्याणकम्) अछे पेठे लेके उन्होंकों सिजाय छिलका दूर कर ४०० तोलेभर तुकडे बनाय ६४ तोले घृतमें तांबाके पात्रविषै हौलें हौलें पकावै। पीपल पीपलामूल चीता गजपीपल धनियां वायविडंग अजमान मिरच हरड बहेडा आंवला अजमोद इंद्रजव जीरा सेंधानमक ये सब चार चार तोले और निशोत ३२ तोले तेल ३२ तोले गुड ५० तोले आंवलाका रस १९२ तोले इन्होंकों मिलाय पकावै। जब कडछीपै चिपने लगै तब अग्निसें उतार शक्तिके अनुसार एक तोला व आधा तोलाके प्रमाणसें गोली करै। इस विधिकरके प्रयुक्त किया इन रोगोंकों बलसें जीतता है। ग्रहणीरोग कुष्ठ ववासीर भगंदर ज्वर अफारा हृद्रोग पेटका गोला पेटके रोग विसूचिका हैजा कामला पांडुरोग २० प्रकारके प्रमेह वातरक्त विसर्परोग दद्रु चर्मरोग हलीमक कफ पित्त वातके सब रोग इन्होंकों दूर करताहै। रोगसें क्षीण हुये अवस्थासें क्षीण हुये स्त्रियोंविषे क्षीण हुये जो मनुष्य हैं तिन्होंकों वीर्य और बल देता है और अवस्थाकों स्थापित करता है। यह गुडकल्याण वंध्या स्त्रियोंकों निश्चै गर्भ देता है। जो अम्लपित्तके प्रकरणमें क्षुधावती गुटिका कही है वहभी यहां युक्त करनी।

(२२) तत्र प्रोक्तविधा शुद्धौ समानौ रसगन्धकौ ।
संमर्द्य कज्जलाभं तु कुर्यात्पात्रे दृढाश्रये ॥ ८६ ॥
ततो बादरवह्निस्थलौहपात्रे द्रवीकृतम् ।
गोमयोपरि विन्यस्तकदलीपत्रपातनात् ॥ ८७ ॥
कुर्यात्पर्पटिकाकारमस्य रक्तिद्वयं क्रमात् ।
द्वादशरक्तिका यावत्प्रयोगः प्रहरार्धतः ॥ ८८ ॥
तदूर्ध्वं बहुपूगस्य भक्षणं दिवसे पुनः ।
तृतीय एव मांसाज्यदुग्धान्यत्र विधीयते ॥८९॥
वर्ज्यं विदाहिस्त्रीरम्भामूलं तैलं च सार्षपम् ।
क्षुद्रमत्स्याम्बुजखगांस्त्यक्त्वोन्निद्रः पयः पिबेत्९०
ग्रहणीक्षयकुष्ठार्शःशोषाजीर्णविनाशिनी ।
रसपर्पटिका ख्याता निबद्धा चक्रपाणिना॥९१॥

(२२ रसपर्पटिका) उक्तविधिसें शुद्ध किये पारा और गंधक बराबर ले दृढ आश्रयवाले पात्रमें घाल कज्जलके समान घोंटै । पीछे वडवेरीके कोइलोंकों अग्निपर स्थित किये लोहाके पात्रमें द्रव्यकों द्रवरूप वनाय पीछे गोवरके ऊपर स्थित किया केलाका पत्तापर गेरै । पापडीके आकार करै इसकी दो रती क्रमसें करै १२ रतीतक आधा आधा पहरमें लेवै । तिसके उपरंत दूसरे दिन बहुतसी सुपारियोंकों खावै तिसरे दिन मांस घृत दूध आदि देवै । विशेष दाह करनेवाला पदार्थ स्त्री केलाकी फली व जड सरसोंका तेल छोटी मछली जलमें उपजनेवाले जीव पक्षी इन्होंकों त्यागके और नींदकों दूर करता हुआ दूधकों पीवै । यह रसपर्पटिका कही । चक्रपाणी वैद्यनें निबद्ध की है ग्रहणी क्षयरोग कुष्ठ ववासीर शोष अजीर्ण इन्होंकों नाशती है ।

(२३) स्थाल्यां संमर्द्य दातव्यौ
माषिकौ रसगन्धकौ ।
नखक्षुण्णं तदुपरि तण्डुलीयं द्विमाषिकम् ९२
ततो नैपालताम्रादि पिधाय सुकरालितम् ।
पांशुना पूरयेदूर्ध्वं सर्वां स्थालीं ततोऽनलः ९३
स्थाल्यधो नालिकां यावद्देयस्तेन मृतस्य च ।
ताम्री ताम्रस्य रक्त्येका त्रिफलाचूर्णरक्तिका ९४
त्र्यूषणस्य च रक्त्येका विडङ्गस्य च तन्मधु ।
घृतेनालोड्य लेढव्यं प्रथमे दिवसे ततः ॥९५॥
रक्तिवृद्धिः प्रतिदिनं कार्या ताम्रादिषु त्रिषु ।
स्थिरा विडङ्गरक्तिस्तु यदा भेदो विवक्षितः ९६
तदा विडङ्गं त्वधिकं दद्याद्रक्तिद्वयं पुनः ।
द्वादशाहं योगवृद्धिस्ततो ह्रासक्रमोऽप्ययम् ९७
ग्रहणीमम्लपित्तं च क्षयं शूलं च सर्वदा ।
ताम्रयोगो जयत्येष बलवर्णाग्निवर्धनः ॥ ९८ ॥

इति ग्रहणीचित्सा ।

(२३ ताम्रयोगः) स्थालीमें मर्दित किये एक एक मासा पारा और गंधक देने तिसके ऊपर नखोंसें छीली हुई चौलाई २ मासे । पीछे नैपालतांबा आदिसें ढक गोला बनाय पात्रमें घाल वालुरेतसें पूरित करै पीछे अग्निलगावै पात्रके नीचे अग्नि देता रहै पीछे औषध एक रती और त्रिफलाका चूर्ण एक रती सोंठ मिरच पीपल एक रती वायविडंग एक रती शहद एक रती इन सबकों मिलाय घृतसें आलोडित कर प्रथमदिनमें चाटै । पीछे दिन दिनके प्रति तांबारूप औषधादि तीनोंमें रती रती बढाता जावै और वायविडंगकी रतीकों स्थिर रक्खै और जब भेद करनेकी इच्छा हो तब वायविडंग अधिक देना अर्थात् २ रती देना । १२ दिनपर्यंत योगकी वृद्धि अर्थात् ओषधकों बढाना पीछे औषधकों घटाते जाना । यह ताम्रयोग ग्रहणी अम्लपित्त क्षय शूल इन्होंकों सबकालमें जीतता है और बल वर्ण अग्नि इन्होंकों बढाताहै । यह ताम्रयोगहै ।

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायपुत्रपंडितरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितयां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां ग्रहणीरोगचिकित्सा समाप्ता ।

अथार्शोऽधिकारः ५

अब ववासीरके अधिकारकों कहते है ।

(१) दुर्नाम्नां साधनोपायश्चतुर्धा परिकीर्तितः ।
भेषजक्षारशस्त्राग्निसाध्यत्वादाद्य उच्यते ॥ १ ॥
यद्वायोरानुलोम्याय यदग्निबलवृद्धये ।
अनुपानौषधद्रव्यं तत्सेव्यं नित्यमर्शसैः ॥ २ ॥
शुष्कार्शसां प्रलेपादिक्रिया तीक्ष्णा विधीयते ।
स्राविणां रक्तमालोक्य क्रिया कार्यास्रपैत्तिकी ३
स्नुक्क्षीरं रजनीयुक्तं लेपाद्दुर्नामनाशनम् ।
कोशातकीरजोघर्षान्निपतन्ति गुदोद्भवाः ॥ ४ ॥
अर्कक्षीरं सुधाक्षीरं तिक्ततुम्ब्याश्च पल्लवाः ।
करञ्जो बस्तमूलं च लेपनं श्रेष्ठमर्शसाम् ॥ ५ ॥

अर्शोघ्नी गुदगा वर्तिर्गुडघोषाफलोद्भवा ।
ज्योतिष्मकामूलकल्केन लेपो रक्तार्शसां हितः ६
तुम्बीबीजं सौद्भिदं तु काञ्जीपिष्टं गुटीत्रयम् ।
अर्शोहरं गुदस्थं स्याद्दधि माहिषमश्नतः ॥ ७ ॥
अपामार्गोद्भिजः क्षारो हरितालेन संयुतः ।
लेपनं लिङ्गसम्भूतमर्शो नाशयति ध्रुवम् ॥ ८ ॥
महारोधिप्रदेशस्य पथ्याकोशातकीरजः ।
कफेन लेपतो हन्ति लिङ्गवर्तिमसंशयम् ॥ ९ ॥
वातातीसारवद्भिन्नवर्चांस्यर्शांस्युपाचरेत् ।
उदावर्तविधानेन गाढविट्कानि चासकृत् १०

(१ दुर्नाम्नि चतुर्विध उपायः) ववासीरके मस्सों-का साधनेका उपाय चार प्रकारका कहाहै औषध खार शस्त्रक्रिया अग्निक्रिया इन्होंमें साध्यपनेसें प्रथम ओषधकों कहते है । जो वायुकों अनुलोम करै अग्नि और बलकों बढावै ऐसा अनुपानसहित ओषध ववासीरवालों-कों नित्यप्रति सेवना । सूके मस्सोंपै लेपआदि तीक्ष्ण क्रिया करनी झिरनेवाले मस्सोंके रक्तकों देखके रक्त-पित्तकों शांत करनेवाली क्रिया करनी । थोहरका दूधमें ह-ल्दी मिलाय लेप करनेसें ववासीरका मस्सा दूर होताहै । कडवी तोरीके चूर्णकों घिसनेसें गुदाके मस्से दूर होतेहैं । आखका दूध थोहरका दूध कडवी तूंवीके पत्ते करंजुआ वनतुलसीकी जड इन्होंका लेप ववासीरमें श्रेष्ठ है । कडवी तोरीकी बत्ती बनाके गुदामें धारण करनेसें ववासीरका नाश होताहै । कडवी परवलकी जडकों पीस लेप करनेसें रक्तकी ववासीरमें हित होताहै । तूंब्रीका बीज रेहनमक इ-न्होंकों कांजीमें पीस तीन गोली बनाय गुदामें धारण करै और भैंसका दहीकों खावै तो ववासीरका नाश होताहै । ऊंगाकी जडका खार और हरताल मिला लेप करनेसें लिं-गका मस्सा दूर होताहै । पर्वतकी हरडै और कडवी तोरी इन्होंकों पीस कल्क बनाय लेप करनेसें लिंगवर्तिका निश्चै नाश होताहै । जिसकरकै पतला मल आता हो ऐसे ववासी-रवालोंकों वातातिसारकी तरह चिकित्सा करै और जिसके गाढा मल आता हो ऐसे ववासीरवालोंकों उदावर्तके विधानसें वारंवार चिकित्सा करै ।

(२) विड्विबद्धे हितं तक्रं यमानीबिडसंयुतम् ।
वातश्लेष्मार्शसां तक्रात्परं नास्तीह भेषजम् ११
तत्प्रयोज्यं यथादोषं सस्नेहं रूक्षमेव वा ।
न विरोहन्ति गुदजाः पुनस्तक्रसमाहताः ॥१२॥
त्वचं चित्रकमूलस्य पिष्ट्वा कुम्भं प्रलेपयेत् ।
तक्रं वा दधि वा तत्र जातमर्शोहरं पिबेत् १३
पित्तश्लेष्मप्रशमनी कच्छूकण्डूरुजापहा ।
गुदजान्नाशयत्याशु योजिता सगुडाभया ॥१४॥
सगुडां पिप्पलीयुक्तामभयां घृतभर्जिताम् ।
त्रिवृद्दन्तियुतां वापि भक्षयेदानुलोमिकीम् १५
तिलारुष्करसंयोगं भक्षयेदग्निवर्धनम् ।
कुष्ठरोगहरं श्रेष्ठमर्शसां नाशनं परम् ॥ १६ ॥

(२ विड्बंधे) विष्ठाके बंधेमें अजमान और मनि-यारी नमकसें युतकरा तक्र अर्थात् गौकी छाछ हित है वात और कफकी ववासीरवालोंकों तक्रसें परै कोई ओषध नहीं है सो वह तक्रदोषके अनुसार स्नेहसहित अथवा रूषा प्रयुक्त करना । तक्रसें नष्ट हुये मस्से फिर नहीं जामतेहै । चीताकी जडकी छालकों पीस घडाके भीतर लेप करै ति-समें तक्र अथवा दही जमावै वह ववासीरकों हरताहै । पित्त और कफकों शांत करनेवाली कच्छूरोग और खा-जिकों दूर करनेवाली ऐसी गुडसहित हरडै युक्त की जावै तो ववासीरके मस्सोंकों शीघ्र नाशती है । घृतमें भूनी हुई हरडैमें पीपल और गुड मिलाय खावै अथवा हरडैमें नि-शोत और जमालगोटाकी जडकों मिलाय खावै तो गु-दाकी वायुकों अनुलोम करती है । तिल और भिलावाकों मिलाके खावै तो अग्नि बढता है कुष्ठरोग और ववासीरका नाश होताहै ।

(३) तिलभल्लातकं पथ्या गुडश्चेति समांशिकम् ।
दुर्नामकासश्वासघ्नं प्लीहपाण्डुज्वरापहम् १७
गोमूत्रत्र्युषितां दद्यात्सगुडां वा हरीतकीम् ।
पञ्चकोलकयुक्तं वा तक्रमस्मै प्रदापयेत् ॥ १८ ॥
मृल्लिप्तं शौरणं कन्दं पक्त्वाग्नौ पुटपाकवत् ।
अद्यात्सतैललवणं दुर्नामविनिवृत्तये ॥ १९ ॥
स्विन्नं वार्ताकुफलं घोषायाः क्षारजेन सलिलेन
तद्धृतभृष्टं युक्तं गुडे (?) नाशितो योऽस्ति ॥२०॥
पिबति च तक्रं नूनं
तस्याश्वेवातिवृद्धगुदजानि ।
यान्ति विनाशं पुंसां
सहजान्यपि सप्तरात्रेण ॥ २१ ॥

असितानां तिलानां प्राक् प्रकुञ्चं शीतवार्यनु ।
खादतोऽर्शांसि नश्यन्ति द्विजदार्ढ्याङ्गपुष्टिदम्

(३ तिलाद्यर्शोघ्नो योगः) तिल भिलावा हरडै गुड ये बराबर भाग ले खावै तो ववासीर खांसी श्वास तिल्लि-रोग पांडुज्वर इन्होंका नाश होताहै । गोमूत्रमें रात्रिभर भिगोई हुई हरडैमें गुड मिलाय खावै अथवा चव्य चीता सोंठ पीपल पीपलामूल इन्होंसें युत किया तक्र ववासीरवा-लोंकों देवै । जीमीकंदकों माटीसें लीप अग्निविषै पुटपाककी तरह पकाय तेल और नमक मिलाय खावै तो ववासीर रोग नष्ट होताहै । वार्ताकूके फलकों कडवी तोरीके खा-रके पानीसें सिजाय पीछे घृतमें भूनि गुडमें मिलाय खावै तो ववासीर दूर होय । गौके तक्रकों पीवै तो अत्यंत बढे हुये ववासीरके मस्सें व शरीरकेसाथ उपजे ववासीरके मस्सें सात रात्रिमें निश्चै झड पडते हैं। चारतोलेभर काले-तिलोंकों प्रथम खाके ऊपर शीतल पानी पीवै तो सब प्र-कारके ववासीर नष्ट होते हैं और दांत करडे हो जाते हैं और शरीरके अंग पुष्ट हो जाते हैं ।

(४) दन्तीचित्रकमूलानामुभयोः पञ्चमूलयोः ।
भागान्पलांशानापोथ्य जलद्रोणे विपाचयेत् २३
त्रिपलं त्रिफलायाश्च दलानां तत्र दापयेत् ।
तुलां गुडस्य तत्तिष्ठेन्मासार्धं घृतभाजने ॥२४॥
तन्मात्रया पिबेन्नित्यमर्शोभ्यो विप्रमुच्यते ।
ग्रहणीपाण्डुरोगघ्नं वातवर्चोऽनुलोमनम् ॥ २५ ॥
दीपनं चारुचिघ्नं च दन्त्यरिष्टमिदं विदुः ।
पात्रेऽरिष्टादिसन्धानं धातकीलोध्रलेपिते ॥२६॥

(४ दंत्यरिष्टम्) जमालगोटाकी जड चीताकी जड पीपलामूल दशमूल इन्होंकों चार चार तोले ले और कूट १०२४ तोले पानीमें पकावै । त्रिफलाकी छाल १२ तोले तेजपात १२ तोले गुड ४०० तोले इन सबकों मिलाय घृतके पात्रमें घाल १५ दिन धरै । पीछे मात्राके अनुसार नित्यप्रति पीवै तो ववासीर ग्रहणीरोग पांडुरोग इन्होंका नाश होताहै गुदाका वायु और विष्ठा अनुलोम होताहै । अग्नि दीप्त होताहै अरुचीका नाश होताहै इसकों दंत्यरिष्ट कहते है । धायके फूल और लोधसें लीपे हुये पात्रमें अरि-ष्टादि संधान होताहै ।

(५) सनागरारुष्करवृद्धदारुकं
गुडेन यो मोदकमत्त्युदारकम् ।
अशेषदुर्नामकरोगदारकं
करोति वृद्धं सहसैव दारकम् ॥ २७ ॥
चूर्णे चूर्णसमो ज्ञेयो मोदके द्विगुणो गुडः ।
त्रिपलं शृङ्गवेरस्य चतुर्थं मरिचस्य च ॥ २८ ॥
पिप्पल्याः कुडवार्धं च चव्यायाः पलमेव च ।
तालीसपत्रस्य पलं पलार्धं केशरस्य च ॥ २९ ॥
द्वे पले पिप्पलीमूलादर्धकर्षं च पत्रकात् ।
सूक्ष्मैलाकर्षमेकं तु कर्षं त्वगमृणालयोः ॥ ३० ॥
गुडात्पलानि तु त्रिंशच्चूर्णमेकत्र कारयेत् ।
अक्षप्रमाणा गुटिका प्राणदेति च सा स्मृता ३१
पूर्वं भवेत्तु पश्चात्तु भोजनस्य यथाबलम् ।
मद्यं मांसरसं यूषं क्षीरं तोयं पिबेत्तथा ॥ ३२ ॥
हन्यादर्शांसि सर्वाणि सहजान्यस्रजानि च ।
वातपित्तकफोत्थानि सन्निपातोद्भवानि च ३३
पानात्यये मूत्रकृच्छ्रे वातरोगगलग्रहे ।
विषमज्वरे च मन्देऽग्नौ पाण्डुरोगे तथैव च ३४
क्रिमिहृद्रोगिणां चैव गुल्मशूलार्तिनां तथा ।
श्वासकासपरीतानामेषा स्यादमृतोपमा ॥ ३५ ॥
शुण्ठ्याः स्थानेऽभया देया विड्ग्रहे पित्तपायुजे।
प्राणदेयं सितां दत्वा चूर्णमानाच्चतुर्गुणाम् ३६
अम्लपित्ताग्निमान्द्यादौ प्रयोज्या गुदजातुरे ।
अनुपानं प्रयोक्तव्यं व्याधौ श्लेष्मभवे पलम् ३७
पलद्वयं त्वनिलजे पित्तजे तु पलत्रयम् ।

(५ प्राणदागुटिका) सोंठ भिलावा भिदारा गुड इन्होंका मोदक बनाय खावै तो सब प्रकारके ववासीरके मस्सोंकों नाशता है । चूर्णमें चूर्णके समान गुड देना । मोदक बनाना हो तो दुगुना गुड देना । अदरख १२ तोले मिरच ४ तोले पीपल ८ तोले चव्य ४ तोले ता-लीशपत्र ४ तोले नागकेसर २ तोले पीपलामूल ८ तोले तेजपात ६ मासे । छोटी इलायची १ तोला दालचिनी और कमलकी डंडी एक एक तोला गुड १६० तोला इन सबकों मिलाय चूर्ण करै पीछे एक तोलाके प्रमाण गोली बनावै यह प्राणदागुटिका कही है । भोजनके पहिले ये गोली खानी और भोजनके उपरंत बलके अनुसार मदिरा मांसका रस यूष दूध जल इन्होंकों पीवै । यह सब प्रका-रके ववासीर शरीरके साथ उपजे ववासीर वात पित्त कफ इन्होंसें उपजे ववासीर इन्होंकों नाशता है । पानात्यय

मूत्रकृच्छ्र वातरोग गलग्रह विषमज्वर मंदाग्नि पांडुरोग इन्होंमें हित करता है । कृमिरोग हृद्रोग गुल्मरोग शूलरोग श्वासरोग खांसीरोग इन्होंसें युत हुये मनुष्यकों यह गुटिका अमृतसमान है और जहां पित्तका ववासीर रोग हो तो सोंठ अथवा अदरखके स्थानमें हरडै देनी और चूर्णके प्रमाणसें चौगुनी मिसरी मिलाके यह प्राणदागुटिका बनानी । अम्लपित्त और मंदाग्नि आदिमें तथा गुदाके रोगमें ये गोली प्रयुक्त करनी । कफके रोगमें चार तोलेभर अनुपानदेना वातके रोगमें ८ तोलाभर अनुपान देना और पित्तके रोगमें १२ तोले अनुपान देना ।

(६) पथ्यापञ्चपलान्येकमजाज्या मरिचस्यच ३८
पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागराः ।
पलाभिवृद्धाः क्रमशो यवक्षारपलद्वयम् ॥ ३९ ॥
भल्लातकपलान्यष्टौ कन्दस्तु द्विगुणो मतः ।
द्विगुणेन गुडेनैषां वटकानक्षसंमितान् ॥ ४० ॥
कृत्वैनं भक्षयेत्प्रातस्तक्रमम्भोऽनु वा पिबेत् ।
मन्दाग्निं दीपयत्येष ग्रहणीपाण्डुरोगनुत् ॥४१॥
काङ्कायनेन शिष्येभ्यः शस्त्रक्षाराग्निभिर्विना ।
भिषग्जितमिति प्रोक्तं श्रेष्ठमर्शोविकारिणाम् ४२

(६ **कांकायनमोदकः**) हरडै २० तोले जीरा और मिरच चार चार तोले पीपल ४ तोले पीपलमूल ८ तोले चव्य १२ तोले चीता १६ तोले सोंठ २० तोले। जवाखार ८ तोले भिलावा ३२ तोले जिमिकंद ६४ तोले इन सबोंकों दुगुना गुडमें मिलाय एक एक तोलाकी गोली बनावे पीछे प्रभातमें एक गोली खाके ऊपर तक्र अथवा जलका अनुपान करै । यह मंदाग्निकों जगाता है ग्रहणी और पांडुरोगकों नाशता है कांकायनमुनिनें शिष्योंके अर्थ शस्त्र खार अग्नि इन्होंके विना । यह उत्तम ओषध वैद्योंकों जीतनेवाला कहा है ववासीरके विकारवालोंकों श्रेष्ठ है ।

(७) विडङ्गसारामलकामयानां
पलं पलं स्यात्त्रिवृतस्त्रयं च ।
गुडस्य षड्द्वादशभागयुक्ता
मासेन त्रिंशद्गुटिका विधेयाः ॥ ४३ ॥
निवारणे यक्षवरेण सृष्टः
समानिभद्रः किल शाक्यभिक्षवे ।
अयं हि कासक्षयकुष्ठनाशनो
भगन्दरप्लीहजलोदरार्शसाम् ॥ ४४ ॥
यथेष्टचेष्टान्नविहारसेवी
अनेन वृद्धस्तरुणो भवेच्च ॥ ४५ ॥

(७ **माणिभद्रमोदकः**) वायविडंग कैथ आंवला हरडै ये सब चार चार तोले हरडै १२ तोले गुड २४ तोले ऐसे १२ भाग लेकै ३० गोली बनावै । यह मोदक माणिभद्रयक्षनें रचा है यह खांसी क्षय कुष्ठ भगंदर तिल्लीरोग जलोदर ववासीर इन्होंकों नाशता है । इच्छाके अनुसार चेष्टा अन्नक्रीडा इन्होंकों सेवनेवाला मनुष्य इसकरके बूढाभी जवान होता है ।

(८) मरिचमहौषधचित्रक-
शूरणभागा यथोत्तरं द्विगुणाः ।
सर्वसमो गुडभागः
सेव्योऽयं मोदकः प्रसिद्धफलः ॥ ४६ ॥
ज्वलनं ज्वलयति जाठर-
मुन्मूलयति शूलगुल्मगदान् ।
निःशेषयति श्लीपद-
मर्शांस्यपि नाशयत्याशु ॥ ४७ ॥

(८ **स्वल्पशूरणमोदकः**) मिरच एक भाग सोंठ दो भाग चीता चार भाग जमीकंद आठ भाग और सबोंके समान गुड लेकै मोदक बनाय सेवै यह प्रसिद्ध फलवाला मोदक है । अग्निकों जगाता है पेटके रोगकों दूर करता है शूल और पेटके गोलेकों जडसें नाशता है । और श्लीपद और ववासीरकों शीघ्र नाशता है ।

(९) शूरणषोडशभागा वह्नेरष्टौ महौषधस्यातः ।
अर्धेन भागयुक्तिर्मरिचस्य ततोऽपि चार्धेन ४८
त्रिफलाकणासमूलातालीशारुष्करक्रिमिघ्नानाम्
भागा महौषधसमा दहनांशा तालमूली च ४९
भागः शूरणतुल्यो दातव्यो वृद्धदारकस्यापि ।
भृङ्गैले मरिचांशे सर्वाण्येकत्र संचूर्ण्य ॥ ५० ॥
द्विगुणेन गुडेन युतः सेव्योऽयं
मोदकः प्रकामधनैः ।
गुरुवृष्यभोज्यरहितेष्वितरेषूपद्रवं कुर्यात् ॥ ५१॥
भस्मकमनेन जनितं पूर्वमगस्त्यस्य योगराजेन ।
भीमस्य मारुतेरपि येन तौ महाशनौ जातौ ५२

अग्निबलबुद्धिहेतुर्न केवलं शूरणो महावीर्यः ।
प्रभवति शस्त्रक्षाराग्निभिर्विनाप्यर्शसामेषः ५३
श्वयथुश्लीपदजिद्ग्रहणीमपि कफवातसम्भूताम् ।
नाशयति वलीपलितं मेधां कुरुते वृषत्वं च ५४
हिक्कां श्वासं कासं सराजयक्ष्मप्रमेहांश्च ।
प्लीहानं चाथोग्रं हन्ति सदैतद्रसायनं पुंसाम्५५

(९ बृहत्सूरणमोदकः) जमीकंद १६ भाग चीता ८ भाग सोंठ चार भाग मिरच दो भाग हरडै बहेडा आंवला पीपल पीपलामूल तालीशपत्र भिलावा वायविडंग ये सब चार चार भाग और मुसली ८ भाग । भिदारा १६ भाग भंगरा और इलायची दो दो भाग सबोंका एक जगह चूर्ण कर दुगुना गुड मिलाय यह मोदक कामदेवकी इच्छा करनेवालोंनें सेवन करना । भारी वीर्यकारक भोजनसें रहित भोजनमें उपद्रवकों करता है । इस योगराजकरकै पहिले अगस्त्यजीके भस्मक उपजाहै और वायुका पुत्र भीमसेनकेभी भस्मक उपजाहै जिसकरके ये दोनों बहुत भोजन करनेवाले होते भये । अग्नि बल बुद्धि इन्होंका हेतु है और केवल बहुत वीर्य करनेवालाही नहीं है किंतु अग्नि बल बुद्धि इन्होंका कारणभी है और शस्त्र खार अग्नि इन्होंकेविनाभी ववासीरके मस्सोंकों नाशता है । शोजा श्लीपद कफ और वातसें उपजी ग्रहणी शरीरमें वलियोंका पडना वालोंका सपेद होना इन्होंकों नाशता है बुद्धिकों और पुरुषपनेकों उपजाता है हिचकी श्वास खांसी राजरोग प्रमेह तिल्लीरोग इन्होंकों यह नाशता है और पुरुषोंकों रसायन है ।

(१०) चूर्णीकृताः षोडश शूरणस्य
भागास्ततोऽर्धेन च चित्रकस्य ।
महौषधाब्दौ मरिचस्य चैको
गुडेन दुर्नामजयाय पिण्डी ॥ ५६ ॥
पिण्ड्यां गुडो मोदकवत्पिण्ड-
त्वापत्तिकारकः ॥ ५७ ॥

(१० सूरणपिंडी) चूर्णित किया जिमीकंद १६ भाग चीता ८ भाग सोंठ नागरमोथा मिरच इन्होंका एक भाग इन्होंकों गुडमें मिलाय पिंडी बनावै ववासीरकों दूर करती है । पिंडीविषै गुड मोदककीतरह पिंडपनेकी आपत्तिकों करता है ।

(११) व्योषाग्न्यरुष्करविडङ्गतिलाभयानां
चूर्णं गुडेन सहितं तु सदोपयोज्यम् ।
दुर्नामकुष्ठगरशोथशकृद्विबन्धा-
नग्नेर्जयत्यबलतां क्रिमिपाण्डुतां च ॥ ५८ ॥

(११ व्योषाद्यं चूर्णम्) सोंठ मिरच पीपल चीता भिलावा वायविडंग तिल हरडै इन्होंके चूर्णकों गुडमें मिलाय सब कालमें प्रयुक्त करै यह ववासीर कुष्ठ जहर शोजा मलका बंधा अग्निका मंदपना कृमिरोग पांडुरोग इन्होंकों जीतताहै ।

(१२) शुण्ठीकणामरिचनागदलत्वगेलं
चूर्णीकृतं क्रमविवर्धितमूर्धमन्त्यात् ।
खादेदिदं समसितं गुदजाग्निमान्द्य-
कासारुचिश्वसनकण्ठहृदामयेषु ॥ ५९ ॥

(१२ समशर्करं चूर्णम्) सोंठ पीपल मिरच नागकेसर तमालपत्र दालचीनी इलायची इन्होंके चूर्णकों इलायचिसें लेकै सोंठपर्यंत क्रमसें बढाके लेवै पीछे बराबर भाग मिसरी मिलाय खावै यह ववासीर मंदाग्नि खांसी अरुची श्वास कंठरोग हृद्रोग इन्होंमें हित है ।

(१३) लवणोत्तमवह्निकलिङ्गयवान्
चिरविल्वमहापिचुमर्दयुतान् ।
पिब सप्तदिनं मथितालुलितान्
यदि मर्दितुमिच्छति पायुरुहान् ॥ ६० ॥

(१३ लवणोत्तमाद्यं चूर्णम्) सेंधानमक चीता इन्द्रजव कूडा करंजुआ बकायण इन्होंकों मठामें आलोडित कर ७ दिन पीवै । जो गुदाके रोगोंकों दूर करनेकी इच्छा चाहै तो यह योग उत्तम है ।

(१४) त्रिफला पञ्चलवणं कुष्टं कटुकरोहिणी ।
देवदारुविडङ्गानि पिचुमर्दफलानि च ॥ ६१ ॥
बला चातिबला चैव हरिद्रे द्वे सुवर्चला ।
एतत्सम्भृत्य सम्भारं करञ्जत्वग्रसेन च ॥ ६२ ॥
पिष्ट्वा च गुटिकां कृत्वा बदरास्थिसमां बुधः ।
एकैकां तां समुद्धृत्य रोगे रोगे पृथक् पृथक् ६३
उष्णेन वारिणा पीता शान्तमग्निं प्रदीपयेत् ।
अर्शांसि हन्ति तक्रेण गुल्ममम्लेन निर्हरेत् ६४
जन्तुदष्टं तु तोयेन त्वग्दोषं खदिराम्बुना ।

मूत्रकृच्छ्रं तु तोयेन हृद्रोगं तैलसंयुता ॥ ६५ ॥
इन्द्रस्वरससंयुक्ता सर्वज्वरविनाशिनी ।
मातुलुङ्गरसेनाथ सद्यः शूलहरी स्मृता ॥ ६६ ॥
कपित्थतिन्दुकानां तु रसेन सह मिश्रिता ।
विषाणि हन्ति सर्वाणि पानाशनप्रयोगतः ६७
गोशकृद्रससंयुक्ता हन्यात्कुष्ठानि सर्वशः ।
श्यामा कषायसहिता जलोदरविनाशिनी ६८
भक्तच्छन्दं जनयति भुक्तस्योपरि भक्षिता ।
अक्षिरोगेषु सर्वेषु मधुना घृष्यतांजयेत् ॥ ६९ ॥
लेहमात्रेण नारीणां सद्यः प्रदरनाशिनी ।
व्यवहारे तथा द्यूते संग्रामे मृगयादिषु ।
समालभ्य नरो ह्येनां क्षिप्रं विजयमाप्नुयात् ७०

(१४ नागार्जुनयोगः) हरडै बहेडा आंवला काला नमक सेंधानमक मनियारीनमक सांभरनमक खारीनमक कूट कुटकी देवदार वायविडंग निंबोली खैरेहटी गंगेरन हलदी दारुहलदी सूरजवेल इन सबकों करंजुआकी छालिके रसमें पीस वेरकी गुटलीकेसमान गोली बनाय एक एक गोलीकों ले रोगरोगमें अलग अलग देवै । गरम पानीसें पान करी गोली शांत अग्निकों दीप्त करती है तक्रसें ववासीरकों नाशती है कांजीसें पेटके गोलेकों नाशती है । जंतुके डसे हुयेकों पानीसें नाशती है खैरके पानीसें त्वचाके दोषकों नाशती है पानीसें मूत्रकृच्छ्रकों नाशती है तेलसें युत हुई हृद्रोगकों नाशती है । इन्द्रजवका रससें संयुक्त करी सब प्रकारके ज्वरकों नाशती है विजोराका रसकेसाथ तात्काल शूलकों हरती है कैथ और तेंदुका रससें मिलाके पीने और खानेके प्रयोगसें सब प्रकारके विषोंकों हरती है । गौका गोवरके रससें संयुक्त करी सब प्रकारके कुष्ठोंकों नाशती है निशोतका काढासें सहित जलोदरकों नाशती है । भोजनके ऊपर भक्षण करी भोजनमें रुची उपजाती है । सब प्रकारके नेत्ररोगोंमें शहदसें घसि आंजै । स्त्रियोंके चाटने मात्र करकै शीघ्रही प्रदरकों नाशती है । व्यवहार जूवा युद्ध मृगया आदि इन्होंमें इस गोलीकों ग्रहणकरके मनुष्य शीघ्र विजयकों प्राप्त होताहै ।

(१५) त्रिकत्रयवचाहिङ्गुपाठाक्षारनिशाद्वयम् ।
चव्यतिक्ताकलिङ्गाग्निशताह्वालवणानि च ७१
ग्रन्थिबिल्वाजमोदा च गणोऽष्टाविंशतिर्मतः ।
एतानि समभागानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ७२
ततो विडालपदकं पिबेदुष्णेन वारिणा ।
एरण्डतैलयुक्तं तु सदा लिह्यात्ततो नरः ॥ ७३॥
कासं हन्यात्तथा शोथमर्शांसि च भगन्दरम् ।
हृच्छूलं पार्श्वशूलं च वातगुल्मं तथोदरम् ७४
हिक्काश्वासप्रमेहांश्च कामलां पाण्डुरोगताम् ।
आमान्वयमुदावर्तमन्त्रवृद्धिं गुदं क्रिमीन् ॥७५॥
अन्ये च ग्रहणीदोषा ये मया परिकीर्तिताः ।
महाज्वरोपसृष्टानां भूतोपहतचेतसाम् ॥ ७६ ॥
अप्रजानां तु नारीणां प्रजावर्धनमेव च ।
विजयो नाम चूर्णोऽयं कृष्णात्रेयेण पूजितः ७७

(१५ विजयचूर्णम्) हरडै बहेडा आंवला सोंठ मिरच पीपल दालचिनी इलायची तेजपात वच हींग सोनापाठा जवाखार हलदी दारुहलदी चव्य कुटकी इन्द्रजव चीता शतावरी सब प्रकारके नमक पीपलामूल वेलगिरी अजमोद यह अष्टाविंशति गण माना है। ये सब बराबर भाग लेकै महीन चूर्ण करै। पीछे अरंडीका तेलमें मिलाय एक तोलाभरकों गरम पानीकेसंग पीवै । यह खांसी शोजा ववासीर भगंदर हृदयशूल पसलीशूल वायका गोला उदररोग हिचकी श्वास प्रमेह कामला पांडुरोग आमविकार उदावर्त अंत्रवृद्धि गुदाके कीडे इन्होंकों नाशता है। और जो ग्रहणीरोग मैनें कहे हैं इन्होंकों दूर करता है और महाज्वरसें पीडित हुये पुरुषोंकों तथा भूतोंकरके उपहत चित्तवाले पुरुषोंकों सुख देता है । और जिन्होंकों संतान नहीं होती ऐसी स्त्रियोंके संतान उपजाता है यह विजय नामवाला चूर्ण कृष्णात्रेयजीनें पूजित किया है ।

(१६) त्रिवृत्तेजोवती दन्ती श्वदंष्ट्रा चित्रकं शटी
गवाक्षीमुस्तविश्वाह्वविडङ्गानि हरीतकी ॥ ७८ ॥
पलोन्मितानि चैतानि पलान्यष्टावरुष्करात् ।
षट्पलं वृद्धदारस्य शूरणस्य तु षोडश ॥ ७९ ॥
जलद्रोणद्वये क्वाथ्यं चतुर्भागावशेषितम् ।
पूतं तु तं रसं भूयः क्वाथ्येभ्यस्त्रिगुणो गुडः ८०
लेहं पचेत्तु तं तावद्यावद्दर्वीप्रलेपनम् ।
अवतार्य ततः पश्चाच्चूर्णानीमानि दापयेत् ॥८१॥
त्रिवृत्तेजोवतीकन्दचित्रकान्द्विपलांशिकान् ।
एलात्वङ्मरिचं चापि गजाह्वां चापि षट्पलाम् ॥

द्वात्रिंशतं पलान्येवं चूर्णं दत्त्वा निधापयेत् ।
ततो मात्रां प्रयुञ्जीत जीर्णे क्षीररसाशनः ॥८३॥
पञ्च गुल्मान्प्रमेहांश्च पाण्डुरोगं हलीमकम् ।
जयेदर्शांसि सर्वाणि तथा सर्वोदराणि च ८४
दीपयेद्ग्रहणीं मन्दां यक्ष्माणं चापकर्षति ।
पीनसे च प्रतिश्याये आढ्यवाते तथैव च ८५
अयं सर्वगदेष्वेव कल्याणो लेह उत्तमः ।
दुर्नामारिरयं चाशु दृष्टो वारसहस्रशः ॥ ८६ ॥
भवन्त्येनं प्रयुञ्जानाः शतवर्षं निरामयाः ।
आयुषो दैर्घ्यजननो वलीपलितनाशनः ॥ ८७ ॥
रसायनवरश्चैष मेधाजनन उत्तमः ।
गुडः श्रीबाहुशालोऽयं दुर्नामारिः प्रकीर्तितः

(१६ बाहुशालगुडः) निशोत मालकांगणी जमालगोटाकी जड गोखरू चीता कचूर इन्द्रायण नागरमोथा सोंठ वायविडंग हरडै । ये सब चार चार तोले भिलावा ३२ तोले भिदारा २४ तोले जिमीकंद ४ तोले । इन्होंका दो द्रोणभर अर्थात् २०४८ तोलेभर पानीमें क्काथ बनावै । जब चौथा भाग शेष रहै तब उतार कपडामांहके छानि फिर पकाय तिसमें तिगुना गुड मिलावै । जब कडछीपै चिपने लगै तबतक पकावै पीछे उतारके इन वक्ष्यमाण ओषधोंका चूरण मिलावै । निशोत मालकांगनी जिमीकंद चीता ये दो दो पल इलायची दालचिनी गजपीपली ये छः छः पल । ऐसें ३२ पल लेके चूरणकर मिला ओषधकों स्थापित करै पीछे मात्राके अनुसार खावै जीर्ण होनेपर दूध और मांसके रसकों पान करै । पांच प्रकारके गुल्मरोग प्रमेह पांडुरोग हलीमक सब प्रकारके ववासीर और सब प्रकारके हलीमकरोग इन्होंकों यह जीतता है । मंदग्रहणीकों दीप्त करता है राजरोगकों दूर करता है पीनस जुखाम वातरक्त इन्होंमें हित करताहै । सब प्रकारके रोगोंमें यह लेह उत्तम और हितकारी है और ववासीरकों शीघ्र नाशता है ऐसे हजार वार देखा है । इसको खानेवाले १०० वर्षपर्यंत रोगोंसेंरहित रहते हैं यह आयुकों बढाता है शरीर की वली और बालोंका सपेदपनाकों नाशता है । यह उत्तम रसायन है बुद्धिकों बढानेमें उत्तम है यह श्रीबाहुशालगुड ववासीरकों दूर करनेवाला कहाहै ।

(१७) तोयपूर्णे यदा पात्रे क्षिप्तो न प्लवते गुडः।
क्षिप्तश्च निश्चलस्तिष्ठेत् पतितस्तु न शीर्यते ८९
यदा दर्वीप्रलेपः स्याद्यावद्धातन्तुलीभवत् ।
एष पाको गुडादीनां सर्वेषां परिकीर्तितः ९०
सुखमर्दः सुखस्पर्शो गुडः पाकमुपागतः ।
पीडितो भजते मुद्रां गन्धवर्णरसान्वितः ॥ ९१ ॥
भल्लातकसहस्रे द्वे जलद्रोणे विपाचयेत् ।
पादशेषे रसे तस्मिन्प्रचेद् गुडतुलां भिषक् ॥९२
भल्लातकसहस्रार्धं छित्त्वा तत्रैव दापयेत् ।
सिद्धेऽस्मिंस्त्रिफलाव्योषयमानीमुस्तसैन्धवम् ९३
कर्षांशसंमितं दद्यात्त्वगेलापत्रकेशरम् ।
खादेदग्निबलापेक्षी प्रातरुत्थाय मानवः ॥ ९४ ॥
कुष्ठार्शःकामलामेहग्रहणीगुल्मपाण्डुताः ।
हन्यात्प्लीहोदरं कासक्रिमिरोगभगन्दरान् ।
गुडभल्लातको ह्येष श्रेष्ठ श्चार्शोविकारिणाम्॥९५॥

(१७ गुडभल्लातकः) पानीसें पूरित किये पात्रमें गेराहुआ गुड नहीं तिरै और निश्चल होके ठहर जाय और पतित होके विखरै नहीं । जब कडछीपर चिपने लगै और जबतक तार छोडै सब प्रकारके गुड आदिकोंका यह पाक कहा है । पाककों प्राप्त हुवा गुड अच्छा दीखताहै और गंध वर्ण रस इन्होंसें युक्त होताहै । दोहजार भिलावोंकों १०२४ तोले पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब ४०० तोले गुडकों मिलाय पकावै और ५०० भिलावोंकों छीलके तिसमें मिलावै सिद्धहुये इसमें हरडै बहेडा आंवला सोंठ मिरच पीपल अजमायन नागरमोथा सेंधानमक दालचिनी इलायची तेजपात नागकेसर इन्होंकों एक एक तोला लेके मिलावै पीछे प्रभातमें उठकै मनुष्य अग्निका बलके अनुसार खावै । यह कुष्ठ ववासीर कामला प्रमेह ग्रहणीरोग गुल्मरोग पांडुरोग तिल्लीरोग खांसी कृमिरोग भगंदर इन्होंकों नाशता है । यह गुडभल्लातक ववासीरके विकारवालोंकों श्रेष्ठ है ।

(१८) दशमूल्यमृता भार्गी श्वदंष्ट्रा चित्रकं शठी।
भल्लातकसहस्रं च पलाशं क्काथयेद् बुधः ॥९६॥
पादशेषे जलद्रोणे रसे तस्मिन्विपाचयेत् ।
दत्त्वा गुडतुलामेकां लेहीभूतं समुद्धरेत् ॥ ९७॥
माक्षिकं पिप्पलीतैलमौरुबूकं च दापयेत् ।
कुडवं कुडवं चात्र त्वगेलामरिचं तथा ॥ ९८ ॥
अर्शःकासमुदावर्तं पाण्डुत्वं शोथमेव च ।
नाशयेद्वह्निसादं च गुडभल्लातकः स्मृतः ॥९९॥

(१८ भल्लातकगुडः) दशमूल गिलोय भारंगी गोखरू चीता कचूर १००० भिलावे केसू इन्होंका काढा करै । चौथाई भाग शेष रहा १०२४ तोले रसमें ४०० तोले गुड देकै पकावै जब लेह होजाय तब उतारै । शहद पीपल अरंडका तेल सोलह सोलह तोले दालचिनी इलायची मिरच १६ तोले ऐसे मिलाय खावै तो ववासीर खांसी उदावर्त पांडुरोग शोजा इन्होंकों यह नाशता है यह गुड भल्लातक कहा है ।

(१९)चव्यं त्रिकटुकं पाठां क्षारं कुस्तुम्बुरूणि च।
यमानी पिप्पलीमूलमुभे च विडसैन्धवे ॥१००॥
चित्रकं बिल्वमभयां पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत् ।
शकृद्वातानुलोम्यार्थं जाते दध्नि चतुर्गुणे १०१
प्रवाहिकां गुदभ्रंशं मूत्रकृच्छ्रं परिस्रवम् ।
गुदवङ्क्षणशूलं च घृतमेतद्व्यपोहति ॥ १०२ ॥

(१९ चव्यादिघृतम्) चव्य सोंठ मिरच पीपल सोनापाठा जवाखार धनियां अजमायन पीपलामूल दशमूल मनियारीनमक सेंधानमक चीता वेलगिरी हरडै इन्होंकों पीसके तिसकों घृतमें पकावै मलसंबंधी वायुकों अनुलोम करनेके अर्थ दही मिलाके पकावै । प्रवाहिका गुदभ्रंश अर्थात् कांचका निकलना मूत्रकृच्छ्र परिस्रव गुदशूल अंडसंधिशूल इन्होंकों यह घृत दूर करता है।

(२०) व्योषगर्भं पलाशस्य त्रिगुणे भस्मवारिणि।
साधितं पिबतः सर्पिः पतन्त्यर्शांस्यसंशयम् १०३

(२० व्योषाद्यं घृतम्) ढाकके पत्तोंकी भस्म तिगुने पानीमें सोंठ मिरच पीपलका कल्क डार तिसमें सिद्ध किया घृत पीनेसें गुदाके मस्से झड पडते हैं इसमें संशय नहीं ।

(२१) सक्षारैः पञ्चकोलैस्तु पलिकैस्त्रिगुणोदके ।
समक्षीरं घृतप्रस्थं ज्वरार्शःप्लीहकासनुत्॥१०४॥

(२१ उदकषट्पलघृतम्) जवाखार पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ ये चार चार तोले ले तिगुने पानीमें बराबरका दूधविषै ६४ तोले घृतकों पकावै । यह ज्वर ववासीर तिल्लीरोग खांसी इन्होंकों नाशता है ।

(२२) पचेद्दारिचतुर्द्रोणे कण्टकार्यमृताशतम् ।
तत्राग्नित्रिफलाव्योषपूतिकत्वक्कलिङ्गकैः १०५

सकाश्मर्यविडङ्गैस्तु सिद्धं दुर्नाममेहनुत् ।
घृतं सिंह्यमृतं नाम बोधितत्त्वेन भाषितम् १०६

(२२ सिंह्यमृतघृतम्) ४०९६ तोले पानीमें कटेहली और १०० हरडोंकों पकावै तिसमें चीता हरडै बहेडा आंवला सोंठ मिरच पीपल करंजुआ दालचिनी इद्रजव कंभारी वायविडंग इन्होंकों मिलाय तिसमें सिद्ध किया घृत ववासीर और प्रमेहकों नाशता है । यह सिंह्यमृत नामवाला घृत बोधितत्वनें कहाहै ।

(२३) पिप्पली मधुकं बिल्वं शताह्वां मदनं वचाम् ।
कुष्ठं शठीपुष्कराख्यं चित्रकं देवदारु च ॥ १०७
पिष्ट्वा तैलं विपक्तव्यं द्विगुणक्षीरसंयुतम् ।
अर्शसां मूढवातानां तच्छ्रेष्ठमनुवासनम्॥१०८॥
गुदनिःसरणं शूलं मूत्रकृच्छ्रं प्रवाहिकाम् ।
कट्यूरुपृष्ठदौर्बल्यमानाहं वङ्क्षणाश्रयम् ॥ १०९ ॥
पिच्छास्रावं गुदे शोथं वातवर्चोविनिग्रहम् ।
उत्थानं बहुदोषं च जयेच्चैवानुवासनात् ॥११०॥
रक्तार्शसामुपेक्षेत रक्तमादौ स्रवद्भिषक् ।
दुष्टास्रे निगृहीते तु शूलानाहावसृग्गदाः १११
लाजैः पेया पीता
चुक्रिकदलकेशरोत्पलैः सिद्धा ।
हन्त्यस्रस्रावं सा
तथा बलापृश्निपर्णीभ्याम् ॥ ११२ ॥
शक्रकाथः सविश्वो वा किं वा बिल्वशलाटवः ।
योज्या रक्तार्शसैस्तद्वज्ज्योतिष्मकामूललेपनम्
नवनीततिलाभ्यासा-
त्केशरनवनीतशर्कराभ्यासात् ।
दधिसरमथिताभ्यासात्
गुदजाः शाम्यन्ति रक्तवहाः ॥ ११४ ॥
समङ्गोत्पलमोचाह्वतिरीटतिलचन्दनैः ।
छागक्षीरं प्रयोक्तव्यं गुदजे शोणितापहम् ११५

(२३ पिप्पल्याद्यं तैलम्) पीपल मुलहटी वेलगिरी शतावरी मैनफल वच कूट कचूर पोहकरमूल चीता देवदार इन्होंकों पीसकै दुगुना दूध मिलाय तिसमें तेलकों पकावै इस तेलका अनुवासन करना ववासीर और मूढवातमें श्रेष्ठ है । गुदाका निकसना शूल मूत्रकृच्छ्र प्रवाहिका

कटि गोडा पीठ इन्होंका दुर्बलपना अंडकी संधिमें अफारा पिच्छास्राव गुदामें शोजा वात और मलका निग्रह बहुत दोषोंका कोप इन्होंकों अनुवासनसें जीतता है। यह पिप्पलाद्यतेल है। रक्तकी ववासीरवालोंकै प्रथम वैद्य रक्तकों झिरावै दुष्ट रक्तके निकसनेपीछै शूल अफारा रक्तरोग ये शांत हो जाते हैं। चूका केशर कमल धानकी खील इन्होंसें सिद्ध करी पेया तथा खरैंहटीसें और पृश्निपर्णीसें सिद्ध कियी पेया पीनेसें रक्तस्रावकों नाशती है। इन्द्रजवोंका काढामें सोंठ मिलाय अथवा कच्ची वेलगिरीका काढा पीनेसें और कडवी परवलकी जडका लेप करनेसें रक्तकी ववासीरवालोंकै सुख होता है। नोनी घृत और तिलोंके अभ्याससें व केशर नौनी घृत व खांड इन्होंके अभ्याससें अथवा दहीका साररूप मट्ठाके अभ्याससें रक्तकों वहानेवाले मस्से शांत होते हैं। मजीठ कमल केला लोध तिल चंदन इन्होंसहित बकरीका दूध देनेसें ववासीरका लोहू बंध होता है।

(२४) कुटजत्वक्पलशतं जलद्रोणे विपाचयेत्।
अष्टभागावशिष्टं तु कषायमवतारयेत् ॥ ११६ ॥
वस्त्रपूतं पुनः क्काथं पचेल्लेहत्वमागतम्।
भल्लातकं विडङ्गानि त्रिकटु त्रिफलां तथा ११७
रसाञ्जनं चित्रकं च कुटजस्य फलानि च।
वचामतिविषां बिल्वं प्रत्येकं च पलं पलम् ११८
त्रिंशत्पलानि गुडस्य चूर्णीकृत्य निधापयेत्।
मधुनः कुडवं दद्याद्घृतस्य कुडवं तथा ॥ ११९ ॥
एष लेहः शमयति चार्शो रक्तसमुद्भवम्।
वातिकं पैत्तिकं चैव श्लैष्मिकं सान्निपातिकम्
ये च दुर्नामजा रोगास्तान्सर्वान्नाशयत्यपि।
अम्लपित्तमतीसारं पाण्डुरोगमरोचकम्।
ग्रहणीमार्दवं कार्श्यं श्वयथुं कामलामपि १२१
अनुपानं घृतं दद्यान्मधु तक्रं जलं पयः।
रोमानीकविनाशाय कौटजो लेह उच्यते १२२

(२४ कुटजलेहः) कूडाकी छालि ४०० तोलेभर लेकै १०२४ तोले पानीमें पकावै जब आठमां भाग बाकी रहै तब काढाकों उतारै। वस्त्रमांहसें छानिकै फिर पकावै जब लेह सरीखा बनै तब भिलावा वायविडंग सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला रसोत चीता इन्द्रजव वच अतीस वेलगिरी ये चार चार तोले ले गुड १२० तोले इन सबकों मिलाके स्थापित करै घृत १६ तोले शहद १६ तोले मिलावै। यह लेह रक्तकी ववासीर वातकी पित्तकी कफकी सन्निपातकी ऐसी ववासीरोंकों और जो ववासिरोंके विकार हैं तिन सबोंकों नाशता है। अम्लपित्त अतिसार पांडुरोग अरोचक ग्रहणीरोग कार्श्यरोग शोजा कामला इन्होंकों नाशता है। घृत शहद तक्र दूध पाणी इन्होंमेंसें एक कोईसा अनुपान देना यह कौटजलेह रोगोंके समूहका नाश करनेकों कहा है।

(२५) कुटजत्वचो विपाच्यं
शतपलमार्द्रं महेन्द्रसलिलेन।
यावत्स्याद्गतरसं त-
द्द्रव्यं स्वरसस्ततो ग्राह्यः ॥ १२३ ॥
मोचारसः समङ्गा
फलिनी च पलांशिभिस्त्रिभिस्तैश्च।
वत्सकबीजं तुल्यं
चूर्णीकृतमत्र दातव्यम् ॥ १२४ ॥
पूतोत्क्कथितः सान्द्रः
सरसो दर्वीप्रलेपनो ग्राह्यः।
मात्राकालोपहिता
रसक्रियैषा जयत्यसृक्स्रावम् ॥ १२५ ॥
छगलीपयसा युक्ता
पेया मण्डेन वा यथाग्निबलम्।
जीर्णौषधश्च शाली-
न्पयसा काथेन भुञ्जीत ॥ १२६ ॥
रक्तगुदजातिसारं
शूलं सासृग्रुजो निहन्त्याशु।
बलवच्च रक्तपित्तं
रसक्रियैषा ह्युभयभागम् ॥ १२७ ॥

(२५ कुटजरसक्रिया) कूडाकी गीली छालि ४०० तोलेभर लेय आकाशके पानीसें पकावै जब रससें रहित द्रव्य रहै तब स्वरसकों ग्रहण करै। मोचरस मजीठ त्रायमाण ये सब चार चार तोले ले और इन्द्रजव ४ तोले इन्होंका चूर्ण कर तिसमें देवै। वस्त्रमांहसें छाना हुआ वह क्काथ करडा और रससहित और कडछीपै चिपनेलगै तब ग्रहण करना। मात्रा और कालके अनुसार ग्रहण करी यह रसक्रिया रक्तस्रावकों जीतती है। बकरीका दूधसें युक्त

करी अथवा मंडसें युक्त करी पेया अग्निका बलके अनुसार श्रेष्ठ है और औषधकों जीर्ण होनेपर शालिचावलोंकों बकरीके दूधसें खावै । रक्तकी ववासीर अतिसार शूल रक्तरोग इन्होंकों यह शीघ्र नाशता है और दोनों तरहके अत्यंत भयानक रक्तपित्तकोंभी यह रसक्रिया दूर करती है।

(२६) **कुटजफलवल्कलकेशर-**
नीलोत्पललोध्रधातकीकल्कैः ।
सिद्धं घृतं विधेयं
शूले रक्तार्शसां भिषजा ॥ १२८ ॥

(२६ कुटजाद्यं घृतम्) इन्द्रजव कूडाकी छालि केशर नीला कमल लोध धायके फूल इन्होंके कल्कमें सिद्ध किया घृत शूल और रक्तकी ववासीरवालोंकों वैद्यनें देना।

(२७) **अवाक्पुष्पीबलादार्वीपृश्निपर्णीत्रिकण्टकम्**
न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थशङ्गाश्च द्विपलोन्मिताः ॥
कषाय एष पेष्यस्तु जीवन्ती कटुरोहिणी ।
पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचं देवदारु च १३०
कलिङ्गं शाल्मलीपुष्पं वीराचन्दनमञ्जनम् ।
कट्फलं चित्रकं मुस्तं प्रियङ्ग्वतिविषे स्थिता ॥
पद्मोत्पलानां किञ्जल्कः समङ्गा सनिदिग्धिका ।
विश्वं मोचरसं पाठा भागाः स्युः कार्षिकाः पृथक्
चतुःप्रस्थश्टतं प्रस्थं कषायमवतारयेत् ।
त्रिंशत्पलानि तु प्रस्थो विज्ञेयो द्विपलाधिकः ॥
सुनिषण्णकचाङ्गेर्याः प्रस्थौ द्वौ स्वरसस्य च ।
सर्वैरेतैर्यथोद्दिष्टैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ १३४ ॥
एतदर्शःस्वतीसारे त्रिदोषे रुधिरस्रुतौ ।
प्रवाहणे गुदभ्रंशे पिच्छासु विविधासु च १३५
उत्थाने चापि बहुशः शोथशूलगुदामये ।
अन्त्रग्रहे गूढवाते मन्दाग्नावरुचावपि ॥ १३६ ॥
प्रयोज्यं विधिवत्सर्पिर्बलवर्णाग्निवर्धनम् ।
विविधेष्वन्नपानेषु केवलं वा निरत्ययम् १३७

(२७ सुनिषण्णकचांगेरीघृतम्) सोंप खरैंटी दारुहलदी पृश्निपर्णी गोखरू वड गूलर पीपल इन्होंके कोंपल ये ८ तोले ले यह काढा बनाना । पीछे जीवंती कुटकी पीपल पीपलामूल मिरच देवदारु इन्द्रजव शंभलका फूल ब्राह्मी चंदन रसोत कायफल चीता नागरमोथा मालकांगनी अतीस शालपर्णी कमलकी केशर मजीठ कटेहली सोंठ मोचरस सोनापाठा ये एक एक तोला लेने । चार प्रस्थभर काढेमेंसें जब एक प्रस्थभर रहै तब उतारना । यहां ३२ पलका प्रस्थ जानना । कुरुडुडु और चूकाका स्वरस दो प्रस्थ और पूर्वोक्त कहे सब ओषध इन्होंकरके प्रस्थभर घृतकों पकावै । यह ववासीरमें त्रिदोषके अतिसारमें रक्तके झिरनेमें प्रवाहिकामें कांचके निकलनेमें अनेक प्रकारके आमरोगमें बहुतसे रोगोंके उठनेमें शोजा शूल गुदारोग मूत्रका बंधा मूढवात मंदाग्नि अरुचि इन्होंमें विधिपूर्वक युक्त करना यह बलवर्ण अग्नि इन्होंकों बढाता है अनेक प्रकारके अन्नपानोंमें यह अकेला हितकारी है।

(२८) **प्रशस्तेऽहनि नक्षत्रे कृतमङ्गलपूर्वकम् ।**
कालमुष्ककमाहृत्य दग्ध्वा भस्म समाहरेत् ॥
आढकं त्वेकमादाय जलद्रोणे पचेद्भिषक् ।
चतुर्भागावशिष्टेन वस्त्रपूतेन वारिणा ॥ १३९ ॥
शङ्खचूर्णस्य कुडवं प्रक्षिप्य विपचेत्पुनः ।
शनैः शनैर्मृद्वग्नौ तु यावत्सान्द्रतनुर्भवेत् १४०
सर्जिकायवशूकाभ्यां शुण्ठी मरिचपिप्पली ।
वचा चातिविषा चैव हिङ्गुचित्रकयोस्तथा १४१
एषां चूर्णानि निक्षिप्य पृथक्त्वेनाष्टमाषकम् ।
दर्व्या संघट्टितं चापि स्थापयेदायसे घटे १४२
एष वह्निसमः क्षारः कीर्तितः काश्यपादिभिः ।
तोये कालकमुष्ककस्य विपचे-
द्भस्माढकं षड्गुणे
पात्रे लोहमये दृढे विपुलधी-
र्दर्व्याशनैर्घट्टयन् ॥
दग्ध्वाग्नौ बहुशङ्खनाभिशकला-
न्पूतावशेषे क्षिपेत्
यद्वेरण्डजनालमेष दहति
क्षारो वरो वाक्शतात् ॥ १४३ ॥
प्रायस्त्रिभागशिष्टेऽस्मिन्नच्छपैच्छिल्यरक्तता ।
संजायते तदा स्राव्यं क्षाराम्भो ग्राह्यमिष्यते ॥
तुर्येणाष्टमकेन षोडशभवे-
नांशेन संव्यूहितो
मध्यः श्रेष्ठ इति क्रमेण विहितः
क्षारोदकाच्छङ्खकः ॥ १४५ ॥

नातिसान्द्रो नातितनुः क्षारपाक उदाहृतः ।
दुर्नामकादौ निर्दिष्टः क्षारोऽयं प्रतिसारणः ॥
पानीयो यस्तु गुल्मादौ तं वारानेकविंशतिम् ।
स्रावयेत्षड्गुणे तोये केचिदाहुश्चतुर्गुणे ॥१४७॥

(२८ क्षारविधिः) सुंदर दिनमें और नक्षत्रमें प्रथम मंगलाचरण करकै कृष्णघंटा पाटलीवृक्षकी छालकों लाय दग्ध कर भस्मकों ग्रहण करै । २५६ तोलेभर द्रव्यकों लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै । जब चौथा भाग बाकी रहै तब वस्त्रमांहसें छानि तिस पानीमें १६ तोलेभर शंखका चूर्ण मिलाय फिर पकावै हौलें हौलें मंद अग्निसें पकावै जब करडा होने लगै तब साजी जवाखार सोंठ मिरच पीपल वच अतीस हींग चीता इन्होंके चूर्ण आठ आठ मासे लेकै मिलावै । कडछीसें मिलाके लोहाके पात्रमें घाल स्थापित करै यह अग्निके समान खार काश्यपआदिकोंने कहा है । पूर्वोक्त वृक्षकी भस्म २५६ तोले लेकै छःगुनें पानीमें दृढरूप लोहाके पात्रविषै वैद्यजन पकावै और कडछीसें हौलें हौलें चलाता जावै अग्निविषै बहुतसें शंखकी नाभिके टुकडोंकों जलाकै वस्त्रसें छाने हुये पूर्वोक्त क्वाथमें गेरै जब १०० वार गिननेके भीतर अरंडकी नालकों यह खार जला देवै तब यह उत्तम खार जानना । प्रायताकरके तीन भाग शेष रहे इसमें स्वच्छपना पिच्छिलपना और ललाई उपजै तब झिरा हुआ खारका पानी ग्रहण करना चौथा आठमां सोलहमां ऐसे अंशकरके रचा हुआ मध्य श्रेष्ठ इस क्रमकरके खारके पानीसें शंख विहित है । न अत्यंत करडा हो न अत्यंत महीन हो ऐसा खारका पाक कहा है । ववासीरआदिविषै यह खार मलना कहा है । गुल्मआदिविषै जो पानी है तिसकों २१ वार छःगुना पानीमें झिरावै । कितनेक वैद्य आठगुना पानीमें झिराना ऐसा कहते हैं ।

(२९) भावितं रजनीचूर्णैः स्नुहीक्षीरे पुनः पुनः ।
बन्धनात्सुदृढं सूत्रं भिनत्त्यर्शो भगन्दरम् १४८
प्राग्दक्षिणं ततो वामं पृष्ठजं चाग्रजं क्रमात् ।
पञ्चतिक्तेन संस्निह्य दहेत्क्षारेण वह्निना ॥१४९॥
वातजं श्लेष्मजं चार्शः क्षारेणास्रजपित्तजे ।
महान्ति तनुमूलानि छित्त्वैव बलिनो दहेत् ॥
चर्मकीलं तथा छित्त्वा दहेदन्यतरेण वा ।
पक्वजम्बूपमो वर्णः क्षारदग्धः प्रशस्यते ॥१५१॥
गोजीशेफालिकापत्रैरर्शः संलिख्य लेपयेत् ।
क्षारेण वाक्शतं तिष्ठेद्यन्त्रद्वारं पिधाय च १५२
तं चापनीय वीक्षेत पक्वजम्बूफलोपमम् ।
यदि च स्यात्ततो भद्रं नो चेल्लिम्पेत्तथा पुनः ॥
तत्तुषाम्बुप्लुतं साज्यं यष्टीकल्केन लेपयेत् ।
न निम्नं तालवर्णाभं वह्निदग्धे स्थितासृजम् १५४
निर्वाप्य मधुसर्पिर्भ्यां वह्निसंजातवेदनाम् ।
सम्यग्दग्धे तुगाक्षीरी प्लक्षचन्दनगैरिकैः ॥१५५॥
सामृतैः सर्पिषा युक्तैरालेपं कारयेद्भिषक् ।
मुहूर्तमुपवेश्याऽसौ तोयपूर्णेऽथ भाजने ॥१५६॥
क्षारमुष्णाम्बुना पाय्यं विबन्धे मूत्रवर्चसोः ।
दाहे वस्त्यादिजे लेपः शतधौतेन सर्पिषा ॥
नवान्नं माषतक्रादि सेव्यं पाकाय जानता ।
पिबेद्गुणविशुद्ध्यर्थं वराक्वाथं सगुग्गुलुम् १५८
जीर्णे शाल्यन्नमुद्गादि पथ्यं तिक्ताज्यसैन्धवम् ।
रूढसर्वव्रणं वैद्यः क्षारं दत्त्वानुवासयेत् ॥१५९॥

(२९ क्षारसूत्रः) हलदीका चूरणसहित थोहरके दूधमें भावित किया वारंवार सूतसें दृढ बांधै तो ववासीर और भगंदर कटजाता है । पूर्व दाहिना पीछे वामां पीछे पीठका पीछे आगला इस क्रमसें पंचतिक्त करकै स्नेहित कर पीछे खारसें व अग्निसें दग्ध करै । वातका व कफका मस्साकों खारसें जलावै । रक्तका व पित्तका मस्साकी सूक्ष्मजडकों काटकै पीछे बलवालेकै दग्ध करैं । तैसेंही चर्मकीलकों काटकै खारसें अथवा अग्निसें दग्ध करै पकाहुआ जामनके समान उपमावाला वर्णक्षारसें दग्ध हुआ श्रेष्ठ कहाहै । गोमी शंभालु इन्होंके पत्तोंसें ववासीरके मस्सेकों लिखितकर लेप करै यंत्रद्वारसें आच्छादित कर सौकी गिनती हो सकै इतना कालतक खारसें कर्म करै फिर हाथकों दूर कर पका हुआ जामनका फलके समान उपमावाला मस्सा दीखै तो उत्तम कर्तव्य हुआ जानै नहीं तो फिर तिसी प्रकारसें लेपै । फिर तुषका पानी घृत मुलहटीका कल्क इन्होंसें लेप करै न डूंघा हो हरतालके वर्णके समान कांतिवाला हो और लोहू न झिराता हो ऐसा अग्निसें दग्धहुआ श्रेष्ठ है । अग्निसें उपजी पीडाकों शहद और घृतसें दूर करै । सम्यक् दग्धहुयेमें वंशलोचन पिलषत चंदन गेरू गिलोय इन्होंकों घृतमें मिलाय वैद्य लेप करावै । जलसें पूरितहुये पात्रमें २ घडी बैठाकै मूत्र

और मलके बंधेमें खारकों गरमपानीसें दूर करै । बस्ति आदि स्थानमें दाह उपजै तो १०० वार धोये घृतसें लेपकरै नया अन्न उडद और तक्रआदि पाकके अर्थ सेवित करै । घावकी शुद्धिके अर्थ त्रिफलाके क्वाथमें गूगल मिलाय पीवै जीर्ण होनेपै शालिचावल मूंग आदि तिक्तपदार्थ घृत सेंधानमक ये पथ्य है । अंकुरकों प्राप्त हुये सब प्रकारके घावपर खार देकै अनुवासित करै पिप्पल्यादि तेलकरके दीपन पाचनकों सेवै ।

(३०)पिप्पल्याद्येन तैलेन सेवेद्दीपनपाचनम् ।
त्रिवृच्चित्रकनिर्गुण्डी स्नुहीमुण्डतिकाजटाः १६०
प्रत्येकशोऽष्टपलिकां जलद्रोणे विपाचयेत् ।
पलत्रयं विडङ्गस्य व्योषात्कर्षत्रयं पृथक् ॥१६१॥
त्रिफलायाः पञ्च पलं शिलाजतु पलं न्यसेत् ।
दिव्यौषधिहतस्यापि वैकङ्कतहतस्य वा ॥१६२॥
पलद्वादशकं देयं रुक्मलौहस्य चूर्णितम् ।
पलैश्चतुर्विंशतिभिर्मधुशर्करयोर्युतम् ॥ १६३ ॥
घनीभूते सुशीते च दापयेदवतारिते ।
एतदग्निमुखं नाम दुर्नामान्तकरं परम् ॥१६४॥
सममग्निं करोत्याशु कालाग्निसमतेजसम् ।
पर्वता अपि जीर्यन्ति प्राशनादस्य देहिनः १६५
गुरुवृष्यान्नपानानि पयोमांसरसो हितः ।
दुर्नामपाण्डुश्वयथुकुष्ठप्लीहोदरापहम् ॥ १६६ ॥
अकालपलितं चैतदामवातगुदामयम् ।
न स रोगोऽस्ति यं चापि न निहन्यादिदं क्षणात्॥
करीरकाञ्जिकादीनि ककारादीनि वर्जयेत् ।
स्रवत्यतोऽन्यथा लौहं देहात्किट्टं च दुर्जरम् ॥

(**३० अग्निमुखं लोहम्**) निशोत चीता शंभालु थोहर गोरखमुंडी बालछड बत्तीस बत्तीस तोलेभर लेकै १०२४ तोले पानीमें पकावे । वायविडंग १२ तोले सोंठ ३ तोले मिरच ३ तोले पीपल ३ तोले त्रिफला २ तोले शिलाजीत ४ तोले इन्होंकों मिलावै दिव्य औषधिकरके हतहुआ अथवा विकंकत करके हतहुआ रुक्मलोहाका चूरण ४८ तोले देना । करडा होजावे और अग्निसें उतारे पीछे शीतल होजावे तब ९६ तोले शहद और खांड मिलावे । यह अग्निमुखनामवाला ववासीरकों दूर करता है और समानअग्निकों कालाग्निके समान तेजवाला शीघ्र करताहै । इसके भोजनसें मनुष्यके पर्वतभी जर जाताहै इसपर भारी पुष्ट ऐसे अन्नपान दूध मांसका रस ये हित हैं । यह ववासीर पांडु शोजा कुष्ठ तिल्लीरोग उदररोग अकालपलित आमवात गुदारोग इन्होंकों नाशता है । ऐसा रोग नहीं है कि जिस्कों यह तात्काल क्षणभरमें नष्ट नहीं करता । करीर कांजी आदि ककारादिक पदार्थोंकों वर्जित करै । इस्सें अन्यथा देहसें लोह झिरता है और लोहका मैल दुर्जर है ।

(३१) चित्रकं त्रिफला मुस्तं ग्रन्थिकं चविकामृता
हस्तिपिप्पल्यपामार्गदण्डोत्पलकुठेरकाः ॥१६९॥
एषां चतुष्पलान्भागाञ्जलद्रोणे विपाचयेत् ।
भल्लातकसहस्रे द्वे छित्त्वा तत्रैव दापयेत्॥१७०॥
तेन पादावशेषेण लौहपात्रे पचेद्भिषक् ।
तुलार्धं तीक्ष्णलौहस्य घृतस्य कुडवद्वयम् १७१
त्र्यूषणं त्रिफलावह्निसैन्धवं बिडमौद्भिदम् ।
सौवर्चलविडङ्गानि पलिकांशानि कल्पयेत् ॥
कुडवं वृद्धदारस्य तालमूल्यास्तथैव च ।
शूरणस्य पलान्यष्टौ चूर्णं कृत्वा विनिक्षिपेत् ॥
सिद्धे शीते प्रदातव्यं मधुनः कुडवद्वयम् ।
प्रातर्भोजनकाले च ततः खादेद्यथाबलम् १७४
अर्शांसि ग्रहणीदोषं पाण्डुरोगमरोचकम् ।
क्रिमिगुल्माश्मरीमेहाञ्शूलं चाशु व्यपोहति ॥
करोति शुक्रोपचयं वलीपलितनाशनम् ।
रसायनमिदं श्रेष्ठं सर्वरोगहरं परम् ॥ १७६ ॥
रसस्तु पादिकस्तुल्या विडङ्गमरिचाभ्रकाः ।
गङ्गापालङ्कजरसे खल्वयित्वा पुनः पुनः ॥१७७॥
रक्तिमात्रा गुदार्शोघ्नी वह्नेरत्यर्थदीपनी ।
वेगावरोधस्त्रीपृष्ठयानमुत्कटकासनम् ।
यथास्वं दोषलं चान्नमर्शसः परिवर्जयेत्॥१७८॥

इत्यर्शोधिकारः ।

(**३१ भल्लातकं लोहम्**) चीता त्रिफला नागरमोथा पीपलामूल चव्य गिलोय गजपीपल ऊंगा बडी खरैंहटी कमल तुलशी ये सब सोलह सोलह तोले लेवै द्रोणभर पानीमें पकावै पीछे दो हजार भिलाओंकों छेदितकर तहांही देवै जब चौथाई भाग शेष रहै तब लोहाके पात्रमें घालके वैद्य पकावै पोहलाद २०० तोले घृत ३२ तोले सोंठ मिरच पीपल त्रिफला सेंधानमक चीता मनियारीनमक रेहनमक कालानमक वायविडंग ये चार चार तोले

लेवै। भिदारा १६ तोले मुसली १६ तोले जिमीकंद ३२ तोले इन्होंका चूरण कर मिलाके धरै। सिद्ध और शीतल हुयेमें शहद ३२ तोले लेवै प्रभातके भोजनकालमें बलके अनुसार खावै तो ववासीर ग्रहणीदोष पांडुरोग अरोचक कृमिरोग गुल्म पथरी प्रमेह शूल इन्होंकों शीघ्र दूर करताहै। वीर्यकी वृद्धि करताहै शरीरकी वली और वालोंका सफेद होना इनकों दूर करताहै यह रसायन श्रेष्ठ है सब रोगोंकों हरताहै यह भल्लातक लोह है। चौथाई भाग पारा वायविडंग मिरच अभ्रक ये तीनों बराबर भाग इन सबकों लज्जावंती और पोईशाखके रसमें वारंवार खरलकर रतिमात्र लेनेसें ववासीरका नाश होताहै अग्नि अत्यंत जागता है। वेगका रोकना स्त्रीसंग पीठकी सवारी उत्कट आसन यथायोग्य दोषवाला अन्न इन सबकों ववासीरवाला रोगी वर्जित करै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्रपंडितरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायामर्शश्चिकित्सा समाप्ता।

अथाग्निमान्द्याधिकारः ६

अब इसके अनंतर मंदाग्निरोगका अधिकार कहतेहै।

(१) समस्य रक्षणं कार्यं विषमे वातनिग्रहः।
तीक्ष्णे पित्तप्रतीकारो मन्दे श्लेष्मविशोधनम् १

(**१ समविषमविषये**) समान अग्निकी रक्षा करनी विषम अग्निमें वायुका निग्रह करना तीक्ष्ण अग्निमें पित्तनाशक चिकित्सा करनी मंदाग्निमें कफकी शुद्धि करनी।

(२) त्रिकटुकमजमोदा सैन्धवं जीरके द्वे
समधरणघृतानामष्टमो हिङ्गुभागः।
प्रथमकुडवभुक्तं सर्पिषा चूर्णमेत-
ज्जनयति जठराग्निं वातरोगांश्च हन्यात् ॥२॥

(**२ हिंग्वष्टकं चूर्णम्**) सोंठ मिरच पीपल अजमोद सेंधानमक दोनों जीरे ये सब समान भाग ले और आठमां भाग हींग ले चूर्ण बनावै इस चूर्णकों प्रथम ग्रासमें घृतके साथ लेवै यह पेटकी अग्निकों उपजाता है और वातरोगोंकों दूर करता है यह हिंग्वष्टकचूर्ण है।

(३) समयवशूकमहौषध-
चूर्णं लीढं घृतेन गोसर्गे।
कुरुते क्षुधां सुखोदक-
पीतं सद्यो महौषधं वैकम् ॥ ३ ॥
अन्नमण्डं पिबेदुष्णं हिङ्गुसौवर्चलान्वितम्।
विषमोऽपि समस्तेन मन्दो दीप्येत पावकः ॥४॥
क्षुद्बोधनो बस्तिविशोधनश्च
प्राणप्रदः शोणितवर्धनश्च।
ज्वरापहारी कफपित्तहन्ता
वायुं जयेदष्टगुणो हि मण्डः ॥ ५ ॥

(**३ क्षुद्बोधौषधम्**) जवाखार और सोंठकों बराबर ले चूर्ण बनाय घृतसें मिलाय प्रभातमें चाटै अथवा अकेला सोंठका चूर्णकों खाके पानी पीवै यह क्षुधाकों करता है। हींग और कालानमकसें संयुक्त कीये अन्नके मंडकों गरम पीवै तो विषम समान मंद अग्नि दीप्त हो जाता है। अष्टगुण मंड भूखकों जगाता है बस्तिकों शोधता है प्राणोंकों देता है रक्तकों बढाता है ज्वरकों हरता है कफपित्तकों नाशता है वायुकों जीतता है।

(४) नारीक्षीरेण संयुक्तां पिबेदौदुम्बरीं त्वचम्।
आभ्यां वा पायसं सिद्धं पिबेदत्यग्निशान्तये ६
यत्किञ्चिद्गुरु मेध्यं च श्लेष्मकारि च भेषजम्।
सर्वं तदत्यग्निहितं भुक्त्वा प्रस्वपनं दिवा ॥७॥
मुहुर्मुहुरजीर्णेऽपि भोज्यमस्योपकल्पयेत्।
निरिन्धनोन्तरं लब्ध्वा यथैनं न निपातयेत् ८
विश्वाभयागुडूचीनां कषायेण षडूषणम्।
पिबेच्छ्लेष्मणि मन्देऽग्नौ त्वक्पत्रसुरभीकृतम् ९
पञ्चकोलं समरिचं षडूषणमुदाहृतम्।

(**४ अग्निशमने षडूषणम्**) गूलरकी छालिकों स्त्रीके दूधमें मिलाय पीवै अथवा इन दोनोंसें खीर बनाय पीवै तो अत्यग्नि शांत होय। जो कुछ भारी और मेध्य और कफकों करनेवाला ओषध हो वह सब अत्यग्नि अर्थात् भस्माग्निमें हितहै और भोजन करके दिनमें सोना हित है। अजीर्णमेंभी वारंवार इस रोगवालेकों भोजन देना। इस रोगवालेकों भोजन नहीं मिलै तो जठराग्नि शांत और प्राणोंकों जलाके शीघ्र मार देताहै। सोंठ हरडै गिलोय इन्होंका काढा बनाय तिसके संग षडूषणकों पीवै परंतु दालचिनी तेजपातसें सुगंधित करले तब कफसें मंद हुआ अग्नि दीप्त होताहै। पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिरच यह षडूषण कहाहै।

(५) हरीतकी भक्ष्यमाणा नागरेण गुडेन वा ।
सैन्धवोपहिता वापि सातत्येनाग्निदीपनी १०

सिन्धूत्थपथ्यमगधोद्भववह्निचूर्ण-
मुष्णाम्बुना पिबति यः खलु नष्टवह्निः ।
तस्यामिषेण सघृतेन वरं नवान्नं
भस्मीभवत्यशितमात्रमिह क्षणेन ॥ ११ ॥

सिन्धूत्थहिङ्गुत्रिफलायमानी-
व्योषैर्गुडांशैर्गुडकान्प्रकुर्यात् ।
तैर्भक्षितैस्तृप्तिमवाप्नुवन्ना
भुञ्जीत मन्दाग्निरपि प्रभूतम् ॥ १२ ॥

विडङ्गभल्लातकचित्रकामृताः
सनागरास्तुल्यगुडेन सर्पिषा ।
निहन्ति ये मन्दहुताशना नरा
भवन्ति ते वाडवतुल्यवह्नयः ॥ १३ ॥

गुडेन शुण्ठीमथवोपकुल्यां
पथ्यां तृतीयामथ दाडिमं वा ।
आमेष्वजीर्णेषु गुदामयेषु
वर्चोविबन्धेषु च नित्यमद्यात् ॥ १४ ॥

भोजनाग्रे हितं हृद्यं दीपनं लवणार्द्रकम् ।

(५ अग्निप्रदीपकानि) सोंठके संग अथवा गुडके संग भक्षण करी अथवा सेंधानमकके संग भक्षण करी हरडै निरंतर अग्निकों प्रकाशित करती है। सेंधानमक हरडै पीपल चीता इन्होंका चूर्ण बनाय गरमपानीके संग जो नष्ट अग्निवाला पीवै तिसकै मांस व घृतके साथ भोजन किया नवीन अन्न क्षणभरमें भस्म हो जाताहै । सेंधानमक हींग हरडै बहेडा आंवला अजमान सोंठ मिरच पीपल ये सब बराबर और इन सबोंके समान गुड मिलाय गोली बनावै तिन्होंकों खानेसें मंदाग्निवाला तृप्तिकों प्राप्त होताहै और बहुतसा भोजन करता है । वायविडंग भिलावा चीता गिलोय सोंठ येसब बराबरके गुड और घृतमें मिलाय गोली बनाय खावै तो मंदाग्निवाले वडवाअग्निके समान अग्निवाले हो जाते हैं । गुडकेसाथ सोंठकों अथवा पीपलकों अथवा हरडैकों अथवा अनारकों आमरोगमें अजीर्णमें गुदाके रोगोंमें मलके बंधेमें नित्यप्रति खावै । भोजनसें पहिले नमक और अदरखका खाना सुंदर और दीपन है ।

(६) कपित्थबिल्वचाङ्गेरीमरिचाजाजिचित्रकैः१५
कफवातहरो ग्राही खण्डो दीपनपाचनः ।
पिप्पलीशृङ्गवेरं च देवदारु सचित्रकम् ॥ १६ ॥
चविकां बिल्वपेशीं चाजमोदां च हरीतकीम् ।
महौषधं यमानीं च धान्यकं मरिचं तथा ॥१७॥
जीरकं चापि हिङ्गुं च काञ्जिकं साधयेद्भिषक् ।
एष शार्दूलको नाम काञ्जिकोऽग्निबलप्रदः १८
सिद्धार्थतैलसंभृष्टो दश रोगान् व्यपोहति ।
कासं श्वासमतीसारं पाण्डुरोगं सकामलम् १९
आमं च गुल्मशूलं च वातगुल्मं सवेदनम् ।
अर्शांसि श्वयथुं चैव भुक्ते पीते च सात्म्यतः२०
क्षीरपाकविधानेन काञ्जिकस्यापि साधनम् ।

(६ शार्दूलकांजिकः) कैथ बेलगिरी चूका मिरच जीरा चीता इन्होंका खंड दस्तकों बांधता है दीपन है पाचन है और कफवातकों हरता है। पीपल अदरख देवदार चीता चव्य बेलगिरी अजमोद हरडै सोंठ अजमान धनियां मिरच जीरा हींग इन्होंसें कांजीकों सिद्ध करै । यह शार्दूलनामवाला कांजी अग्निकों जगाता है। सरसोंका तेलसें भूनाहुआ यह कांजी दश रोगोंकों दूर करता है । खांसी श्वास अतिसार पांडुरोग कामला आमरोग पेटका गोला शूल पीडासहित वायका गोला बवासीर शोजा इन्होंकों दूर करता है परंतु प्रकृतिके माफिक भोजन और पान करना। दूधका पाकके विधान करकै कांजीकोंभी सिद्ध करना ।

(७) हिङ्गुभागो भवेदेको वचा च द्विगुणा भवेत्
पिप्पली त्रिगुणा चैव शृङ्गवेरं चतुर्गुणम् ।
यमानिका पञ्चगुणा षड्गुणा च हरीतकी ॥२२॥
चित्रकं सप्तगुणितं कुष्ठं चाष्टगुणं भवेत् ।
एतद्वातहरं चूर्णं पीतमात्रं प्रसन्नया ॥ २३ ॥
पिबेद्दध्ना मस्तुना वा सुरया कोष्णवारिणा ।
सोदावर्तमजीर्णं च प्लीहानमुदरं तथा ॥ २४ ॥
अङ्गानि यस्य शीर्यन्ते विषं वा येन भक्षितम् ।
अर्शोहरं दीपनं च श्लेष्मघ्नं गुल्मनाशनम् २५
कासं श्वासं निहन्त्याशु तथैव यक्ष्मनाशनम् ।
चूर्णमग्निमुखं नाम न क्वचित्प्रतिहन्यते ॥ २६ ॥

(७ अग्निमुखचूर्णम्) हींग एक भाग वच दो भाग पीपल तीन भाग अदरख चार भाग अजमान पांच भाग

हरडै छः भाग चीता सात भाग कूट आठ भाग यह चूर्ण मदिराके संग पान किया जावे तो वातरोगकों हरता है अथवा दही दहीका पानी मदिरा गरम पानी इन्होंमेंसें एक कोइसाके संग पीवै । उदावर्त अजीर्ण तिल्लीरोग उदररोग जिसका अंग टूटता हो वह रोग जहर खाया गया हो वह रोग ववासीर इन्होंकों नाशता है अग्निकों दीप्त करता है कफ और गुल्मकों नाशता है। खांसी श्वास राजरोग इन्होंकों शीघ्र नाशता है यह अग्निमुख नामवाला चूर्ण कहींभी निष्फल नहीं होता है ।

(८) रसोऽर्धभागिकस्तुल्याद्विडङ्गमरिचाभ्रकाः ।
भक्तोदकेन संमर्द्य कुर्याद्गुञ्जासमां गुटीम् ॥२७॥
भक्तोदकानुपानैका सेव्या वह्निप्रदीपनी ।
वार्यन्नभोजनं चात्र प्रयोगे सात्म्यमिष्यते ॥२८॥

(८ पानीयभक्तगुटिका) पारा आधा भाग वायविडंग मिरच अभ्रक ये बराबर भाग इन सबकों चावलोंके पानीमें खरलकर चिरमटीके समान गोली करै । चावलोंका पानीके अनुपानके संग दीपन करनेमें ये गोली सेवनी। पानी और अन्नभोजन इस प्रयोगमें उत्तम कहा है ।

(९) द्वौ क्षारौ चित्रकं पाठा करञ्जलवणानि च ।
सूक्ष्मैलापत्रकं भार्गी क्रिमिघ्नं हिङ्गुपौष्करम् २९
शठी दार्वी त्रिवृन्मुस्तं वचा सेन्द्रयवा तथा ।
धात्रीजीरकवृक्षाम्लं श्रेयसी चोपकुञ्चिका ३०
अम्लवेतसमम्लिका यमानी सुरदारु च ।
अभयातिविषाश्यामाहवुषारग्वधं समम् ॥ ३१ ॥
तिलमुष्करशिग्रूणां कोकिलाक्षपलाशयोः ।
क्षाराणि लोहकिट्टं च तप्तं गोमूत्रसेचितम् ३२
समभागानि सर्वाणि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
मातुलुङ्गरसेनैव भावयेच्च दिनत्रयम् ॥ ३३ ॥
दिनत्रयं च शुक्तेन चार्द्रकस्वरसेन च ।
अत्यग्निकारकं चूर्णं प्रदीप्ताग्निसमप्रभम् ॥३४॥
उपयुक्तविधानेन नाशयत्यचिराद्गदान् ।
अजीर्णकमथो गुल्मान्प्लीहानं गुदजानि च ॥३५॥
उदराण्यन्त्रवृद्धिं चाप्यष्ठीलां वातशोणितम् ।
प्रणुदत्युल्वणान्रोगान्नष्टं वह्निं च दीपयेत् ॥३६॥
समस्तव्यञ्जनोपेतं भक्तं दत्वा सुभाजने ।
दापयेदस्य चूर्णस्य बिडालपदमात्रकम् ॥ ३७ ॥
गोदोहमात्रात्तत्सर्वं द्रवीभवति सोष्मकम् ।

(९ बृहदग्निमुखचूर्णम्) जवाखार साजीखार चीता सोनापाठा करंजुआ सब प्रकारके नमक छोटी इलायची तेजपात भारंगी वायविडंग हींग पोहकरमूल कचूर दारुहलदी निशोत नागरमोथा वच इंद्रजव आंवला जीरा विजौरा गजपीपल हरडै कलौंजी अम्लवेत अमली अजमान देवदार हरडै अतीस निशोत हाऊवेर अमलतास ये बराबर भाग ले तिल मोखावृक्ष सहोंजना कोंलिस्ता केसू इन्होंके खार और गरम करके गोमूत्रमें बुझाया लोहका मैल ये सब समान भाग ले महीन चूरण करै पीछै विजोराके रसकरके तीन दिन भावना देवै तीन दिन सूक्तसंज्ञक कांजीकरके और तीन दिन अदरखका रसकरके भावना देवै । यह अत्यग्निकारक चूर्ण प्रदीप्ताग्निके समान है विधानसें युक्त किया रोगोंकों शीघ्र नाशता है। अजीर्ण गुल्म तिल्लीरोग ववासीर उदररोग अंत्रवृद्धि अष्ठीला वातरक्त इन बढेहुये रोगोंकों नाशता है और अग्निकों जगाता है सबव्यंजनोंसें संयुक्त किये भागकों सुंदर पात्रमें देकै इस चूर्णकों एक तोलाभर देवै गोदोहनकालके परिमाणसें गरमाईसहित द्रव हो जाता है ।

(१०) पिप्पली पिप्पलीमूलं धन्याकं कृष्णजीरकम्
सैन्धवं च बिडं चैव पत्रं तालीसकेशरम् ।
एषां द्विपलिकान्भागान्पञ्च सौवर्चलस्य च ॥३९
मरिचाजाजिशुण्ठीनामेकैकस्य पलं पलम् ।
त्वगेले चार्धभागे च सामुद्रात्कुडवद्वयम् ॥४०॥
दाडिमात्कुडवं चैव द्वे पले चाम्लवेतसात् ।
एतच्चूर्णीकृतं श्लक्ष्णं गन्धाढ्यममृतोपमम् ॥४१॥
लवणं भास्करं नाम भास्करेण विनिर्मितम् ।
जगतस्तु हितार्थाय वातश्लेष्मामयापहम् ॥४२॥
वातगुल्मं निहन्त्येतद्वातशूलानि यानि च ।
तक्रमस्तु सुरासीधुशुक्तकाञ्जिकयोजितम् ॥४३॥
जाङ्गलानां तु मांसेन रसेषु विविधेषु च ।
मन्दाग्नेरश्नतः शक्तो भवेदाश्वेव पावकः ॥४४॥
अर्शांसि ग्रहणीदोषकुष्ठामयभगन्दरान् ।
हृद्रोगमामदोषांश्च विविधानुदरस्थितान् ॥४५॥
प्लीहानमश्मरीं चैव श्वासकासोदरक्रिमीन् ।
विशेषतः शर्करादीन्रोगान्नानाविधांस्तथा॥ ४६ ॥
पाण्डुरोगांश्च विविधान्नाशयत्यशनिर्यथा ।

(१० भास्करलवणम्) पीपल पीपलामूल धनियां कालाजीरा सेंधानमक मनियारीनमक तेजपात तालीसपत्र नागकेशर ये सब आठ आठ तोले मिरच जीरा सोंठ ये चारचार तोले दालचिनी और इलायची दो दो तोले सामुद्रनमक ३२ तोले अनारदाना १६ तोले अम्लवेत ८ तोले इन्होंकों महीन चूर्ण कर सुगंधसें युक्त करै तो अमृतसमान हो जाता है। यह लवणभास्कर भास्करनें रचा है। जगत्का कल्याणके अर्थ वातकफके रोगोंकों हरता है सब प्रकारके वातशूलोंकों दूर करता है गौकी छाछ दहीका पानी सुरासीधु सूक्त कांजी इन्होंमेंसें एकके संग युक्त करना जंगलके जीवोंके मांसकरके अनेक प्रकारके रसोंविषे इसकों मंदाग्निवाला खावै तो अग्नि शीघ्र समर्थ होता है। ववासीर ग्रहणीरोग कुष्ठ भगंदर हृद्रोग आमदोष तिल्लीरोग पथरीरोग श्वास खांसी उदररोग कृमिरोग विशेषकरकै शर्करा आदि अनेक प्रकारके रोगोंकों नाशता है जैसे इन्द्रका वज्र।

(११) पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रको हस्तिपिप्पली
हिङ्गुचव्याजमोदा च पञ्चैव लवणानि च ।
द्वौ क्षारौ हपुषा चैव दद्यादर्धपलोन्मितान् ४८
दधिकाञ्जिकशुक्तानि स्नेहमात्रासमानि च ।
आर्द्रकस्वरसप्रस्थं घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ४९ ॥
एतदग्निघृतं नाम मन्दाग्नीनां प्रशस्यते ।
अर्शसां नाशनं श्रेष्ठं तथा गुल्मोदरापहम् ॥५०॥
ग्रन्थ्यर्बुदापचीकासकफमेदोऽनिलानपि ।
नाशयेद्ग्रहणीदोषं श्वयथुं सभगन्दरम् ॥ ५१ ॥
ये च वस्तिगता रोगा ये च कुक्षिसमाश्रिताः ।
सर्वांस्तान्नाशयत्याशु सूर्यस्तम इवोदितः ॥ ५२ ॥

(११ अग्निघृतम्) पीपल पीपलामूल चीता गजपीपल हींग अजमोद चव्य पांचोंनमक जवाखार साजीखार हाऊवेर ये अठ आठ तोले दही कांजी सूक्त ये घृतके समान लेने। अदरखका रस ६४ घृत ६४ तोले इन्होंकों मिलाय पकावै यह अग्निघृत मंदाग्निवालोंकों श्रेष्ठ है। ववासीरके मस्से गुल्मरोग उदररोग ग्रंथि अर्बुद अपची खांसी कफ मेद वायुरोग ग्रहणीदोष शोजा भगंदर बस्तीमें प्राप्त हुये रोग और कुक्षिमें प्राप्त हुये रोग इन सबकों शीघ्र नाशताहै जैसें उदय हुआ सूर्य अंधेराकों।

(१२) पलिकैः पञ्चकोलैस्तु घृतं मस्तु चतुर्गुणम् ।
सक्षारैः सिद्धमल्पाग्निं कफगुल्मं विनाशयेत् ५३

(१२ मस्तुषट्पलकं घृतम्) पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ जवाखार ये चार चार तोले घृत और दहीकापानी ६४ तोले ऐसे लेके घृतकों सिद्ध करै यह घृत मंदाग्निकों और कफके गोलेकों नाशताहै।

(१३) भल्लातकसहस्रार्धं जलद्रोणे विपाचयेत् ।
अष्टभागावशेषं च कषायमवतारयेत् ॥ ५४ ॥
घृतप्रस्थं समादाय कल्कानीमानि दापयेत् ।
त्र्यूषणं पिप्पलीमूलं चित्रको हस्तिपिप्पली ॥५५
हिङ्गु चव्याजमोदा च पञ्चैव लवणानि च ।
द्वौ क्षारौ हपुषा चैव दद्यादर्धपलोन्मितान् ५६
दधिकाञ्जिकशुक्तानि स्नेहमात्रासमानि च ।
आर्द्रकस्वरसं चैव सौभाञ्जनरसं तथा ॥ ५७ ॥
तत्सर्वमेकतः कृत्वा शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ।
एतदग्निघृतं नाम मन्दाग्नीनां प्रशस्यते ॥ ५८ ॥
अर्शसां नाशनं श्रेष्ठं मूढवातानुलोमनम् ।
कफवातोद्भवे गुल्मे श्लीपदे च दकोदरे ॥५९॥
शोथं पाण्डवामयं कासं ग्रहणीं श्वासमेव च ।
एतान्विनाशयत्याशु सूर्यस्तम इवोदितः ॥ ६० ॥

(१३ बृहदग्निमुखघृतम्) भिलावोंकों लेकै १०२४ तोले पानीमें पकावै जब आठमा भाग शेष रहै तब काढा बना उतारै। ६४ तोलेभर घृत लेकै पीछे इन वक्ष्यमाण ओषधोंके कल्कोंकों मिलावै। सोंठ मिरच पीपल पीपलामूल चीता गजपीपल हींग चव्य अजमोद पांचों नमक साजीखार जवाखार हाऊवेर ये सब दोदो तोले लेवै। दही कांजी सूक्त ये स्नेहकी मात्राके समान लेवै। अदरखका रस और सहोंजनाका रस लेके मिलावै। इनसबकों मिलाके हौलें हौलें पकावै। यह बृहदग्निघृत मंदाग्निवालोंकों श्रेष्ठ है ववासीरकों नाशताहै और मूढवातकों अनुकूल करताहै। कफवातका गोला श्लीपद जलोदर शोजा पांडुरोग खांसी ग्रहणी श्वास इन सबकों यह शीघ्र नाशताहै जैसे उदयहुआ सूर्य अंधेरेकों।

(१४) द्वे पञ्चमूले त्रिफलामर्कमूलं शतावरीम् ।
दन्तीं चित्रकमास्फोतां रास्नां पाठां सुधां शठीम्
पृथग्दशपलान्भागान्दग्ध्वा भस्म समावपेत् ।
त्रिःसप्तकृत्वस्तद्भस्म जलद्रोणेन गालयेत् ॥६२॥

तद्रसं साधयेदग्नौ चतुर्भागावशेषितम् ।
ततो गुडतुलां दत्त्वा साधयेन्मृदुनाग्निना ॥६३॥
सिद्धं गुडं तु विज्ञाय चूर्णानीमानि दापयेत् ।
वृश्चिकालीं द्विकाकोल्यौ यवक्षारं समावपेत् ६४
एते पञ्चकला भागाः पृथक् पञ्चपलानि च ।
हरीतकीं त्रिकटुकं सर्जिकां चित्रकां वचाम् ६५
हिङ्ग्वम्लवेतसाभ्यां च द्वे पले तत्र दापयेत् ।
अक्षप्रमाणां गुटिकां कृत्वा खादेद्यथाबलम् ६६
अजीर्णं जरयत्येष जीर्णे सन्दीपयत्यपि ।
भुक्तं भुक्तं च जीर्येत पाण्डुत्वमपकर्षति ॥६७॥
प्लीहार्शःश्वयथुं चैव श्लेष्मकासमरोचकम् ।
मन्दाग्निविषमाग्नीनां कफे कण्ठोरसि स्थिते ६८
कुष्ठानि च प्रमेहांश्च गुल्मं चाशु नियच्छति ।
ख्यातः क्षारगुडो ह्येष रोगयुक्ते प्रयोजयेत्॥६९॥

(१४ क्षारगुडः) दशमूल त्रिफला आखकी जड शतावरी जमालगोटाकी जड चीता अनंतमूल रास्ना सोनापाठा थोहर कचूर ये सब चालीस चालीस तोलेभर ले दग्धकर भस्म बनावै २१ वार तिस भस्मकों एक द्रोणभर करके छानै। तिस रसकों अग्निपै सिद्ध करै जब चौथा भाग शेष रहै तब ४०० तोले गुड देकै कोमल अग्निसें पकावै । सिद्धगुडकों जानकै इन चूर्णोंकों देवै । मेढासींगी काकोली क्षीरकाकोली जवाखार इन्होंकों देवै ये सब वीस वीस तोले लेवै । हरडै सोंठ मिरच पीपल साजी चीता वच ये सब वीस वीस तोले हींग और अमलवेत आठ आठ तोले लेकै मिलावै । एक एक तोलाकी गोली बनाके बलके अनुसार खावै । यह अजीर्णकों जराता है और जीर्णमें अग्निकों जगाता है खाये खायेकों जरताहै और पांडुरोगकों दूर करताहै । तिल्लीरोग शोजा खांसीरोग अरोचक मंदाग्नि विषमाग्नि कंठका कफ छातीका कफ सबप्रकारके कुष्ठ सबप्रकारके प्रमेह और पेटका गोला इन्होंकों नाशताहै यह क्षारगुड कहा यह रोगी पुरुषके अर्थ देना यह क्षारगुड है ।

(१५) नासारोगे विधातव्या या चित्रकहरीतकी।
विना धात्रीरसं सोऽस्मिन्प्रोक्तश्चित्रगुडोऽग्निदः।
वचा लवणतोयेन वान्तिरामे प्रशस्यते ॥ ७० ॥
अन्नं विदग्धं हि नरस्य शीघ्रं
शीताम्बुना वै परिपाकमेति ।
तद्ध्यस्य शैत्येन निहन्ति पित्त-
माक्लेदिभावाच्च नयत्यधस्तात् ॥ ७१ ॥
विदह्यते यस्य तु भुक्तमात्रं
दह्येत हृत्कोष्ठगलं च यस्य ।
द्राक्षासितामाक्षिकसंप्रयुक्तां
लीढ्वाभयां वै स सुखं लभेत ॥ ७२ ॥
हरीतकी धान्यतुषोदसिद्धा
सपिप्पली सैन्धवहिङ्गुयुक्ता ।
सोद्गारधूमं भृशमप्यजीर्णं
विजित्य सद्यो जनयेत्क्षुधां च ॥ ७३ ॥
विष्टब्धे स्वेदनं पथ्यं पेयं च लवणोदकम् ।
रसशेषे दिवास्वप्नो लङ्घनं वातवर्जनम् ॥ ७४ ॥
व्यायामप्रमदाध्ववाहनरत-
क्लान्तानतीसारिणः
शूलश्वासवतस्तृषापरिगता
हिक्कामरुत्पीडितान् ।
क्षीणान्क्षीणकफान् शिशून्मदहता-
न्वृद्धान्रसाजीर्णिनो
रात्रौ जागरितांस्तथानिरशना-
न्कामं दिवा स्वापयेत् ॥ ७५ ॥

(१५ नासारोगे चित्रगुडः) नासारोगमें जो चित्रक हरीतकी करनी कही है तिसमें आंवलाका रसकों वर्जित करनेसें वह यहां चित्रगुड कहाहै । यह अग्निकों देताहै । वच और नमकके पानीसें आमाजीर्णमें वमन करना श्रेष्ठ है । मनुष्यका विदग्ध हुआ अन्न शीतलपानीकरके शीघ्र परिपाककों प्राप्त होताहै इस मनुष्यके शीतलपनेसें पित्तकों नाशता है और अक्लेदीभावसें नीचाकों प्राप्त करताहै । जिसकै भोजन करा हुआ शरीरमें दाहकों प्राप्त करै और जिसके हृदय कोष्ठ गल इन्होंमें दाह प्राप्त हो वह दाख मिसरी शहद हरडै इन्होंकों मिलाय चाटनेसें सुखकों प्राप्त होताहै । धनियां और जवोंकी कांजीमें सिद्ध करी हरडैमें पीपल सेंधानमक इन्होंकों मिलाय खावै तो ढकार और धूमांसहित अजीर्णका नाश होकै शीघ्र भूख जागती है । विष्टब्ध अजीर्णमें स्वेदन करना और नमकसहित पानी पीना पथ्य है रस शेष अजीर्णमें दिनकों सोना लंघन वायुका वर्जना ये पथ्य हैं । कसरत स्त्रीसंग मार्गमें चलना सवारीपै दौडना इन्होंसें क्लांत हुये अतिसाररोगी

शूल श्वास तृषा हिचकी वायु इन्होंसें पीडित क्षीण क्षीण-हुवा कफवाले बालक मदसें हत हुये बूढे रस अजीर्णवाले रात्रीमें जागे हुये लंघन करनेवाले ऐसे मनुष्योंकों दिनमें इच्छापूर्वक शयन करावे ।

(१६) आलिप्य जठरं प्राज्ञो हिङ्गुत्र्यूषणसैन्धवैः ।
दिवास्वप्नं प्रकुर्वीत सर्वाजीर्णप्रणाशनम् ॥७६॥
धान्यनागरसिद्धं तु तोयं दद्याद्विचक्षणः ।
आमाजीर्णप्रशमनं दीपनं बस्तिशोधनम् ॥ ७७ ॥
पथ्यापिप्पलिसंयुक्तं चूर्णं सौवर्चलं पिबेत् ।
मस्तुनोष्णोदकेनाथ बुद्ध्वा दोषगतिं भिषक् ॥७८॥
चतुर्विधमजीर्णं च मन्दानलमथारुचिम् ।
आध्मानं वातगुल्मं च शूलं चाशु नियच्छति ॥
भवेदजीर्णं प्रति यस्य शङ्का
स्निग्धस्य जन्तोर्बलिनोऽन्नकाले ।
पूर्वं सशुण्ठीमभयामशङ्कः
संप्राश्य भुञ्जीत हितं हिताशी ॥ ८० ॥
किञ्चिदामेन मन्दाग्निरभयागुडनागरम् ।
जग्ध्वा तक्रेण भुञ्जीत युक्तेनान्नं षडूषणैः ॥८१॥

(१६ अजीर्णे) हींग सोंठ मिरच पीपल सेंधानमक इन्होंसें पेटपर लेपकर दिनमें शयन करना सब प्रकारके अजीर्णोंकों शांत करताहै । धनियां और सोंठसें सिद्ध किया पानीकों वैद्य देवै यह आमाजीर्णकों शांत करताहै दीपन है और बस्तीकों शोधन करता है । हरडै पीपल कालानमक इन्होंके चूर्णकों दहीका पानीके संग अथवा गरमपानीके संग दोषकी गतिकों जानके पीवै । चारप्रकारके अजीर्णकों मंदाग्नी अरुची अफारा वातगुल्म शूल इन्होंकों शीघ्र दूर करता है स्निग्ध हुआ और बलवाले जिस मनुष्यकै भोजनके कालमें अजीर्णकी शंका होवै वह सोंठसहित हरडैकों खाकै हितभोजनकों खावै । कछुक आमकरके मंदाग्नि हो तो हरडै गुड सोंठ इन्होंकों खाके पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिरच इन्होंसें युक्त किये तक्रके संग अन्नकों खावै ।

(१७) विषूचिकायां वमितं विरिक्तं
सुलङ्घितं वा मनुजं विदित्वा ।
पेयादिभिर्दीपनपाचनैश्च
सम्यक्क्षुधार्तं समुपक्रमेत ॥ ८२ ॥

कुष्ठसैन्धवयोः कल्कं चुक्रतैलसमन्वितम् ।
विषूच्यां मर्दनं कोष्णं खल्लीशूलनिवारणम् ८३
करञ्जनिम्बशिखरीगुडूच्यर्जकवत्सकैः ।
पीतः कषायो वमनाद्धोरां हन्ति विषूचिकाम् ८४
व्योषं करञ्जस्य फलं हरिद्रां
मूलं समायाप्य च मातुलुङ्ग्याः ।
छायाविशुष्का गुडिकाः कृतास्ता
हन्युर्विषूचीं नयनाञ्जनेन ॥ ८५ ॥
गुडपुष्पसारशिखरी-
तण्डुलगिरिकर्णिकाहरिद्राभिः ।
अञ्जनगुडिका विलयति
विषूचिकां त्रिकटुसनाथा ॥ ८६ ॥
त्वक्पत्ररास्नागुरुशिग्रुकुष्ठै-
रम्लेन पिष्टैः सवचाशताह्वैः ।
उद्वर्तनं यद्धि विषूचिकाघ्नं
तैलं विपक्कं च तदर्थकारि ॥ ८७ ॥

(१७ विषूचिकायाम्) विषूचिकाविषै वमनवाले व दस्तवाले मनुष्यकों जानकै पेया आदिकरके और दीपन पाचनकरकै अच्छीतरह भूखवालेकों युक्त करै कूट और सेंधानमकके कल्कमें चूकाका तेल मिलाय कछुक गरम कर विषूची हैजामें मालिस करना । यह खल्लीशूलकों दूरकरता है । करंजुआ नींब ऊंगा गिलोय सपेद तुलसी कूडा इन्होंका काढा बनाय पीवै । यह वमनकरनेसें विषूचिकाकों नाशताहै । सोंठ मिरच पीपल करंजुआका फल हलदी विजोराकी जड इन्होंकों पीस गोली बनाय छायामें सुखावै ये गोली नेत्रोंमें अंजन करनेसें विषूचिकाकों नाशती है । महुवाका सार ऊंगा चौलाई श्वेत गोकर्णी हलदी सोंठ मिरच पीपल इन्होंकी गोली नेत्रोंमें आंजनेसें विषूचिकाकों नाशतीहै । दालचिनी तेजपात रास्ना अगर सहोंजना कूट वच शतावरी इन्होंकों नीबूके रसमें पीस उवटना मलना अथवा इन्होंमें तेलकों पकाय मालिस करना विषूचिकाकों नाशताहै ।

(१८) पिपासायामनुत्क्लेशे लवङ्गस्याम्बु शस्यते ।
जातीफलस्य वा शीतं शृतं भद्रघनस्य वा॥८८॥
विषूच्यामतिवृद्धायां पाण्योर्दाहः प्रशस्यते ।
वमनं त्वलसे पूर्वं लवणेनोष्णवारिणा ॥ ८९ ॥

स्वेदो वर्तिर्लङ्घनं च क्रमश्चातोऽग्निवर्धनः ।
सरुक् चानद्धमुदरमम्लपिष्टैः प्रलेपयेत् ।
दारुहैमवतीकुष्ठशताह्वाहिङ्गुसैन्धवैः ॥ ९० ॥
तक्रेण चूर्णं यवचूर्णमुष्णं
सक्षारमार्तिं जठरे निहन्यात् ।
स्वेदो वटैर्वा बहुवास्यपूर्णै-
रुष्णैस्तथान्यैरपि पाणितापैः ॥ ९१ ॥
तीव्रार्तिरपि नाजीर्णी पिबेच्छूलघ्नमौषधम् ।
दोषाच्छन्नोऽनलो नालं पक्तुं दोषौघनाशनम् ९२

इत्यग्निमान्द्यचिकित्सा ।

(१८ तृषायाम्) बहुत तृषा लगै और ग्लानि न होय लोंगका पानी अथवा जायफलका पानी अथवा नागरमोथाका शीतल काढा श्रेष्ठ है । अत्यंत बढी हुई विषूचीमें टकनोंके पृष्ठभागमें दाह करना श्रेष्ठ है । अलसरोगविषै प्रथम नमकसहित गरम पानीसें वमन कराना पसीना देना गुदामें वत्ती देनी लंघन यह क्रम अग्निकों वढाता है शूल और अफारासें युक्त हुये पेटकों देवदार चोक कूट शतावरी हींग सेंधानमक इन्होंकों नींबूके रसमें पीस लेप करै । जवोंके चूर्णकों गरमकर तिसमें जवाखार और तक्र मिलाय लेप करनेसे पेटका अफारा और शूल दूर होता है । अथवा बहुतसी भांफवाले घटसे पसीना देना अथवा अन्यभी हाथ आदि गरम कर पेटमें लगानेसें अफारा दूर होता है । अजीर्णवाला तीव्र पीडासें युक्त हो तबभी शूलकों नाशनेवाला औषधकों नहीं पीवै दोषोंसे आच्छादित हुआ अग्नी दोषोंके समूहकों नाशनेकों और पकानेकों समर्थ नहीं है ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकाभाषाटीकायामग्निमांद्यचिकित्सा ॥

अथ क्रिमिरोगाधिकारः ७

अब कृमिरोगका अधिकार कहते हैं ।

(१) पारसी यमानिका
पीता पर्युषितवारिणा प्रातः ।
गुडपूर्वा क्रिमिजातं
कोष्ठगतं पातयत्याशु ॥ १ ॥
पारिभद्रार्कपत्रोत्थं रसं क्षौद्रयुतं पिबेत् ।
केबुकस्य रसं वापि पत्युरस्याथ वा रसम् ।
लिह्यात्क्षौद्रेण वैडङ्गं चूर्णं क्रिमिविनाशनम् ॥२॥
मुस्ताखुपर्णीफलदारुशिग्रु-
क्वाथः सकृष्णाक्रिमिशत्रुवल्कः ।
मार्गद्वयेनापि चिरप्रवृत्तान्
क्रिमीन्निहन्ति क्रिमिजांश्च रोगान् ॥ ३ ॥
आखुपर्णीदलैः पिष्टैः पिष्टकेन च पूपिकाम् ।
जग्ध्वा सौवीरकं चानु पिबेत्क्रिमिहरं परम् ॥४॥
पलाशबीजस्वरसं पिबेद्वा क्षौद्रसंयुतम् ।
पिबेत्तद्बीजकल्कं वा तक्रेण क्रिमिनाशनम् ॥ ५ ॥
सुरसादिगणं वापि सर्वथैवोपयोजयेत् ।
विडङ्गसैन्धवक्षारकाम्पिल्लकहरीतकीः ॥ ६ ॥
पिबेत्तक्रेण संपिष्टाः सर्वक्रिमिनिवृत्तये ।

(१ कृमिघ्नोपायाः) खुरासानी अजमान और गुडकों वासी पानीकेसंग प्रभातमें पीवै तो कोठाके कीडे शीघ्र गिर पडते है । नींबके पत्तोंका रसमें शहद मिलाय पीवै अथवा सुपारियोंके रसकों पीवै अथवा पतंगके रसकों पीवै वायविडंगके चूर्णकों शहदमें मिलाय चाटै तो कृमियोंका नाश होता है । नागरमोथा मूषापर्णी त्रिफला देवदार सहोंजना इन्होंके क्वाथमें पीपल और वायविडंगका कल्क मिलाय पीवै तो दोनों मार्गोंकरकै बहुत कालसें प्रवृत्त हुये कृमियोंका और कृमिज रोगोंका नाश होता है । मूषापर्णीके पत्तोंकों पीस तिसमें चून मिलाय पूरी वनाय खावै और ऊपर कांजीकों पीवै तो कृमियोंका नाश होता है केसूके रसमें शहद मिलाय पीवै अथवा केसूके कल्ककों तक्रकेसंग पीवै तो कृमियोंका नाश होता है । अथवा सुरसादि गणके ओषधोंकों सबप्रकारसें युक्त करै। वायविडंग सेंधानमक जवाखार कपिला हरडै इन्होंकों तक्रमें पीस पीवै तो सबप्रकारके कृमि दूर होते हैं।

(२) विडङ्गपिप्पलीमूलशिग्रुभिर्मरिचेन च ॥ ७ ॥
तक्रसिद्धा यवागूः स्यात्क्रिमिघ्नी ससुवर्चिका ।
पीतं बिम्बीघृतं हन्ति पक्वामाशयगान्क्रिमीन् ॥८॥
त्रिफला त्रिवृता दन्ती वचा काम्पिल्लकं तथा ।
सिद्धमेभिर्गवां मूत्रे सर्पिः क्रिमिविनाशनम् ॥९॥
त्रिफलायास्त्रयः प्रस्था विडङ्गप्रस्थ एव च ।
द्विपलं दशमूलं च लाभतः समुपाचयेत् ॥१०॥

पादशेषे जलद्रोणे शृते सर्पिर्विपाचयेत् ।
प्रस्थोन्मितं सिन्धुयुतं तत्पलं क्रिमिनाशनम् ११
विडङ्गघृतमेतच्च लेह्यं शर्करया सह ।
सर्वान्क्रिमीन्प्रणुदति वज्रं मुक्तमिवासुरान्॥१२॥
रसेन्द्रेण समायुक्तो रसो धत्तूरपत्रजः ।
ताम्बूलपत्रजो वापि लेपो यूकविनाशनः ॥१४॥
विडङ्गगन्धकशिला
सिद्धं सुरभीजलेन कटुतैलम् ।
आजन्म नयति नाशं
लिक्षासहितास्तु यूकास्तु ॥ १५ ॥

इति क्रिमिरोगचिकित्सा ।

(२ विडंगघृतम्) वायविडंग पीपलामूल सहोंजना मिरच साजी इन्होंकी यवागू तक्रमें सिद्ध कर पीवै तो कृमिरोग दूर होताहै । कडवी तोरीके घृतकों पीवै तो पक्वाशय आमाशयमें प्राप्त हुये कृमि दूर होते हैं । त्रिफला निशोत जमालगोटाकी जड वच कपिला इन्होंमें और गोमूत्रमें सिद्ध किया घृत कृमियोंकों नाशता है । त्रिफला तीनप्रस्थ १ वायविडंग एकप्रस्थ अर्थात् ६४ तोले दशमूल ८ तोले इन्होंकों लेकै। १०२४ तोले पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब ६४ तोले घृतकों पकावै। पीछे सेंधानमक मिलाय चार तोलेभर पीवै तो कृमियोंका नाश होताहै । यह विडंगघृत खांडमें मिलाके चाटना सब प्रकारके कृमियोंकों नाशता है जैसे दैत्योंकों इन्द्रका वज्र । धत्तूराके पत्तोंके रसमें पारा मिलाय अथवा नागरपानके रसमें पारा मिलाय लेप करै तो जूम और लीषोंका नाश होताहै । वायविडंग गंधक मनशिल गोमूत्र इन्होंमें सिद्ध किया कडवा तेलकी मालिस करनेसें जीवनेपर्यंत लीष और जुमोंका नाश होताहै ।

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितचक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां कृमिरोगचिकित्सा ।

अथ पाण्डुरोगाधिकारः ८

अब पांडुरोगका अधिकार कहतेहै ।

(१) साध्यं तु पाण्डामयिनं समीक्ष्य
स्निग्धं घृतेनोर्ध्वमधश्च शुद्धम् ।
सम्पादयेत्क्षौद्रघृतप्रगाढै-
र्हरीतकीचूर्णमयैः प्रयोगैः ॥ १ ॥
पिबेद्घृतं वा रजनीविपक्वं
सत्रैफलं तैलकमेव चापि ।
विरेचनद्रव्यकृतान्पिबेद्वा
योगांश्च वैरेचनिकान्घृतेन ॥ २ ॥
विधिः स्निग्धोऽथ वातोत्थे तिक्तशीतस्तु पैत्तिके।
श्लैष्मिके कटुरूक्षोष्णः कार्यो मिश्रस्तु मिश्रके ३
द्विशर्करं त्रिवृच्चूर्णं पलार्धं पैत्तिके पिबेत् ।
कफपाण्डुस्तु गोमूत्रयुक्तां क्लिन्नां हरीतकीम्॥४॥
नागरं लोहचूर्णं वा कृष्णां पथ्यामथाश्मजम् ।
गुग्गुलुं वाऽथ मूत्रेण कफपाण्ड्वामयी पिबेत्॥५॥
सप्तरात्रं गवां मूत्रे भावितं वाप्ययोरजः ।
पाण्डुरोगप्रशान्त्यर्थं पयसा प्रपिबेन्नरः ॥ ६ ॥
फलत्रिकामृतावासातिक्ताभूनिम्बनिम्बजः ।
क्वाथः क्षौद्रयुतो हन्यात्पाण्डुरोगं सकामलम्॥७॥

(१ पांडुरोगोपायाः) साध्यरूप पांडुरोगीकों देखके घृतसें स्निग्ध कर दोनों रास्तोंसें शुद्ध कर पीछे शहद और घृतसें संयुक्त किये हरडैका चूर्णके प्रयोगसें युक्त करै । अथवा हल्दीसें पकाया हुआ घृतकों पीवै अथवा त्रिफला और लोधमें पकाया घृतकों पीवै अथवा विरेचन द्रव्योंसें किये वैरेचनिक योगोंकों घृतकेसंग पीवै । वातके पांडुरोगमें स्निग्धविधि करना पित्तके पांडुरोगमें तिक्त और शीतल विधि करना कफके पांडुरोगमें कडुआ रूखा गरम ऐसा विधि करना । मिले हुये दोषोंके पांडुरोगमें मिला हुआ विधि करना। खांड ४ तोले निशोतका चूर्ण २ तोले इन्होंकों पित्तके पांडुरोगमें पीवै। कफके गोमूत्रसें युक्त करी हरडैकों पीवै । सोंठ और लोहाके चूर्णकों पांडुरोगमें अथवा पीपल हरडैकों अथवा शिलाजित और गूगलकों गोमूत्रकेसंग कफका पांडुरोगी पीवै । गोमूत्रमें सात रात्रि भिगोया हुआ लोहाके चूर्णकों दूधकेसंग पांडुरोगी पीवै । त्रिफला गिलोय वांसा कुटकी चिरायता नींब इन्होंके क्वाथमें शहद मिलाय पीवै तो पांडुरोग और कामलाका नाश होताहै ।

(२) अयस्तिलत्र्यूषणकोलभागैः
सर्वैः समं माक्षिकधातुचूर्णम् ।

तैर्मोदकः क्षौद्रयुतोऽनुतक्रः
पाण्ड्वामये दूरगतेऽपि शस्तः ॥ ८ ॥
अयोमलं तु सन्तप्तं भूयो गोमूत्रशोधितम् ।
मधुसर्पिर्युतं चूर्णं सह भक्तेन योजयेत् ॥ ९ ॥
दीपनं चाग्निजननं शोथपाण्ड्वामयापहम् ।
त्र्यूषणत्रिफलामुस्तविडङ्गचित्रकाः समाः॥ १० ॥
नवायोरजसो भागास्तच्चूर्णं मधुसर्पिषा ।
भक्षयेत्पाण्डुहृद्रोगकुष्ठार्शःकामलापहम् ॥ ११ ॥

(२ नवायसलोहः) लोहाका चूर्ण तिल सोंठ मिरच पीपल ये आठ आठ मासे और इन सबोंकेसमान सोनामाखीका चूर्ण तिसमें शहद मिलाय मोदक बनाय खावै तक्रकों पीवै यह पांडुरोगके दूर करनेमेंभी श्रेष्ठ है । लोहाके मलकों अग्निमें तपाके वारंवार गोमूत्रमें शोधै पीछे तिसके चूर्णमें शहद और घृत मिलाय भोजनकेसाथ युक्त करै । यह दीपन है अग्निकों जगाताहै शोजा और पांडुरोगकों दूर करताहै । सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला नागरमोथा वायविडंग चीता ये समान भाग ले नवीन लोहाका चूर्ण सबोंकेसमान ले इन सबकों शहद और घृतमें मिला खावै यह पांडु हृद्रोग कुष्ठ ववासीर कामला इन्होंकों नाशताहै ।

(३) त्रिफलायास्त्रयो भागास्त्रयस्त्रिकटुकस्य च ।
भागश्चित्रकमूलस्य विडङ्गानां तथैव च ॥ १२ ॥
पञ्चाश्मजतुनो भागास्तथारूप्यमलस्य च ।
माक्षिकस्य विशुद्धस्य लौहस्य रजसस्तथा ॥ १३॥
अष्टौ भागाः सितायाश्च तत्सर्वं श्लक्ष्णचूर्णितम् ।
माक्षिकेनाप्लुतं स्थाप्यमायसे पायसे शुभे ॥१४॥
उदुम्बरसमां मात्रां ततः खादेद्यथाग्निना ।
दिने दिने प्रयोगेण जीर्णे भोज्यं यथेप्सितम् १५
वर्जयित्वा कुलत्थांश्च काकमाची कपोतकान् ।
योगराज इति ख्यातो योगोऽयममृतोपमः॥१६॥
रसायनमिदं श्रेष्ठं सर्वरोगहरं परम् ।
पाण्डुरोगं विषं कासं यक्ष्माणं विषमज्वरम् ।
कुष्ठान्यजरकं मेहं श्वासं हिक्कामरोचकम् ।
विशेषाद्धन्त्यपस्मारं कामलां गुदजानि च ॥१८॥

(३ योगराजः) त्रिफला ३ भाग सोंठ मिरच पीपल ३ भाग चीताकी जड १ भाग वायविडंग १ भाग । शिलाजीत ५ भाग रूपाका मैल ५ भाग शुद्धकरी सोनामाखी ५ भाग लोहाका चूर्ण ५ भाग मिसरी ८ भाग इन सबोंकों महीन चूर्णकर शहदमें मिलाय लोहाके पात्रमें स्थापित करै । पीछे अग्निके अनुसार गूलरका फलके समान खावै और दिन दिन प्रति सेवै । जीर्ण होनेपै मनोवांछित भोजन करै। कुलथी मकोह कपोतका मांस इन्होंकों वर्जै यह योगराज कहा अमृतके समान है । यह श्रेष्ठ रसायन सब रोगोंकों हरनेवाला है पांडुरोग विष खांसी राजरोग विषमज्वर सब प्रकारके कुष्ठ अजरक प्रमेह श्वास हिचकी अरोचक मृगीरोग कामला ववासीर इन्होंकों विशेषकरके नाशता है ।

(४) विशालाकटुकामुस्तकुष्ठदारुकलिङ्गकाः ।
कर्षांशा द्विपिचुर्मूर्वा कर्षार्धा च घनप्रिया ॥१९॥
पीत्वा तच्चूर्णमम्भोभिः सुखैर्लिह्यात्ततो मधु ।
पाण्डुरोगं ज्वरं दाहं कासं श्वासमरोचकम् २०
गुल्मानाहामवातांश्च रक्तपित्तं च तज्जयेत् ।

(४ विशालाद्यं चूर्णम्) इन्द्रायण कुटकी नागरमोथा कूट देवदार कूडा ये एकएक तोला नींब और मरोडफली दो दो तोले अतीस आधा तोला इन्होंके चूर्णकों पानीसें पीके पीछे शहदकों चाटै यह पांडुरोग ज्वर दाह खांसी श्वास अरोचक पेटका गोला अफारा आमवात रक्तपित्त इन्होंकों जीतता है ।

(५)लौहपात्रे शृतं क्षीरं सप्ताहं पथ्यभोजनम् २१
पिबेत्पाण्ड्वामयी शोषी ग्रहणीदोषपीडितः ।
कल्याणकं पञ्चगव्यं महातिक्तमथापि वा ॥२२॥
स्नेहनार्थं घृतं दद्यात्कामलापाण्डुरोगिणे ।
रेचनं कामलार्तस्य स्निग्धस्यादौ प्रयोजयेत् २३
ततः प्रशमनी कार्या क्रिया वैद्येन जानता ।

(५ पांड्वादौ लौहक्षीरम्) लोहाके पात्रमें पकाया दूधकों पीवै । दिन पथ्य भोजन करै तो पांडुरोग शोषरोग ग्रहणीदोष इन्होंमें सुख होता है । कामला और पांडुरोगवालेकों कल्याणघृत अथवा पंचगव्यघृत अथवा महातिक्त घृत स्नेहन करनेवास्ते देना । कामलारोगीकों प्रथम स्निग्ध करकै पीछे रेचन देना पीछे कुशल वैद्यनें संशमनी क्रिया करनी ।

(६) त्रिफलाया गुडूच्या वा दार्व्या
निम्बस्य वा रसः ॥ २४ ॥
प्रातर्माक्षिकसंयुक्तः शीलितः कामलापहः ।
अञ्जनं काममार्तस्य द्रोणपुष्पीरसः स्मृतः ॥२५॥
निशागैरिकधात्रीणां चूर्णं वा संप्रकल्पयेत् ।
नस्यं कर्कोटमूलं वा घ्रेयं वा जालिनीफलम् २६
सशर्कराकामलिनां त्रिभण्डी
हिता गवाक्षी सगुडा च शुण्ठी ॥ २७ ॥
दार्वीसत्रिफलाव्योषविडङ्गान्ययसो रजः ।
मधुसर्पिर्युतं लिह्यात्कामलापाण्डुरोगवान् ॥२८॥
तुल्या अयोरजःपथ्याहरिद्राः क्षौद्रसर्पिषा ।
चूर्णिताः कामली लिह्याद्गुडक्षौद्रेण वा भयाम् २९
धात्रीलौहरजोव्योषनिशाक्षौद्राज्यशर्कराः ।
लीढ्वा निवारयत्याशु कामलामुद्धतामपि ॥३०॥
दग्ध्वाक्षकाष्ठैर्मलमायसं तु
गोमूत्रनिर्वापितमष्टवारान् ।
विचूर्ण्य लीढं मधुना चिरेण
कुम्भाह्वयं पाण्डुगदं निहन्ति ॥ ३१ ॥
पाण्डुरोगक्रियां सर्वां योजयेच्च हलीमके ।
कामलायां च या दृष्टा सापि कार्या भिषग्वरैः ३२

(६ कामलायां त्रिफलादि) त्रिफलाका रस अथवा गिलोयका रस अथवा दारुहलदीका रस अथवा नींबका रसमें शहद मिलाय प्रभातविषै पीवै तो कामलाका नाश होता है। कामलावालेकों द्रोणपुष्पीके रसका अंजन कराना अथवा हलदी गेरू आंवला इन्होंके चूर्णकों देवै। ककोडाकी जडका नस्य लेना अथवा कडुवी तोरीकों सूंघना व खांडसहित निशोत और इंद्रायण अथवा गुडसहित सोंठ हित है । दारुहलदी त्रिफला सोंठ मिरच पीपल वायविडंग लोहाका चूर्ण इन्होंकों शहद और घृतसें संयुक्तकर कामला और पांडुरोगवाला पीवै । लोहाका चूर्ण हरडै हलदी ये बराबर भाग ले शहद और घृतमें मिलाय अथवा हरडैकों गुड और शहदमें मिलाय कामलारोगवाला चाटै। आंवला लोहाका चूर्ण सोंठ मिरच पीपल हलदी शहद घृत खांड इन्होंकों चाटै तो भयंकर कामलाभी दूर होवै। लोहाके मैलकों लकडियोंकरके अग्निसें जलाकै गोमूत्रमें आठवार बुझावै पीछे चूर्ण कर शहदमें मिलाय चाटै तो कुंभकामला और पांडुरोगका नाश होताहै । पांडुरोगमें कही क्रियाकों हलीमकरोगविषै प्रयुक्त करै और कामलारोगमें जो क्रिया कही है वहभी हलीमकमें वैद्योंनें युक्त करनी ।

(७) विडङ्गमुस्तत्रिफलादेवदारुषडूषणैः ।
तुल्यमात्रमयश्चूर्णं गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत् ॥ ३३ ॥
तैरक्षमात्रां गुडिकां कृत्वा खादेद्दिने दिने ।
कामलापाण्डुरोगार्तः सुखमाप्नुयते चिरात् ॥३४॥

(७ विडंगाद्यं लोहम्) वायविडंग नागरमोथा त्रिफला देवदार पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिरच इन सबोंके बराबर लोहाका चूर्ण ले आठगुणा गोमूत्रमें पकावै। पीछे एकएक तोलाकी गोली बनाकै दिनदिनप्रति खावै तो कामला और पांडुरोगी शीघ्र सुखकों प्राप्त होताहै ।

(८) त्र्यूषणं त्रिफला मुस्तं विडङ्गं चव्यचित्रकौ ।
दार्वी त्वङ्माक्षिको धातुर्ग्रन्थिकं देवदारु च ३५
एषां द्विपलिकान्भागांश्चूर्णं कृत्वा पृथक् पृथक् ।
मण्डूरं द्विगुणं चूर्णाच्छुद्धमञ्जनसन्निभम् ॥ ३६ ॥
मूत्रे चाष्टगुणे पक्त्वा तस्मिंस्तु प्रक्षिपेत्ततः ।
उदुम्बरसमान्कुर्याद्वटकांस्तान्यथाग्नितः ॥ ३७ ॥
उपयुञ्जीत तक्रेण सात्म्यं जीर्णे च भोजनम् ।
मण्डूरवटका ह्येते प्राणदाः पाण्डुरोगिणाम् ॥३८॥
कुष्ठान्यजरकं शोथमूरुस्तम्भकफामयान् ।
अर्शांसि कामलामेहान्प्लीहानं शमयन्ति च ॥३९॥
निर्वाप्य बहुशो मूत्रे मण्डूरं ग्राह्यमिष्यते ।
ग्राहयन्त्यष्टगुणितं मूत्रं मण्डूरचूर्णतः ॥ ४० ॥

(८ मंडूरवटकः) सोंठ मिरच पीपला त्रिफला नागरमोथा वायविडंग चव्य चीता दारुहलदी दालचिनी सोनामाखी पीपलामूल देवदार ये सब आठ आठ तोले लेकै चूर्ण करै और चूर्णसें दुगुणा शुद्ध किया सुरमाकेसमान मंडूर देवै। आठगुणा गोमूत्रमें पकाकै तिस मंडूरकों पूर्वोक्तमें मिलावै पीछे गूलरका फलकेसमान वडे बनाय अग्निका बलके अनुसार खावै। पीछे जीर्ण होनेपर तक्रकेसाथ प्रकृतिके योग्य भोजनकों खावै ये मंडूरवटक पांडुरोगियोंकों प्राण देते हैं। कुष्ठ अजरक शोजा ऊरुस्तंभ कफके रोग सब प्रकारके ववासीर कामला प्रमेह तिल्लीरोग इन्होंकों शांत करते हैं। गोमूत्रमें बहुतवार

बुझाया हुआ मंडूर ग्रहण करना और मंडूरके चूर्णसें आठगुणा गोमूत्र ग्रहण करना ।

(९) पुनर्नवात्रिवृच्छुण्ठीपिप्पलीमरिचानि च ।
विडङ्गं देवकाष्ठं च चित्रकं पुष्कराह्वयम् ॥ ४१ ॥
त्रिफलां द्वे हरिद्रे च दन्तीं च चविकं तथा ।
कुटजस्य फलं तिक्ता पिप्पलीमूलमुस्तकम् ॥४२॥
एतानि समभागानि मण्डूरं द्विगुणं ततः ।
गोमूत्रेऽष्टगुणे पक्त्वा स्थापयेत्स्निग्धभाजने ४३
पाण्डुशोथोदरानाहशूलार्शःक्रिमिगुल्मनुत् ।

(९ पुनर्नवामंडूरम्) सांठी निशोत सोंठ पीपल मिरच वायविडंग देवदार चीता पौहकरमूल त्रिफला हलदी दारुहलदी जमालगोटाकी जड चव्य इंद्रजव कुटकी पीपलामूल नागरमोथा ये सब समानभाग ले और इन्होंसें दुगुना मंडूर ले आठगुना गोमूत्रमें पकाय चिकना पात्रमें घाल धरै यह पांडु शोजा पेटके रोग अफारा शूल बवासीर कृमिरोग गुल्म इन्होंकों नाशता है ।

(१०) पञ्चकोलं समरिचं देवदारु फलत्रिकम्४४
विडङ्गमुस्तयुक्ताश्च भागास्त्रिपलसम्मिताः ।
यावन्त्येतानि चूर्णानि मण्डूरं द्विगुणं ततः॥४५॥
पक्त्वा चाष्टगुणे मूत्रे घनीभूते तदुद्धरेत् ।
ततोऽक्षमात्रान्गुडकान्पिबेत्तक्रेण तक्रभुक् ॥४६॥
पाण्डुरोगं जयत्येष मन्दाग्नित्वमरोचकम् ।
अर्शांसि ग्रहणीदोषमूरुस्तम्भमथापि वा ॥ ४७ ॥
क्रिमिप्लीहानमुदरं गररोगं च नाशयेत् ।
मण्डूरवज्रनामायं रोगानीकविनाशनः ॥ ४८ ॥

(१० मंडूरवज्रवटकः) पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ मिरच देवदार त्रिफला वायविडंग नागरमोथा ये सब बारह बारह तोले इन्होंका चूर्णसें दुगुना मंडूर ले आठगुणा गोमूत्रमें पकावै जब घनरूप होजावै तब तिसकों अग्निसें उतारकै । एक एक तोला भरके वडे बनाय तक्रकेसंग पीवै और तक्रका भोजन करै यह पांडुरोग मंदाग्नि अरोचक बवासीर ग्रहणीदोष ऊरुस्तंभ कृमिरोग तिल्लीरोग उदररोग कृत्रिम विषरोग इन्होंकों नाशता है । यह मंडूरवज्र रोगोंके समूहकों नाशता है ।

(११) धात्रीफलसहस्रे द्वे पीडयित्वा रसं भिषक् ।
क्षौद्राष्टभागं पिप्पल्याश्चूर्णार्धकुडवान्वितम् ४९
शर्करार्धतुलोन्मिश्रं पक्वं स्निग्धवटे स्थितम् ।
प्रपिबेत्पाण्डुरोगार्तो जीर्णे हितमिताशनः ॥५०॥
कामलापाण्डुहृद्रोगवातासृग्विषमज्वरान् ।
कासहिक्कारुचिश्वासानेषोऽरिष्टः प्रणाशयेत् ५१

(११ धात्र्यरिष्टम्) आंवले २००० लेकै पीडितकर रस निकास तिसमें शहद आठमां भाग और पीपलका चूर्ण आठ तोले खांड २०० तोले इन सबकों मिलाय और पकाकै चिकना घडामें स्थापित कर पांडुरोगी पीवै और औषधकों जीर्णहोनेपर हित और प्रमाणित भोजन करै । यह अरिष्ट कामला पांडु हृद्रोग वातरक्त विषमज्वर खांसी हिचकी अरुचि श्वास इन्होंकों नाशता है ।

(१२) पुराणसर्पिषः प्रस्थो द्राक्षार्धप्रस्थसाधितः ।
कामलागुल्मपाण्ड्वर्तिज्वरमेहोदरापहः ॥ ५२ ॥

(१२ द्राक्षाघृतम्) बत्तीस तोलेभर दाखके कल्कमें चौंसठ तोलेभर घृसकों साधित करै यह कामला गुल्म पांडु ज्वर प्रमेह उदररोग इन्होंकों नाशता है ।

(१३) हरिद्रात्रिफलानिम्बबलामधुकसाधितम् ।
सक्षीरं माहिषं सर्पिः कामलाहरमुत्तमम् ॥५३॥

(१३ हरिद्रादिघृतम्) हलदी त्रिफला नींब खरैंहटी महुवा दूध इन्होंमें साधित किया भैंसका दूध कामलाकों हरनेमें उत्तम है ।

(१४) मूर्वातिक्तानिशायासकृष्णाचन्दनपर्पटैः ।
त्रायन्तीवत्सभूनिम्बपटोलाम्बुददारुभिः ॥ ५४ ॥
अक्षमात्रैर्घृतप्रस्थं सिद्धं क्षीरं चतुर्गुणम् ।
पाण्डुताज्वरविस्फोटशोथार्शोरक्तपित्तनुत्॥५५॥

(१४ मूर्वाद्यं घृतम्) मरोरफली कुटकी हलदी धमासा पीपल चंदन पित्तपापडा त्रायमाण कूडा चिरायता परवल नागरमोथा देवदार ये सब एक एक तोला ले और घृत चौंसठ तोले और दूध २५६ तोले इन्होंकों मिलाकै घृतकों सिद्ध करै । यह पांडु ज्वर विस्फोट शोजा बवासीर रक्तपित्त इन्होंकों नाशता है ।

(१५) व्योषं बिल्वं द्विरजनी त्रिफला द्विपुनर्नवा ।
मुस्तान्ययोरजः पाठा विडङ्गं देवदारु च ॥५६॥

वृश्चिकाली च भार्गी च सक्षीरैस्तैर्घृतं शृतम् ।
सर्वान्प्रशमयत्येतद्विकारान्मृत्तिकाकृतान् ॥ ५७ ॥

इति पाण्डुरोगचिकित्सा ।

(१९ व्योषाद्यं घृतम्) सोंठ मिरच पीपल वेलगिरी हलदी दारुहलदी त्रिफला दोनोंसांठी नागरमोथा लोहाका चूरण पाठा वायविडंग देवदार मेढासींगी भारंगी दूध इन्होंमें घृतकों पकावै । यह माटीसें उत्पन्न हुये सब विकारोंकों नाशता है ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां पांडुरोगचिकित्सा ।

अथ रक्तपित्ताधिकारः ९

अब रक्तपित्तका अधिकार कहते है ।

(१) नोद्रिक्तमादौ संग्राह्यं बलिनोऽप्यश्नतश्च यत् ।
हृत्पाण्डुग्रहणीदोषप्लीहगुल्मज्वरादिकृत् ॥ १ ॥
ऊर्ध्वं प्रवृत्तदोषस्य पूर्वं लोहितपित्तिनः ।
अक्षीणबलमांसाग्नेः कर्तव्यमपतर्पणम् ॥ २ ॥
ऊर्ध्वगे तर्पणं पूर्वं कर्तव्यं च विरेचनम् ।
प्रागधोगमने पेया वमनं च यथाबलम् ॥ ३ ॥
तर्पणं सघृतक्षौद्रलाजचूर्णैः प्रदापयेत् ।
ऊर्ध्वगं रक्तपित्तं तत्पीतं काले व्यपोहति ॥ ४ ॥
जलं खर्जूरमृद्वीकामधूकैः सपरूषकैः ।
शृतशीतं प्रयोक्तव्यं तर्पणार्थं सशर्करम् ॥ ५ ॥

(१ तर्पणादि) बलवाला और भोजन करनेवालाके झिरता हुआ रक्त आदिमें बंध करना नहीं । बंध किया जावै तो हृद्रोग पांडुरोग ग्रहणीदोष तिल्लीरोग गुल्म ज्वर इन आदिकों करना उपरकों प्रवृत्त हुआ दोषवाला और नहीं हुआ है क्षीण बल मांस अग्निवाला ऐसे रक्तपित्तवालाकों प्रथम लंघन करना । ऊर्ध्वगत रक्तपित्तमें प्रथम तर्पण और विरेचन करना । अधोगत रक्तपित्तमें प्रथम पेया और वमन बलके अनुसार करना । घृत शहद धानकी खीलोंका चूर्ण इन्होंसें तर्पण देना वह ऊर्ध्वगत रक्तपित्तकों समयपर पीनेसें दूर करता है । छुहारा मुनक्का मुलहटी फालसा इन्होंका काढा बनाय तिसमें खांड मिलाय तर्पणके अर्थ प्रयुक्त करै ।

(२) त्रिवृता त्रिफला श्यामा पिप्पली शर्करा मधु ।
मोदकः सन्निपातोर्ध्वं रक्तपित्तज्वरापहः ॥ ६ ॥
शालिपर्ण्यादिना सिद्धा पेया पूर्वमधोगमे ।
वमनं मदनोन्मिश्रो मन्थः सक्षौद्रशर्करः ॥ ७ ॥
शालिषष्टिकनीवारकोरदूषप्रशातिकाः ।
श्यामाकश्च प्रियङ्गुश्च भोजनं रक्तपित्तिनाम् ॥ ८ ॥
मसूरमुद्गचणकाः समुद्गाश्चाढकीफलाः ।
प्रशस्ताः सूपयूषार्थे कल्पिता रक्तपित्तिनाम् ९
शाकं पटोलवेत्राग्रतण्डुलीयादिकं हितम् ।
मांसं लावकपोतादिशशैणहरिणादिजम् ॥ १० ॥
विना शुण्ठीं षडङ्गेन सिद्धं तोयं च दापयेत् ।
क्षीणमांसबलं बालं वृद्धं शोषानुबन्धिनम् ॥ ११ ॥
अवम्यमविरेच्यं च स्तम्भनैः समुपाचरेत् ।
वृषपत्राणि निष्पीड्य रसं समधुशर्करम् ॥ १२ ॥
पिबेत्तेन शमं याति रक्तपित्तं सुदारुणम् ।
आटरूपकनिर्यूहे प्रियङ्गुमृत्तिकाञ्जने ॥
विनीय लोध्रं सक्षौद्रं रक्तपित्तहरं पिबेत् ॥ १३ ॥

वासाकषायोत्पलमृत्प्रियङ्गु-
लोध्राञ्जनाम्भोरुहकेशराणि ।
पीत्वा सिताक्षौद्रयुतानि हन्युः
पित्तासृजो वेगमुदीर्णमाशु ॥ १४ ॥
तालीसचूर्णयुक्तः
पेयः क्षौद्रेण वासकस्वरसः ।
कफवातपित्ततमक-
श्वासस्वरभेदरक्तपित्तहरः ॥ १५ ॥

आटरूपकमृद्वीकापथ्याक्वाथः सशर्करः ।
क्षौद्राढ्यः कसनश्वासरक्तपित्तनिवर्हणः ॥ १६ ॥
वासायां विद्यमानायामाशायां जीवितस्य च ।
रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदति ॥ १७ ॥

समाक्षिकः फल्गुफलोद्भवो वा
पीतो रसः शोणितमाशु हन्ति ।

मदयन्त्यङ्घ्रिजः क्वाथस्तद्वत्समधुशर्करः ॥ १८ ॥

अतसीकुसुमसमङ्गा
पाठारोहत्वगम्भसा पीता ।
प्रशमयति रक्तपित्तं
यदि भुङ्क्ते मुद्गयूषेण ॥ १९ ॥

(२ रक्तपित्तिनां मोदकादि) निशोत त्रिफला काली निशोत पीपल खांड शहद इन्होंका मोदक सन्निपात ऊर्ध्व रक्तपित्त ज्वर इनकों नाशता है। अधोगत रक्तपित्तमें प्रथम शलिपर्णी आदिसें सिद्ध करी पेया और मैनफल शहद खांड इन्होंका मंथ पीकै वमन करना। शालिचावल सांठीचावल नीवार धान्य कोदू प्रशातिक शामक कांगनी इन्होंका भोजन रक्तपित्तवालोंकों हित है। रक्तपित्तवालोंकों मसूर मूंग चना मठर अरहर इन्होंकी दाल यूष बनानेवास्ते हित है। परवल वेतका अग्रभाग चौलाई आदि शाक हित है और लावा कपोत आदि शश लालहिरण हिरण इन आदिका मांस हित है। सोंठके विना षडंगक्काथ करकै सिद्ध किया पानी क्षीणहुआ मांस और वलवाला बालक बूढा इन्होंकों और शोषवालाकों देवै। वमन और विरेचनके नहीं योग्यकों स्तंभन औषधोंसें युक्त करै। वांसाके पत्तोंकों कूटकै निचोड रस निकास तिसमें शहद और खांड मिलाय पीवै तो भयंकर रक्तपित्तभी शांत होता है। वांसाका काढामें कुह्मारीके घरकी माटी और रसोत अथवा लोधमें शहद मिलाय पीवै तो रक्तपित्तका नाश होता है। वांसाका काढामें कमल माटी कांगनी रसोत कमलकेसर मिश्री शहद इन्होंकों पीवै तो रक्तपित्तका वेग शीघ्र दूर होता है। वांसाके स्वरसमें तालीसपत्रका चूर्ण मिलाय पीवै तो कफपित्त तमकश्वास स्वरभेद रक्तपित्त इन्होंका नाश होता है। वांसा मुनक्कादाख हरडै इन्होंके क्काथमें खांड और शहद मिलाय पीवै तो खांसी श्वास रक्तपित्त इनकों दूर करता है। वांसाके होते हुये जीवनेकी आशाविषै रक्तपित्तवाला क्षयवाला खांसीवाला मनुष्य किसवास्तै दुःखित रहै। अथवा काला गूलरके रसमें शहद मिलाय पीवै तो रक्तका शीघ्र नाश होताहै। बेल मोगरीकी जडके क्काथमें शहद और खांड मिलाय पीवै तो रक्तपित्ती क्षयी कासी इन्होंकों सुख होवै। अलसीके फूल मजीठ वडके कोंपल और छाल इन्होंकों पानीके संग पीवै और मूंगोंके यूष करकै भोजन करै तो रक्तपित्त शांत होताहै।

(३) कषाययोगैर्विविधैर्दीप्ताग्नौ निर्जिते कफे।
रक्तपित्तं न चेच्छाम्येत्तत्र वातोल्वणे पयः॥ २०
छागं पयोऽथवा गव्यं शृतं पञ्चगुणे जले।
अभ्यसेत्ससिताक्षौद्रं पञ्चमूलीशृतं पयः॥ २१॥
द्राक्षया पर्णिनीभिर्वा कलया मधुकेन वा।
श्वदंष्ट्रया शतावर्या रक्तजित्साधितं पयः॥ २२॥
पक्वोदुम्बरकाश्मर्यपथ्याखर्जूरगोस्तनाः।
मधुना घ्नन्ति संलीढा रक्तपित्तं पृथक् पृथक्॥ २३॥
मुस्ताशाखोटत्वग्रसबिन्दुद्वितययुग्द्विगुणिताज्यः।
भूनिम्बकल्क ऊर्ध्वगपित्तास्रश्वासकासहानिकरः॥ २४॥
खदिरस्य प्रियङ्गूनां कोविदारस्य शाल्मलेः॥ २५॥
पुष्पचूर्णं तु मधुना लीढ्वा चारोग्यमश्नुते।
अभया मधुसंयुक्ता पाचनी दीपनी मता॥ २६॥
श्लेष्माणं रक्तपित्तं च हन्ति शूलातिसारनुत्।
वासकस्वरसे पथ्या सप्तधा परिभाविता॥ २७॥
कृष्णा वा मधुना लीढा रक्तपित्तं द्रुतं जयेत्।
भावनायां द्रवो देयः सम्यगार्द्रत्वकारकः॥ २८॥

(३ रक्तपित्तशमने दुग्धादि) अनेक प्रकारके कषाय योगोंकरकै दीप्त अग्निविषै निर्जित हुये कफमें जो कदाचित् रक्तपित्त शांत नहीं हो तो तहां वातकी अधिकतावाले रक्तपित्तमें दूध देना। बकरीका दूध अथवा गौका दूधकों पांचगुने पानीमें पकाकै पीछे मिश्री और शहद मिलाय अभ्याससें पीवै अथवा पंचमूलमें सिद्ध किया दूधकों पीवै। दाखकरकै अथवा शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी मूंगपर्णी उडदपर्णी इन्होंकरकै अथवा मनशिल और मुलहटीकरकै अथवा गोखरू और शतावरीकरकै साधित किया दूध रक्तकों जीतता है। पकाहुआ गूलरका फल कंभारी हरडै खिजोरिया मुनक्कादाख इन्होंमांहसें अलग अलग एकएककों शहदमें मिलाय चाटै तो रक्तपित्तका नाश होता है। नागरमोथा और शाखोटकवृक्षकी छालके रसकी दो दो बूंद लेकै तिसमें दुगुणा घृत और चिरायताका कल्क मिलाय खावै तो ऊर्ध्वग रक्तपित्त खांसी श्वास इन्होंका नाश होता है। खैर मालकांगनी अमलतास शंभल इन्होंके फूलोंका चूर्ण बनाय शहदमें मिलाय चाटै तो मनुष्य आरोग्यकों प्राप्त होता है। शहदसें संयुक्त करी हरडै पाचन है दीपन है और कफ रक्तपित्त शूल और अतिसार इनोंकों नाशती है। वांसाके स्वरसमें सातवार भावित करी हरडै अथवा शहदसें संयुक्त करी पीपली रक्तपित्तकों शीघ्र नाशती है। भावना देनेमें अच्छीतरह गीलापन करनेवाला रस देना।

(४) एलापत्रत्वचोऽर्धाक्षाः पिप्पलार्धपलं तथा।
सितामधुकखर्जूरमृद्वीकाश्च पलोन्मिताः॥ २९॥

संचूर्ण्य मधुना युक्ता गुडिकाः कारयेद्भिषक् ।
अक्षमात्रां ततश्चैकां भक्षयेन्ना दिने दिने ॥ ३० ॥
कासं श्वासं ज्वरं हिक्कां छर्दि मूर्च्छां मदं भ्रमम् ।
रक्तनिष्ठीवनं तृष्णां पार्श्वशूलमरोचकम् ॥ ३१ ॥
शोथप्लीहाढ्यवातांश्च स्वरभेदं क्षतक्षयम् ।
गुटिका तर्पणी वृष्या रक्तपित्तं च नाशयेत् ॥ ३२ ॥

(४ एलादिगुटिका) इलायची तेजपात दालचिनी ये छह छह मासे पीपल २ तोले और मिश्री मुलहटी खिजूरिया मुनक्का ये चार चार तोले इन सबोंका चूर्ण कर शहद मिलाय वैद्य गोलियां बनावै । एक एक तोलाकी गोलीकों दिनदिनप्रति मनुष्य खावै । खांसी श्वास ज्वर हिचकी छर्दि मूर्च्छा मद भ्रम रक्तका थूकना तृषा पसलीशूल अरोचक शोजा तिल्लीरोग वातरक्त स्वरभेद क्षतक्षय रक्तपित्त इन्होंकों नाशती है और तृप्त करती है और वीर्यकों बढाती है ।

(५)लोहगन्धिनि निःश्वासे उद्गारे रक्तगन्धिनि ।
पृथ्वीकां शाणमात्रां तु खादेद्द्विगुणशर्कराम् ३३
नासाप्रवृत्तरुधिरं
घृतभ्रष्टं श्लक्ष्णपिष्टमामलकम् ।
सेतुरिव तोयवेगं
रुणद्धि मूर्ध्नि प्रलेपेन ॥ ३४ ॥
घ्राणप्रवृत्ते जलमेव देयं
सशर्करं नासिकया पयो वा ।
द्राक्षारसं क्षीरघृतं पिबेद्वा
सशर्करं चेक्षुरसं हितं वा ॥ ३५ ॥
नस्यं दाडिमपुष्पोत्थो रसो दूर्वाभवोऽथवा ।
आम्रास्थिजः पलाण्डोर्वा नासिकास्रुतरक्तजित्
मेढ्रेऽतिप्रवृत्ते तु बस्तिरुत्तरसंज्ञितः ।
शृतं क्षीरं पिबेद्वापि पञ्चमूल्या तृणाह्वया ॥३७॥

(५ पृथ्वीकाप्रयोगः) लोहाकी गंधके समान गंधवाले श्वासमें और रक्तकी गंधके समान गंधवाले ढकार आनेमें चार मासेभर कलोंजीकों दुगुनी खांडसें युक्त कर खावै आंवलाकों मिहीन पीसकै घृतमें भून मस्तकपर लीप करना नासिकासें प्रवृत हुआ रक्तकों रोकता है जैसें पुल पानीकों नासिकासें प्रवृत्त हुये रक्तमें खांडसहित पानी अथवा दूध अथवा दाखका रस अथवा दूधसें निकासा घृत इन्होंकों नासिकाके द्वारा पीवै अथवा खांडसहित ईखका रस हित है। अनारके फूलोंके रसका अथवा दूबका रसका अथवा आंवकी गुठलीके रसका अथवा प्याजके रसका नस्य लेना नासिकासें झिरता हुआ रक्तकों जीतता है । लिंगमें रक्त अत्यंत प्रवृत्त होवै तो उत्तरसंज्ञक बस्ति देना अथवा पंचमूल और रोहिषतृणकरकै पकाया दूधकों पीना ।

(६)दूर्वा सोत्पलकिञ्जल्का मञ्जिष्ठा सैलवालुका ।
सिता शीतमुशीरं च मुस्तं चन्दनपद्मकौ ॥३८॥
विपचेत्कार्षिकैरेतैः सर्पिराजं सुखाग्निना ।
तण्डुलाम्बु त्वजाक्षीरं दत्वा चैव चतुर्गुणम् ॥३९॥
तत्पानं वमतो रक्तं नावनं नासिकागते ।
कर्णाभ्यां यस्य गच्छेत्तु तस्य कर्णौ प्रपूरयेत् ॥४०॥
चक्षुःस्राविणि रक्ते तु पूरयेत्तेन चक्षुषोः ।
मेढ्रपायुप्रवृत्ते तु बस्तिकर्मसु योजयेत् ।
रोमकूपप्रवृत्ते तु तदभ्यङ्गे प्रयोजयेत् ॥ ४१ ॥

(६ दूर्वाद्यं घृतम्) दूब कमलकेसर मजीठ एलवालुक वंशलोचन कपूर खस नागरमोथा चंदन पद्माक ये सब एक एक तोलाभर लेकै घृतकों सुंदर अग्निसें पकावै । चावलोंका पानी और बकरीका दूध चौगुना देकै पकावै । मुखसें रक्त गिरता हो तो इस घृतका पान करै और नासिकासें रक्त गिरता हो तो नस्य देवै और जिसके कानोंसें रक्त गिरता हो तिसके कानोंकों पूरित करै नेत्रोंसें रक्त झिरता हो तो नेत्रोंकों पूरित करै लिंग व गुदासें रक्त गिरता हो तो इस घृतकों बस्तिकर्ममें युक्त करै रोमकूपोंसें रक्त गिरता हो तो तहां इस घृतका मालिस करै ।

(७)शतावरीदाडिमतिन्तिडीकं
काकोलिमेदे मधुकं विदारीम् ।
पिष्ट्वा च मूलं फलपूरकस्य
घृतं पचेत्क्षीरचतुर्गुणं ज्ञः ॥ ४२ ॥
कासज्वरानाहविबन्धशूलं
तद्रक्तपित्तं च घृतं निहन्यात् ॥ ४३ ॥

(७ शतावरीघृतम्) शतावरी अनार अमली काकोली मेदा मुलहटी विदारीकंद बिजोराकी जड इनोंकों पीसकै चौगुने दूधमें घृतकों पकावै । यह घृत खांसी ज्वर अफारा बंधा शूल रक्तपित्त इनकों नाशता है ।

(८) शतावर्यास्तु मूलानां रसप्रस्थद्वयं मतम् ।
तत्समं च भवेत्क्षीरं घृतप्रस्थे विपाचयेत् ॥४४॥
जीवकर्षभकौ मेदा महामेदा तथैव च ।
काकोली क्षीरकाकोली मृद्वीका मधुकं तथा ४५
मुद्गपर्णी माषपर्णी विदारी रक्तचन्दनम् ।
शर्करामधुसंयुक्तं सिद्धं विस्रावयेद्भिषक् ॥ ४६ ॥
रक्तपित्तविकारेषु वातरक्तगदेषु च ।
क्षीणशुक्रेषु दातव्यं वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ४७ ॥
अंसदाहं शिरोदाहं ज्वरं पित्तसमुद्भवम् ।
योनिशूलं च दाहं च मूत्रकृच्छ्रं च पैत्तिकम् ४८
एतान्रोगान्निहन्त्याशु छिन्नाभ्राणीव मारुतः ।
शतावरीसर्पिरिदं बलवर्णाग्निवर्धनम् ॥ ४९ ॥
स्नेहपादः स्मृतः कल्कः कल्कवन्मधुशर्करे ।
इति वाक्यबलात्स्नेहे प्रक्षिप्य पादिकं भवेत्॥५०॥

(८ द्वितीयं शतावरीघृतम्) शतावरीकी जडका १२८ तोलेभर रस और १२८ तोले दूधमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै जीवक ऋषभक मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली मुनक्का मुलहटी मूंगपर्णी माषपर्णी विदारीकंद लालचंदन खांड शहद इन्होंसें संयुक्त किये घृतकों सिद्ध कर पीछे झिरावै । रक्तपित्तविकार वातरक्तरोग वीर्यका क्षीण होना इन्होंविषै यह घृत देना यह उत्तम वाजीकरण है। कंधाका दाह शिरका दाह पित्तज्वर योनिशूल दाह पित्तका मूत्रकृच्छ्र इन रोगोंकों यह शीघ्र नाशता है जैसे वादलोंकों वायु । यह शतावरीघृत बल वर्ण अग्नि इनकों बढाता है घृतसें चौथाई भाग कल्क कहा है और कल्कके समान शहद और खांड कही है इस वाक्यके बलसें स्नेहमें चौथाई भाग मिलाना उचित है ।

(९) वासां सशाखां सपलाशमूलां
कृत्वा कषायं कुसुमानि चास्याः ।
प्रदाय कल्कं विपचेद्घृतं तत्
सक्षौद्रमाश्वेव निहन्ति रक्तम् ॥ ५१ ॥

(९ वासाघृतम्) डाली और जडसहित वांसाका काढा बनाकै तिसमें वांसाके कल्कोंका कल्क मिलाय तहां घृतकों पकावै पीछे शहद मिलाय खानेसें वह घृत शीघ्रही रक्तकों नाशता है ।

(१०) शणस्य कोविदारस्य वृषस्य ककुभस्य च ।
कल्काढ्यत्वात्पुष्पकल्कं प्रस्थे पलचतुष्टयम्॥५२॥
अश्वगन्धा पलशतं तदर्धं गोक्षुरस्य च ।
शतावरी विदारी च शालिपर्णी बला तथा ॥५३॥
अश्वत्थस्य च शुङ्गानि पद्मबीजं पुनर्नवा ।
काश्मरीपलमेतत्तु माषबीजं तथैव च ॥ ५४ ॥
पृथग्दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ।
चतुर्भागावशेषे तु कषायमवतारयेत् ॥ ५५ ॥
मृद्वीका पद्मकं कुष्ठं पिप्पली रक्तचन्दनम् ।
वालकं नागपुष्पं च आत्मगुप्तापलं तथा ॥ ५६ ॥
नीलोत्पलं शारिवे द्वे जीवनीयं विशेषतः ।
पृथक्कर्षसमं चैव शर्करायाः पलद्वयम् ॥ ५७ ॥
रसस्य पौण्ड्रकेक्षूणामाढकं तत्र दापयेत् ।
चतुर्गुणेन पयसा घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ५८ ॥
रक्तपित्तं क्षतक्षीणं कामलां वातशोणितम् ।
हलीमकं तथा शोथं वर्णभेदं स्वरक्षयम् ॥ ५९ ॥
अरोचकं मूत्रकृच्छ्रं पार्श्वशूलं च नाशयेत् ।
एतद्राज्ञां प्रयोक्तव्यं बह्वन्तःपुरचारिणाम् ॥६० ॥
स्त्रीणां चैवानपत्यानां दुर्बलानां च देहिनाम् ।
क्लीबानामल्पशुक्राणां जीर्णानामल्परेतसाम्॥६१॥
श्रेष्ठं बलकरं हृद्यं वृष्यं पेयं रसायनम् ।
ओजस्तेजःकरं चैव आयुःप्राणविवर्धनम्॥ ६२ ॥
संवर्धयति शुक्रं च पुरुषं दुर्बलेन्द्रियम् ।
सर्वरोगविनिर्मुक्तस्तोयसिक्तो यथा द्रुमः ॥६३॥
कामदेव इति ख्यातः सर्वरोगेषु शस्यते ।

(१० कामदेवघृतम्) शण अमलतास वांसा अर्जुनवृक्ष इन्होंके फूलोंके कल्क १६ तोलेभर लेकै ६४ तोलेभर क्काथमें मिलावै । आसगंध ४०० तोले गोखरू २०० तोले और शतावरी विदारीकंद शालिपर्णी खरैंहटी पीपलके कोंपल कमलके बीज सांठी कंभारीका फल उडद ये सब चालीस चालीस तोलेभर लेकै ४०९६ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब काढाकों उतारै मुनक्का पद्माक कूट पीपल लाल चंदन नेत्रवाला नागकेसर कौंचके बीज नीला कमल दोनों शारिवा अनंतमूल जीवक ऋषभक ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीरकाकोली मेदा महामेदा ये सब एक एक तोले और खांड आठ तोले पौंडाका रस २५६ तोले लेवै और चौगुना दूध करकै ६४ तोले घृतकों पकावै । रक्तपित्त क्षतक्षीण कामला वातरक्त ६० हलीमक शोजा वर्णभेद स्वरक्षय अरो-

चक मूत्रकृच्छ्र पसलीशूल इन्होंकों नाशता है यह घृत राजा लोगोंकों और धनी लोगोंकों और संतानसें रहित स्त्रियोंकों और दुर्बल मनुष्योंकों अल्प वीर्यवाले नपुंसकोंकों और अल्प विर्यवाले वृद्धोंकों यह घृत श्रेष्ठ है बलकों करता है सुंदर है वीर्यमें हित है रसायन है पीनें योग्य है पराक्रम और तेजकों करता है आयु और प्राणोंकों बढाता है वीर्यकों और दुर्बल इंद्रियोंवाले पुरुषकों वीर्यसें बढाता है इस्सें मनुष्य सब रोगोंकरकै छुटजाता है जैसें पानीसें सींचा हुआ वृक्ष ऐसा कामदेवघृत विख्यात है यह सब रोगोंमें श्रेष्ठ है ।

(११)शतावरीपयोद्राक्षाविदारीक्ष्वामलै रसैः ६४
सर्पिषा सह संयुक्तैः सप्तप्रस्थं पचेद्घृतम् ।
शर्करापादसंयुक्तं रक्तपित्तहरं पिबेत् ॥ ६५ ॥
उरःक्षते पित्तशूले योनिवातेऽप्यसृग्दरे ।
बल्यमूर्जस्करं वृष्यं क्षुधाहृद्रोगनाशनम् ॥ ६६ ॥

(११ सप्तप्रस्थघृतम्) शतावरीका रस दूध दाखका रस विदारीकंदका रस ईखका रस आंवलाका रस इन्होंके-साथ बराबरकों सातप्रस्थ घृतकों पकावे । और चौथाई भाग खांड मिलाकै पीवै यह रक्तपित्तकों हरता है । छातीका फटना पित्तशूल योनिवात प्रदररोग इन्होंमें हित है बलकों करता है पराक्रमकों करता है वीर्यमें हित है भूख और हृद्रोगकों नाशता है ।

(१२)कूष्माण्डकात्पलशतं सुस्विन्नं निष्कुलीकृतम्
पचेत्तप्ते घृतप्रस्थे शनैस्ताम्रमये दृढे ॥ ६७ ॥
यदा मधुनिभः पाकस्तदा खण्डशतं न्यसेत् ।
पिप्पलीशृङ्गवेराभ्यां द्वे पले जीरकस्य च ॥६८॥
त्वगेलापत्रमरिचधान्यकानां पलार्धकम् ।
न्यसेच्चूर्णीकृतं तत्र दर्व्या संघट्टयेन्मुहुः ॥ ६९ ॥
तत्पक्वं स्थापयेद्भाण्डे दत्वा क्षौद्रं घृतार्धकम् ।
तद्यथाग्निबलं खादेद्रक्तपित्ती क्षतक्षयी ॥ ७० ॥
कासश्वासतमश्छर्दितृष्णाज्वरनिपीडितः ।
वृष्यं पुनर्नवकरं बलवर्णप्रसाधनम् ॥ ७१ ॥
उरःसन्धानकरणं बृंहणं स्वरबोधनम् ।
अश्विभ्यां निर्मितं सिद्धं कूष्माण्डकरसायनम्७२
खण्डामलकमानानुसारात्कूष्माण्डकद्रवात् ।
पात्रं पाकाय दातव्यं यावान्वातरसो भवेत्॥७३॥
अत्रापि मुद्रया पाको निस्त्वचं निष्कुलीकृतम् ।

(१२ खंडकूष्मांडकः) पेठा ४०० तोलेभर लेकै सिजाय छिलकाकों दूर करै पीछे दृढरूप तांबाके पात्रमें ६४ तोलेभर घृत डाल तिसकों हौलें हौलें गरम करै पीछे पेठाके टुकडोंकों गेरै । जब शहदके समान पाक होवै तब ४०० तोले खांड मिलावै । पीपल अदरक जीरा आठ आठ तोले दालचिनी इलायची तेजपात मिरच धनियां ये सब दो दो तोले इन्होंका चूर्ण कर तहां मिलाकै कडछीसें वारंवार घोटै । पीछे घृतसें आधा भाग शहद मिलाकै घडामें घाल स्थापित करै । पीछे अग्निका बलके-अनुसार रक्तपित्ती और क्षतक्षयी खावै । खांसी श्वास अंधेरी छर्दि तृषा ज्वर इन्होंसें पीडितभी खावै वीर्यकों बढाता है शरीरकों फिर नवीन बनाता है बलकों और वर्णकों साधता है छातीके घावकों जोडता है धातुओंकों पुष्ट करता है स्वरकों जगाता है । यह कूष्मांडकरसायन अश्विनीकुमारोंनें रचा है और सिद्ध है । खांड आंवला पेठा इन आदिके तोलके अनुसारसें पाकके अर्थ पात्र देना। यहां मुद्रा करकै पाक करना और पेठाकों छीलकै टुकडे बनाय मिलाना।

(१३)पञ्चाशच्च पलं स्विन्नं कूष्माण्डात्प्रस्थमाज्यतः
ग्राह्यं पलशतं खण्डं वासाक्वाथाढके पचेत् ।
मुस्ता धात्री शुभा भार्गी त्रिसुगन्धैश्च कार्षिकैः७५
ऐलेयविश्वधन्याकमरिचैश्च पलांशिकैः ।
पिप्पलीकुडवं चैव मधुमानीं(?) प्रदापयेत्॥७६॥
कासं श्वासं क्षयं हिक्कां रक्तपित्तं हलीमकम् ।
हृद्रोगमम्लपित्तं च पीनसं च व्यपोहति ॥ ७७ ॥

(१३ वासाखंडकूष्मांडकः) पेठाकों सिजाकै टुकडे बनाय २०० तोले घृत ६४ तोले खांड ४०० तोले इन्होंकों २५६ तोले वांसाके क्राथमें पकावै नागरमोथा आंवला वंशलोचन भारंगी दालचिनी इलायची तेजपात ये सब एक एक तोला और एलवा सोंठ धनियां मिरच ये चार चार तोले । पीपल १६ तोले मधु मानी(?) देवै तो खांसी श्वास क्षय हिचकी रक्तपित्त हलीमक हृद्रोग अम्लपित्त पीनस इन्होंकों नाशता है ।

(१४)तुलामादाय वासायाः पचेदष्टगुणे जले ।
तेन पादावशेषेण पाचयेदाढकं भिषक् ॥ ७८ ॥
चूर्णानामभयानां च खण्डाच्छुद्धं तथा शतम् ।
द्वे पले पिप्पलीचूर्णात्सिद्धशीते च माक्षिकात्७९

कुडवं पलमात्रं तु चातुर्जातं सुचूर्णितम् ।
क्षिप्त्वा विलोडितं खादेद्रक्तपित्ती क्षतक्षयी ।
कासश्वासपरीतश्च यक्ष्मणा च प्रपीडितः॥८०॥

(१४ वासाखंडः) ४०० तोलेभर वांसा लेकै आठगुणा पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब । हरडै २५६ तोले शुद्ध खांड ४०० तोले पीपल ८ तोले इन्होंकों मिलावै और सिद्ध होनेकेपीछे शीतल होनेमें शहद ३२ तोले दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर इन्होंका चूर्ण ४ तोले इन्होंकों गेरकै रक्तपित्ती और क्षतक्षयी खावै । और खांसी श्वाससें पीडित और राजरोगसें पीडितभी खावै ।

(१५)शतावरीच्छिन्नरुहावृषमुण्डतिकाबलाः ।
तालमूली च गायत्री त्रिफलायास्त्वचस्तथा॥८१॥
भार्गी पुष्करमूलं च पृथक् पञ्च पलानि च ।
जलद्रोणे विपक्तव्यमष्टमांशावशेषितम् ॥ ८२ ॥
दिव्यौषधहतस्यापि माक्षिकेण हतस्य वा ।
पलद्वादशकं देयं रुक्मलौहस्य चूर्णितम् ॥८३॥
खण्डतुल्यं घृतं देयं पलषोडशिकं बुधैः ।
पचेत्ताम्रमये पात्रे गुडपाको यथामतम् ॥ ८४ ॥
प्रस्थार्धं मधुनो देयं शुभाश्मजतुकं त्वचम् ।
शृङ्गी विडङ्गं कृष्णा च शुण्ठ्यजाजीपलं पलम्८५
त्रिफला धान्यकं पत्रं द्व्यक्षं मरिचकेशरम् ।
चूर्णं दत्वा सुमथितं स्निग्धे भाण्डे निधापयेत्८६
यथाकालं प्रयुञ्जीत बिडालपदकं ततः ।
गव्यक्षीरानुपानं च सेव्यं मांसरसं पयः ॥ ८७॥
गुरुवृष्यानुपानानि स्निग्धं मांसादि बृंहणम् ।
रक्तपित्तं क्षयं कासं पक्तिशूलं विशेषतः ॥ ८८॥
वातरक्तं प्रमेहं च शीतपित्तं वमिं क्लमम् ।
श्वयथुं पाण्डुरोगं च कुष्ठं प्लीहोदरं तथा॥ ८९॥
आनाहं रक्तसंस्रावं चाम्लपित्तं निहन्ति च ।
चाक्षुषं बृंहणं वृष्यं माङ्गल्यं प्रीतिवर्धनम् ॥९०॥
आरोग्यं पुत्रदं श्रेष्ठं कामाग्निबलवर्धनम् ।
श्रीकरं लाघवकरं खण्डकाद्यं प्रकीर्तितम् ॥९१॥

(१५ खंडकाद्यलोहः) शतावरी गिलोय वांसा गोरखमुंडी खरैंहटी मुसली खैर त्रिफलाकी छाल भारंगी पोहकरमूल ये सब वीस वीस तोले लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै और आठमां हिस्सा बाकी रहै तब दिव्य ओषधसें हत हुआ अथवा सोनामाखीसें हत हुआ रुक्मलोहाका चूर्ण ४८ तोले खांडके बराबर ६४ तोलेभर घृत देकै तांबाके पात्रमें गुडके पाककी तरह पकावै । शहद ३२ तोले और वंशलोचन शिलाजित दालचिनी कांकडाशिंगी वायविडंग पीपल सोंठ जीरा ये सब चार चार तोले। त्रिफला धनियां तेजपात मिरच केशर ये दो दो तोले लेकै चूर्ण कर मिलाकै अच्छीतरह मथित कर चिकना पात्रमें घाल धरै । पीछे कालके अनुसार एक तोलाभर देवै इसपर गौके दूधका अनुपान करै मांसका रस और दूधकों सेवता रहै । भारी और पुष्ट अनुपान देना स्निग्ध और मांस आदि बृंहण पदार्थ देना। यह रक्तपित्त क्षय खांसी विशेषकरकै पक्तिशूल वातरक्त प्रमेह शीतपित्त छर्दि ग्लानि शोजा पांडुरोग कुष्ठ प्लीहोदर अफारा रक्तस्राव अम्लपित्त इन्होंकों नाशता है नेत्रोंमें हित है धातुओंकों बढाता है वीर्यकों करता है सुंदर है और प्रीतिकों बढाता है । आरोग्य है पुत्र देता है श्रेष्ठ है और कामदेव अग्नि बल इन्होंकों बढाता है शोभाकों करता है लाघव करता है खंडकाद्य कहा ।

(१६)छागं पारावतं मांसं तित्तिरिः क्रकराः शशाः
कुरङ्गाः कृष्णसाराश्च तेषां मांसानि योजयेत्९२
नारिकेलपयःपानं सुनिषण्णकवास्तुकम् ।
शुष्कमूलकजीराख्यं पटोलं बृहतीफलम् ॥ ९३ ॥
फलं वार्ताकुपक्वाम्रं खर्जूरं स्वादु दाडिमम् ।
ककारपूर्वकं यच्च मांसं चानूपसम्भवम् ॥ ९४ ॥
वर्जनीयं विशेषेण खण्डकाद्यं प्रकुर्वता ।
लोहान्तरवदत्रापि पुटनादिक्रियेष्यते ॥ ९५ ॥
यच्च पित्तज्वरे प्रोक्तं बहिरन्तश्च भेषजम् ।
रक्तपित्ते हितं तच्च क्षीणक्षतहितं च यत्॥९६॥

इति रक्तपित्तचिकित्सा ।

(१६ छागमांसादीनि पथ्यानि च) बकराका मांस परेवाका मांस तीतरका मांस ककेरा शशा मृग कृष्णमृग इन्होंके मांसोंकों देवै । नारियलका रस पीना और कुरडू वथुवा सूखी मूली जीरा परवल बडी कटेलीका फल वार्ताकुका फल आंब खिजूरिया मीठा अनार ककारपूर्वक सब पदार्थ और अनूपदेशका मांस खंडकाद्य करनेवालानें विशेषकरकै वर्जित करना अन्य लोहकी तरह य-

हांभी पुट आदि क्रिया करनी उचित है। पित्तज्वरमें जो बाहिर और भीतर ओषध कहा है वह रक्तपित्तमें और क्षीणक्षतकों हित है।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तार्थप्रकाशिकाभाषाटीकायां रक्तपित्तचिकित्सा।

अथ राजयक्ष्माधिकारः १०

अब राजयक्ष्माका अधिकार कहते है।

(१) शालिषष्टिकगोधूमयवमुद्गादयः शुभाः।
मद्यानि जाङ्गलाः पक्षिमृगाः शस्ता विशुष्यतां १
शुष्यतां क्षीणमांसानां कल्पितानि विधानवित्।
दद्यात्क्रव्यादमांसानि बृंहणानि विशेषतः॥ २॥
दोषाधिकानां वमनं शस्यते सविरेचनम्।
स्नेहस्वेदोपपन्नानां स्नेहनं यन्न कर्षणम्॥ ३॥
शुद्धकोष्ठस्य युञ्जीत विधिं बृंहणदीपनम्।
शुक्रायत्तं बलं पुंसां मलायत्तं हि जीवितम् ४
तस्माद्यत्नेन संरक्षेद्यक्ष्मिणो मलरेतसी।
सपिप्पलीकं सयवं सकुलत्थं सनागरम्॥ ५॥
दाडिमामलकोपेतं सिद्धमाजरसं पिबेत्।
तेन षड्विनिवर्तन्ते विकाराः पीनसादयः॥ ६॥
रसे द्रव्याम्बुपेयावत्सूदशास्त्रवशादिह।
पलानि द्वादशप्रस्थे घनेऽथ तनुके तु षट्॥७॥
मांसस्य वटकं कुर्यात्पलमच्छतरे रसे।
धन्याकपिप्पलीविश्वदशमूलीजलं पिबेत्॥ ८॥
पार्श्वशूलज्वरश्वासपीनसादिनिवृत्तये।
अश्वगन्धामृताभीरुदशमूलीबलावृषाः॥ ९॥
पुष्करातिविषे घ्नन्ति क्षयं क्षीररसाशिनः।

(१ राजयक्ष्मणि शाल्यादिप्रयोगः) शालिचावल सांठीचावल गेहूं जव मूंग इन आदि अन्न अन्य प्रकारकी मदरा जंगल देशके पक्षी और मृगका मांस ये सब विशेषकरकै सूखते हुये मनुष्योंकों श्रेष्ठहैं। सूखते हुयेंकों औ क्षीण हुआ मांसवालोंकों वैद्य मांस खानेवाले जीवोंके मांस और विवेष करकै विर्यकारक पदार्थ देवै। दोषकी अधिकतावालोंकों वमन और विरेचन देना स्नेह और स्वेदसे उपपन्न हुओंकों स्नेह न करना परंतु कर्षण नहीं हो ऐसा स्नेह न करना। बद्धकोष्ठवालेके बृंहण दीपनरूपविधि प्रयुक्त करना क्योंकि पुरुषोंका बल तो वीर्यके अधीन है और जीवना मलके अधीन है। उस कारणसें राजरोगवालेके मल और वीर्यकी रक्षा करनी। पीपल इंद्रजव कुलथी सोंठ अनार आंवला इन्होंमें सिद्ध किया बकराका मांसके रसकों पीवै उसकरकै पीनस आदि छह विकार दूर होते हैं। रसमें द्रव्य और जल पेयाकी तरह सूदशास्त्रके वशसें यहां बारह पल प्रस्थभरमें योजित करना जो घनरूप बनाना हो तो और पतला बनाना हो तो छह पलभर योजित करना। शुद्ध किये रसमें मांसके चार तोलेभरकी गोली बनानी। धनियां पीपल सोंठ दशमूल इन्होंके जलकों पीवै। तब पसलीशूल ज्वर श्वास पीनस इन आदि रोग दूर होते हैं। आसगंध गिलोय शतावरी दशमूल खरैंहटी वांसा पोहकरमूल अतीस इन्होंका चूर्ण दूध और मांसका रस सेवनेवालाके क्षयकों हरता है।

(२)दशमूलबलारास्ना-
पुष्करसुरदारुनागरैः क्वथितम्॥ १०॥
पेयं पार्श्वांसशिरो-
रुक्क्षयकासादिशान्तये सलिलम्।
ककुभत्वक्नागबला-
वानरिबीजानि चूर्णितं पयसि॥ ११॥
पक्वं घृतमधुयुक्तं
ससितं यक्ष्मादिकासहरम्।
पारावतकपिच्छागकुरङ्गाणां पृथक् पृथक्॥ १२॥
मांसचूर्णमजाक्षीरं पीतं यक्ष्महरं परम्।
घृतकुसुमसारलीढं
क्षयं क्षयं नयति गजबलामूलम्॥ १३॥
दुग्धेन केवलेन तु
वायसजङ्घां निपीत्वैव।
कृष्णाद्राक्षासितालेहः क्षयहा क्षौद्रतैलवान् १४
मधुसर्पिर्युतो वाश्वगन्धाकृष्णासितोद्भवः।
शर्करामधुसंयुक्तं नवनीतं लिहन्क्षयी॥ १५॥
क्षीराशी लभते पुष्टिमतुल्ये चाज्यमाक्षिके।

(२ दशमूलसलिलादि प्रयोगः) दशमूल खरैंहटी रायसन पोहकरमूल देवदार सोंठ इन्होंकरकै काढा बनाय पीवै यह पसलीशूल शिरका शूल क्षय खांसी इन्होंकों शांत करता है। कौह वृक्षकी लाल बडी

खरैंहटी कौंचके बीज इन्होंका चूर्ण बनाय दूधमें पका घृत और शहदसें युत कर मिश्री मिलाय खानेसें राजरोग आदि खांसीकों नाशता है । परेवा वानर बकरा मृग इन्होंके मांसोंके चूर्णकों अलग अलग लेकै बकरीका दूधके संग पीवै तो राजरोगका नाश होताहै । घृत जायफल सार नागकेसर खरैंहटीकी जड इन्होंकों मिलकै चाटना अथवा अकेला दूधके संग पान करी काकजंघा क्षयरोगकों नाशती है । पीपल दाख मिसरी शहद तेल इन्होंका लेह क्षयकों नाशता है अथवा आसगंध पीपल मिसरी शहद घृत इन्होंका लेह क्षयकों नाशता है । खांड और शहदमें नौंनी घृतकों मिलाय दूधका भोजन करनेवाला क्षयरोगी पुष्टिकों प्राप्त होता है इसमें घृत और शहद बराबर नहीं लेना ।

(३)सितोपलातुगाक्षीरीपिप्पलीबहुलात्वचः १६
अन्त्यादूर्ध्वं द्विगुणितं लेहयेत्क्षौद्रसर्पिषा ।
चूर्णितं प्राशयेदेतच्छ्वासकासक्षयापहम् ॥ १७ ॥
सुप्तजिह्वारोचकिनमल्पाग्निं पार्श्वशूलिनम् ।
हस्तपादांसदाहेषु ज्वरे रक्ते तथोर्ध्वगे ॥ १८ ॥

(३ सितोपलादिलेहः) मिश्री १६ भाग वंशलोचन ८ भाग पीपल ४ भाग इलायची २ भाग दालचिनी १ भाग इन सबकों मिहीन पीस शहद और घृतमें मिलाय चाटै यह श्वास खांसी क्षय इन्होंकों नाशता है और सुप्तजिह्वक अरोचक अल्पाग्नि पसलीशूल इन रोगवालोंके तथा हाथ पैर और कंधा इन्होंके दाहमें तथा ज्वरमें और ऊर्ध्वगत रक्तपित्तमें हित करता है । यह सितोपलादि लेह है।

(४)लवङ्गकक्कोलमुशीरचन्दनं
नतं सनीलोत्पलजीरकं समम् ।
त्रुटिः सकृष्णागुरुभृङ्गकेशरं
कणा सविश्वा नलदं सहाम्बुदम् ॥ १९ ॥
अहीन्द्रजातीफलवंशलोचना-
सिताष्टभागं समसूक्ष्मचूर्णितम् ।
सुरोचनं तर्पणमग्निदीपनं
बलप्रदं वृष्यतमं त्रिदोषनुत् ॥ २० ॥
उरोविबन्धं तमकं गलग्रहं
सकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम् ।
ग्रहण्यतीसारभगन्दरार्बुदं
प्रमेहगुल्मांश्च निहन्ति सज्वरान् ॥२१॥

(४ लवङ्गाद्यं चूर्णम्) लौंग कंकोल खस चंदन तगर नीलाकमल जीरा छोटी इलायची कालाजीरा अगर भांगरा केसर पीपल सोंठ वालछड नागरमोथा नागकेसर जायफल वंशलोचन ये सब बराबर भाग लेने और मिसरी ८ भाग इन सबका चूर्ण करै । यह रुचिकों उपजाता है तृप्तिकों करता है अग्निकों दीपन करता है बलकों देता है वीर्यकों बढाता है और त्रिदोषकों नाशता है और छातीका बंधा तमक श्वास गलग्रह खांसी हिचकी अरुचि राजरोग पीनस संग्रहणी अतीसार भगंदर अर्बुद प्रमेह गुल्मरोग और ज्वर इन्होंकों नाशता है । यह लवंगाद्य चूर्ण है।

(५)तालीसपत्रं मरिचं नागरं पिप्पली शुभा ।
यथोत्तरं भागवृद्ध्या त्वगेले चार्धभागिके २२
पिप्पल्यष्टगुणा चात्र प्रदेया सितशर्करा ।
श्वासकासारुचिहरं तच्चूर्णं दीपनं परम् ॥ २३ ॥
हृत्पाण्डुग्रहणीरोगप्लीहशोषज्वरापहम् ।
छर्द्यतीसारशूलघ्नं मूढवातानुलोमनम् ॥ २४ ॥
कल्पयेद्गुटिकां चैतच्चूर्णं पक्त्वा सितोपलम् ।
गुटिका ह्यग्निसंयोगाच्चूर्णाल्लघुतराः स्मृताः ।
पैत्तिके ग्राहयन्त्येके शुभया वंशलोचनाम् २५

(५ तालीसाद्यो मोदकः) तालीसपत्र १ भाग मिरच २ भाग सोंठ ३ भाग पीपल ४ भाग शुभा अर्थात् वंशलोचन ५ भाग इलायची और दालचिनी आधा आधा भाग पीपल ८ भाग और इसमें यथायोग्य सपेद खांड मिलाकै चूर्ण बनावै । यह चूर्ण श्वास खांसी अरुचि इन्होंकों हरता है उत्तम दीपन है और हृद्रोग पांडु संग्रहणी प्लीहरोग शोष और ज्वर इन्होंकों नाशता है और छर्दि अतिसार शूल इन्होंकों हरता है और मूढवातकों अनुलोमित करता है मिसरीकी चासनी बनाके उसमें इस चूर्णकों मिलाय गोली बनानी अग्निके संयोगसें ये गोली चूर्णसें हलकी कही है कितनेक वैद्य पित्तसें उपजे राजरोगमें इसकों ग्रहण करते हैं यहां शुभाशब्दसें वंशलोचनका ग्रहण है । यह तालीसाद्य मोदक है ।

(६)शृङ्ग्यर्जुनाश्वगन्धा-
नागबलापुष्कराभयाच्छिन्नरुहाः ।
तालीसादिसमेता
लेह्या मधुसर्पिर्भ्यां यक्ष्महराः ॥ २६ ॥

मधुताप्यविडङ्गाश्मजतुलोहघृताभयाः।
घ्नन्ति यक्ष्माणमत्युग्रं सेव्यमाना हिताशिना २७
व्योषं शतावरी त्रीणि फलानि द्वे बले तथा।
सर्वामयहरो योगः सोऽयं लोहरजोन्वितः २८
एष वक्षःक्षतं हन्ति कण्ठजांश्च गदांस्तथा।
राजयक्ष्माणमत्युग्रं बाहुस्तम्भमथार्दितम् ॥ २९॥

(६ विंध्यवासियोगः) कांकडाशिंगी कौहवृक्षकी छाल आसगंध बडी खरैंहटी पौंहकरमूल हरडै गिलोय इन ओषधियोंमें पूर्वोक्त तालिसाद्य मोदककी औषधी मिलाके घृत और शहदसें युतकर चाटनेसें राजरोगका नाश होता है। शहद सोनामाखी वायविडंग शिलाजीत लोहा घृत हरडै इन्होंका लेह बना सेवै और हितकारक भोजन करै तौ उग्ररूपभी राजरोग नष्ट होता है। सोंठ मिरच पीपल शतावरी त्रिफला दोनों खरैंहटी लोहाका चूर्ण यह योग सब प्रकारके रोगोंकों हरता है। यह छातीका फटनाकों और कंठके सब रोगोंकों हरता है और अत्यंत उग्ररूप राजरोगकों और बाहुस्तंभकों तथा अर्दित अर्थात् लकवा रोगकों हरता है। यह विंध्यवासियोग है।

(७)कर्षः शुद्धरसेन्द्रस्य स्वरसेन जयार्द्रयोः।
शिलायां खल्वयेत्तावद्यावत्पिण्डं घनं ततः ३०
जलकर्णाकाकमाचीरसाभ्यां भावयेत्पुनः।
सौगन्धिकपलं भृङ्गस्वरसेन विभावितम् ॥३१॥
चूर्णितं रससंयुक्तमजाक्षीरपलद्वये।
खल्वितं घनपिण्डं तु गुटीं स्विन्नकलायवत् ३२
कृत्वादौ शिवमभ्यर्च्य द्विजातीन्परितोष्य च।
जीर्णान्नो भक्षयेदेकां क्षीरमांसरसाशनः ॥ ३३॥
सर्वरूपं क्षयं कासं रक्तपित्तमरोचकम्।
अपि वैद्यशतैस्त्यक्तमम्लपित्तं नियच्छति ॥३४॥

(७ रसेंद्रगुटिका) शुद्ध किया पारा एक तोलाभर ले खरलमें घाल अरनी और अदरकके रसमें अच्छीतरह घोंटै। जबतक करडा होवै पीछे जलकर्णी और मकोहके रसमें फिर भावना देवै पीछे दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर इन्होंका चूर्ण चार तोले मिलाय पीछे भंगराके स्वरसमें भावना देवै। पीछे चूर्ण कर बकरीका ८ तोले भर दूधमें खरल करै जब घनरूप गोला होने लगै तब सिजाया हुआ चौलाके समान गोली करकै प्रथम शिवकी पूजा कर और ब्राह्मणोंकों प्रसन्न कर अन्न जीर्ण होनेंपर एक गोलीकों खावै दूध और मांसके रसकों भोजन करता रहै। यह गोली सब प्रकारका क्षय खांसी रक्तपित्त अरोचक इन्होंकों और सैंकडों वैद्योंकरकै त्यक्त हुये अम्लपित्तकों दूर करता है। यह रसेंद्रगुटिका है।

(८)एलाजमोदामलकाभयाक्ष-
गायत्रिनिम्बाशनशालसारान्।
विडङ्गभल्लातकचित्रकांश्च
कटुत्रिकाम्भोदसुराष्ट्रिकाश्च ॥ ३५ ॥
पक्त्वा जले तेन पचेत्तु सर्पि-
स्तस्मिन्सुसिद्धे त्ववतारिते च।
त्रिंशत्पलान्यत्र सितोपलाया
दद्यात्तुगाक्षीरिपलानि षट् च ॥ ३६ ॥
प्रस्थे घृतस्य द्विगुणं च दद्यात्
क्षौद्रं ततो मन्थहतं निदद्यात्।
पलं पलं प्रातरतो लिहेच्च
पश्चात्पिबेत्क्षीरमतन्द्रितश्च ॥ ३७ ॥
एतद्धि मेध्यं परमं पवित्रं
चक्षुष्यमायुष्यतमं तथैव।
यक्ष्माणमाशु व्यपहन्ति शूलं
पाण्डुामयं चापि भगन्दरं च ॥ ३८ ॥
न चात्र किञ्चित्परिवर्जनीयं
रसायनं चैतदुपास्यमानम्।

(८ एलादिमंथः) इलायची अजमोद आंवला हरडै बहेडा खैर नींब आसना कौहवृक्ष इन्होंके सार वायविडंग भिलावा चीता सोंठ मिरच पीपल नागरमोथा फटकडी इन सबका काढा बनाय उसमें घृतकों पकावै जब वह घृत अच्छीतरह सिद्ध होजा तब अग्निसें उतार उसमें १२० तोले मिश्री और २४ तोले वंशलोचन डारै। प्रस्थ अर्थात् ६४ तोलेभरमें दुगुना शहद मिलाकै पीछे मंथासें विलोडै फिर प्रभातमें चार चार तोलेभर चाटै पीछे सावधान होके दूधकों पीता रहै। यह मंथ शुद्ध है परम पवित्र है नेत्रोंमें हित है आयुकों बढाता है और राजरोग शूल पांडुरोग और भगंदर इन्होंकों नाशता है।

इसमें कछुभी वर्जित नहीं है यह रसायन सेवनेके योग्य है। यह एलादिमंथ है।

(९)बला विदारी ह्रस्वा च पञ्चमूली पुनर्नवा ३९
पञ्चानां क्षीरवृक्षाणां शुङ्गा मुष्ट्यंशिकाः पृथक्।
एषां कषाये द्विक्षीरे विदार्याजरसांशिके ॥४०॥
जीवनीयैः पचेत्कल्कैरक्षमात्रैर्घृताढकम्।
सितापलानि पूते च शीते द्वात्रिंशदावपेत् ४१
गोधूमपिप्पलीवांशीचूर्णं श्रृङ्गाटकस्य च।
समाक्षिकं कौडविकं तत्सर्वं खजमूर्च्छितम् ४२
स्त्यानं सर्पिर्गुडान्कृत्वा भूर्जपत्रेण वेष्टयेत्।
ताञ्जग्ध्वा पलिकान्क्षीरं मद्यं चानुपिबेत्कफे ४३
शोषे कासे क्षतक्षीणे श्रमस्त्रीभारकर्षिते।
रक्तनिष्ठीवने तापे पीनसे चोरसि स्थिते ॥४४॥
शस्ताः पार्श्वशिरःशूले भेदे च स्वरवर्णयोः।
क्वाथ्ये त्रयोदशपले द्रव्याल्पत्वभयाज्जलम् ४५
अष्टगुणं क्वाथसमौ विदार्याजरसौ पृथक्।
केचिद्यथोक्तक्वाथ्ये तु क्वाथं घृतसमं जगुः ४६

(९ सर्पिर्गुडः) खरैंहटी विदारीकंद लघुपंचमूल सांठी पांचों क्षीरवृक्षोंके कोंपल एक एक मुष्टिभर अलग अलग लेवै। इन्होंके काढेमें दुगुना दूध और विदारीकंदका और बकरेके मांसका रस मिलाय उसमें ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली रानमूंग रानउडद काली मुसली सुपेद मुसली सोंप मुलहटी इन्होंकों एक एक तोलेभर ले कल्क बनाके मिलाय २५६ तोलेभर घृतकों पकावै। पीछे शीतल होनेमें वस्त्रमांहके छान उसमें १२० तोलेभर मिसरी मिलाकै पीछे गेहूं पीपल वंशलोचन सिंगाडा इन्होंका चूर्ण और शहद सोलह सोलह तोले मिलाय पीछे इन सबकों मंथासें विलोडै पीछे चार चार तोले मोदक बनाय भोजपत्रसें वेष्टित करै। इनमेंसें एक मोदक रोज खाकै ऊपर दूधकों अथवा मदिराकों पीता रहै। कफमें शोषमें खांसीमें क्षतक्षीणमें और परिश्रम वोझ स्त्री इन्होंसें कर्षितमें रक्तकी छर्दिमें ज्वरमें पीनसमें और छातीविषै स्थित हुये शूलमें पसलीशूलमें शिरके शूलमें स्वरभेदमें और वर्णभेदमें तेरह पलभर क्वाथ्य द्रव्यमें द्रव्यका अल्पपनेके भयसें जल आठगुणा लेना और क्वाथके बराबर विदारीकंद और बकराके मांसका रस पृथक् पृथक् लेना। कितनेक वैद्य कि यथोक्त क्वाथ्य द्रव्यमें घृतके समान क्वाथकों कहते है। यह सर्पिर्गुड है।

(१०)बिल्वाग्निमन्थस्योनाककाश्मर्यः पाटली बला
पर्ण्यश्चतस्रः पिप्पल्यः श्वदंष्ट्रा बृहतीद्वयम् ४७
श्रृङ्गीतामलकीद्राक्षाजीवन्तीपुष्करागुरु।
अभया सामृता ऋद्धिर्जीवकर्षभकौ शठी ॥४८॥
मुस्तं पुनर्नवा मेदा सूक्ष्मैलोत्पलचन्दने।
विदारी वृषमूलानि काकोली काकनासिका ४९
एषां पलोन्मितान्भागाञ्शतान्यामलकस्य च।
पञ्च दद्यात्तदैकध्यं जलद्रोणे विपाचयेत् ॥५०॥
ज्ञात्वा गतरसान्येतान्यौषधान्यथ तं रसम्।
तच्चामलकमुद्धृत्य निष्कुलं तैलसर्पिषोः ॥ ५१ ॥
पलद्वादशके भृष्ट्वा दत्वा चार्धतुलां भिषक्।
मत्स्यण्डिकायाः पूताया लेहवत्साधु साधयेत्५२
षट्पलं मधुनश्चात्र सिद्धशीते प्रदापयेत्।
चतुष्पलं तुगाक्षीर्याः पिप्पल्या द्विपले तथा ५३
पलमेकं निदध्याच्च त्वगेलापत्रकेशरात्।
इत्ययं च्यवनप्राशः परमुक्तो रसायनः ॥ ५४ ॥
कासश्वासहरश्चैव विशेषेणोपदिश्यते।
क्षीणक्षतानां वृद्धानां बालानां चाङ्गवर्धनम् ५५
स्वरक्षयमुरोरोगं हृद्रोगं वातशोणितम्।
पिपासां मूत्रशुक्रस्थान्दोषांश्चैवापकर्षति ॥५६॥
अस्य मात्रां प्रयुञ्जीत योऽपरुन्ध्यान्न भोजनम्।
अस्य प्रयोगाच्च्यवनः सुवृद्धोऽभूत्पुनर्युवा ५७
मेधां स्मृतिं कान्तिमनामयत्वं
वपुःप्रकर्षं बलमिन्द्रियाणाम्।
स्त्रीषु प्रहर्षं परमग्निवृद्धिं
वर्णप्रसादं पवनानुलोम्यम् ॥ ५८ ॥
रसायनस्यास्य नरः प्रयोगा-
ल्लभेत जीर्णोऽपि कुटीप्रवेशात्।
जराकृतं पूर्वमपास्य रूपं
बिभर्ति रूपं नवयौवनानाम् ॥ ५९ ॥
सितामत्स्यण्डिकालाभे धात्र्याश्च मृदुभर्जनम्।
चतुर्भागजले प्रायो द्रव्यं गतरसं भवेत् ॥६०॥

(१० च्यवनप्राशः) वेलगिरी अरनी सोनापाठा कंभारी रक्त लोध खरैंहटी शालपर्णी पृष्ठपर्णी मूंगपर्णी

माषपर्णी पीपल गोखरू दोनों कटेहली कांकडाशिंगी मुसली दाख जीवंती पौंहकरमूल अगर हरडै गिलोय ऋद्धि जीवक ऋषभक कचूर नागरमोथा सांठी मेदा छोटी इलायची कमल चंदन विदारीकंद वांसाकी जड काकोली सुपेद कावली ये सब चार चार तोले लेने और आंवला ५०० पलभर लेना इन सबकों मिलाय १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै । जब ये ओषध गत-रस हो जावै तब जानकर उस रसकों और आंवलोंकों निकास पीछे छीलकै तेलमें और घृत अठतालीस ४८ तोलेभर लेकै उसमें भून पीछे २०० तोलेभर सुंदर सब मिलाकै लेहकी तरह अच्छी रीतिसें सिद्ध करै । इसमें २४ तोले शहदकों शीतल होनेपर डालै पीछे वंशलो-चन १६ तोले पीपल ८ तोले दालचिनी इलायची तेज-पात नागकेशर ये सब ४ तोले इस प्रकार यह च्यवनप्राश उत्तम रसायन कहा है । यह विशेष करकै खां-सीकों और श्वासकों हरता है । क्षीणक्षत वृद्ध और बा-लक इन्होंके अंगोंकों बढाता है और स्वरक्षय छातीका रोग हृद्रोग वातरक्त तृषारोग मूत्रदोष वीर्यदोष इ-न्होंकों दूर करता है इसकी मात्राकों प्रयुक्त करै इसपर भोजनकों नहीं रोकना । इसकों सेवनेसें वृद्ध हुआ च्यव-नमुनि फिर जवान हुआ । यह बुद्धि स्मृति कांति आ-रोग्य शरीरका हलकापना इद्रियोंका बल स्त्रियोंमें आनंद अग्निकी वृद्धि वर्णका स्वच्छपना और वायुका अनुलोम-पना इन्होंकों इस रसायनके सेवनेसें वृद्ध मनुष्यभी प्राप्त होता है परंतु कुटीमें प्रवेश करना जरुरी है और बुढापाके किये पूर्वरूपकों दूर करकै नवीन यौवन रूपकों धारण करता है । इसमें रांब नहीं मिलै तो मिसरी डाल देनी और आंवलाकों कोमल भूनना और प्रायताकरकै चार भाग जलमें द्रव्य गतरस होता है । यह च्यवनप्राश है ।

(११)जीवन्तीं मधुकं द्राक्षां फलानि कुटजस्य च
शठीं पुष्करमूलं च व्याघ्रीं गोक्षुरकं बलाम् ६१
नीलोत्पलं तामलकीं त्रायमाणां दुरालभाम् ।
पिप्पलीं च समं पिष्ट्वा घृतं वैद्यो विपाचयेत् ६२
एतद्व्याधिसमूहस्य रोगेशस्य समुत्थितम् ।
रूपमेकादशविधं सर्पिरग्र्यं व्यपोहति ॥ ६३ ॥

(११ जीवंत्याद्यं घृतम्) जीवंती मुलहटी दाष कूडाके फल कचूर पौंहकरमूल कटेली गोखरू खरैंटी । नीलाकमल भूमिआंवला त्रायमाण धमासा पीपल ये सब बराबर ले कल्क बनाय उसमें घृतकों पकावै । यह श्रेष्ठ घृत रोगसमूहकों नाशता है और ग्यारहरूपवाले राजरोगकों नाशता है । यह जीवंत्याद्यघृत है ।

(१२)पिप्पलीगुडसंसिद्धं छागक्षीरयुतं घृतम् ।
एतदग्निविवृद्ध्यर्थं सर्पिश्च क्षयकासिनाम् ६४

(१२ पिप्पलीघृतम्) पीपल गुड और बकरीका दूध इन्होंमें सिद्ध किया घृत क्षय और खांसीवालोंकी अग्निकों बढाता है । यह पिप्पलीघृत है ।

(१३)यष्टीबलागुडूच्यल्पपञ्चमूलीतुलां पचेत् ।
शूर्पेऽपामष्टभागस्थे तत्र पात्रं पचेद्धृतम् ॥६५॥
धात्रीविदारीस्वरसे त्रिपात्रे पयसोर्मणे ।
सुपिष्टैर्जीवनीयैश्च पाराशरमिदं घृतम् । ॥६६॥
ससैन्यं राजयक्ष्माणमुन्मूलयति शीलितम् ।

(१३ पाराशरं घृतम्) मुलहटी खरैंहटी गिलोय लघुपंचमूल इन्होंकों ४०० तोलेभर लेकै २०४८ तोलेभर पानीमें पकावै जब आंठमा भाग पानी पकनेमें रहै तहां २५६ तोले घृतकों पकावै । आंवला विदारीकंद ईख इ-न्होंके रस प्रत्येक २५६ तोले दूध १०२४ तोले मिलाय सिद्ध करै यह घृत सेनासहित राजरोगकों सेवनसें दूर क-रता है । यह पाराशरघृत है ।

(१४)छागमांसतुलां गृह्य साधयेल्लवणेऽम्भसि ॥
पादशेषेण तेनैव घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
ऋद्धिवृद्धी च मेदे द्वे जीवकर्षभकौ तथा॥६८॥
काकोलीक्षीरकाकोलीकल्कैः पृथक्पलोन्मितैः ।
सम्यक् सिद्धे त्ववतार्य शीते तस्मिन्प्रदापयेत्६९
शर्करायाः पलान्यष्टौ मधुनः कुडवं क्षिपेत् ।
पलं पलं पिबेत्प्रातर्यक्ष्माणं हन्ति दुर्जयम् ॥७०॥
क्षतक्षयं च कासं च पार्श्वशूलमरोचकम् ।
स्वरक्षयमुरोरोगं श्वासं हन्यात्सुदारुणम् ॥७१॥

(१४ छागलाद्यं घृतम्) बकराके मांसकों ४०० तोलेभर लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौ-थाई भाग शेष रहै तब उसमें ६४ तोलेभर घृतकों प-कावै । परंतु पकनेके समय ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा जीवक ऋषभक काकोली क्षीरकाकोली इन सबोंके अलग

अलग कल्क चार चार तोलेभर लेवै । जब अच्छीतरह सिद्ध हो चुकै तब उतारकै शीतल होनेपर उसमें खांड ३२ तोले शहद १६ तोलेभर डारै । प्रभातमें चार चार तोलेभर रोज पीवै यह उग्ररूप राजरोग व क्षतक्षय खांसी पसलीशूल अरोचक स्वरक्षय छातीका रोग और भयंकर श्वास इन्होंकों नाशता है । यह छागलाद्यघृत है ।

(१५)तोयद्रोणद्वितये
मांसं छागस्य पलशतं पक्त्वा ।
जलमष्टांशं सुकृतं
तस्मिन्विपचेद्घृतं प्रस्थम् ॥ ७२ ॥
कल्केन जीवनीयानां
कुडवेन तु मांससर्पिरिदम् ।
पित्तानिलं निहन्या-
त्तज्जानपि रसकयोजितं पीतम् ॥ ७३ ॥
कासश्वासावुग्रौ
यक्ष्माणं पार्श्वहृद्रुजं घोराम् ।
अध्वव्यपायशोषं
शमयति चैवापरं किञ्चित् ॥ ७४ ॥

(१५ द्वितीयं छागघृतम्) २०४८ तोलेभर पानीमें बकराका मांस ४०० तोलेभरकों पकावै जब आठमा हिस्सा पानी शेष रहै तब उसमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । परंतु पकानेके समय ऋद्धि वृद्धि जीवक ऋषभक मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली इन्होंके १६ तोलेभर कल्क करकै सिद्ध करै । रसमें योजित किया यह मांस घृतपान किया जावै तो पित्तवातकों और पित्तवातसें उपजे रोगोंकों नाशता है । और उग्ररूप श्वास खांसी राजरोग पसलीशूल हृद्रोग मार्गशोष स्त्रीशोष और अन्य प्रकारका कोईक रोग इन सबकों शांत करता है । यह छागलाद्य घृत है ।

(१६) छागशकृद्रसमूत्र-
क्षीरैर्दध्ना च साधितं सर्पिः ।
सक्षारं यक्ष्महरं
कासश्वासोपशान्तये परमम् ॥ ७५ ॥

(१६ अजापंचकं घृतम्) बकरीके मेंगन रस मूत्र दूध और दही इन्होंमें साधित किया घृतमें जवाखार डाल पीवै तो खांसी और श्वासकी शांति होती है । यह अजापंचकघृत है ।

(१७) द्विपञ्चमूलस्य पचेत्कषाये
प्रस्थद्वये मांसरसस्य चैके ।
कल्कं बलायाः सुनियोज्य गर्भे
सिद्धं पयःप्रस्थयुतं घृतं च ॥
सर्वाभिघातोत्थितयक्ष्मशूल-
क्षतक्षयोत्कासहरं प्रदिष्टम् ॥ ७६ ॥

(१७ बलागर्भघृतम्) दशमूलके १२८ तोलेभर क्वाथमें मांसका रस ६४ तोले खरैंहटीका कल्क ६४ तोले दूध ६४ तोले घृत ६४ तोले ऐसे घृतकों सिद्ध करै । यह घृत सब प्रकारके अभिघातसें उपजे राजरोग शूल क्षतक्षय और उग्रखांसी इन्होंकों हरता है । यह बलागर्भघृत है ।

(१८)पादशेषे जलद्रोणे पचेन्नागबलातुलाम् ।
तेजक्वाथेन तुल्यांशं घृतं क्षीरं च साधयेत् ॥७७॥
पलार्धिकैश्चातिबलाबलायष्टिपुनर्नवा ।
प्रपौण्डरीककाश्मर्यप्रियालकपिकच्छुभिः ॥ ७८ ॥
अश्वगन्धासिताभीरुमेदायुग्मत्रिकण्टकैः ।
मृणालविषशालूकशृङ्गाटककशेरुकैः ॥ ७९ ॥
एतन्नागबलासर्पी रक्तपित्तक्षतक्षयम् ।
हन्ति दाहं भ्रमं तृष्णां बलपुष्टिकरं परम् ॥८०॥
बल्यमौजस्यमायुष्यं वलीपलितनाशनम् ।
उपयुञ्जीत षण्मासान्वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ८१ ॥

(१८ नागबलाघृतम्) १०२४ तोलेभर जल अग्निके संयोगसें २५६ तोलेभर शेष रहै तब ४०० तोलेभर वडी खरैंहटीकों पकावै उस क्वाथके बराबर दूध मिलाकै उतनाही घृतकों सिद्ध करै । पीछे खरैंहटी गंगेरन मुलहटी सांठी कमल कंभारी चिरौंजी कौंचके बीज आसगंध वंशलोचन शतावरी मेदा महामेदा गोखरू कमलकी दंडी कमलका तंतू कमलकंद सिंगाडा कसेरु ये सब दो दो तोले लेने । यह नागबलाघृत रक्तपित्त क्षतक्षय दाह भ्रम तृषा इन्होंकों नाशता है और बल पुष्टिकों करता है । बलमें हित है पराक्रममें हित है और शरीरकी वली तथा वालोंका सुपेद होनाकों नाशता है इस घृतकों ६ महीने सेवनेसें वूढा मनुष्यभी जुवान मनुष्यकी तरह आचरण करता है । यह नागबला घृत है ।

(१९) समूलफलपत्राया निर्गुण्ड्याः स्वरसैर्घृतम् ।
सिद्धं पीत्वा क्षयक्षीणो निर्व्याधिर्भाति देववत् ८२

(१९ निर्गुंडीघृतम्) मूल फल और पत्तोंसहित संभालूके स्वरसकरकै सिद्ध किये घृतकों पान करनेसें क्षयक्षीण मनुष्य देवताकी तरह प्रकाशमान होता है । यह निर्गुंडीघृत है ।

(२०) बलाश्वदंष्ट्राबृहतीकलसीधावनीस्थिराम् ।
निम्बं पर्पटकं मुस्तं त्रायमाणां दुरालभाम् ॥ ८३ ॥
कृत्वा कषायं पेष्यार्थं दद्यात्तामलकीं शठीम् ।
द्राक्षां पुष्करमूलं च मेदामामलकानि च ॥ ८४ ॥
घृतं पयश्च तत्सिद्धं सर्पिर्ज्वरहरं परम् ।
क्षयकासप्रशमनं शिरःपार्श्वरुजापहम् ॥ ८५ ॥
चरकोदितवासाद्यघृतानन्तरमुक्तितः ।
वदन्तीह घृतात्क्वाथं पयश्च द्विगुणं पृथक् ८६

(२० बलाद्यं घृतम्) खरैंहटी गोखरू कटेली पृष्ठपर्णी बडी कटेली शालपर्णी नींब पित्तपापडा नागरमोथा त्रायमाण धमासा इन्होंका काढा बनाय उसमें मुसली कचूर दाख पौंहकरमूल मेदा आंवला इन्होंका कल्क बनाय मिलावै पीछे दूध और घृत डाल घृतकों सिद्ध करै । यह घृत ज्वरकों हरता है क्षयकों और खांसीकों हरता है शिरका शूल और पसलीका शूलकों नाशता है । चरकमें कहे वासाद्य घृतसें अनंतर कहते है कि घृतसें क्वाथ और दूध दुगुना लेना । यह बलाद्यघृत है ।

(२१)चन्दनाम्बु नखं वाप्यं यष्टीशैलेयपद्मकम् ।
मञ्जिष्ठासरलं दारुशट्येलापूतिकेशरम् ॥ ८७ ॥
पत्रं तैलं मुरामांसी कक्कोलं वनिताम्बुदम् ।
हरिद्रे शारिवे तिक्ता लवङ्गागुरुकुङ्कुमम् ॥ ८८॥
त्वग्रेणुनलिकाचैभिस्तैलं मस्तु चतुर्गुणम् ।
लाक्षारससमं सिद्धं ग्रहघ्नं बलवर्णकृत् ॥ ८९ ॥
अपस्मारज्वरोन्मादकृत्यालक्ष्मीविनाशनम् ।
आयुःपुष्टिकरं चैव वशीकरणमुत्तमम् ॥ ९० ॥

(२१ चंदनाद्यं तैलम्) चंदन नेत्रवाला नख कूट मुलहटी लोवान कमल मजीठ सरल देवदार कचूर इलायची जवादि कस्तूरी नागकेशर तेजपात शिलाजीत छाल छलीरा वालछड कंकोल मेहँदी नागरमोथा हलदी दारुहलदी दोनोंतरहके अनंतमूल कुटकी लौंग अगर केशर दालचिनी रेणुकबीज नलिका शाक इन्होंके क्वाथमें तेलसें चौगुना दहीका पानी और इतनाही लाखका रस इन सबकों मिलाय तेलकों सिद्ध करै । यह तेल ग्रहके दोषकों हरता है बलकों और वर्णकों करता है और मृगीरोग ज्वर उन्माद कृत्या अलक्ष्मी इन्होंकों नाशता है आयुकों और पुष्टिकों करता है और उत्तम वशीकरण है । यह चंदनाद्यतेल है ।

(२२)छागं मांसं पयश्छागं छागं सर्पिःसशर्करम् ।
छागोपसेवा शयनं छागमध्ये तु यक्ष्मनुत् ॥९१॥
उरोमत्वाक्षतं लाक्षां पयसा मधुसंयुताम् ।
सद्य एव पिबेज्जीर्णे पयसाद्यात्सशर्करम् ॥ ९२ ॥
इक्ष्वालिकाबिसग्रन्थिपद्मकेशरचन्दनैः ।
शृतं पयो मधुयुतं सन्धानार्थं पिबेत्क्षती ॥९३॥
बलाश्वगन्धाश्रीपर्णीबहुपुत्रीपुनर्नवाः ।
पयसा नित्यमभ्यस्ताः क्षपयन्ति क्षतक्षयम्॥९४॥
घृतं बलानागबलार्जुनाम्बु-
सिद्धं सयष्टीमधुकल्कपादम् ।
हृद्रोगशूलक्षतरक्तपित्त-
कासाऽनिलासृक् शमयत्युदीर्णम् ॥९५॥
इति राजयक्ष्मक्षतक्षयचिकित्सा ।

(२२ बलानागबलाद्यं घृतम्) बकरीका मांस खांडसहित बकरीका दूध और बकरीका घृत बकराकों सेवना और बकरोंके मध्यमें शयन ये सब राजरोगकों नाशते हैं छातीकों फटी हुई जानकर शहदसें युत करी लाखकों दूधके संग शीघ्र पीवै और जीर्ण होनेपर दूधके साथ खांडसहित भोजन करै । कांसकी जड कमलका तंतू पीपलामूल कमलकेशर चंदन इन्होंमें दूधकों पकाय उसमें शहद डाल छातीके घावकों जोडनेके लिये क्षतवाला मनुष्य पीवै खरैंहटी आसगंध शालपर्णी भूमिआवला सांठी इन्होंकों दूधके संग रोज पीवै तो क्षतक्षयका नाश होता है । खरैंहटी बडी खरैंहटी अर्जुन अर्थात् कौहवृक्ष इन्होंके क्वाथमें मुलहटी और महुवाका कल्क चौथाई भाग उम्ल घृतकों सिद्ध करै । यह घृत हृद्रोग शूल क्षत रक्तपित्त खांसी वातरक्त इन बढे हुये रोगोंकों शांत करता है । यह बलाद्यघृत है ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनु पंडित रविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां राजयक्ष्मक्षतक्षयचिकित्सा ।

अथ कासरोगाधिकारः ११

इसके अनंतर कास अर्थात् खांसीरोगका अधिकार कहते है ।

(१) वास्तूको वायसीशाकं मूलकं सुनिषण्णम् ।
स्नेहास्तैलादयो भक्ष्याः क्षीरेक्षुरसगौडिकाः ॥१॥
दध्यारनालाम्लफलं प्रसन्नापानमेव च ।
शस्यते वातकासेषु स्वाद्वम्ललवणानि च ॥ २ ॥
ग्राम्यानूपौदकैः शालियवगोधूमषष्टिकान् ।
रसैर्माषात्मगुप्तानां यूषैर्वा भोजयेद्धितान् ॥ ३ ॥
पञ्चमूलीकृतः क्वाथः पिप्पलीचूर्णसंयुतः ।
रसान्नमश्नतो नित्यं वातकासमुदस्यति ॥ ४ ॥

(१ कासरोगे सामान्योपायाः) वथुवा मकोह मूली कुरडू तेल आदि स्नेह दूध ईखका रस गुडके पदार्थ ये सब भक्ष्य अर्थात् भक्षण करनेके योग्य हैं वायकी खांसीमें दही कांजी विजोराका फल मदिराका पीना स्वादु खट्टा सलोना पदार्थ ये सब श्रेष्ठ हैं। ग्राम्य और अनूप देशका जलकरकै शालि चावल जव गेहूं सांठी चावल इन्होंके रसोंकरकै अथवा उडद और कौंचके बीजोंके यूष करकै इन्होंकों भोजन करवावै। पंचमूलके क्वाथमें पीपलका चूर्ण डाल पीवै और मांसका रसके साथ अन्नकों खावै तो वायकी खांसी नष्ट होती है ।

(२) शृङ्गीशठीकणाभार्गीगुडवारिदयासकैः ।
सतैलैर्वातकासघ्नो लेहोऽयमपराजितः ॥ ५ ॥

(२ अपराजितो लेहः) काकडाशींगी कचूर पीपल भारंगी गुड नागरमोथा जवासातेल इन्होंका लेह बनाय चाटनेसें वातकी खांसी नष्ट होती है। यह अपराजित लेह है ।

(३) चूर्णिताविश्वदुस्पर्शशृङ्गीद्राक्षाशठीसिताः
लीढा तैलेन वातोत्थं कासं जयति दारुणम्॥६॥
भार्गीद्राक्षाशठीशृङ्गीपिप्पलीविश्वभेषजैः ।
गुडतैलयुतो लेहो हितो मारुतकासिनाम् ॥७॥
पित्तकासे तनुकफे त्रिवृतां मधुरैर्युताम् ।
दद्याद्घनकफे तिक्तैर्विरेकार्थं युतां भिषक् ॥ ८ ॥
मधुरैर्जाङ्गलरसैः श्यामाकयवकोद्रवाः ।
मुद्गादियूषैः शाकैश्च तिक्तकैर्मात्रया हिताः ॥९॥
बलाद्विबृहतीवासाद्राक्षाभिः क्वथितं जलम् ।
पित्तकासापहं पेयं शर्करामधुयोजितम् ॥ १० ॥
शरादिपञ्चमूलस्य पिप्पलीद्राक्षयोस्तथा ।
कषायेण शृतं क्षीरं पिबेत्समधुशर्करम् ॥ ११ ॥
काकोलीबृहतीमेदायुग्मैः सवृषनागरैः ।
पित्तकासे रसक्षीरयूषांश्चाप्युपकल्पयेत् ॥ १२ ॥
द्राक्षामलकखर्जूरं पिप्पलीमरिचान्वितम् ।
पित्तकासापहं ह्येतल्लिह्यान्माक्षिकसर्पिषा ॥१३॥
खर्जूरपिप्पलीद्राक्षासितालाजाः समांशिकाः ।
मधुसर्पिर्युतो लेहः पित्तकासहरः परः ॥ १४ ॥
शठीह्रीबेरबृहतीशर्कराविश्वभेषजम् ।
पिष्ट्वा रसं पिबेत्पूतं सघृतं पित्तकासनुत् ॥१५॥
मधुना पञ्चबीजानां चूर्णं पैत्तिककासनुत् ।
बलिनं वमनेनादौ शीलितं कफकासिनम् ।
यवान्नैः कटुरूक्षोष्णैः कफघ्नैश्चाप्युपाचरेत्॥१६॥
पिप्पलीक्षारकैर्यूषैः कौलत्थैर्मूलकस्य च ।
लघून्यन्नानि भुञ्जीत रसैर्वा कटुकान्वितैः ॥१७॥

(३ शुंठ्यादयोन्ये लेहाः) सोंठ जवासा कांकडाशिंगी दाख कचूर मिसरी इन्होंका तेलमें लेह बनाय चाटै तो भयंकररूप वातकी खांसी दूर होती है। भारंगी दाख कचूर कांकडाशिंगी पीपल सोंठ गुड तेल इन्होंका लेह वातकी खांसीवालोंकों हित है। पित्तकी खांसी हो और पतला कफ हो तब मधुर पदार्थोंसें युतकरी निशोत देनी और करडा कफ हो तो कडुवे पदार्थोंसें युतकरी निशोत जुलाबके अर्थ देनी। मधुर पदार्थ जांगल देशके जीवोंका मांसके रस इन्होंके साथ शामक जव कोदू ये देने और मूंग आदिका यूषके साथ और कडुवे शाकोंके साथ मात्रा करके ये अन्न हित है। खरैंहटी दोनों कटेली वांसा दाख इन्होंकरकै क्वथित किया जलमें खांड और शहद डाल पीवै तो पित्तकी खांसी नष्ट होती है। शर आदि पंचमूल पीपल दाख इन्होंका काढा करकै पकाया हुआ दूधमें शहद और खांड मिलाय पीवै तो पित्तकी खांसी नष्ट होती है। काकोली बडी कटेली मेदा महामेदा वांसा सोंठ इन्होंसें मांसका रस और दूधके यूष बनाने। दाख आंवला खजूरिया पीपल मिरच इन्होंके चूर्णकों शहद और घृतसें मिलाय चाटै तो पित्तकी खांसी नष्ट होती है। खजूरिया अथवा छुहारा पीपल दाख मिश्री धानकी खील ये सब ब-

रावर भाग ले शहद और घृतमें मिलाय चाटै तो पित्तकी खांसी नष्ट होती है। कचूर नेत्रवाला बडीकटेली खांड सोंठ इन्होंका रस निकास और छान उसमें घृत डाल पीवै तो पित्तकी खांसी नष्ट होती है। कमलके बीजोंका चूर्णमें शहद डाल चाटै तो पित्तकी खांसी नष्ट होती है। कफकी खांसीवाला बलवान् रोगी हो तो प्रथम उसकों वमन करावै पीछे जब अन्न कटु रूक्ष गरम ऐसे अन्न और कफनाशक अन्न इन्होंकरकै भोजन करवावै। पीपल और खार पदार्थ कुलथी मूली इन्होंके यूषोंकरकै अथवा तीक्ष्ण पदार्थेसें युत हुये रसोंकरकै हलके अन्नोंका भोजन करै।

(४)पौष्करं कट्फलं भार्गीविश्वपिप्पलिसाधितम्
पिबेत्काथं कफोद्रेके कासे श्वासे च हृद्ग्रहे १८
स्वरसं श्रृङ्गवेरस्य माक्षिकेण समन्वितम्।
पाययेच्छ्वासकासघ्नं प्रतिश्यायकफापहम् ॥१९॥
मुद्गामलाभ्यां यवदाडिमाभ्यां
कर्कन्धुना मूलकशुण्ठकेन।
शुण्ठीकणाभ्यां च कुलत्थकेन
यूषो नवाङ्गः कफरोगहन्ता ॥ २० ॥
पार्श्वशूले ज्वरे श्वासे कासे श्लेष्मसमुद्भवे।
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तं दशमूलीजलं पिबेत् ॥ २१ ॥

(४ पुष्करमूलादिकाथः यूषश्च) पौहकरमूल कायफल भारंगी सोंठ पीपल इन्होंके काथकों कफकी खांसीमें श्वासमें और हृद्ग्रहमें पीवै। अदरकके स्वरसमें शहद डाल पीवै तो श्वास खांसी पीनस और कफ इन्होंका नाश होता है। मूंग आंवला जव अनार वेर मूली सोंठ कचूर पीपल और कुलथी इन्होंका नवांग यूष बनता है यह कफरोगकों नाशता है। पसलीशूल ज्वर श्वास कफकी खांसी इन्होंसें पीपलका चूर्णसें संयुक्त किया दशमूलका काथ पीना।

(५)कट्फलं कत्तृणं भार्गी मुस्तं धान्यं वचाभया।
श्रृङ्गी पार्पटकं शुण्ठी सुराह्वा च जले श्रृतम् २२
मधु हिङ्गुयुतं पेयं कासे वातकफात्मके।
कण्ठरोगे क्षये शूले श्वासहिक्काज्वरेषु च ॥२३॥

(५ कट्फलादिः) कायफल रोहिषतृण भारंगी नागरमोथा धनियां वच हरडै कांकडाशिंगी पित्तपापडा सोंठ देवदारु इन्होंका काथ बनाय उसमें शहद और हींग डाल लाल और कफकी खांसी कंठरोग क्षय शूल श्वास हिचकी और ज्वर इन्होंमें पीवै। यह कट्फलादि है।

(६)कण्टकारीकृतः काथः सकृष्णः सर्वकासहा।
बिभीतकं घृताभ्यक्तं गोशकृत्परिवेष्टितम् ॥२४॥
स्विन्नमग्नौ हरेत्कासं ध्रुवमास्यविधारितम्।
वासकस्वरसः पेयो मधुयुक्तो हिताशिना ॥२५॥
पित्तश्लेष्मकृते कासे रक्तपित्ते विशेषतः।
पिप्पली मधुकं द्राक्षा लाक्षा श्रृङ्गी शतावरी२६
द्विगुणा च तुगाक्षीरी सिता सर्वैश्चतुर्गुणा।
तं लिह्यान्मधुसर्पिर्भ्यां क्षतकासनिवृत्तये ॥२७॥
पिप्पली पद्मकं लाक्षा संपक्वं बृहतीफलम्।
घृतक्षौद्रयुतो लेहः कासश्वासनिबर्हणः॥ २८ ॥
हरीतकीनागरमुस्तचूर्णं
गुडेन तुल्यं गुटिका विधेया।
निवारयत्यास्यविधारितेयं
श्वासं प्रवृद्धं प्रबलं च कासम् ॥ २९ ॥

(६ कंटकार्यादयोन्ये काथाः) कटेलीके काथमें पीपल डाल पीवै तो सब प्रकारकी खांसी नष्ट होती है। बहेडाकों घृतमें भिगोय और गौके गोवरसें लपेट पीछे अग्निमें तपाय मुखमें धारण करै तो खांसी नष्ट होती है। पित्तकफकी खांसीमें और विशेषकरके रक्तपित्तमें शहदसें संयुक्त किया वांसाका स्वरस पीना योग्य है परंतु हित भोजन करता रहै। पीपल मुलहटी दाख लाख कांकडाशिंगी शतावरी ये सब समानभाग और वंशलोचन सबोंसें दुगुना और मिश्री सबोंसें चौगुनी इन्होंकों शहद और घृतमें मिलाय चाटै तो क्षतकी खांसी दूर होती है। पीपल पद्माक लाख पका हुआ बडी कटेलीका फल इन्होंकों घृत और शहदमें मिलाय चाटै तो खांसी और श्वास दूर होते हैं। हरडै सोंठ नागरमोथा इन्होंके चूर्णमें वरावर गुड मिलाय गोली बनाय मुखमें धारण करी जावै तो वढा हुआ श्वासकों और प्रबल खांसीकों दूर करती है।

(७) कर्षः कर्षार्धमथोपलं पलद्वयमथार्धकर्षश्च।
समरिचस्य पिप्पलीनां दाडिमगुडयावशूकाम्३०
सर्वौषधैरसाध्या ये कासाः सर्ववैद्यविवर्जिताः।
अपि पूयं छर्दयतां तेषामिदमौषधं पथ्यम् ॥३१॥

(७ मरिचाद्यं चूर्णम्) मिरच एक तोला पीपल आधा तोला अनार ४ तोले गुड ८ तोले जवाखार आधा तोला इन्होंका चूर्ण करै। सब ओषधोंसें असाध्य और सब वैद्योंसें वर्जित ऐसी खांसीवालोंकों और छर्दि-वालोंकों यह औषध पथ्य है। यह मरिचाद्यचूर्ण है।

(८) लवङ्गजातीफलपिप्पलीनां
भागान्प्रकल्प्याक्षयुतानमीषाम्।
पलार्धमेकं मरिचस्य दद्यात्
पलानि चत्वारि महौषधस्य ॥ ३२ ॥
सितासमं चूर्णमिदं प्रसह्य
रोगानिमानाशु बलान्निहन्यात्।
कासज्वरारोचकमेहगुल्म-
श्वासाग्निमान्द्यग्रहणीप्रदोषान् ॥ ३३ ॥

(८ समशर्करचूर्णम्) लौंग जायफल पीपल ये सब एक एक तोला मिरच २ तोले सोंठ ४ तोले इन्होंका चूर्ण करै उसके बराबर मिसरीसें युत किया यह चूर्ण बलसें खांसी ज्वर अरोचक प्रमेह गुल्म श्वास मंदाग्नि और संग्रहणी इन रोगोंकों नाशता है।

(९) हरीतकी कणा शुण्ठी मरिचं गुडसंयुतम्।
कासघ्नो मोदकः प्रोक्तस्तृष्णारोचकनाशनः ३४
तालीसवह्निदीप्यक-
चविकाशुंठ्यम्लवेतसव्योषैः।
तुल्यैस्त्रिसुगन्धियुतै-
र्गुडेन गुटिका प्रकर्तव्या ॥ ३५ ॥
कासश्वासारोचक-
पीनसहृत्कण्ठवाङ्निरोधेषु।
ग्रहणीगुदोद्भवेषु
गुटिका व्योषान्तिका नाम ॥ ३६ ॥
त्रिसुगन्धमत्र संस्कारत्वाच्चतुर्माषिकं ग्राह्यम्।
मनःशिलालमधुकमांसीमुस्तेङ्गुदैः पिबेत्॥३७॥
धूमं त्र्यहं च तस्यानु सगुडं च पयः पिबेत्।
एष कासान्पृथग्द्वन्द्वसर्वदोषसमुद्भवान् ॥ ३८ ॥
शतैरपि प्रयोगाणां साधयेदप्रसाधितान्।
मनःशिलालिप्तदलं बदर्या घर्मशोषितम् ॥३९॥
सक्षीरं धूमपानात्तु महाकासनिबर्हणम्।
अर्कच्छलशिले तुल्ये ततोऽर्धेन कटुत्रिकम् ४०
चूर्णितं वह्निनिक्षिप्तं पिबेद्धूमं तु योगवित्।
भक्षयेदथ ताम्बूलं पिबेद्दुग्धमथाम्बु वा।
कासाःपञ्चविधा यान्ति शान्तिमाशु न संशयः४१

(९ हरीतक्यादिमोदकः) हरडै पीपल सोंठ मिरच गुड इन्होंका मोदक तृषा और अरोचककों नाशता है। तालीसपत्र चीता अजमोद चव्य सोंठ अम्लवेतस मिरच पीपल दालचिनी इलायची तेजपात ये सब बराबर भाग ले गुडमें गोली बनानी खांसी श्वास अरोचक पीनस हृद्रोध वाणीरोध ग्रहणीरोग ववासीर इन रोगोंमें ये व्योषांतिका गोली हित है। इन गोलियोंमें दालचिनी इलायची तेजपात ये चार मासेभर मिलाना। मनशिल हरताल मुलहटी बालछड नागरमोथा हिंगण इन्होंका धूमाकों तीन दिन पीवै उसके पीछे गुडसहित दूध पीना। यह वातकी पित्तकी कफकी वातपित्तकी वातकफकी पित्तकफकी सन्निपातकी और सैंकडें प्रयोगोंसें असाध्य ऐसी खासियोंकों दूर करता है। मनशिलके कल्कसें वडवेरीके पत्तेकों लीपके घामसें सुखाय पीछे इसका धूमाकों पीकै ऊपर दूध पीवै तो भयंकर खांसीभी दूर होती है। आकका पत्ता और मनशिल बराबर भाग और सोंठ मिरच पीपल आधा भाग इन्होंका चूर्ण कर अग्निके संयोगसें धूमाकों योग जाननेवाला पीवै। पीछे नागरपानकों खावै अथवा दूध वा पानी पीना। इस्सें पांच प्रकारकी खांसी शांत होती है इसमें संशय नहीं।

(१०)मरिचशिलार्कक्षीरै-
र्वार्ताकीं त्वचमाशु भावितां शुष्काम्।
कृत्वा विधिना धूमं
पिबतः कासाः शमं यान्ति ॥ ४२ ॥
दशमूलीकषायेण भार्गीकल्कं पचेद्धृतम्।
दक्षतित्तिरिनिर्यूहे तत्परं वातकासनुत् ॥ ४३ ॥

(१० दशमूलघृतम्) मिरच मनशिल आकका दूध इन्होंकरकै वार्ताकुकी छालकों भिगोय और सुखाय पीछे विधिकरके धूमा कर पीनेसें सब प्रकारकी खांसी नष्ट होती है। दशमूलका क्काथमें भारंगीका कल्क मिलाय उसमें घृतकों पकावै अथवा मुरगा और तीतरका क्काथमें घृतकों पकावै। यह विशेषकरके वातकी खांसीकों नाशता है। यह दशमूलघृत है।

(११) दशमूलाढके प्रस्थं घृतस्याक्षसमैः पचेत् ।
पुष्कराह्वशठीविल्वसुरसव्योषहिङ्गुभिः ॥ ४४ ॥
पेयानुपानं तद्देयं कासे वातकफाधिके ।
श्वासरोगेषु सर्वेषु कफवातात्मकेषु च ॥ ४५ ॥

(११ दशमूलाद्यं घृतम्) २५६ तोलेभर दशमूलके क्काथमें पौहकरमूल कचूर वेलगिरी कणगूगल सोंठ मिरच पीपल ये सब एकएक तोलाभर ले उसमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । यह पेय अनुपानके साथ देना वातकफकी अधिकतावाली खांसीमें और सबप्रकारके श्वासरोगोंमें और कफवातके रोगोंमें हित है ।

(१२) दशमूलीचतुःप्रस्थे रसे प्रस्थोन्मितं हविः ।
सक्षारैः पञ्चकोलैस्तु कल्कितं साधु साधितम् ४६
कासहृत्पार्श्वशूलघ्नं हिक्काश्वासनिवर्हणम् ।
कल्कं षट्पलमेवात्र ग्राहयन्ति भिषग्वराः ॥४७॥

(१२ दशमूलषट्पलघृतम्) २५६ तोलेभर दशमूलके रसमें ६४ तोलेभर घृत और जवाखार पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंका कल्क मिलाय घृत सिद्ध करना । यह खांसी हृच्छूल पसलीशूल हिचकी श्वास इन्होंकों नाशता है । यहां वैद्यवर २४ तोलेभर कल्कका ग्रहण करतेहैं ।

(१३)कण्टकारीगुडूचीभ्यां पृथक् त्रिंशत्पलाद्रसे ।
प्रस्थः सिद्धो घृताद्वातकासनुद्वह्निदीपनः ॥४८॥
घृतं रास्नाबलाव्योषश्वदंष्ट्राकल्कपाचितम् ।
कण्टकारीरसे सर्पिः पञ्चकासनिषूदनम् ॥ ४९ ॥

(१३ कंटकारीघृतम्) कटेली गिलोय इन्होंके १२० तोलेभर क्काथमें ६४ तोलेभर घृत सिद्ध करना । यह वायकी खांसीकों नाशता है और अग्निकों जगाता है । रायशन खरैंहटी सोंठ मिरच पीपल गोखरू इन्होंके कल्कमें और कटेलीके रसमें घृत सिद्ध करना । यह पांच प्रकारकी खांसियोंकों दूर करता है । यह कंटकारी घृत है।

(१४)सपत्रमूलशाखायाः कण्टकार्या रसाढके ।
घृतप्रस्थं बलाव्योषविडङ्गशठीचित्रकैः ॥ ५० ॥
सौवर्चलयवक्षारविल्वामलकपुष्करैः ।
वृश्चीरबृहतीपथ्यायमानीदाडिमर्द्धिभिः ॥ ५१ ॥
द्राक्षापुनर्नवाचव्यधन्वयासाम्लवेतसैः ।
शृङ्गीतामलकीभार्गीरास्नागोक्षुरकैः पचेत् ॥५२॥
कल्कैस्तु सर्वकासेषु हिक्काश्वासे च शस्यते ।
कण्टकारीघृतं सिद्धं कफव्याधिविनाशनम् ५३

(१४ बृहत्कंटकारीघृतम्) पत्ते मूल और शाखासहित कटेलीके २५६ तोलेभर रसमें ६४ तोलेभर घृत और खरैंहटी सोंठ मिरच पीपल वायविडंग कचूर चीता कालानमक जवाखार वेलगिरी आंवला पौंहकरमूल रक्तसांठी बडी कटेली हरडै अजमान अनार ऋद्धि दाख सांठी चव्य जवासा अम्लवेतस कांकडाशिंगी मुसली भारंगी रायशन गोखरू इन्होंके कल्कोंकरके घृतकों पकावै । यह कंटकारीघृत सबप्रकारकी खांसी हिचकी श्वास इन्होंमें श्रेष्ठ है और कफरोगकों नाशता है । यह बृहत्कंटकारीघृत है ।

(१५)द्रोणेऽपां साधयेद्रास्नां दशमूलीं शतावरीम्।
पलिकां मानिकांशांस्त्रीन्कुलत्थान्बदरान्यवान्५४
तुलार्धं चाजमांसस्य तद्दशेषेण तेन च ।
घृताढकं समक्षीरं जीवनीयैः पलोन्मितैः ॥५५॥
सिद्धं तद्दशभिः कल्कैर्नस्यपानानुवासनैः ।
समीक्ष्य वातरोगेषु यथावस्थं प्रयोजयेत् ॥ ५६॥
पञ्चकासान्क्षयं श्वासं पार्श्वशूलमरोचकम् ।
सर्वाङ्गैकाङ्गरोगांश्च सप्लीहोर्ध्वानिलं जयेत् ॥५७॥
जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ शूर्पपर्णिके ।
जीवन्ती मधुकश्चैव दशको जीवको गणः ॥५८॥

(१५ रास्नाद्यं घृतम्) १०२४ तोलेभर जलमें रायशन दशमूल शतावरी ये सब चार चार तोले और कुलथी वेर जव ये छानव छानव तोले और बकराका मांस २०० तोले और जीवनीयगणके औषध ये सब चार चार तोले घृत २५६ तोले इन सबकों मिलाय घृत सिद्ध करना । वातके रोगोंमें नस्य पान अनुवासन इन्होंकरके यथायोग्य प्रयुक्त करना । यह पांचप्रकारकी खांसी क्षय श्वास पसलीशूल अरोचक सर्वांगरोग एकांगरोग तिल्लीरोग ऊर्ध्ववात इन्होंकों जीतता है जीवक ऋषभक मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली ऋद्धि वृद्धि जीवंती महुवा ये दश औषध जीवकगण है । यह रास्नाद्यघृत है ।

(१६)दशमूलीं स्वयंगुप्तां शङ्खपुष्पीं शठीं बलाम् ।
हस्तिपिप्पल्यपामार्गपिप्पलीमूलचित्रकान् ॥५९॥
भार्गीपुष्करमूलं च द्विपलांशं यवाढकम् ।
हरीतकीशतं चैकं जलपञ्चाढके पचेत् ॥ ६० ॥
यवैः स्विन्नैः कषायं तं पूतं तच्चाभयाशतम् ।
पचेद्गुडतुलां दत्त्वा कुडवं च पृथग्घृतात् ॥ ६१ ॥
तैलात्सपिप्पलीचूर्णात्सिद्धशीते च माक्षिकात् ।
लिह्याद्वे चाभये नित्यमतः खादेद्रसायनात् ६२
तद्वलीपलितं हन्याद्वलायुर्मलवर्धनम् ।
पञ्चकासान्क्षयं श्वासं हिक्काः सविषमज्वरान् ६३
हन्यात्तथा ग्रहण्यर्शोहृद्रोगारुचिपीनसान् ।
अगस्त्यविहितं धन्यमिदं श्रेष्ठं रसायनम् ॥६४॥

(१६ अगस्त्यहरीतकी) दशमूल कौंच शंखपुष्पी कचूर खरैंहटी गजपीपल ऊंगा पीपलामूल चीता भारंगी पौंहकरमूल ये सब आठ आठ तोले और जव २५६ तोले और १०० हरडै इन सबकों १२७० तोलेभर जलमें पकावै । जब सीज जावै तब उस क्वाथकों वस्त्रमांहसें छानकै सौ १०० हरडोंमें ४०० तोलेभर गुड और १६ तोलेभर घृत मिलाय पकावै और तेल पीपलका चूर्णभी सोलह सोलह तोलेभर मिलावै । जब सिद्ध होकै शीतल होजावै तब शहद १६ तोलेभर मिलावै फिर नित्यप्रति दोदो हरडै रसायनविधिसें खावै । वह शरीरमें वली और वालोंके सुपेदपनेकों नाशताहै और वल आयु और मलकों बढाताहै और पांचप्रकारकी खांसी क्षय श्वास हिचकी विषमज्वर संग्रहणी ववासीर हृद्रोग अरुचि पीनस इन्होंकों नाशताहै यह अगस्त्यमुनिका रचा रसायन धन्य है और श्रेष्ठ है यह अगस्त्यहरीतकी है ।

(१७)समूलपुष्पच्छदकण्टकार्या-
स्तुलां जलद्रोणपरिप्लुतां च ।
हरीतकीनां च शतं निदध्या-
दथात्र पक्त्वा चरणावशेषम् ॥ ६५ ॥
गुडस्य दत्त्वा शतमेतदग्नौ
विपक्वमुत्तीर्य ततः सुशीते ।
कटुत्रिकं च द्विपलप्रमाणं
पलानि षट् पुष्परसस्य तत्र ॥ ६६ ॥
क्षिपेच्चतुर्जातपलं यथाग्नि
प्रयुज्यमानो विधिनावलेहः ।
वातात्मकं पित्तकफोद्भवं च
द्विदोषकासानपि यांस्त्रिदोषान् ॥ ६७ ॥
क्षयोद्भवं च क्षतजं च हन्यात्
सपीनसश्वासमुरःक्षतं च ।
यक्ष्माणमेकादशरूपमुग्रं
भृगूपदिष्टं हि रसायनं स्यात् ॥ ६८ ॥
इति कासरोगचिकित्सा ।

(१७ व्याघ्रीहरीतकी) मूल पुष्प पत्ते इन्होंसहित ४०० तोलेभर कटेली लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें युत करै औरहरडै १०० इन सबकों मिलाके पकावै। जब चौथाई भाग शेष रहै तब गुड ४०० तोलेभर देकै पकावै । पीछे उतार जब शीतल होजावै तब सोंठ मिरच पीपल आठ तोले पुष्पोंका शहद २४ तोले और दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर इन्होंका चूर्ण ४ तोले इन्होंका अवलेह बनाय जठराग्निके अनुसार विधि करके प्रयुक्त करै । यह वातकी खांसी पित्तकी खांसी कफकी खांसी दोदोषोंकी खांसी त्रिदोषकी खांसी क्षयकी खांसी क्षतकी खांसी पीनस श्वास छातीका फटना ग्यारह प्रकारके रूपोंवाला भयंकर राजरोग इन्होंकों नाशता है यहभृगुजीनें कहा रसायन है । यह व्याघ्रीहरीतकी है ।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां कासरोगचिकित्सा ।

अथ हिक्काश्वासाधिकारः १२

अब हिक्का अर्थात् हिचकी और श्वास रोगका अधिकार कहते है ।

(१) हिक्काश्वासातुरे पूर्वं तैलाक्ते स्वेद इष्यते ।
स्निग्धैर्लवणयोगैश्च मृदुर्वातानुलोमनम् ॥ १ ॥
ऊर्ध्वाधःशोधनं शक्ते दुर्बले शमनं मतम् ।
कोलमज्जाञ्जनं लाजातिक्ताकाञ्चनगैरिकम्॥ २ ॥
कृष्णा धात्री सिता शुण्ठी काशीसं दधि नाम च ।
पाटल्याः सफलं पुष्पं कृष्णाखर्जूरमुस्तकम् ॥३॥
षडेते पादिका लेह्या हिक्काघ्ना मधुसंयुताः ।
मधुकं मधुसंयुक्तं पिप्पली शर्करान्विता ॥ ४ ॥
नागरं गुडसंयुक्तं हिक्काघ्नं नावनत्रयम् ।
स्तन्येन मक्षिकाविष्ठा नस्यं वालक्तकाम्बुना ॥५॥

योज्यं हिक्काभिभूताय स्तन्यं वा चन्दनान्वितम् ।
मधुसौवर्चलोपेतं मातुलुङ्गरसं पिबेत् ॥ ६ ॥
हिक्कार्तस्य पयश्छागं हितं नागरसाधितम् ।
कृष्णामलकशुण्ठीनां चूर्णं मधुसितायुतम् ॥७॥
मुहुर्मुहुः प्रयोक्तव्यं हिक्काश्वासनिवारणम् ।
हिक्काश्वासी पिबेद्भार्गीं सविश्वामुष्णवारिणा ।
नागरं वा सिता भार्गी सौवर्चलसमन्वितम् ॥ ८ ॥

श्रृङ्गीकटुत्रिकफलात्रयकण्टकारी-
भार्गीसपुष्करजटालवणानि पञ्च ।
चूर्णं पिबेदशिशिरेण जलेन हिक्का-
श्वासोर्ध्ववातकसनारुचिपीनसेषु ॥ ९ ॥

अभयानागरकल्कं
पौष्करयवशूकमरिचकल्कं वा ।
तोयेनोष्णेन पिबे-
च्छ्वासी हिक्की च तच्छान्त्यै ॥ १० ॥

अमृतानागरफञ्जी-
व्याघ्रीपर्णाशसाधितः क्काथः ।
पीतः सकणाचूर्णः
कासश्वासौ जयत्याशु ॥ ११ ॥

(१ हिक्कायामुपायाः) हिचकी और श्वाससें युत हुये रोगीकों प्रथम तेलसें चुपड चिकने पदार्थोंकरकै और नमकके योगोंकरकै कोमल पसीना देना और वातकों अनुलोमित करना हित है। बलवान् रोगी हो तो वमन और जुलाब देना और निर्बल रोगी हो तो शमन अर्थात् शांतिकारक औषध करना। बेरकी गिरी सुरमा धानकी खील कुटकी कचनार गेरू पीपल आंवला मिश्री सोंठ हिराकसीस कैथ पाडलका पुष्प और फल पीपल खजूरिया अथवा छुहारा नागरमोथा ये छह अवलेह शहदसें युत किये हिचकीकों नाशते हैं शहदसें संयुक्त महुवा खांडसें युत करी पीपल गुडसें युत कियी सोंठ ये तीनों नस्य हिचकीकों नष्ट करते हैं। स्त्रीकी चूंचीके दूधमें मांखीकी वींट मिलाकै लिया नस्य अथवा लाखके पानीसें लिया नस्य अथवा स्त्रीकी चूंचीके दूधमें चंदन मिलाकै लिया नस्य हिचकीकों नाशता है। शहद कालानमक इन्होंसें युत किया विजोराका रस अथवा हिचकीरोगवालेकों सोंठसें साधित किया बकरीका दूध हित है। पीपल आंवला सोंठ इन्होंका चूर्ण शहद और मिश्रीसें युत वारंवार दिया जावै तो हिचकी और श्वासकों दूर करता है। भारंगी और सोंठकों अथवा सोंठ भारंगी कालानमककों गरम पानीके साथ हिचकी और श्वासवाला पीवै। कांकडाशिंगी सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला कटेली भारंगी पौंहकरमूल वालछड पांचोंनमक इन्होंका चूर्ण बनाय गरम पानीके साथ हिचकी श्वास ऊर्ध्ववात खांसी अरुचि और पीनस इन्होंमें पीवै। हरडै और सोंठके कल्ककों अथवा पौंहकरमूल जवाखार मिरच इन्होंके कल्ककों गरम पानीके साथ शांतिके लिये श्वास और हिचकीवाला पीवै। गिलोय सोंठ भारंगी बडी कटेली थोडे पत्तोंवाली तुलसी इन्होंसें साधित किया काथमें पीपलका चूर्ण डाल पीवै तो खांसी और श्वासकों शीघ्र जीतता है।

(२)दशमूलीकषायस्तु पुष्करेण विचूर्णितः ।
श्वासकासप्रशमनः पार्श्वहृच्छूलनाशनः ॥ १२ ॥
कुलत्थनागरव्याघ्रीवासाभिः क्कथितं जलम् ।
पीतं पुष्करसंयुक्तं हिक्काश्वासनिवर्हणम् ॥१३॥
गुडं कटुकतैलेन मिश्रयित्वा समं लिहेत् ।
त्रिसप्ताहप्रयोगेण श्वासं निर्मूलतो जयेत् ॥१४॥

श्रृङ्गीमहौषधकणाघनपुष्कराणां
चूर्णं शठीमरिचशर्करया समेतम् ।
क्काथेन पीतममृतावृषपञ्चमूल्याः
श्वासं त्र्यहेण शमयेदतिदोषमुग्रम् ॥१५॥

हरिद्रां मरिचं द्राक्षां गुडं रास्नां कणां शठीम् ।
जह्यात्तैलेन विलिहञ्छ्वासान्प्राणहरानपि ॥ १६॥

हिक्कां हरति प्रबलां
प्रबलं श्वासं च नाशयत्याशु ।
शिखिपुच्छभूतिपिप्पली-
चूर्णं मधुमिश्रितं लीढम् ॥ १७ ॥

कर्षं कलिफलचूर्णं
लीढं चात्यन्तमिश्रितं मधुना ।
अचिराद्धरति श्वासं
प्रबलामुद्धंसिकां चैव ॥ १८ ॥

(२ दशमूलक्काथः) दशमूलके काथमें पौंहकरमूलका चूर्ण डाल पीवै तो श्वास खांसी पसलीशूल और हृच्छूल इन्होंका नाश होता है। कुलथी सोंठ कटेली वांसा इन्होंके काथमें पौंहकरमूलका चूर्ण डाल पीवै तो हिचकी

और श्वासका नाश होता है। गुड और तेलकों बराबर भाग ले मिलाके इक्कीस दिन प्रयोगसें चाटै तो जडसें श्वासकों जीतता है। कांकडाशिंगी सोंठ पीपल नागरमोथा पौंहकरमूल कचूर मिरच इन्होंके खांडसहित चूर्णकों गिलोय वांसा पंचमूल इन्होंका क्वाथके साथ तीन दिन पीवै तो भयंकर श्वासभी नष्ट होता है। हलदी मिरच दाख गुड रायशन पीपल कचूर इन्होंकों तेलमें मिलाय चाटै तो प्राणहरनेवाले श्वासभी नष्ट होतेहैं। मोरके पंखका भस्म और पीपलके चूर्णमें शहद मिलाय चाटै तो भयंकर हिचकी और भयंकर श्वासकों शीघ्र जीतता है। दशमासेभर बहेडाके चूर्णकों लेकै अच्छीतरह शहदमें मिलाय चाटै तो श्वासकों और भयंकर हिचकीकों शीघ्र नाशता है।

(३) हिंस्राविडङ्गपूतीकत्रिफलाव्योषचित्रकैः ।
द्विक्षीरं सर्पिषः प्रस्थं चतुर्गुणजलान्वितम् १९
कोलमात्रैः पचेत्तद्धि कासश्वासं व्यपोहति ।
अर्शांस्यरोचकं गुल्मं शकृद्भेदं क्षयं तथा ॥ २०॥

(३ हिंस्राद्यं घृतम्) वालछड वायविडग करंजुआ हरडै बहेडा आंवला सोंठ मिरच पीपल चीता ये सब आठ आठ मासे दूध १२८ तोले घृत ६४ तोले पानी २५६ तोले इन सबकों मिलाय घृतकों पकावै वह खांसी श्वास ववासीर अरोचक गुल्मविड्भेद और क्षय इन्होंकों नाशता है। यह हिंस्राद्यघृत है।

(४) तेजोवत्यभया कुष्ठं पिप्पली कटुरोहिणी ।
भूतिकं पौष्करं मूलं पलाशं चित्रकं शठी॥२१॥
सौवर्चलं तामलकी सैन्धवं बिल्वपेषिका ।
तालीसपत्रं जीवन्ती वचा तैरक्षसंमितैः ॥ २२ ॥
हिङ्गुपादैर्घृतं प्रस्थं पचेत्तोयचतुर्गुणे ।
एतद्यथाबलं पीत्वा हिक्काश्वासौ जयेन्नरः ॥२३॥
शोथानिलार्शोग्रहणीहृत्पार्श्वरुज एव च ।

(४ तेजोवत्याद्यं घृतम्) तेजोवंती हरडै कूट पीपल कुटकी करंजुवा पौंहकरमूल केशू चीता कचूर कालानमक मुसली सेंधानमक वेलगिरी तालीशपत्र जीवंती वच ये सब एक एक तोलेभर लेने और तीन मासेभर हींग मिलाय चौगुना पानीमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै इसकों बलके अनुसार पान करकै मनुष्य हिचकी श्वास शोजा वातका ववासीर संग्रहणी हृच्छूल और पसलीशूल इन्होंकों जीतता है। यह तेजोवत्याद्यघृत है।

(५)शतं संगृह्य भार्ग्यास्तु दशमूल्यास्तथापरम् २४
शतं हरीतकीनां च पचेत्तोयचतुर्गुणे ।
पादावशेषे तस्मिंस्तु रसे वस्त्रपरिस्रुते ॥ २५ ॥
आलोड्य च तुलां पूतां गुडस्य त्वभयां ततः ।
पुनः पचेत्तु मृद्वग्नौ यावल्लेहत्वमागतम् ॥ २६ ॥
शीतेषु मधुनश्चात्र षट्पलानि प्रदापयेत् ।
त्रिकटु त्रिसुगन्धं च पलिकानि पृथक् पृथक् २७
कर्षद्वयं यवक्षारं संचूर्ण्य प्रक्षिपेत्ततः ।
भक्षयेदभयामेकां लेहस्यार्धपलं लिहेत् ॥ २८ ॥
श्वासं सुदारुणं हन्ति कासं पञ्चविधं तथा ।
स्वरवर्णप्रदो ह्येष जठराग्नेश्च दीपनः ॥ २९ ॥
पलोल्लेखागते माने न द्वैगुण्यमिहेष्यते ।
हरीतकीशतस्यात्र प्रस्थत्वादाढकं जलम् ॥३०॥

(५ भार्गीगुडः) भारंगी४००तोले दशमूल ४००तोले हरडै १०० इन्होंकों चौगुने पानीमें पकावै जब पकनेमें चौथाई भाग शेष रहै तब रसकों वस्त्र मांहसेंछान उसमें ४०० तोलेभर गुडकों मिलाय और आलोडित कर हरडोंकों डाल कोमल अग्निपर फिर पकावै जबतक लेह बनै फिर शीतल होनेपर शहद २४ तोलेभर मिलावै। सोंठ मिरच पीपल दालचिनी इलायची तेजपात ये सब अलग अलग चार तोलेभर लेने, जवाखार २० मासेभर मिलाय चूर्ण कर मिलावै पीछे एक हरडैकों खाकै चार चार तोलेभर लेहकों चाटै तो भयंकर श्वास और पांचप्रकारकी खांसी नष्ट होतीहै। यह स्वरकों और वर्णकों देता है और जठराग्निकों दीपन करता है। पलके लिखनेसें मानमें दुगुना नहीं वांछित है और सौ हरडै प्रस्थ परिमित होती है इसवास्ते आढक अर्थात् २५६ तोलेभर पानी लेना। यह भार्गीगुड है।

(६)कुलत्थं दशमूलं च तथैव द्विजयष्टिका ।
शतं शतं च संगृह्य जलद्रोणे विपाचयेत् ३१
पादावशेषे तस्मिंस्तु गुडस्यार्धतुलां क्षिपेत् ।
शीतीभूते च पक्वे च मधुनोऽष्टौ पलानि च ३२
षट्पलानि तुगाक्षीर्याः पिप्पल्याश्च पलद्वयम् ।
त्रिसुगन्धिकयुक्तं तत्खादेदग्निबलं प्रति ॥ ३३ ॥
श्वासं कासं ज्वरं हिक्कां नाशयेत्तमकं तथा ।
प्रतिशतं द्रोणनियमाज्ज्ञेयं द्रोणत्रयं त्विह ३४

इति हिक्काश्वासचिकित्सा ।

(६ कुलत्थगुडः) कुलथी दशमूल भारंगी इन सबकों चारसौ चारसौ तोलेभर ले १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै । जब चौथाई भाग शेष रहै तब २०० तोलेभर गुड मिलावै। जब पककर शीतल होजावै तब ३२ तोलेभर शहद डालै । वंशलोचन २४ तोले पीपल १२ तोले पीछे दालचिनी इलायची और तेजपात मिलाके जठराग्निका बलके अनुसार खावै । यह श्वास खांसी ज्वर हिचकी तमक श्वास इन्होंकों नाशता है सौ पलके प्रति एक द्रोण इसनियमसें यहां तीन द्रोण पानी लेना । यह कुलत्थगुड है

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां हिक्काश्वासचिकित्सा ।

अथ स्वरभेदाधिकारः १३

अब स्वरभेदका अधिकार कहतेहै ।

(१)वाते सलवणं तैलं पित्ते सर्पिः समाक्षिकम् ।
कफे सक्षारकटुकं क्षौद्रं कुडव इष्यते ॥ १ ॥
गले तालुनि जिह्वायां दन्तमूलेषु चाश्रितः ।
तेन निष्कृष्यते श्लेष्मा स्वरश्चास्य प्रसीदति २
आद्ये कोष्णं जलं पेयं दग्ध्वा घृतगुडौदनम् ।
क्षीरान्नपानं पित्तोत्थे पिबेत्सर्पिरतन्द्रितः ॥ ३ ॥
पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचं विश्वभेषजम् ।
पिबेन्मूत्रेण मतिमान्कफजे स्वरसंक्षये ॥ ४ ॥
स्वरोपघाते मेदोजे कफवद्विधिरिष्यते ।
क्षयजे सर्वजे चापि प्रत्याख्याय समाचरेत् ॥५॥

(१ स्वरभेदोपायाः) वातके स्वरभेदमें नमकसहित तेल पित्तके स्वरभेदमें शहदसहित घृत और कफके स्वरभेदमें खार तीक्ष्ण शहद कवल यह कवल हैं । गल तालुवा जीभ और मसूढे इन्होंमें आश्रित हुआ कफ इस कवलसें निकलता है और इस रोगीका स्वर उत्तम हो जाता है। वातके स्वरभेदमें घृत गुडसहित चावल खाके अल्प गरम जल पीना उचित है । पित्तके स्वरभेदमें घृत दूधसहित अन्नपान करके पीछे सावधान हुआ रोगी घृतकों पीवै । पीपल पीपलामूल मिरच सोंठ इन्होंकों गोमूत्रके साथ कफके स्वरभेदमें पीवै । मेदसें उपजे स्वरभेदमें कफके स्वरभेदकी तरह क्षयसें और संनिपातसें उपजे स्वरभेदमें असाध्य जानकर विधि करनी ।

(२) चव्याम्लवेतसकटुत्रिकतिन्तिडीक-
तालीसजीरकतुगादहनैः समांशैः ।
चूर्णं गुडप्रमृदितं त्रिसुगन्धियुक्तं
वैस्वर्यपीनसकफारुचिषु प्रशस्तम् ॥ ६ ॥
तैलाक्तं स्वरभेदे वा खदिरं धारयेन्मुखे ।
पथ्यां पिप्पलियुक्तां वा संयुक्तां नागरेण वा ७
अजमोदां निशां धात्रीं क्षारं वह्निं विचूर्ण्य च ।
मधुसर्पिर्युतं लीढ्वा स्वरभेदं व्यपोहति ॥ ८ ॥
कलितरुफलसिन्धुकणा
चूर्णं तक्रेण लीढमपहरति ।
स्वरभेदं गोपयसा
पीतं वामलकचूर्णं च ॥ ९ ॥
बदरीपत्रकल्कं वा घृतभृष्टं ससैन्धवम् ।
स्वरोपघाते कासे च लेहमेनं प्रयोजयेत् ॥ १०॥
शर्करामधुमिश्राणि शृतानि मधुरैः सह ।
पिबेत्पयांसि यस्योच्चैर्वदतोऽभिहतः स्वरः॥११॥

(२ चव्याद्यं चूर्णम्) चव्य अम्लवेतस सोंठ मिरच पीपल अमली तालीसपत्र जीरा वंशलोचन चीता ये बराबर भाग लेके चूर्ण कर गुडमें मिलाय पीछे दालचिनी इलायची तेजपात इन्होंके चूर्णसें युत कर स्वरभेद पीनस कफ और अरुचि आदिमें श्रेष्ठ है अथवा स्वरभेदमें तेलविषै भिगोया खैर मुखमें धारण करना अथवा पीपलसहित हरडै अथवा सोंठसहित हरडैकों मुखमें धारण करै । अजमोद हलदी आंवला जवाखार चीता इन्होंका चूर्ण कर शहद और घृतसें मिलाय चाटै तो स्वरभेद नष्ट होता है। बहेडाका फल सेंधानमक पीपल इन्होंका चूर्णकों तक्रमें मिलाय चाटै अथवा गौका दूधके साथ आंवलाके चूर्णकों पीवै तो स्वरभेद नष्ट होताहै । अथवा वडवेरीके पत्तोंका कल्ककों घृतमें भून और सेंधानमक मिलाय स्वरभेदमें और खांसीमें प्रयुक्त करै । ऊंचा प्रकार करकै बोलनेसें जिसका स्वर नष्ट हो गया हो वह खांड शहद इन्होंसें युत किये क्वाथोंकों मधुर पदार्थोंके साथ पीवै ।

(३)व्याघ्रीस्वरसविपक्वं
रास्नावाट्यालगोक्षुरव्योषैः
सर्पिः स्वरोपघातं
हन्यात्कासं च पञ्चविधम् ॥ १२ ॥

शुष्कद्रव्यमुपादाय स्वरसानामसम्भवे ।
वारिण्यष्टगुणे साध्यं ग्राह्यं पादावशेषितम् १३

(३ कंटकारीघृतम्) कटेलीके स्वरसमें रायशन खरैंहटी गोखरू सोंठ मिरच पीपल इन्होंके कल्कसें घृतकों पकावै यह स्वरभेदकों और पांचप्रकारकी खांसीकों नाशता है । स्वरसके अभावमें सूखाहुवा द्रव्यकों ले आठगुण पानीमें पकावै । जब चौथाई भाग शेष रहै तब ग्रहण करना । यह कंटकारीघृत है ।

(४)भृङ्गराजामृतावल्ली(?)
वासकदशमूलकासमर्दरसैः ।
सर्पिः सपिप्पलीकं
सिद्धं स्वरभेदकासजिन्मधुना ॥ १४ ॥
इति स्वरभेदचिकित्सा ।

(४ भृंगराजाद्यं घृतम्) भंगरा गिलोय अजमोद वांसा दशमूल कासविंदा इन्होंके रसोंकरकै घृतकों सिद्धकर उसमें पीपलका चूर्ण मिलाय शहदके साथ चाटै तो स्वरभेद और खांसीकों जीतताहै । यह भृंगराजाद्यघृत है।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां स्वरभेदचिकित्सा ।

अथारोचकाधिकारः १४

अब अरोचक अधिकार कहतेहै ।

(१) वान्ति समीरणे पित्ते विरेकं वमनं कफे ।
कुर्याद्धृद्यानुकूलानि हर्षणं च मनोघ्नजे ॥ १ ॥
वान्तो वचाद्भिरनिले विधिवत्पिबेत्तु
स्नेहोष्णतोयमदिरान्यतमेन चूर्णम् ।
कृष्णाविडङ्गयवभस्महरेणुभार्गी-
रास्नैलहिङ्गुलवणोत्तमनागराणाम् ॥ २ ॥
पैत्ते गुडाम्बुमधुरैर्वमनं प्रशस्तं
लेहः ससैन्धवसितामधुसर्पिरिष्टः ।
निम्बाम्बु छर्दितवतः कफजे तु पानं
राजद्रुमाम्बु मधुना सह दीप्यकाढ्यम् ॥३॥
चूर्णं यदुक्तमथवानिलजे तदेव
सर्वैश्च सर्वकृतमेवमुपक्रमेच्च ॥ ४ ॥

(१ अरोचके उपायाः) वातके अरोचकमें वमन करना पित्तके अरोचकमें जुलाब कराना और कफके अरोचकमें वमन कराना और मनके बिगडनेसें उपजे अरोचकमें मनकों प्रसन्न करना । वातके अरोचकमें वचके क्वाथ करकै वांत हुआ रोगी स्नेह गरमपानी मदिरा इन्होंमांहसें एककोईसा करकै पीपल वायविडंग जवोंका भस्म रेणुकबीज भारंगी रायशन एलवा सेंधानमक सोंफ इन्होंके चूर्णकों पीवै ।पित्तके अरोचकमें गुडका शर्बत मधुर पदार्थ इन्होंकरकै वमन कराना श्रेष्ठ है और सेंधानमक मिश्री शहद घृत ये हित हैं । नींबका पानीसें वमन लेनेवालाकों कफके अरोचकमें अमलतासके क्वाथमें शहद और अजमोदका चूर्ण मिलाय पीवै अथवा वातके अरोचकमें जो चूर्ण पूर्व कहा है वही देना । सन्निपातके अरोचकमें सब ओषधोंसें चिकित्सा करनी ।

(२) कुष्ठसौवर्चलाजाजी शर्करामरिचं विडम् ।
धात्र्येलापद्मकोशीरपिप्पलीचन्दनोत्पलम् ॥ ५ ॥
लोध्रं तेजोवती पथ्या त्र्यूषणं सयवाग्रजम् ।
आर्द्रदाडिमनिर्यासश्चाजाजीशर्करायुतः ॥ ६ ॥
सतैलमाक्षिकाश्चैते चत्वारः कुडवग्रहाः ।
चतुरोऽरोचकान्हन्युर्वाताद्यैकजसर्वजान् ॥ ७ ॥
त्वङ्मुस्तमेलाधान्यानि मुस्तमामलकानि च ।
त्वक्च दार्वी यमान्यश्च पिप्पल्यस्तेजवत्यपि ॥८॥
यमानी तिन्तिडीकं च पञ्चैते मुखशोधनाः ।
श्लोकपादैरभिहिताः सर्वारोचकनाशनाः ॥ ९ ॥
अम्लिका गुडतोयं च त्वगेलामरिचान्वितम् ।
अभक्तच्छन्दरोगेषु शस्तं कुडवधारणम् ॥ १० ॥
कारव्यजाजीमरिचं द्राक्षावृक्षाम्लदाडिमम् ।
सौवर्चलं गुडं क्षौद्रं सर्वारोचकनाशनम् ॥११॥
त्रीण्यूषणानि त्रिफला रजनीद्वयं च
चूर्णीकृतानि यवशूकविमिश्रितानि ।
क्षौद्रान्वितानि वितरेन्मुखधारणार्थ-
मन्यानि तिक्तकटुकानि च भेषजानि ॥ १२ ॥
विट्चूर्णमधुसंयुक्तो रसो दाडिमसम्भवः ।
असाध्यामपि संहन्यादरुचिं वक्त्रधारितः ॥१३॥

(२ अरोचकनिरसनोपायाः) कूठ कालानमक जीरा खांड मिरच वायविडंग आंवला इलायची पद्माक

खस पीपल चंदन कमल लोध तेजोवंती हरडै सोंठ मिरच जवाखार अदरक अनारका सत्तु जीरा खांड तेल और शहदसहित ये चारों कवलग्रह वातआदि एकदोषज और द्विदोषज और त्रिदोषज ऐसे अरोचकरोगोंकों नाशते हैं। दालचिनी नागरमोथा इलायची धनियां नागरमोथा और आंवला दालचिनी दारुहलदी अजमान पीपल और तेजोवंती। अजमान और अम्ली ये पांचों कवलमुखकों शोधते हैं और अरोचककों नाशते हैं। अमली और गुडका शर्बतमें दालचिनी इलायची और मिरच मिलाकै कवल बनाय धारण करावै यह अभक्तच्छंदरोगोंमें श्रेष्ठ है । अजमोद जीरा मिरच दाख अम्लवेतस अनार कालानमक गुड शहद इन्होंका कवल सब प्रकारके अरोचकोंकों नाशता है। सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला हलदी दारुहलदी जवाखार इन्होंका चूर्ण कर शहदमें मिलाय मुखमें धारण करै तथा कडुवे और चर्चरे अन्य औषधभी मुखमें धारण करने । मनयारीनमकका चूर्ण और शहदसें युत किया अनारका रस मुखमें धारण किया जावै तो असाध्यरूप अरुचिकों नाशता है।

(३)यमानी तिन्तिडीकं च नागरं चाम्लवेतसम्।
दाडिमं बदरं चाम्लं कार्षिकाण्युपकल्पयेत् १४
धान्यसौवर्चलाजाजी वराङ्गं चार्धकार्षिकम्।
पिप्पलीनां शतं चैकं द्वे शते मरिचस्य च॥१५॥
शर्करायाश्च चत्वारि पलान्येकत्र चूर्णयेत्।
जिह्वाविशोधनं हृद्यं तच्चूर्णं भक्तरोचनम् ॥१६॥
हृत्पीडापार्श्वशूलघ्नं विबन्धानाहनाशनम्।
कासश्वासहरं ग्राहि ग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥१७॥

(३ यमानीशाडवः) अजमान अमली सोंठ अम्लवेतस अनार बेर बिजोरा ये सब एक एक तोला लेने। पीपल ४०० तोले मिरच २०० तोले खांड १६ तोले इन सबका चूर्ण करै। वह चूर्ण जीभकों विशेषकरकै शोधता है सुंदर है। अरोचक हृत्पीडा पसलीशूल विबंध अफारा खांसी श्वास संग्रहणी बवासीरके विकार इन्होंकों नाशता है और मलकों करडा करता है। यह यमानीशाडव है।

(४) अष्टादश शिग्रुफला-
न्यथ दशमरिचानि विंशतिश्च पिप्पल्यः।
आर्द्रकपलं गुडपलं
प्रस्थत्रयमारनालवृक्षस्य ॥ १८ ॥
एतद्विडलवणयुतं
खजाहतं सुरभि गन्धाढ्यम्।
व्यञ्जनसहस्रघाति
ज्ञेयं कलहंसकं नाम ॥ १९ ॥

इत्यरोचकचिकित्सा ।

(४ कलहंसकः) सहोंजनाके फल ७२ तोले मिरच ४०० तोले पीपल ८० तोले अदरक ४ तोले गुड ४ तोले और कांजी १९२ तोले इसमें मनयारीनमक मिलाय मंथासें विलोडनकर दालचिनी इलायची तेजपात इन्होंके चूर्णकों मिलावै यह हजार व्यंजनोंकों नाशता है। इसका कलहंस नाम है।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां अरोचकचिकित्सा।

अथ छर्द्यधिकारः १९

अब छर्दिअधिकार कहतेहै।

(१)आमाशयोत्क्लेशभवा हि सर्वा-
श्छर्द्यो मता लङ्घनमेव तस्मात्।
प्राक्कारयेन्मारुतजां विमुच्य
संशोधनं वा कफपित्तहारि ॥ १ ॥
हन्यात्क्षीरोदकं पीतं छर्दिं वमनसम्भवाम्।
ससैन्धवं पिबेत्सर्पिर्वातच्छर्दिनिवारणम् ॥ २ ॥
मुद्गामलकयूषं वा ससर्पिष्कं ससैन्धवम्।
यवागूं मधुमिश्रां वा पञ्चमूलीकृतां पिबेत् ॥३॥

(१ छर्द्युपायाः) आमाशयमें ग्लानि पहुंचनेसें उपजनेवाली सब प्रकारकी छर्दि होतीहै। तिसकारणसें वातकी छर्दिकों छोड अन्य सब प्रकारकी छर्दियोंमें प्रथम लंघन अथवा कफपित्तहारि संशोधन कराना। दूध पानीसें मिलाकै पीयाजावै तो वातकी छर्दिकों नाशता है और सेंधानमकसें युत किया घृत वातकी छर्दिकों नाशता है। अथवा मूंग और आंवलाके यूषमें घृत और सेंधानमक डाल पीवै अथवा पंचमूलसें बनाई गुडयाणीमें शहद डाल पीवै।

(२) पित्तात्मिकायां त्वनुलोमनार्थं
द्राक्षाविदारीक्षुरसैस्त्रिवृत्स्यात् ।
कफाशयस्थं त्वतिमात्रवृद्धं
पित्तं जयेत्स्वादुभिरूर्ध्वमेव ॥ ४ ॥
शुद्धस्य काले मधुशर्कराभ्यां
लाजैश्च मन्थं यदि वापि पेयाम् ।
प्रदापयेन्मुद्गरसेन वापि
शाल्योदनं जाङ्गलजै रसैर्वा ॥ ५ ॥
चन्दनेनाक्षमात्रेण संयोज्यामलकीरसम् ।
पिबेन्माक्षिकसंयुक्तं छर्दिस्तेन निवर्तते ॥ ६ ॥

(२ पित्तछर्द्युपायाः) पित्तकी छर्दिमें अनुलोमनके अर्थ दाख विदारीकंद ईख इन्होंके रसमें निशोत डाल पीवै तो कफाशयमें स्थित और अत्यंत बढाहुआ ऐसे ऊर्ध्वपित्तकों जीतता है परंतु स्वादुपदार्थोंके संग पीवै। मनुष्यकों जुलाब कराके शहद खांड और धानकी खील इन्होंकरकै मंथ और पेया बनादेवै अथवा मूंगका रसके साथ अथवा जांगलदेशके जीवके मांसका रसके साथ शालिचावलकों देवै । एक तोलाभर चंदनकों आंवलाके रसमें मिलाय पीछे उसमें शहद डाल पीवै तो छर्दि दूर होती है ।

(३) चन्दनं च मृणालं च वालकं नागरं वृषम् ।
सतण्डुलोदकक्षौद्रं पीतः कल्को वमिं जयेत् ॥ ७ ॥
कषायो भृष्टमुद्गस्य सलाजमधुशर्करः ।
छर्द्यतीसारतृड्दाहज्वरघ्नः संप्रकाशितः ॥ ८ ॥
हरीतकीनां चूर्णं तु लिह्यान्माक्षिकसंयुतम् ।
अधोभागीकृते दोषे छर्दिः क्षिप्रं निवर्तते ॥ ९ ॥
गुडूचीत्रिफलारिष्टपटोलैः क्वथितं पिबेत् ।
क्षौद्रयुक्तं निहन्त्याशु छर्दिं पित्ताम्लसम्भवाम्
क्काथः पर्पटजः पीतः सक्षौद्रश्छर्दिनाशनः ॥ ११ ॥

(३ चंदनकल्को मुद्गादिक्काथश्च) चंदन कमलकी दांडी नेत्रवाला सोंठ वांसा इन्होंकों चावलके पानीसें पीस कल्क बनाय उसमें शहद डाल पीवै तो छर्दिका नाश होताहै । भुनीहुई मूंगोंके क्काथमें धानकी खील शहद और खांड डाल पीवै तो छर्दि अतीसार तृषा दाह और ज्वर इन्होंकों नाशता है। हरडोंके चूर्णकों शहदमें मिलाय चाटै तो दोष अधोभागमें होकै छर्दि शीघ्रही दूर होतीहै । गिलोय त्रिफला नींब परवल इन्होंका काढा बनाय उसमें शहद डाल पीवै तो पित्ताम्लसें उपजी छर्दि शीघ्र दूर होती है ।

(४)कफात्मिकायां वमनं तु शस्तं
सपिप्पलीसर्षपनिम्बतोयैः ।
पिण्डीतकैः सैन्धवसंप्रयुक्तै-
श्छर्द्यां कफामाशयशोधनार्थम् ॥ १२ ॥
विडङ्गत्रिफलाविश्वचूर्णं मधुयुतं जयेत् ।
विडङ्गप्लवशुण्ठीनामथवा श्लेष्मजां वमिम् १३
सजाम्बवं वा बदरस्य चूर्णं
मुस्तायुतां कर्कटकस्य शृङ्गीम् ।
दुरालभां वा मधुसंप्रयुक्तां
लिह्यात्कफच्छर्दिविनिग्रहार्थम् ॥ १४ ॥

(४ कफछर्द्याम्) पित्तपापडाके क्काथमें शहद डाल पीवै तो छर्दिका नाश होताहै । कफकी छर्दिमें पीपल सरसों नींब इन्होंके क्काथोंसें वमन श्रेष्ठ है । परंतु मरुवा और सेंधानमकसें क्काथोंकों प्रयुक्त करै छर्दिमें कफ और आमाशयकों शोधनेके अर्थ वायविडंग त्रिफला सोंठ इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटै तो छर्दिकों जीतता है। वायविडंग क्षुद्रमोथा सोंठ इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटै तो कफकी छर्दिका नाश होताहै । अथवा जामन और बेरका चूर्ण अथवा नागरमोथा कांकडाशिंगी जवासा इन्होंके चूर्णमें शहद डाल चाटै तो कफकी छर्दिका नाश होताहै । नागरमोथा कांकडाशिंगी जवासा इन्होंमें शहद मिलाय तर्पण बनाय चाटै तो कफकी छर्दि दूर होतीहै ।

(५)तर्पणं वा मधुयुतं तिसृणामपि भेषजम् १५
कृतं गुडूच्या विधिवत्कषायं हिमसंज्ञितम् ।
तिसृष्वपि भवेत्पथ्यं माक्षिकेण समायुतम् १६
द्रव्यादापोत्थितात्तोये प्रतप्ते निशि संस्थितात् ।
कषायो योऽभिनिर्याति स शीतः समुदाहृतः १७
षड्भिः पलैश्चतुर्भिर्वा सलिलाच्छीतफाण्टयोः ।
आप्लुतं भेषजपलं रसाख्यायां पलद्वयम् ॥ १८ ॥
श्रीफलस्य गुडूच्या वा कषायो मधुसंयुतः ।
पेयश्छर्दित्रये शीतो मूर्वा वा तण्डुलाम्बुना १९
जम्ब्वाम्रपल्लवगवेधुकधान्यसेव्य-
ह्रीबेरवारि मधुना पिबतोऽल्पमल्पम् ।

छर्दिः प्रयाति शमनं त्रिसुगन्धियुक्ता
लीढा निहन्ति मधुनाथ दुरालभा वा ॥ २० ॥
जातीरसः कपित्थस्य पिप्पलीमरिचान्वितः ।
क्षौद्रेण युक्तः शमयेल्लेहोऽयं छर्दिमुल्वणाम् २१
पिष्ट्वा धात्रीफलं द्राक्षां शर्करां च पलोन्मिताम्।
दत्वा मधुपलं चात्र कुडवं सलिलस्य च ॥२२॥
वाससा गालितं पीतं हन्ति छर्दि त्रिदोषजाम् ।

(५ त्रिविधछर्द्याम्) गिलोयका हिमसंज्ञक क्वाथ बनाय शहदसें संयुक्तकर पीवै तो छर्दिका नाश होताहै । गरम पानीमें ओषधकों रात्रिमें भिगोय प्रातःकाल शीतल-कोही वर्ते यह हिमसंज्ञक क्वाथ होताहै । हिमसंज्ञक और फांटसंज्ञक क्वाथोंमें चौवीश तोले अथवा सोलह तोलेभर पानीकरकै ओषधकों भिगोवै और रसमें आठ तोलेभर पानी लेना । वेलगिरीका अथवा गिलोयके क्वाथमें शहद डाल पीवै अथवा मरोरफलीकों चावलोंके पानीसें पीवै तो तीनों प्रकारकी छर्दिमें हितहै । जामनके पत्ते आंबके पत्ते कसईके वीज धनियां पीपल नेत्रवाला इन्होंके पानीमें शहद डाल थोरा थोरा पीवै तो छर्दि शांत हो जातीहै । अथवा दानचिनी इलायची तेजपात इन्होंसें युत किया धमा-सामें शहद मिलाय चाटै तो छर्दिका नाश होताहै । चंवेली कैथका रस पीपल मिरच इन्होंमें शहद मिलाय किया लेह भयंकर छर्दिकों नाशताहै । आंवला और दाखकों पीस उसमें ४ तोले खांड ४ तोले शहद पानी १६ तोले पीछे इन सबकों वस्त्रमांहसें छान पीवै तो त्रिदोषकी छर्दिका नाश होताहै ।

(६) एलालवङ्गगजकेशरकोलमज्जा-
लाजाप्रियङ्गुघनचन्दनपिप्पलीनाम् ।
चूर्णानि माक्षिकसितासहितानि लीढ्वा
छर्दि निहन्ति कफमारुतपित्तजां च ॥ २३ ॥

(६ एलादिचूर्णम्) इलायची लौंग नागकेसर वेरकी गिरी धानकी खील कांगनी नागरमोथा चंदन पीपल इन्होंके चूर्णमें शहद और मिश्री मिलाय चाटै तो त्रिदो-षकी छर्दिका नाश होताहै यह एलादिचूर्ण है ।

(७) कोलामलकमज्जानौ माक्षिकविट्सितामधु ।
सकृष्णातण्डुलो लेहश्छर्दिमाशु नियच्छति॥२४॥

अश्वत्थवल्कलं शुष्कं दग्ध्वा निर्वापितं जले ।
तज्जलं पानमात्रेण छर्दि जयति दुस्तराम् ॥२५॥
यष्ट्याह्वं चन्दनोपेतं सम्यक् क्षीरप्रपेषितम् ।
तेनैवालोड्य पातव्यं रुधिरच्छर्दिनाशनम् ॥२६॥
लाजाकपित्थमधुमागधिकोषणानां
क्षौद्राभयात्रिकटुधान्यकजीरकाणाम् ।
पथ्यामृतामरिचमाक्षिकपिप्पलीनां
लेहास्त्रयः सकलवम्यरुचिप्रशान्त्यै ॥ २७ ॥

(७ कोलादिलेहः) वेरकी गिरी आंवलाकी गिरी मांखीकी वीट मिश्री शहद पीपल चौलाई इन्होंका लेह छर्दिकों शीघ्र दूर करता है । पीपलके वक्कलकों सुखाकै अग्निमें जलाय पानीमें राखकों गेर उस पानीकों पीनेसें भयंकर छर्दिभी शीघ्र नष्ट होतीहै । मुलहटी और चंदनकों दूधमें पीस पीछे दूधहीसें आलोडितकर पीवै तो रक्तकी छर्दिका नाश होताहै । धानकी खील कैथ शहद पीपल मिरच, शहद हरडै सोंठ मिरच पीपल धनियां जीरा, हरडै गिलोय मिरच शहद पीपल ये तीनों लेह सव प्रकारकी छर्दि और अरुचिकों शांत करतेहैं ।

(८)पद्मकामृतनिम्बानां धान्यचन्दनयोः पचेत् ।
कल्के क्वाथे च हविषः प्रस्थं छर्दिनिवारणम् ।
तृष्णारुचिप्रशमनं दाहज्वरहरं परम् ॥ २८ ॥

इति छर्दिचिकित्सा ।

(८ पद्मकाद्यं घृतम्) कमल गिलोय नींब धनियां चंदन इन्होंके कल्कमें और क्वाथमें ६४ तोलेभर घृतकों सिद्धकर पीवै तो छर्दिका नाश होताहै । और तृषा अरुचि दाह ज्वर इन्होंकों विशेषकरकै हरताहै । यह पद्मकाद्यघृत है ।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररवि-दत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां छर्दिचिकित्सा ।

अथ तृष्णाधिकारः १६

अब तृष्णाधिकार कहतेहै ।

(१)तृष्णायां पवनोत्थायां सगुडं दधि शस्यते ।
रसाश्च बृंहणाः शीता गुडूच्या रस एव च ॥१॥

पञ्चाङ्गकाः पञ्चगणा य उक्ता-
स्तेष्वम्बु सिद्धं प्रथमे गणे वा ।
पिबेत्सुखोष्णं मनुजोऽल्पमात्रं
तृष्णोपरोधं न कदापि कुर्यात् ॥ २ ॥
पित्तोत्थितं पित्तहरैर्विपक्वं
निहन्ति तोयं पय एव चापि ॥ ३ ॥
काश्मर्यशर्करायुक्तं चन्दनोशीरपद्मकम् ।
द्राक्षामधुकसंयुक्तं पित्ततर्षे जलं पिबेत् ॥ ४ ॥

(१ वाततृष्णायाम्) वातकी तृष्णा अर्थात् वातके तृषारोगमें गुडसहित दही श्रेष्ठ है। वीर्यकों बढानेवाले शीतल और गिलोयका रस ये श्रेष्ठ हैं। पंचांग अर्थात् मूल फल पुष्प छाल पत्ते और पंचगण अर्थात् छोटी कटेली पृष्ठिपर्णी गोखरू इनआदि जो कहेहैं इन्होंका काढा बनाय सुखपूर्वक गरमकों पीवै तो कभीभी तृषाकों नहीं करताहै। पित्तकों हरनेवाले ओषधोंकरकै किया क्वाथ अथवा दूध पित्तकी तृषाकों हरताहै। कंभारी चंदन खस पद्माक दाख मुलहटी इन्होंके क्वाथमें खांड डाल पीवै तो पित्तकी तृषा नष्ट होतीहै।

(२) पित्तजायां तु तृष्णायां पक्वोदुम्बरजो रसः।
तत्क्वाथो वा हिमस्तद्वच्छारिवादिगणाम्बु वा ५
स्याज्जीवनीयसिद्धं
क्षीरघृतं वातपित्तजे तर्षे ।
तद्वद्द्राक्षाचन्दन-
खर्जूरोशीरमधुयुतं तोयम् ॥ ६ ॥
सशारिवादौ तृणपञ्चमूले
तथोत्पलादौ मधुरे गणे वा ।
कुर्यात्कषायांस्तु तथैव युक्ता-
न्मधूकपुष्पादिषु चापरेषु ॥ ७ ॥
बिल्वाटकीधातकिपञ्चकोल-
दर्भेषु सिद्धं कफजां निहन्ति ।
हितं भवेच्छर्दनमेव चात्र
तप्तेन निम्बप्रसवोदकेन ॥ ८ ॥
सजीरकाण्यार्द्रकशृङ्गवेर-
सौवर्चलान्यर्धजलाप्लुतानि ।
मद्यानि हृद्यानि च गन्धवन्ति
पीतानि सद्यः शमयन्ति तृष्णाम् ॥ ९ ॥
क्षतोत्थितां रुग्विनिवारणेन
जयेद्रसानामसृजश्च पानैः ।
क्षयोत्थितां क्षीरजलं निहन्या-
न्मांसोदकं वाथ मधूदकं वा ॥ १० ॥
गुर्वन्नजामुल्लिखनैर्जयेत्तु
क्षयादृते सर्वकृतां च तृष्णाम् ॥ ११ ॥
लाजोदकं मधुयुतं शीतं गुडविमर्दितम् ।
काश्मर्यशर्करायुक्तं पिबेत्तृष्णार्दितो नरः ॥ १२॥

(२ पित्तजतृष्णायाम्) पित्तकी तृषामें पकाहुआ गूलरके फलका रस अथवा उसका हिमसंज्ञक क्वाथ अथवा शारिवादि गणके ओषधोंका क्वाथ हित है। वात-पित्तकी तृषामें जीवनीयगणके औषधोंमें सिद्धि किया दूधसें निकासा घृत हित है। तैसेही दाख चंदन खजूरिया खस इन्होंका शहदसें युत किया क्वाथ हित है। शारिवादिगण तृणादि पंचमूल तथा उत्पलादिगण अथवा मधुरगण तथा मधूकपुष्पादिगण इन्होंमें किये क्वाथ हित हैं। बेलगिरी अरहर धोकेफूल पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ डाभ इन्होंका क्वाथ अथवा नींबके रसकों गरमकर पीकै छः वमन करना हित है। जीरा पीपल अदरक सोंठ कालान-मक इन्होंकों आधा पानीमें मिलाय क्वाथ बनाय पीवै अ-थवा सुगंधसें युत करी मनोहर मदिरा पीवै तो मनुष्योंकी तृषा शीघ्र नष्ट होतीहै। क्षयसें उपजी तृषाकों रोगके निवा-रण करकै मांसोंके रस और रक्तके पीनेकरकै जीतै। दूध-सहित पानी तथा मांसका रस अथवा शहदपानी क्षयकी तृषाकों नाशताहै। धानकी खीलोंके पानीमें शहद डाल तथा गुडका शर्बत तथा कंभारीके रसमें खांड डाल तृषासें पीडित हुआ मनुष्य पीवै।

(३) अतिरुक्षदुर्बलानां
तर्षे शमयेन्नृणामिहाशु पयः ।
छागो वा घृतभृष्टः
शीतो मधुरो रसो हृद्यः ॥ १३ ॥
आम्रजम्बूकषायं वा पिबेन्माक्षिकसंयुतम् ।
छर्दिं सर्वां प्रणुदति तृष्णां चैवापकर्षति ॥ १४ ॥
वटशुङ्गसितालोध्रदाडिमं मधुकं मधु ।
पिबेत्तण्डुलतोयेन छर्दितृष्णानिवारणम् ॥ १५ ॥
गोस्तनेक्षुरसक्षीरयष्टीमधुमधूत्पलैः ।
नियतं नस्यतः पानैस्तृष्णा शाम्यति दारुणा१६

(३ छर्दितृष्णायाम्) अत्यंत रूक्ष और दुर्बल मनुष्योंकी तृषाकों दूध शीघ्र नाशताहै । अथवा बकराका मांसके रसकों घृतमें भून शीतल कर पीवै । अथवा आंब और जामनके क्वाथमें शहद डाल पीवै तो सब प्रकारकी छर्दि और तृषा दूर होतीहै । वडके कोंपल मिश्री लोध अनार मुलहटी शहद इन्होंकों चावलोंका पानीके साथ पीवै तो छर्दि और तृषा दूर होतीहै । मुनक्कादाख ईखका रस मुलहटी शहद कमल इन्होंकरकै नस्यसें अथवा पान करनेसें भयंकर तृषा नष्ट होतीहै ।

(४) क्षीरेक्षुरसमाध्वीकैः क्षौद्रशीधुगुडोदकैः १७
वृक्षाम्लाम्लैश्च गण्डूषस्तालुशोषनिवारणः ।
तालुशोषे पिबेत्सर्पिर्घृतमण्डमथापि वा ॥ १८ ॥
मूर्च्छाच्छर्दितृषादाहस्त्रीमद्यभृशकर्षिताः ।
पिबेयुः शीतलं तोयं रक्तपित्ते मदात्यये ॥ १९ ॥
धान्याम्लमास्यवैरस्यमलदौर्गन्ध्यनाशनम् ।
तदेवालवणं पीतं मुखशोषहरं परम् ॥ २० ॥
वैशद्यं जनयत्यास्ये संदधाति मुखे व्रणान् ।
दाहतृष्णाप्रशमनं मधुगण्डूषधारणम् ॥ २१ ॥

(४ तालुशोषे) दूध ईखका रस माध्वीकमद्य शहद सीधुमद्य गुडका शर्बत आमसोल और विजोरा इन्होंके पानीसें कुल्ले करने तालुके शोषकों दूर करतेहैं । तालुशोषमें घृतकों पीवै अथवा घृतकी छाछकों पीवै और मूर्छा छर्दि तृषा दाह स्त्री मदिरा इन्होंसें अत्यंत कर्षित हुये मनुष्य शीतल जलकों पीवै । रक्तपित्तमें और मदात्ययमें कांजी मुखमें धारण करीजावै तो मुखका विरसपना मल और दुर्गंध इन्होंका नाश होताहै । नमकसें वर्जित करी कांजी पान करीजावै तो निश्चय मुखके शोषकों हरतीहै । मुखमें सुंदरपनाकों करतीहै । और मुखमें छालोंकों उपजातीहै । शहदके अथवा मदिराके कुल्ले धारण कियेजावैं तो दाह और तृषा शांत होतीहै ।

(५) कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रीकाचुक्रिकारसः ।
पञ्चाम्लको मुखालेपः सद्यस्तृष्णां नियच्छति २२
वारि शीतमधुयुतमाकण्ठाद्वा पिपासितम् ।
पाययेद्वामयेच्चापि तेन तृष्णा प्रशाम्यति ॥२३॥
वटशुङ्गामयक्षौद्रलाजनीलोत्पलैर्दृढा ।
गुटिका वदनन्यस्ता क्षिप्रं तृष्णां नियच्छति २४
ओदनं रक्तशालीनां शीतं माक्षिकसंयुतम् ।
भोजयेत्तेन शाम्येत्तु छर्दिस्तृष्णाचिरोत्थिता २५
पूर्वामयातुरः सन्दीनस्तृष्णार्दितो जलं याचन् ।
न लभेत चेदाश्वेव मरणमाप्नोति दीर्घरोगं वा ॥
तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति ।
तस्मात्सर्वास्ववस्थासु न क्वचिद्वारि वार्यते ॥२७॥

इति तृष्णाचिकित्सा ।

(५ सामान्यतः सर्वतृष्णायाम्) वेर अनार विजोरा चूका अमली इन्होंके रसका मुखपर लेप कियाजावै तो शीघ्र तृषा दूर होतीहै । शीतल जल और शहद मिलाकै तृषावालेकों कंठतक पान कराकै वमन करानेसें तृषा शांत होतीहै । वडके कोंपल कूट शहद धानकी खील नीलाकमल इन्होंसें दृढकरी गोली मुखमें धारण करीजावै तो तृषाकों शीघ्र दूर करतीहै । लालचावलोंकों शीतल कर उसमें शहद मिलाय भोजन करावै तो पुराणी छर्दि और तृषा नष्ट होतीहै । प्रथम रोगसें पीडित हुआ दीन रोगी तृषासें पीडित होकै जलकों मांगै जो जल नहीं मिलै तो मरणकों अथवा दीर्घ रोगकों रोगी प्राप्त होताहै । तृषावाला मनुष्य मोहकों प्राप्त होताहै और मोहसें प्राणोंकों त्यागताहै उस कारणसें सब अवस्थाओंमें कहींभी जल नहीं वर्जित करना ।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां तृष्णाचिकित्सा ।

अथ मूर्च्छाधिकारः १७

अब मूर्च्छाधिकार कहतेहै ।

(१) सेकावगाहौ मणयः सहाराः
शीताः प्रदेहा व्यजनानिलश्च ।
शीतानि पानानि च गन्धवन्ति
सर्वासु मूर्च्छासु निवारितानि ॥ १ ॥
सिद्धानि वर्गे मधुरे पयांसि
सदाडिमा जाङ्गलजा रसाश्च ।
तथा यवा लोहितशालयश्च
मूर्च्छासु शस्ताश्च सतीनमुद्गाः ॥ २ ॥

(१ मूर्छोपायाः) सेक जलमें गोता मारना मणि हार शीतल लेप वीजनाका पवन शीतल और सुगंधित

पान अर्थात् पन्ने ये सब प्रकारकी मूर्च्छाओंकों दूर करतेहैं । मधुरगणके औषधोंमें सिद्ध किये दूध और अनारसें युत किये जांगल देशके जीवोंके मांसका रस तथा जव और लाल चावल मठर मूंग ये सब मूर्च्छाओंमें श्रेष्ठ हैं ।

(२)यथादोषं कषायाणि ज्वरघ्नानि प्रयोजयेत् ।
रक्तजायां तु मूर्च्छायां हितः शीतक्रियाविधिः३
मद्यजायां वमेन्मद्यं निद्रां सेवेद्यथासुखम् ।
विषजायां विषघ्नानि भेषजानि प्रयोजयेत् ॥४॥
कोलमज्जोषणोशीरकेशरं शीतवारिणा ।
पीतं मूर्च्छां जयेल्लीढ्वा तृष्णां वा मधुसंयुताम्५
महौषधामृताक्षुद्रापौष्करग्रन्थिकोद्भवम् ।
पिबेत्कणायुतं क्वाथं मूर्च्छायेषु मदेषु च ॥ ६ ॥
शतावरीबलामूलद्राक्षासिद्धं पयः पिबेत् ।
ससितं भ्रमनाशाय बीजं वात्स्यालकस्य वा ॥७॥
पिबेद्दुरालभाक्वाथं सघृतं भ्रमशान्तये ।
त्रिफलायाः प्रयोगो वा प्रयोगः पयसोऽपि वा ।
रसायनानां कौम्भस्य सर्पिषो वा प्रशस्यते ॥८॥

(**२ कषायप्रयोगविधिः**) जैसा दोष हो उसके अनुसार ज्वरनाशक क्वाथ प्रयुक्त करने। रक्तसें उपजी मूर्च्छामें शीतल क्रियाविधि हित है। मदिरासें उपजी मूर्च्छामें मदिराकों वमनसें निकासै और सुखके अनुसार सोवै। विषसें उपजी मूर्च्छामें विषनाशक औषध प्रयुक्त करै । बेरकी गिरी मिरच खस केशर इन्होंकों शीतल पानीके साथ पीवै अथवा पीपलकों शहदमें मिलाय चाटै तो मूर्च्छाका नाश होताहै । सोंठ गिलोय कटेली पौंहकरमूल पीपलामूल इन्होंके क्वाथमें पीपलका चूर्ण डाल पीवै । सब प्रकारकी मूर्च्छामें और मदमें शतावरी खरैंहटीकी जड दाख इन्होंमें सिद्ध किया पानीकों मिश्रीसें युतकर पीवै अथवा खरैंहटीके बीजकों मिश्रीसें युतकर पीवै । धमासाके क्वाथमें घृत डाल पीवै तो भ्रमकी शांति होतीहै । अथवा त्रिफलाका प्रयोग अथवा दूधका प्रयोग भ्रमकों दूर करताहै रसायनोंका अथवा कौंभघृतका पान हित है ।

(३) मधुना हन्त्युपयुक्ता
त्रिफला रात्रौ गुडार्द्रकं प्रातः ।
सप्ताहात्पथ्यभोजी
मदमूर्च्छाकासकामलोन्मादान् ॥ ९ ॥
अञ्जनान्यवपीडाश्च धूमः प्रधमनानि च ।
सूचीभिस्तोदनं शस्तं दाहः पीडा नखान्तरे १०
लुञ्चनं केशरोम्णां च दन्तैर्दंशनमेव च ।
आत्मगुप्तावघर्षश्च हितास्तस्यावरोधने ॥ ११ ॥

इति मूर्च्छाचिकित्सा ।

(**३ भ्रमे त्रिफलाप्रयोगः**) अथवा रात्रिमें शहदसहित त्रिफला और प्रभातमें गुडसहित अदरक खावै और सातदिनोंतक पथ्य भोजन करै तो मद मूर्च्छा खांसी कामला और उन्माद इन्होंका नाश होताहै । अंजन अवपीड धूआं प्रधमन नस्य सूईयोंका चुभाना दाह और नखोंके भीतर पीडा करना ये सब मूर्च्छामें श्रेष्ठ हैं । बालोंकी और रोमोंकों लूंचना दंतोंसें डसना कौंचकी फलीका घसना ये सब मूर्च्छाकों दूर करतेहैं ।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां मूर्च्छाचिकित्सा ।

अथ मदात्ययाधिकारः १८

अब मदात्ययाधिकार कहतेहै ।

(१) मन्थः खर्जूरमृद्वीकावृक्षाम्लाम्लीकदाडिमैः।
परूषकैः सामलकैर्युक्तो मद्यविकारणुत् ॥ १ ॥
जले चतुष्पले शीते क्षुण्णद्रव्यपलं क्षिपेत् ।
मृत्पात्रे मर्दयेत्सम्यक्तस्माच्च द्विपलं पिबेत् ॥२॥
सतीलमुद्गमिश्रान्वा दाडिमामलकान्वितान् ।
द्राक्षामलकखर्जूरपरूषकरसेन वा ।
कल्पयेत्तर्पणान्यूषान्रसांश्च विविधात्मकान् ॥३॥

(**१ मदात्यये खर्जूरमन्थः**) खजूरिया मुनक्का बिजोरा अमली अनार फालसा आंवला इन्होंका मंथ मदिराके विकारकों नाशताहै । सोलह तोलेभर जलमें कुटेहुये चार तोलेभर द्रव्यकों गेरै। माटीके पात्रमें अच्छीतरह पकावै उस्से आठ तोलेभर पीवै । मठर मूंग अथवा अनार आंवला अथवा दाख आंवला खजूरिया फालसा इन्होंके रसकरकै तर्पण यूष और अनेक प्रकारके रस इन्होंकों रचै ।

(२) मद्यं सौवर्चलव्योषयुक्तं किञ्चिज्जलान्वितम्
जीर्णमद्याय दातव्यं वातपानात्ययापहम् ॥ ४ ॥
मुद्गयूषः सितायुक्तः स्वादुर्वापैशितो रसः ।
पित्तपानात्यये योज्याः सर्वतश्च क्रिया हिमाः ५
पानात्यये कफोद्भूते लङ्घनं च यथाबलम् ।
दीपनीयौषधोपेतं पिबेन्मद्यं समाहितः ॥ ६ ॥
सर्वजे सर्वमेवेदं प्रयोक्तव्यं चिकित्सितम् ।
आभिः क्रियाभिर्मिश्राभिः शान्ति याति मदात्ययः

(२ वातपानात्यये मद्यादि) कालानमक सोंठ मिरच पीपल कछुक जल इन्होंसें अन्वित किया मद्य जीर्णमद्यवालाकों देना वातके पानात्ययकों नाशताहै । मिश्रीसें युत किया मूंगोंका यूष अथवा मिश्रीसें युत किया मांसका रस पित्तके पानात्ययमें देना परंतु सब प्रकारसें शीतल क्रिया करनी हित है। कफके पानात्ययमें जैसा बल हो उसके अनुसार लंघन करना हित है और सावधान हुआ अजमोदसें युत करी मदिराकों पीवै । सन्निपातके पानात्ययमें यह संपूर्ण चिकित्सा करनी । इन्ही क्रियाओंकरकै मदात्यय शांतिकों प्राप्त होताहै ।

(३) न चेन्मद्यक्रमं मुक्त्वा क्षीरमस्य प्रयोजयेत्
लङ्घनाद्यैः कफे क्षीणे जातदौर्बल्यलाघवे ॥ ८ ॥
ओजस्तुल्यगुणं क्षीरं विपरीतं च मद्यतः ।
क्षीरप्रयोगं मद्यं वा क्रमेणाल्पाल्पमाचरेत् ॥९॥

(३ अपरिहारे दुग्धादियोगः) इस रोगीकों मदिराका क्रम त्यागकर दूध नहीं देना। लंघन आदिकरकै जब कफ क्षीण होजावै और दुर्बलपना तथा हलकापना होजावै तब पराक्रमके तुल्य गुणोंवाला दूध मदिरासें विपरीत देना। दूधका प्रयोग अथवा मदिरा अल्प अल्प देनी ।

(४)पयः पुनर्नवाक्वाथयष्टीकल्कप्रसाधितम् ।
घृतं पुष्टिकरं पानान्मद्यपानहतौजसः ॥ १० ॥

(४ पुनर्नवाद्यं घृतम्) दूध सांठीका क्वाथ मुलहटीका कल्क इन्होंसें साधित किया घृत पीनेकरकै मदिरा पीनेसें नष्ट हुआ है पराक्रम जिसका वह पुष्ट होताहै । यह पुनर्नवाघृत है ।

(५)सौवर्चलमजाज्यं च वृक्षाम्लं साम्लवेतसम् ।
त्वगेलामरिचार्धांशं शर्कराभागयोजितम् ॥ ११ ॥
हितं लवणमष्टाङ्गमग्निसंदीपनं परम् ।
मदात्यये कफप्राये दद्यात्स्रोतोविशोधनम् ॥१२॥

(५ अष्टांगलवणम्) कालानमक जीरा विजोरा अम्लवेतस दालचिनी इलायची मिरच ये सब खांडसहित सात भाग और नमक आठमा भाग यह चूर्ण अग्निकों दीपन करताहै कफके मदात्ययमें देना यह स्रोतोंकों शोधता है । यह अष्टांगलवण है ।

(६)चव्यं सौवर्चलं हिङ्गुपूरकं विश्वदीप्यकम् ।
चूर्णं मद्येन दातव्यं पानात्ययरुजापहम् ॥ १३ ॥
जलाप्लुतश्चन्दनरूषिताङ्गः
स्रग्वी सभक्तां पिशितोपदंशाम् ।
पिबन्सुरां नैव लभेत रोगान्
मनोमतिघ्नं च मदं न याति ॥ १४ ॥
द्राक्षाकपित्थफलदाडिमपानकं यत्
तत्पानविभ्रमहरं मधुशर्कराढ्यम् ॥ १५ ॥
पथ्याक्वाथेन संसिद्धं घृतं धात्रीरसेन वा ।
सर्पिः कल्याणकं वापि मदमूर्च्छाहरं पिबेत् १६
सच्छर्दिमूर्च्छातीसारं मदं पूगफलोद्भवम् ।
सद्यः प्रशमयेत्पीतमातृप्तेर्वारि शीतलम् ॥ १७ ॥
वन्यकरीषघ्राणाज्जलपानाल्लवणभक्षणाद्वापि ।
शाम्यति पूगफलमदश्चूर्णरुजाशर्कराकवलात् १८
शङ्खचूर्णरजोघ्राणं स्वल्पं मदमपोहति ।
कूष्माण्डकरसः सगुडः शमयति मदनकोद्रवजम्
धौस्तुरं च दुग्धं सशर्करं पानयोगेन ॥ १९ ॥

इति मदात्ययचिकित्सा ।

(६ अन्ये चव्याद्युपायाः) चव्य कालानमक हींग विजोरा सोंठ अजमोद इन्होंका चूर्ण मदिराके साथ देना यह पानात्ययकी पीडाकों नाशताहै । जलमें गोता मारकै स्नान करनेवाला और चंदनसें युत किये अंगोंवाला मालाओंकों पहननेवाला चावलोंसें सहित और मांसके उपदंशसें युत ऐसी मदिराकों पान करताहुआ मनुष्य मन और बुद्धिकों नाशनेवाले मदकों नहीं प्राप्त होता । दाख कैथका फल अनार इन्होंका पन्ना बनाय उसमें शहद और खांड डाल पीवै तो मदिराके पानसें उपजे भ्रमकों नाशताहै । हरडैके क्वाथकरकै अथवा आंवलाके रसकरकै सिद्ध किया घृत अथवा कल्याणघृत मदकों और

मूर्च्छाकों हरताहै । तृप्तिपर्यंत पान किया शीतल जल छर्दी मूर्च्छा अतिसार सुपारीसें उपजा मद इन्होंकों शीघ्र शांत करताहै । वनका आरनाकों सूंघनेसें और जलके पीनेसें अथवा नमकके भक्षणसें सुपारीसें उपजा मद शांत हो- ताहै । चुन्नाकी पीडा खांडके ग्राससें शांत होतीहै । शंख और चुन्नाके रजका सूंघना अल्पमदकों नाशताहै । को- ह्लाके रसमें गुड डाल पीवै तो धत्तूराका और को- दूका मद शांत होताहै । और खांडसें युत किया दूध पीनेके योगकरकै धत्तूराके मदकों नशताहै ।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्रर- विदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां मदात्ययचिकित्सा ।

अथ दाहाधिकारः १९

अब दाहअधिकार कहतेहै ।

(१) शतधौतघृताभ्यक्तं लिह्याद्वा यवशक्तुभिः ।
कोलामलकयुक्तैर्वा धान्याम्लैरपि बुद्धिमान् १
छादयेत्तस्य सर्वाङ्गमारणालार्द्रवाससा ।
लामज्जेनाथ शुक्तेन चन्दनेनानुलेपयेत् ॥ २ ॥
चन्दनाम्बुकणास्यन्दितालवृन्तोपवीजितः ।
सुप्याद्दाहार्दितोऽम्भोजकदलीदलसम्भवे ॥ ३ ॥
परिषेकावगाहेषु व्यजनानां च सेवने ।
शस्यते शिशिरं तोयं तृष्णादाहोपशान्तये ॥ ४ ॥
क्षीरैः क्षीरिकषायैश्च सुशीतैश्चन्दनान्वितैः ।
अन्तर्दाहं प्रशमयेदेतैश्चान्यैश्च शीतलैः ॥ ५ ॥

(**१ दाहशमनोपायाः**) सौवार पानीमें धोयाहुया घृतसें अभ्यक्त करै अथवा जवोंके सत्तुवोंकों बेर और आंवलासें युत करकै अथवा कांजीकरकै बुद्धिमान् लेप करै । दाहरोगीके संपूर्ण अंगोंकों कांजीसें भिगोया वस्त्र- करकै आच्छादित करै । नेत्रवालाकरकै और शुक्त अ- र्थात् कांजीके भेदकरकै और चंदनकरकै पीछे लेप करै । दाहसें पीडितहुआ मनुष्य चंदनका पानीके किणकोंकों झिरानेवाले ताडके पत्तोंका बीजनाकी पवनसें वीजित हुआ कमलके और केलाके पत्तोंपर सोवै । परिषेकमें गोता मारकै स्नानमें और बीजनाके पवनकों सेवनेमें शीतल जल श्रेष्ठ है । उस्सें तृषा और दाहकी शांति होतीहै । दूध दूधवाले वृक्षोंके क्वाथ चंदनसें अन्वित शीतल पदार्थ और अन्य प्रकारके शीतल पदार्थ इन्हों- करकै अंतर्दाह शांत होताहै ।

(२)कुशादिशालपर्णीभिर्जीवकाद्येन साधितम् ।
तैलं घृतं वा दाहघ्नं वातपित्तविनाशनम् ॥ ६ ॥

(**२ कुशाद्यं तैलं घृतं च**) कुशादिगणके ओषध शालपर्णी जीवकादि गण इन्होंसें साधित किया तेल अथवा घृत दाहकों और वातपित्तकों नाशताहै ।

(३) फलिनीलोध्रसेव्याम्बु हेमपत्रं कुटन्नटम् ।
कालीयकरसोपेतं दाहे शस्तं प्रलेपनम् ॥ ७ ॥
ह्रीबेरपद्मकोशीरचन्दनक्षोदवारिणा ।
संपूर्णामवगाहेत द्रोणीं दाहार्दितो नरः ॥ ८ ॥

इति दाहचिकित्सा ।

(**३ फलिन्याद्यवगाहः**) मेंहदी लोध पीलानेत्रवाला साधारण नेत्रवाला पद्माख क्षुद्र मोथा इन्होंकों पीला चंदनके रसमें युत कर किया लेप दाहमें श्रेष्ठ है । नेत्रवाला पद्माख खस चंदन इन्होंके चूर्णसें युत किये पानीकरकै देगकों भर उसमें गोते मारकै दाहसें पीडित मनुष्य स्नान करै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविद- त्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां दाहचिकित्सा ।

अथ उन्मादाधिकारः २०

अब उन्मादअधिकार कहते है ।

(१) उन्मादे वातिके पूर्वं स्नेहपानं विरेचनम् ।
पित्तजे कफजे वान्तिः परो वस्त्यादिकः क्रमः १
यच्चोपदेक्ष्यते किञ्चिदपस्मारचिकित्सिते ।
उन्मादे तच्च कर्तव्यं सामान्याद्दोषदूष्ययोः ॥ २ ॥
सब्राह्मीकूष्माण्डी
षड्ग्रन्थाशङ्खपुष्पिकास्वरसाः ।
उन्मादहृतो दृष्टाः
पृथगेते कुष्ठमधुमिश्राः ॥ ३ ॥
दशमूलाम्बु सघृतं युक्तं मांसरसेन वा ।
ससिद्धार्थकचूर्णं वा पुराणं वैककं घृतम् ॥ ४ ॥
उग्रगन्धं पुराणं स्याद्दशवर्षस्थितं घृतम् ।
लाक्षारसनिभं शीतं प्रपुराणमतः परम् ॥ ५ ॥

श्वेतोन्मत्तोत्तरदिङ्मूलसिद्धस्तु पायसः ।
गुडाज्यसंयुतो हन्ति सर्वोन्मादांस्तु दोषजान् ६

(१ वातिकोन्मादोपायाः) वातके उन्मादमें प्रथम स्नेहका पीना और पित्तके उन्मादमें विरेचन अर्थात् जुलाब और कफके उन्मादमें वमन और बाकी बस्तिआदि क्रम हित है । जो कछु चिकित्सा अपस्माररोगमें कहेगे वह संपूर्ण उन्मादरोगमें करना । क्योंकि दोष और दूष्यकों समान होनेसें ब्राह्मी कोहला वच शंखपुष्पी इन्होंके स्वरस अलग अलग शहद और कूटसें मिश्रित किये चाटे जावै तो उन्मादकों हरनेवाले देखे है । दशमूलका क्काथ घृतसें सहित अथवा मांसका रससें युक्त अथवा सरसोंका चूर्णसहित अथवा अकेला पुराणा घृत उन्मादकों नाशता है । उग्रगंधवाला और दशवर्ष धराहुआ और लाखका रसके समान कांतिवाला और शीतल शीतल ऐसा पुराणा घृत होता है और इस्सें उपरंत प्रपुराण घृत होताहै । सुपेद धतूराकी उत्तरदिशाकी जडकी खीर बनाय उसमें गुड और घृत डाल खावै तो सब प्रकारके दोषोंसें उपजे उन्मादोंका नाश होताहै ।

(२)उन्मादे समधुः पेयः शुद्धो वा तालशाखजः
रसो नस्येऽभ्यञ्जने च सार्षपं तैलमिष्यते ॥ ७ ॥
अपक्कचटकी क्षीरपीतोन्मादविनाशिनी ।
बद्धं सार्षपतैलाक्तमुत्तानं चातपे न्यसेत् ॥ ८ ॥
सिद्धार्थको हिङ्गु वचाकरञ्जौ देवदारु च ।
मञ्जिष्ठा त्रिफला श्वेता कटभीत्वक् कटुत्रिकम् ९
समांशानि प्रियङ्गुश्च शिरीषो रजनीद्वयम् ।
बस्तमूत्रेण पिष्टोऽयमगदः पानमञ्जनम् ॥ १० ॥
नस्यमालेपनं चैव स्नानमुद्वर्तनं तथा ।
अपस्मारविषोन्मादं हत्वा लक्ष्मीज्वरापहः ॥११॥
भूतेभ्यश्च भयं हन्ति राजद्वारे च शस्यते ।
सर्पिरेतेन सिद्धं वा सगोमूत्रं तदर्थ कृत् ॥१२॥

(२ सर्षपतैलादि) अथवा उन्मादमें ताडवृक्षकी शाखाका रसमें शहद डाल पीना योग्य है । नस्यमें और मालिसमें सरसोंका तेल हित है । नहीं पकीहुई चिरमठी दूधके संग पान करी जावै तो उन्मादकों नाशती है । सरसोंका तेलकी मालिससें अभ्यक्त किया उन्मादरोगीकों रस्सीआदिसें बांधकर सीधा घाममें स्थापित करै तो उन्मादरोग शांत होताहै । सरसों हींग वच करंजुवा देवदार मंजीठ त्रिफला वंशलोचन सुपेदगोकर्णी दालचिनी सोंठ मिरच पीपल मालकांगनी शिरस हलदी दारुहलदी ये सब बराबर भाग लेने । पीछे बकराके मूत्रसें पीसकै किया यह अगद पान अंजन नस्य आलेपन स्नान और उद्वर्तनमें वर्तना यह अपस्मार विष उन्माद इन्होंकों हरकै अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्र और ज्वरकों नाशता है । और भूतोंके भयकों नाशता है और राजद्वारमें श्रेष्ठ है और इसी अगद और गोमूत्र करकै सिद्ध किया घृतभी इस सब पूर्वोक्त फलकों करताहै ।

(३) त्र्यूषणं हिङ्गु लवणं वचा कटुकरोहिणी ।
शिरीषनक्तमालानां वीजं श्वेताश्च सर्षपाः १३
गोमूत्रपिष्टैरेतैर्वा वर्तिर्नेत्राञ्जने हिता ।
चातुर्थकमपस्मारमुन्मादं च नियच्छति ॥ १४ ॥

(३ त्र्यूषणाद्या वर्तिः) सोंठ मिरच पीपल हींग नमक वच कुटकी शिरसके बीज करंजुवाके बीज और सुपेद सरसों इन सबकों गोमूत्रमें पीस बत्ती बनाय नेत्रमें आंजै तो हित है और चातुर्थिकज्वर अपस्मार और उन्मादकों दूर करतीहै । यह त्र्यूषणबत्ती है ।

(४)शुद्धस्याचारविभ्रंशे तीक्ष्णं नावनमञ्जनम् ।
ताडनं च मनोबुद्धिस्मृतिसंवेदनं हितम् ॥ १५
तर्जनं त्रासनं दानं सान्त्वनं हर्षणं भयम् ।
विस्मयो विस्मृतेर्हेतोर्नयन्ति प्रकृतिं मनः ॥१६॥
कामशोकभयक्रोधहर्षेर्षालोभसम्भवान् ।
परस्परप्रतिद्वन्द्वैरेभिरेव शमं नयेत् ॥ १७ ॥
इष्टद्रव्यविनाशात्तु मनो यस्योपहन्यते ।
तस्य तत्सदृशप्राप्त्या शान्त्याश्वासैश्च ताञ्जयेत्

(४ अंजनताडनाद्युपायाः) शुद्धमनुष्यकै आचारके नाशमें तीक्ष्ण नस्य तीक्ष्ण अंजन ताडन और मन बुद्धि स्मृति इन्होंका संवेदन ये हित हैं । तर्जन दुःख देना दान सांत्वन अर्थात् धीरधोप देना आनंदित करना भय और विस्मय अर्थात् आश्चर्य ये विस्मृतिके कारणसें मनकों प्रकृतिमें प्राप्त करते हैं । काम शोक भय क्रोध आनंद ईर्षा और लोभ इन्होंसें उपजेहुये रोगोंकों परस्पर प्रतिद्वंद्वरूप इन्होंकरकै शांत करै । वांछित द्रव्यके नाश होनेसें जिसका मन नष्ट हो जावै तो उसका उस द्रव्यके सदृशकी प्राप्ति शांति और आश्वास अर्थात् धीर धोप इन्होंकरकै उन रोगोंकों शांत करै ।

(५)प्रदेहोत्सादनाभ्यङ्गधूमाः पानं च सर्पिषः ।
प्रयोक्तव्यं मनोबुद्धिस्मृतिसंज्ञाप्रबोधनम् ॥ १९॥
कल्याणकं महद्वापि दद्याद्वा चैतसं घृतम् ।
तैलं नारायणं चापि महानारायणं तथा ॥ २० ॥

(५ लेपः सर्पिःपानादिच) लेप उत्सादन मालिस धुआं घृतका पीना ये प्रयुक्त किये मन बुद्धि स्मृति और संज्ञाकों करतेहैं । महाकल्याणघृत अथवा चैतसघृत देना । नारायणतेल और महानारायणतेल देना ।

(६)विशालात्रिफलाकौन्तीदेवदार्वेलवालुकम् ।
स्थिरानतं रजन्यौ द्वे शारिवे द्वे प्रियङ्गुकाः २१
नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठादन्तीदाडिमकेशरम् ।
तालीशपत्रं बृहती मालत्याः कुसुमं नवम् २२
विडङ्गं पृश्निपर्णी च कुष्ठं चन्दनपद्मकौ ।
अष्टाविंशतिभिः कल्कैरेतैरक्षसमन्वितैः ॥ २३ ॥
चतुर्गुणं जलं दत्वा घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
अपस्मारे ज्वरे कासे शोषे मन्दानले क्षये ॥२४॥
वातरक्ते प्रतिश्याये तृतीयकचतुर्थके ।
वम्यर्शोमूत्रकृच्छ्रे च विसर्पोपहतेषु च ॥ २५ ॥
कण्डूपाण्ड्वामयोन्मादे विषमेहगरेषु च ।
भूतोपहतचित्तानां गद्गदानामरेतसाम् ॥ २६ ॥
शस्तं स्त्रीणां च वन्ध्यानां धन्यमायुर्बलप्रदम् ।
अलक्ष्मीपापरक्षोघ्नं सर्वग्रहनिवारणम् ॥ २७ ॥
कल्याणकमिदं सर्पिः श्रेष्ठं पुंसवनेषु च ।
द्विजलं सचतुःक्षीरं क्षीरकल्याणकं त्विदम् २८

(६ पानीयकल्याणक्षीरकल्याणके) इंद्रायण त्रिफला रेणुका देवदार एलवा सालपर्णी तगर हलदी दारुहलदी दोनों अनंतमूल मालकांगनी नीलाकमल इलायची मजीठ जमालगोटाकी जड अनार केशर तालीसपत्र बडी कटेली चमेलीके नवीन पुष्प वायविडंग पृष्ठपर्णी कूट चंदन पद्माक ये अठाईस औषध एक एक तोलाभर ले कल्क बनाना । पीछे २५६ तोलेभर पानीमें ६४ तोलेभर घृत पकाना। अपस्मार ज्वर खांसी शोष मंदाग्नि क्षय वातरक्त पीनस तृतीयक और चातुर्थकज्वर छर्दि ववासीर मूत्रकृच्छ्र विसर्प खाज पांडुरोग उन्माद विष प्रमेहरोग इन रोगोंमें और भूतोंकरकै उपहत चित्तवालोंकै गद्गदोंकै वीर्यसें वर्जितोंकै और वंध्यास्त्रियोंकै श्रेष्ठ है धन्य है आयुकों और बलकों बढाताहै । और दरिद्र पाप राक्षस इन्होंकों नाशताहै । और सब ग्रहोंकों दूर करताहै । यह कल्याणघृत पुरुषके काममें श्रेष्ठ है और इसमें दुगना पानी और चौगुना दूध मिलाकै सिद्ध किया जावै तो यह क्षीरकल्याणक कहाताहै । यह पानीयकल्याणघृत और क्षीरकल्याणघृत है ।

(७)एभ्य एव स्थिरादीनि जले पक्त्वैकविंशतिम्
रसे तस्मिन्पचेत्सर्पिर्गृष्टिक्षीरचतुर्गुणम् ॥ २९ ॥
वीराद्धिमाषकाकोलीस्वयंगुप्तर्षभर्द्धिभिः ।
मेदया च समैः कल्कैस्तत्स्यात्कल्याणकं महत्
बृंहणीयं विशेषेण सन्निपातहरं परम् ॥ ३० ॥

(७ महाकल्याणकं घृतम्) इन पूर्वोक्त ओषधियोंमांहसें सालपर्णी आदि इक्कीस ओषधियोंकों ले पानीमें पकाय उस रसमें एकवार ब्याईहुई गायका दूध चौगुना और बडी शतावरी उडद रानउडद काकोली कौंचके बीज ऋषभ ऋद्धि मेदा ये सब औषध समान लेकै कल्क बनाके मिलावै वह महाकल्याणकघृत होताहै । विशेषकरकै वीर्यकों बढाता है और सन्निपातज्वरकों हरता है । यह महाकल्याणकघृत है ।

(८)पञ्चमूल्यवकाश्मर्यौ रास्नैरण्डत्रिवृद्बला ।
मूर्वा शतावरी चेति क्वाथ्यैर्द्विपलिकैरिमैः ३१
कल्याणकस्य चाङ्गेन तद्धृतं चैतसं स्मृतम् ।
सर्वचेतोविकाराणां शमनं परमं मतम् ॥ ३२ ॥
घृतप्रस्थोऽत्र पक्तव्यः क्वाथो द्रोणाम्भसा वृतात् ।
चतुर्गणोऽत्र सम्पाद्यः कल्कः कल्याणकेरितः३३

(८ चैतसं घृतम्) पंचमूल कंभारी रायशन एरंड निशोत खरैंहटी मरोरफली शतावरी ये सब आठ आठ तोलेभर लेकै क्वाथ बनाय कल्याणकघृतके अंगकरकै वह घृत चैतस कहाहै । यह सब प्रकारके चित्तके विकारोंकों हरताहै । यहां ६४ तोलेभर घृत और १०२४ तोले पानीकरकै २५६ तोले भर क्वाथमें कल्यणकघृतमें कहा कल्क चौगुना लेना । यह चैतसघृत है ।

(९)जटिला पूतना केशी चारटी मर्कटी वचा ।
त्रायमाणा जयावीरा चोरकः कटुरोहिणी॥३४॥
वयस्था शूकरी छत्रा सातिच्छत्रा पलङ्कषा ।
महापरुषदन्ता च वयस्था नाकुलीद्वयम् ॥३५॥

कटुम्भरा वृश्चिकाली स्थिरा चैव च तैर्घृतम्।
सिद्धं चातुर्थकोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥३६॥
महापैशाचिकं नाम घृतमेतद्यथामृतम्।
मेधाबुद्धिस्मृतिकरं बालानां चाङ्गवर्धनम् ॥३७॥

(९ महापैशाचिकं घृतम्) बालछड हरडै स्थलकमलिनी कौंचके बीज वच त्रायमाण पीलेमूंग शतावरी खुरासानी अजमान कुटकी ब्राह्मी वाराहीकंद वह्नी रोहिषतृण मेथी लाख बडीशतावरी क्षीरकाकोली दोनोंकटेली मरोरफली लघुमेंढासींगी और शालपर्णी इन्होंकरकै घृत सिद्ध करना। यह चातुर्थकज्वर उन्माद ग्रहदोष अपस्मार इन्होंकों नाशता है। यह महापैशाचिकनामवाला घृत अमृतके समान है और मेधा अर्थात् शुद्धबुद्धि और स्मृति इन्होंकों करता है और बालकोंके अंगकों बढाता है। यह महापैशाचिक घृत है।

(१०)हिङ्गुसौवर्चलव्योषैर्द्विपलांशैर्घृताढकम्।
चतुर्गुणे गवां मूत्रे सिद्धमुन्मादनाशनम् ॥३८॥

(१० हिंग्वाद्यं घृतम्) हींग कालानमक सोंठ मिरच पीपल ये सब आठ आठ तोलेभर लेने और घृत २५६ तोले लेना और गोमूत्र १०२४ तोलेभर लेकै घृत सिद्ध करना यह उन्मादकों हरता है। यह हिंग्वाद्यघृत है।

(११)लशुनस्याविनष्टस्य तुलार्धं निस्तुषीकृतम्।
तदर्धं दशमूल्यास्तु द्व्याढकेऽपां विपाचयेत् ३९
पादशेषे घृतप्रस्थं लशुनस्य रसं तथा।
कोलमूलकवृक्षाम्लमातुलुङ्गार्द्रकै रसैः ॥ ४० ॥
दाडिमाम्बुसुरामस्तुकाञ्जिकाम्लैस्तदर्धिकैः।
साधयेत्रिफलादारुलवणव्योषदीप्यकैः ॥ ४१ ॥
यमानीचव्यहिङ्ग्वम्लवेतसैश्च पलार्धिकैः।
सिद्धमेतत्पिबेच्छूलगुल्मार्शोजठरापहम् ॥ ४२ ॥
ब्रध्नपाण्ड्वामयप्लीहयोनिदोषक्रिमिज्वरान्।
वातश्लेष्मामयांश्चान्यानुन्मादांश्चापकर्षति ॥४३॥

(११ लशुनाद्यं घृतम्) २०० तोलेभर सुंदर ल्हशनोंकों लेके तुष दूरकरै और १०० तोलेभर दशमूल इन्होंकों ५१२ तोलेभर पानीमें पकावै। जब चौथाई भाग शेष रहै तब ६४ तोलेभर घृत और ६४ तोलेभर ल्हशनका रस बेर मूली बिजोरा अम्लवेतस अदरक इन्होंके रसोंकरकै और अनारका रस मदिरा दहीका पानी कांजी ये बत्तीस बत्तीस तोलेभर लेकै घृत सिद्ध करना, यह घृत शूल गुल्मरोग बवासीर उदररोग इन्होंकों नाशता है और ब्रध्नरोग पांडुरोग प्लीहरोग योनिदोष कृमिरोग और ज्वर और वातकफके रोग और सब प्रकारके उन्माद इन्होंकों दूर करताहै। यह लशुनाद्यघृत है।

(१२)सर्पिःपानादिरागन्तोर्मन्त्रादिश्चेष्यते विधिः।
पूजाबल्युपहारेष्टिहोममन्त्राञ्जनादिभिः ॥ ४४ ॥
जयेदागन्तुमुन्मादं यथाविधि शुचिर्भिषक्।
कृष्णामरिचसिन्धूत्थमधुगोपित्तनिर्मितम् ॥ ४५॥
अञ्जनं सर्वभूतोत्थमहोन्मादविनाशनम्।
दार्वीमधुभ्यां पुष्यायां कृतं च गुडिकाञ्जनम् ४६
मरिचं वातपे मासं सपित्तं स्थितमञ्जनम्।
वैकृतं पश्यतः कार्यं दोषभूतहतस्मृतेः ॥ ४७ ॥
निम्बपत्रवचाहिङ्गुसर्पनिर्मोकसर्षपैः।
डाकिन्यादिहरो धूपो भूतोन्मादविनाशनः ॥४८॥
कार्पासास्थिमयूरपिच्छबृहती-
निर्माल्यपिण्डीतकै-
स्त्वङ्मांसीवृषदंशविट्तुषवचा-
केशाहिनिर्मोककैः।
गोशृङ्गद्विपदन्तहिङ्गुमरिचै-
स्तुल्यैस्तु धूपः कृतः
स्कन्दोन्मादपिशाचराक्षससुरा-
वेशज्वरघ्नः स्मृतः ॥ ४९ ॥
ब्रह्मराक्षसजिन्नस्यं पक्वैन्द्रीफलमूत्रजम्।
साज्यं भूतहरं नस्यं श्वेताज्येष्ठाम्बुनिर्मितम् ५०
देवर्षिपितृगन्धर्वैरुन्मत्तस्य च बुद्धिमान्।
वर्जयेदञ्जनादीनि तीक्ष्णानि क्रूरमेव च ॥ ५१ ॥

इत्युन्मादचिकित्सा।

(१२ पैशाचोन्मादे मंत्राद्युपायाः) आगंतुकउन्मादमें घृतका पानआदि और पूजा बलिभेट इष्टिहोम मंत्र और आंजन आदिकरकै मंत्रविधि वांछित है। शुद्ध वैद्य विधिके अनुसार इस विधिसें उन्मादकों जीतै। और पीपल मिरच सेंधानमक शहद गौका पित्त इन्होंसें निर्मित किया अंजन सब कारसें भूतोंकरके उपजे उन्मादकों नाशता है। दारुहलदी काटल और शहद करकै पणाकी

गोली बनाय किया अंजन पूर्वोक्त फलकों करता है। पित्तासहित मांसमें एक महीनापर्यंत मिरचोंकों स्थितकर वैकृत देखनेवालाके नेत्रोंमें आंजनासें भूतका दोष और अपस्माररोग दूर होता है। नींबके पत्ते वच हींग सांपकी कांचली सरसों इन्होंका धूप डाकिनी आदिके दोषकों और भूतोन्मादकों नाशता है। कपासका विनोला मोरकी पंख बडीकटेली गंगाजल मरुवा दालचिनी वंशलोचन बिलावकी विष्ठा जवोंका तुष वच वाल सांपकी कांचली गौका शींग हस्तीका दंत हींग मिरच येसब समान भाग ले किया धूप स्कंदग्रहका दोष उन्माद पिशाच राक्षस देवताका आवेश और ज्वर इन्होंकों नाशनेवाला कहाहै। पकाहुआ इंद्रायणका फलकों गोमूत्रमें पीस लिया नस्य ब्रह्मराक्षसके दोषकों हरता है। वंशलोचन और केलाके पानीसें किया पूर्वोक्त नस्यकों घृतमें मिलाय सूंघै तो भूतदोष नष्ट होताहै। देव ऋषि और गंधर्व इन्होंसें उन्मत्त हुआ मनुष्यकों बुद्धिमान् वैद्य तीक्ष्ण अंजनआदि और क्रूरकर्म वर्जित करै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायामुन्मादचिकित्सा।

अथापस्माराधिकारः २१

अब अपस्माराधिकार (मृगीरोग) कहतेहै।

(१)वातिकं वस्तिभिः प्रायः पैत्तं प्रायो विरेचनैः।
श्लैष्मिकं वमनप्रायैरपस्मारमुपाचरेत् ॥ १ ॥
सर्वतः सुविशुद्धस्य सम्यगाश्वासितस्य च।
अपस्मारविमोक्षार्थं योगान्संशमनाञ्छृणु ॥ २ ॥

(१ अपस्मारे सामान्योपायाः) विशेषकरकै वातके अपस्मारकों बस्तिकर्मकरकै और विशेषकरकै पित्तके अपस्मारकों विरेचनकरकै और कफके अपस्मारकों विशेषकरैक वमनसें दूर करै। सब प्रकारसें अच्छीतरह शुद्ध किया और अच्छीतरह आश्वासित किया रोगीका अपस्मार दूर करनेवास्तै संशमनरूप योगोंकों सुन।

(२)मनोह्वा तार्क्ष्यजं चैव शकृत्पारावतस्य च।
अञ्जनं हन्त्यपस्मारमुन्मादं च विशेषतः ॥ ३ ॥
यष्टीहिङ्गुवचावक्रशिरीषलशुनामयैः।
साजामूत्रैरपस्मारे सोन्मादे नावनाञ्जने ॥ ४ ॥
पुष्योद्धृतं शुनःपित्तमपस्मारघ्नमञ्जनम्।
तदेव सर्पिषा युक्तं धूपनं परमं स्मृतम् ॥ ५ ॥

(२ अंजनादि) मनशिल रसोत परेवाकी अथवा कबूतरकी वींट इन्होंका अंजन बनाय आंखोंमें आंजै तो अपस्मारका और विशेषकरकै उन्मादका नाश होता है। मुलहटी हींग वच तगर शिरसका बीज ल्हस्शन कूठ इन्होंकों बकरीके मूत्रमें पीस नस्य और अंजन करकै अपस्मार और उन्माद दूर होता है। पुष्यनक्षत्रमें कुत्ताका पित्त लाकै नेत्रोंमें आंजै तो अपस्मार नष्ट होताहै। अथवा उसी पित्तमें घृत डाल धूप देवै तो अपस्मार नष्ट होताहै।

(३)नकुलोलूकमार्जारगृध्रकीटाहिकाकजैः।
तुण्डैः पक्षैः पुरीषैश्च धूपनं कारयेद्भिषक् ॥ ६ ॥
कायस्थान् शारदान्मुद्गान्मुस्तोशीरयवांस्तथा।
सव्योषान्बस्तमूत्रेण पिष्ट्वा वर्तिं प्रकल्पयेत् ॥७॥
अपस्मारे तथोन्मादे सर्पदंष्ट्रे गरार्दिते।
विषपीते जलमृते चैताः स्युरमृतोपमाः ॥ ८ ॥
अपेतराक्षसीकुष्ठपूतनाकेशिचोरकैः।
उत्सादनं मूत्रपिष्टैर्मूत्रैरेवावसेचनम् ॥ ९ ॥

(३ धूपनवर्त्यादि) नौला उल्लू बिलाव गीध सांप काक इन्होंके चांच पांख और वींट लेकै किया धूप अपस्मारकों नाशता है। काली तुलसी शरदऋतुके मूंग नागरमोथा खस जव सोंठ मिरच पीपल इन्होंकों बकराके मूत्रसें पीस बत्ती बनावै। अपस्मार उन्माद सांपका डसना कृत्रिमविषसें पीडा विषका पीना और जलविषै मरना इन्होंमें ये बत्ती अमृतके समान है। कालीतुलसी कूट हरडै सगंध वालछड गठोना इन्होंकों गोमूत्रमें पीस अथवा अकेला गोमूत्रसेंहीउत्सादन करै।

(४)जतुकाशकृतातद्वद्गन्धैर्वा बस्तरोमभिः।
अपस्मारहरो लेपो मूत्रसिद्धार्थशिग्रुभिः ॥ १० ॥
यः खादेत्क्षीरभक्ताशी माक्षिकेण वचारजः।
अपस्मारं महाघोरं सुचिरोत्थं जयेद्ध्रुवम् ॥ ११ ॥
उल्लम्बितनरग्रीवापाशं दग्ध्वा कृता मसी।
शीताम्बुना समं पीता हन्त्यपस्मारमुद्धतम् १२
प्रतोज्यं तैललशुनं पयसा वा शतावरी।
ब्राह्मीरसश्च मधुना सर्वापस्मारभेषजम् ॥ १३ ॥
निर्दह्य निर्द्रवां कृत्वा छागिकामरनालिकाम्।
तामम्लसाधिकां खादन्नपस्मारमुदस्यति ॥ १४॥

हृत्कम्पोऽक्षिरुजा यस्य स्वेदो हस्तादिशीतता ।
दशमूलीजलं तस्य कल्याणाज्यं च योजयेत् १५

(४ लेपादि) अथवा शिलाजीत कांस बकराके रोमोंकों जलाकै इन सबकी करी बत्ती पूर्वोक्त फल देतीहै। और सरसों और सहोंजनाकों गोमूत्रमें पीस किया लेप अपस्मारकों हरता है। जो दूधकों पीनेवाला मनुष्य शहदके साथ वचके चूर्णकों खावै वह भयंकर और पुराना ऐसा अपस्मारकों निश्चय जीतताहै। मनुष्यकी अथवा घोडाकी नाडके लंबे वालोंकों जलाकै बनाई स्याहीकों शीतल पानीके साथ पीवै तो भयंकर अपस्मार नष्ट होताहै। तेलसहित ल्हश्शन अथवा दूधके साथ शतावरी अथवा शहदके साथ ब्राह्मीका रस सब प्रकारके अपस्मारोंकों नाशता है। मेंढासिंगी और अमरवेलका रसकों निकाल पीछे अग्निसें जलाय खट्टारसमें सिद्ध कर खावै तो अपस्मार दूर होताहै। जिसका हृदय कांपता हो और जिसके नेत्रोंमें पीडा हो और जिसकै पसीना आवै और हाथ आदि शीतल होजावै उसकों दशमूलका क्वाथ और कल्याणघृत देना।

(५)गोशकृद्रसदध्यम्लक्षीरमूत्रैः समैर्घृतम् ।
सिद्धं चातुर्थकोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ १६ ॥

(५ स्वल्पपंचगव्यघृतम्) गौके गोवरका रस गौकी दही गौका दूध गोमूत्र समानभाग लिये इन्होंमें गौके घृतकों सिद्धकर खावै तो चातुर्थकज्वर उन्माद ग्रहदोष और अपस्मार इन्होंका नाश होताहै। यह स्वल्पपंचगव्यघृत है।

(६)द्वे पञ्चमूले त्रिफला रजन्यौ कुटजत्वचम् ।
सप्तपर्णमपामार्गं नीलिनीं कटुरोहिणीम् ॥१७॥
सम्पाकं फल्गुमूलं च पौष्करं सदुरालभम् ।
द्विपलानि जलद्रोणे पक्त्वा पादावशेषिते ॥१८॥
भार्गीं पाठा त्रिकटुकं त्रिवृता निचुलानि च ।
श्रेयसीमाढकीं मूर्वां दन्तीं भूनिम्बचित्रकौ १९
द्वे शारिवे रौहिषं च भूतिकं मदयन्तिकाम् ।
क्षिपेत्पिष्ट्वाक्षमात्राणि तैः प्रस्थं सर्पिषः पचेत्२०
गोशकृद्रसदध्यम्लक्षीरमूत्रैश्च तत्समैः ।
पञ्चगव्यमिति ख्यातं महत्तदमृतोपमम् ॥ २१ ॥
अपस्मारे ज्वरे कासे श्वयथावुदरेषु च ।
गुल्मार्शःपाण्डुरोगेषु कामलायां हलीमके ॥२२॥
अलक्ष्मीग्रहरक्षोघ्नं चातुर्थकविनाशनम् ।

(६ बृहत्पंचगव्यघृतम्) दशमूल त्रिफला हलदी कूडाकी छाल सातला ऊंगा नील कुटकी अमलतास कालागूलरकी जड पौंहकरमूल धमासा ये सब आठ आठ तोलेभर लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकाय जब चौथाईभाग शेष रहै तब भारंगी पाठा सोंठ मिरच पीपल निशोत जलवेत हरडै अर्हर मरोरफली जमालगोटाकी जड चिरायता चीता दोनोंतरहके अनंतमूल रोहिषतृण करंजुवा मोगरीका फूल ये सब एकएक तोलाभर ले पीसकर उसमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। परंतु गौके गोवरका रस दही दूध और गोमूत्र ये बराबर ले घृत सिद्ध करना वह बृहत्पंचगव्य घृत कहाहै। अपस्मार ज्वर खांसी शोजा उदररोग गोला ववासीर पांडुरोग कामला हलीमक दरिद्रपना ग्रहदोष राक्षसदोष और चातुर्थिकज्वर इन्होंकों नाशता है। यह बृहत्पंचगव्यघृत है।

(७)शणस्त्रिवृत्तथैरण्डो दशमूली शतावरी २३
रास्ना मागधिका शिग्रु क्वाथ्यं द्विपलिकं भवेत् ।
विदारी मधुकं मेदे द्वे काकोल्यौ सिता तथा२४
एभिः खर्जूरमृद्वीकाभीरुयुञ्जातगोक्षुरैः ।
चैतसस्य घृतस्याङ्गैः पक्तव्यं सर्पिरुत्तमम् ॥२५॥
महाचैतससंज्ञं तु सर्वापस्मारनाशनम् ।
गरोन्मादप्रतिश्यायतृतीयकचतुर्थकान् ॥ २६ ॥
पापालक्ष्म्यौ जयेदेतत्सर्वग्रहनिवारणम् ।
कासश्वासहरं चैव शुक्रार्तवविशोधनम् ॥२७॥
घृतमानः क्वाथविधिरिह चैतसवन्मतः ।
कल्कश्चैतसकल्कोक्तद्रव्यैः सार्धं च पादिकः २८
नित्यं युञ्जातकाप्राप्तौ तालमस्तकमिष्यते ।

(७ महाचैतसं घृतम्) शण निशोत अरंड दशमूल शतावरी रायशन पीपल सहोंजना इन्होंके क्वाथमें विदारीकंद महुवा मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली मिश्री खजूरिया मुनक्का शतावरी युंजात गोखरू ये सब आठ आठ तोले। और चैतसघृतमें कहे सब ओषध इन्होंकरकै उत्तम घृत पकाना। यह महाचैतसघृत सब प्रकारके अपस्मारकों नाशता है। और कृत्रिमविष उन्माद पीनस तृतीयकज्वर चातुर्थकज्वर पाप दरिद्रता इन्होंकों जीतता है। और सब प्रकारके ग्रहदोषोंकों दूर करता है। खांसी और श्वासकों हरताहै। वीर्यकों और आर्तवकों शोधता है। इसमें घृतका तोल और क्वाथकी विधि चैत-

सघृतकी तरह मानना । चैतसघृतमें युंजातक नहीं मिलै तो ताडका मस्तक ग्रहण करना । यह महाचैतसघृत है ।

(८)कूष्माण्डकरसे सर्पिरष्टादशगुणे पचेत् २९
यष्ट्याह्वकल्कं तत्पानमपस्मारविनाशनम् ।

(८ कूष्मांडकघृतम्) अठारहगुणा कोंहलाके रसमें मुलहटीका कल्क मिलाय घृतकों सिद्ध करै । उसकों पीना अपस्मारकों नाशताहै । यह कूष्मांडघृत है ।

(९)ब्रह्मीरसे वचाकुष्ठशङ्खपुष्पीभिरेव च ॥ ३० ॥
पुराणं मेध्यमुन्मादग्रहापस्मारनुद्घृतम् ।

(९ ब्राह्मीघृतम्) ब्राह्मीके रसमें वच कूट शंखपुष्पी इन्होंका कल्क डाल पुराणा घृत सिद्ध करना । यह शुद्धबुद्धिकों उपजाता है । और उन्माद ग्रहदोष अपस्मार इन्होंकों नाशता है । यह ब्राह्मीघृत है ।

(१०)पलङ्कषावचापथ्यावृश्चिकाल्यर्कसर्षपैः ३१
जटिलापूतनाकेशीलाङ्गलीहिङ्गुचोरकैः ।
लशुनातिरसाचित्राकुष्ठैर्विड्भिश्च पक्षिणाम् ॥३२॥
मांसाशिनां यथालाभं बस्तमूत्रे चतुर्गुणे ।
सिद्धमभ्यञ्जने तैलमपस्मारविनाशनम् ॥ ३३ ॥

(१० पलंकषाद्यं तैलम्) लाख वच हरडै छोटीमेढासिंगी आक सरसों वालछड सुगंधवालछड कलहारी हींग गठोना ल्हश्शन मरोरफली चीता कूट मांस खानेवाले पक्षियोंके वींट इन्होंमांहसें जितने ओषध मिलै उतने लेकै चौगुणे बकाराके मूत्रमें तेलकों सिद्ध करै । यह मालिस करनेसें अपस्मारकों नाशता है । यह पलंकषाद्यतैल है ।

(११)अभ्यङ्गः सार्षपं तैलं बस्तमूत्रे चतुर्गुणे ।
सिद्धं स्याद्गोशकृन्मूत्रैः पानोत्सादनमेव च ३४

इत्यपस्मारचिकित्सा ।

(११ अभ्यङ्गादि) चौगुने बकाराके मूत्रमें गौके गोबरका रस मिलाय उसमें सिद्ध किया सरसोंका तेल मालिस स्नान और उत्सादनमें श्रेष्ठ है ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायामपस्मारचिकित्सा ।

अथ वातव्याध्यधिकारः २२

अब वातव्याधिका अधिकार कहतेहै ।

(१)स्वाद्वम्ललवणैः स्निग्धैराहारैर्वातरोगिणः ।
अभ्यङ्गस्नेहवस्त्याद्यैः सर्वानेवोपपादयेत् ॥ १ ॥
विशेषतस्तु कोष्ठस्थे वाते क्षारं पिबेन्नरः ।
आमाशयस्थे शुद्धस्य यथा दोषहरी क्रिया ॥२॥
आमाशयगते वाते छर्दिताय यथाक्रमम् ।
देयः षड्धरणो योगः सप्तरात्रं सुखाम्बुना ॥३॥
चित्रकेन्द्रयवाः पाठाकटुकातिविषाभयाः ।
महाव्याधिप्रशमनो योगः षड्धरणः स्मृतः ॥४॥
पलदशमांशो धरणं
योगोऽयं सौश्रुतस्ततस्तस्य ।
माषेण पञ्चगुञ्जक-
मानेन प्रत्यहं सुयुग्देयः ॥ ५ ॥

(१ वातव्याधौ समान्योपायाः) मधुर अम्ल सलोना चिकना इन भोजनोंकरकै वातरोगीकै मालिस और स्नेहकी बस्तिआदिसें सब प्रकारके वातरोगोंकी चिकित्सा करै । कोष्ठगतवातमें विशेषकरकै मनुष्य खारकों पीवै आमाशयविषै स्थितहुये वातमें प्रथम जुलाब आदिसें शुद्ध कियाकों यथायोग्य दोषहर क्रिया करनी । आमाशयविषै गतहुये वातमें रोगीकों प्रथम छर्दि कराकै क्रमके अनुसार षड्धरणयोग सुखपूर्वक गमर पानीके साथ सात रात्रितक देना । चीता इंद्रजव पाठा कुटकी अतीस हरडै षड्धरणयोग कहा यह महा व्याधिकों शांत करता है । पलका दशमां हिस्सा धरण है यह सुश्रुतका मतके अनुसार पांच चिरमठीका मासाके परिमाणसें नित्यप्रति देना ।

(२)पक्वाशयगते वाते हितं स्नेहविरेचनम् ।
बस्तयः शोधनीयाश्च प्रशाश्च लवणोत्तराः ॥६॥
स्नुहीलवणवार्ताकुस्नेहांश्छन्ने घटे दहेत् ।
गोमयैः स्नेहलवणं तत्परं वातनाशनम् ॥ ७ ॥
कार्यो वस्तिगते चापि विधिर्वस्तिविशोधनः ।
त्वङ्मांसासृक्शिराप्राप्ते कुर्याच्चासृग्विमोक्षणम् ८
स्नेहोपानाहाग्निकर्मबन्धनोन्मर्दनानि च ।
स्नायुसन्ध्यस्थिसंप्राप्ते कुर्याद्वाते विचक्षणः ॥९॥
स्वेदाभ्यङ्गावगाहांश्च हृद्यं चान्नं त्वगाश्रिते ।
शीताः प्रदेहा रक्तस्थे विरेको रक्तमोक्षणम् १०

विरेको मांसमेदःस्थे निरूहाः शमनानि च ।
बाह्याभ्यन्तरतः स्नेहैरस्थिमज्जगतं जयेत् ॥११॥

(२ स्नेहनविरेचनबस्तिशोधनादि) पक्वाशयविषे गत हुआ वातमें स्नेहसें जुलाब देना हित है और बस्तिकर्म शोधनीय ओषध और नमक है उत्तरभागमें ग्रासदेने उचित है। थोहर नमक वार्ताकु स्नेह इन्होंकों आच्छादित किये घडामें घाल उपलोंसें दग्ध करै वह स्नेह नमक वातकों नाशता है । बस्तिगत वातमें बस्तिकों शोधनेवाला विधि करना त्वचा मांस रक्त और शिरा इन्होंविषे प्राप्त हुये वातमें रक्तका निकासना श्रेष्ठ है । नस संधि हड्डी इन्होंविषे प्राप्त हुये वातमें स्वेद अभ्यंग अवगाहन ये करने । त्वचाविषे प्राप्त हुये वातमें सुंदर अन्न देना । रक्तविषे प्राप्त हुये वातमें शीतल लेप जुलाब और रक्तका निकासना हित है । मांस और मेदविषे स्थितहुये वातमें जुलाब और निरूह तथा शमनबस्ति हित है । हड्डी और मज्जाविषे प्राप्तहुये वातमें बाहिर और भीतर स्नेह देना हित है ।

(३)हर्षोऽन्नपानं शुक्रस्थे बलशुक्रकरं हितम् ।
विबद्धमार्गं शुक्रं तु दृष्ट्वा दद्याद्विरेचनम् ॥१२॥
गर्भे शुष्के तु वातेन बालानां चापि शुष्यताम् ।
सितामधुककाश्मर्यैर्हितमुत्थापने पयः ॥ १३ ॥
शिरोगतेऽनिले वातशिरोरोगहरी क्रिया ।
व्यादितास्ये हनुं स्विन्नामङ्गुष्ठाभ्यां प्रपीड्य च १४
प्रदेशिनीभ्यां चोन्नस्य चिबुकोन्नामनं हितम् ।
अर्दिते नवनीतेन खादेन्माषेण्डरीं नरः ॥ १५ ॥
क्षीरमांसरसैर्भुक्त्वा दशमूलीरसं पिबेत् ।
स्नेहाभ्यङ्गशिरोबस्तिपाननस्यपरायणः ॥ १६ ॥
अर्दितं स जयेत्सर्पिः पिबेदौत्तरभक्तिकम् ।
पञ्चमूलीकृतः क्राथो दशमूलीकृतोऽथवा १७
रूक्षस्वेदस्तथा नस्यं मन्यास्तम्भे प्रशस्यते ।
वाताद्वाग्धमनीदुष्टौ स्नेहगण्डूषधारणम् ॥१८ ॥

(३ विरेचनादि) वीर्यगत वातमें आनंद और बल तथा वीर्यकारक अन्नपान हित है । विशेषकरकै बंधहुआ है रास्ता जिसका ऐसे वीर्यकों देखकर विरेचन देना । वातकरकै गर्भके सूखनेमें तथा बालकोंकों सूखनेमें मिश्री मुलहटी कंभारी इन्होंसें सिद्ध किया दूध हित है । शिरविषै प्राप्त हुये वातमें वातका शिररोग हरनेकी क्रिया करनी । जो मुख फटाही रहै तो ठोडीपर पसीना देकै और दोनों अंगूठोंसें पीडित कर और प्रदेशिनी अंगुलीसें उन्नमित कर नीचरला ओष्ठकों ऊंचा करना हित है । अर्दितवात अर्थात् लकवामें नौनी घृतकरकै उडदकी इंडरी अर्थात् मिठाई खावै । दूध और मांसके रसकों पीकै पीछे दशमूलके रसकों पीवै । स्नेहकी मालिस शिरोबस्ति पान नस्य इन्होंकों सेवनेवाला मनुष्य घृतकों पीवै तो अर्दिवातकों जीतता है । पंचमूलका क्काथ अथवा दशमूलका क्काथ रूक्षस्वेद और नस्य ये सब मन्यास्तंभमें हित हैं । वातसें वाणी और धमनी अर्थात् नाडी दुष्ट होजावै तो स्नेहके गंडूष अर्थात् कुल्ले धारण करने ।

(४)सहरिद्रावचाकुष्ठं पिप्पलीविश्वभेषजम् ।
अजाजी चाजमोदा च यष्टीमधुकसैन्धवम् १९
एतानि समभागानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ।
तच्चूर्णं सर्पिषालोड्य प्रत्यहं भक्षयेन्नरः ॥ २० ॥
एकविंशतिरात्रेण भवेच्छ्रुतिधरो नरः ।
मेघदुन्दुभिनिर्घोषो मत्तकोकिलनिःस्वनः ॥२१॥
जडगद्गदमूकत्वं लेहः कल्याणको जयेत् ।
रूक्षत्रिकस्कन्दगतं वायुं मन्यागतं तथा ॥ २२॥
वमनं हन्ति नस्यं च कुशलेन प्रयोजितः ।

(४ कल्याणकलेहः) हलदी वच कूट पीपल सोंठ जीरा अजमोद मुलहटी सेंधानमक ये सब समानभाग लेकै मिहीन चूर्ण करै वह चूर्ण घृतमें डाल आलोडित कर नित्यप्रति भक्षण करै । इक्कीस रात्रिकरकै मनुष्य श्रुतिधर अर्थात् सुनाहुआंकों धारण करनेवाला होताहै और मेघका गर्जनाकेसमान गर्जनेवाला और मदवाला कोकिलके समान प्रियवचन बोलनेवाला ऐसा मनुष्य होजाताहै । जडपना दद्गदपना और गूंगापना इन्होंकों कल्याणकलेह जीतता है । यह कल्याणकलेह है । कटिप्रांत और कंधागत वातकों रूषा द्रव्य नाशता है । मन्यागत वातकों कुशल मनुष्यकरकै प्रयुक्त किया वमन और नस्य नाशता है ।

(५)माषबलाशुकशिम्बी
कत्तृणरास्नश्वगन्धोरुबूकाणाम् ।
क्काथो नस्यनिपीतो
रामठलवणान्वितः कोष्णः ॥ २३ ॥

अपहरति पक्षवातं
मन्यास्तम्भं सकर्णनादरुजम् ।
दुर्जयमर्दितवातं
सप्ताहाज्जयति चावश्यम् ॥ २४ ॥

(५ माषबलादिः) उडद खरैंहटी शूकतृणविशेष रानमूंग रोहिषतृण रास्ना आसगंध अरंड इन्होंका क्वाथ बनाय उसमें हींग और नमक डाल अल्प गरम पीवै तो पक्षवात अर्थात् अर्धांगवात मन्यास्तंभ कर्णनादरोग भयंकर अर्दितवात इन्होंकों सात दिनमें निश्चय जीतता है । यह माषबलादि है ।

(६)दशमूलीबलामाषक्वाथं तैलाज्यमिश्रितम् ।
सायं भुक्त्वा पिबेन्नक्तं विश्वाच्यामपबाहुके २५
मूलं बलायास्त्वथ पारिभद्रा-
त्तथात्मगुप्तास्वरसं पिबेद्वा ।
नस्यं तु यो मांसरसेन दद्या-
न्मासादसौ वज्रसमानबाहुः २६ ॥
माषात्मगुप्तकैरण्डवाट्यालकशृतं पिबेत् ।
हिङ्गुसैन्धवसंयुक्तं पक्षाघातनिवारणम् ॥ २७ ॥
बाहुशोषे पिबेत्सर्पिर्भुक्त्वा कल्याणकं महत् ।
हृदि प्रकुपिते वाते चांशुमत्याः पयो हितम् २८
हरीतकी वचा रास्ना सैन्धवं चाम्लवेतसम् ।
घृतमात्रासमायुक्तमपतन्त्रकनाशनम् ॥ २९ ॥

(६ अपतंत्रके दशमूलादिक्वाथः) दशमूल खरैंहटी उडद इन्होंके क्वाथमें तेल और घृत मिलाय भोजन करनेके पीछे सायंकालमें नस्यकों पीवै तो विश्वाची और अपबाहुक वात नष्ट होतेहै । खरैंहटीकी जड देवदारकी जड कौंच इन्होंके स्वरसकों पीवै अथवा मांसके रसकरकै नस्यकों देवै ऐसे एक महीना करनेसें वज्रके समान बाहुवोंवाला मनुष्य होजाताहै । उडद कौंच अरंड खरैंहटी इन्होंके काढामें हिंग और सेंधानमक डाल पीवै तो पक्षाघातकों नाशता है । बाहुशोषमें भोजन करकै पीछे बृहत्कल्याणघृत पीना । हृदयमें वात कुपित हो तो शालपर्णीका रस हित है। हरडै वच रास्ना सेंधानमक अम्लवेतस इन्होंकों घृतमें युतकर खावै तो अपतंत्रकका नाश होताहै ।

(७)पलमर्धं पलं चैव रसोनस्य सुकुट्टितम् ।
हिङ्गुजीरकसिन्धूत्थैः सौवर्चलकटुत्रयैः ॥ ३० ॥
चूर्णितैर्माषकोन्मानैरवचूर्ण्य विलोडितम् ।
यथाग्नि भक्षितं प्रात रुबूकाथानुपानतः ॥ ३१ ॥
दिने दिने प्रयोक्तव्यं माषमेकं निरन्तरम् ।
वातरोगं निहन्त्याशु अर्दितं सापतन्त्रकम् ३२
एकाङ्गरोगिणे चैव तथा सर्वाङ्गरोगिणे ।
ऊरुस्तम्भे च गृध्रस्यां क्रिमिकोष्ठे विशेषतः ३३
कटीपृष्ठामयं हन्यादुदरं च विशेषतः ।

(७ स्वल्परसोनपिंडः) कुट्टित किया ल्हशन दो दो तोले अथवा ४ तोलेभर लेकै हिंग जीरा सेंधानमक कालानमक सोंठ मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण एक एक मासाभर मिलाय आलोडित करै । पीछे जठराग्निके अनुसार प्रभातमें भक्षण करै और अरंडका क्वाथका अनुमान करै दिनदिनप्रति एक महीनातक निरंतर प्रयुक्त करै । यह वातरोग अर्दितवात अपतंत्र इन्होंकों शीघ्र नाशताहै । एकांगरोगवालाकों तथा सर्वांगरोगवालाकों और ऊरुस्तंभ गृध्रसी कृमिरोग इन्होंमें विशेषकरकै हित है कटिरोग पृष्ठरोग और उदररोग इन्होंकों विशेषकरकै नाशता है । यह स्वल्परसोनपिंड है ।

(८)हन्ति प्राग्भोजनात्पीतं दध्यम्लं सवचोषणम् ।
अपतानकमन्योऽपि वातव्याधिक्रमो हितः ।
वातघ्नैर्दशमूल्या च नरं कुब्जमुपाचरेत् ॥ ३५ ॥
स्नेहैर्मांसरसैर्वापि प्रवृद्धं तं विवर्जयेत् ।
पिप्पल्यादिरजस्तूनीप्रतितून्योः सुखाम्बुना ३६
पिबेद्वा स्नेहलवणं सघृतं क्षारहिङ्गु वा ।
आध्माने लङ्घनं पाणितापश्च फलवर्तयः ॥ ३७॥
दीपनं पाचनं चैव बस्तिं चाप्यत्र शोधनः ।
प्रत्याध्माने तु वमनं लङ्घनं दीपनं तथा ॥३८॥
प्रत्यष्ठीलाष्ठीलिकयोरन्तर्विद्रधिगुल्मवत् ।

(८ दध्यम्लादिप्रयोगः) दध्यम्लमें वच और मिरच मिलाय भोजनसें पहले पीवै तो अपतानका नाश होता है और अन्यभी वातव्याधिका क्रम हित है । वातनाशक ओषधोंकरकै और दशमूलकरकै कुब्ज अर्थात् कुबडा मनुष्यकी चिकित्सा करनी अथवा स्नेहोंकरकै तथा मांसके रसोंकरकै चिकित्सा करनी और बढाहुआ कुबडारोगकों वर्जित करै । तूनी और प्रतितूनीवातमें पिप्पल्यादिगणके ओषधोंका चूर्ण अल्पगरमपानीके साथ लेना अथवा स्नेहमें नमक मिलाय अथवा हिंग और जवाखारकों

घृतमें मिलाय पीवै । आध्मान अर्थात् अफरामें लंघन हाथोंसें सेक और फलवर्ति ये हित है । और प्रत्याध्मान वातसें वमन लंघन और दीपन हित है । प्रत्यष्ठीलामें और अष्ठीलामें अंतर्विद्रधि और गुल्मरोगके तरह चिकित्सा करनी ।

(९) दशमूलीबलारास्नागुडूचीविश्वभेषजम् ३९
पिबेदेरण्डतैलेन गृध्रसीखञ्जपङ्गुषु ।
शेफालिकादलैः क्काथो मृद्वग्निपरिसाधितः ४०
दुर्वारं गृध्रसीरोगं पीतमात्रं समुद्धरेत् ।
पञ्चमूलकषायं तु रुबूतैलं त्रिवृद्युतम् ।
त्रिवृतैवाथवा युक्तं गृध्रसीगुल्मशूलनुत् ॥४१॥
तैलं घृतं वार्द्रकमातुलुङ्ग्यो
रसं सचुक्रं सगुडं पिबेद्वा ।
कट्यूरुपृष्ठत्रिकगुल्मशूल-
गृध्रस्युदावर्तहरः प्रदिष्टः ॥ ४२ ॥
तैलमेरण्डजं वापि गोमूत्रेण पिबेन्नरः ।
मासमेकं प्रयोगोऽयं गृध्रस्यूरुग्रहापहः ॥ ४३ ॥
गोमूत्रैरण्डतैलाभ्यां कृष्णा पीता सुचूर्णिता ।
दीर्घकालोत्थितां हन्ति गृध्रसीं कफवातजाम् ४४
अश्नाति यो नरः सिद्धामेरण्डतैलसाधिताम् ।
वार्ताकं गृध्रसीखिन्नः पूर्वामाप्नोत्यसौ गतिम् ४५
पिष्ट्वैरण्डफलं क्षीरे सविश्वं वा फलं रुबोः ।
पायसो भक्षितः सिद्धो गृध्रसीकटिशूलनुत् ४६

(९ गृध्रस्यां दशमूलादि) दशमूल खरैंहटी रास्ना गिलोय सोंठ इन्होंकों अरंडका तेलके संग पीवै तो गृध्रसी पंगुवात खंजवात इन्होंमें हित होताहै । कालासंभालूकी छालकरकै कोमल अग्निसें साधित किया क्काथ दारुणरूपी गृध्रसीरोगकों पीनेसें नाशता है । पंचमूलके क्काथमें अरंडका तेल निशोत मिलाय अथवा अकेली निशोत मिलाय पीवै तो गृध्रसी गुल्म और शूलकों नाशता है । घृतकों अथवा तेलकों अथवा आदरक विजोरा चूका इन्होंके रसमें गुड मिलाय पीवै तो कटि ऊरु पृष्ठ कटिप्रांत इन्होंमें गोला शूल गृध्रसी और उदावर्त इन्होंकों हरनेवाला कहाहै । अथवा अरंडके तेलकों गोमूत्रमें मिलाया पिवे एकमहीनातक यह प्रयोग गृध्रसी और ऊरुग्रहकों नाशता है । गोमूत्र और अरंडके तेलके साथ चूर्णितकरी पीपली पान करी जावै तो दीर्घकालसें उपजी कफवातकी गृध्रसीका नाश होताहै । जो मनुष्य अरंडके तेलमें साधितकिया वार्ताकुकों गृध्रसीसें दुःखित हुआ मनुष्य खाताहै वह गृध्रसीकों नाशता है । अरंडके फलकों दूधमें पीस अथवा सोंठसहित अरंडके फलोंकी दूधमें खीर बना भक्षण करै तो गृध्रसी कटिशूल इन्होंका नाश होताहै । रास्ना ४ तोले गूगल ५ तोले इन्होंकी घृतमें गोलियां बना खावै तो गृध्रसीका नाश होताहै ।

(१०)रास्नायास्तु बलं चैकं कर्षान्पञ्च च गुग्गुलोः
सर्पिषा वटिकां कृत्वा खादेद्वा गृध्रसीहराम् ४७
गृध्रस्यार्तं नरं सम्यक्पाचनाद्यैर्विशोधितम् ।
ज्ञात्वा नरं प्रदीप्ताग्निं बस्तिभिः समुपाचरेत् ४८
नादौ बस्तिविधिं कुर्याद्यावदूर्ध्वं न शुध्यति ।
स्नेहो निरर्थकस्तस्य भस्मन्येव हुतिर्यथा ॥ ४९ ॥
गृध्रस्यार्तस्य जङ्घायाः स्नेहस्वेदे कृते भृशम् ।
पद्भ्यां निर्मर्दितायाश्च सूक्ष्ममार्गेण गृध्रसीम् ५०

(१० गृध्रस्यामन्ये उपायाः) गृध्रसीसें पीडित हुआ मनुष्यकों अच्छीतरह पाचन आदिसें शोधितकर पीछे प्रदीप्त अग्निवाला मनुष्यकों जान बस्तिकर्म करै । जबतक ऊर्ध्वभाग शुद्ध नहीं हो तबतक आदिमें बस्तिकी विधिकों नहीं करै तहां स्नेह निष्फल है जैसे भस्ममें आहुति । गृध्रसीसें पीडित हुआ मनुष्यकी जंघाकों स्नेहसें अत्यंत स्वेदितकर पैरोंसें मर्दितकर सूक्ष्ममार्गकरकै गृध्रसीकों ।

(११)अवतार्याङ्गुलौ सम्यक्कनिष्ठायां शनैः शनैः।
ज्ञात्वा समुन्नतं ग्रन्थिं कण्डरायां व्यवस्थितम्
तं शस्त्रेण विदार्याशु प्रवालाङ्कुरसन्निभम् ।
समुद्धृत्याग्निना दग्ध्वा लिम्पेद्यष्ट्याह्वचन्दनैः ५२
विध्येच्छिरामिन्द्रबस्तेरधस्ताच्चतुरङ्गुलेः ।
यदि नोपशमं गच्छेद्दहेत्पादकनिष्ठिकाम् ॥५३॥

(११ अनुपशमे शिराव्यधादि) कनिष्ठिकाअंगुलीमें हौलें हौलें उतार कंडरामें व्यवस्थित हुई ग्रंथिकों अच्छीतरह ऊंची जान उसको शस्त्रकरकै शीघ्र काट छोटा अंकुरकेसमान निकास अग्निसें दग्धकर मुलहटी और चंदनसें लेप करै । इंद्रबस्तिकै नीचै चार अंगुलमें शिराकों वींधै जो शांत नहीं हो तो पैरकी चिटली अंगुलीकों दग्ध करै ।

(१२)तगरस्य शिफामार्द्रां पिष्ट्वा तक्रेण यः पिबेत्
वङ्क्षणानिलरोगार्तः स क्षणादेव मुच्यते ।

दशमूलीकषायेण पिबेद्वा नागराम्भसा ॥ ५४ ॥
कटिशूलेषु सर्वेषु तैलमेरण्डसम्भवम् ।
विश्वाच्यां खञ्जपङ्ग्वोश्च दाहे हर्षे च पादयोः ५५
क्रोष्टुशीर्षविकारे च विकारे वातकण्टके ।
शिरां यथोक्तां निर्विध्य चिकित्सा वातरोगनुत्

(१२ कटिशूले उपायाः) तगरकी आली जडले छाछसें पीस अंडसंधिमें स्थित वातवाला जो मनुष्य पीवै वह क्षणमात्रसें छूट जाताहै । सब प्रकारके कटिशूलोंमें अरंडके तेलकों दशमूलका क्काथकेसंग अथवा सोंठका क्काथकेसंग पीवै । विश्वाची खंज पंगु दाह पादहर्ष क्रोष्टुशिर्षविकार और वातकंटकविकार इन्होंमें यथोक्त शिराका वेधकर चिकित्सा करनी वातरोगकों नाशती है ।

(१३) गुग्गुलुं क्रोष्टुशीर्षे तु गुडूचीत्रिफलाम्भसा
क्षीरेणैरण्डतैलं वा पिबेद्वा वृद्धदारकम् ॥ ५७ ॥
रक्तावसेचनं कुर्यादभीक्ष्णं वातकण्टके ।
पिबेदेरण्डतैलं वा दहेत्सूचिभिरेव वा ॥ ५८ ॥
खल्यां स्निग्धाम्ललवणैः स्वेदमर्दोपनाहनम् ।
पृथक्पलांशा त्रिफला पिप्पली चेति चूर्णितम्
दशमूलाम्बुना भाव्यं त्वगेलार्धपलान्वितम् ।
दत्त्वा पलानि पञ्चैव गुग्गुलोर्वटकीकृतः ॥६०॥
एष मांसरसाभ्यासाद्वातरोगान्विशेषतः ।
हन्ति सन्ध्यस्थिमज्जस्थान्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ६१
भाव्यद्रव्यसमं क्काथ्यं क्काथोऽष्टांशस्तु तेन च ।
आर्द्रं यावद्दिनं भाव्यं सप्ताहं भावनाविधिः ६२

(१३ आदित्यपाकगुग्गुलुवटकः) क्रोष्टुशीर्षवातमें गिलोय और त्रिफलाका क्काथकेसंग गूगलकों अथवा अरंडका तेल अथवा भिदाराकों दूधकेसाथ पीवै वातकंटकमें बहुतवार रक्तकों निकासै अथवा अरंडके तेलकों पीवै अथवा सूइयोंसें दग्ध करै । खल्लीवातमें स्निग्ध अम्ल और नमक इन्होंकरकै स्वेदन मर्दन और उपनाहन अर्थात् पिंडीबंधन इन्होंकों करै । हरडै बहेडा आंवला और पीपल ये सब चार चार तोलेभर ले चूर्णकर दशमूलके क्काथमें भिगोय पीछे दालचिनी इलायची तेजपात ये सब दो दो तोले ले मिलाकै पीछे २० तोलेभर गूगल मिलाय गोलियां बनावै । ये गोली मांसका रसकेसाथ अभ्याससें विशेषकरकै वातरोगोंकों नाशताहै । और संधि हड्डी और मज्जा इन्होंविषे स्थित हुये वातोंकों नाशताहै । जैसे इंद्रका वज्र वृक्षकों । भावना देनेके योग्य द्रव्यके समान क्काथ्य होताहै और आठ भाग क्काथसें भिगोनेमें जब गीला होजाय ऐसे सात दिनपर्यंत भावनाकी विधि है । यह आदित्यपाक गुग्गुलुवटक है ।

(१४) आह्वाश्वगन्धाह्वपुषागुडूची
शतावरीगोक्षुरवृद्धदारकम् ।
रास्नाशताह्वासशठीयमानी
सनागराश्चेति समैश्च चूर्णम् ॥ ६३ ॥
तुल्यं भवेत्कौशिकमत्र मध्ये
देयं तथा सर्पिरतोऽर्धभागम् ।
अर्धाक्षमात्रं त्वथ तत्प्रयोगात्
कृत्वानुपानं सुरयाथ यूषैः ॥ ६४ ॥
मद्येन वा कोष्णजलेन वाथ
क्षीरेण वा मांसरसेन वापि ।
कटिग्रहे गृध्रसिबाहुपृष्ठे
हनुग्रहे जानुनि पादयुग्मे ॥ ६५ ॥
सन्धिस्थिते चास्थिगते च वाते
मज्जागते स्नायुगते च कुष्ठे ।
रोगाञ्जयेद्वातकफानुविद्धान्
वातेरितान्हृद्ग्रहयोनिदोषान् ॥ ६६ ॥
भग्नास्थिविद्धेषु च खञ्जवाते
त्रयोदशाङ्गं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ६७ ॥

(१४ त्रयोदशांगगुग्गुलुः) आसगंध हाऊवेर गिलोय शतावरी गोखरू भिदारा रास्ना सोंफ धमासा कचूर अजमान सोंठ ये सब समान भाग ले चूर्ण करै। इस चूर्णके समान गूगल और गूगलसें आधाभाग घृत मिलाय पीछे ६ मासे रोज खावै मदिराकरकै । अथवा यूषोंकरकै अनुपान करै अथवा मद्यके साथ अथवा अल्प गरम पानीके साथ अथवा दूधके साथ अथवा मांसका रसके साथ इस गूगलकों कटीग्रह गृध्रसी बाहुग्रह पृष्ठग्रह हनुग्रह जानुग्रह पादयुग्मग्रह संधिगतवात अस्थिगतवात मज्जागतवात स्नायुगतवात कुष्ठ वातकफसें अनुविद्धरोग इन सबकों और वातसें प्रेरित किये हृद्रोग योनि दोष इन्होंकों टूटी हुई हड्डीविद्ध और खंजवात इन्होंमें त्रयोदशांगगूगलकों वैद्य उत्तम कहतें हैं । यह त्रयोदशांगगूगल है ।

(१५) जित्वा वरकमग्रे तु वाते वातहरं हितम् ।
अन्नावृते तदुल्लेखो दीपनं पाचनं लघु ॥ ६८ ॥

सुसिवाते त्वसृङ्मोक्षं कारयेद्बहुशो भिषक् ।
दिह्याच्च लवणागारधूमैस्तैलविमर्दितैः ॥ ६९ ॥
सर्पिस्तैलवसामज्जपानाभ्यञ्जनवस्तयः ।
स्वेदाः स्निग्धा निवातं च स्थानं प्रावरणानि च
रसाः पयांसि भोज्यानि स्वाद्वम्ललवणानि च ।
बृंहणं यत्तु तत्सर्वं प्रशस्तं वातरोगिणाम् ॥७१॥
पटोलपालकैर्यूषो वृष्यो वातहरो लघुः ।
वाट्यालककृतो यूषः परं वातविनाशनः ॥७२॥
बलायाः पञ्चमूलस्य दशमूलस्य वा रसे ।
अजाशीर्षाम्बुजानूपक्रव्यादपि शितैः पृथक् ७३
साधयित्वा रसान्स्निग्धान्दध्याम्लव्योषसंस्कृतान्
भोजयेद्वातरोगार्तं तैर्व्यक्तलवणैर्नरम् ॥ ७४ ॥
पञ्चमूलीबलासिद्धं क्षीरं वातामये हितम् ।
वाजिगन्धाबलास्तिस्रो दशमूलीमहौषधम् ।
द्वे गृध्रनख्यौ रास्ना च गणो मारुतनाशनः ७५

(१९ वातहरा उपायाः) प्रथम रक्तकों जीतकर वातमें वातहर ओषध हित है । आंतोंविषै आवृत हुये वातमें दीपन पाचन और हलका ये ओषध हित हैं। सुप्तिवातमें रक्तका निकासनाकों वैद्य अवश्य करै और नमक घरका धुआं इन्होंकों तेलमें मर्दित कर लेप करै। घृत तेल वसा मज्जा इन्होंकों पीना । अभ्यंग बस्तिकर्म स्वेदकर्म चिकने पदार्थ वातसें रहित स्थान कंबलआदिकों धारण मांसके रस दूध और मधुर अम्ल सलोना ऐसे भोजन और पुष्ट करनेवाले सब पदार्थ ये वातरोगियोंकों श्रेष्ठ हैं । परवल और चीताकरकै किया यूष वीर्यमें हित है । वातकों हरता है और हलका है । खरैंहटीसें किया यूष विशेषकरकै वातरोगकों नाशता है। खरैंहटी पंचमूल इन्होंके अथवा दशमूलके रसमें बकरीका शिर जलसें उपजे जीवोंके मांस आनूपदेशके जीवोंका मांस ये अलग अलग ४०० तोलेभर ले। दही औरसोंठ मिरच पीपल इन्होंसें युतकों साधित कर पीछे नमक मिलाय नवीन वातरोगीकों भोजन करावै । पंचमूल और खरैंहटीसें साधित किया दूध वातरोगमें हित है । आसगंध खरैंहटी बडीखरैंहटी गंगेरन दशमूल सोंठ दोनों तरहकी बडवेरी रास्ना यह गण वातकों नाशता है ।

(१६) कोलं कुलत्थं सुरदारुरास्ना-
माषा उमातैलफलानि कुष्ठम् ।
वचा शताह्वे यवचूर्णमम्ल-
मुष्णानि वातामयिनां प्रदेहः ॥ ७६ ॥
आनूपवेशवारोष्णप्रदेहो वातनाशनः ।

(१६ कोलादिप्रदेहः) वडवेरी कुलथी देवदार राम्ना उडद हलदी बहेडा कूट वच शतावरी जवोंका चूर्ण बिजोरा इन्होंका लेप वातरोगियोंकों श्रेष्ठ है अनूपदेशका मांसके वेशवारकों गरमकर किया लेप वातरोगकों नाशताहै।

(१७)निरस्थिपिशितं पिष्टं स्विन्नं गुडघृतान्वितम्
कृष्णामरिचसंयुक्तं वेशवार इति स्मृतः ।
काकोल्यादिः सवातघ्नः सर्वाम्लद्रव्यसंयुतः ७८
सानूपमांसः सुस्विन्नः सर्वस्नेहसमन्वितः ।
सुखोष्णः स्पष्टलवणः साल्वनः परिकीर्तितः ७९
तेनोपनाहं कुर्वीत सर्वदा वातरोगिणाम् ।
वातघ्नो भद्रदार्वादिः काकोल्यादिस्तु सौश्रुतः ॥
मांसेनात्रौषधं तुल्यं यावताम्लेन चाम्लता ।
पट्टीस्यात्स्वेदनार्थं च काञ्जिकाद्यम्लमिष्यते ८१
चतुःस्नेहोऽत्र तावान्स्यात्सुस्विन्नत्वं यतो भवेत् ।
समस्तं वर्गमर्धं वा यथालाभमथापि वा ॥ ८२ ॥
प्रयुञ्जीतेति वचनं सर्वत्र गणकर्मणि ।

(१७ साल्वनस्वेदः) हड्डियोंसें रहित मांसकों कूट गरमकर घृत गुडसें मिलाय पीछे कालीमिरचोंसें युत करै वह वेशवार कहाता है । सब प्रकारके अम्लद्रव्योंसें युत काकोल्यादिगण वातकों नाशताहै । अनूपदेशके मांसकों अच्छीतरह गरमकर उसमें सब प्रकारके स्नेह मिलाय सुखपूर्वक गरमकर उसमें नमक डालै वह साल्वण कहताहै उसकरकै वातरोगियोंकै सब कालमें उपनाह स्वेदकों करै भद्रदारुआदि गण और काकोल्यादिगण जो सुश्रुतनें कहाहै । वह वातकों नाशताहै । यहां मांसकेसमान ओषध और जितना अम्लकरके अम्लता होसकै वह पट्टी स्वेदनके लिये होतीहै । यहां कांजी आदि अम्ल इष्ट है । यहां उतनाही तोल चार प्रकारका स्नेह जिस्सें अच्छीतरह सीजजावै संपूर्ण वर्ग अथवा आधावर्ग अथवा जितने मिलै उतने ओषध सब जगह गणकर्ममें प्रयुक्त करना यह वचन है । यह साल्वणस्वेद है ।

(१८) अश्वगन्धाकषाये च कल्के क्षीरचतुर्गुणम्
घृतं पक्वं तु वातघ्नं वृष्यं मांसविवर्धनम् ।

(१८ अश्वगंधाघृतम्) आशगंधके काथमें और कल्कमें चौगुना दूध मिलाय उसमें पकायाहुआ घृत वातकों नाशताहै पुष्टि करताहै और मांसकों बढाताहै । यह अश्वगंधाघृत है ।

(१९) दशमूलस्य निर्यूहे जीवनीयैः पलोन्मितैः ॥
क्षीरेण च घृतं पक्वं तर्पणं पवनार्तिनुत् ।
काथोऽत्र त्रिगुणः सर्पिःप्रस्थः साध्यः पयःसमः

(१९ दशमूलघृतम्) दशमूलके काथमें जीवनीयगणके ओषध चार चार तोलेभर ले और दूध मिलाय उसमें घृतकों पकावै वह घृत तृप्ति करताहै और वातरोगकों नाशताहै । यहां त्रिगुणा काथमें ६४ तोलेभर घृत और दूध मिलाकै घृत सिद्ध करना । यह दशमूलघृत है ।

(२०) आजं चर्मविनिर्मुक्तं त्यक्तशृङ्गखुरादिकम्
पञ्चमूलीद्वयं चैव जलद्रोणे विपाचयेत् ॥ ८६ ॥
तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
जीवनीयैः सकल्कैः क्षीरं चैव शतावरीम् ८७
छागलाद्यमिदं नाम्ना सर्ववातविकारनुत् ।
अर्दिते कर्णशूले च बाधिर्ये मूकमिन्मिने ॥८८॥
जडगद्गदपङ्गूनां खञ्जे गृध्रसिकुब्जयोः ।
अपतानेऽपतन्त्रे च सर्पिरेतत्प्रशस्यते ॥ ८९ ॥
द्रोणे द्रव्यतुलाश्रुत्या स्याच्छागदशमूलयोः ।
पृथक् तुलार्धं यष्ट्याह्वद्वयं देयं द्विधोक्तितः ९०

(२० छागाद्यं घृतम्)चाम शींग और खुर आदिकों दूर कर बकराका मांस और दशमूल लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै जब वह चौथाई भाग शेष रहै तब ६४ तोलेभर घृतकों पकावै और पकनेके समैं जीवनीयगणके ओषध मुलहटी दूध और शतावरी इन्होंकों मिलाय घृत सिद्ध करना । यह छागलाद्यघृत सब वातविकारोंकों नाशता है और अर्दितवात कर्णशूल बधिरापना मूक मिन्मिन जड गद्गद पंगू खंज गृध्रसी कुब्ज अपतान अपतंत्र इनरोगोंमें यह घृत हित करताहै । द्रोण अर्थात् १०२४ तोलेभर पानीमें ४०० तोलेभर पूर्वोक्त बकराकी चाम और ४०० तोलेभर दशमूल और मुलहटी तथा जीवनीयगणके ओषध दोसौ २०० दोसौ २०० तोले देने यह छागलाद्य घृत है ।

(२१) एलामुराशरलशैलजदारुकौन्ती
चण्डाशटीनलदचम्पकहेमपुष्पम् ।
स्थौणेयगन्धरसपूतिदलामृणाल-
श्रीवासकुन्दुरुनखाम्बुवराङ्गकुष्ठम् ॥९१॥
कालीयकं जलदकर्कटचन्दनश्री-
जीत्याः फलं सविकसं सहकुङ्कुमं च ।
मृक्कातुरुष्कलघुलांभतया विनीय
तैलं बलाक्कथनदुग्धयुतं च दध्ना
सार्धं पचेत्तु हितमेतदुदाहरन्ति
वातामयेषु बलवर्णवपुःप्रकारि ॥ ९२ ॥

(२१ एलादितैलम्) इलायची मुरामांसी शरल शिलाजित देवदार रेणुका शिवलिंगी कचूर वालछड चमेली नागकेसर ग्रंथिपर्णी बोल जवादिकस्तूरी तेजपात कमलकी डंडी श्रीवासधूप कुंदरुतृण नख नेत्रवाला दालचिनी कूट दारुहलदी नागरमोथा वेलगिरी चंदन लौंग जावित्री मजीठ केशर लोबान इन्होंमांहसें जितने मिलै उतने लेकै कल्क बना उसमें खरैंहटीका काथ दूध और दहीकेसाथ तेलकों पकावै यह वातके रोगोंमें हित करताहै । और बल वर्ण और शरीर इन्होंकों बढाताहै । यह एलादितेल है ।

(२२) बलानिःक्काथकल्काभ्यां तैलं पक्वं
पयोऽन्वितम् ।
सर्ववातविकारघ्नमेवं शैरीयपाचितम् ॥ ९३ ॥

(२२ बलाशैरीयतैलम्) खरैंहटीके काथ और कल्कमें दूध मिलाय उसमें तेलकों पकावै यह सब प्रकारके वातविकारोंकों नाशताहै । और इसीप्रकारसें कुरंटातेलभी बनताहै । ये बलातेल और शैरीयतेल है ।

(२३) बलामूलकषायस्य दशमूलीकृतस्य च ।
यवकोलकुलत्थस्य काथस्य पयसा तथा ॥ ९४॥
अष्टावष्टौ शुभा भागास्तैलादेकस्तदेकतः ।
पचेदावाप्य मधुरं गणं सैन्धवसंयुतम् ॥ ९५ ॥
तथागुरुसर्जरसं सरलं देवदारु च ।
मञ्जिष्ठां चन्दनं कुष्ठमेलां कालानुशारिवाम् ९६
मांसीशैलेयकं पत्रं तगरं शारिवां वचाम् ।
शतावरीमश्वगन्धां शतपुष्पां पुनर्नवाम् ॥ ९७॥

तत्साधुसिद्धं सौवर्णे राजते मृण्मयेऽपि वा ।
प्रक्षिप्य कलशे सम्यक्सुनिगुप्तं निधापयेत्॥९८॥
बलातैलमिदं नाम्ना सर्ववातविकारनुत् ।
यथाबलमयोमात्रां सूतिकायै प्रदापयेत् ॥ ९९ ॥
या च गर्भार्थिनी नारी क्षीणशुक्रश्च यः पुमान्
क्षीणवाते मर्महतेऽभिहते मथितेऽथ वा ।
भग्नेश्रमाभिपन्ने च सर्वथैवोपयोजयेत् ॥ १०० ॥
सर्वानाक्षेपकादींश्च वातव्याधीन्व्यपोहति ।
हिक्काकासमधीमन्थं गुल्मश्वासं सुदुस्तरम् १०१
षण्मासानुपयुज्यैतदन्त्रवृद्धिमपोहति ।
प्रत्यग्रधातुः पुरुषो भवेच्च स्थिरयौवनः ॥१०२॥
एतद्धि राज्ञा कर्तव्यं राजमात्राश्च ये नराः ।
सुखिनः सुकुमाराश्च बलिनश्चापि ये नराः ॥

(२३ बलातैलम्) खरैंहटीकी जडके काथकै और दशमूलकी जडके काथकै और जव वेर कुलथी इन्होंके काथकैसमान दूध इन्होंके आठ आठ भाग और तेल एक भाग सेंधानमकसहित मधुर ओषधोंका गण अगर राल सरल देवदार मजीठ चंदन कूट इलायची शीसमवृक्ष वालछड शिलाजित तेजपात तगर शारिवा वच शतावरी आसगंध सोंफ सांठी ये सब एक भाग ले इन्होंकों लेकै सोना चांदी माटी इन्होंमांहसें एक कोईसा पात्रमें अच्छी-तरह सिद्ध करै पीछे कलशामें घाल अच्छीतरह गुप्त कर धरै यह बलातेल सब प्रकारके वातरोगकों नाशताहै । और बलके अनुसार इसकी मात्रा सूतिका स्त्रीके अर्थ देनी । जो गर्भकी इच्छावाली स्त्री और क्षीणवीर्यवाला पुरुष और क्षीणवात मर्मकी चोट अभिहत मथित भग्न परिश्रमसें पीडा इन रोगवालोंकों देना । सब प्रकारकी आक्षेपआदि वातव्याधियोंकों नाशताहै । और हिचकी खांसी अधिमंथ गुल्म भयंकर श्वास औ अंगवृद्धि इन्होंकों छह महीने सेव-नेसें नाशताहै। और इसकरकै उत्तम धातुओंवाला तथा स्थि-रयौवनवाला पुरुष बनताहै । राजा राजसेवक सुखी सुकु-मार और बलवान् इन मनुष्योंनें यह तेल बनाना यह बलातेल है ।

(२४) बिल्वाग्निमन्थस्योनाकपाटलापारिभद्रकः
प्रसारण्यश्वगन्धा च बृहती कण्टकारिका १०४
बला चातिबला चैव श्वदंष्ट्रा सपुनर्नवा ।
एषां दशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥
पादशेषं परिस्राव्य तैलपात्रं प्रदापयेत् ।
शतपुष्पा देवदारु मांसी शैलेयकं वचा ॥१०६॥
चन्दनं तगरं कुष्ठमेलापर्णीचतुष्टयम् ।
रास्ना तुरगगन्धा च सैन्धवं सपुनर्नवम्॥१०७॥
एषां द्विपलिकान्भागान्पेषयित्वा विनिक्षिपेत् ।
शतावरीरसं चैव तैलतुल्यं प्रदापयेत् ॥ १०८ ॥
आजं वा यदि वा गव्यं क्षीरं दत्त्वा चतुर्गुणम् ।
पाने बस्तौ तथाभ्यङ्गे भोज्ये चैव प्रशस्यते १०९
अश्वो वा वातसंभग्नो गजो वा यदि वा नरः ।
पङ्गुलः पीठसर्पी च तैलेनानेन सिध्यति ११०
अधोभागे च ये वाताः शिरोमध्यगताश्च ये ।
दन्तशूले हनुस्तम्भे मन्यास्तम्भे गलग्रहे १११
यस्य शुष्यति चैकाङ्गं गतिर्यस्य च विह्वला ।
क्षीणेन्द्रिया नष्टशुक्रा ज्वरक्षीणाश्च ये नराः ॥
बधिरा लल्लजिह्वाश्च मन्दमेधस एव च ।
अल्पप्रजा च या नारी या च गर्भं न विन्दति ॥
वातार्तौ वृषणौ येषामन्त्रवृद्धिश्च दारुणा ।
एतत्तैलवरं तेषां नाम्ना नारायणं स्मृतम् ।
तगरं नतमत्र स्यादभावे शीयलिछोपडः॥११४॥

(२४ नारायणतैलम्) वेलगिरी अरनी शोनापाठा पाटला देवदार खींप आसगंध बडी कटेली छोटी कटेली खरैंहटी गंगेरन गोखरू सांठी ये सब चालीस चालीस तोलेभर लेकै ४०९६ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग पानी शेष रहै तब १९२ तोलेभर तेल देवै पीछे सोंफ देवदार वालछड शिलाजित वच चंदन तगर कूट इलायची माषपर्णी मूंगपर्णी शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी रास्ना आ-सगंध सेंधानमक सांठी इन सबकों आठ आठ तोलेभर ले पीसकर मिलावै और १९२ तोलेभर शतावरीका रस मि-लावै । बकरीका अथवा गायका दूध चौगुना देकै तेलकों सिद्ध करै पीना बस्तिकर्म अभ्यंग भोजन इन्होंमें यह श्रेष्ठ है । वातसें दुःखित हुआ अश्व अथवा हस्ती अथवा म-नुष्य पांगला और पीठसें चलनेवाला रोजी इस तेल क-रकै अच्छा होताहै । शरीरके नीचरले भागमें जो वात है और शिरके मध्यमें जो वात है और दंतशूल हनुस्तंभ मन्यास्तंभ गलग्रह अंगका सूखना गमन बंधा होजाना

और जिसकी इंद्रियें क्षीण होजावै जिसका वीर्य क्षीण होजावै और जो ज्वरसें क्षीण हो बहरा गद्गद जीभवाले मंदबुद्धिवाले अल्प संतानवाली और गर्भकों नहीं धारण करनेवाली ऐसी स्त्री जिसके वातसें पोते पीडित हो और जिन्होंकै भयंकर अंत्रवृद्धि हो उन सबकों तेलोंमें उत्तमरूप यह नारायणतेल हितकारक है। यह नारायणतेल है।

(२५) शतावरी चांशुमती पृश्निपर्णी शटी वरा।
एरण्डस्य च मूलानि बृहत्योः पूतिकस्य च॥
गवेधुकस्य मूलानि तथा सहचरस्य च।
एषां दशपलान्भागाञ्जलद्रोणे विपाचयेत्॥११६॥
पादावशेषे पूते च गर्भे चैनं समावपेत्।
पुनर्नवावचादारुशताह्वाचन्दनागरु॥ ११७॥
शैलेयं तगरं कुष्ठमेलामांसी स्थिता बला।
अश्वाह्वासैन्धवं रास्नापलार्धानि च पेषयेत्॥
गव्याजपयसः प्रस्थौ द्वौ द्वावत्र प्रदापयेत्।
शतावरीरसप्रस्थं तैलप्रस्थं विपाचयेत्॥११९॥
अस्य तैलस्य सिद्धस्य शृणु वीर्यमतःपरम्।
अश्वानां वातभग्नानां कुञ्जराणा नृणां तथा१२०
तैलमेतत्प्रयोक्तव्यं सर्ववातनिवारणम्।
आयुष्मांश्च नरः पीत्वा निश्चयेन दृढी भवेत्॥
गर्भमश्वतरी विन्देत्किं पुनर्मानुषी तथा।
हृच्छूलं पार्श्वशूलं च तथैवार्धावभेदकम् १२२
अपचीं गण्डमालां च वातरक्तं हनुग्रहम्।
कामलां पाण्डुरोगं च अश्मरीं चापि नाशयेत्॥
तैलमेतद्भगवता विष्णुना परिकीर्तितम्।
नारायणमिति ख्यातं वातान्तकरणं परम् १२४

(२५ महानारायणतैलम्) शतावरी शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी कचूर त्रिफला अरंडकी जड दोनों कटेलीकी जड करंजुवाकी जड बडी खरैंहटीकी जड कोरंटाकी जड इन सबकों चालीस चालीस तोलेभर ले १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब कपडासें छान उसमें सांठी वच देवदार शतावरी चंदन अगर शिलाजित तगर कूट इलायची वालछड शालिपर्णी खरैंहटी आसगंध सेंधानमक रास्ना ये सब दो दो तोलेभर लेकै पीस लेवै पीछे गौका दूध १२८ तोले और बकरीका दूध १२८ तोलेभर ले पीछे शतावरीका रस ६४ तोले और तेल ६४ तोले इन सबकों मिलाय तेलकों सिद्ध करै। सिद्ध हुआ इस तेलके वीर्यकों अब शुनवातसें भग्न हुये अश्व हस्ती और मनुष्योंकै प्रयुक्त किया यह तेल सब प्रकारके वातरोगोंकों दूर करताहै। इसकों पीनेसें आयुवाला और दृढअंगोंवाला मनुष्य होजाताहै। और खिचरीही गर्भकों प्राप्त होती फिर मनुष्यकी स्त्री तो जरूरही गर्भवती होजायगी। और हृदयका शूल पसलीशूल अर्धावभेदक अपची गंडमाला वातरक्त हनुग्रह कामला पांडुरोग और अश्मरी इन्होंकों नाशताहै। यह तेल विष्णुभगवान्नें कहाहै नारायण नामसें विख्यात है विशेषकरकै वातकों नाशताहै। यह महा नारायणतेल है।

(२६) शतं पक्त्वाश्वगन्धाया जलद्रोणेऽशशेषितम्।
विस्राव्य विपचेत्तैलं क्षीरं दत्वा चतुर्गुणम्१२५
कल्कैर्मृणालशालूकबिसकिञ्जल्कमालती।
पुष्पैर्ह्रीबेरमधुकशारिवापद्मकेशरैः॥ १२६॥
मेदापुनर्नवाद्राक्षामञ्जिष्ठाबृहतीद्वयैः।
एलैलवालुत्रिफलामुस्तचन्दनपद्मकैः॥ १२७॥
पक्वं रक्ताश्रयं वातं रक्तपित्तमसृग्दरम्।
हन्यात्पुष्टिबलं कुर्यात्कृशानां मांसवर्धनम्॥
रेतोयोनिविकारघ्नं घ्राणशोषापकर्षणम्।
षण्डानपि वृषान्कुर्यात्पानाभ्यङ्गानुवासनैः॥

(२६ अश्वगंधातैलम्) ४०० तोलेभर आसगंधकों १०२४ तोलेभर पानीमें पकाकै जब चौथाई भाग शेष रहै तब कपडामांहकै छान उसमें चौगुना दूध मिलाय तेलकों पकावै कमलकी डंडी कमलकंद कमलका तंतु कमलका केशर चमेलीके फूल नेत्रवाला मुलहटी अनंतमूल कमल केशर मेदा सांठी दाख मजीठ दोनों कटेली इलायची एलवा त्रिफला नागरमोथा चंदन पदमाक इन्होंका कल्क मिलाय तेलकों सिद्ध करै यह रक्तवात रक्तपित्त और प्रदररोग इन्होंकों नाशताहै। और पुष्टिकों तथा बलकों करताहै। और कृश मनुष्योंकै मांसकों बढाताहै। विर्यके विकारकों और योनिके विकारकों नाशताहै। और नासिकाके शोपकों दूर करताहै। और पीना मालिस और अनुवासन बस्ति इन्होंकरकै नपुंसकोंकों पुरुष बनाताहै। यह अश्वगंधतेल है।

(२७) मूलकस्वरसं तैलं क्षीरदध्यम्लकाञ्जिम्।
तुल्यं विपाचयेत्कल्कैर्बलाचित्रकसैन्धवैः॥१३०॥

पिप्पल्यातिविषारास्नाचविकागुरुचित्रकैः ।
भल्लातकवचाकुष्ठश्वदंष्ट्राविश्वभेषजैः ॥ १३१ ॥
पुष्कराह्वशठीविल्वशताह्वानतदारुभिः ।
तत्सिद्धं पीतमत्युग्रान्हन्ति वातात्मकान्मदान् ॥

(२७ मूलकाद्यं घृतम्) मूलीका स्वरस तेल दूध दही अम्लरस कांजी ये सब बराबर ले उसमें खरैंहटी चीता सेंधानमक पीपल अतीस रास्ना चव्य अगर चीता भिलावा वच कूट गोखरू सोंठ पौहकरमूल कचूर वेलगिरी शतावरी तगर देवदार इन्होंके कल्कमें तेलकों सिद्ध कर पान करै तो भयंकर वातरोगोंका नाश होताहै । यह मूलकाद्य तेल है ।

(२८) रसोनकल्कस्वरसेन पक्वं
तैलं पिबेद्यस्त्वनिलामयार्तः ।
तस्याशु नश्यन्ति हि वातरोगा
ग्रन्था विशाला इव दुर्गृहीताः ॥ १३३॥

(२८ रसोनतैलम्) ल्हस्शनका कल्क और स्वरसकरकै पकायाहुआ तेलकों वातसें पीडित हुआ रोगी पीवै उसकै शीघ्रही वातरोग नष्ट होतेहै जैसे दुष्टनें पढे हुये ग्रंथ यह रसोनतेल है ।

(२९) केतकीनागवलातिबलानां
यद्बहुलेन रसेन विपक्वम् ।
तैलमनल्पतुषोदकसिद्धं
मारुतमस्थिगतं विनिहन्ति ॥ १३४ ॥
अनल्पवचनात्तत्र तुल्ये क्वाथतुषोदके ।
अकल्कोऽपि भवेत्स्नेहो यः साध्यः केवले द्रवे १३५

(२९ केतक्याद्यं तैलम्) केतकी बडी खरैंहटी गंगेरन इन्होंके बहुत रस अनल्प तुषोदक अर्थात् तुषकी कांजी मिलाकै उसमें तेलकों सिद्ध करै यह हड्डीगत वातकों नाशताहै । तहां अनल्प वचनसें क्वाथ और तुषोदक बराबर लेना जो केवल रसमेंही बनाना हो तो कल्क नहीं गेरना । यह केतकाद्यतेल है ।

(३०) द्वे पले सैन्धवात्पञ्च शुण्ठ्या
ग्रन्थिकचित्रकात् ।
द्वे द्वे भल्लातकास्थीनि विंशतिर्द्वे तथाढके १३६
आरणालात्पचेत्प्रस्थं तैलमेतैरपत्यदम् ।
गृध्रस्युरुग्रहार्शोऽर्तिसर्ववातविकारनुत् ॥१३७॥

(३० सैंधवाद्यं तैलम्) सेंधानमक ८ तोले सोंठ ५ तोले पीपलामूल और चीता दो दो तोले और भिलावाकी गिरी ४०० तोले और २५६ तोलेभर कांजी इन्होंमें ६४ तोलेभर तेलकों पकावै यह गृध्रसी ऊरुग्रह ववासीर और सब प्रकारके वातरोगके विकारोंकों नाशताहै । यह सैंधवाद्यतेल है ।

(३१)तैलं सङ्कुचितेऽभ्यङ्गे माषसैन्धवसाधितम् ।
बाहुशीर्षगते नस्यं पानंचौत्तरभक्तिकम् ।
क्वाथोऽत्र माषनिष्पाद्यः सैन्धवं कल्कमेव च ॥

(३१ स्वल्पमाषतैलम्) उडद और सेंधानमकसें साधित किया तेलकी संकुचित किया अंगमें मालिस करना और बाहु तथा शिरोगत वातमें भोजनसें पहले पान और नस्य देना । यहां उडदका क्वाथमें सेंधानमकका कल्क मिलाना यह स्वल्पमाषतेल है ।

(३२) माषात्मगुप्तातिविषोरुबूक-
रास्नाशताह्वालवणैः सुपिष्टैः ।
चतुर्गुणे माषबलाकषाये
तैलं कृतं हन्ति च पक्षवातम् ॥ १३९ ॥

(३२ माषतैलम्) उलद कौंच अतीस अरंड रास्ना शतावरी सेंधानमक इन्होंके कल्ककों चौगुना उडद और खरैंहटीके क्वाथमें तेलकों पकावै यह पक्षवातकों नाशताहै यह माषतेल है ।

(३३)माषप्रस्थं समावाप्य पचेत्सम्यक्जलाढके।
पादशेषे रसे तस्मिन्क्षीरं दद्याच्चतुर्गुणम् १४०
प्रस्थं च तिलतैलस्य कल्कं दत्त्वाक्षसम्मितम् ।
जीवनीयानि यान्यष्टौ शतपुष्पां ससैन्धवाम् ॥
रास्नात्मगुप्तामधुकं बलाव्योषं त्रिकण्टकम् ।
पक्षाघातार्दिते वाते कर्णशूले सुदारुणे ॥१४२॥
मन्दश्रुतौ चाश्रवणे तिमिरे च त्रिदोषजे ।
हस्तकम्पे शिरःकम्पे विश्वच्यामवबाहुके १४३
शस्तं कलायखञ्जे च पानाभ्यञ्जनवस्तिभिः ।
माषतैलमिदं श्रेष्ठमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ॥ १४४ ॥

(३३ द्वितीयं माषतैलम्) ६४ तोलेभर उडद लेकै २५६ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौथाईभाग शेष रहै उसमें चौगुना दूध मिलावै । पीछे ६४ तोलेभर ति-

लोंका तेल और एक एक तोलाभर जीवनीय गणके आठों ओषध सौंफ सेंधानमक रास्ना कौंच मुलहटी खरैंहटी सोंठ मिरच पीपल गोखरू इन्होंका कल्क मिलाय उसमें सिद्ध किया तेल पक्षघात अर्दितवात भयंकर कर्णशूल कमशुनना नहीं शुनना त्रिदोषसें उपजा तिमिररोग हस्तकंप शिरका कंप विश्वाची और अवबाहुकवात कलायखंज इन्होंमें पीना मालिस और बस्तिकर्मकरकै श्रेष्ठ है यह माषतेल श्रेष्ठ है और ऊपरला जोतामें उपजे रोगकों नाशता है यह माषतेल है।

(३४) माषातसीयवकुरुण्टककण्टकारी-
गोकण्टटुण्टुकजटाकपिकच्छुतोयैः।
कार्पासकास्थिशणबीजकुलत्थकोल-
क्राथेन बस्तपिशितस्य रसेन चापि ॥१४५॥
शुण्ठ्या समागधिकया शतपुष्पया च
सैरण्डमूलसपुनर्नवया सरण्या।
रास्नाबलामृतलताकटुकैर्विपक्कं
माषाख्यमेतदवबाहुहरं च तैलम् ॥ १४६ ॥
अर्धाङ्गशोषमपतानकमाढ्यवात-
माक्षेपकं सभुजकम्पशिरः प्रकम्पम्।
नस्येन बस्तिविधिना परिषेचनेन
हन्यात्कटीजघनजानुरुजश्च सर्वाः ॥ १४७ ॥

(३४ तृतीयं माषतैलम्) उडद अलसी जव कोरंठा कटेली गोखरू शोनापाठा कौंच कपासका बिंदोला शणके बीज कुलथी बेर इन्होंके क्राथकरकै और बकराका मांसके रसकरकै और सोंठ पीपल सौंफ अरंडकी जड सांठी खींप रास्ना खरैंहटी गिलोय कुटकी इन्होंकरकै पकाया हुआ यह माषाख्यतेल अवबाहुकरोगकों नाशताहै और अर्धांगशोष अपतानक वातरक्त आक्षेपक भुजकंप शिरका कंप इन सबकों नस्य बस्तिकर्म और परिषेक इन्होंकरकै नाशताहै और कटि जंघा गोडा इन्होंकी पीडाकों नाशताहै। यह माषतेल है।

(३५) माषक्राथे बलाक्राथे रास्नाया दशमूलजे।
यवकोलकुलत्थानां छागमांसभवे पृथक् ॥१४८॥
प्रस्थे तैलस्य च प्रस्थं क्षीरं दत्वा चतुर्गुणम्।
रास्नात्मगुप्तासिन्धूत्थशताह्वैरण्डमुस्तकैः ॥१४९॥
जीवनीयैर्बलाव्योषैः पचेदक्षसमैर्भिषक्।
हस्तकम्पे शिरःकम्पे बाहुशोषेऽवबाहुके १५०
बाधिर्ये कर्णशूले च कर्णनादे च दारुणे।
विश्वच्यामर्दिते कुब्जे गृध्रस्यामपतानके ॥१५१॥
वस्त्यभ्यञ्जनपानेषु नावने च प्रयोजयेत्।
माषतैलमिदं श्रेष्ठमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ॥ १५२ ॥
क्राथप्रस्थाः षडेवात्र विभक्त्यन्तेन कीर्तिताः

(३५ बृहन्माषतैलम्) उडका क्राथ खरैंहटीका क्राथ रास्नाका क्राथ दशमूलका क्राथ और जव बेर कुलथी इन्होंके क्राथ और बकराके मांसका रस ये सब अलग अलग चौंसठ तोले लेना। और तेल ६४ तोले और दूध २५६ तोले और रास्ना कौंच सेंधानमक शतावरी अरंड नागरमोथा जीवनीयगणके ओषध खरैंहटी सोंठ मिरच पीपल ये सब एक एक तोलाभर ले कल्क बनाय मिलायकै तेलकों सिद्ध करै यह हस्तकंप शिरका कंप बाहुशोष अवबाहुक बधिरपना कर्णशूल भयंकर कर्णनाद विश्वाची अर्दितवात कुब्जवात गृध्रसी अपतानक इन्होंमें बस्ति मालिस पीना नस्य इन्होंकेद्वारा प्रयुक्त करना यह माषतेल श्रेष्ठ है। ऊर्ध्वजोताके रोगकों नाशताहै। क्राथ और प्रस्थ ये छहों विभक्त्यंत करकै प्रकाशित कियेहैं। यह बृहन्माषतेल है।

(३६) माषस्यार्धाढकं दत्त्वा तुलार्धं दशमूलतः
पलानि छागमांसस्य त्रिंशद्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥
पूतशीते कषाये च चतुर्थांशावतारिते ॥ १५४॥
प्रस्थं च तिलतैलस्य पयो दद्याच्चतुर्गुणम्।
आत्मगुप्तोरुबूकश्च शताह्वा लवणत्रयम् ॥१५५॥
जीवनीयानि मञ्जिष्ठा चव्यचित्रककट्फलम्।
सव्योषं पिप्पलीमूलं रास्नामधुकसैन्धवम् १५६
देवदार्वमृता कुष्ठं वाजिगन्धा वचा शटी।
एतैरक्षसमैः कल्कैः साधयेन्मृदुनाग्निना॥१५७॥
पक्षाघातार्दिते वाते बाधिर्ये हनुसंग्रहे।
कर्णनादे शिरःशूले तिमिरे च त्रिदोषजे १५८
पाणिपादशिरोग्रीवाभ्रमणे मन्दचङ्क्रमे।
कलायखञ्जपाङ्गुल्ये गृध्रस्यामवबाहुके ॥ १५९ ॥
पाने बस्तौ तथाभ्यङ्गे नस्ये कर्णाक्षिपूरणे।
तैलमेतत्प्रशंसन्ति सर्ववातरुजापहम् ॥ १६० ॥

(३६ महामाषतैलम्) उडद १२८ तोले दशमूल २०० तोले बकराका मांस १२० तोले इनकों १०२४

तोलेभर पानीमें पकावै पीछे छान और शीतल करै परंतु चतुर्थांश रहै जब उतारै उसमें ६४ तोले तिलोंका तेल और २५६ तोले दूध कौंच अरंड शतावरी सेंधानमक कालानमक मनयारीनमक जीवनीयगणके ओषध मजीठ चव्य चीता कायफल सोंठ मिरच पीपल पीपलामूल रास्ना मुलहटी सेंधानक देवदार गिलोय कूट आसगंध वच कचूर ये सब एक एक तोलाभर ले कल्क बनाके मिलाय कोमल अग्निसें साधै पक्षाघात शिरका शूल त्रिदोषका तिमिररोग और हाथ पैर शिर ग्रीवा इन्होंका भ्रमणा मंद चलना कलायखंज पंगलावात गृध्रसी और अवबाहुक इन्होंमें पीना बस्ति मालिस नस्य कर्णमें पूरणा नेत्रमें पूरणा इन्होंकेद्वारा यह तेल श्रेष्ठ है और सब वातरोगोंकों नाशताहै। यह महामाषतेल है।

(३७)द्विपञ्चमूलीं निःक्वाथ्य तैलात्षोडशभिर्गुणैः
माषाढकं साधयित्वा तन्निर्यूहं चतुर्गुणम् १६१
ग्राहयित्वा तु विपचेत्तैलप्रस्थं पयः समम्।
कल्कार्थं च समावाप्य भिषग्द्रव्याणि बुद्धिमान्
अश्वगन्धां शटीं दारुबलां रास्नां प्रसारणीम्।
कुष्ठं परूषकं भार्गीं द्वे विदार्यौ पुनर्नवाम् १६३
मातुलुङ्गफलाजाज्यौ रामठं शतपुष्पिकाम्।
शतावरीगोक्षुरकं पिप्पलीमूलचित्रकम् ॥१६४॥
जीवनीयगणं सर्वं संहृत्यैव ससैन्धवम्।
तत्साधुसिद्धं विज्ञाय माषतैलमिदं महत् १६५
बस्त्यभ्यञ्जनपानेषु नावने च प्रयोजयेत्।
पक्षाघाते हनुस्तम्भे अर्दिते सापतन्त्रके॥१६६॥
अवबाहुकविश्वच्योः खञ्जपङ्गुलयोरपि।
हनुमन्याग्रहे चैवमधिमन्थे च वातिके॥ १६७॥
शुक्रक्षये कर्णनादे कर्णशूले च दारुणे।
कलायखञ्जशमने भैषज्यमिदमादिशेत् ॥ १६८॥
दशमूलाढकं द्रोणे निःक्वाथ्य पादिकां भवेत्।
क्वाथश्चतुर्गुणस्तैलान्माषक्वाथेऽप्ययं विधिः १६९

(३७ द्वितीयं महामाषतैलम्) दशमूलका क्वाथ तेलसें सोलहगुणा ले और २५६ तोलेभर उडदोंका क्वाथ चौगुना ले उसमें ६४ तोलेभर तेल और ६४ तोलेभर दूध मिलाकै कल्ककेवास्ते बुद्धिमान् वैद्य आशगंध कचूर देवदार खरैंहटी रास्ना खींप कूट फालसा भारंगी दोनों विदारी सांठी बिजोराका फल जीरा हींग सौंफ शतावरी गोखरू पीपलमूल चीता जीवनीयगणके सब ओषध और सेंधानमक इन सबकों मिलै इस महामाषतेलकों सिद्ध करै इसकों बस्ती मालिस और पीनेमें प्रयुक्त करै पक्षघात हनुस्तंभ अर्दितवात अपतंत्रक अवबाहुक विश्वाची खंज पंगुल हनुग्रह मन्याग्रह वातका अधिमंथ शुक्रक्षय कर्णनाद भयंकर कर्णशूल कलायखंज इन सबकों शांत करनेमें यह उत्तम है दशमूल २५६ तोलेभर लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकाय चौथाईभाग शेष रखना वह क्वाथ तेलसें चौगुना माष क्वाथमें लेना यह विधि है । यह महामाषतेल है।

(३८) ग्राम्यानूपौदकानां तु भिन्नास्थीनि पचेज्जले।
तं स्नेहं दशमूलस्य कषायेण पुनः पचेत्॥१७०॥
जीवकर्षभकास्फोताविदारीकपिकच्छुभिः।
वातघ्नैर्जीवनीयैश्च कल्कैर्द्विक्षीरभागिकम्॥१७१॥
तत्सिद्धं नावनाभ्यङ्गात्तथा पानानुवासनात्।
शिरःपार्श्वास्थिकोष्ठस्थं प्रणुदत्याशु मारुतम्॥
ये स्युः प्रक्षीणमज्जानः क्षीणशुक्रौजसश्च ये।
बलपुष्टिकरंतेषामेतत्स्यादमृतोपमम् ॥ १७३ ॥

(३८ मज्जस्नेहः) ग्राम्य अनूप और औदक इन जीवोंकी अलग अलग हड्डियोंकों जलमें पकावै उस स्नेहकों दशमूलके क्वाथ करकै फिर पकावै। जीवक ऋषभक अनंतमूल विदारीकंद कौंच और वातकों नाशनेवाले जीवनीयगणके ओषध इन्होंका कल्क और दुगुना दूध इन सबकों मिला सिद्ध कर नस्य पीना मालिस और अनुवासनबस्तिसें वर्तै तो शिरोवात पसलीवात अस्थिवात और कोष्ठवातकों शीघ्र नाशताहै। जो क्षीण हुई मज्जावाले हैं और जो क्षीण हुआ वीर्य तथा बलवाले हैं उनकों यह तेल बल और पुष्टि करताहै। यह अमृतकेसमान है। यह मज्जस्नेह है।

(३९)प्रस्थः स्यात्त्रिफलायास्तु कुलत्थकुडवद्वयम्
कृष्णगन्धात्वगाढक्योः पृथक्पञ्चपलंभवेत् १७४
रास्नाचित्रकयोर्द्वे द्वे दशमूलं पलोन्मितम्।
जलद्रोणे पचेत्पादशेषं प्रस्थोन्मितं पृथक् १७५
सुरारणालंदध्यम्लसौवीरकतुषोदकम्।
कोलदाडिमवृक्षाम्लरसं तैलं घृतं वसाम् १७६

मज्जानं च पयश्चैव जीवनीयपलानि षट् ।
कल्कं दत्त्वा महास्नेहं सम्यगेनं विपाचयेत् ॥
शिरामज्जास्थिगे वाते सर्वाङ्गैकाङ्गरोगिषु ।
वेपनाक्षेपशूलेषु तमभ्यङ्गं प्रदापयेत् ॥ १७८ ॥

(३९ चतुःस्नेहः) त्रिफला ६४ तोले कुलथी ३२ तोले सहोंजनाकी छाल २० तोले फटकडी २० तोले रास्ना ८ चीता ८ तोले दशमूल ४ तोले इन सबकों ६४ तोलेभर पानीमें गेर क्वाथ पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब मदिरा कांजी दहीका पानी सौवीरसंज्ञक कांजी तुषोदकसंज्ञक कांजी और वेर अनार विजोरा इन्होंके रस तेल घृत वसा मज्जा और दूध ये सब चौंसठ चौंसठ तोले लेने और जीवनीयगणके ओषध २४ तोले इनका कल्क देकै महास्नेहकों अच्छीतरह पकावै शिरावात मज्जावात अस्थिवात सर्वांगवात एकांगवात कंप आक्षेप और शूल इन रोगोंमें उस स्नेहकी मालिस करना । यह चतुःस्नेह है ।

(४०) प्रसारणीशतं क्षुण्णं पचेत्तोयार्मणे शुभे ।
पादशिष्टे समं तैलं दधि दद्यात्सकाञ्जिकम् ॥
द्विगुणं च पयो दत्त्वा कल्कान्द्विपलिकांस्तथा ।
चित्रकं पिप्पलीमूलं मधुकं सैन्धवं वचाम् १८०
शतपुष्पां देवदारुरास्नां वारणपिप्पलीम् ।
प्रसारण्याश्च मूलानि मांसीभल्लातकानि च ॥
पचेन्मृद्वग्निना तैलं वातश्लेष्मामयाञ्जयेत् ।
अशीतिं नरनारीस्थान्वातरोगानपोहति १८२
कुब्जं स्तिमितपङ्गुत्वं गृध्रसीखुडुकार्दितम् ।
हनुपृष्ठशिरोग्रीवास्तम्भं वापि नियच्छति॥१८३॥

(४० कुब्जाप्रसारिणीतैलम्) ४०० तोलेभर खींप लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब तेल दही और कांजी ये समान भाग ले । और दूध दुगुना भाग ले और आठ आठ तोलेभर चीता पीपलामूल महुवा सेंधानमक वच सौंफ देवदार रास्ना गजपीपल खींपकी जड वालछड भिलावा इन सबोंके कल्क मिलाय तेलकों कोमल अग्निसें पकावै यह वात कफके रोगोंकों जीतता है और नरनारीमें स्थित हुये ८० प्रकारके वातरोगोंकों नाशताहै । और कुब्जवात स्तिमित पंगुवात गृध्रसी खुडुकवात अर्दितवात हनुस्तंभ पृष्ठस्तंभ और ग्रीवास्तंभ इन्होंकों दूर करताहै ।

(४१)प्रसारण्यास्तुलामश्वगन्धाया दशमूलतः ।
तुलां तुलां पृथग्वारि द्रोणे पादांशशेषिते ॥
तैलाढकं चतुःक्षीरं दधितुल्यं द्विकाञ्जिकम् ।
द्विपलैर्ग्रन्थिकक्षारप्रसारण्यक्षसैन्धवैः ॥ १८५ ॥
समञ्जिष्ठाग्नियष्ट्याह्वैः पलिकैर्जीवनीयकैः ।
शुण्ठ्याः पञ्च पलं दत्त्वा त्रिशद्भल्लातकानि च ॥
पचेद्बस्त्यादिना वातं हन्ति सन्धिशिरास्थितम्
पुंस्त्वोत्साहस्मृतिप्रज्ञाबलवर्णाग्निवृद्धये ॥१८७॥
प्रसारणीयं त्रिशती अक्षं सौवर्चलं त्विह ।

(४१ त्रिशतीप्रसारणीतैलम्) खींप ४०० तोले आशगंध ४०० तोले दशमूल ४०० तोले इन सबकों लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब तेल २५६ तोले दूध १०२४ तोले दही १०२४ कांजी २०४८ तोले और पीपलामूल जवाखार खींप सेंधानमक मजीठ चीता मुलहटी और जीवनीयगणके आठ ओषध ये सब चार चार तोले और सोंठ २० तोले और भिलावे १२० तोले इन्होंका कल्क मिलाय तेलकों पकावै यह बस्ति आदिकरकै संधिमें और शिरामें स्थित हुआ वातकों नाशताहै और पुरुषपना उत्साह स्मृति प्रज्ञा वर्ण और बल इन्होंकों बढाताहै यह त्रिशती प्रसारणी है इसमें एक तोलाभर कालानमकभी डालना यह त्रिशती-प्रसारणी तेल है ।

(४२)समूलपत्रामुत्पाच्य शरत्काले प्रसारणीम् ॥
शतं ग्राह्यं सहचराच्छतावर्याः शतं तथा ।
बलात्मगुप्ताश्वगन्धाकेतकीनां शतं शतम् १८९
पचेच्चतुर्गुणे तोये द्रवैस्तैलाढकं भिषक् ।
मस्तुमांसरसं चुक्रं पयश्चाढकमाढकम् ॥ १९०॥
दध्याढकसमायुक्तं पाचयेन्मृदुनाग्निना ।
द्रव्याणां त प्रदातव्या मात्रा चार्धा पलांशिका ॥
तगरं मदनं कुष्ठं केशरं मुस्तकं त्वचम् ।
रास्ना सैन्धवपिप्पल्यौ मांसी मञ्जिष्ठयष्टिका ॥
तथा मेदा महामेदा जीवकर्षभकौ पुनः ।
शतपुष्पा व्याघ्रनखं शुण्ठी देवाह्वमेव च १९३
काकोलीक्षीरकाकोलीवचाभल्लातकं तथा ।
पेषयित्वा समानेतान्साधनीया प्रसारणी १९४
नातिपक्वं न हीनं च सिद्धं पूतं निधापयेत् ।
यत्र यत्र प्रदातव्या तन्मे निगदतः शृणु १९५

कुब्जानामथ पङ्गूनां वामनानां तथैव च ।
यस्य शुष्यति चैकाङ्गं ये च भग्नास्थिसन्धयः ॥
वातशोणितदुष्टानां वातोपहतचेतसाम् ।
स्त्रीषु प्रक्षीणशुक्राणां वाजीकरणमुत्तमम् १९७
बस्तौ पाने तथाभ्यङ्गे नस्ये चैव प्रदापयेत् ।
प्रयुक्तं शमयत्याशु वातजान्विविधान्गदान् १९८

(४२ सप्तशतीप्रसारणी) शरत्कालमें मूलपत्तोंसहित खींपकों पाडकर ४०० तोले कोरंटा ४०० तोले शतावरी ४०० तोले खरैंहटी कौंच आसगंध केतकी ये सब चारसो चारसो तोले ले इन्होंकों चौगुने पानी और द्रवोंमें तेलकों पकावै और दहीका पानी मांसका रस चुक्र और दूध दही दोसो छप्पन तोलेभर अलग अलग लेवै इन सबकों कोमल अग्निसें पकावै यहां वक्ष्यमाण ओषधोंकों दो दो तोलेभर लेवै तगर मैनफल कूट केशर नागरमोथा दालचिनी रास्ना सेंधानमक पीपल वालछड मजीठ मुलहटी मेदा महामेदा जीवक ऋषभक सौंफ थोहरका दूध सोंठ देवदार काकोली क्षीरकाकोली वच भिलावा इन सवकों समान ले पीस कल्क बनाय और मिलाय प्रसारणीकों सिद्ध करै न तो अत्यंत पकावै और नहीं न रहै तव वस्त्रमांहके छान स्थापित करै। जहां जहां देनी योग्य है वह मुझसें शुन कुवडोंके और पंगुओंके और वावनोंके और जिसका एक अंग सूखता हो उसकै और जिसकी हड्डी और संधि टूट जावै और वातरक्तसें पीडितकों और वातकरकै उपहत चित्तवालोंकों स्त्रियोंमें नष्टहुआ वीर्यवालोंकों यह उत्तम वाजीकरण है। बस्ति पीना मालिस और नस्य इन्होंमें देना प्रयुक्त किया यह वातसें उपजे अनेक प्रकारके रोगोंकों शीघ्र नाशताहै। यह सप्तशतिका प्रसारणी है।

(४३)शाखामूलदलैः प्रसारणितुला-
स्तिस्रः कुरुल्टात्तुले
छिन्नायाश्च तुले तुले रुबुकतो
रास्नाशिरीषात्तुला ।
देवाह्वाच्च सकेतकाद्धटशते
निःक्वाथ्य कुम्भांशिके
तोये तैलघटं तुषाम्बुकलसौ
दत्वाढकं मस्तुनः ॥ १९९ ॥

शुक्ताच्छागरसादथेक्षुरसतः
क्षीराच्च दत्वाढकं
पृक्काकर्कटजीवकाद्यविकसा-
काकोलिकाकच्छुरा ।
सूक्ष्मैलाघनसारकुन्दसरला-
काश्मीरमांसीनखैः
कालीयोत्पलपद्मकाह्वयनिशा-
कक्कोलकग्रन्थिकैः ॥ २०० ॥
चाम्पेयाभयचोचपूगकटुका-
जातीफलाभीरुभिः
श्रीवासामरदारुचन्दनवचा-
शैलेयसिन्धूद्भवैः ।
तैलाभ्योदकटम्भराङ्घ्रिनलिका-
वृश्चीरकचोरकैः
कस्तूरीदशमूलकेतकनत-
ध्यामाश्वगन्धाम्बुभिः ॥ २०१ ॥
कौन्तीतार्क्ष्यजशल्लकीफललघु-
श्यामाशताह्वामयै-
र्भल्लातत्रिफलाब्जकेशरमहा-
श्यामालवङ्गान्वितैः ।
सव्योषैस्त्रिफलैर्महीयसि पचे-
न्मन्देन पात्रेऽग्निना
पानाभ्यञ्जनवस्तिनस्यविधिना
तन्मारुतं नाशयेत् ॥ २०२ ॥
सर्वाङ्गार्धगतं तथावयवगं
सन्ध्यस्थिमज्जान्वितं
श्लेष्मोत्थानथ पैत्तिकांश्च शमये-
न्नानाविधानामयान् ।
धातून्बृंहयति स्थिरं च कुरुते
पुंसां नवं यौवनं
वृद्धस्यापि वलं करोति सुमह-
द्वन्ध्यासु गर्भप्रदम् ॥ २०३ ॥
पीत्वा तैलमिदं जरत्यपि सुतं
सूतेऽमुना भूरुहाः
सिक्ताः शोषमुपागताश्च फलिनः
स्निग्धा भवन्ति स्थिराः ।

भग्नाङ्गाः सुदृढा भवन्ति मनुजा
गावोहयाः कुञ्जराः॥ २०४ ॥

(४३ एकादशशतिकप्रसारणीतैलम्) शाखा मूल और पत्तोंसहित प्रसारिणी अर्थात् खींप १२०० तोले कोरंटा ८०० तोले गिलोय ८०० तोले अरंड ८०० तोले रास्ना और शिरस ४०० तोले देवदार और केतक ४०० तोले इन सबकों १०० द्रोणभर पानीमें पकावै जब एक द्रोणभर शेष रहै तब तेल १०२४ तोले जवोंकी कांजी १०२४ तोले दहीका पानी २५६ तोले शुक्त २५६ तोले बकराके मांसका रस २५६ तोले ईखका रस २५६ तोले दूध २५६ तोले पृक्कावनस्पति काकडाशिंगी जीवकाद्य गणके ओषध लालसांठी काकोली लालजवासा छोटी इलायची कपूर वेरजा सरल केशर वालछड नख दारुहलदी कमल पदमाक हलदी कंकोल पीपलामूल चंपा कृष्णनेत्रवाला दालचिनी सुपारी कुटकी जायफल शतावरी श्रीवासधूप देवदार चंदन वच लोवान सेंधानमक शिलाजित नागरमोथा खींपकी जड सांठी खुरासानी अजमान कस्तूरी दशमूल केतकी तगर रोहिषतृण असगंध नेत्रवाला रेणुका शल्लकी अगर निशोत महाशतावरी कूट भिलावा हरडै बहेडा आंवला कमलकेसर इंद्रायण लोंग सोंठ मिरच पीपल ये सब बारह बारह तोलेभर ले कल्क बनाय बहुत बडा पात्रमें घाल मंद अग्निसें पकावै पीना मालिस बस्ति नस्य इन्होंकी विधिकरकै वह तेल वातकों नाशताहै । और सर्वांगवात अर्धांगवात अंगगतवात संधिगतवात अस्थिगतवात मज्जागतवात कफके रोग पित्तके रोग अनेक प्रकारके रोग इन्होंकों नाशताहै । और धातुओंकों पुष्ट करताहै । और पुरुषोंके नवीन यौवनकों स्थिर करताहै । वृद्ध मनुष्यकैभी बहुत बल देता है । वंध्या स्त्रीकों गर्भ देताहै । इस तेलकों पीनेसें बुढी स्त्रीभी पुत्रकों जन्माती है और सूखेहुये वृक्ष इससें सींचेजावै तो फलवाले चिकने और स्थिर होजातेहैं । भग्नहुआ अंगोंवाले मनुष्य गौ घोडे और हस्ती दृढअंगोंवाले होजातेहै । यह एकादशशतिक तेल है ।

(४४)समूलदलशाखायाः प्रसारण्याः शतत्रयम्।
शतमेकं शतावर्या अश्वगन्धाशतं तथा ॥२०५॥
केतकीनां शतं चैकं दशमूलाच्छतं शतम् ।
शतं वाट्यालकस्यापि शतं सहचरस्य च ॥२०६॥
जलद्रोणशतं दत्वा शतभागावशेषितम् ।
ततस्तेन कषायेण कषायद्विगुणेन च ॥ २०७ ॥
सुव्यक्तेनारणालेन दधिमण्डाढकेन च ।
क्षीरशुक्तेक्षुनिर्यासच्छागमांसरसाढकैः ॥ २०८ ॥
तैलाद्रोणं समायुक्तं दृढे पात्रे निधापयेत् ।
द्रव्याणि यानि पेष्याणि तानि वक्ष्याम्यतः परम्
भल्लातकं नतं शुण्ठीपिप्पलीचित्रकं शठी ।
वचापृक्काप्रसारण्याः पिप्पल्या मूलमेव च २१०
देवदारुशताह्वौ च सूक्ष्मैलात्वचवालकम् ।
कुङ्कुमं मदमञ्जिष्ठातुरुष्कं नखिकागुरु ॥ २११ ॥
कर्पूरकुन्दुरुनिशालवङ्गध्यामचन्दनम् ।
कक्कोलनलिकामुस्तं कालीयोत्पलपत्रकम् २१२
शटीहरेणुशैलेयश्रीवासं च सकेतकम् ।
त्रिफलाकच्छुराभीरुसरलापद्मकेशरम् ॥ २१३ ॥
प्रियङ्गुशीरनलदं जीवकाद्यं पुनर्नवा ।
दशमूल्यश्वगन्धे च नागपुष्पं रसाञ्जनम्॥२१४॥
कटुकाजातिपूगानां फलानि शल्लकीरसम् ।
भागात्रिपलिकान्दत्वा शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥
विस्तीर्णे सुदृढे पात्रे पाक्यैषा तु प्रसारणी ।
प्रयोगः षड्विधश्चात्र रोगार्तानां विधीयते॥२१६॥
अभ्यङ्गात्त्वग्गतं हन्ति पानात्कोष्ठगतं तथा ।
भोजनात्सूक्ष्मनाडीस्थान्नस्यादूर्ध्वं गतं तथा ॥
पक्वाशयगते वस्तिर्निरूहः सार्वकायिके ।
एतद्धि वडवाश्वानां किशोराणां यथामृतम् २१८
एतदेव मनुष्याणां कुञ्जराणां गवामपि ।
अनेनैव च तैलेन शुष्यमाणा महाद्रुमाः ॥२१९॥
सिक्ताः पुनः प्ररोहन्ति भवन्ति फलशाखिनः ।
वृद्धोऽप्यनेन तैलेन पुनश्च तरुणायते ॥ २२० ॥
न प्रसूते च या नारी सापि पीत्वा प्रसूयते ।
अप्रजः पुरुषो यस्तु सोऽपि पीत्वा लभेत्सुतम् ॥
अशीतिं वातजान्रोगान्पैत्तिकाञ्श्लैष्मिकानपि ।
सन्निपातसमुत्थांश्च नाशयेत्क्षिप्रमेव तु ॥२२२॥
एतेनान्धकदृष्टीनां कृतं पुंसवनं महत् ।
कृत्वा विष्णोर्वलिं चापि तैलमेतत्प्रयोजयेत् २२३
क्वाथे तुलार्धं रास्नायाः किलिमस्य च दीयते ।
भल्लातकासहत्वे तु तत्स्थाने रक्तचन्दनम् २२४

त्वक्पत्रं पत्रमधुरीकुष्टचम्पकगैरिकाः ।
ग्रन्थिकोषौ मरुबकमधिकत्वेन दीयते ॥ २२५ ॥
कर्पूरमददानं च शुक्तैर्गन्धोदकक्रिया ।
द्रव्यशुद्धिः पाकविधिर्भाविप्रसारणीसमः॥२२६॥

(**४४ अष्टादशशतिकप्रसारणीतैलम्**) मूल शाखा और पत्तोंसहित प्रसारणी १२०० तोलेभर ले और शतावरी ४०० तोले आसगंध ४०० तोले केतकी ४०० तोले दशमूल ४०० तोले खरैंहटी ४०० तोले और कोरंटा ४०० तोले इन्होंकों १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै जब सौमा भाग शेष रहै तब उस क्काथकरकै और क्काथ ले दुगुने कांजी और दहीका पानी आढक अर्थात् २५६ तोलेभर और दूध शुक्त ईखका रस बकराके मांसका रस ये सब आढक आढकभर लेने और तेल १०२४ तोलेभर मिलाकै दृढपात्रमें स्थापित करै और जिन द्रव्योंका कल्क करना हो उन्होंकोंभी इस्सेपरै कहूंगा मिलावा तगर सोंठ पीपल चीता कचूर बच पृक्कावूंठी खींप पीपलामूल देवदार शतावरी छोटीइलायची दालचिनी नेत्रवाला केशर कस्तूरी मजीठ शिलाजित नख अगर कपूर बेरजा हलदी लौंग रोहिषतृण चंदन कंकोल पालक नागरमोथा दारुहलदी कमल तेजपात कचूर रेणुक लोबान श्रीवासधूप केतकी त्रिफला रक्तधमासा शतावरी सरलवृक्ष कमलकेशर मेंहदी खस बालछड जीवकादिगणके ओषध सांठी दशमूल आसगंध नागकेशर रसोत कुटकी जावित्री सुपारी शल्लकीका रस इन सबोंकों बारह बारह तोलेभर ले हौलें हौलें अग्निसें पकावै दृढरूप और विस्तारवाला पात्रमें यह प्रसारिणी पकानी योग्य है यहां छह प्रकारका प्रयोग रोगियोंकों विहित है। मालिस करनेसें त्वचागत वातकों और पीनेसें कोष्ठगत वातकों और भोजनसें सूक्ष्म नाडीगत वातकों और नस्यसें उर्ध्वगत वातरोगोंकों पक्काशयगत वातमें बस्तिकर्म और संपूर्ण शरीरगत वातमें निरूहबस्ति करनी हित है। यह तेल जवानरूप घोडी और घोडोंकों अमृतके समान है। यही तेल मनुष्य हस्ती और गौवोंकों हित है। इस तेलकरकै सूखेहुये बडे वृक्ष सींचे जावै तौ फिर फल और शाखावाले होजातेहै। और इस तेलकरकै वृद्ध मनुष्यभी फिर जवानकी तरह होजाताहै जो नारी बालककों नहीं उपजाती हो वहभी पीकै बालककों जन्माती है और विनासंतानवाला पुरुषभी पीकै पुत्रकों प्राप्त होताहै अस्सी प्रकारके वातरोग पित्तजरोग कफजरोग और सनिपातसें उपजेरोग इन्होंकों शीघ्र नाशताहै। यह अंधदृष्टिवालोंकों कृतार्थ करताहै। और बृहत्पुंसवन है प्रथम विष्णुकी बलिकरकै पीछे इस तेलकों प्रयुक्त करै क्काथमें देवदारके अभावमें रास्ना २०० तोलेभर और मिलावा नहीं सहाजावै तो उसके स्थानमें लालचंदन दालचिनी तेजपात तालीशपत्र अंबली कूट चमेली गेरू पिपलामूल जायफल मैनफल ये सब अधिक देने और कपूर कस्तूरी देना और शुक्तमें गंधोदक देना और द्रव्यशुद्धि तथा पाकविधि भावी अर्थात् आगे जो कही जावेगी प्रसारणीके समान जाननी। यह अष्टादश शतिक प्रसारणी तेल है।

(४५) शतत्रयं प्रसारण्या द्वे च पीतसहाचरात्।
अश्वगन्धैरण्डबला वरी रास्ना पुनर्नवा ॥२२७॥
केतकी दशमूलं च पृथक्त्वक्पारिभद्रकः ।
प्रत्येकमेषां तु तुला तुलार्धं किलिमात्तथा॥२२८॥
तुलार्धं स्याच्छिरीषाच्च लाक्षायाः पञ्चविंशतिः ।
पलानि लोध्राच्च तथा सर्वमेकत्र साधयेत् २२९
जलपञ्चाढकशते सपादे तत्र शेषयेत् ।
द्रोणद्वयं काञ्जिकं च षड्विंशत्याढकोन्मितम् २३०
क्षीरदध्नोः पृथक्प्रस्थान्दशमं त्वाढकं तथा ।
इक्षुरसाढकौ चैव छागमांसतुलात्रये ॥ २३१ ॥
जलपञ्चचत्वारिंशत्प्रस्थान्पक्के तु शोषयेत् ।
सप्तदशरसप्रस्थान्मञ्जिष्ठाक्काथ एव च ॥ २३२ ॥
कुडवोनाढकोन्मानद्रवैरेतैस्तु साधयेत् ।
सुशुद्धतिलतैलस्य द्रोणं प्रस्थेन संयुतम् ॥२३३॥
काञ्जिकं मानतो द्रोणं शुक्तेनात्र विधीयते ।
आद्य एभिर्द्रवैः पाकः कल्को भल्लातकं कणा २३४
नागरं मरिचं चैव प्रत्येकं षट्पलोन्मितम् ।
भल्लातकासहत्वे तु रक्तचन्दनमुच्यते ॥ २३५ ॥
पथ्याक्षधात्री सरलं शताह्वाकर्कटी वचा ।
चोरपुष्पीशटीमुस्तं द्वयं पद्मं च सोत्पलम् २३६
पिप्पलीमूलमञ्जिष्ठा साश्वगन्धा पुनर्नवा ।
दशमूलं समुदितं चक्रमर्दो रसाञ्जनम् ॥२३७॥
गन्धतृणं हरिद्रा च जीवनीयो गणस्तथा ।
एषां त्रिपलिकैर्भागैराद्यः पाको विधीयते॥२३८॥
देवपुष्पीबोलपत्रं शल्लकीरसशैलजे ।
प्रियङ्गुशीरमधुरीमांसीदारुबलाचलम् ॥ २३९ ॥
श्रीवासोनलिकाखोटिः सूक्ष्मैलाकुन्दुरुर्मुरा ।
नखीत्रयं च त्वक्पत्रीपमरापूतिचम्पकम् ॥२४०॥

मदनं रेणुकापृक्कामरुवं च पलत्रयम् ।
प्रत्येकं गन्धतोयेन द्वितीयः पाक इष्यते ॥२४१॥
गन्धोदकं तु त्वक्पत्रीपत्रकोशीरमुस्तकम् ।
प्रत्येकं सबलामूलं पलानि पञ्चविंशतिः ॥२४२॥
कुट्टार्धभागोऽत्र जलप्रस्थास्तु पञ्चविंशतिः ।
अर्धावशिष्टाः कर्तव्याः पाके गन्धाम्बुकर्मणि २४३
गन्धाम्बुचन्दनाम्बुभ्यां तृतीयः पाक इष्यते ।
कल्कोऽत्र केशरं कुष्ठं त्वक्कालीयककुङ्कुमम् २४४
भद्रश्रियं ग्रन्थिपर्णं लताकस्तूरिका तथा ।
लवङ्गागुरुकक्कोलजातीकोषफलानि च ॥२४५॥
एलालवङ्गच्छल्वी च प्रत्येकं त्रिपलोन्मितम् ।
कस्तूरीषट्पला चन्द्रात्पलं सार्धं च गृह्यते २४६
वेधार्थं च पुनश्चन्द्रमदौ देयौ तथोन्मितौ ।
महाप्रसारणी सेयं राजभोग्या प्रकीर्तिता॥२४७॥
गुणान्प्रसारणीनां तु वहत्येषा बलोत्तमात् ।
अत्र शुक्तिविधिर्मण्डः प्रस्थः पञ्चाढकोन्मितम्
काञ्जिकं कुडवं दध्नो गुडप्रस्थोऽम्लमूलकात् ।
पलान्यष्टौ शोधिताद्रात्पलषोडशकं तथा॥२४९॥
कणाजीरकसिन्धूत्थहरिद्रामरिचं पृथक् ।
द्विपलं भाविते भाण्डे घृतेनाष्टदिनस्थितम् २५०
सिद्धं भवति तच्छुक्तं यदावतार्य गृह्यते ।
तदा देयं चतुर्जातं पृथक्कर्षत्रयोन्मितम् ॥ २५१ ॥
पञ्चपल्लवतोयेन गन्धानां क्षालनं तथा ।
शोधनं चापि संस्कारो विशेषश्चात्र वक्ष्यते २५२
आम्रजम्बूकपित्थानां बीजपूरकबिल्वयोः ।
गन्धकर्मणि सर्वत्र पत्राणि पञ्चपल्लवम् ॥२५३॥
चण्डीगोमयतोयेन यदि वा तिन्तिडीजलैः ।
नखं संक्राथयेदेभिरलाभे मृण्मयेन तु ॥ २५४ ॥
पुनरुद्धृत्य प्रक्षाल्य भर्जयित्वा निषेचयेत् ।
गुडपथ्याम्बुना ह्येवं शुध्यते नात्र संशयः॥२५५॥

(४९ **नखशुद्धिः**) प्रसारणी १२०० तोले पीला-कोरंटा ८०० तोले आसगंध अरंड खरैंहटी शतावरी रास्ना सांठी केतकी दशमूल दालचिनी देवदार ये सब एक एक तुला अर्थात् चारसौ चारसौ तोलें और बडादेवदार २०० तोले शिरस २०० तोले लाख १०० तोले लोध २०० तोले इन सबकों मिलाकै ५० आढकभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब उतारै और कांजी २०४८ तोले दूध ६४ तोले दही ६४ तोले इखका रस ५१२ तोले बकराका मांस १२०० तोले पैंतालीस प्रस्थभर पानीकों पक्कमें शोषित करै मंजीठका क्राथ १७ प्रस्थ और तिलोंका तेल १०८८ तोले कांजीके परिमाणसें द्रोणभर शुक्त करके विधान है इन द्रवोंकरके प्रथम पाक करना और कल्कके वास्तै मिलावा पीपल सोंठ मिरच ये सब चौवीस चौवीस तोलेभर लेना और मिलावा नहीं सहा जावै तो लालचंदन लेना। हरडै बहेडा आंवला सरल शतावरी काकडाशिंगी वच शंखिनी कचूर नागरमोथा दोनों कमल सपेदकमल पीपलामूल मजीट आसगंध सांठी दशमूल पुवाड रसौत नेत्रवाला हलदी जीवनीयगण ये सब बारह बारहतोले लेकै आद्य पाक करना। लोंग बीजाबोल तेजपात सल्लकीरस शिलाजित मालकांगनी अंबली वालछड देवदार खरैंहटी चीता श्रीवासधूप नलवाशाक ऊदवृक्ष छोटीइलायची कुंदुरुतृण मुरामांसी तीनों नख तेजपात गिलोय करंजुवा चमेली मैनफल रेणुका पृक्का श्वेतमरुवा ये सब बारह बारह तोले लेकै गंधोदकसें दूसरा पाक करना तालीसपत्र तेजपात खस नागरमोथा खरैंहटीकी जड ये सब अलग अलग १०० तोले लेने औ-कूट ५० तोले पानी २५ प्रस्थ अर्थात् ६४ तोले (प्रस्थ) इन सबकों मिला पकावै जब आधा भाग शेष रहै तब गंधोदक अर्थात् गंधजलकर्ममें लेवै गंधजल और चंदनजलकरकै तीसरा पाक वांछित है। इसमें कल्क केशर कूट दालचिनी दारुहलदी नागकेशर चंदन गठोना लताकस्तूरी लोंग अगर कंकोल जावित्री कोशफल इलायची लोंग ये सब अलग अलग बारह बारह तोले लेने कस्तूरी २४ तोले कपूर ६ तोले लेना और वेधके अर्थ फिर कपूर और कस्तूरी अनुमानमाफिक लेना यह महाप्रसारणी राजाओंका भागके योग्य है। यह बलके उतपनेसें सब प्रसारणीयोंके गुणोंकों करताहै। यहां शुक्तविधिवाला मंड ६४ तोले और पांच आढक परिमिति कांजी दही १६ तोले गुड ६४ तोले खट्टारस और मूली बत्तीस बत्तीस तोले और शुद्धकिया अदरक ६४ तोले और पीपल जीरा सेंधानमक हलदी मिरच ये सब आठ आठ तोले लेकै घृतसें भावितकिया पात्रमें आठ दिनस्थित रक्खै तब वह शुक्त बनताहै। जब उतारकर ग्रहण करना तब दालचिनी इलायची तेजपात नागकेसर ये सब अलग अलग तीन तोले लेवै। पंचपल्लवके पानीसें गंधोंकों धोना शोधन और संस्कार करना और यहां विशेष कहेंगे आंव-

जामन कैथ बिजोरा बेलवृक्ष इनोंके पत्तोंकों सब जगह गंधकर्ममें लेवै यह पंचपल्लव है। शिवलिंगी और गोवरका रस करकै अथवा अमलीके क्काथकरकै नखीकों उवालै और इनोंके अभावमें माटीका विकारके साथ उवालै फिर निकास और धोकै पीछे भूनसें चितकरै। और इसीप्रकार गुड और हरडैके क्काथकरकै नखी शुद्ध होतीहै। यहां संशय नहींहै।

(४६)गोमूत्रे चालम्बुषके पक्त्वा पञ्चदलोदके।
पुनः सुरभितोयेन बाष्पस्वेदेन स्वेदयेत् ॥२५६॥
गन्धोग्रा शुध्यते ह्येवं रजनी च विशेषतः।
मुस्तकं तु मनाक् क्षुण्णं काञ्जिके त्रिदिनोषितम्
पञ्चपल्लवपानीयस्विन्नमातपशोषितम्।
गुडाम्बुना सिच्यमानं भर्जयेच्चूर्णयेत्ततः ॥२५८॥
आजशोभाञ्जनजलैर्भावयेच्चेति शुध्यति।
काञ्जिके क्कथितं शैलं भृष्टापथ्यागुडाम्बुना २५९
सिञ्चेदेवं पुनः पुष्पैर्विविधैरधिवासयेत्।
यथालाभमपामार्गस्नुह्यादिक्षारलेपितम् ॥२६०॥
बाष्पस्वेदेन संस्वेद्य पूतिं निर्लोमतां नयेत्।
दोलापक्वं पचेत्पश्चापञ्चत्पल्लववारिणि ॥ २६१ ॥
खलः साधुमिवोत्पीड्य ततो निःस्नेहतां नयेत्।
आजशोभाञ्जनजलैर्भावयेच्च पुनः पुनः ॥ २६२॥
शिग्रुमूले च केतक्याः पुष्पपत्रपुटे च तम्।
पचेदेवं विशुद्धः सन्मृगनाभिसमो भवेत् २६३
तुरुष्कं मधुना भाव्यं काश्मीरं चापि सर्पिषा।
रुधिरेणायसं प्राज्ञैर्गोमूत्रैर्ग्रन्थिपर्णकम् ॥ २६४ ॥
मधूदकेन मधुरीं पत्रकं तण्डुलाम्बुना।
ईषत्क्षारानुगन्धा तु दग्धा याति न भस्मताम् ॥
पीता केतकगन्धा च लघुस्निग्धा मृगोत्तमा।
पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम् ॥ २६६ ॥
तत्रापि स्याद्यदक्षुद्रं स्फटिकाभं तदुत्तमम्।
पक्वं च सदलं स्निग्धं हरितद्युति चोत्तमम् २६७
भङ्गे मनागपि न चेन्निपतन्ति ततः कणाः।
मृगश्रृङ्गोपमं कुष्टं चन्दनं रक्तपीतकम् ॥२६८॥
काचतुण्डाकृतिः स्निग्धो गुरुश्चैवोत्तमो गुरुः।
स्निग्धाल्पकेशरं त्वस्रं शालिजो वृत्तमांसलः॥
मुरा पीता वरा प्रोक्ता मांसी पिङ्गजटाकृतिः।
रेणुका मुद्गसंस्थाना शस्तमानूपजं घनम् ॥२७०॥
जातीफलं सशब्दं च स्निग्धं गुरु च शस्यते।
एला सूक्ष्मफला श्रेष्ठा प्रियङ्गुः श्यामपाण्डुरा ॥
नखमश्वखुरं हस्तिकर्णं चैवात्र शस्यते।
एतेषामपरेषां च नवता प्रबलो गुणः ॥ २७२ ॥

(४६ महाराजप्रसारणीतैलम्) गोमूत्र लज्जावंतीका क्काथ पंचपल्लवका क्काथ इन्होंमें पकाकै फिर गोमूत्रकरकै और भांफके पसीने करकै स्वेदितकरै ऐसे वचकी और विशेषकरकै हलदीकी शुद्धि होती है। प्रथम नागरमोथाकों कूटकै कांजीमें तीन दिन भिगोकै धरै। पीछे पांचपल्लवके पानीसें स्वेदितकर घाममें सुखावै फिर गुडका पानीसें सेचितकर पीछे भूनकै चूर्ण करै बकरीके मांसका रस और सहोंजनाका क्काथ करकै भावित करनेसें यह शुद्ध होतीहै। कांजीमें क्कथित किया शिलाजित और भूनीहुई हरडै गुडका शरबत इन्होंकरकै सींचै फिर अनेक प्रकारके पुष्पोंकरकै अधिवासित करै और जितने मिलसकै ऊंगा थोहर इन आदिके खारोंसे लेपित करै। भांफके पसीनेसे स्वेदित कर दुर्गंधकों निर्लोम करै बकराका मांसके रसमें और सहोंजनाके रसमें वारंवार भावित करै सहोंजनाकी जडमें और केतकीका पत्र पुष्पके पुटमें उसकों पकावै तब शुद्ध होकै कस्तूरीके समान होजाताहै। शिलाजित शहदमें भावित करना और केशर घृतमें भावित करना लोहाकों रक्तसें भावित करना और ग्रंथिपर्णकों गोमूत्रमें महुवाके रसकरकै मधुरीकों भावित करै चावलोंके पानीकरकै तेजपातको भावित करै कछुक खारसे मिलीहुई मधुरी दग्ध करी जावै तो भस्म नहीं होतीहै। पीली और केतकीके समानगंधवाली और कछुक चिकनी ऐसी गंगेरण उत्तम होतीहै पकेहुये कपूरसें कच्चा कपूर बहुत गुणवाला होताहै। तिन्होंमेंभी जो क्षुद्र नहीं हो और गिलोरी पत्थरके समान कांतिवाला हो वहभी कपूर उत्तम है और पकाहुआ दलसहित चिकना और हरीकांतिवाला ऐसा पकाहुआ कपूर उत्तम है। परंतु भंग होनेमें कछुकभी उस्सें किणके नहीं पडै वह उत्तम होताहै। मृगका शींगके समान उपमावाला कूट उत्तम होताहै रक्त और पीला रंगवाला चंदन उत्तम है। काकका तुंडके समान आकृतिवाला चिकना और भारा ऐसा अगर उत्तम होताहै। चिकना और अल्प केशरोंवाला ऐसा केशर उत्तम है। गोल और मोटा शालिचावल उत्तम होताहै। पीली मुरामांसी उत्तम होतीहै। पीली जडके समान आकृति-

वाली वालछड उत्तम होती है। मूंगके समान रेणुका उत्तम होतीहै। अनूप देशका नागरमोथा उत्तम होताहै। शब्द करनेवाला चिकना और भारा ऐसा जायफल श्रेष्ठ है। सूक्ष्मफलवाली इलायची श्रेष्ठ है शाम और पीला रंगवाली मालकांगनी उत्तम होतीहै। दोनों तरहके नख और अरंड इस तेलमें श्रेष्ठ है। इन्होंका और अन्य ओषधियोंका नवीनपना प्रबल गुण है।

(४७) जिङ्गीचोरकदेवदारुसरलं
व्याघ्रीवचाचेलक-
त्वक्पत्रैः सह गन्धपत्रकशटी-
पथ्याक्षधात्रीघनैः।
एतैः शोधितसंस्कृतैः पलयुगे-
त्याख्यातया संख्यया।
तैलप्रस्थमवस्थितैः स्थिरमिति
कल्कैः पचेद्गान्धिकम्॥ २७३॥
मांसीमुरादमनचम्पकसुन्दरीत्वक्-
ग्रन्थ्यम्बुरुड्मरुबकैर्द्विपलैः सपृक्कैः।
श्रीवासकुन्दुरुनखीनलिकामिषीणां
प्रत्येकतः पलमुपाय्य पुनः पचेत्तु॥ २७४॥
एलालवङ्गचलचन्दनजातिपूतिः
कक्कोलकागुरुलताघुसृणैः पलार्धैः।
कस्तूरिकाक्षसहितामलदीप्रियुक्तैः
पक्का तु मन्दशिखिनैव महासुगन्धम्॥ २७५॥
पञ्चद्विकेन चार्धेन मदात्कर्पूरमिष्यते।
कर्पूरमदयोरर्धं पत्रकल्कादिहेष्यते॥ २७६॥
पक्वपूतेऽप्युष्ण एव सम्यक्पेषणवर्तितम्।
दीयते गन्धवृद्ध्यर्थं पत्रकल्कं तदुच्यते॥२७७॥
प्रागुक्तौ शुद्धसंस्कारौ गन्धानामिह तैः पुनः।
द्विगुणैर्लक्ष्मीविलासः स्यादयं तैलसत्तमः २७८
पञ्चपत्राम्बुना चाद्यो द्वितीयो गन्धवारिणा।
तृतीयोऽपि च तेनैव पाको वा धूपिताम्बुना २७९

इति वातव्याधिचिकित्सा।

(४७ महासुगंधितैलं लक्ष्मीविलासतैलम्) मजीठ गठोना देवदार सरलवृक्ष कटेली वच मेंढासिंगी तालीशपत्र चंदन तेजपात कचूर हरडै बहेडा अंवला नागरमोथा इन सबकों शोधित और संस्कृत करै इन सबकों आठ आठ तोलेभर ले कल्क बनाय उसमें ६४ तोलेभर तेलकों स्थिर बुद्धिवाला वैद्य पकावै वालछड मुरामांसी दमना चंपा लघुकावली अर्थात् सोंपविशेष दालचीनी पीपलामूल नेत्रवाला कूठ मैनफल पृक्कावूंटी ये सब आठ आठ तोले और श्रीवेष्टधूप वेरजा नख नाडीशाक सौंप ये सब चार चार तोलेभर ले कल्क बनाय मिलाके फिर पकावै। इलायची लौंग नखी चंदन जावित्री करंजुवा कंकोल अगर मालकांगनी केशर कस्तूरी बहेडा आंवला अजमोद ये सब दो दो तोलेभर ले मंदअग्निसें महासुगंध तेलकों पकावै। कस्तूरीसें १० गुणा कपूर लेना कपूर और कस्तूरीसें आधा पत्रकल्क आदि लेना। पकाकै कपडामांहकै छान उसी गर्ममेंही पेषण कियाही जो गंधकी बुद्धिके अर्थ दिया जावै वह पत्र कल्क कहाताहै। गंधोंकी शुद्धि और संस्कार पूर्व कहदिये है। उन दुगुनोंकरकै यह लक्ष्मीविलासतेल बनता है यह तेलोंमें बहुत उत्तम है। पंचपल्लवके पानीसें आद्यपाक और गंधपानीसें दूसरा पाक और उसीकरकै अथवा धूपितकिया पानीकरकै तीसरा पाक करना।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां वातव्याधिचिकित्सा।

अथ वातरक्ताधिकारः २३

अब वातरक्तका अधिकार कहतेहै।

(१)बाह्यं लेपाभ्यङ्गसेकैः पानाद्यैर्वातशोणितम्।
विरेकस्थापनस्नेहपानैर्गम्भीरमाचरेत्॥ १॥
द्वयोर्मुञ्चेदसृक् शृङ्गसूच्यलाबूजलौकसा।
देहाद्देशं व्रजेत्स्राव्यं शिराभिः पुच्छनेन वा॥२॥
अङ्गग्लानौ च न स्राव्यं रूक्षे वातोत्तरे च यत्।
अमृतनागरधन्याककर्षत्रयेण पाचनं सिद्धम्॥३॥
जयति सरक्तं वातं सामं कुष्ठान्यशेषाणि।
वत्सादन्युद्भवः क्वाथः पीतो गुग्गुलुसंयुतः
समीरणसमायुक्तं शोणितं संप्रसाधयेत्॥ ४॥
वासागुडूचीचतुरङ्गुलाना-
मेरण्डतैलेन पिबेत्कषायम्
क्रमेण सर्वाङ्गजमप्यशेषं
जयेदसृग्वातभवं विकारम्॥ ५॥
लीढ्वा मुण्डितिकाचूर्णं मधुसर्पिः समन्वितम्।
छिन्नाक्वाथं पिबन्हन्ति वातरक्तं सुदुस्तरम्॥ ६॥

तिस्रोऽथवा पञ्च गुडेन पथ्या
जग्ध्वा पिबेच्छिन्नरुहाकषायम् ।
तद्वातरक्तं शमयत्युदीर्ण-
माजानुसंभिन्नमपि ह्यवश्यम् ॥ ७ ॥
घृतेन वातं सगुडा विबद्धं
पित्तं सिताढ्या मधुना कफं च ।
वातासृगुग्रं रुबुतैलमिश्रा
शुण्ठ्यामवातं शमयेद्गुडूची ॥ ८ ॥

(**१ वातरक्ते सामान्योपायाः**) बाह्य अर्थात् बहिर्गत वातरक्तकों लेप अभ्यंग सेक उपनाह इन्होंसें दूर करै और जुलाब स्थापन बस्ति स्नेहपान इन्होंकरकै गंभीर अर्थात् अंतर्गत वातरक्तकों दूर करै । दोनों तरहके वातरक्तोंमें रक्तकों शींगी सूई तूंबी जोक इन्होंकरकै छुडावै अथवा फस्त खोलना तथा पछनासें उद्देशके अनुसार रक्तकों निकासै अंगग्लानि रूषापन और वातकी अधिकता इन्होंमें रक्तकों नहीं निकासै । पटोलपत्र सोंठ धनियां ये तीनों एक एक तोलेभर लेकै पाचन सिद्ध करना यह वातरक्त आमवात और सब प्रकारके कुष्ट इन्होंकों जीतताहै । गिलोयके क्वाथमें गूगल मिलाय पीवै तो वातरक्त दूर होताहै । वांसा गिलोय अमलतास इन्होंके क्वाथमें अरंडका तेल मिलाय पीवै । यह क्रमसें सब अंगोंमें उपजा और वातरक्तसें उपजा सबप्रकारका विकारकों जीतताहै । गोरखमुंडीके चूरणमें घृत और शहद मिलाय चाटकै ऊपर गिलोयके क्वाथकों पीताहुआ मनुष्य भयंकर वातरक्तकों नाशताहै । तीन अथवा पांच हरडोंकों गुडके साथ खाकै ऊपर गिलोयके क्वाथकों पीवै तो गोडोंतक फैलाहुआ वातरक्तभी निश्चय शांत होजाताहै । घृतके संग गिलोय वातकों और गुडकेसंग बंधाकों और मिसरीके संग पित्तकों और शहदके साथ कफकों और अरंडका तेलके साथ भयंकर वातरक्तकों और सोंठके साथ आमवातकों नाशती है ऐसे गिलोय फल करतीहै ।

(२)गुडूच्याः स्वरसं कल्कं चूर्णं वा क्वाथमेव वा ।
प्रभूतकालमासेव्य मुच्यते वातशोणितात् ॥ ९ ॥
दशमूलीशृतं क्षीरं सद्यः शूलनिवारणम् ।
परिषेकोऽनिलप्राये तद्वत्कोष्णेन सर्पिषा ॥ १० ॥
पटोलकटुकाभीरुत्रिफलामृतसाधितम् ।
क्वाथं पीत्वा जयेज्जन्तुः सदाहं वातशोणितम्११

गोधूमचूर्णाजपयो घृतं च
सच्छागदुग्धो रुबुबीजकल्कः ।
लेपे विधेयं शतधौतसर्पिः
सेके पयश्चाविकमेव शस्तम् ॥ १२ ॥
लेपः पिष्टास्तिलास्तद्वद्भृष्टाः पयसि निर्वृताः ।
कटुकामृतयष्ट्याह्वं शुण्ठीकल्कं समाक्षिकम्॥१३॥
गोमूत्रपीतं जयति सकफं वातशोणितम् ।
धात्रीहरिद्रामुस्तानां कषायो वा कफाधिके॥१४॥
कोकिलाक्षामृताक्वाथे पिबेत्कृष्णां कफाधिके ।
पथ्याभोजी त्रिसप्ताहान्मुच्यते वातशोणितात्१५
कफरक्तप्रशमनं हृद्यं गुडघृतं स्मृतम् ।
संसर्गेषु यथोद्रेकं मिश्रं वा प्रतिकारयेत् ॥१६॥
सर्वेषु सगुडां पथ्यां गुडूचीक्वाथमेव वा ।
पिप्पलीवर्धमानं वा शीलयेत्सुसमाहितः ॥१७॥

(**२ गुडूचीस्वरसादि**) गिलोयका स्वरस कल्क चूर्ण अथवा क्वाथ इन्होंकों सेवनेसें वातरक्तसें मनुष्य छुट जाताहै । दशमूलमें पकायाहुआ दूध शीघ्र शूलकों नाशताहै । और वातकी अधिकतावाले शूलमें कछुक गरमकिया घृतसें परिषेक करना परवल कुटकी शतावरी त्रिफला वाराहीकंद इन्होंसें साधित किया क्वाथकों पीकै मनुष्य दाहसहित वातरक्तकों जीतताहै । गेहूंका चून बकरीका दूध बकरीका घृत और अरंडके कल्कमें बकरीका दूध ये खानेमें हित है और सौवार धोयाहुआ घृत मालिसमें हित है और भेडिका दूध सेकमें हित है । तिलोंकों पीस और दूधमें भूनकिया लेपभी हित है । कुटकी वाराहीकंद मुलहटी सोंठ इन्होंके कल्कमें शहद मिलाय गोमूत्रसें पीवै तो कफसहित वातरक्तकों जीतता है । अथवा आंवला हलदी नागरमोथा इन्होंका क्वाथ कफके वातरक्तमें हित है । कोलिस्त और गिलोयके क्वाथमें पीपलकों मिलाय कफके वातरक्तमें पीवै । इक्कीस दिनोंतक हरडैकों भोजन करनेसें मनुष्य वातरक्तसें छूट जाताहै । गुडसहित घृत कफरक्तकों शांत करताहै और सुंदर है । संसर्गोंमें अधिकताके अनुसार अथवा मिलीहुई चिकित्सा करनी सब प्रकारके वातरक्तोंमें गुडसहित हरडै अथवा गिलोयका क्वाथ हित है । अथवा सावधान होकै वर्धमानपीपलीकों सेवै ।

(३)त्रिफलानिम्बमञ्जिष्ठावचाकटुकरोहिणी ।
वत्सादनीदारुनिशाकषायो नवकार्षिकः ॥ १८ ॥
वातरक्तं तथा कुष्ठं पामानं रक्तमण्डलम् ।
कुष्ठं कापालिकाकुष्ठं पानादेवापकर्षति ॥ १९ ॥
पञ्चरक्तिकमाषेण कार्योऽयं नव कार्षिकः ।
किंत्वेवं साधिते क्वाथे योग्यमात्रा प्रदीयते ॥२०॥

(३ नवकार्षिकः) त्रिफला नींब मंजीठ वच कुटकी गिलोय दारुहलदी ये सब एक एक कर्षभर लेकै क्वाथ करना । वातरक्त कुष्ठ पामा रक्तमंडलकुष्ठ कापालिकाकुष्ठ इन्होंकों पीनेसेंही दूर करता है यह नवकार्षिक क्वाथ पांचरतीका मासासें करना इस प्रकार साधितकिया क्वाथमें योग्य मात्रा देनी यह नवकार्षिक क्वाथ है ।

(४)गुडूचीक्वाथकल्काभ्यां सपयस्कं शृतं घृतम् ।
हन्ति वातं तथा रक्तं कुष्ठं जयति दुस्तरम् ॥२१॥

(४ गुडूचीघृतम्) गिलोयका क्वाथ और कल्कसें दूधसहित घृतकों पकावै वह वातरक्त और भयंकर कुष्ठकों जीतता है यह गुडूचीघृत है ।

(५)शतावरीकल्कगर्भं रसे तस्याश्चतुर्गुणे ।
क्षीरतुल्यं घृतं पक्कं वातशोणितनाशनम् ॥ २२ ॥

(५ शतावरीघृतम्) शतावरीके कल्ककों चौगुने शतावरीकी रसमें दूध और घृत समान भाग मिलाय घृत पकाना यह वातरक्तकों नाशताहै यह शतावरीघृत है ।

(६)अमृता मधुकं द्राक्षा त्रिफला नागरं बला ।
वासारग्वधवृश्चीरदेवदारुत्रिकण्टकम् ॥ २३ ॥
कटुकासवरीकृष्णाकाश्मर्यस्य फलानि च ।
रास्नाक्षुरकगन्धर्ववृद्धदारघनोत्पलैः ।
कल्कैरेभिः समैः कृत्वा सर्पिःप्रस्थं विपाचयेत् ॥
धात्रीरससमं दत्त्वा वारि त्रिगुणसंयुतम् ।
सम्यक् सिद्धं तु विज्ञाय भोज्यपाने च शस्यते॥
बहुदोषान्वितं वातं रक्तेन सह मूर्च्छितम् ।
उत्तानं चापि गम्भीरं त्रिकजङ्घोरुजानुजम् ॥२६॥
क्रोष्टुशीर्षे महाशूले चामवाते सुदारुणे ।
वातरोगोपसृष्टस्य वेदनां चातिदुस्तराम् ॥ २७॥
मूत्रकृच्छ्रमुदावर्तप्रमेहं विषमज्वरम् ।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशु वातपित्तकफोत्थितान् २८
सर्वकालोपयोगेन वर्णायुर्बलवर्धनम् ।
अश्विभ्यां निर्मितं श्रेष्ठं घृतमेतदनुत्तमम् ॥२९॥

(६ अमृताद्यं घृतम्) गिलोय मुलहटी दाख त्रिफला सोंठ खरैंहटी वांसा अमलतास सांठी देवदार गोखरू कुटकी कासमर्द शतावरी पीपल कंभारीके फल रास्ना तालमखाना सुपेदअरंड भिदारा नागरमोथा सुपेदकमल ये सब समान भाग ले कल्क बनाकै ६४ तोलेभर घृतकों पकावै परंतु आंवलाका रस ६४ तोले और पानी १९२ तोले अच्छीतरह सिद्ध हुआकों जानकर भोजनमें और पीनेमें युत करै । बहुत दोषोंसें अन्वित और रक्तसें मूर्च्छित उत्तान और गंभीर और कटिप्रांत जंघा गोडा इन्होंमें प्राप्तहुआ वात क्रोष्टुशीर्षवात महाशूल और भयंकर आमवात वातरोगीकी भयंकर पीडा मूत्रकृच्छ्र उदावर्त प्रमेह विषमज्वर और वातपित्तकफसें उपजे इन रोगोंकों नाशताहै । सब कालके उपयोगकरकै वर्ण उमर और बलकों बढाताहै । यह उत्तम घृत अश्विनीकुमारोंनें रचाहै और श्रेष्ठ है ।

(७) बलाकषायकल्काभ्यां तैलं क्षीरचतुर्गुणम् ।
दशपाकं भवेदेतद्वातासृग्वातपित्तजित् ॥ ३० ॥
धन्यं पुंसवनं चैव नराणां शुक्रवर्धनम् ।
रेतोयोनिविकारघ्नमेतद्वातविकारनुत् ॥ ३१ ॥

(७ दशपाकबलातैलम्) खरैंहटीका क्वाथ और कल्ककरकै चौगुणा तेलकों और दूधकों पकावै यह दशपाकबलातेल वातरक्तकों और वातपित्तकों नाशताहै। धन्य है पुरुषपनाकों करताहै । मनुष्योंकै वीर्यकों वढाताहै वीर्यविकारकों और योनिविकारकों नाशताहै और यह वातके विकारकों नाशताहै यह दशपाकबलातेल है ।

(८) गुडूचीक्वाथदुग्धाभ्यां तैलं लाक्षारसेन वा ।
सिद्धं मधुककाश्मर्यरसैर्वा वातरक्तनुत् ॥ ३२ ॥

(८ गुडूच्यादितैलम्) गिलोयका क्वाथ और दूधकरकै अथवा लाखका रसकरकै अथवा मुलहटी और कंभारीका रसकरकै सिद्ध किया तेल वातरक्तकों नाशताहै । यह गुडूच्यादि तेल है ।

(९)पद्मकोशीरयष्ट्याह्वरजनीक्वाथसाधितम् ।
स्यात्पिष्टैः सर्जमञ्जिष्ठावीराकाकोलिचन्दनैः ।
खुड्डाकपद्मकमिदं तैलं वातास्रदोषनुत् ॥ ३३ ॥

(९ खुज्जाकपद्मकतैलम्) पद्माक खस मुलहटी हल्दी इन्होंके काथमें राल मजीठ क्षीरकाकोली काकोली चंदन इन्होंका कल्क मिलाय तेलकों सिद्ध करै यह खुज्जाकतेल वातरक्तके दोषकों नाशताहै। यह खुज्जाकपद्मकतेल है।

(१०)शुद्धां पचेन्नागबलातुलां तु
विस्राव्य तैलाढकमत्र दद्यात् ।
अजापयस्तुल्यविमिश्रितं तु
न तस्य यष्टीमधुकस्य कल्कम् ॥ ३४ ॥
पृथक्पचेत्पञ्चपलं विपक्वं
तद्वातरक्तं शमयत्युदीर्णम् ।
बस्तिप्रदानादिह सप्तरात्रा-
त्पीतं दशाहात्प्रकरोत्यरोगम् ॥ ३५ ॥
तुलाद्रव्ये जलद्रोणो द्रव्यतुला द्रोणे मता ॥३६॥

(१० नागबलातैलम्) बडी खरैंहटीकों शुद्धकर ४०० तोलेभर ले रस निकास उसमें २५६ तोलेभर तेल देवै और बकरीका दूध २५६ तोलेभर लेकै तगर और मुलहटीका कल्क अलग अलग वीश तोलेभर ले पकावै वह वढाहुआ वातरक्तकों शांत करताहै। बस्तिके द्वारा देनेसें सात रात्रिमें और पीनेसें दशदिनमें रोगकों दूर करताहै। तुला अर्थात् ४०० तोलेभर द्रव्यमें एक द्रोणी अर्थात् ४०४६ तोलेभर पानीमें एक तुला द्रव्य लेना। यह नागबलातेल है।

(११)समधूच्छिष्टमञ्जिष्ठं ससर्जरसशारिवम् ।
पिण्डतैलं तदभ्यङ्गाद्वातरक्तरुजापहम् ॥ ३७ ॥

(११ पिंडतैलम्) मौंम मजीठ राल अनंतमूल इन्होंमें तेलकों पकावै यह पिंडतेल मालिस करनेसें वातरक्तका दोष नष्ट होताहै। यह पिंडतेल है।

(१२)शारिवासर्जमञ्जिष्ठायष्टीसिक्थैः पयोऽन्वितैः
तैलं पक्वं विमञ्जिष्ठे रुबोर्वा वातरक्तनुत् ॥ ३८ ॥

(१२ महापिंडतैलम्) शारिवा अनंतमूल राल मजीठ मुलहटी मौंम इन्होंमें अथवा मजीठसें रहित और अरंडसहित इन्होंमें दूध मिलाय उसमें पकायाहुआ तेल वातरक्तकों नाशताहै। यह महापिंडतेल है।

(१३) वरमहिषलोचनोदर-
सन्निभवर्णस्य गुग्गुलोः प्रस्थम् ।
प्रक्षिप्य तोयराशौ
त्रिफलां च यथोक्तपरिमाणाम् ॥ ३९ ॥
द्वात्रिंशच्छिन्नरुहा-
पलानि देयानि यत्नेन ।
विपचेदप्रमत्तो
दर्व्या संघट्टयन्मुहुर्यावत् ॥ ४० ॥
अर्धक्षयितं तोयं
जातं ज्वलनस्य सम्पर्कात् ।
अवतार्य वस्त्रपूतं
पुनरपि सम्पादयेत्पात्रे ॥ ४१ ॥
सान्द्रीभूते तस्मि-
न्नवतार्य हिमोपलप्रस्थे ।
त्रिफलाचूर्णार्धपलं
त्रिकटोश्चूर्णं षडक्षपरिमाणम् ॥ ४२ ॥
क्रिमिरिपुचूर्णार्धपलं
कर्षं त्रिवृद्दन्त्योः ।
पलमेकं च गुडूच्या
दत्वा संमूर्च्छयं यत्नेन ॥ ४३ ॥
उपयुज्य चानुपानं
यूषं तोयं सुगन्धिसलिलेन ।
इच्छाहारविहारी
भेषजमुपयुज्य सर्वकालमिदम् ॥ ४४ ॥
तनुरोधिवातशोणित
मेकजमथ द्वन्द्वजं चिरोत्थं च ।
जयति श्रुतं परिशुष्कं
स्फुटितं चाजानुजं चापि ॥ ४५ ॥
व्रणकासकुष्ठगुल्मं
श्वयथूदरपाण्डुमेहांश्च ।
मन्दाग्निं च विबद्धं
प्रमेहपिडकांश्च नाशयत्याशु ॥ ४६ ॥
सततं निषेव्यमाणः
कालवशाद्धन्ति सर्वगदान् ।
अभिभूय जरादोषं
याति कैशोरकं रूपम् ॥ ४७ ॥

प्रत्येकं त्रिफलाप्रस्थो जलं तत्र षडाढकम् ।
गुडवद्गुग्गुलोः पाकः सुगन्धस्तु विशेषतः ॥४८॥

(**१३ कैशोरको गुग्गुलुः**) उत्तम भैंसाके नेत्र और पेटके समानवर्णवाला गूगल ६४ तोलेभर ले । २५६ तोलेभर पानीमें गेर ६४ तोलेभर त्रिफला मिलाना और १२८ तोलेभर गिलोय जतनसें देकै सावधान हुआ मनुष्य करछीसें वारंवार संघट्टित करता रहै । जब अग्निके संपर्कसें आधापानी रहै तब उतार वस्त्रमांहकै छान फिर पात्रमें संपादित करै जब घनरूप होजा तब ६४ तोलेभर कपूर मिलाकै उसमें त्रिफलाका चूर्ण २ तोले सोंठ मिरच पीपलका चूर्ण ६ तोले वायविडंगका चूर्ण २ तोले निशोत १ तोला जमालगोटाकी जड १ तोला गिलोय ४ तोले इनकों मिलाय जतनसें मूर्च्छित करै सुगंधित पानीसें यूष और जलका अनुपान प्रयुक्त करै इस ओषधकों लेकै सब कालमें आहारविहार करने । शरीरकों रोकनेवाला एक दोषज और द्विदोषज और बहुतदिनोंसें उपजाहुआ और झिरताहुआ और स्फुटितहुआ और गोडोंतक उत्पन्न हुआ ऐसा वातरक्तकों जीतताहै । और घाव खांसी कुष्ठ गुल्म शोजा उदररोग पांडु प्रमेह मंदाग्नि वंधा और प्रमेहकी पीडिका इन्होंकों शीघ्र नाशताहै । निरंतर सेवित किया यह कालके वशसें सब रोगोंकों नाशताहै । और बुढापाके दोषकों दूरकर किशोररूपकों प्राप्त करताहै । हरडै ६४ तोले बहेडा ६४ तोले आंवला ६४ तोले १५३६ तोले पानी गुडकीतरह गूगलका पाक करना परंतु विशेषकरकै सुगंध मिलाना । यह कैशोरगुग्गुल है ।

(१४)प्रस्थमेकं गुडूच्यास्तु अर्धप्रस्थंच गुग्गुलोः।
प्रत्येकं त्रिफलायाश्च तत्प्रमाणं विनिर्दिशेत्॥४९॥
सर्वमेकत्र संक्षुद्य साधयेत्त्वर्मणेऽम्भसि ।
पादशेषं परिस्राव्य पुनरग्नावधिश्रयेत् ॥ ५० ॥
तावत्पचेत्कषायं तु यावत्सान्द्रत्वमागतम् ।
दन्तीव्योषविडङ्गानि गुडूचीफित्रलात्वचः ॥५१॥
ततश्चार्धपलं पूतं गृह्णीयाच्च प्रति प्रति ।
कर्षं तु त्रिवृतायास्तु सर्वमेकत्र कारयेत्॥५२॥
तस्मिन्सुसिद्धं विज्ञाय कवोष्णे प्रक्षिपेद्बुधः ।
ततश्चाग्निवलं ज्ञात्वा तस्य मात्रां प्रदापयेत्॥५३॥
वातरक्तं तथा कुष्ठं गुदजान्यग्निसादनम् ।
दुष्टव्रणप्रमेहांश्च सामवातं भगन्दरम् ॥ ५४ ॥
नाड्याढ्यवातश्वयथून्सर्वानेतान्व्यपोहति ।
अश्विभ्यां निर्मितः पूर्वममृताख्यो हि गुग्गुलुः ।
अर्धप्रस्थं त्रिफलायाः प्रत्येकमिह गृह्यते ॥ ५५ ॥

(**१४ अमृताद्यो गुग्गुलुः**) गिलोय ६४ तोले गूगल ३२ तोले हरडै ३२ तोले बहेडा ३२ तोले और आंवला ३२ तोले इनकों लेकै सबकों एक जगह कर कूट १०२४ तोलेभर पानीमें साधित करै जब चौथाई भाग शेष रहै तब छानकै फिर अग्निपर पकावै जबतक घनरूप हो तबतक पकावै जमालगोटाकी जड सोंठ मिरच पीपल वायविडंग गिलोय त्रिफलाकी छाल ये सब दो दो तोलेभर ले और निशोत १ तोलाभर ले सबकों एक जगह कर । शुद्ध जानकर कछुक उष्णमें वैद्य गेरै पीछे अग्निबलकों जानकर उसकी मात्रा देवै वातरक्त कुष्ठ गुदाके रोग मंदाग्नि दुष्टघाव प्रमेह आमवात भगंदर नाडीवात आढ्यवात शोजा सब प्रकारके इन रोगोंकों नाशताहै यह अमृताख्य गुग्गुल प्रथम अश्विनीकुमारोंनैं रचाहै । इसमें त्रिफला अलग अलग बत्तीस तोले ग्रहण करना । यह अमृताख्य गुग्गुल है ।

(१५)अमृतायाश्च द्विप्रस्थं प्रस्थमेकं च गुग्गुलोः।
प्रत्येकं त्रिफलाप्रस्थं वर्षाभूप्रस्थमेव च ॥ ५६ ॥
सर्वमेतच्च संक्षुद्य क्राथयेल्लवणाम्भसि ।
पुनः पचेत्पादशेषं यावत्सान्द्रत्वमागतम् ॥५७॥
दन्तीचित्रकमूलानां कणाविश्वफलात्रिकम् ।
गुडूचीत्वविडङ्गानां प्रत्येकार्धपलोन्मितम्॥ ५८ ॥
त्रिवृता कर्षमेकं तु सर्वमेकत्र चूर्णयेत् ।
सिद्धे चोष्णे क्षिपेत्तत्र त्वमृतागुग्गुलोः परम्५९
यथावह्निवलं खादेदम्लपित्ती विशेषतः ।
वातरक्तं तथा कुष्ठं गुदजान्यग्निसादनम् ॥ ६० ॥
दुष्टव्रणप्रमेहांश्च सामवातं भगन्दरम् ।
नाड्याढ्यवातश्वयथून्हन्यात्सर्वामयानयम् ।
अश्विभ्यां निर्मितो ह्येषोऽमृताख्यो गुग्गुलुः पुरा॥

(१५ पुनर्नवागुग्गुलुः) गिलोय १२८ तोले गूगल ६४ तोले हरडै ६४ तोले बहेडा ६४ तोले आंवला ६४ तोले सांठी ६४ तोले इन सबकों कूटकर १०२४ तोले पानीमें क्काथ बनावै जबतक घनरूप और चतुर्थांश रहै बततक फिर पकावै । जमालगोटाकी जड चीता सहोंजना

पीपल सोंठ हरडै बहेडा आंवला गिलोय दालचिनी वायविडंग ये सब दो दो तोले निशोत १ तोला सबकों मिलाय चूर्ण करै सिद्ध होनेपर कछुक गरम रहै तब अमृतागुग्गलके कल्ककों डालै जैसा अग्नि हो उसके अनुसार खावै और अम्लपित्तवाला विशेषकरकै खावै । वातरक्त कुष्ठ गुदाके रोग मंदाग्नि दुष्टघाव प्रमेह आमवात भगंदर नाडीवात आढ्यवात शोजा सब रोगोंकों यह नाशताहै । यह अमृताख्य गूगल पहले अश्विनीकुमारोंनें रचाहै । और श्रेष्ठ है यह अमृतागुग्गुल तथा पुनर्नवागुग्गुल है ।

(१६) शतावरीनागबलावृद्धदारकमुञ्चटाः ।
पुनर्नवामृताकृष्णावाजिगन्धात्रिकण्टकम् ॥६२॥
पृथग्दशपलान्येषां श्लक्ष्णं चूर्णानि कारयेत् ।
तदर्धशर्करायुक्तं चूर्णं संमर्दयेद्बुधः ॥ ६३ ॥
स्थापयेत्सुदृढे भाण्डे मध्वर्धाढकसंयुतम् ।
घृतप्रस्थे समालोड्य त्रिसुगन्धिपलेन तु ॥६४॥
तं खादेदिष्टचेष्टान्नो यथावह्निबलं नरः ।
वातरक्तं क्षयं कुष्ठं कार्श्यं पित्तास्रसम्भवम्॥६५॥
वातपित्तकफोत्थांश्च रोगानन्यांश्च तद्विधान् ।
हत्वा करोति पुरुषं वलीपलितवर्जितम् ।
योगसारामृतो नाम लक्ष्मीकान्तिविवर्धनः॥६६॥
दिवास्वप्नाग्निसन्तापं व्यायामं मैथुनं तथा ।
कट्वूष्णगुर्वभिष्यन्दिलवणाम्लानि वर्जयेत् ॥६७॥

इति वातरक्तचिकित्सा ।

(**१६ योगसारामृतः**) शतावरी बडी खरैंहटी भिदारा भूमिआंवला सांठी गिलोय पीपल आसगंध गोखरू ये सब अलग अलग चालीश तोलेभर लेकै मिहीन चूर्ण करै उसकों आधी खांडसें युतकर वैद्य मर्दित करै । फिर १२८ तोलेभर शहद डालकर सुंदर दृढपात्रमें घाल धरै पीछे ६४ तोलेभर घृतमें आलोडितकर दालचिनी इलायची तेजपात इन्होंकों ४ तोलाभर ले मिलाकै इष्ट चेष्टा और भोजनवाला मनुष्य जैसा अग्निबल हो उसके अनुसार खावै । वातरक्त क्षय कुष्ठ कृशपना रक्तपित्तसें उपजा रोग वातके रोग पित्तके रोग कफके रोग और उसीप्रकारके अन्य रोग इन्होंका नाशकर वली और सुपेद वालोंसें वर्जित पुरुषकों करताहै । यह योगसारामृत नामवाला गूगल लक्ष्मीकों और कांतिकों बढाताहै । यह योगसारामृत है । दिनका सोवना अग्निका संताप कसरत स्त्रीभोग चर्चरा गरम भारा अभिष्यंदी सलौना और खट्टा इन्होंकों वर्जित करै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तार्थप्रकाशिकाभाषाटीकायां वातरक्तचिकित्सा ।

अथोरुस्तम्भाधिकारः २४

अब ऊरुस्तंभका अधिकार कहतेहै ।

(१)श्लेष्मणः क्षपणं यत्स्यान्न च मारुतकोपनम् ।
तत्सर्वं सर्वदा कार्यमूरुस्तम्भस्य भेषजम् ॥ १ ॥
तस्य न स्नेहनं कार्यं न बस्तिर्न च रेचनम् ।
सर्वो रूक्षः क्रमः कार्यस्तत्रादौ कफनाशनः ॥२॥
पश्चाद्वातविनाशाय कृत्स्नः कार्यः क्रियाक्रमः ।
शिलाजतुं गुग्गुलुं वा पिप्पलीमथ नागरम् ॥३॥
ऊरुस्तम्भे पिबेन्मूत्रैर्दशमूलीरसेन वा ।
भल्लातकामृताशुण्ठीदारुपथ्यापुनर्नवाः ॥ ४ ॥
पञ्चमूलीद्वयोन्मिश्रा ऊरुस्तम्भनिवर्हणाः ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलभल्लातक्वाथ एव वा ॥ ५ ॥
कल्को वा समधुर्देय ऊरुस्तम्भविनाशनः ।
त्रिफलाचव्यकटुकग्रन्थिकं मधुना लिहेत् ॥ ६ ॥
ऊरुस्तम्भविनाशाय पुरं मूत्रेण वा पिबेत् ।
लिह्याद्वा त्रिफलाचूर्णं क्षौद्रेण कटुकायुतम्॥७॥
सुखाम्बुना पिबेद्वापि चूर्णं षड्धरणं नरः ।
पिप्पलीवर्धमानं वा माक्षिकेण गुडेन वा ॥ ८ ॥
ऊरुस्तम्भे प्रशंसन्ति गण्डीरारिष्टमेव वा ।
चव्याभयाग्निदारूणां समधुः स्यादुरुग्रहे ॥ ९ ॥
कल्को दिहेच्च मूत्राद्यैः करञ्जफलसर्षपैः ।
क्षौद्रसर्षपवल्मीकमृत्तिकासंयुतं भिषक् ॥ १० ॥
गाढमुत्सादनं कुर्यादूरुस्तम्भे सलेपनम् ।
कफक्षयार्थं व्यायामेष्वेनं शक्येषु योजयेत् ॥११॥
स्थलान्याक्रामयेत्कल्कं प्रतिस्रोतोनदीस्तरेत् ।
पलाभ्यां पिप्पलीमूलनागराद्दष्टकट्वरः ॥ १२ ॥

(**१ ऊरुस्तंभे उपायाः**) जो कफकों हटानेवाला हो और वायुकों नहीं कुपित करै वह संपूर्ण ओषध सब कालमें ऊरुस्तंभका करना ऊरुस्तंभवालाकै स्नेहन बस्तिकर्म और

जुलाब नहीं करना किंतु सब रुक्ष क्रमकरना तहांभी आदिमें कफनाशक क्रम करना । पीछे वातकों नाशनेके अर्थ संपूर्ण क्रियाक्रम करना । शिलाजित गूगल अथवा पीपल और सोंठ इन्होंकों गोमूत्रसें अथवा दशमूलके रससें ऊरुस्तंभमें पीवै । भिलावा गिलोय सोंठ देवदार हरडै सांठी दशमूल इन्होंका क्वाथ ऊरुस्तंभकों नाशताहै । पीपल पीपलामूल भिलावा इन्होंके क्वाथमें अथवा कल्कमें शहद डाल दियाजावै तो ऊरुस्तंभकों नाशताहै । त्रिफला चव्य चीता देवदार इन्होंके क्वाथमें शहद डाल ऊरुस्तंभमें पीवै और करंजुवा त्रिफला और सरसोंकों गोमूत्रमें पीस लेप करै । शहद सरसों सांपकी बंबीकी माटी इन्होंसें लेप और सेक ऊरुस्तंभमें करै । कफका क्षय करनेके अर्थ इसकों शक्तिसें होनेके योग्य कसरतोंमें प्रयुक्त करै और स्थलोंकों आक्रमण करावै जिस तर्फसें नदी आती हो उसी तर्फकों नदीमें तिरै ।

(२)तैलप्रस्थः समो दध्ना गृध्रस्यूरुग्रहापहः ।
अष्टकट्वरतैलेऽत्र तैलं सार्षपमिष्यते ॥ १३ ॥
कुष्ठश्रीवेष्टकोदीच्यं सरलं दारुकेशरम् ।
अजगन्धाश्वगन्धा च तैलं तैः सार्षपं पचेत्॥१४॥
सक्षौद्रं मात्रया तस्मादूरुस्तम्भार्दितः पिबेत् ।
सैन्धवाद्यं हितं तैलं वर्षाभ्वमृतगुग्गुलुः ॥ १५ ॥

इति ऊरुस्तम्भचिकित्सा ।

(२ अष्टकट्वरं तैलम्) पीपलामूल और सोंठ चार चार तोले छाछ ३२ तोले तेल ६४ तोले दही ६४ तोले इन्होंकों मिलाय तेलकों सिद्ध करै यह गृध्रसी और ऊरुस्तंभकों नाशताहै । इस अष्टकट्वरतेलमें सरसोंका तेल वांछित है । यह अष्टकट्वरतेल है । कूट श्रीवेष्टधूप नागरमोथा सरलवृक्ष देवदार केशर तुलशी आसगंध इन्होंके कल्कोंसें सरसोंके तेलकों पकावै । शहदसें युतकर मात्रासें ऊरुस्तंभरोगी पीवै अथवा सैंधवाद्यतेल पुनर्नवातेल और अमृतागुग्गुल हित है ।

इति श्रीवेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनु पंडित रविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां ऊरुस्तंभचिकित्सा ।

अथामवाताधिकारः २५

अब आमवातरोगका अधिकार कहतेहै ।

(१)लङ्घनं स्वेदनं तिक्तं दीपनानि कटूनि च ।
विरेचनं स्नेहपानं वस्तयश्चाममारुते ॥ १ ॥
सैन्धवाद्येनानुवास्य क्षारबस्तिः प्रशस्यते ।
आमवाते पञ्चकोलसिद्धं पानान्नमिष्यते ॥ २ ॥
रुक्षः स्वेदो विधातव्यो वालुकापुटकैस्तथा ।
शटी शुण्ठ्यभया चोग्रा देवाह्वातिविषामृता॥३॥
कषायमामवातस्य पाचनं रूक्षभोजनम् ।
शटीविश्वौषधीकल्कं वर्षाभूक्वाथसंयुतम् ॥ ४ ॥
सप्तरात्रं पिबेज्जन्तुरामवातविपाचनम् ।
दशमूलामृतैरण्डरास्नानागरदारुभिः ।
क्वाथो रुवूकतैलेन सामं हन्त्यनिलं गुरुम् ॥ ५ ॥

(१ रास्नादशमूलकम्) लंघन स्वेदन कडुआ पदार्थ दीपन और कडुवे ओषध विरेचन स्नेहका पान और बस्तिकर्म ये आमवातमें हित है । सैंधवादितेलसें अनुवासित कर क्षारबस्ति श्रेष्ठ है । आमवातमें पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंसें युतकिया पान और अन्न हित है । वालूरेतकी पोटलीसें रुक्षस्वेद करना । सोंठ हरडै वच देवदार अतीश गिलोय इन्होंका क्वाथ और रूषाभोजन आमवातकों पकाताहै । कचूर और सोंठके कल्ककों सांठीके क्वाथमें मिलाय सात ७ रात्रि पीवै तो आमवात पकजाताहै । दशमूल गिलोय अरंड रास्ना सोंठ देवदार इन्होंके क्वाथकों अरंडका तेलसें पीवै तो भयंकर आमवात नष्ट होताहै । यह रास्नादशमूलकहै ।

(२)दशमूलीकषायेण पिबेद्वा नागराम्भसा ।
कुक्षिवस्तिकटीशूले तैलमेरण्डसम्भवम् ॥ ६ ॥
रास्नां गुडूचीमेरण्डं देवदारुमहौषधम् ।
पिबेत्सर्वाङ्गिके वाते सामे सन्ध्यस्थिमज्जगे ॥७॥

(२ रास्नापंचकम्) अरंडके तेलकों दशमूलके क्वाथसें अथवा सोंठके क्वाथसें कुक्षि वस्ति शूल इन्होंके शूलोंमें पीवै । रास्ना गिलोय अरंड देवदार सोंठ इन्होंके क्वाथकों संधि अस्थि और मज्जा इन्होंगतवातमें और आमवातमें और सर्वांगवातमें पीवै । यह रास्नापंचक है । दशमूलके क्वाथकरकै अथवा सोंठका पानीके साथ अरंडीके तेलकों कुक्षि वस्ति और कटिके शूलमें पीवै । रास्ना

गिलोय अरंड देवदार सोंठ इन्होंकों सर्वांगवात आमवात संधिवात अस्थिवात और मज्जागतवात इन्होंमें पीवै । यह रास्नापंचक है ।

(३)रास्नामृतारग्वधदेवदारु-
त्रिकण्टकैरण्डपुनर्नवानाम् ।
क्वाथं पिबेन्नागरचूर्णमिश्रं
जङ्घोरुपृष्ठत्रिकपार्श्वशूली ॥ ८ ॥

(३ रास्नासप्तकम्) रास्ना गिलोय अमलतास देवदार गोखरू अरंड सांठी इन्होंके क्वाथमें सोंठका चूर्ण मिलाय जंघावात ऊरुवात पृष्ठवात कटिप्रांत और पसली इन्होंके शूलोंमें पीवै । यह रास्नासप्तक है ।

(४)शुण्ठीगोक्षुरकक्वाथः प्रातः प्रातर्निषेवितः ।
सामवाते कटीशूले पाचनो रुक्प्रणाशनः ॥ ९ ॥
आमवाते कणायुक्तं दशमूलरसं पिबेत् ।
खादेद्वाप्यभयाविश्वं गुडूचीं नागरेण वा ॥ १० ॥
एरण्डतैलसंयुक्तां हरीतकीं भक्षयेन्नरो विधिवत् ।
आमानिलार्तियुक्तो गृध्रसीवृद्ध्यर्दितो नित्यम् ११
कर्षं नागरचूर्णस्य काञ्जिकेन पिबेत्सदा ।
आमवातप्रशमनं कफवातहरं परम् ॥ १२ ॥
पञ्चकोलकचूर्णं च पिबेदुष्णेन वारिणा ।
मन्दाग्निशूलगुल्मामकफारोचकनाशनम् ॥ १३ ॥
अमृतानागरगोक्षुरमुण्डतिकावरुणकैः कृतं चूर्णम्
मस्त्वारणालपीतमामानिलनाशनं ख्यातम्॥१४॥
मणिमन्थस्य भागौ द्वौ यमान्यास्तद्वदेव तु ।
भागास्त्रयोऽजमोदाया नागराद्भागपञ्चकम्॥१५॥
दश द्वौ च हरीतक्याः श्लक्ष्णचूर्णीकृताः शुभाः ।
मस्त्वारणालतक्रेण सर्पिषोष्णोदकेन वा ॥ १६ ॥
पीतं जयत्यामवातगुल्मं हृद्बस्तिजान्गदान् ।
प्लीहानं हन्ति शूलादीनानाहं गुदजानि च॥१७॥
विबन्धं जाठरान्रोगांस्तथा वै हस्तपादजान् ।
वातानुलोमनमिदं चूर्णं वैश्वानरं स्मृतम् ॥१८॥

(४ वैश्वानरं चूर्णम्) सोंठ और गोखरूके क्वाथकों प्रभातमें सेवै तो आमवातमें और कटिशूलमें पाचन है और रोगकों नाशताहै। आमवातविषै दशमूलके रसमें पीपल डाल पीवै अथवा हरडै और सोंठकों खावै अथवा गिलोयकों सोंठके संग खावै । अरंडके तेलसें संयुक्तकरी हरडैकों मनुष्य विधिपूर्वक आमवातसें अथवा गृध्रसीवातसें पीडितहुआ मनुष्य नित्यप्रति खावै । सोंठके चूर्णकों एक तोलाभर ले कांजीके साथ सदा पीवै तो आमवातकी शांति होतीहै । और कफवातकी शांति निश्चय होतीहै । पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंके चूर्णकों गरम पानीके संग पीवै तो मंदाग्नि शूल गुल्म आम वात कफ अरोचक इन्होंका नाश होताहै । गिलोय सोंठ गोखरू मुंडी वरना इन्होंके चूर्णकों दहीका पानी कांजी इन्होंके संग पीवै तो आमवातका नाश कहाहै । सांभरनमक २ भाग अजमान २ भाग अजमोद ३ भाग सोंठ ५ भाग हरडै १२ भाग इन सबका मिहीन चूर्ण कर दहीका पानी कांजी घृत और गरमपानी इन्होंके साथ पीवै । तो आमवात गुल्मरोग हृद्रोग और बस्तिगतरोग इन्होंकों शीघ्र जीतताहै । और तिल्लीरोग शूलआदि और गुंदाके रोग इन्होंको नाशताहै । और बंधा पेटके रोग हस्तरोग पैररोग इन्होंकों नाशता है । यह वैश्वानरचूर्ण वातकों अनुलोमित करनेवाला कहाहै । यह वैश्वानरचूर्ण है ।

(५)अलम्बुषां गोक्षुरकं गुडूचीं वृद्धदारकम् ।
पिप्पलीं त्रिवृतां मुस्तं वरुणं सपुनर्नवम् ॥ १९ ॥
त्रिफलां नागरं चैव सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
मस्त्वारणालतक्रेण पयोमांसरसेन वा ।
आमवातं निहन्त्याशु श्वयथुं सन्धिसंस्थितम्२०

(५ अलंबुषाचूर्णम्) गोरखमुंडी गोखरू गिलोय भिदारा पीपल निशोत नागरमोथा वरना सांठी त्रिफला सोंठ इन्होंका मिहीन चूर्ण करै । दहीका पानी कांजी तक्र दूध अथवा मांसका रस इन्होंमांहसें एक कोईसाके साथ लेवै । यह आमवातको और संधिगतशोजाको शीघ्र नाशताहै । यह अलंबुषादि चूर्ण है ।

(६)शतपुष्पा विडङ्गश्च सैन्धवं मरिचं समम् ।
चूर्णमुष्णाम्बुना पीतमग्निसन्दीपनं परम् ॥२१॥
हिङ्गु चव्यं विडं शुण्ठी कृष्णाजाजीसपौष्करम् ।
भागोत्तरमिदं चूर्णं पीतं वातामजिद्भवेत् ॥२२॥

(६ हिंग्वाद्यं चूर्णम्) सोंफ वायविडंग सेंधानमक मिरच ये समानभाग लेकै चूर्ण कर गरम पानीके संग पीवै तो जठराग्निकों विशेषकरकै जगाताहै । हींग १ भाग चव्य २ भाग मनयारीनमक ३ भाग सोंठ ४ भाग पीपल ५

भाग जीरा ६ भाग पौहकरमूल ७ भाग ऐसे लेकर चूर्ण बनाय पीवै तो आमवातकों जीतताहै । यह हिंग्वाद्य चूर्ण है ।

(७)चित्रकं पिप्पलीमूलं यमानीं कारवीं तथा ।
विडङ्गान्यजमोदाश्च जीरकं सुरदारु च ॥ २३ ॥
चव्यैलासैन्धवं कुष्ठं रास्नागोक्षुरधान्यकम् ।
त्रिफलामुस्तकं व्योषं त्वगुशीरं यवाग्रजम् ॥२४॥
तालीसपत्रं पत्रं च सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
यावन्त्येतानि चूर्णानि तावन्मात्रं तु गुग्गुलुम्२५
संमर्द्य सर्पिषा गाढं स्निग्धे भाण्डे निधापयेत् ।
ततो मात्रां प्रयुञ्जीत यथेष्टाहारवानपि ॥ २६ ॥
योगराज इति ख्यातो योगोऽयममृतोपमः ।
आमवाताढ्यवातादीन्क्रिमिदुष्टव्रणानपि ॥२७॥
प्लीहगुल्मोदरानाहदुर्नामानि विनाशयेत् ।
अग्निं च कुरुते दीप्तं तेजोवृद्धिं बलं तथा ।
वातरोगाञ्जयत्येष सन्धिमज्जगतानपि ॥ २८ ॥

(७ योगराजगुग्गुलुः) चीता पीपलामूल अजमान कलौंजी वायविडंग अजमोद जीरा देवदार चव्य इलायची सेंधानमक कूट रास्ना गोखरू धनियां त्रिफला नागरमोथा सोंठ मिरच पीपल दालचिनी खस जवाखार तालीसपत्र तेजपात इन्होंका मिहीन चूर्ण करै जितने तोलेभर ये चूर्ण हों उतनेही तोलेभर गूगल इन सबकों मिलाय घृतसें करडा मर्दित कर चिकनापात्रमें घाल धरै पीछे जैसी इच्छा हो तैसा भोजन करताहुआ मात्राकों प्रयुक्त करै यह योगराज कहाहै । अमृतके समान है आमवात आढ्यवातआदि कृमिरोग दुष्टघाव प्लीहरोग गुल्म उदररोग अफारा ववासीर इन्होंकों नाशताहै । और अग्निकों दीप्त करताहै तेजकों और बलकों बढाताहै । संधिवात मज्जागतवात इन्होंकों जीतताहै । यह योगराज गुग्गुल है ।

(८)पलत्रयं कषायस्य त्रिफलायाः सुचूर्णितम् ।
सौगन्धिकपलं चैकं कौशिकस्य पलं तथा॥२९॥
कुडवं चित्रतैलस्य सर्वमादाय यत्नतः ।
पाचयेत्पाकविद्वैद्यः पात्रे लोहमये दृढे ॥ ३० ॥
हन्ति वातं तथा पित्तं श्लेष्माणं खञ्जपङ्गुताम् ।
श्वासं सुदुर्जयं हन्ति कासं पञ्चविधं तथा॥३१॥
कुष्ठानि वातरक्तं च गुल्मशूलोदराणि च ।
आमवातं जयेदेतदपि वैद्यविवर्जितम् ॥ ३२ ॥
एतदभ्यासयोगेन जरापलितनाशनम् ।
सर्पिस्तैलरसोपेतमश्नीयाच्छालियष्टिकम् ॥ ३३ ॥
सिंहनाद इति ख्यातो रोगवारणदर्पहा ।
वह्निवृद्धिकरः पुंसां भाषितो दण्डपाणिना॥३४॥

(८ सिंहनादगुग्गुलुः) त्रिफलाका क्वाथ १२ तोले दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर इन्होंका चूर्ण ४ तोले गूगल ४ तोले चित्रतेल १६ तोले इन सबकों जतनसें लेकै पाककों जाननेवाला वैद्य लोहाके दृढपात्रमें घाल पकावै । वात पित्त कफ खंजवात पंगुतावात भयंकरश्वास और पांचप्रकारकी खांसी इन्होंकों जीतताहै । कुष्ठ वातरक्त गुल्म शूल उदररोग असाध्य आमवात इन्होंकों जीतताहै । इसका अभ्यासके योगकरकै बुढापा और बालोंका सुपेदपना नष्ट होताहै । घृत तेल मांसका रस इन्होंसें युतकिये शालिचावलोंकों खावै । यह सिंहनादनामसें विख्यात है । रोगरूपी हस्तीके गर्वकों नाशताहै । और पुरुषोंके अग्निकों बढाताहै । दंडपाणिनें कहाहै यह सिंहनादगुग्गुल है ।

(९)अलम्बुषागोक्षुरकत्रिफलानागरामृताः ।
यथोत्तरं भागवृद्ध्या श्यामाचूर्णं च तत्समम् ३५
पिबेन्मस्तुसुरातक्रकाञ्जिकोष्णोदकेन वा ।
पीतं जयत्यामवातं सशोथं वातशोणितम् ।
त्रिकजानूरुसन्धिस्थं ज्वरारोचकनाशनम् ॥३६॥

(९ अलंबुषाद्यं चूर्णम्) गोरखमुंडी १ भाग गोखरू २ भाग त्रिफला ३ भाग सोंठ ४ भाग गिलोय ५ भाग और सबोंके समान निशोतका चूर्ण इस चूर्णकों दहीका पानी मदिरा तक्र कांजी और गरम पानी इन्होंमांहसें एककोईसाके संग पीवै यह आमवात शोजा वातरक्त इन्होंकों जीतताहै । कटिप्रांतवात जानुवात ऊरुगतवात संधिगतवात ज्वर और अरोचक इन्होंकों जीतताहै । यह अलंबुषाख्यचूर्ण है ।

(१०)पथ्याक्षधात्रीत्रिफलाभागं वृद्धवयःक्रमः ।
पथ्याविश्वयमानीभिस्तुल्याभिश्चूर्णितं पिबेत् ३७
तक्रेणोष्णोदकेनाथ अथवा काञ्जिकेन च ।
आमवातं निहन्त्याशु शोथं मन्दाग्नितामपि ॥३८

अजमोदामरिचपिप्पली-
विडङ्गसुरदारुचित्रकशताह्वाः ।

सैन्धवपिप्पलिमूलं
भागा नवकस्य पलिकाः स्युः ॥ ३९ ॥
शुण्ठीदशपलिका स्यात्
पलानि तावन्ति वृद्धदारस्य ।
पथ्यापञ्चपलानि
सर्वाण्येकत्र कारयेच्चूर्णम् ॥ ४० ॥
समगुडवटकां खादत-
श्चूर्णं वाप्युष्णवारिणा पिबतः ।
नश्यन्त्यामानिलजाः
सर्वा रोगाः सुकष्टास्तु ॥ ४१ ॥
विश्वचिकाप्रतितूनी
तूनीहृद्रोगाश्च गृध्रसी चोग्रा ।
कटिबस्तिगुदस्फुटनं
चैवास्थिजङ्घयोस्तीव्रम् ॥ ४२ ॥
श्वयथुस्तथाङ्गसन्धिषु
ये चान्येऽप्यामवातसम्भूताः ।
सर्वे प्रयान्ति नाशं
तम इव सूर्यांशुविध्वस्तम् ॥ ४३ ॥

(१० अजमोदाद्यवटकः) हरडै बहेडा आंवला इन्होंकों भागवृद्धिसें लेनेसें त्रिफला कहाताहै । वांसककोडी नेवती और अजमान ये बराबर भाग ले चूर्ण बनाय तक्र गरम पानी अथवा कांजी इन्होंमांहसें एककोईसाके संग पीवै । आमवात शोजा मंदाग्नि इन्होंकों शीघ्र नाशताहै । अजमोद मिरच पीपल वायविडंग देवदार चीता शतावरी सेंधानमक पीपलामूल ये सब चार चार तोले सोंठ ४० तोले भिदारा ४० तोले हरडै २० तो० इन सबकों मिलाय चूर्ण करावै । बराबर भाग गुड मिलाकै गोलियां बनाकै खावै अथवा चूर्ण खाकै गरम पानी पीनेवालाकै आमवातसें उपजे कष्टरूपरोग नष्ट होतेहै । विश्वाचिका प्रतितूनी तूनी हृद्रोग भयंकरगृध्रसी कटि बस्ति गुदाका स्फुटन और हड्डीमें तथा जंघामें दारुणरूप शोजा अंगकी संधियोंमें शोजा और आमवातसें उपजे सब रोग नष्ट होजातेहैं । जैसे सूर्यके किरणोंसें अंधेरा ।

(११)नागरक्वाथकल्काभ्यां घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
चतुर्गुणेन तेनाथ केवलेनोदकेन वा ॥ ४४ ॥
वातश्लेष्मप्रशमनमग्निसन्दीपनं परम् ।
नागरं घृतमित्युक्तं कट्यामशूलनाशनम् ॥ ४५ ॥

(११ शुंठीघृतम्) चौगुना सोंठका क्वाथ और कल्कसें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै अथवा केवल पानीसें पकावै । वातकफकों शांत करताहै । अग्निकों जगाताहै यह नागरघृत कहाहै । कटिवात आमवात और शूलकों नाशताहै ।

(१२)अमृतायाः कषायेण कल्केन च महौषधात् ।
मृद्वग्निना घृतप्रस्थं वातरक्तहरं परम् ॥ ४६ ॥
आमवाताढ्यवातादीन् क्रिमिदुष्टव्रणानपि ।
अर्शांसि गुल्मशूलं च नाशयत्याशु योजितम् ४७

(१२ गुडूचीघृतम्) गिलोयके क्वाथ और सोंठका कल्कसें ६४ तोलेभर घृतकों मंदअग्निकरकै पकावै यह वातरक्तकों निश्चय नाशताहै । आमवात आढ्यवात आदि कृमिरोग दुष्टघाव ववासीर गुल्म और शूल इन्होंकों योजितकिया नाशताहै ।

(१३)हिङ्गु त्रिकटुकं चव्यं माणिमन्थं तथैव च ।
कल्कान्कृत्वा च पलिकान्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ४८
आरणालाढकं दत्वा तत्सर्पिर्जठरापहम् ।
शूलं विबन्धमानाहमामवातं कटीग्रहम् ।
नाशयेद्ग्रहणीदोषं मन्दाग्नेर्दीपनं परम् ॥ ४९ ॥

(१३ कांजिकषट्पलं घृतम्) हींग सोंठ मिरच पीपल चव्य सेंधानमक इन सबके चार चार तोलेभर कल्क लेकै ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । और कांजी २५६ तोले मिलाकै घृत सिद्ध करना वह उदररोगकों नाशताहै। शूल विबंध आफारा आमवात कटीग्रह ग्रहणीदोष इन्होंकों नाशताहै । और मंदाग्निकों दीपन करताहै ।

(१४)पुष्ट्यर्थं पयसा साध्यं दग्धविण्मूत्रसंग्रहे ।
दीपनार्थं मतिमता मस्तुना च प्रकीर्तितम्॥५०॥
सर्पिर्नागरकल्केन सौवीरकचतुर्गुणम् ।
सिद्धमग्निकरं श्रेष्ठमामवातहरं परम् ॥ ५१ ॥

(१४ शुंठीघृतम्) पुष्टिके वास्ते दूधसें सिद्ध करना विष्ठा और मूत्रकों संग्रह अर्थात् कब्ज करनेवास्ते दहीसें सिद्ध करना और अग्निदीपन करनेवास्ते बुद्धिमान्नें दहीके पानीसें सिद्ध करना । सोंठके कल्कमें चौगुनी कांजी मिलाय उसमें सिद्ध किया घृत अग्निकों करताहै । उत्तम है और आमवातकों हरताहै ।

(१५)रसोनस्य पलशतं तिलस्य कुडवं तथा ।
हिङ्गु त्रिकटुकं क्षारौ पञ्चैव लवणानि च ॥५२॥
शतपुष्पा तथा कुष्ठं पिप्पलीमूलचित्रकौ ।
अजमोदा यमानी च धान्यकं चापि बुद्धिमान् ५३
प्रत्येकं तु पलं चैषां सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् ।
घृतभाण्डे दृढे चैतत्स्थापयेद्दिनषोडश ॥ ५४ ॥
प्रक्षिप्य तैलमानीं च प्रस्थार्धं काञ्जिकस्य च ।
खादेत्कर्षप्रमाणं तु तोयं मद्यं पिबेदनु ॥ ५५ ॥
आमवाते तथा वाते सर्वाङ्गैकाङ्गसंश्रिते ।
अपस्मारेऽनले मन्दे कासे श्वासे गरेषु च ।
सोन्मादवातभङ्गे च शूले जन्तुषु शस्यते ॥५६॥

(१५ रसोनपिंडः) लहशन ४०० तोले तिल १६ तोले हींग सोंठ मिरच पीपल साजीखार जवाखार पांचों नमक सोंफ कूट पीपल पीपलामूल अजमोद अजमान और धनियां इन्हींकों बुद्धिमान् चार चार तोलेभर ले इन्होंका मिहीन चूर्णकर दृढरूप घृतके पात्रमें १६ दिन स्थापित करै। तेल ३२ तोले कांजी ३२ तोले इन्होंकों मिलावै पीछे १ तोलेभर रोज खावै पानी अथवा मदिरा ऊपर पीवै। आमवात सर्वांगवात एकांगवात मृगीरोग मंदाग्नि खांसी श्वास कृत्रिमविष उन्माद वातभंग और शूल इन्होंमें प्राणियोंकों श्रेष्ठ है।

(१६)प्रसारण्याढककाथे प्रस्थो गुडरसोनतः ।
पक्वः पञ्चोषणरजः पादः स्यादामवातहा ॥ ५७॥

(१६ प्रसारणीसंधानम्) खींपके २५६ तोलेभर क्काथमें ६४ तोलेभर गुड और लहशन पकनेमें चौथाई भाग पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंका चूर्ण मिलावै यह आमवातकों नाशताहै ।

(१७)बहुलायाः सुरायास्तु सुपक्वायाः शतं घटे ।
ततोऽर्धेन रसोनं तु संशुद्धं कुट्टितं क्षिपेत्॥५८॥
पिप्पलीपिप्पलीमूलमजाजीकुष्ठचित्रकम् ।
नागरं मरिचं चव्यं चूर्णितं चाक्षसम्मितम्॥५९॥
सप्ताहात्परतः पेया वातरोगामनाशिनी ।
क्रिमिकुष्ठक्षयानाहगुल्मार्शःप्लीहमेहनुत् ।
अग्निसन्दीपनी चैव पाण्डुरोगविनाशिनी ॥६०॥

(१७ रसोनसुरा) इलाचीकी मदिराकों अच्छीतरह पकाय ४०० तोलेभर ले पात्रमें घालै और उस्सें आधा लहशनकों ले शुद्ध करकै कूट मिलावे । पीपल पीपलामूल जीरा कूट चीता सोंठ मिरच चव्य ये सब दश दश मासेभर ले चूर्ण करै सातदिनसें उपरंत यह पेया पीनी वातरोगकों और आमकों नाशतीहै । कृमिरोग कुष्ठ क्षय अफारा गुल्म ववासीर तिल्लीरोग प्रमेह इन्होंकों नाशतीहै और अग्निकों दीपन करतीहै और पांडुरोगकों नाशतीहै ।

(१८)सिद्धार्थकखलीप्रस्थं सुधौतं निस्तुषं जले।
मण्डप्रस्थं विनिक्षिप्य स्थापयेद्दिवसत्रयम् ॥६१॥
धान्यराशौ ततो दद्यात्सञ्चूर्ण्य पलिकानि च ।
अलम्बुषा गोक्षुरकं शतपुष्पीपुनर्नवे ॥ ६२ ॥
प्रसारणी वरुणत्वक् शुण्ठी मदनमेव च ।
सम्यक्पाकं तु विज्ञाय सिद्धा तण्डुलमिश्रिता६३
मृष्टा सर्षपतैलेन हिङ्गुसैन्धवसंयुता ।
भक्षिता लवणोपेता जयेदामं महाज्वरम् ॥ ६४ ॥
एकजं द्वन्द्वजं साध्यं सान्निपातिकमेव च ।
कट्यूरुवातमानाहजानुजं त्रिकमागतम् ।
उदावर्तहरी पेया बलवर्णाग्निकारिणी ॥ ६५ ॥

(१८ शिंडाकी) सरसोंकी खल ६४ तोलेभर ले तुष दूरकर पानीमें अच्छी तरह धोकै उसमें ६४ तोलेभर मंड मिलाकै तीन दिन अन्नके समूहमें स्थापित करै पीछे देखकर चूर्ण बनाय गोरखमुंडी गोखरू सौंफ सांठी खींप वरना दालचिनी सोंठ मैनफल ये सब चार चार तोलेभर ले चूर्ण कर मिलाय अच्छा पाक जान तंडुलोंसें मिली सिद्ध जाननी । सरसोंका तेलसें रचीहुई हींग और सेंधानमकसें युत करी और नमकके साथ भक्षण करी जावै तो आमकों और महाज्वरकों जीततीहै । एकदोषसें उपजा दोदोषोंसें उपजा साध्य सान्निपातक ऐसा ज्वर और कटिवात जांघवात अफारा जानुवात कटिप्रांतवात उदावर्त इन्होंकों हरतीहै । और बल वर्ण अग्नि इन्होंकों बढाती है ।

(१९)त्वगादिहीनाः संशुष्काः
प्रत्यग्राः सकुलादयः ।
श्लक्ष्णचूर्णीकृतं तेषां
शीते पलशतत्रयम् ॥ ६६ ॥
शतेन कटुतैलेऽस्य व्योषरामठधान्यकैः ।

क्रिमिघ्नदीप्यकनिशाचविकाग्रन्थिकार्द्रकैः ।
जीरकद्वयवृश्चीरसुरसार्जकशिग्रुकैः ॥ ६७ ॥
दशमूलात्मगुप्ताभ्यां मार्कवैर्लवणैस्त्रिभिः ।
चूर्णितैः पलिकैः सार्धमारणालपरिप्लुतैः ॥ ६८ ॥
विन्यसेत्स्नेहपात्रे च धान्यराशौ पुनर्न्यसेत् ।
सप्तरात्रात्समुद्धृत्य पानभक्षणभोजनैः ॥ ६९ ॥
सिध्मलेयं प्रयोक्तव्या सामे वाते विशेषतः ।
भग्नरुग्नाभ्युपहताः(?) कम्पिनः पीठसर्पिणः ७०
गृध्रसीमग्निसादं च शूलगुल्मोदराणि च ।
वलीपलितखालित्यं हत्वा स्युरमलेन्द्रियाः॥७१॥

(१९ सिध्मला) छालसें रहित और सूखेहुये और नवीन ऐसे कुटकी आदि ओषध ले मिहीन चूर्ण कर १२ तोलेभर ले शीत क्वाथ बनावै । कडुवा तेल ४०० तोले और सोंठ मिरच पीपल हींग धनियां वायविडंग अजमोद हलदी चव्य पीपलामूल अदरक दोनोंजीरे सांठी तुलसी अजबला सहोंजना दशमूल कौंचके बीज भंगरा सेंधानमक मनयारीनमक सांभरनमक ये सब चार चार तोलेभर ले चूर्ण कर मिलाय कांजीमें भिगोय चिकने पात्रमें घाल अन्नकी राशिमें फिर स्थापित करै । सातरात्रिसें उपरंत निकास पीना भक्षण और भोजनके द्वारा वर्तै, यह सिध्मला विशेषकरकै आमवातमें प्रयुक्त करनी । भग्नरोगसें युत हुये कंपवाले पीठसें चलनेवाले ऐसे रोगी अच्छे होजाते हैं । और गृध्रसी मंदाग्नि शूल गुल्म उदररोग शरीरमें वली पडजानी वालोंका सुपेद होना खालित्यरोग इन्होंकों नाशकर सुंदर इंद्रियोंवाले होजातेहैं ।

(२०)दधिमत्स्यगुडक्षीरपोतकीमाषपिष्टकम् ।
वर्जयेदामवातार्तो गुर्वभिष्यन्दकारि च ॥ ७२ ॥

इति आमवातचिकित्सा ।

(२० आमवाते वर्ज्यपदार्थाः) दही मछली गुड दूध पोईशाक उडदकी पीठी भारी और अभिष्यंदी पदार्थ इन्होंकों आमवातवाला वर्जित करै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनुपंडितरविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां आमवातचिकित्सा ।

अथ शूलाधिकारः २६

अब शूलाधिकार कहतेहै ।

(१)वमनं लङ्घनं स्वेदः पाचनं फलवर्तयः ।
क्षारचूर्णानि गुडिकाः शस्यन्ते शूलशान्तये ॥१॥
पुंसः शूलाभिपन्नस्य स्वेद एव सुखावहः ।
पायसैः कृशरैः पिष्टैः स्निग्धैर्वापि सितोत्करैः २

वातात्मकं हन्त्यचिरेण शूलं
स्नेहेन युक्तस्तु कुलत्थयूषः ।
ससैन्धवो व्योषयुतः सलावः
सहिङ्गुसौवर्चलदाडिमाढ्यः ॥ ३ ॥

बलापुनर्नवैरण्डवृहतीद्वयगोक्षुरैः ।
सहिङ्गु लवणं पीतं सद्यो वातरुजापहम् ॥ ४ ॥
शूली विबन्धकोष्ठोऽद्भिरुष्णाभिश्चूर्णिताः पिबेत् ।
हिङ्गुप्रतिविषाव्योषवचासौवर्चलाभयाः ॥ ५ ॥
तुम्बुरूण्यभयाहिङ्गुपौष्करं लवणत्रयम् ।
पिबेद्यवाम्बुना वातशूलगुल्मापतन्द्रकी ॥ ६ ॥

श्यामा विडं शिग्रुफलानि पथ्या-
विडङ्गकम्पिल्लकमश्वमूत्री ।
कल्कं समं मद्ययुतं च पीत्वा
शूलं निहन्यादनिलात्मकं तु ॥ ७ ॥

(१ शूलवमनलङ्घनाद्युपायाः) वमन लंघन स्वेद पाचन फलवर्ति क्षारका चूर्ण और गोली ये सब शूलकी शांतिके वास्ते श्रेष्ठ हैं । शूलसें युतहुआ पुरुषकै स्वेदही सुखकों देनेवाला है । खीर खिचडी पीठी अथवा मिश्रीसें युतकिया स्निग्धपदार्थ इन्होंसेंभी शूलमें सुख होता है । वायके शूलका स्नेहसें युतहुआ कुलथीका यूषमें सेंधानमक और सोंठ मिरच पीपलका चूर्ण मिलाय अथवा लावाके मांसका यूषमें हींग कालानमक और अनारदाना डालकै पीवै तो नाश होताहै । खरैंहटी सांठी अरंड दोनों कटेली गोखरू इन्होंके यूषमें हींग और सेंधानमक डाल पीवै तो वातका शूल शीघ्र नष्ट होता है । शूलवाला और बंधकोष्ठवाला गरम पानीके संग हींग अतीस सोंठ मिरच पीपल वच कालानमक हरडै इन्होंके चूर्णकों पीवै । धनियां हरडै हींग पोहकरमूल सेंधानमक कालानमक मनयारीनमक इन्होंके चूर्णकों जवोंके पानीसें वातशूल गुल्म और अपतंत्रवाला पीवै । निशोत मनयारी-

नमक सहोंजनाकी फली हरडै वायविडंग कपिला सालई-वृक्ष ये सब समान ले कल्क बनाय मदिरासें युत कर पीनेसें वातका शूल नष्ट होता है ।

(२)यामिनीहिङ्गुसिन्धूत्थक्षारसौवर्चलाभयाः ।
सुरामण्डेन पातव्या वातशूलनिषूदनाः ॥ ८ ॥
विश्वमेरण्डजं मूलं क्राथयित्वा जलं पिबेत् ।
हिङ्गुसौवर्चलोपेतं सद्यः शूलनिवारणम् ॥ ९ ॥
हिङ्गुपुष्करमूलाभ्यां हिङ्गु सौवर्चलेन वा ।
विश्वैरण्डयवक्राथः सद्यः शूलनिवारणः ।
तद्वद्रुबुयवक्राथो हिङ्गुसौवर्चलान्वितः ॥ १० ॥
हिङ्ग्वम्लकृष्णालवणं यमानी-
क्षाराभयासैन्धवतुल्यभागम् ।
चूर्णं पिबेद्वारुणमण्डमिश्रं
शूले प्रवृद्धेऽनिलजे शिवाय ॥ ११ ॥

(२ यामिनीसुरामण्डाद्युपायाः) हलदी हींग सेंधानमक जवाखार साजीखार कालानमक हरडै इन्होंकों मदिराके मंडसें पीवै तो वातशूलका नाश होता है । सोंठ और अरंडकी जडका क्राथ बनाय उसमें हींग और कालानमक डाल पीवै तो वातशूल तत्काल दूर होता है । हींग और पौहकरमूलकरकै अथवा हींग और कालानमककरकै युत किया सोंठ अरंड और जवोंका क्राथ शीघ्र शूलकों दूर करता है । तैसेही अरंड और जवोंके क्राथमें हींग और कालानमक डाल पीवै । हींग विजोरा पीपल नमक अजमान जवाखार हरडै सेंधानमक ये सब बराबरभाग ले चूर्ण बनाय वारुणी मद्यका मंडके संग पीवै तो बढाहुआ वातका शूलमें सुख होता है ।

(३)सौवर्चलाम्लिकाजाजीमरिचैर्द्विगुणोत्तरैः ।
मातुलुङ्गरसैः पिष्ट्वा गुडिकानिलशूलनुत् ॥१२॥
हिङ्ग्वम्लवेतसव्योषयमानीलवणत्रिकैः ।
बीजपूररसोपेतैर्गुडिका वातशूलनुत् ॥ १३ ॥
बीजपूरकमूलं च घृतेन सह पाययेत् ।
जयेद्वातभवं शूलं कर्षमेकं प्रमाणतः ॥ १४ ॥
बिल्वमूलतिलैरण्डं पिष्ट्वा चाम्लतुषाम्भसा ।
गुडिकां भ्रामयेदुष्णां वातशूलविनाशिनीम् १५
तिलैश्च गुडिकां कृत्वा भ्रामयेज्जठरोपरि ।
गुडिका शमयत्येषा शूलं चैवातिदुःसहम् ॥१६॥
नाभिलेपाज्जयेच्छूलं मदनः काञ्जिकान्वितः ।
जीवन्तीमूलकल्को वा सतैलः पार्श्वशूलनुत् १७

(३ सुवर्चलादिगुटिका) कालानमक १ भाग अम्ली २ भाग जीरा ४ भाग मिरच ८ भाग इन्होंकों विजोराके रसमें पीसकर गोली बनावै ये वातके शूलकों नाशती है । हींग अम्लवेत सोंठ मिरच पीपल अजमान सेंधानमक मनयारीनमक कालानमक इन्होंकों विजोराके रससें युत कर गोली बनावै ये वातका शूलकों नाशती है । विजोराकी जडकों घृतके साथ पीवै एक कर्ष प्रमाणसें वातके शूलका नाश होता है । बेलवृक्षकी जड तिल अरंड इन्होंकों खट्टा रस और जवोंकी कांजीसें पीस गोला बनाय गरम कर भ्रमानेसें वातका शूल नष्ट होता है । तिलोंका गोला बनाके पेठके ऊपर भ्रमावै ये गोली अत्यंत भयंकर शूलकों नष्ट करती है । मैनफलकों कांजीसें पीस नाभिपर किया लेप शूलकों जीतता है । अथवा जीवंतीकी जडके कल्कमें तेल मिलाय किया लेप पसलीशूलकों नाशता है ।

(४)गुडः शालिर्यवाः क्षीरं सर्पिःपानं विरेचनम् ।
जाङ्गलानि च मांसानि भेषजं पित्तशूलिनाम् १८
पैत्तं तु शूले वमनं पयोभी
रसैस्तथेक्षोः सपटोलनिम्बैः ।
शीतावगाहाः पुलिनाः सवाताः
कांस्यादिपात्राणि जलप्लुतानि ॥ १९ ॥
विरेचनं पित्तहरं च शस्तं
रसाश्च शस्ताः शशलावकानाम् ।
सन्तर्पणं लाजमधूपपन्नं
योगाः सुशीता मधुसंप्रयुक्ताः ॥ २० ॥
छर्द्यां ज्वरे पित्तभवेऽपि शूले
घोरे विदाहे त्वतितर्षिते च ।
यवस्य पेयां मधुना विमिश्रां
पिबेत्सुशीतां मनुजः सुखार्थी ॥ २१ ॥
धात्र्या रसं विदार्या वा त्रायन्ती गोस्तनाम्बु वा ।
पिबेत्सशर्करं सद्यः पित्तशूलनिषूदनम् ॥ २२ ॥
शतावरीरसं क्षौद्रयुतं प्रातः पिबेन्नरः ।
दाहशूलोपशान्त्यर्थं सर्वपित्तामयापहम् ॥ २३ ॥
बृहत्यौ गोक्षुरैरण्डकुशकाशेक्षुरालिकाः ।
पीताः पित्तभवं शूलं सद्यो हन्युः सुदारुणम् २४

(४ पित्तशूलिनां गुडादिभेषजम्) गुड शालि-चावल जव दूध घृत इन्होंकों पीना जुलाब और जांगल-देशके मांस ये सब पित्तशूलवालोंकों उत्तम औषध है । पित्तके शूलमें दूधसें वमन करना ईखका रस परवल और नींबका रस इन्होंसें वमन शीतल पानीसें सेक नदीके पुलिनपर बैठना सुंदर वातकों सेवना पानीसें भरे कांसीके पात्र ये हित हैं । जुलाब पित्तका शूलकों हरता है । शशा और लावाके मांसका रस श्रेष्ठ है । धानकी खीलोंमें शहद मिलाय तृप्त करना और शहदसें संयुक्त किये सुंदर शीतल योग हित हैं । छर्दिमें ज्वरमें पित्त-शूलमें घोरदाहमें और अत्यंत तृषामें सुखकी इच्छावाला मनुष्य जवोंकी पेयामें शहद मिलाय पीवै । आंवलाका रस अथवा विदारीकंदका रस जीवंतीका रस अथवा मुनक्काका रस इन्होंकों खांडसहित पीवै तो शीघ्र पित्तशूल दूर होता है । शतावरीके रसकों शहदसें युत कर प्रभा-तमें मनुष्य पीवै दाह और शूलकी शांतिके अर्थ सबत-रहके पित्तरोगोंकों नाशता है । दोनों कटेली गोखरू अरंड कुशा कांस ईख ये पीनेसें पित्तका शूल शीघ्र नष्ट होता है ।

(५)शतावरीसयष्ट्याह्ववाट्यालकुशगोक्षुरैः ।
शृतशीतं पिबेत्तोयं सगुडक्षौद्रशर्करम् ॥ २५ ॥
पित्तासृग्दाहशूलघ्नं सद्यो दाहज्वरापहम् ।
त्रिफलानिम्बयष्ट्याह्वकटुकारग्वधैः शृतम् ॥२६॥
पाययेन्मधुसंमिश्रं दाहशूलोपशान्तये ।
तैलमेरण्डजं वापि मधुककाथसंयुतम् ॥ २७ ॥
शूलं पित्तोद्भवं हन्याद्गुल्मं पैत्तिकमेव च ।
त्रिफलारग्वधक्काथं सक्षौद्रं शर्करान्वितम् ॥२८॥
पाययेद्रक्तपित्तघ्नं दाहशूलनिवारणम् ।
प्रलिह्यात्पित्तशूलघ्नं धात्रीचूर्णं समाक्षिकम्॥२९॥

(५ शतावर्यादिसंस्कृतोदकम्) शतावरी मुलहटी खरैंहटी कुशा गोखरू इन्होंके काथसें गुड शहद और खांड डाल पीवै तो रक्तपित्त दाह शूल और दाहज्वरका शीघ्र नाश होता है । त्रिफला नींब मुलहटी कुटकी अ-मलतास इन्होंके काथमें शहद डाल पीवै तो दाहसहित शूलकी शांति होती है । अथवा अरंडके तेलमें महुआका काथ डाल पीवै तो पित्तका शूल और पित्तका गुल्म नष्ट होता है । त्रिफला और अमलतासके काथमें शहद और खांड डाल पीवै तो रक्तपित्त और दाह शूल नष्ट होता है । आंवलाके चूर्णमें शहद डाल लेप करनेसें पित्तका शूल नष्ट होता है ।

(६)श्लेष्माधिके छर्दनलङ्घनानि
शिरोविरेकं मधुशीधुपानम् ।
मधूनि गोधूमयवानरिष्टान्
सेवेत रूक्षान्कटुकांश्च सर्वान् ॥ ३० ॥
पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
यवागूर्दीपनीया स्याच्छूलघ्नी तोयसाधिता॥३१॥
लवणत्रयसंयुक्तं पञ्चकोलं सरामठम् ।
सुखोष्णेनाम्बुना पीतं कफशूलविनाशनम्॥३२॥
बिल्वमूलमथैरण्डं चित्रकं विश्वभेषजम् ।
हिङ्गु सैन्धवसंयुक्तं सद्यः शूलनिवारणम् ॥३३॥

(६ श्लेष्माधिक्ये छर्दनादयः) कफकी अधिकता-वाले शूलमें वमन लंघन शिरका जुलाब मधु और सी-धुका पीना शहद गेहूं जव अरिष्ट इन सबकों और रुक्ष तथा सबतरहके चर्चरे पदार्थोंकों सेवै । पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंकी गुडयाणी दीपनी है । और शूलकों नाशती है । यह पानीमें बनानी । सेंधानमक का-लानमक मनयारीनमक पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ हींग इन्होंके चूर्णकों सुखपूर्वक गरम पानीसें पीवै तो कफशूल नष्ट होता है । बेलवृक्षकी जड अरंड चीता सोंठ हींग सेंधानमक यहभी तत्काल शूलकों दूर करता है ।

(७)मुस्तं वचां तिक्तकरोहिणीं च
तथाभयां निर्दहनीं च तुल्याम् ।
पिबेत्तु गोमूत्रयुतां कफोत्थ-
शूले तथामस्य च पाचनार्थम् ॥ ३४ ॥
वचाब्दाग्न्यभयातिक्ताचूर्णं गोमूत्रसंयुतम् ।
सक्षारं वा पिबेत्काथं बिल्वादेः कफशूलनुत् ३५
मातुलुङ्गरसो वापि शिग्रुकाथस्तथापरः ।
सक्षारो मधुना पीतः पार्श्वहृद्बस्तिशूलनुत् ३६
आमशूले क्रिया कार्या कफशूलविनाशिनी ।
सेव्यमामहरं सर्वं यदग्निबलवर्धनम् ॥ ३७ ॥
सहिङ्गुतुम्बुरुव्योषयमानीचित्रकाभयाः ।
सक्षारलवणाश्चूर्णं पिबेत्प्रातः सुखाम्बुना ॥३८॥
विण्मूत्रानिलशूलघ्नं पाचनं वह्निदीपनम् ।

चित्रकं ग्रन्थिकैरण्डशुण्ठीधान्यं जलैः शृतम् ३९
शूलानाहविबन्धेषु सहिङ्गु विडदाडिमम् ।
दीप्यकं सैन्धवं पथ्या नागरं च चतुःसमम् ।
भृशं शूलं जयत्याशु मन्दस्याग्नेश्च दीपनम् ॥४०॥
समाक्षिकं बृहत्यादि पिबेत्पित्तानिलात्मके ।
व्यामिश्रं वा विधिं कुर्याच्छूले पित्तानिलात्मके४१
पित्तजे कफजे वापि या क्रिया कथिता पृथक् ।
एकीकृत्य प्रयुञ्जीत तां क्रियां कफपित्तजे ॥४२॥
पटोलत्रिफलारिष्टक्वाथं मधुयुतं पिबेत् ।
पित्तश्लेष्मज्वरच्छर्दिदाहशूलोपशान्तये ॥ ४३ ॥
रसोनं मधुसंमिश्रं पिबेत्प्रातः प्रकाङ्क्षितः ।
वातश्लेष्मभवं शूलं विहन्तुं वह्निदीपनम् ॥ ४४ ॥

(७शूलामपाचनाय मुस्तादि) नागरमोथा वच कुटकी हरडै मरोरफल ये सब समान भाग ले गोमूत्रसें युत कर पीवै तो कफके शूलमें और आमके पकानेमें हित होता है। वच नागरमोथा चीता कुटकी इन्होंके चूर्णमें गोमूत्र डाल पीवै अथवा बिल्वादिगणके ओषधोंका क्काथमें जवाखार डाल पीवै तो कफका शूल नष्ट होता है। बिजोराका रस अथवा सहोंजनाके क्काथमें जवाखार मिलाय शहदसें पीवै तो पसलीशूल हृच्छूल और बस्तिशूलका नाश होता है। आमशूलमें कफशूलनाशक क्रिया करनी और जो आमकों हरता हो और जो अग्निबलकों बढाता हो वह संपूर्ण सेवित करना। हींग धनियां सोंठ मिरच पीपल अजमान चीता हरडै जवाखार सेंधानमक इन्होंके चूर्णकों अल्प गरम पानीके संग प्रातःकाल पीवै। यह विष्ठा मूत्र वातशूलकों नाशता है। पाचन है अग्निकों जगाता है। चीता पीपलामूल अरंड सोंठ धनियां इन्होंका क्काथ बनाय उसमें हींग मनियारीनमक और अनारदाना डाल पीवै तो शूल अफारा और बंधामें सुख होता है। अजमोद सेंधानमक हरडै सोंठ ये चारों समान भाग ले खावै अत्यंत शूलका शीघ्र नाश होता है और मंदाग्नि दीपन होता है। पित्तवातके शूलमें बृहत्यादिगणके औषधमें शहद डाल पीवै अथवा मिलीहुई विधि करनी। पित्तके और कफके शूलमें जो पृथक् क्रिया कही हो वही क्रिया मिलाके कफपित्तके शूलमें युक्त करनी। परवल त्रिफला नींब इन्होंके क्काथमें शहद डाल पीवै तो पित्तकफ ज्वर छर्दि दाह शूल इन्होंकी शांति होती है। हृशनमें शहद डाल कांक्षावाला मनुष्य प्रातःकाल पीवै तो वातकफशूल नष्ट होता है। और अग्निका दीपन होता है।

(८)विश्वोरुबूकदशमूलयवाम्भसा तु
द्विक्षारहिङ्गुलवणत्रयपुष्कराणाम् ।
चूर्णं पिबेद्धृदयपार्श्वकटीग्रहाम-
पक्वाशयांसभृशरुग्ज्वरगुल्मशूली ॥ ४५ ॥
क्काथेन चूर्णपानं यत्तत्र क्वाथप्रधानता ।
प्रवर्तते न तेनात्र चूर्णापेक्षी चतुर्द्रवः॥ ४६ ॥

(८ बृहद्विश्वादि) सोंठ अरंड दशमूल जव इन्होंका क्काथके संग जवाखार साजीखार हींग सेंधानमक कालानमक मनयारीनमक पौहकरमूल इन्होंके चूर्णकों पीवै तो हृदय पसली और कटि इन्होंकों जकडबंध आम पक्वाशयशूल कंधाशूल ज्वर गुल्म और शूलवाला सुखी होता है। क्काथके संग जहां चूर्णकों पीना है तहां क्काथकी प्रधानता है उसी कारणसें यहां चूर्णकी अपेक्षावाले चारों द्रव प्रवृत्त होते हैं।

(९) चूर्णं समं रुचकहिङ्गुमहौषधानां
शुण्ठ्याम्बुना कफसमीरणसम्भवासु ।
हृत्पार्श्वपृष्ठजठरार्तिविषूचिकासु
पेयं तथा यवरसेन तु विड्विबन्धे॥ ४७ ॥
समं शुण्ठ्यम्बुनेत्येवं योजना क्रियते बुधैः ।
तेनाल्पमानमेवात्र हिङ्गु संपरिदीयते ॥ ४८ ॥

(९ रुचकादिः) कालानमक हींग सोंठ इन्होंकों बराबर भाग ले चूर्ण बनाय सोंठका पानीके संग कफवातकी पीडामें पीवै। यह हृच्छूल पसलीशूल पृष्ठशूल पेटरोग और विषूचिका इन्होंमें पीना और विष्ठाके बंधेमें जवोंका रसके संग पीना।

(१०)हिङ्गु सौवर्चलं पथ्याविडसैन्धवतुम्बुरु ।
पौष्करं च पिबेच्चूर्णं दशमूलयवाम्भसा ॥ ४९ ॥
पार्श्वहृत्कटिपृष्ठांसशूले तन्त्रापतानके ।
शोथे श्लेपामसेके च कर्णरोगे च शस्यते॥५०॥

एरण्डबिल्वबृहतीद्वयमातुलुङ्ग-
पाषाणभित्त्रिकटुमूलकृतः कषायः ।
सक्षारहिङ्गुलवणो रुबुतैलमिश्रः
श्रोण्यंसमेढ्रहृदयस्तनरुक्षु पेयः ॥ ५१ ॥

(१० हिङ्ग्वादिचूर्णम्) हींग कालानमक हरडै मनयारीनमक सेंधानमक धनियां पौहकरमूल इन्होंके चूर्णकों दशमूलका क्काथके संग लेवै। पसलीशूल हृच्छूल कटिशूल पृष्ठशूल अंसशूल अपतंत्र अपतानक शोजा कफका प्रसेक और कर्णरोग इन्होंमें श्रेष्ठ है। अरंड बेलवृक्ष दोनों कटेली विजोरा पाषाणभेद सोंठ मिरच पीपल और सहोंजना इन्होंका क्काथमें जवाखार हींग सेंधानमक और अरंडका तेल डाल कटि कंधा लिंग हृदय चूंची इन्होंके शूलोंमें पीना योग्य है।

(११) हिङ्गु त्रिकटुकं कुष्टं यवक्षारोऽथ सैन्धवम्
मातुलुङ्गरसोपेतं प्लीहशूलापहं रजः ॥ ५२ ॥
दग्धमनिर्गतधूमं
मृगशृङ्गं गोघृतेन सह पीतम्।
हृदयनितम्बजशूलं
हरति शिखी दारुनिवहमिव ॥ ५३ ॥
क्रिमिरिपुचूर्णं लीढं स्वरसेन वङ्गसेनस्य।
क्षपयत्यचिरान्नियतं लेहोऽजीर्णोद्भवं शूलम् ५४
विदारीदाडिमरसः सव्योषलवणान्वितः।
क्षौद्रयुक्तो जयत्याशु शूलं दोषत्रयोद्भवम् ॥५५॥

(११ द्वितीयो हिंग्वादियोगः) हींग सोंठ मिरच पीपल कूट जवाखार सेंधानमक इन्होंमें विजोराका रस डाल चाटै तो प्लीहरोग और शूलका नाश होता है। जिस रीतिसें धूमा नहीं निकस सकै तैसी विधिसें मृगके सींगकों जलाकै गोका घृतकेसाथ पीवै। यह कूलोंका शूल और हृदयके शूलकों नाशता है। जैसे अग्नि काष्ठके समूहकों। अगस्तिवृक्षके स्वरसमें वायविडंगका चूर्ण मिलाय चाटै। यह लेह शीघ्रही अजीर्णसें उपजे शूलकों नाशता है। विदारीकंदका और अनारका रसमें सोंठ मिरच पीपल सेंधानमक इन्होंका चूर्ण और शहद डाल पीवै तो त्रिदोषका शूल शीघ्र नष्ट होता है।

(१२) एरण्डफलमूलानि बृहतीद्वयगोक्षुरम्।
पर्णिन्यः सहदेवी च सिंहपुच्छी क्षुरालिका ५६
तुल्यैरेतैः शृतं तोयं यवक्षारयुतं पिबेत्।
पृथग्दोषभवं शूलं हन्यात्सर्वभवं तथा ॥ ५७ ॥

(१२ एरंडद्वादशकम्) अरंडका फल और मूल दोनों कटेली गोखरू सालिपर्णी पृष्ठिपर्णी मूंगपर्णी माषपर्णी सहदेवी पिठवनभेद शालईभेद ये सब समान भाग ले क्काथ बनाय उसमें जवाखार मिलाय पीवै। यह पृथक् दोषसें उपजा और सब दोषोंसें उपजा शूलकों नाशता है।

(१३) गोमूत्रसिद्धं मण्डूरं त्रिफलाचूर्णसंयुतम्।
विलिहन्मधुसर्पिर्भ्यां शूलं हन्ति त्रिदोषजम् ५८
शङ्खचूर्णं सलवणं सहिङ्गुव्योषसंयुतम्।
उष्णोदकेन तत्पीतं शूलं हन्ति त्रिदोषजम् ५९
तीक्ष्णायश्चूर्णसंयुक्तं त्रिफलाचूर्णमुत्तमम्।
प्रयोज्यं मधुसर्पिर्भ्यां सर्वं शूलनिवारणम् ॥६०॥
मूत्रान्तःपाचितां शुद्धां लौहचूर्णसमन्विताम्।
सगुडामभयामद्यात्सर्वशूलप्रशान्तये ॥ ६१ ॥

(१३ शूले गोमूत्रसिद्धं मंडूरम्) गोमूत्रमें मंडूरकों सिद्ध कर त्रिफलाका चूर्ण मिलाय शहद और घृतसें युत कर चाटै तो त्रिदोषसें उपजा शूलका नाश होता है। शंखका चूर्ण सेंधानमक हींग सोंठ मिरच पीपल इन्होंके चूर्णकों गरम पानीसें पीवै यह त्रिदोषजशूलकों नाशता है। पोहलादका चूर्ण त्रिफलाका चूर्ण इन्होंकों शहद और घृतसें युत कर चाटै तो सब प्रकारके शूल नष्ट होते हैं। हरडैकों गोमूत्रमें पकाकै शुद्धकर पीछे लोहाका चूर्ण और गुडसें युतकर चाटै तो सब प्रकारके शूल नष्ट होते हैं।

(१४)पिप्पली नागरं बिल्वं कारवीचव्यचित्रकम्
हिङ्गुदाडिमवृक्षाम्लवचाक्षाराम्लवेतसम् ॥६२ ॥
वर्षाभूकृष्णलवणमजाजीबीजपूरकम्।
दधि त्रिगुणितं सर्पिस्तत्सिद्धं दाधिकं स्मृतम् ६३
गुल्मार्शःप्लीहहृत्पार्श्वशूलयोनिरुजापहम्।
दोषसंशमनं श्रेष्ठं दाधिकं परमं स्मृतम् ॥६४ ॥

(१४ दाधिकं घृतम्) पीपल सोंठ बेलगिरी कलौंजी चव्य चीता हींग अनार अमली वच अम्लवेत सांठी कालानमक जीरा विजोरा इन्होंका कल्क और तिगुना दहीमें घृत सिद्ध करै। यह दाधिक कहा है। गुल्म बवासीर प्लीहरोग हृच्छूल योनिरोग इन्होंकों नाशता है। दोषकों शांत करता है। यह दाधिकघृत श्रेष्ठ कहा है।

(१५) कम्बलावृतगात्रस्य प्राणायामं प्रकुर्वतः।
कटुतैलाक्तशक्तूनां धूपः शूलहरः परः ॥ ६५ ॥
व्यायामं मैथुनं मद्यं लवणं कटुवैदलम्।
वेगरोधं शुचं क्रोधं वर्जयेच्छूलवान्नरः ॥ ६६ ॥

इति शूलचिकित्सा।

(१८ धूपादि) कंबलसें आच्छादितअंगोंवालाके और प्राणायामकों करनेवालाके कडुआ तेलसें भिगोयाहुआ सत्तूका धूप शूलकों हरता है । कसरत मैथुन मदिरा नमक चर्चरा वैदलअन्न वेगका रोकना शोक क्रोध इन्होंकों शूलवाला वर्जित करै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तार्थप्रकाशिकाभाषाटीकायां शूलचिकित्सा ।

अथ परिणामशूलाधिकारः २७

अब परिणामशूलका अधिकार कहतेहै ।

(१) वमनं तिक्तमधुरैर्विरेकश्चापि शस्यते ।
बस्तयश्च हिताः शूले परिणामसमुद्भवे ॥ १ ॥
विडङ्गतण्डुलव्योषं त्रिवृद्दन्ती सचित्रकम् ।
सर्वाण्येतानि संस्कृत्य सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत्॥२॥
गुडेन मोदकं कृत्वा भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ।
उष्णोदकानुपानं तु दद्यादग्निविवर्धनम् ॥ ३ ॥
जयेत्रिदोषजं शूलं परिणामसमुद्भवम् ।

(१ परिणामशूलोपायाः) कडुआ और मधुर रससें वमन और जुलाब और बस्तिकर्म ये परिणामसें उपजे शूलमें हित हैं । वायविडंगके दाने सोंठ मिरच पीपल निशोत जमालगोटाकी जड चीता इन सबोंकों शुद्ध कर मिहीन चूर्ण बनावे । गुडसें गोली बनाय प्रभातमें ऊठ खावै और गरमपानीका अनुपान करै और अग्निवर्धक वस्तुकों देवै । यह परिणामसें उपजा त्रिदोषज शूलकों नाशताहै ।

(२) नागरतिलगुडकल्कं
पयसा संसाध्य यः पुमानद्यात् ॥ ४ ॥
उग्रं परिणतिशूलं
तस्यापैति त्रिसप्तरात्रेण ।
शम्बूकजं भस्म पीतं जलेनोष्णेन तत्क्षणात् ॥ ५ ॥
पक्तिजं विनिहन्त्येतच्छूलं विष्णुरिवासुरान् ।
अक्षधात्र्यभयाकृष्णाचूर्णं मधुयुतं लिहेत् ॥ ६ ॥
दध्ना लूनसारेणाद्यात्सतीलयवशक्तुकान् ।
अचिरान्मुच्यते शूलान्नरोऽनुपरिवर्तनात् ॥ ७ ॥
तिलनागरपथ्यानां भागं शम्बूकभस्मनाम् ।
द्विभागं गुडसंयुक्तं गुडीं कृत्वाक्षभागिकाम्॥८॥
शीताम्बुपानां पूर्वाह्णे भक्षयेत्क्षीरभोजनः ।
सायाह्ने रसकं पीत्वा नरो मुच्येत दुर्जयात्॥९॥
परिणामसमुत्थाच्च शूलाच्चिरभवादपि ।
शम्बूकं त्र्यूषणं चैव पञ्चैव लवणानि च ॥१०॥
समांशां गुडिकां कृत्वा कलम्बूरसकेन वा ।
प्रातर्भोजनकाले वा भक्षयेत्तु यथाबलम् ॥ ११ ॥
शूलाद्विमुच्यते जन्तुः सहसा परिणामजात् ।
यः पिबति सप्तरात्रं
शक्तूनेकान्कलाययूषेण ॥ १२ ॥
स जयति परिणामरुजं
चिरजामपि किमुत नूतनजाम् ।

(२ नागरादिकल्कः) सोंठ तिल गुड इन्होंके कल्ककों दूधसें सिद्ध कर जो मनुष्य खावे उसके भयंकर परिणामशूल इक्कीस दिनकरके नष्ट होजाताहै । शंखके भस्मकों गरम पानीके संग पीवै तो शीघ्रही पक्तिशूलकों नाशताहै जैसे विष्णु दैत्योंकों । बहेडा आंवला हरडै इन्होंके चूर्णमें शहद डाल चाटै। घृतरहित दहीके संग मटर और जवोंके सत्तुओंकों खावै । इसके वर्तनेसें मनुष्य शूलसें शीघ्र छूट जाताहै । तिल सोंठ हरडै इन्होंका १ भाग शंखका भस्म २ भाग इन्होंमें गुड डाल एक एक तोलाकी गोली बनावै । शीतल पानीके साथ इन गोलियोंकों पूर्वाह्णमें खावै और दूधका भोजन करता रहै । सायंकालमें खपरियाकों पीकै मनुष्य दारुणरूप और बहुतदिनका परिणामशूलसें छूट जाताहै । शंख सोंठ मिरच पीपल पांचों नमक ये समान भाग ले गोली बनावे अथवा कदंबके रसकरकै गोली बनाय प्रभातका भोजनकालमें जैसा बल हो उसके अनुसार खावै तो परिणामशूलसें मनुष्य शीघ्र छूट जाताहै। मटरका यूषके संग अकेले सत्तुकों जो मनुष्य सात रात्रि पीवै वह पुराणी परिणामशूलकी पीडाकों जीतताहै । और नवीन पीडाका क्या कहनाहै ।

(३)लोहचूर्णं वरायुक्तं विलीढं मधुसर्पिषा॥१३॥
परिणामशूलं शमयेत्तन्मलं वा प्रयोजितम् ।
कृष्णाभयालौहचूर्णं गुडेन सह भक्षयेत् ॥१४॥
पक्तिशूलं निहन्त्येतज्जठराण्यग्निमन्दताम् ।
आमवातविकारांश्च स्थौल्यं चैवापकर्षति ॥१५॥
पथ्यालोहरजः शुण्ठीचूर्णं माक्षिकसर्पिषा ।
परिणामरुजं हन्ति वातपित्तकफात्मिकाम् ॥१६॥

(३ लोहचूर्णादिप्रयोगः) लोहाका चूर्ण और त्रिफलामें शहद और घृत डाल चाटै अथवा लोहाके मैलकों चाटै तो परिणामशूल शांत होताहै । पीपल हरडै लोहा इन्होंके चूर्णमें गुड डाल खावै तो पक्तिशूल और मंदाग्निका नाश होताहै । आमवातविकार और स्थौल्य अर्थात् मुटापा दूर होताहै । हरडै लोहाका चूर्ण सोंठका चूर्ण इन्होंकों शहद और घृतमें मिलाय चाटै तो वात पित्त और कफसें उपजी परिणामशूलकी पीडाकों नाशताहै ।

(४)सामुद्रं सैन्धवं क्षारो रुचकं रौमकं बिडम् ।
दन्तीलौहरजः किट्टं त्रिवृच्छूरणकं समम्॥१७॥
दधिगोमूत्रपयसा मन्दपावकपाचितम् ।
तद्यथाग्निबलं चूर्णं पिबेदुष्णेन वारिणा ॥ १८ ॥
जीर्णे जीर्णे तु भुञ्जीत मांसादिघृतसाधितम् ।
नाभिशूलं यकृच्छूलं गुल्मप्लीहकृतं च यत्॥१९॥
विद्रध्यष्ठीलिकां हन्ति कफवातोद्भवां तथा ।
शूलानामपि सर्वेषामौषधं नास्ति तत्परम्॥२०॥
परिणामसमुत्थस्य विशेषेणान्तकृन्मतम् ।

(४ सामुद्राद्यं चूर्णं) सामुद्रनमक सेंधानमक खारीनमक कालानमक सांभरनमक मनयारीनमक जमालगोटाकी जड लोहाका चूर्ण लोहाका मैल जमींकंद ये सब समान भाग ले । दही गोमूत्र और दूध इन्होंके साथ मंद अग्निसें पकावै जैसा जठराग्निका बल होवै उसके अनुसार चूर्णकों गरमपानीके साथ पीवै । जीर्ण होनेपर घृतमें साधित किये मांस आदिकों खावै । नाभिशूल यकृच्छूल गुल्मरोग प्लीहरोग वातकफसें उपजी विद्रधि अष्ठीलिका इन्होंकों नाशताहै । सब प्रकारके शूलोंकोंभी उस्से परै ओषध नहींहै । परिणामशूलकों विशेषकरकै नाशनेवाला माना है ।

(५)नारिकेलं सतोयं च लवणेन प्रपूरितम्॥२१॥
विपक्वमग्निना सम्यक्परिणामजशूलनुत् ।
वातिकं पैत्तिकं चैव श्लैष्मिकं सान्निपातिकम्२२
मधुकं त्रिफलाचूर्णमयोरजःसमं लिहन् ।
मधुसर्पिर्युतं सम्यग्गव्यं क्षीरं पिबेदनु ॥ २३ ॥
छर्दिं सतिमिरां शूलमम्लपित्तं ज्वरं क्लमम् ।
आनाहं मूत्रसङ्गं च शोथं चैव निहन्ति सः॥२४॥

(५ सप्तामृतलौहम्) रसरहित नारियलकों नमकसें पूरित करै पीछे अग्निकरकै अच्छीतरह पकावै यह परिणामज शूलकों नाशताहै । वातज पित्तज कफज और सन्निपातज परिणामशूलकों नाशताहै । महुवा त्रिफलका चूर्ण लोहाका चूर्ण ये सब समान भाग ले शहद और घृतसें युतकर चाटै और गायका दूधकों ऊपर पीवै । छर्दि तिमिर शूल अम्लपित्त ज्वर ग्लानि अफारा मूत्रबंध और शोजा इन्होंकों नाशताहै ।

(६)सपिप्पलीगुडं सर्पिः पचेत्क्षीरचतुर्गुणे ।
विनिहन्त्यम्लपित्तं च शूलं च परिणामजम्॥२५॥

(६ गुडपिप्पलीघृतम्) पीपल गुड घृत इन्होंकों चौगुने दूधमें पकावै । यह अम्लपित्तकों और परिणामज शूलकों नाशताहै ।

(७)क्काथेन कल्केन च पिप्पलीनां
सिद्धं घृतं माक्षिकसंप्रयुक्तम् ।
क्षीरान्नपस्यैव निहन्त्यवश्यं
शूलं प्रवृद्धं परिणामसंज्ञम् ॥ २६ ॥

(७ पिप्पलीघृतम्) पीपलोंके क्काथ और कल्ककरकै सिद्ध किया घृतमें शहद डाल पीवै । और दूधकोंही पीतारहै । यह बढाहुआ परिणामशूलकों निश्चय नाशताहै ।

(८)कोलाग्रन्थिकशृङ्गवेरचपला-
क्षारैः समं चूर्णितं
मण्डूरं सुरभीजलेऽष्टगुणिते
पक्त्वाथ सान्द्रीकृतम् ।
तं खादेदशनादिमध्यविरतौ
प्रायेण दुग्धान्नभुक्
जेतुं वातकफामयान्परिणतौ
शूलं च शूलानि च ॥ २७ ॥

(८ कोलादिमण्डूरम्) चव्य पीपलामूल अदरक पीपल जवाखार ये सब बराबर ले इन्होंके समान चूर्ण किये मंडूरकों आठगुणा गोमूत्रमें पकाकै घनरूप करै । उसकों भोजन आदिके मध्यमें खावै और प्रायताकरकै दूधके संग अन्नकों खावै तो वातकफके रोग परिणामशूल और सब प्रकारके शूल इन्होंका नाश होताहै ।

(९)कोलाग्रन्थिकसहितै-
र्विश्वौषधमागधीयवक्षारैः ।

प्रस्थमयोरजसामपि
पलिकांशैश्चूर्णितैर्मिश्रैः ॥ २८ ॥
अष्टगुणमूत्रयुक्तं
क्रमपाकात्पिण्डितां नयेत्सर्वम् ।
कोलप्रमाणा गुडिका-
स्तिस्रो भोज्यादिमध्यविरतौ च ॥ २९ ॥
रससर्पिर्यूषपयो-
मांसैरश्नन्नरो निवारयति ।
अन्नविवर्तनमन्ते
गुल्मं प्लीहाग्निसादांश्च ॥ ३० ॥

(९ भीमवटकमंडूरम्) चव्य पीपलामूल सोंठ पीपल जवाखार ये सब चार चार तोले और लोहाका चूर्ण ६४ तोले इन्होंकों मिलाय आठगुणा गोमूत्रसें युत कर क्रमपाक करकै संपूर्ण द्रव्यका गोला बनावै। पीछे वेरके प्रमाण गोलियां बनावै । भोजनके आदि मध्य और अंतमें तीन गोली लेनी। रस घृत यूष दूध मांस इन्होंकों भोजन करता हुआ मनुष्य अंतमें वर्तितहुआ गुल्म प्लीहरोग और मंदाग्नि इन्होंकों दूर करताहै।

(१०)लोहकिट्टपलान्यष्टौ गोमूत्रार्धाढके पचेत् ।
क्षीरप्रस्थेन तत्सिद्धं पक्तिशूलहरं नृणाम् ॥३१॥

(१० क्षीरमंडूरम्) लोहाका किट्ट ३२ तोले भरकों १२८ तोलेभर गोमूत्रमें पकावै पीछे ६४ तोलेभर दूधमें सिद्ध करै यह मनुष्योंके पक्तिशूलकों हरताहै।

(११)लोहकिट्टपलान्यष्टौ गोमूत्रेऽष्टगुणे पचेत् ।
चविकानागरक्षारपिप्पलीमूलपिप्पलीः ॥ ३२ ॥
संचूर्ण्य निक्षिपेत्तस्मिन्पलांशाः सान्द्रतां गते ।
गुडिकाः कल्पयेत्तेन पक्तिशूलनिवारिणीः॥३३॥

(११ चविकादिमंडूरम्) लोहाका किट्ट अर्थात् मैल ३२ तोलेभर लेकै आठगुने गोमूत्रमें पकावै और चव्य सोंठ जवाखार पीपलामूल पीपल इन्होंका चूर्णकर चार चार तोलेभर लेकै मिलावै। जब घनरूप होवै तब पक्तिशूलकों दूर करनेवाली गोलियां बनावै।

(१२)मण्डूरं शोधितं पत्रीं लोहजां वा गुडेन तु ।
भक्षयेन्मुच्यते शूलात्परिणामसमुद्भवात् ॥ ३४ ॥
संशोध्य चूर्णितं कृत्वा मण्डूरस्य पलाष्टकम् ।
शतावरीरसस्याष्टौ दध्नस्तु पयसस्तथा ॥ ३५ ॥
पलान्यादाय चत्वारि तथा गव्यस्य सर्पिषः ।
विपचेत्सर्वमैकध्यं यावत्पिण्डत्वमागतम् ॥ ३६ ॥
सिद्धं तु भक्षयेन्मध्ये भोजनस्याग्रतोऽपि वा ।
वातात्मकं पित्तभवं शूलं च परिणामजम् ॥३७॥
निहन्त्येव हि योगोऽयं मण्डूरस्य न संशयः ।

(१२ शतावरीमंडूरम्) शोधितकिये मंडूरकों अथवा लोहाकी पत्रीकों गुडसें खावै तो परिणामज शूलका नाश होताहै। शोधितकिया मंडूरकों ३२ तोलेभर शतावरीका रस ३२ तोले दही और दूध बत्तीस बत्तीस तोले गायका घृत १६ तोले इन सबकों मिलाय गोला बनावै। सिद्ध कर भोजनके मध्यमें अथवा पहले खावै तो वातशूल पित्तशूल परिणामशूल इन्होंकों मंडूरका योग निश्चय नाशताहै ।

(१३)विडङ्गं चित्रकं चव्यं त्रिफला त्र्यूषणानि च।
नवभागानि चैतानि लोहकिट्टसमानि च ।
गोमूत्रं द्विगुणं दत्वा मूत्रार्धिकगुडान्वितम्॥३९॥
शनैर्मृद्वग्निना पक्त्वा सुसिद्धं पिण्डतां गतम् ।
स्निग्धे भाण्डे विनिक्षिप्य भक्षयेत्कोलमात्रया ४०
प्राङ्मध्यादिक्रमेणैव भोजनस्य प्रयोजितम् ।
योगोऽयं शमयत्याशु पक्तिशूलं सुदारुणम्॥४१॥
कामलां पाण्डुरोगं च शोथं मन्दाग्नितामपि ।
अर्शांसि ग्रहणीदोषं क्रिमिगुल्मोदराणि च ॥४२॥
नाशयेदम्लपित्तं च स्थौल्यं चैवापकर्षति ।
वर्जयेच्छुष्कशाकानि विदाह्यम्लकटूनि च ॥४३॥
पक्तिशूलान्तको ह्येष गुडीमण्डूरसंज्ञकः ।
शूलार्तानां कृपाहेतोस्तारया परिकीर्तितः ॥४४॥

(१३ तारामंडूरगुडः) वायविडंग चीता चव्य त्रिफला सोंठ मिरच पीपल ये सब एक एक भाग और लोहाका किट्ट समान भाग गोमूत्र दुगुना दे और गोमूत्रसें आधा गुड डाल हौलें हौलें कोमलअग्निसें पकाकै अच्छीतरह सिद्ध कर गोला बनावै। चिकना पात्रमें घाल वेरकी गुठलीके समान अथवा आठमासेभर लेकै भोजनके पहले मध्य आदिक्रमसें प्रयुक्त करै। यह योग भयंकर पक्तिशूल कामला पांडुरोग शोजा मंदाग्नि ववासीर ग्रहणीदोष क्रिमिरोग गुल्म उदररोग अम्लपित्त इन्होंकों नाशताहै और स्थूलपनाकों दूर करताहै। सूखेहुये शाक विदाही खट्टा

और चर्चरा इन्होंकों वर्जित करै। यह मंडूरसंज्ञक गुड शूलसें पीडित हुये मनुष्योंपर कृपा करनेके कारण तारानें कहाहै।

(१४)वशिरं श्वेतवाट्यालं मधुपर्णी मयूरकम्।
तण्डुलीयं च कर्षार्धे दत्त्वाधश्चोर्ध्वमेव च॥४५॥
पाक्यं सुजीर्णं मण्डूरं गोमूत्रेण दिनद्वयम्।
अन्तर्बाष्पमदग्धं च तथा स्थाप्यं दिनत्रयम्॥४६॥
विचूर्ण्य द्विगुणेनैव गुडेन सुविमर्दितम्।
भोजनस्यादिमध्यान्ते भक्ष्यं कर्षं त्रिभागतः॥४७॥
तक्रानुपानं वर्ज्यं च वार्क्षमम्लकमत्र तु।
आम्लपित्ते च शूले च हितमेतद्यथामृतम्॥ ४८॥

(**१४ राममंडूरम्**) चव्य सुपेद खरैंहटी मुलहटी श्वेत ऊंगा चौलाई ये आधा आधा तोला ले नीचे और ऊपर देकै पुराना मंडूर गोमूत्रसें दो दिन पकाना। कांसीका पात्रमें ऐसे पकावै कि दग्ध नहीं होवै। ऐसी विधिसें तीन दिन स्थापित करै। फिर चूर्णकर दुगुना गुडकरकै मर्दित कर भोजनकी आदि मध्य और अंतमें तीन भागसें भक्षण करना। तक्रका अनुपान करना और वृक्षसें उपजा खट्टा रस वर्जित करना आम्लपित्तमें और शूलमें यह हित है जैसे अमृत।

(१५)पथ्याचूर्णं द्विपलं
गन्धकसारं च लोहकिट्टं च।
शुद्धरसस्यार्धपलं
भृङ्गस्य रसं च केशराजस्य॥ ४९॥
प्रस्थोन्मितं च दत्वा
लौहे पात्रेऽथ दण्डसंघृष्टम्।
शुष्कं घृतमधुयुक्तं
मृदितं स्थाप्यं च भाण्डके स्निग्धे॥५०॥
उपयुक्तमेतदचिरा-
न्निहन्ति कफपित्तजान्रोगान्।
शूलं तथाम्लपित्तं
ग्रहणीमपि कामलामुग्राम्॥ ५१॥

(**१५ रसमंडूरम्**) हरडैका चूर्ण और गंधक लोहाका किट्ट ये आठ तोलेभर ले और शुद्ध किया पारा २ तोले भंगराका और काला भंगराका रस चौंसठ तोले देकै लोहाके पात्रमें दंडासें घोंटै। सूखजावे तब घृत और शहदसें युतकर चिकना पात्रमें घाल धरै। उपयुक्त किया यह शीघ्रही कफपित्तज रोगोंकों और शूल अम्लपित्त ग्रहणीरोग और भयंकर कामला इन्होंकों नाशता है।

(१६)अक्षामलकशिवानां
स्वरसैः पक्वं सुलोहजं चूर्णम्।
सगुडं यद्युपभुङ्क्ते
मुञ्चति सद्यस्त्रिदोषजं शूलम्॥ ५२॥

(**१६ त्रिफलालौहः**) बहेडा आंवला हरडै इन्होंके स्वरसोंकरकै सुंदर लोहाके चूर्णकों पकाकै गुडसें युत कर खावै तो त्रिदोषका शूल नष्ट होता है।

(१७)लोहस्य रजसो भागास्त्रिफलायास्तथा त्रयः।
गुडस्याष्टौ तथा भागा गुडान्मूत्रं चतुर्गुणम् ५३
एतत्सर्वं च विपचेद्गुडपाकविधानवित्।
लिहेच्च तद्यथाशक्ति क्षये शूले च पाकजे॥५४॥

(**१७ लोहगुटिका**) लोहाके चूर्ण १ भाग त्रिफला ३ भाग गुड ८ भाग और गुडसें गोमूत्र चौगुना इन सबको गुडके पाकका विधानकी तरह पकावै। पीछे शक्तिके अनुसार क्षयमें और पक्तिशूलमें चाटै।

(१८)धात्रीचूर्णस्याष्टौ
पलानि चत्वारि लोहचूर्णस्य।
यष्टीमधुकरजश्च
द्विपलं दद्यात्सदोपले घृष्टम्॥ ५५॥
अमृताक्काथेनैत-
च्चूर्णं भाव्यं च सप्ताहम्।
चण्डातपेषु शुष्कं
भूयः पिष्ट्वा नवे घटे स्थाप्यम्॥ ५६॥
घृतमधुना सह युक्तं
भुक्त्वादौ मध्यतस्तथान्ते च।
त्रीनपि वारान्खादे-
त्पथ्यं दोषानुबन्धेन॥ ५७॥
भक्तस्यादौ नाशयति
व्याधीन्पित्तानिलोद्भवान्सद्यः।
मध्येऽन्नविष्टम्भं
जयति नृणां संविदह्यते नान्नम्॥ ५८॥
पानान्नकृतान्रोगा-
न्भुक्त्यन्ते शीलितं जयति।

एवं जीर्यति चान्ने
निहन्ति शूलं नृणां सुकष्टमपि ॥ ५९ ॥
हरति सहसा युक्तो
योगश्चायं जरत्पित्तम् ।
चक्षुष्यः पलितघ्नः
कफपित्तसमुद्भवाञ्जयेद्रोगान् ॥ ६० ॥
प्रसादयत्यपि रक्तं
पाण्डुत्वं कामलां जयति ।

(१८ धात्रीलौहम्) आंवलाका चूर्ण ३२ तोले लोहाका चूर्ण १६ तोले मुलहटी ८ तोलेभरकों पत्थरपर कूट इनोंका चूर्ण कर सात दिन गिलोयका क्काथमें भावना देकै उग्र घाममें सुखाय फिर पीस नया घटमें स्थापित करना । घृत और शहदके साथ युत कर भोजनके आदि मध्य और अंतमें तीनवार खावै और दोषका अनुबंधके अनुसार पथ्य करै । भोजनकी आदिमें पित्तवातसें उपजे रोगोंकों नाशता और भोजनके मध्यमें मनुष्योंके अन्नके विष्टंभकों जीतताहै । और अन्न विदग्ध नहीं होताहै । भोजनके अंतमें ग्रहण किया पान और अन्न इनोंसें उपजे रोगोंकों नाशताहै । ऐसे अन्न जीर्ण होजावै तब मनुष्योंके कष्टरूप शूलकों और जरत्पित्तकों यह योगबलसें नाशता है नेत्रोंमें हित है वालोंके सुपेदपनेकों नाशता है और कफपित्तसें उपजे रोगोंकों नाशता है और रक्तकों स्वच्छ करताहै । पांडुरोगकों और कामलाकों जीतता है ।

(१९)तनूनि लोहपत्राणि तिलोत्सेधसमानि च
कशिकामूलकल्केन संलिप्य सर्षपेण वा ।
विशोष्य सूर्यकिरणैः पुनरेवावलेपयेत् ॥ ६२ ॥
त्रिफलाया जले ध्मातं वापयेच्च पुनः पुनः ।
ततः संचूर्णितं कृत्वा कर्पटेन तु छानयेत् ॥६३॥
भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यां यथाग्न्येतत्प्रयोगतः ।
मापकं त्रिगुणं वाथ चतुर्गुणमथापि वा ॥ ६४ ॥
छागस्य पयसः कुर्यादनुपानमभावतः ।
गवां घृतेन दुग्धेन चतुःषष्टिगुणेन च ॥ ६५ ॥
पक्तिशूलं निहन्त्येतन्मासेनैकेन निश्चितम् ।
लोहामृतमिदं श्रेष्ठं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ६६ ॥
ककारपूर्वकं यच्च यच्चाम्लं परिकीर्तितम् ।
सेव्यं तन्न भवेदत्र मांसं चानूपसम्भवम् ॥६७॥

(१९ लोहामृतम्) तिलोंके समान लोहाके पत्तोंकों कशिकामूलसें अथवा सरसोंके कल्कसें लेप कर और सूर्यके किरणोंसें सुखाकै फिर लेप कर अग्निमें तपाकै त्रिफलाके क्काथमें वारंवार भिगोवै। पीछे चूर्ण कर कपडा मांहकै छानै पीछे घृत और शहदके संग जठराग्निके अनुसार इस प्रयोगसें भक्षण करै । एक मासाभर अथवा दो मासेभर अथवा चार मासेभर औषधकों खाकै ऊपर बकरीके दूधका अनुपान करै । चौंसठगुण गायका घृत और दूधकरकै एकमहीनामें पक्तिशूलकों निश्चय नाशताहै । यह लोहामृत श्रेष्ठ है । पहले ब्रह्माजीनें रचाहै । ककार है आदि जिसके ऐसे पदार्थ और जो खट्टा कहा हो वह और अनूपदेशका मांस ये यहां नहीं सेवित करने ।

(२०)स्विन्नपीडितकूष्माण्डात्तुलार्धं मृष्टमाज्यतः
प्रस्थार्धे खण्डतुल्यं तु पचेदामलकीरसात्॥६८॥
प्रस्थे सुस्विन्नकूष्माण्डरसप्रस्थे विघट्टयन् ।
दर्व्या पाकं गते तस्मिंश्चूर्णीकृत्य विनिक्षिपेत् ६९
द्वे द्वे पले कणाजाजीशुण्ठीनां मरिचस्य च ।
पलं तालीसधन्याकचातुर्जातकमुस्तकम् ॥ ७० ॥
कर्षप्रमाणं प्रत्येकं प्रस्थार्धं माक्षिकस्य च ।
पक्तिशूलं निहन्त्येतद्दोषत्रयभवं च यत् ॥ ७१ ॥
छर्द्यम्लपित्तमूर्च्छांश्च श्वासकासावरोचकम् ।
हृच्छलं रक्तपित्तं च पृष्ठशूलं च नाशयेत् ।
रसायनमिदं श्रेष्ठं खण्डामलकसंज्ञितम् ॥ ७२ ॥

(२० खंडामलकी) सिजाया हुआ और पीडित किया कोहलाको २०० तोलेभर ले घृत ६४ तोलेभर ले उसमें भून खांड और आंवलाका रस बत्तीस बत्तीस तोलेभर ले पूर्वोक्तमें डाल कडछीसें चलाकै घोटै। जब पाककों प्राप्त हो तब उसमें वक्ष्यमाण औषधोंका चूर्ण कर मिलावै । पीपल जीरा सोंठ आठ आठ तोले मिरच ४ तोले और तालीसपत्र धनियां दालचिनी इलायची तेजपात नागकेसर नागरमोथा ये सब एक एक तोला और शहद ६४ तोले यह तीन दोषोंसें उपजे पक्तिशूलकों नाशताहै । और छर्दि अम्लपित्त पृष्ठशूल इन्होंकों नाशताहै । यह खंडामलकसंज्ञक रसायन है ।

(२१)कुडवमितमिह स्यान्नारिकेलं सुपिष्टं
पलपरिमितसर्पिःपाचितं खण्डतुल्यम् ।

निजपयसि तदेतत्प्रस्थमात्रे विपक्वं
गुडवदथ सुशीते शाणभागान्क्षिपेच्च ॥ ७३ ॥
धन्याकपिप्पलिपयोदतुगाद्विजीरा-
ञ्शाणं त्रिजातमिभकेशरवह्निचूर्ण्य ।
हन्त्यम्लपित्तमरुचिं क्षयमस्रपित्तं
शूलं वमिं सकलपौरुषकारि हारि ॥ ७४ ॥

(२१ नारिकेलखंडः) अच्छीतरह पिष्ट किया नारियल १६ तोलेभर लेके चार तोलेभर घृत और १६ तोलेभर खांड और ६४ तोलेभर गौका दूध डाल पकावै। पीछे शीतल होनेमें चार चार मासेभर धनियां पीपल नागरमोथा वंशलोचन दोनों जीरे दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर इन्होंका चूर्ण कर खावै तो अम्लपित्त अरुचि क्षयरोग रक्तपित्त शूल छर्दि इन्होंकों नाशताहै और संपूर्ण पौरुषोंकों करताहै ।

(२२)कलायचूर्णभागौ द्वौ लोहचूर्णस्य चापरः ।
कारवेल्लपलाशानां रसेनैव विमर्दितः ॥ ७५ ॥
कर्षमात्रां ततश्चैकां भक्षयेद्गुटिकां नरः ।
मण्डानुपानात्सा हन्ति जरत्पित्तं सुदारुणम् ७६
लिह्याद्वा त्रैफलं चूर्णमयश्चूर्णसमन्वितम् ।
यष्टीचूर्णेन वा युक्तं लिह्यात्क्षौद्रेण तद्वदे ॥ ७७ ॥
पित्तान्तं वमनं कृत्वा कफान्तं च विरेचनम् ।
अन्नद्रवे च तत्कार्यं जरत्पित्ते यदीरितम् ॥ ७८ ॥
आमपक्वाशये शुद्धे गच्छेदन्नद्रवः शमम् ।
मापेण्डरी? सतुपिका स्विन्ना सर्पिर्युता हिता७९
गोधूममण्डकं तत्र सर्पिषा गुडसंयुतम् ।
ससितं शीतदुग्धेन मृदितं वा हितं मतम् ॥८०॥
शालितण्डुलमण्डं वा कवोष्णं सिक्थवर्जितम् ।
वाट्यं क्षीरेण संसिद्धं घृतपूरं सशर्करम् ॥ ८१ ॥
शर्करां भक्षयित्वा वा क्षीरमुत्कथितं पिबेत् ।
पटोलपत्रयूपेण खादेच्चणकशक्तुकान् ॥ ८२ ॥
अन्नद्रवे जरत्पित्ते वह्निर्मन्दो भवेद्यतः ।
तस्मादत्रान्नपानानि मात्राहीनानि कल्पयेत्॥८३॥

इति परिणामशूलचिकित्सा ।

(२२ कलायचूर्णादि) मटरका चून २ भाग लोहाका चूर्ण १ भाग इन्होंकों करेला और पलाशके रससें मर्दित कर एक एक तोलाकी गोलियां बनाय उन्होंमाहसें एक गोली रोज खावै और मंडका अनुपान करनेसें भयंकर जरत्पित्तकों नाशती है । अथवा त्रिफलाके चूर्णमें लोहाका चूर्ण डाल खावै अथवा मुलहटीके चूर्णमें शहद डाल जरत्पित्तमें चाटै । पित्तपर्यंत वमन और कफपर्यंत विरेचन करना जो जरत्पित्तमें कहा है वह अन्नद्रवमें करना । अमाशय और पक्वाशय जब शुद्ध होजावै तब अन्नद्रव शांत हो जाताहै । तुष और घृतसहित सिजाई हुई माषेंडरी हित है । तहां गेहूंका मंडा घृत और गुडसें युतकर अथवा मिश्रीसहित शीतल दूधसें मर्दितकर लेना हित है । अथवा किणकोंसें वर्जित शालिचावलोंका मंड कछुक गरमरूप हित है अथवा दूधमें सिद्धकरी वाट्य अथवा खांडसहित घेवर हित है । अथवा खांड खाकै ऊपर क्वथित किया दूध पीना अथवा परवलके पत्तोंके यूषसें चनोंके सत्तूकों खावै अन्नद्रवमें और जरत्पित्तमें जिस कारणसें मंद अग्नि होताहै उस कारणसें अन्न और पान मात्रासें हीन किये कल्पित करने ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनुपंडितरविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां परिणामशूलचिकित्सा ।

अथोदावर्ताधिकारः २८

अब उदावर्तका अधिकार कहतेहै ।

(१)त्रिवृत्सुधापत्रतिलादिशाक-
ग्राम्यौदकानूपरसैर्यवान्नम् ।
अन्यैश्च मृष्टानिलमूत्रविड्भि-
र्यात्प्रसन्नागुडसीधुपायी ॥ १ ॥
आस्थापनं मारुतजे स्निग्धस्विन्नस्य शस्यते ।
पुरीषजे तु कर्तव्यो विधिरानाहिकश्च यः ॥ २ ॥
क्षारवैतरणौ वस्ती युञ्ज्यात्तत्र चिकित्सकः ।
श्यामादन्तीद्रवन्तीत्वङ्महाश्यामास्नुहीत्रिवृत् ३
सप्तला शङ्खिनी श्वेता राजवृक्षः सतिल्वकः ।
कम्पिल्लकं करञ्जश्च हेमक्षीरीत्ययं गणः ॥ ४ ॥
सर्पिस्तैलरजःक्वाथकल्केष्वन्यतमेषु च ।
उदावर्तोदरानाहविषगुल्मविनाशनः ॥ ५ ॥
त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्यो द्विचतुःपञ्चभागिकाः ।
गुडिका गुडतुल्यास्ता विड्विबन्धगदापहाः ॥६॥
हरीतकीयवक्षारपीलूनि त्रिवृता तथा ।
घृतैश्चूर्णमिदं पेयमुदावर्तविनाशनम् ॥ ७ ॥

हिङ्गुकुष्ठवचासर्जिविडं चेति द्विरुत्तरम् ।
पीतं मद्येन तच्चूर्णमुदावर्तहरं परम् ॥ ८ ॥
खण्डपलं त्रिवृता सम-
मुपकुल्याकर्षचूर्णितं श्लक्ष्णम् ।
प्राग्भोजने च समधु
बिडालपदकं लिहेत्प्राज्ञः ॥ ९ ॥
एतद्गाढपुरीषे
पित्ते सकफे च विनियोज्यम् ।
स्वादुर्नृपयोग्योऽयं
चूर्णो नाराचको नाम्ना ॥ १० ॥

(१ नाराचचूर्णम्) निशोत थोहरका दूध तेजपात तिलआदि शाक गामका पानी अनूपदेशके मांसका रस इन्होंसें जवोंकों और अधोवात विष्ठा मूत्र इन्होंकों रचनेवाले पदार्थोंकेसंग प्रसन्ना गुड सीधु इन्होंकों पीवै । वातके उदावर्तमें स्निग्ध और स्वेदित कियाकों आस्थापन बस्ति देना श्रेष्ठ है । विष्ठासें उपजे उदावर्तमें आनाहकी विधि करनी योग्य है। तहां वैद्य खार वैतरणरूप बस्तियोंकों युत करै । काली निशोत जमालगोटाकी जड द्रवंतीकी छाल इंद्रायण थोहर निशोत सातला शंखिनी गोकर्णी अमलतास लोध कपिला करंजुवा चोख यह गण घृत तेल चूर्ण क्काथ और कल्क इन्होंमांहसें एककोईसाके संग लियाजावै तो उदावर्त उदररोग अफारा विष गुल्म इन्होंकों नाशताहै । निशोत २ भाग पीपल ४ भाग हरडै ५ भाग इन्होंमें बराबर भाग गुड मिलाय गोलियां बनावै ये गोली विष्ठाका बंधारूपी रोगकों नाशती है । हरडै जवाखार पीलू निशोत इन्होंका चूर्ण बनाय घृतके संग पीवै तो उदावर्तकों नाशता है । हींग कूट वच साजी मनयारीनमक ये उत्तरोत्तर क्रमसें दुगुने लेकै इन्होंका चूर्ण बनाय मदिराकेसंग पीवै तो उदावर्तकों हरताहै। चार तोलेभर खांडमें निशोत और पीपलका एक तोलाभर चूर्ण मिलाय प्रभातके भोजनसें पहले शहद मिलाकै एक तोलाभर चाटै करडी विष्ठामें पित्तमें और कफमें युक्त करना सुंदर स्वादु है राजाओंके योग्य है। यह नाराचनामवाला चूर्ण है ।

(२)रसोनं मद्यसंमिश्रं पिबेत्प्रातः प्रकाङ्क्षितः ।
गुल्मोदावर्तशूलघ्नं दीपनं बलवर्धनम् ॥ ११ ॥
हिङ्गुमाक्षिकसिन्धूत्थैः पक्त्वा वर्तिं सुनिर्मिताम् ।
घृताभ्यक्तां गुदे दद्यादुदावर्तविनाशिनीम् ॥ १२ ॥
मदनं पिप्पली कुष्ठं वचा गौराश्च सर्षपाः ।
गुडक्षारसमायुक्ताः फलवर्तिः प्रशस्यते ॥ १३ ॥
अगारधूमसिन्धूत्थतैलयुक्ताम्लमूलकम् ।
क्षुण्णं निर्गुण्डिपत्रं वा स्विन्ने पायौ क्षिपेद्बुधः १४
सौवर्चलाढ्यां मदिरां मूत्रे त्वभिहते पिबेत् ।
एलां वाप्यथ मद्येन क्षीरं वारि पिबेच्च सः ॥१५॥
दुःस्पर्शास्वरसं वापि कषायं ककुभस्य च ।
एर्वारुबीजं तोयेन पिबेद्वा लवणीकृतम् ॥ १६ ॥
पञ्चमूलीश्टतं क्षीरं द्राक्षारसमथापि वा ।
सर्वथैवोपयुञ्जीत मूत्रकृच्छ्राश्मरीविधिम् ॥१७॥
स्नेहस्वेदैरुदावर्तं जृम्भजं समुपाचरेत् ।
अश्रुमोक्षोऽश्रुजे कार्यः स्वप्नो मद्यं प्रियाः कथाः१८
क्षवजे क्षरपत्रेण घ्राणस्थेनानयेत्क्षवम् ।
तथोर्ध्वजत्रुकोऽभ्यङ्गः स्वेदो धूमः सनावनः १९
हितं वातघ्नमद्यं च घृतं चोत्तरभक्तिकम् ।
उद्गारजे क्रमोपेतं स्नैहिकं धूममाचरेत् ॥ २० ॥
छर्द्याघातं यथादोषं नस्यस्नेहादिभिर्जयेत् ।
भुक्त्वा प्रच्छर्दनं धूमो लङ्घनं रक्तमोक्षणम्॥२१॥
रुक्षान्नपाने व्यायामो विरेकश्चात्र शस्यते ।
वस्तिशुद्धिकरावापं चतुर्गुणजलं पयः ॥ २२ ॥
आवारिनाशात्क्वथितं पीतवन्तं प्रकामतः ।
रमयेयुः प्रिया नार्यः शुक्रोदावर्तिनं नरम् ॥२३॥
अत्राभ्यङ्गावगाहाश्च मदिराश्चरणायुधाः ।
शालिः पयोनिरूहाश्च शस्तं मैथुनमेव च ॥ २४ ॥
क्षुद्विघाते हितं स्निग्धमुष्णमल्पं च भोजनम् ।
तृष्णाघाते पिबेन्मन्थं यवागूं वापि शीतलाम् २५
रसेनाद्यात्सुविश्रान्तः श्रमश्वासातुरो नरः ।
निद्राघाते पिबेत्क्षीरं स्वप्नः संवाहनानि च ।
उदावर्तक्रियानाहे सामे लङ्घनपाचनम् ॥ २६ ॥

(२ मदिरादिप्रयोगाः) ह्शनकों मदिरामें मिलाय प्रभातमें आकांक्षावाला मनुष्य पीवै तो गुल्म उदावर्त शूल इन्होंकों नाशताहै दीपन है बलकों बढाता है । हींग शहद सेंधानमक इन्होंकी बत्ती बनाय और पकाय घृतसें चुपड गुदामें देवै । यह उदावर्तकों नाशती है । मैनफल पीपल कूट वच सुपेद सरसों गुड जवाखार इन्होंसहित

फलवर्ति श्रेष्ठ होती है । मकानका धूमा सेंधानमक तेल खट्टारस इन्होंसें युतकरी मूली अथवा छीलाहुआ संभालूका पत्ताकों स्वेदित करके गुदामें वैद्य प्राप्त करै । मूत्रकों नहीं आनेमें कालानमकसें युत करी मदिराकों पीवै अथवा इलायचीकों मदिराकेसंग अथवा पानीसहित दूधकों पीवै अथवा जवासाके स्वरसकों अथवा कौहवृक्षके क्काथकों अथवा खर्बूजाके बीजोंकों पानीकेसंग सेंधानमकयुत करकै पीवै । पंचमूलमें पकाया दूध अथवा दाखका रस अथवा मूत्रकृच्छ्र और पथरीकी विधिकों सब प्रकारसें उपयुक्त करै । जंभाईसें उपजे उदावर्तमें स्नेह और स्वेदोंकरकै उपाचरित करै । अश्रुसें उपजे उदावर्तमें आंशुओंका निकालना करना । सोना मदिराका पीना प्यारी कथा ये हित है । छींकसें उपजे उदावर्तमें गोकंदके पत्तेकों नाकमें देकै छींक लेवै तथा ऊपरला जोतामें अभ्यंग पसीना धूमा और नस्य ये लेने हित हैं । वातकों नाशनेवाली मदिरा और उत्तरभक्तिक घृत हित है । उद्गार अर्थात् ढकारसें उपजे उदावर्तमें क्रमके अनुसार स्नैहिक धूमा लेना हित है । छर्दिके आघातकों जैसा दोष हो उसके अनुसार नस्य और स्नेह आदिसें उपाचरित करै । भोजन करकै छर्दि करना धूमा लंघन रक्तका निकासना रूक्ष अन्न और पान करसत और जुलाब ये सब यहां श्रेष्ठ हैं। बस्तिकों शुद्धि करनेवाला चौगुना पानीमें दूध मिलाय जबतक पानी जलै तबतक क्कथित करै उस क्काथकों पीता हुआ पुरुषकों इच्छासें प्यारी स्त्रियें रमण करै तब वीर्यज उदावर्त नष्ट होताहै । इसमें अभ्यंग अवगाहन मदिरा मुर्गाका मांस शालिचावल दूध निरूहबस्ति और मैथुन ये सब श्रेष्ठ हैं । भूखके विघातमें चिकना गरम और अल्प ऐसा भोजन हित है । तृषाके आघातमें मंथकों अथवा शीतलरूप यवागूकों पीवै । श्रमके श्वाससें पीडित हुआ मनुष्य अच्छीतरह विश्रांत होकर मांसका रसकेसाथ खावै । नींदके आघातमें दूधकों पीवै शयन करना और पैरोंका दबाना ये हित है । आनाहरोगमें उदावर्तकी क्रिया करनी और आमसहित आनाहमें लंघन और पाचन हित है ।

(३)द्विरुत्तरा हिङ्गु वचा सकुष्ठा
सुवर्चिका चेति विडङ्गचूर्णम् ।
सुखाम्बुनानाहविषूचिकार्ति-
हृद्रोगगुल्मोर्ध्वसमीरणघ्नम् ॥ २७ ॥

वचाभयाचित्रकयावशूकान्
सपिप्पलीकातिविषान्सकुष्ठान् ।
उष्णाम्बुनानाहविमूढवातान्
पीत्वा जयेदाशु हितौदनाशी ॥ २८ ॥
त्रिवृद्धरीतकीश्यामाः स्नुहीक्षीरेण भावयेत् ।
वटिका मूत्रपीतास्ताः श्रेष्ठाश्चानाहभेदिकाः २९
फलं च मूलं च विरेचनोक्तं
हिङ्ग्वर्कमूलं दशमूलमग्र्यम् ।
स्नुक्चित्रकौ चैव पुनर्नवा च
तुल्यानि सर्वैर्लवणानि पञ्च ॥ ३० ॥
स्नेहैः समूत्रैः सह जर्जराणि
शरावसन्धौ विपचेत्सुलिप्ते ।
पक्वं सुपिष्टं लवणं तदन्नैः
पानैस्तथानाहरुजाघ्नमग्र्यम् ॥ ३१ ॥
वाठधूमविडव्योषगुडमूत्रैर्विपाचिता ।
गुदेऽङ्गुष्ठसमा वर्तिर्विधेयानाहशूलनुत् ॥३२॥
वर्तिस्त्रिकटुकसैन्धव-
सर्षपगृहधूमकुष्ठमदनफलैः ।
मधुनि गुडे वा पक्त्वा
पायावङ्गुष्ठमानतो वेश्य ॥ ३३ ॥
वर्तिरियं दृष्टफला
गुदे शनैः प्रणिहिता घृताभ्यक्ता ।
आनाहोदावर्त-
प्रशमनी जठरगुल्मनिवारिणी ॥ ३४ ॥

(**३ हिंग्वादिवटिका**) हींग १ भाग वच २ भाग कूट ३ भाग साची ४ भाग वायविडंग ५ भाग इन्होंका चूर्ण बनाय सुखपूर्वक गरम किया पानीके संग पीवै तो आनाह विषूचिका हृद्रोग गुल्म ऊर्ध्ववात इन्होंकों नाशता है । वच हरडै चीता जवाखार पीपल अतीश कूट इन्होंके चूर्णकों गरम पानीकेसंग पीवै तो अफारा मूढवात इन्होंकों शीघ्र जीतताहै । परंतु सुंदर चावलोंकों खाता रहै । निशोत हरडै कालीनिशोत इन्होंकों थोहरके दूधसें भिगोवै पीछे गोलियां बनाय गोमूत्रकेसंग पीवै ये गोलियां श्रेष्ठ हैं और अफाराकों भेदित करती हैं । विरेचनमें कहा फल और मूल हींग आकका मूल अर्थात् जड सुंदर दशमूल थोहर चीता सांठी ये सब बराबर लेने और इन सबके तुल्य पांचोंनमक इन्होंके चूर्णकों स्नेह और

गोमूत्रसें जर्जरितकर सकोरामें घाल उसकी संधियोंकों लीप पकावै पकनेउपरंत पीस उसमें सेंधानमक मिलाय अन्न और पानकेसाथ अफाराकों नाशता है और श्रेष्ठ है। पौहकरमूल घरका धूमा मनयारीनमक सोंठ मिरच पीपल गुड और गोमूत्र इन्होंकी वत्ती अंगूठाप्रमाण बनाकै पकाय गुदामें चढावै यह अफारा और शूलकों नाशतीहै। सोंठ मिरच पीपल सेंधानमक सरसों घरका धूमा कूट मैनफल इन्होंकी अंगूठाप्रमाण बत्ती शहदमें बनाकै गुडमें पकाय गुदामें चढावै। घृतसें चुपडी हुई यह वत्ती गुदामें हौलें हौलें चढाई जावै तो फलकों दिखाती है और अफारा उदावर्तकों नाशतीहै। और पेटके गुल्मकों दूर करतीहै।

(४)मूलकं शुष्कमार्द्रं च वर्षाभू पञ्चमूलकम्।
आरेवतफलं चापि पिष्ट्वा तेन पचेद्घृतम्।
तत्पीयमानं शमयेदुदावर्तमसंशयम्॥ ३५॥

(**४ शुष्कमूलाद्यं घृतम्**) सूखी और ओलीमूली सांठी पंचमूल अमलतास इन्होंकों पीसकर उसमें घृतकों पकावै वह पान किया घृत उदावर्तकों शांत करताहै। इसमें संशय नहीं।

(५)स्थिरादिवर्गस्य पुनर्नवायाः
सम्पाकपूतीककरञ्जयोश्च।
सिद्धः कषाये द्विपलांशिकानां
प्रस्थो घृतात्स्यात्प्रतिरुद्धवाते॥ ३६॥

इति उदावर्तचिकित्सा।

(**५ स्थिराद्यं घृतम्**) स्थिरादि गण सांठी अमलतास करंजुवा ये सब आठ आठ तोलेभर ले क्काथ बनाय उसमें ६४ तोलेभर घृत सिद्ध करना। यह प्रतिरुद्धवातमें हित है।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनुपंडितरविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां उदावर्तचिकित्सा।

अथ गुल्माधिकारः २९

अब गुल्मका अधिकार कहतेहै।

(१)लघ्वन्नं दीपनं स्निग्धमुष्णं वातानुलोमनम्।
बृंहणं यद्भवेत्सर्वं तद्धितं सर्वगुल्मिनाम्॥१॥
स्निग्धस्य भिषजा स्वेदः कर्तव्यो गुल्मशान्तये।
स्रोतसां मार्दवं कृत्वा जित्वा मारुतमुल्बणम् २
भित्वा विबद्धं स्निग्धस्य स्वेदो गुल्ममपोहति।
कुम्भीपिण्डेष्टकास्वेदान्कारयेत्कुशलो भिषक् ३
उपानाहाश्च कर्तव्याः सुखोष्णाः शाल्वणादयः।
स्थानावसेको रक्तस्य बाहुमध्ये शिराव्यधः॥४॥
स्वेदानुलोमनं चैव प्रशस्तं सर्वगुल्मिनाम्।
पेया वातहरैः सिद्धाः कौलत्था धन्वजा रसाः ५
खंडाः सपञ्चमूलाश्च गुल्मिनां भोजने हिताः।

(**१ गुल्मिनां भोजनप्रकारः**) हलका अन्न दीपन चिकना गरम वातअनुलोमन करनेवाला और जो बृंहणरूप हो वह संपूर्ण सब प्रकारके गुल्मवालोंकों हित है। गुल्मकी शांतिके अर्थ स्निग्धकिया मनुष्यके वैद्यनें स्वेदकर्म करना वह स्वेद स्रोतोंकी कोमलताकरकै और बढाहुआ वातकों जीतकर और स्निग्ध हुआके बंधाकों काटकर गुल्मकों नाशताहै। वोतल व घट्ट गोला इंट इन्होंसें स्वेदकों कुशल वैद्य करावै। उपनाह स्वेद और सुखपूर्वक गरम शाल्वण आदि स्वेद रक्तसें स्नान और अवसेक करना और बाहुके मध्यमें शिराकों वींधना। सब प्रकारके गुल्मवालोंकों स्वेद और अनुलोमन करना श्रेष्ठ है और वातकों हरनेवाले द्रव्योंसें सिद्ध करी पेया और कुलथीका रस तथा जवासाका रस पीना योग्य है। और पंचमूलसें बने खंड गुल्मवालोंके भोजनमें हित हैं।

(२)मातुलुङ्गरसो हिङ्गु दाडिमं विडसैन्धवम्॥६॥
सुरामण्डेन पातव्यं वातगुल्मरुजापहम्।
नागरार्धपलं पिष्टं द्वे पले लुञ्चितस्य च॥ ७॥
तिलस्यैकं गुडपलं क्षीरेणोष्णेन पाययेत्।
वातगुल्ममुदावर्तं योनिशूलं च नाशयेत्॥ ८॥
पिबेदेरण्डतैलं वा वारुणीमण्डमिश्रितम्।
तदेव तैलं पयसा वातगुल्मी पिबेन्नरः॥ ९॥
साधयेच्छुद्धशुष्कस्य लशुनस्य चतुःपलम्।
क्षीरोदकेऽष्टगुणिते क्षीरशेषं च पाययेत्॥ १०॥
वातगुल्ममुदावर्तं गृध्रसीं विषमज्वरम्।
हृद्रोगं विद्रधिं शोषं शमयत्याशु तत्पयः॥११॥
एवं तु साधिते क्षीरे स्तोकमप्यत्र दीयते।
सर्जिकाकुष्ठसहितः क्षारः केतकिजोऽपि वा॥१२
तैलेन पीतः शमयेद्गुल्मं पवनसम्भवम्।

(२ अन्ये प्रकाराः) बिजोराका रस हींग अनार मनयारीनमक सेंधानमक इन्होंकों मदिराका मंडके संग पीवै यह वातके गुल्मकी पीडाकों हरताहै । सोंठ २ तोले गेहूंका चून ८ तोले तिल ४ तोले और गुड ४ तोले इन्होंकों गरम दूधके संग पान करावै । वातगुल्म उदावर्त और योनिशूल इन्होंकों नाशताहै । अथवा वारुणी मदिराके मंडसें मिश्रित कर अथवा दूधसें मिला अरंडीके तेलकों वातके गुल्मवाला मनुष्य पीवै । शोधित और सुखायाहुआ ह्शन १६ तोले भर ले आठगुण दूध पानीमें पकावै जब दूधमात्र शेष रहै तब पान करावै । वातगुल्म उदावर्त गृध्रसी विषमज्वर हृद्रोग विद्रधि शोष इन्होंकों वह दूध शांत करताहै । ऐसे प्रकार साधितकिये दूधमें साजी कूट और जवाखार अथवा केतकीका खार कछुक डालना । अरंडीका तेलके साथ पान किया वह दूध वातके गुल्मकों नाशताहै ।

(३)वातगुल्मे कफे वृद्धे वान्तिश्चूर्णादिरिष्यते॥१३
पैत्ते तु रेचनं स्निग्धं रक्ते रक्तस्य मोक्षणम् ।
स्निग्धोष्णेनोदिते गुल्मे पैत्तिके स्रंसनं हितम् १४
रूक्षोष्णेन तु सम्भूते सर्पिः प्रशमनं परम् ।
काकोल्यादिमहातिक्तवासाद्यैः पित्तगुल्मिनम्१५
स्नेहितं स्रंसयेत्पश्चाद्योजयेद्बस्तिकर्मणा ।
स्निग्धोष्णजे पित्तगुल्मे कम्पिल्लं मधुना लिहेत् १६
रेचनार्थी रसं वापि द्राक्षायाः सगुडं पिवेत् ।
दाहशूलाऽनिलक्षोभस्वप्ननाशारुचिज्वरैः ॥१७॥
विदह्यमानं जानीयाद्गुल्मं तमुपनाहयेत् ।
पक्के तु व्रणवत्कार्यं व्यधशोधनरोपणम् ॥ १८ ॥
स्वयमूर्ध्वमधो वापि स चेद्दोषः प्रपद्यते ।
द्वादशाहमुपेक्षेत रक्षन्नन्यानुपद्रवान् ॥ १९ ॥
परं तु शोचनं सर्पिः शुद्धं समधुतिक्तकम् ।
रोहिणी कटुका निम्बं मधुकं त्रिफलात्वचः॥२०॥
कर्षांशास्त्रायमाणा च पटोलत्रिवृतापले ।
द्विपलं च मसूराणां साध्यमष्टगुणेऽम्भसि॥२१॥
घृताच्छेषं घृतसमं सर्पिषश्च चतुःपलम् ।
पिवेत्संमूर्च्छितं तेन गुल्मः शाम्यति पैत्तिकः॥२२
ज्वरस्तृष्णा च शूलं च भ्रममूर्च्छारतिस्तथा ।
दीप्ताग्नयो महाकायाः स्नेहसात्म्याश्च ये नराः२३
गुल्मिनः सर्पदष्टाश्च विसर्पोपहताश्च ये ।
ज्येष्ठां मात्रां पिवेयुस्ते पलान्यष्टौ विशेषतः ॥ २४ ॥

(३ वातगुल्मोपायाः) वातके गुल्ममें कफकी वृद्धिमें वमन और चूरण आदि वांछित है । पित्तके गुल्ममें स्निग्धरूपी विरेचन योग्य है । रक्तके गुल्ममें रक्तका निकासना हित है। स्निग्धरूप गरम करकै उदित किये पित्तके गुल्ममें स्रंसन करना हित है। रूक्षरूप गरमसें उपजे गुल्ममें घृत शांतिकारक कहाहै । काकोल्यादिगण और बकायण और वासाआदि गणके ओषधोंसें पित्तगुल्मवालाकों स्नेहितकर स्रंसन करै पीछे बस्तिकर्मसें योजितकरै । स्निग्ध उष्णसें उपजे पित्तगुल्ममें कपिला ओषधकों शहदके साथ चाटै अथवा रेचनकी इच्छावाला दाखके रसमें गुड डाल पीवै। दाह शूल वातका क्षोभ स्वप्नका नाश अरुचि और ज्वर इन्होंकरकै विदह्यमान हुआकों जान गुल्मकों उपनाह स्वेदसें युत करै । पकेहुये गुल्ममें घावकी तरह बींधना शोधन और अंकुर लाना करना जो आपही ऊपर और नीचै वह दोष प्राप्त हो तो अन्य उपद्रवोंकी रक्षा करताहुआ बारह दिनपर्यंत वाट देखै परंतु शोधन करनेवाला घृत देना और शुद्ध होनेपीछे चिरायता और घृतकों देवै । कुटकी नींब महुवा त्रिफलाकी छाल त्रायमाण ये सब एक एक तोले परवल और निशोत चार चार तोले मसूर आठ तोले इन्होंकों आठगुना पानीमें पकावै परंतु सोलह तोलेभर घृत मिलाय सिद्ध करै। जब घृतमात्र शेष रहै तब पीवै उसकरकै पित्तका गुल्म शांत होताहै। और ज्वर तृषा शूल भ्रम मूर्च्छा ग्लानि ये शांत होतेहैं । दीप्त जठराग्निवाले बडा शरीरवाले स्नेहकी प्रकृतिवाले ऐसे मनुष्य गुल्मवाले सर्पसें डसेहुये और विसर्पसें हतहुये वे सब बडी मात्राकों पीवै । विशेषकरकै बत्तीश तोलेभर पीवै ।

(४)लङ्घनोल्लेखने स्वेदे कृतेऽग्नौ संप्रधुक्षिते ।
घृतं सक्षारकटुकं पातव्यं कफगुल्मिना ॥ २५ ॥
मन्दोऽग्निर्वेदना मन्दा गुरुस्तिमितकोष्ठता ।
सोत्क्लेशा चारुचिर्यस्य स गुल्मो वमनोपमः ॥२६॥
मन्देऽग्नावनिले मूढे ज्ञात्वा सस्नेहमाशयम् ।
गुडिकाश्चूर्णनिर्यूहाः प्रयोज्याः कफगुल्मिनाम् २७
क्षाराऽरिष्टगणश्चापि दाहशोपे विधीयते ।
पञ्चमूलीकृतं तोयं पुराणं वारुणीरसम् ॥ २८ ॥

कफगुल्मी पिबेत्काले जीर्णं माध्वीकमेव वा ।
तिलैरण्डातसीबीजसर्षपैः परिलिप्य वा ॥ २९ ॥
श्लेष्मगुल्ममयःपात्रैः सुखोष्णैः स्वेदयेद्भिषक् ।
यमानीचूर्णितं तक्रं विडेन लवणीकृतम् ॥ ३० ॥
पिबेत्सन्दीपनं वातमूत्रवर्चोऽनुलोमनम् ।
व्यामिश्रदोषे व्यामिश्रः सर्व एव क्रियाक्रमः॥३१॥

(४ कफगुल्मे घृतादि) लंघनमें उल्लेखन और स्वेदकर्म करना । कफका गुल्मवालानें जवाखार और कुटकीसें युत किया घृत पान करना । जिसका मंद अग्नि हो अल्पपीडा हो भारी और गीलाकोष्ठ रहै और ग्लानिसहित रुचि उपजै उस गुल्मीकों वमन कराना । मंद अग्नि और वायु मूढ होनेमें स्नेहसहित आशयकों जानकर कफगुल्मियोंकेवास्तै गोली चूर्ण और क्वाथ युक्त करने । दाहशोपमें खार अरिष्ट इन्होंका गण युक्त करना । पंचमूलका क्वाथ और पुराणा वारुणीका रस अथवा पुरानी माध्वीक मदिराकों कफगुल्मी पीवै । तिल अरंड अलसीके बीज सरसों इन्होंसें लोहाके पात्रोंकों लीपकर पीछे सुखपूर्वक गरम कर कफके गुल्मपर वैद्य स्वेदकर्म करै । अजमानका चूर्ण तक्र मनयारीनमक इन्होंकों मिलाय पीवै तो अग्निकों जगाताहै और वात मूत्र और विष्ठाकों अनुलोमित करता है । मिलेहुये दोषोंके गुल्ममें मिलाहुआ संपूर्ण क्रियाक्रम करना ।

(५)सन्निपातोद्भवे गुल्मे त्रिदोषघ्नो विधिर्हितः ।
वचाविडाभयाशुण्ठीहिङ्गुकुष्ठाग्निदीप्यकाः ॥३२॥
द्वित्रिषट्चतुरेवाष्टसप्तपञ्चांशिकाः क्रमात् ।
चूर्णमद्यादिभिः पीतं गुल्मानाहोदरापहम् ॥३३॥
शूलार्शःश्वासकासघ्नं ग्रहणीदीपनं परम् ।
यमानीहिङ्गुसिन्धूत्थक्षारसौवर्चलाभयाः ॥ ३४ ॥
सुरामण्डेन पातव्या गुल्मशूलनिवारणाः ।

(५ सन्निपातगुल्मे) सन्निपातके गुल्ममें त्रिदोपनाशक विधि हित है । वच २ भाग मनयारीनमक ३ भाग हरडै ६ भाग सोंठ ४ भाग हींग १ भाग कूट ८ भाग चीता ७ भाग अजमोद पांच भाग ये क्रमसें लेकै चूर्ण कर मदिरा आदिके संग पान करै तो गुल्म अफारा और उदररोगकों नाशताहै । और शूल श्वास खांसीकों नाशता है । और ग्रहणीकों दीपन करताहै । अजमान हींग सेंधानमक जवाखार कालानमक हरडै इन्होंकों मदिराका मंडके साथ पीवै तो गुल्म और शूल नष्ट होतेहै ।

(६)हिङ्गु त्रिकटुकं पाठां हपुषामभयां शठीम्३५
अजमोदाजगन्धे च तिन्तिडीकाम्लवेतसौ ।
दाडिमं पौष्करं धान्यमजाजीं चित्रकं वचाम् ।
द्वौ क्षारौ लवणे द्वे च चव्यं चैकत्र चूर्णयेत् ३६
चूर्णमेतत्प्रयोक्तव्यमन्नपानेष्वनत्ययम् ।
प्राग्भक्तमथवा पेयं मद्येनोष्णोदकेन वा ॥ ३७ ॥
पार्श्वहृद्बस्तिशूलेषु गुल्मे वातकफात्मके ।
आनाहे मूत्रकृच्छ्रे च गुदयोनिरुजासु च ॥३८॥
ग्रहण्यर्शोविकारेषु प्लीह्नि पाण्ड्वामयेऽरुचौ ।
उरोविबन्धे हिक्कायां श्वासे कासे गलग्रहे ॥३९॥
भावितं मातुलुङ्गस्य चूर्णमेतद्रसेन वा ।
बहुशो गुडिकाः कार्याः कार्षिकाः स्युस्ततोऽधिकम्

(६ हिंग्वाद्यं चूर्णम्) हींग सोंठ मिरच पीपल सोनापाठा हाऊबेर हरडै कचूर अजमोद तुलशी अमली अम्लवेतस अनार पौहकरमूल धनियां जीरा चीता वच जवाखार साजीखार सेंधानक मनयारीनमक और चव्य इन्होंकों मिलाय चूर्ण करै । यह चूर्ण अन्नपानोंमें प्रयुक्त करना योग्य है । और हित है अथवा प्रातःकालका भोजनसें पहले मदिराके और गरमपानीके साथ पीना । पसलीशूल हृदाका शूल वस्तिशूल वातगुल्म कफगुल्म अफारा मूत्रकृच्छ्र गुदपीडा योनिपीडा इन्होंमें ग्रहणीविकार बवासीरके विकार प्लीहरोग पांडुरोग अरुचि छातीका बंधा हिचकी श्वास खांसी गलग्रह इन्होंमें हित करताहै । अथवा यह चूर्ण बिजोराके रसकरकै भावितकर एक एक तोलाकी गोलियां बनाय वर्तै तो बहुत फल होताहै ।

(७)पूतीकपत्रगजचिर्भटिचव्यवह्नि-
व्योषं च संस्तरचितं लवणोपधानम् ।
दग्ध्वा विचूर्ण्य दधिमण्डयुतं प्रयोज्यं
गुल्मोदरश्वयथुपाण्डुगदोद्भवेषु ॥ ४१ ॥
हिङ्गुपुष्करमूलानि तुम्बुरूणि हरीतकीम् ।
श्यामा विडं सैन्धवं च यवक्षारं महौषधम् ॥४२॥
यवक्वाथोदकेनैतद्घृतभृष्टं तु पाययेत् ।
तेनास्य भिद्यते गुल्मः सशूलः सपरिग्रहः ॥४३॥
वचा हरीतकी हिङ्गु सैन्धवं साम्लवेतसम् ।
यवक्षारं यमानीं च पिबेदुष्णेन वारिणा ॥ ४४ ॥

एतद्धि गुल्मनिचयं सशूलं सपरिग्रहम्।
भिनत्ति सप्तरात्रेण वह्नेर्दीप्तिं करोति च ॥ ४५ ॥
पिप्पलीपिप्पलीमूलचित्रकाजाजिसैन्धवैः।
युक्ता पीता सुरा हन्ति गुल्ममाशु सुदुस्तरम् ४६
नादेयीकुटजार्कशिग्रु बृहती-
स्नुग्बिल्वभल्लातक-
व्याघ्री किंशुकपारिभद्रकजटा-
ऽपामार्गनीपाग्निकम्।
वासामुष्ककपाटलाः सलवणा
दग्ध्वा जले पाचितं
हिंग्वादिप्रतिवापमेतदुदितं
गुल्मोदराष्ठीलिषु ॥ ४७ ॥
हिङ्ग्रूग्रगन्धाविडशुण्ठ्यजाजी-
हरीतकीपुष्करमूलकुष्ठम्।
भागोत्तरं चूर्णितमेतदिष्टं
गुल्मोदराजीर्णविषूचिकासु ॥ ४८ ॥

(७ **हिंग्वादिप्रतिवापः**) करंजुवा तेजपात नागकेसर लालचंदन चव्य चीता सोंठ मिरच पीपल इन्होंकों सेंधानमकसहित कर और पात्रमें घाल जलाकर चूर्ण बनाय दहीका मंडसें युत कर गुल्म उदररोग शोजा पांडुरोगसें उपजे विकार इन्होंमें प्रयुक्त करना। हींग पौहकरमूल धनियां हरडै काली निशोत मनयारीनमक सेंधानमक जवाखार सोंठ इन्होंकों घृतमें भून जवोंका काथकेसंग पान करावै। उसकरकै मनुष्यका शूल और जडसहित गुल्म नष्ट होताहै। वच हरडै हींग सेंधानमक अम्लवेतस जवाखार अजमान इन्होंकों गरम पानीसें पीवै। यह सात रात्रिकरकै शूल और जडसहित गुल्मकों निश्चय नाशता है और अग्निकों दीप्त करताहै। पीपल पीपलामूल चीता जीरा सेंधानमक इन्होंसें युत करी मदिरा भयंकर गुल्मकों शीघ्र नाशतीहै। जलवेत कूडा आक सहोंजना बडी कटेली थोहर बेलवृक्ष भिलावा कटेलीका फूल देवदारकी जड ऊंगा कदंब चीता वांसा फिरांस पाडल इन्होंमें नमक डाल दग्धकर जलमें पकावै और हींग आदिकी प्रतिवाप देवै यह गुल्म उदररोग और अष्ठीलावालाकों हित करताहै। हींग १ भाग तुलसी २ भाग मनयारीनमक ३ भाग सोंठ ४ भाग जीरा ५ भाग हरडै ६ भाग पोहकरमूल ७ भाग कूट ८ भाग इन्होंका चूर्ण गुल्म उदररोग अजीर्ण और विषूचिका इन्होंमें हित करताहै।

(८)त्रिफलाकाञ्चनक्षीरीसप्तलानीलिनीवचाः।
त्रायन्तीहपुषातिक्तात्रिवृत्सैन्धवपिप्पलीः॥ ४९ ॥
पिबेत्संचूर्ण्य मूत्रोष्णवारिमांसरसादिभिः।
सर्वगुल्मोदरप्लीहकुष्ठार्शःशोथखेदितः ॥ ५० ॥
शठी पुष्करमूलं च दन्तीं चित्रकमाढकीम्।
शृङ्गवेरं वचां चैव पलिकानि समाहरेत् ॥ ५१ ॥
त्रिवृतायाः पलं चैव कुर्यात्रीणि च हिङ्गुनः।
यवक्षारपले द्वे च द्वे पले चाम्लवेतसात् ॥ ५२ ॥
यमान्यजाजी मरिचं धान्यकं चेति कार्षिकम्।
उपकुञ्च्यजमोदाभ्यां तथा चाष्टमिकामपि ॥५३॥
मातुलुङ्गरसेनैव गुटिकाः कारयेद्भिषक्।
तासामेकां पिबेद्द्वे च तिस्रो वापि सुखाम्बुना॥५४
अम्लैश्च मद्यैर्यूषैश्च घृतेन पयसाथवा।
एषा काङ्कायणेनोक्ता गुडिका गुल्मनाशिनी॥५५॥
अर्शोहृद्रोगशमनी क्रिमीणां च विनाशिनी।
गोमूत्रयुक्ता शमयेत्कफगुल्मं चिरोत्थितम्॥५६॥
क्षीरेण पित्तगुल्मं च मद्यैरम्लैश्च वातिकम्।
त्रिफलारसमूत्रैश्च नियच्छेत्सान्निपातिकम्।
रक्तगुल्मे च नारीणामुष्ट्रीक्षीरेण पाययेत् ॥ ५७॥

(८ **कांकायनगुटिका**) त्रिफला चोष सातला नील वच त्रायमाण हाऊबेर कुटकी निशोत सेंधानमक पीपल इन्होंका चूर्ण कर गोमूत्र गरम पानी मांसका रस इन्होंमांहसें एक कोईसाके संग सब गुल्म उदररोग प्लीहरोग कुष्ठ शोजा इन्होंसें पीडित हुआ पीवै। कचूर पौहकरमूल जमालगोटाकी जड चीता अर्हर अदरक वच ये सब चार चार तोले लेना। और निशोत ४ तोले हींग १२ तोले जवाखार ८ तोले और अम्लवेतस ८ तोले अजमान जीरा मिरच और धनियां ये सब एक एक तोला कलौंजी और अजमोद दो दो तोले इन्होंकी गोलियां वैद्य बिजोराके रससें करै। तिन्होंमांहसें एक दो अथवा तीन गोलियोंकों सुखपूर्वक गरम जलसें पीवै। बवासीर हृद्रोग और कृमिरोग इन्होंकों नाशतीहै। और गोमूत्रसें युत करी पुराने कफगुल्मकों शांत करतीहै। और दूधके संग पित्तके गुल्मकों और मदिरा तथा खट्टे रसके साथ वातके गुल्मकों शांत करतीहै। त्रिफलाका रस और गोमूत्रके संग सन्निपातके गुल्मकों शांत करतीहै। और स्त्रियोंके रक्तगुल्ममें थोहरका दूधकेसाथ पान करावै।

(९) हपुषाव्योषपृथ्वीकाचव्यचित्रकसैन्धवैः ।
साजाजीपिप्पलीमूलदीप्यकैर्विपचेद्धृतम् ॥ ५८ ॥
सकोलमूलकरसं सक्षीरं दधि दाडिमम् ।
तत्परं वातगुल्मघ्नं शूलानाहविबन्धनुत् ॥५९॥
योन्यर्शोग्रहणीदोषश्वासकासाऽरुचिज्वरम् ।
पार्श्वहृद्बस्तिशूलं च घृतमेतद्व्यपोहति ॥ ६० ॥

(९ हपुषाद्यं घृतम्) हाऊवेर सोंठ मिरच पीपल कलौंजी चव्य चीता सेंधानमक जीरा पीपलामूल अजमोद इन्होंसें घृतकों पकावै। वडवेरीकी जड मूली इन्होंका रस दूध दही अनार इन्होंकों मिलाय घृत पकाना। वह घृत वातगुल्म शूल अफारा विबंध इन्होंकों नाशताहै और योनिरोग ववासीर ग्रहणीदोष श्वास खांसी अरुचि ज्वर पसलीशूल हृच्छूल बस्तिशूल इन्होंकों नाशताहै ।

(१०) पिप्पल्याः पिचुरर्धार्धो दाडिमाद्द्विपलं पलं
धान्यात्पञ्च घृताच्छुण्ठ्याः कर्षः क्षीरं चतुर्गुणम्॥
सिद्धमेतैर्घृतं सद्यो वातगुल्मं चिकित्सति ।
योनिशूलं शिरःशूलमर्शांसि विषमज्वरान् ६२

(१० पंचपलकघृतम्) पीपल आधा तोला अनार ८ तोले धनियां ४ तोले घृत २० तोले सोंठ १ तोला दूध चारगुना इन्होंकों मिलय घृत सिद्ध करना। वह घृत वातगुल्म योनिशूल शिरका शूल ववासीर विषमज्वर इन्होंकों नाशताहै ।

(११) त्र्यूषणत्रिफलाधान्यविडङ्गचव्यचित्रकैः ।
कल्कीकृतैर्घृतं सिद्धं सक्षीरं वातगुल्मनुत् ६३

(११ त्र्यूषणाद्यं घृतम्) सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला धनियां वायविडंग चव्य चीता इन्होंका कल्क बनाय उसमें दूध डाल घृत सिद्ध करना वह वातगुल्मकों नाशताहै ।

(१२) जले दशगुणे साध्यं त्रायमाणाचतुःपलम् ।
पञ्चभागस्थितं पूतं कल्कैः संयोज्य कार्षिकैः ६४
रोहिणीकटुकामुस्तत्रायमाणादुरालभाः ।
कल्कैस्तामलकीवीराजीवन्तीचन्दनोत्पलैः ॥६५॥
रसस्यामलकीनां च क्षीरस्य च घृतस्य च ।
पलानि पृथगष्टाष्टौ दत्त्वा सम्यग्विपाचयेत् ६६
पित्तगुल्मं रक्तगुल्मं विसर्पं पैत्तिकं ज्वरम् ।
हृद्रोगं कामलां कुष्ठं हन्यादेतद्धृतोत्तमम् ॥६७॥
पलोल्लेखागते माने न द्वैगुण्यमिहेष्यते ।
चत्वारिंशत्पलं तेन तोयं दशगुणं भवेत् ॥६८॥

(१२ त्रायमाणाद्यं घृतम्) दशगुना पानीमें १६ तोले भर त्रायमाणकों सिद्ध करै । जब पांचमा भाग शेष रहै तब कपडासें छान एक एक तोलाभर हरडै कुटकी नागरमोथा त्रायमाण जवासा भुइआंवली क्षीरकाकोली जीवंती चंदन सुपेदकमल इन्होंके कल्क और आंवलाका रस दूध तथा घृत ये सब बत्तीस बत्तीस तोलेभर ले अच्छीतरह पकावै । पित्तगुल्म वातगुल्म विसर्प पित्तज्वर हृद्रोग कामला कुष्ठ इन्होंकों यह घृत नाशताहै । पल कहनेसें यहां मानमें दुगुना नहीं लेना उसकरकै चालीस पलभरसें जल दशगुना लेना ।

(१३)द्राक्षामधुकखर्जूरं विदारीं सशतावरीम् ।
परूषकाणि त्रिफलां साधयेत्पलसंमिताम् ६९
जलाढके पादशेषे रसमामलकस्य च ।
घृतमिक्षुरसं क्षीरमभयाकल्कपादिकम् ॥ ७० ॥
साधयेत्तु घृतं सिद्धं शर्कराक्षौद्रपादिकम् ।
योजयेत्पित्तगुल्मघ्नं सर्वपित्तविकारनुत् ॥ ७१ ॥
साहचर्यादिह पृथग्घृतादेः क्काथतुल्यता ॥ ७२ ॥

(१३ द्राक्षाद्यं घृतम्) दाख महुवा खजूर विदारीकंद शतावरी फालसा त्रिफला ये सब चार चार तोलेभर ले साधित करने । जल २५६ तोलेभरमें डाल पकावै। जब चौथाई भाग शेष रहै तब आंवलाका रस घृत ईखका रस दूध चौथाई भाग हरडैका कल्क ये सब मिलाय घृत सिद्ध करना । पीछे खांड और शहद चौथाई भाग डाल योजित करै । पित्तका गुल्म और पित्तके विकारोंकों नाशताहै । यहां साहचर्यकरकै घृतआदिसें क्काथकी तुल्यता होतीहै ।

(१४) धात्रीफलानां स्वरसे षडङ्गं पाचयेद्धृतम् ।
शर्करासैन्धवोपेतं तद्धितं सर्वगुल्मिनाम् ॥७३॥

(१४ धात्रीषट्पलं घृतम्) आंवलोंके रसमें षडंगघृतकों पकावै । पीछे खांड और सेंधानमक डाल पीवै तो सब गुल्मवालोंकों हित है ।

(१५) षड्भिः पलैर्मगधजाफलमूलचव्य-
विश्वौषधज्वलनयावजकल्कपक्वम् ।

प्रस्थं घृतस्य दशमूल्युरुबूकभार्गी-
काथेऽप्यथो पयसि दध्नि च षट्पलाख्यम् ७४
गुल्मोदरारुचिभगन्दरवह्निसाद-
कासज्वरक्षयशिरोग्रहणीविकारान् ।
सद्यः शमं नयति ये च कफानिलोत्था
भार्ग्याख्यषट्पलमिदं प्रवदन्ति तज्ज्ञाः ७५

(**१५ भार्गीषट्पलकं घृतम्**) पीपल पीपलामूल चव्य सोंठ चीता जवाखार ये सब चार चार तोले लेकै कल्क बनाय घृत ६४ तोले और दशमूल अरंड भारंगी इन्होंके क्राथमें और दूधमें और दहीमें मिलाय सिद्ध करै । गुल्म उदररोग अरुचि भगंदर मंदाग्नि कामज्वर क्षय शिरका रोग ग्रहणीरोग शीघ्र शांत होतेहैं । कफ और वातसें उपजे रोग शांत होतेहैं । इसकों पंडित भार्ग्याख्यघृत कहतेहैं ।

(१६) पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
पलिकैः सयवक्षारैः सर्पिःप्रस्थं विपाचयेत् ७६
क्षीरप्रस्थेन तत्सर्पिर्हन्ति गुल्मं कफात्मकम् ।
ग्रहणीपाण्डुरोगघ्नं प्लीहकासज्वरापहम् ॥ ७७ ॥

(**१६ क्षीरषट्पलकं घृतम्**) पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ जवाखार ये सब चार चार तोले और घृत ६४ तोले इन सबकों ६४ तोलेभर दूधमें पकाकै घृतकों सिद्ध करै । यह कफगुल्म ग्रहणीरोग पांडुरोग तिल्लीरोग खांसी और ज्वर इन्होंकों नाशताहै ।

(१७) भल्लातकानां द्विपलं पञ्चमूलं पलोन्मितम् ।
साध्यं विदारीगन्धाढ्यमापोत्थसलिलाढके ७८
पादावशेषे पूते च पिप्पलीं नागरं वचाम् ।
विडङ्गं सैन्धवं हिङ्गु यावशूकं बिडं शठीम् ७९
चित्रकं मधुकं रास्नां पिष्ट्वा कर्षसमान्भिषक् ।
प्रस्थं च पयसो दत्त्वा घृतप्रस्थं विपाचयेत् ८०
एतद्भल्लातकं नाम कफगुल्महरं परम् ।
प्लीहपाण्ड्वामयश्वासग्रहणीकासगुल्मनुत् ॥८१॥

(**१७ भल्लातकं घृतम्**) भिलावे ८ तोले पंचमूल ४ तोले इन्होंमें विदारीकंद और चंदन मिलय २५६ तोलेभर पानीमें पकावै । जब चौथाई भाग शेष बचै तब कपडासें छान उसमें पीपल सोंठ वच वायविडंग सेंधानमक हींग जवाखार मनयारीनमक कचूर चीता महुआ रास्ना ये सब एक एक तोलाभर लेकै पीस मिलावै पीछे ६४ तोलेभर दूध देकै ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । यह भल्लातकनामवाला घृत कफके गुल्मकों हरताहै और प्लीहरोग पांडुरोग श्वास ग्रहणीविकार खांसी और गुल्मकों नाशताहै ।

(१८) रसोनस्वरसे सर्पिः पञ्चमूलरसान्वितम् ।
सुरारनालदध्यम्लमूलकस्वरसैः सह ॥ ८२ ॥
व्योषदाडिमवृक्षाम्लयमानीचव्यसैन्धवैः ।
हिङ्ग्वम्लवेतसाजाजीदीप्यकैश्च पलान्वितैः ८३
सिद्धं गुल्मग्रहण्यर्शःश्वासोन्मादक्षयज्वरान् ।
कासाऽपस्मारमन्दाग्निप्लीहशूलानिलाञ्जयेत् ८४

(**१८ रसोनाद्यं घृतम्**) ल्हशनका स्वरस पंचमूलका स्वरस मदिरा कांजी दही मूलीका रस सहोंजनाका रस इन्होंकेसाथ सोंठ मिरच पीपल अनार बिजोरा अजमान चव्य सेंधानमक हींग अम्लवेतस जीरा अजमोद ये चार चार तोलेभर ले मिलाय घृत सिद्ध करना । गुल्म ग्रहणीविकार बवासीर श्वास उन्माद क्षय ज्वर खांसी मृगीरोग मंदाग्नि प्लीहरोग शूल और वातरोग इन्होंकों जीतताहै ।

(१९) जलद्रोणे विपक्तव्या विंशतिः पञ्च चाभयाः
दन्त्याः पलानि तावन्ति चित्रकस्य तथैव च ८५
तेनाष्टभागशेषेण पचेद्दन्तीसमं गुडम् ।
ताश्चाभयास्त्रिवृच्चूर्णात्तैलाच्चापि चतुःपलम् ॥८६॥
पलमेकं कणाशुण्ठ्योः सिद्धे लेहे च शीतले ।
क्षौद्रं तैलसमं दद्याच्चातुर्जातपलं तथा ॥ ८७ ॥
ततो लेहपलं लीढ्वा जग्ध्वा चैकां हरीतकीम् ।
सुखं विरिच्यते स्निग्धो दोषप्रस्थमनामयः ८८
प्लीहश्वयथुगुल्मार्शोहृत्पाण्डुग्रहणीगदाः ।
शाम्यन्त्युत्क्लेशविषमज्वरकुष्ठान्यरोचकाः ॥ ८९ ॥

(**१९ दन्तीहरीतकी**) पचीस हरडोंकों १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै और जमालगोटाकी जड १०० तोले चीता १०० तोले जब पकनेमें आठमा भाग शेष रहै तब जमालगोटाकी जडके बराबर गुड डाल पकावै । और निशोतका चूर्ण १६ तोले तेल १६ तोले पीपल और सोंठ चार चार तोले इन्होंका लेह बनाय सिद्ध करै । जब शीतल होजावै तब १६ तोलेभर शहद और दालचिनी तेजपात इलायची नागकेसर इन्होंका चूर्ण ४ तोले-

भर मिलाके पीछे ४ तोलेभर लेहकों चाट और एक हरडै खाके सुखपूर्वक जुलाबकों प्राप्त होताहै और बहुतसा दोष नष्ट होके मनुष्य आरोग्य रहताहै । और प्लीहरोग शोजा गुल्मरोग ववासीर हृद्रोग पांडुरोग ग्रहणीरोग ग्लानि विषमज्वर कुष्ठ अरोचक ये सब शांत होतेहैं ।

(२०) वृश्चीरमुरुवूकं च वर्षाहं बृहतीद्वयम् ।
चित्रकं च जलद्रोणे पचेत्पादावशेषितम् ॥ ९० ॥
मागधीचित्रकक्षौद्रलिप्तकुम्भे निधापयेत् ।
मधुनः प्रस्थमावाप्य पथ्याचूर्णार्धसंयुतम् ॥९१॥
त्र्युषोषितं दशाहं च जीर्णभक्तः पिबेन्नरः ।
अरिष्टोऽयं जयेद्गुल्ममविपाकं सुदुस्तरम् ॥९२॥

(२० वृश्चीराद्यरिष्टः) लालसांठी अरंड सांठी दोनोंकटेली चीता इन्होंकों १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै । जब चौथाईभाग शेष रहै तब पीपल चीता शहद इन्होंसें लिपाहुआ कलशामें स्थापित करै पीछे ६४ तोलेभर शहद और १६ तोलेभर हरडैका चूर्ण डाल दश दिनतक धरकै जीर्णहुआ भोजनवाला मनुष्य पीवै । यह अरिष्ट नहीं पकाहुआ और भयंकर ऐसा गुल्मकों जीतताहै ।

(२१)रौधिरस्य तु गुल्मस्य गर्भकालव्यतिक्रमे ।
स्निग्धस्विन्नशरीरायै दद्यात्स्निग्धं विरेचनम् ९३
शताह्वाचिरबिल्वत्वग्दारुभार्गीकणोद्भवः ।
कल्कः पीतो हरेद्गुल्मं तिलक्वाथेन रक्तजम् ९४
तिलक्वाथो गुडव्योषहिङ्गुभार्गीयुतो भवेत् ।
पानं रक्तभवे गुल्मे नष्टपुष्पे च योषिताम् ९५
सक्षारं त्र्यूषणं मद्यं प्रपिबेदस्रगुल्मिनी ।
पलाशक्षारतोयेन सिद्धं सर्पिः पिबेच्च सा॥९६॥
उष्णैर्वा भेदयेद्भिन्ने विधिरासृग्दरो हितः ।
न प्रभिद्येत यद्येवं दद्याद्योनिविशोधनम् ॥९७॥
क्षारेण युक्तं पललं सुधाक्षीरेण वा पुनः ।
रुधिरेऽतिप्रवृत्ते तु रक्तपित्तहरी क्रिया ॥ ९८ ॥

भल्लातकात्कल्ककषायपक्कं
सर्पिः पिबेच्छर्करया विमिश्रम् ।
तद्रक्तपित्तं विनिहन्ति पीतं
बलासगुल्मं मधुना समेतम् ॥ ९९ ॥

वल्लूरं मूलकं मत्स्याञ्शुष्कशाकानि वेदनम् ।
न खादेच्चालुकं गुल्मी मधुराणि फलानि च१००
इति गुल्मचिकित्सा ।

(२१ रक्तगुल्मोपायाः) रक्तजें गुल्मवाली स्त्रीके गर्भका समय व्यतीत होचुकै तब स्निग्ध तथा स्वेदितशरीरवाली स्त्रीके अर्थ स्निग्ध विरेचन देवै । शतावरी करंजुवा देवदार दारु भारंगी पीपल इन्होंका कल्क बनाय तिलोंके क्वाथसें पीवै तो रक्तका गुल्म नष्ट होताहै । तिलोंके क्वाथमें गुड सोंठ मिरच पीपल हींग भारंगी इन्होंका चूर्ण डाल स्त्रियोंकों पान करावे तो रक्तजगुल्म और स्त्रियोंके फूल नहीं आनेमें हित होताहै । जवाखार सोंठ मिरच पीपल मदिरा इन्होंकों रक्तगुल्मवाली पीवै । कैशूके खारके पानीसें सिद्ध किया घृतकों वही स्त्री पीवै अथवा गरम पदार्थोंसें गुल्म भेदित करना और भिन्नहोनेपर प्रदररोगकी विधि हित है । जो ऐसे करनेसें नहीं भेदित होवै तो योनिशोधन देवै । जवाखारसें युतकिया अथवा थोहरके दूधसें युतकिया रुईका फोहा योनिमें धरना । बहुत रक्त प्रवृत्त होवै तो रक्तपित्तकों हरनेवाली क्रिया करनी और भिलावाका कल्क तथा क्वाथमें सिद्ध किया घृत खांडके साथ मिलाके पीना वह रक्तपित्तकों नाशताहै और शहदके साथ कफके गुल्मकों नाशताहै । सूखा मांस मूली मच्छली सूखेशाक चावल आलू इन्होंकों और मधुर फलोंकों गुल्मरोगी नहीं खावै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनुपंडितरविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां गुल्मरोगचिकित्सा ।

अथ हृद्रोगाधिकारः ३०

अब हृद्रोगका आधिकार करते है ।

(१) वातोपसृष्टे हृदये वामयेत्स्निग्धमातुरम् ।
द्विपञ्चमूलीक्वाथेन सस्नेहलवणेन च ॥ १ ॥
पिप्पल्येलावचाहिङ्गुयवक्षारोऽथ सैन्धवम् ।
सौवर्चलमथो शुण्ठीमजमोदावचूर्णितम् ॥ २ ॥
फलधान्याम्लकौलत्थदधिमद्यासवादिभिः ।
पाययेच्छुद्धदेहं च स्नेहेनान्यतमेन वा ॥ ३ ॥
जागरं वा पिबेदुष्णं कषायं चाग्निवर्धनम् ।
कासश्वासानिलहरं शूलहृद्रोगनाशनम् ॥ ४ ॥
श्रीपर्णीमधुकक्षौद्रसितागुडजलैर्वमेत् ।
पित्तोपसृष्टे हृदये सेवेत मधुरैः शृतम् ॥ ५ ॥
घृतं कषायांश्चोद्दिष्टान्पित्तज्वरविनाशनान् ॥६॥

(१ वातिकहृद्रोगोपायाः) वातके हृद्रोगमें स्निग्ध किये रोगीकों वमन दशमूलके क्काथमें स्नेह और नमक डाल करावै । पीपल इलायची वच हींग जवाखार सेंधानमक कालानमक सोंठ अजमोद इन्होंके चूर्णसें अवचूर्णित कर फलकी कांजी चावलकी कांजी कुल्थीकी कांजी दही मदिरा आसव इन आदिकरकै अथवा एक कोइसा स्नेहकरकै शुद्ध शरीरवालाकों पान करावै । अथवा सोंठका क्काथ गरमरूप पीना चाहिये यह अग्निकों बढाता है । खांसी श्वास मंदाग्नि शूल हृद्रोग इन्होंकों नाशता है । शालपर्णी महुआ शहद मिश्री गुड जल इन्होंकरकै वमन करै पित्तके हृद्रोगमें मधुर पदार्थोंसें बनाया घृत और पित्तज्वरकों नष्ट करनेवाले क्काथोंकों सेवै ।

(२) शीताः प्रदेहाः परिषेचनानि
तथा विरेको हृदि पित्तदुष्टे ।
द्राक्षासिताक्षौद्रपरूषकैः स्या-
च्छुद्धे च पित्तापहमन्नपानम् ॥ ७ ॥
पिष्ट्वा पिबेद्वापि सिताजलेन
यष्ट्याह्वयं तिक्तकरोहिणीं च ॥ ८ ॥
अर्जुनस्य त्वचा सिद्धं क्षीरं योज्यं हृदामये ।
सितया पञ्चमूल्या वा बलया मधुकेन वा ॥९॥
घृतेन दुग्धेन गुडाम्भसा वा
पिबन्ति चूर्णं ककुभत्वचो ये ।
हृद्रोगजीर्णज्वररक्तपित्तं
हत्वा भवेयुश्चिरजीविनस्ते ॥ १० ॥

(२ अन्ये शीतप्रदेहाद्युपायाः) शीतल लेप शीतल परिषेक जुलाब ये सब पित्तके हृद्रोगमें हित हैं । और दाख मिश्री शहद फालसा इन्होंसें रचेहुये अन्नपान शुद्ध मनुष्यकों देवै । मुलहटी और कुटकीकों पीसकर मिश्रीका शर्बतके संग पीवै । अर्जुनवृक्षकी छालसें सिद्ध किया दूध हृद्रोगमें युक्त करना । मिश्रीके साथ अथवा पंचमूलके साथ तथा खैंरहटीके साथ अथवा महुवाके साथ घृतके तथा दूधके साथ अथवा गुडका शरबतके साथ अर्जुनवृक्षकी छालके चूर्णकों जो मनुष्य पीवै वे हृद्रोग जीर्णज्वर रक्तपित्त इन्होंकों नाशकर बहुत समयपर्यंत जीवनेवाले हो जाते हैं ।

(३) वचानिम्बकषायाभ्यां वान्तं हृदि कफोत्थिते ।
वातहृद्रोगहृच्चूर्णं पिप्पल्यादि च योजयेत् ॥११॥
त्रिदोषजे लङ्घनमादितः स्या-
दन्नं च सर्वेषु हितं विधेयम् ।
हीनाधिमध्यत्वमवेक्ष्य चैव
कार्यं त्रयाणामपि कर्म शस्तम् ॥ १२ ॥
चूर्णं पुष्करजं लिह्यान्माक्षिकेण समायुतम् ।
हृच्छूलकासश्वासघ्नं क्षयहिक्कानिवारणम् ॥१३॥
तैलाज्यगुडविपक्वं
गौधूमं वापि पार्थजं चूर्णं ।
पिबति पयोऽनुचयं स
भवति जितसकलहृद्रुजः पुरुषः ॥ १४ ॥
गोधूमककुभचूर्णं
छागपयोगव्यसर्पिषि विपक्वम् ।
मधुशर्करासमेतं
शमयति हृद्रोगमुद्धतं पुंसाम् ॥ १५ ॥

(३ पिप्पल्यादिचूर्णम्) वचका क्काथ और नींबका क्काथसें कफके हृद्रोगमें वमन करना और वाजत हृद्रोगनाशक पिप्पल्यादि चूर्णकों युक्त करना । त्रिदोषके हृद्रोगमें प्रथम लंघन कराना और सब प्रकारके हृद्रोगमें हितरूप अन्न देना और हीन अधिक तथा मध्यमपना देखकर तीनोंकै श्रेष्ठ कर्म करना । पौहकरमूलके चूर्णकों शहदमें मिलाय चाटै तो हृच्छूल खांसी श्वास क्षय और हिचकीका नाश होता है । तेल घृत और गुड इन्होंमें पक्क किया गेहूंका अथवा अर्जुनवृक्षकी छालका चूर्णकों जो मनुष्य पीवै वह संपूर्ण हृद्रोगोंकों नाशता है । गेहूंका और अर्जुनवृक्षकी छालका चूर्णकों बकरीका दूध गायका घृत इन्होंसें पकाकै खांड और शहदसें युतकर जो पीवै वह हृद्रोगकों नाशता है ।

(४) मूलं नागबलायास्तु चूर्णं दुग्धेन पाययेत् ।
हृद्रोगश्वासकासघ्नं ककुभस्य च वल्कलम् १६
रसायनं परं वल्यं वातजिन्मांसयोजितम् ।
संवत्सरप्रयोगेण जीवेद्वर्षशतद्वयम् ॥ १७ ॥
हिङ्ग्रगन्धाविडविश्वकृष्णा-
कुष्ठाभयाचित्रकयावशूकम् ।
पिबेच्च सौवर्चलपुष्कराढ्यं
यवाम्भसा शूलहृदामयेषु ॥ १८ ॥
दशमूलीकषायं तु लवणक्षारयोजितम् ।
कासं श्वासं च हृद्रोगं गुल्मं शूलं च नाशयेत् १९

पाठां वचां यवक्षारमभयामम्लवेतसम् ।
दुरालभां चित्रकं च त्र्यूषणं च पलत्रिकम् २०
शठीं पुष्करमूलं च तिन्तिडीकं सदाडिमम् ।
मातुलुङ्गस्य मूलानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् २१
सुखोदकेन मद्यैर्वा चूर्णान्येतानि पाययेत् ।
अर्शःशूलानि हृद्रोगं गुल्मं चाशु व्यपोहति॥२२॥
पुटदग्धमश्मपिष्टं
हरिणविषाणं तु सर्पिषा पिबतः ।
हृत्पृष्ठशूलमुपशम-
मुपयात्यचिरेण कष्टमपि ॥ २३ ॥

(४ नागबलादिचूर्णानि) बडी खरैंहटीके चूर्णकों दूधके साथ पीवै अथवा अर्जुनवृक्षके चूर्णकों दूधके साथ पीवै तो हृद्रोग श्वास और खांसीका नाश होता है । उत्तम रसायन है बलमें हित है और मांसमें युत किया वातकों जीतता है । इसकों एक वर्ष सेवनेसें मनुष्य सौ वर्षतक जीवता है । हींग वच मनयारीनमक सोंठ पीपल कूट हरडै चीता जवाखार कालानमक पौहकरमूल इन्होंके चूर्णकों जवोंकी कांजीके संग पीवै तो शूल और हृद्रोगमें सुख होता है । दशमूलके क्राथमें नमक और जवाखार डाल पीवै तो खांसी श्वास हृद्रोग गुल्म और शूलका नाश होता है । पाठा वच जवाखार हरडै अम्लवेतस जवासा चीता सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला कचूर पौहकरमूल अमली अनार विजोराकी जड इन्होंकों मिहीन चूर्ण करै इस चूर्णकों सुखपूर्वक गरम पानीसें अथवा मदिरासें पीवै तो ववासीर शूल हृद्रोग और गुल्म इन्होंकों शीघ्र नाशता है । हिरणके शींगकों पुटपाकसें दग्धकर पत्थरसें पीस पीछे घृतके साथ पीनेवाले मनुष्यकै हृच्छूल पृष्ठशूल ये शीघ्र नष्ट होते हैं ।

(५) क्रिमिहृद्रोगिणं स्निग्धं भोजयेत्पिशितौदनम् ।
दध्ना च पललोपेतं त्र्यहं पश्चाद्विरेचयेत् ॥२४॥
सुगन्धिभिः सलवणैर्योगैः साजाजिशर्करैः ।
विडङ्गाढं धान्याम्लं पाययेद्धितमुत्तमम् ॥२५॥
क्रिमिजे च पिबेन्मूत्रं विडङ्गामयसंयुतम् ।
हृदि स्थिता पतन्त्येवमधस्तात्क्रिमयो नृणाम् ।
यवान्नं वितरेच्चास्मै सविडङ्गमतः परम् ॥ २६ ॥
मुख्यं शतार्धं च हरीतकीनां
सौवर्चलस्यापि पलद्वयं च ।
पक्वं घृतं वल्लभकेति नाम्ना
हृच्छ्वासशूलोदरमारुतघ्नम् ॥ २७ ॥

(५ मांसाशनं वल्लभघृतं च) कृमिरोगी और हृद्रोगीकों स्निग्धकरके मांससहित चावलका भोजन करावै और दहीके साथ तिलकुटसहित चावलोंकों तीन दिन खाकै पीछे जुलाब करावै । सुंदर गंधवाले और नमकसहित और जीरा तथा खांडसहित ऐसे योगोंके साथ वायविडंगसें युतकरी चावलोंकी कांजीकों पीवै यह उत्तम हित करती है । कृमियोंसें उपजे हृद्रोगमें वायविडंग और कूटसें युत किये गोमूत्रकों पीवै इस्सें मनुष्योंके हृदामें स्थितहुये कीडे नीचे पडते हैं । इस्सें उपरंत इस रोगीकेअर्थ वायविडंगसहित जवोंका अन्न देना । सुंदर हरडै ५० और कालानमक ८ तोले इन्होंमें घृत पकाना। यह वल्लभनामक घृत हृद्रोग श्वास शूल उदररोग वातरोग इन्होंकों नाशता है ।

(६) श्वदंष्ट्रोशीरमञ्जिष्ठाबलाकाश्मर्यकत्तृणम् ।
दर्भमूलं पृथक्पर्णी पलाशर्षभकौ स्थिरा ॥२८॥
पलिकान्साधयेत्तेषां रसे क्षीरे चतुर्गुणे ।
कल्कैः स्वगुप्तर्षभकमेदाजीवन्तिजीरकैः ॥ २९ ॥
शतावर्यृद्धिमृद्वीकाशर्कराश्रावणीविषैः ।
प्रस्थः सिद्धो घृताद्वातपित्तहृद्रोगशूलनुत्॥३०॥
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःश्वासकासक्षयापहः ।
धनुःस्त्रीमद्यभाराध्वक्षीणानां बलमांसदः ॥३१॥

(६ श्वदंष्ट्राद्यं घृतम्) गोखरू खस मजीठ खरैंटी कंभारी रोहिषतृण डाभकी जड पृष्ठपर्णी केशू ऋषभक शालपर्णी ये सब चार चार तोले ले इन्होंके रससें और चौगुने दूधमें कौंच ऋषभक मेदा जीवंती जिरा शतावरी ऋद्धि मुनक्का खांड मीठातेलिया इन्होंके कल्कमें ६४ तोले घृत डाल सिद्ध करै । यह वातपित्तका हृद्रोग और शूलकों नाशता है । मूत्रकृच्छ्र प्रमेह ववाशीर श्वास खांसी क्षय इन्होंकों नाशता है । धनुष स्त्री मदिरा बोझा मार्ग इन्होंसें क्षीणहुये मनुष्योंके बल और मांस बढाता है ।

(७)घृतं बलानागबलार्जुनाम्बु
सिद्धं सयष्टीमधुकल्कपादम् ।
हृद्रोगशूलक्षतरक्तपित्त-
कासानिलासृक् शमयत्युदीर्णम् ॥ ३२ ॥

पार्थस्य कल्कस्वरसेन सिद्धं
शस्तं घृतं सर्वहृदामयेषु ॥ ३३ ॥
इति हृद्रोगचिकित्सा ।

(७ बलाघृतमर्जुनघृतं च) खरैंटी बडी खरैंटी अर्जुनवृक्ष इन्होंके रसमें मूलहटीका कल्क चौथाईभाग मिलायी घृत सिद्ध करना वह घृत हृद्रोग शूल क्षत रक्त-पित्त खांसी बढाहुआ वातरक्त इन्होंकों शांत करता है । अर्जुनवृक्षकी छाल कल्क और स्वरसकरकै सिद्ध किया घृत सब प्रकारके हृद्रोगोंमें श्रेष्ठ है ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनुपंडितरविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां हृद्रोगचिकित्सा ।

अथ मूत्रकृच्छ्राधिकारः ३१

अब मूत्र कृच्छ्रका अधिकार कहते है ।

(१) अभ्यञ्जनस्नेहनिरूहवस्ति-
स्वेदोपनाहोत्तरवस्तिसेकान् ।
स्थिरादिभिर्वातहरैश्च सिद्धा-
न्दद्याद्रसांश्चानिलमूत्रकृच्छ्रे ॥ १ ॥
अमृता नागरं धात्रीवाजिगन्धात्रिकण्टकान् ।
प्रपिबेद्वातरोगार्तः सशूली मूत्रकृच्छ्रवान् ॥ २ ॥
सेकावगाहाः शिशिराः प्रदेहा
ग्रैष्मो विधिर्बस्तिपयोविकाराः ।
द्राक्षाविदारीक्षुरसैर्घृतैश्च
कृच्छ्रेषु पित्तप्रभवेषु कार्याः ॥ ३ ॥
कुशः काशः शरो दर्भ इक्षुश्चेति तृणोद्भवम् ।
पित्तकृच्छ्रहरं पञ्चमूलं बस्तिविशोधनम् ।
एतत्स्निग्धं पयः पीतं मेढ्रगं हन्ति शोणितम्॥४॥

(१ अभ्यंगादिसामान्योपायाः) अभ्यंग स्नेह निरूहबस्ति स्वेदकर्म उपनाह उत्तरबस्ति सेक इन्होंकों और वातनाशक स्थिरादिगणसें सिद्ध किये रसोंकों वातके मूत्रकृच्छ्रमें देवै । गिलोय सोंठ आंवला आसगंध गोखरू इन्होंकों वातरोगी और शूलसहित मूत्रकृच्छ्रवाला मनुष्य पीवै । सेक गोतामारना शीतल लेप ग्रीष्मऋतुके योग्य-विधान बस्तिकर्म दूधके पदार्थ दाख विदारीकंद ईखका रस और घृत ये सब पित्तके रोगोंमें करने । कुशा काश शर डाभ ईख यह तृणपंचमूल पित्तके मूत्रकृच्छ्रकों हरता है और बस्तिकों शोधता है । इन्होंसें स्निग्ध किया दूध पान किया जावै तो लिंगमें उपजे रक्तकों नाशता है ।

(२) शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्रा
विदारिशालीक्षुकशेरुकाणाम् ।
क्वाथं सुशीतं मधुशर्करक्तं
पिबञ्जयेत्पैत्तिकमूत्रकृच्छ्रम् ॥ ५ ॥
हरीतकीगोक्षुरराजवृक्ष-
पाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् ।
क्वाथं पिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तं
कृच्छ्रे सदाहे सरुजे विबन्धे ॥ ६ ॥
गुडेनामलकं वृष्यं श्रमघ्नं तर्पणं परम् ।
पित्तासृग्दाहशूलघ्नं मूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ॥ ७ ॥
एर्वारुबीजं मधुकं सदार्वीं
पैत्ते पिबेत्तण्डुलधावनेन ।
दार्वीं तथैवामलकीरसेन
समाक्षिकां पैत्तिकमूत्रकृच्छ्रे ॥ ८ ॥
क्षारोष्णतीक्ष्णोषणमन्नपानं
स्वेदो यवान्नं वमनं निरूहाः ।
तक्रं सतिक्तौषधसिद्धतैला-
न्यभ्यङ्गपानं कफमूत्रकृच्छ्रे ॥ ९ ॥
मूत्रेण सुरया वापि कदलीस्वरसेन वा ।
कफकृच्छ्रविनाशाय श्लक्ष्णं पिष्ट्वा त्रुटिं पिबेत् १०
तक्रेण युक्तं शितिमारकस्य
बीजं पिबेत्कृच्छ्रविनाशहेतोः ।
पिबेत्तथा तण्डुलधावनेन
प्रवालचूर्णं कफमूत्रकृच्छ्रे ॥ ११ ॥
श्वदंष्ट्रा विश्वतोयं वा कफकृच्छ्रविनाशनम्॥१२॥

(२ शतावर्यादिक्वाथाः) शतावरी काश कुशा गोखरू विदारीकंद चौलाई ईख कशेरु इन्होंका क्वाथ बनाय उसमें शहद और खांड डाल दाह शूल और विबंध-सहित मूत्रकृच्छ्रमें पीवै । गुडकेसंग आंवला वीर्यकों बढाता है । श्रमकों नाशता है । तृप्ति करता है और रक्त-पित्त दाह शूल इन्होंकों नाशता है और मूत्रकृच्छ्रकों दूर करता है । खर्बूजाके बीज महुवा दारुहलदी इन्होंकों चावलोंका पानीके संग पित्तके मूत्रकृच्छ्रमें पीवै और दारुहलदीकों शहदसहित आंवलाका रसके संग पित्तके मूत्रकृच्छ्रमें पीवै क्षार उष्ण तीक्ष्ण ऊषण ऐसा अन्नपान

स्वेद और चर्चरे ओषधोंसें सिद्ध किया तेलका मालिस और पान कफके मूत्रकृच्छ्रमें करना। गोमूत्रकरकै तथा मदिराकरकै अथवा केलाका रसकरकै पिलीहुई इलायचीकों कफके मूत्रकृच्छ्रका नाशके अर्थ पीवै। टेंभुरनीके बीजकों तक्रसें युतकर मूत्रकृच्छ्रका नाशके अर्थ पीवै तथा चावलोंके धोवनके साथ मूंजाके चूर्णकों अथवा टेंभुरनीका अंकुरके चूर्णकों कफके मूत्रकृच्छ्रमें पीवै। अथवा गोखरू और सोंठका पानी कफके मूत्रकृच्छ्रकों नाशता है।

(३) सर्वं त्रिदोषप्रभवे तु वायोः
स्थानानुपूर्व्या प्रसमीक्ष्य कार्यम्।
त्रिभ्योऽधिके प्रागवमनं कफे स्यात्
पित्ते विरेकः पवने तु बस्तिः॥ १३॥

बृहतीधावनीपाठायष्टीमधुकलिङ्गकाः।
पाचनीयो बृहत्यादिः कृच्छ्रदोषत्रयापहः॥१४॥
तथाभिघातजे कुर्यात्सद्यो व्रणचिकित्सितम्।
मूत्रकृच्छ्रे सदा चास्य कार्या वातहरी क्रिया १५
स्वेदचूर्णक्रियाभ्यङ्गबस्तयः स्युः पुरीषजे।
क्काथं गोक्षुरबीजस्य यवक्षारयुतं पिबेत्॥ १६॥
मूत्रकृच्छ्रं शकृज्जं च पीतं शीघ्रं निवारयेत्॥१७॥

हिता क्रिया त्वश्मरिशर्करायां
या मूत्रकृच्छ्रे कफमारुतोत्थे॥ १८॥

(३ पृथग्दोषजेकृच्छ्रे पृथक्पृथगुपायाः) त्रिदोषके मूत्रकृच्छ्रमें वायुके स्थानकी आनुपूर्वीपनेसें कार्यकों देखकर तीनोंसें अधिक कफ हो तो प्रथम वमन और पित्त अधिक हो तो जुलाब और वायु अधिक हो तो बस्तिकर्म करना उचित है। बडीकटेली पृष्ठपर्णी पाठा मुलहटी इंद्रजव यह बृहत्यादिगण पाचन है और मूत्रकृच्छ्र दोषके भयकों नाशताहै। चोटआदि लगनेसें उपजे मूत्रकृच्छ्रमें सद्योव्रण अर्थात् तत्काल उपजे घावकी चिकित्सा करनी। सदा इस मूत्रकृच्छ्रमें वातनाशक क्रिया करनी। स्वेद अर्थात् पसीना लाना चूर्णक्रिया मालिस बस्तिकर्म ये सब विष्ठासें उपजे कृच्छ्रमें करने। गोखरूके क्काथमें जवाखार डाल पीवै तो मूत्रकृच्छ्र और विष्ठासें उपजे मूत्रकृच्छ्रकों शीघ्र नाशताहै। कफ और वातके मूत्रकृच्छ्रमें जो क्रिया कहीहै वही पथरी और शर्करारोगमें हित है।

(४) लेह्यं शुक्रविबन्धोत्थे शिलाजतु समाक्षिकम्।
वृष्यैर्बृंहितधातोश्च विधेयाः प्रमदोत्तमाः॥१९॥
एलाहिङ्गुयुतं क्षीरं सर्पिर्मिश्रं पिबेन्नरः।
मूत्रदोषविशुद्ध्यर्थं शुक्रदोषहरं च तत्॥ २०॥

यन्मूत्रकृच्छ्रे विहितं तु पैत्ते
तत्कारयेच्छोणितमूत्रकृच्छ्रे॥ २१॥
त्रिकण्टकारग्वधदर्भकाश-
दुरालभापर्वतभेदपथ्याः।
निघ्नन्ति पीता मधुनाश्मरीं च
सम्प्राप्तमृत्योरपि मूत्रकृच्छ्रम्॥ २२॥

कषायोऽतिबलामूलसाधितः सर्वकृच्छ्रजित् २३

एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनां
चूर्णानि तण्डुलजलैर्लुलितानि पीत्वा।
यद्वा गुडेन सहितान्यवलिह्य तानि
चासन्नमृत्युरपि जीवति मूत्रकृच्छ्री॥ २४॥

अयोरजः श्लक्ष्णपिष्टं मधुना सह योजितम्।
मूत्रकृच्छ्रं निहन्त्याशु त्रिभिर्लेहैर्न संशयः॥२५॥
सितातुल्यो यवक्षारः सर्वकृच्छ्रनिवारणः।
निदिग्धिकारसो वापि सक्षौद्रः कृच्छ्रनाशनः२६

(४ शिलाजत्वादिलेह्यम्) वीर्यके विबंधसें उपजे मूत्रकृच्छ्रमें शिलाजित और शहदसहित लेह्य हित है और वीर्य बढानेवाले औषधोंसें पुष्टधातुवालाके सुंदर स्त्रियां भोगनी उचित है। इलायची और हींगसें युत किया दूधमें घृत डाल मनुष्य पीवै तो मूत्रका दोष शुद्ध होकै कफका दोष नष्ट होजाताहै। जो पित्तके मूत्रकृच्छ्रमें कहाहै वह रक्तके मूत्रकृच्छ्रमें करना। गोखरू अमलतास डाभ काश जवासा पाषाणभेद हरडै इन्होंके क्काथमें शहद डाल पीवै तो असाध्य पथरी और मूत्रकृच्छ्रका नाश होजाताहै। गंगेरनकी जडसें सिद्ध किया क्काथ सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्रकों नाशताहै। इलायची पाषाणभेद शिलाजित पीपल इन्होंके चूर्णकों चावलोंके पानीमें मिलाय पीवै अथवा गुडसें मिलाकै चाटै तो मृत्युके मुखमें प्राप्त हुआभी मूत्रकृच्छ्रवाला जीवताहै। मिहीन पीसाहुआ लोहाका चूर्णकों शहदसें युतकर तीनवार बनाकै चाटै तो मूत्रकृच्छ्रकों शीघ्र नाशताहै। इसमें संशय नहीं।

(५) शतावरीकाशकुशश्वदंष्ट्रा-
विदारिकेक्ष्वामलकेषु सिद्धम्।

सर्पिः पयो वा सितया विमिश्रं
कृच्छ्रेषु पित्तप्रभवेषु योज्यम् ॥ २७ ॥

(५ शतावरीघृतं क्षीरं च) शतावरी काश कुशा गोखरू विदारीकंद ईख आंवला इन्होंमें सिद्ध किया घृत अथवा दूध मिश्रीसें युत किया पित्तके मूत्रकृच्छ्रमें वर्तना ।

(६)त्रिकण्टकैरण्डकुशाद्यभीरु-
कर्कारुकेक्षुस्वरसेन सिद्धम् ।
सर्पिर्गुडार्धांशयुतं प्रपेयं
कृच्छ्राश्मरीमूत्रविघातहेतोः ॥ २८ ॥

(६ त्रिकंटकाद्यं घृतम्) गोखरू अरंड कुशा शतावरी खर्बूजाके बीज ईख इन्होंके स्वरसकरके सिद्ध किया घृतमें आधा भाग गुड डाल पीवै तो मूत्रकृच्छ्र पथरी मूत्रविघात इन्होंका नाश होताहै ।

(७)पुनर्नवामूलतुला दशमूलं शतावरी ।
बला तुरगगन्धा च तृणमूलं त्रिकण्टकम् ॥२९॥
विदारीगन्धा नागाह्वगुडूच्यतिबला तथा ।
पृथग्दशपलान्भागाञ्जलद्रोणे विपाचयेत् ॥ ३०॥
तेन पादावशेषेण घृतस्यार्धाढकं पचेत् ।
मधुकं शृङ्गवेरं च द्राक्षासैन्धवपिप्पलीः ॥ ३१ ॥
द्विपलिकाः पृथग्दद्याद्यवान्याः कुडवं तथा ।
त्रिंशद्गुडपलान्यत्र तैलस्यैरण्डजस्य च ॥ ३२ ॥
प्रस्थं दत्वा समालोड्य सम्यङ्मृद्वग्निना पचेत् ।
एतदीश्वरपुत्राणां प्राग्भोजनमनिन्दितम्॥ ३३ ॥
राज्ञां राजसमानां च वहुस्त्रीपतयश्च ये ।
मूत्रकृच्छ्रे कटिस्तम्भे तथा गाढपुरीषिणाम् ३४
मेढ्रवङ्क्षणशूले च योनिशूले च शस्यते ।
यथोक्तानां च गुल्मानां वातशोणितकाश्च ये३५
बल्यं रसायनं शीतं सुकुमारकुमारकम् ।
पुनर्नवाशते द्रोणो देयोऽन्येषु तथापरः ॥ ३६ ॥

इति मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ।

(७ सुकुमारकुमारकघृतम्) सांठीकी जड ४०० तोले और दशमूल शतावरी खरैंहटी आसगंध रोहिषतृणकी जड गोखरू विदारीकंद वंशलोचन नागकेसर गिलोय गंगेरन ये सब चालीस चालीस तोलेभर ले १०२४ तोलेभर

पानीमें पकावै। जब चतुर्थांश शेष रहै तब १२८ तोलेभर घृत डाल पकावै और महुआ अदरक दाख सेंधानमक पीपल ये सब आठ तोले और अजमान १६ तोले इसमें गुड १२० तोले अरंडका तेल ६४ तोले मिलाय आलोडित कर अच्छीतरह कोमल अग्निसें पकावै। यह भाग्यवान्के पुत्रोंकों प्रभातके भोजनसें पहले खाना उत्तम है और राजाओंकों तथा राजमान्य लोगोंकों तथा बहुत स्त्रियोंके पतियोंकों मूत्रकृच्छ्रमें कटिस्तंभमें तथा गाढा विष्ठावालोंके लिंगशूल अंडसंधिशूल और योनिशूल इन्होंमें यह घृत श्रेष्ठ है । यथायोग्य गुल्मवालोंकों तथा वातरक्तवालोंकों बल करताहै रसायन है शीतल है। यह सुकुमारकुमारनामक घृत है। चारसों तोलेभर सांठीकी जडमें एक द्रोणभर पानी देना और अन्य ओषधियोंमें दूसरा द्रोण अर्थात् १०२४ तोलेभर पानी देना।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां टीकायां मूत्रकृच्छ्रचिकित्सा ।

अथ मूत्राघाताधिकारः ३२

अब मूत्राघातका अधिकार कहतेहैं ।

(१)मूत्राघातान्यथादोषं मूत्रकृच्छ्रहरैर्जयेत् ।
बस्तिमुत्तरबस्तिं च दद्यात्स्निग्धं विरेचनम् ॥१॥
कल्कमेर्वारुबीजानामक्षमात्रं ससैन्धवम् ।
धान्याम्लयुक्तं पीत्वैव मूत्राघाताद्विमुच्यते ॥२॥
पाटल्या यावशूकाच्च पारिभद्रात्तिलादपि ।
क्षारोदकेन मदिरां त्वगेलोषणसंयुताम् ॥ ३ ॥
पिबेद्गुडोपदंशान्वा लिह्यादेतान्पृथक्पृथक् ।
त्रिफलाकल्कसंयुक्तं लवणं वापि पाययेत् ॥४॥
निदिग्धिकायाः स्वरसं पिबेद्वातान्तरस्रुतम् ।
जले कुङ्कुमकल्कं वा सक्षौद्रमुषितं निशि ॥ ५ ॥
सतैलं पाटलाभस्म क्षारवद्वा परिस्रुतम् ।
सुरां सौवर्चलवतीं मूत्राघाती पिबेन्नरः ॥ ६ ॥
दाडिमाम्बुयुतं मुख्यमेलाबीजं सनागरम् ।
पीत्वा सुरां सलवणां मूत्रघाताद्विमुच्यते ॥ ७ ॥
पिबेच्छिलाजतुक्वाथे गणे वीरतरादिके ।
रसं दुरालभाया वा कषाये वासकस्य वा ॥ ८॥

(१ मूत्राघातोपायाः) जैसा दोष हो उसके अनु-

सार मूत्राघातोंकों मूत्रकृच्छ्रनाशक औषधोंसें हरै और बस्ति उत्तरबस्ति तथा स्निग्ध विरेचन देना। खर्बूजाके बीजोंका कल्क बनाय एक तोलाभर ले उसमें सेंधानमक डाल कांजीसें युत कर पीवै तो मनुष्य मूत्राघातसें छूटताहै। रक्तपाडल जवाखार नींब तिल इन्होंकी खारेपानीसें मदिरा बनाय दालचिनी इलायची मिरच इन्होंसें युत कर पीवै अथवा इन्होंकों अलग अलग गुडमें मिलाय चाटै अथवा त्रिफलाका कल्कसें युत किये सेंधानमककों पीवै अथवा कटेलीके स्वरसकों कपडामाहसें छान पीवै। अथवा पानीमें केसरका कल्क और शहद घाल रात्रिभर धर पीवै अथवा पाटलाके भस्मकों खारकी तरह झिराके तेलसें युत कर पीवै। काला नमकसें बनी मदिराकों मूत्राघातवाला पीवै अथवा अनारका रसमें छोटी इलायचीका बीज और सोंठ मिलाके पीवै। सेंधानमकसहित मदिराकों पीकै मनुष्य मूत्राघातसें छूटताहै। शिलाजितके क्वाथमें अथवा वीरतर्वादिगणके क्वाथमें जवासाके रसकों अथवा वांसाके क्वाथकों पीवै।

(२)त्रिकण्टकैरण्डशतावरीभिः
सिद्धं पयो वा तृणपञ्चमूलैः।
गुडप्रगाढं सघृतं पयो वा
रोगेषु कृच्छ्रादिषु शस्तमेतम्॥ ९॥
नलकुशकाशेक्षुशिफां
क्वथितां प्रातः सुशीतलां शीताम्।
पिबतः प्रयाति नियतं
मूत्रग्रह इत्युवाच कचः॥ १०॥
गोधावत्या मूलं
क्वथितं घृततैलगोरसैर्मिश्रम्।
पीतं निरुद्धमचिरा-
च्छिनत्ति मूत्रस्य संघातम्॥ ११॥
जलेन खदिरीबीजं मूत्राघाताश्मरीहरम्।
मूलं तु त्रिजटायाश्च तक्रपीतं तदर्थकृत्॥ १२॥
मूत्रे विबद्धे कर्पूरचूर्णं लिङ्गे प्रवेशयेत्।
शृतशीतपयोन्नाशी चन्दनं तण्डुलाम्बुना॥१३॥
पिबेत्सशर्करं श्रेष्ठमुष्णवाते सशोणिते।
शीतोऽवगाह आबस्तिमुष्णवातनिवारणः॥१४॥
कूष्माण्डकरसश्चापि पीतः सक्षारशर्करः।
स्त्रीणामतिप्रसङ्गेन शोणितं यस्य सिच्यते १५
मैथुनोपरमश्चास्य बृंहणीयो हितो विधिः।
स्वगुप्ताफलमृद्वीकाकृष्णेक्षुरसितारजः॥ १६॥
समांशमर्धभागानि क्षीरक्षौद्रघृतानि च।
सर्वं सम्यग्विमथ्याक्षमात्रं लीढ्वा पयः पिबेत्१७
हन्ति शुक्राशयोत्थांश्च दोषान्वन्ध्यासुतप्रदम्।

(**२ त्रिकंटकादिसिद्धं पयः**) गोखरू अरंड शतावरी इन्होंमें सिद्ध किया घृत अथवा दूध अथवा तृणपंचमूलोंमें सिद्ध किया घृत अथवा दूध गुडसें युतकर पीयाहुआ मूत्रकृच्छ्रआदि रोगोंमें श्रेष्ठ है। नड कुशा काश ईख इन्होंकी जडका शीत क्वाथ बनाय प्रभातमें नित्य पीवै तो मूत्रग्रह जाता रहता है। यह कच मुनिनें कहा है। वटपत्री पाषाणभेदकी जडका क्वाथ बनाय उसमें घृत तेल गोरस मिलाय पीवै तो रुकाहुआ मूत्रसंघातकों शीघ्र नाशता है। खैरके बीजकों पानीसें पीवै तो मूत्राघात और पथरीका नाश होता है। त्रिजटाकी जडकों तक्रसें पीवै तो मूत्राघात और पथरीका नाश होता है। मूत्रबंधमें कपूरका चूर्ण लिंगमें प्रवेश करना। पकाके शीतल किया दूधके साथ अन्नकों खानेवाला मनुष्य चावलोंका पानीके संग चंदनकों खांडसें युतकर रक्तसहित उष्णवातमें पीवै बस्तिपर्यंत शीतल पानीमें बैठना उष्णवातकों नाशता है। और कोहलाका रसमें जवाखार और खांड डाल पीवै। स्त्रियोंके अतिप्रसंगकरकै जिसका रक्त झिरै उसकों स्त्रीसंग नहीं करने देना और वीर्यकों बढानेवाली विधि करानी हित है। कौंचके बीज मुनकादाख पीपल कालाईख मिश्रीका चूर्ण ये सब बराबर भाग और दूध शहद घृत आधे आधे भाग संपूर्णकों अच्छीतरह मथकर एक तोलाभर ले चाटकै ऊपर दूधकों पीवै तो वीर्याशयसें उठे दोषोंकों नाशता है। और वंध्यास्त्रीकों पुत्र उपजाता है।

(३)चित्रकं शारिवा चैव बलाकालानुशारिवा १८
द्राक्षा विशाला पिप्पल्यस्तथा चित्रफला भवेत्।
तथैव मधुकं दद्याद्दद्यादामलकानि च॥ १९॥
घृताढकं पचेदेभिः कल्कैरक्षसमन्वितैः।
क्षीरद्रोणे जलद्रोणे तत्सिद्धमवतारयेत्॥ २०॥
शीतं परिस्रुतं चैव शर्कराप्रस्थसंयुतम्।
तुगाक्षीर्याश्च तत्सर्वं मतिमान्प्रतिमिश्रयेत् २१

ततो मितं पिबेत्काले यथादोषं यथाबलम् ।
वातरेताः पित्तरेताः श्लेष्मरेताश्च यो भवेत् २२
रक्तरेता ग्रन्थिरेताः पिबेदिच्छन्नरोगताम् ।
जीवनीयं च वृष्यं च सर्पिरेतन्महागुणम् ॥२३॥
प्रजाहितं च धन्यं च सर्वरोगापहं शिवम् ।
सर्पिरेतत्प्रयुञ्जाना स्त्री गर्भं लभतेऽचिरात् २४
असृग्दोषाञ्जयेच्चैव योनिदोषांश्च संहतान् ।
मूत्रदोषेषु सर्वेषु कुर्यादेतच्चिकित्सितम् ॥ २५ ॥
इति मूत्राघातचिकित्सा ।

(३ चित्रकाद्यं घृतम्) चीता अनंतमूल खरैंहटी शीसम दाख इंद्रायण पीपल परवल महुवा आंवला ये सब एक एक तोलाभर लेकै २५६ तोलेभर घृतकों पकावै। दूध १०२४ तोले पानी १०२४ तोले इन्होंमें सिद्ध कर उतारै शीतल कर और छान पीछे ६४ तोलेभर खांड डालै और वंशलोचन ६४ तोले इन सबकों मिलावै पीछे जैसा दोष और बल हो उसके अनुसार प्रमाणितकों समयमें पीवै रक्तसहित वीर्यवाला ग्रंथियोंसहित वीर्यवाला मनुष्य पीवै। तो रोग नहीं रहता है । यह घृत जीवन देता है । वीर्यकों वढाता है और बहुत गुण करता है । प्रजामें हित है उत्तम है और सब रोगोंकों नाशता है । कल्याणरूप है । इस घृतकों सेवनेवाली स्त्री शीघ्र गर्भ धारण करती है और रक्तदोषोंकों तथा इकठ्ठेहुये योनिदोषोंकों तथा सब प्रकारके मूत्रदोषोंमें यह चिकित्सा करनी ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनुपंडितरविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां मूत्राघातचिकित्सा ।

अथाश्मर्यधिकारः ३३

अब पथरीरोगका अधिकार कहते है ।

(१)वरुणस्य त्वचं श्रेष्ठां शुण्ठीगोक्षुरसंयुताम् ।
यवक्षारगुडं दत्वा क्वाथयित्वा पिबेद्धिताम् ॥१॥
अश्मरीं वातजां हन्ति चिरकालानुबन्धिनीम् ।
वीरतरः सहचरी दर्भो वृक्षादनी नलः ॥ २ ॥
गुन्द्राकाशकुशावश्मभेदमोरटटुण्टुकाः ।
कुरुण्टिका च वशिरो वसुकः साग्निमन्थकः ३
इन्दीवरी श्वदंष्ट्रा च तथा कापोतवक्रकः ।
वीरतरादिरित्येष गणो वातविकारनुत् ॥ ४ ॥
अश्मरीशर्करामूत्रकृच्छ्राघातरुजापहः ।
शुण्ठ्यग्निमन्थपाषाणशिग्रुवरुणगोक्षुरैः ॥ ५ ॥
अभयारग्वधफलैः क्वाथं कुर्याद्विचक्षणः ।
रामठक्षारलवणचूर्णं दत्वा पिबेन्नरः ॥ ६ ॥
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रघ्नं पाचनं दीपनं परम् ।
हन्यात्कोष्ठाश्रितं वातं कट्यूरुगुदमेढ्रगम् ॥ ७ ॥

(१ अश्मर्यां वरुणत्वगादि) वरनाकी सुंदर छालकों सोंठ और गोखरूसें युतकर क्वाथ बनाय उसमें जवाखार और गुड मिलाय पीवै तो बहुत कालसें उपजी वातकी पथरीका नाश होता है । कालानेत्रवाला कोरंटा डाभ अमरवेल वालछड भद्रमोथा काश कुशा पाषाणभेद ईखकी जड पीलालोध कुरडू गजपीपल सोरा अरनी कमलिनी गोखरू ब्राह्मी यह वीरतरादिगण वातके विकारकों नाशता है । और पथरी शर्करा मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रशूल इन्होंकों नाशता है । सोंठ अरनी पाषाणभेद सहोंजना बरना गोखरू हरडै अमलतास इन्होंका क्वाथ बनाना उसमें हींग जवाखार सेंधानमक इन्होंका चूर्ण डाल मनुष्य पीवै तो पथरी और मूत्रकृच्छ्रकों नाशता है पाचन तथा उत्तम दीपन है । कोष्ठगतवातकों और कटि जंघा गुदा लिंग इन्होंमें प्राप्तहुये वातकों नाशता है ।

(२)पाषाणभेदो वसुको वशिरोऽश्मन्तकं तथा ।
शतावरी श्वदंष्ट्रा च बृहती कण्टकारिका॥ ८ ॥
कपोतवक्रार्तगलकाञ्चनोशीरगुल्मकाः ।
वृक्षादनीभल्लुकश्च वरुणः शाकजं फलम् ॥ ९ ॥
यवाः कुलत्थाः कोलानि कतकस्य फलानि च ।
उषकादिप्रतीवापमेषां क्वाथे शृतं घृतम् ॥ १० ॥
भिनत्ति वातसम्भूतामश्मरीं क्षिप्रमेव तु ।
क्षारान्यवागूः पेयाश्च कषायाणि पयांसि च ।
भोजनानि च कुर्वीत वर्गेऽस्मिन्वातनाशने ११

(२ कशाद्यं घृतम्) पाषाणभेद सोरा गजपीपल चूका शतावरी गोखरू बडीकटेली छोटीकटेली ब्राह्मी कुरंटा कचनार खस रक्तकनेर अमरवेल पीलाटेंटू वरना शाकजफल जव कुलथी वेर कैथका फल इन्होंके क्वाथमें उषकादि गणका प्रतिवाप देकै घृत सिद्ध करना यह वातसें उपजी पथरीकों शीघ्र नाशता है । खार गुडयाणी पेया क्वाथ दूध भोजन ये सब इस वातनाशक वर्गमें करने ।

(३)उषकं सैन्धवं हिङ्गुकाशीसद्वयगुग्गुलुः ।
शिलाजतु तुत्थकं च उषकादिरुदाहृतः ॥ १२ ॥
उषकादिः कफं हन्ति गणो मेदोविशोधनः ।
अश्मरीशर्करामूत्रशूलघ्नः कफगुल्मनुत् ॥ १३ ॥

(३ उषकादिगणः) ईख सेंधानमक हींग दोनों कसीस गूगल शिलाजित नीलाथोथा यह उषकादिगण कहा है । उषकादिगण कफकों हरता है । मेदकों शोधता है पथरी शर्करा मूत्रकृच्छ्र शूल कफगुल्म इन्होंकों नाशता है ।

(४)कुशः काशः शरो गुल्म इत्कटो मोरटोऽश्मभित् ।
दर्भो विदारी वाराही शालिमूलं त्रिकण्टकः१४
भल्लूकः पाटली पाठा पत्तूरोऽथ कुरुण्टिकाः ।
पुनर्नवे शिरीषश्च क्वथितास्तेषु साधितम् ॥१५॥
घृतं शिलाह्वमधुकं बीजैरिन्दीवरस्य च ।
त्रपुषैर्वारुकाणां वा बीजैश्चावापितं शृतम् १६
भिनत्ति पित्तसम्भूतामश्मरीं क्षिप्रमेव तु ।
क्षारान्यवागूः पेयाश्च कषायाणि पयांसि च ।
भोजनानि च कुर्वीत वर्गेऽस्मिन्पित्तनाशने १७

(४ कुशाद्यं घृतम्) कुशा काश शर कालाईख खैर पाषाणभेद डाभ विदारीकंद वाराहीकंद चौलाईकी जड गोखरू पीलाटेंटू पाटली पाठा पतंग दोनोंसांठी शिरस इन्होंके क्वाथोंमें साधित किया और शिलाजित महुवा कमलके बीज काकडी और खर्बूजाके बीजोंकी प्रतिवापसें युत किया घृत पित्तकी पथरीकों शीघ्र नाशता है । खार गुडयाणी पेया क्वाथ दूध और भोजन इस पित्तनाशक वर्गमें करै ।

(५)गणे वरुणकादौ च गुग्गुल्वेलाहरेणुभिः ।
कुष्ठमुस्ताह्वमरिचचित्रकैः ससुराह्वयैः ॥ १८ ॥
एतैः सिद्धमजासर्पिरुषकादिगणेन च ।
भिनत्ति कफसम्भूतामश्मरीं क्षिप्रमेव तु ॥१९॥
क्षारान्यवागूः पेयाश्च कषायाणि पयांसि च ।
भोजनानि प्रकुर्वीत वर्गेऽस्मिन्कफनाशने ॥२०॥
तरुणार्तगलः शिग्रुतर्कारीमधुशिग्रुकाः ।
मेषशृङ्गीकरञ्जौ च बिम्ब्यग्निमन्थमोरटाः ॥२१॥
शैरियौ शिरीषो दर्भौ वरी वसुकचित्रकौ ।
बिल्वं चैवाजशृङ्गी च बृहतीद्वयमेव च ॥२२॥
वरुणादिगणो ह्येष कफमेदोनिवारणः ।
विनिहन्ति शिरःशूलं गुल्माद्यन्तरविद्रधीन् २३

(५ वरुणादिघृतम्) वरुणादिगणमें गूगल इलायची रेणुकबीज कूट नागरमोथा मिरच चीता देवदार इन्होंके क्वाथमें उषकादिगणके प्रतिवापसें सिद्ध किया बकरीका घृत कफकी पथरीकों नाशता है । खार गुडयाणी पेया क्वाथ दूध भोजन ये सब कफनाशक इस वर्गमें करने । वरना कालाकुरंटा सहोंजना अरनी मीठासहोंजना मेंढाशिंगी करंजुवा कडवीतोरी अरनी ईखकी जड कुरंटा शिरस डाभ शतावरी सोरा चीता बेलगिरी काकडाशींगी दोनों कटेली यह वरुणादिगण कफ और मेदकों निवारण करता है और शिरका शूल गुल्मआदि और अंतर्विद्रधि इन्होंकों नाशता है ।

(६)वरुणत्वक्कषायं तु पीतं च गुडसंयुतम् ।
अश्मरीं पातयत्याशु बस्तिशूलनिवारणम् ॥२४॥
यवक्षारं गुडोन्मिश्रं पिबेत्पुष्पफलोद्भवम् ।
रसं मूत्रविबन्धघ्नं शर्काश्मरिविनाशनम् ॥ २५ ॥
पिबेद्वरुणमूलत्वक्क्काथं तत्कल्कसंयुतम् ।
क्वाथश्च शिग्रुमूलोत्थः कदुष्णोऽश्मरिघातनः२६

नागरवारुणगोक्षुर-
पाषाणभेदकपोतवल्कजः क्वाथः ।
गुडयावशूकमिश्रः
पीतो हन्त्यश्मरीमुग्राम् ॥ २७ ॥

वरुणत्वक्शिलाभेदशुण्ठीगोक्षुरकैः कृतः ।
कषायः क्षारसंयुक्तः शर्करां च भिनत्त्यपि २८
श्वदंष्ट्रैरण्डपत्राणि नागरं वरुणत्वचम् ।
एतत्क्काथवरं प्रातः पिबेदश्मरिभेदनम् ॥ २९ ॥

मूलं श्वदंष्ट्रेक्षुरकोरुबूकात्
क्षीरेण पिष्टं बृहतीद्वयाच्च ।
आलोड्य दध्ना मधुरेण पेयं
दिनानि सप्ताश्मरिभेदनार्थम् ॥ ३० ॥

पक्वेक्ष्वाकुरसः क्षारः सितायुक्तोऽश्मरीहरः ३१
पाषाणरोगपीडां सौवर्चलयुक्ता सुरा जयति ।
तद्वन्मधुदुग्धयुक्ता त्रिरात्रं तिलनालभूतिश्च ३२

(६ वरुणत्वक्कषायादि) वरनाकी छालके क्वाथमें गुड मिलाय पीवै तो पथरीकों शीघ्र पातित करता है। और बस्तिशूलका नाश होता है। जवाखारकों और गुडसहित पुष्प फलके रसकों पीवै तो मूत्रका बंधा शर्करा पथरी इन्होंका नाश होता है। वरनाकी जडके क्वाथमें वरनाका कल्क डाल पीवै और सहोंजनाकी जडका क्वाथ बनाय अल्प गरम रहाकों पीवै तो पथरीकों नाशता है। सोंठ वरना गोखरू पाषाणभेद ब्राह्मी इन्होंका क्वाथमें जवाखार और गुड डाल पीवै तो भयंकर पथरीका नाश होता है। वरनाकी छाल पाषाणभेद सोंठ गोखरू इन्होंका क्वाथ जवाखारसें युत कर पीवै तो शर्कराकों काटता है। गोखरू अरंडके पत्ते सोंठ वरनाकी छाल इस उत्तम क्वाथकों प्रभातमें पीवै तो पथरीका नाश होता है। गोखरू तालमखाना अरंडकी जड दोनों कटेलियोंकी जड इन्होंकों दूधसें पीस मधुर दहीसें आलोडित कर सातदिन पीवै तो पथरीका नाश होता है। कडवी तूंबीका रस जवाखार मिश्री इन्होंकों मिलाय पीवै तो पथरीका नाश होता है। पथरीकी पीडाकों कालानमकसें युत करी मदिरा जीतती है तैसेही शहद और दूधसें युत करी मदिरा तीन रात्रिमें जीतती है और तिलोंकी नालकी भस्मभी तीन रात्रिमें जीतती है।

(७)एलोपकुल्यामधुकाश्मभेद-
कौन्तीश्वदंष्ट्रावृषकोरुबूकैः ।
क्वाथं पिबेदश्मजतुप्रगाढं
सशर्करे साश्मरिमूत्रकृच्छ्रे ॥ ३३ ॥

(७ एलादिः) इलायची कलौंजी महुवा पाषाणभेद रेणुकबीज गोखरू वासा अरंड इन्होंका क्वाथ बनाय उसमें आसगंध और लाख मिलाय शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंमें पीवै।

(८)त्रिकण्टकस्य बीजानां चूर्णं माक्षिकसंयुतम् ।
अविक्षीरेण सप्ताहं पिबेदश्मरिनाशनम् ।
शुक्राश्मर्यां तु सामान्यो विधिरश्मरिनाशनः३४

(८ त्रिकंटकाख्यं चूर्णम्) गोखरूके बीजोंका चूर्ण बनाय उसमें शहद डाल भेडका दूधसें सातदिन पीवै तो पथरीका नाश होता है। शुक्राश्मरीमें तो अश्मरीनाशक सामान्य विधि करनी हित है।

(९)पाषाणभेदं वृषकं श्वदंष्ट्रा-
पाठाभयाव्योषशठीनिकुम्भाः ।
हिंस्राखराश्वासितिमारकाणा-
मेर्वारुकाच्च त्रपुषाच्च बीजम् ॥ ३५ ॥
उपकुञ्चिकाहिङ्गुसवेतसाम्लं
स्याद्वे बृहत्यौ हपुषा वचा च ।
चूर्णं पिबेदश्मरिभेदि पक्कं
सर्पिश्च गोमूत्रचतुर्गुणं तैः ॥ ३६ ॥

(९ पाषाणभेदाद्यं चूर्णम्) पाषाणभेद वासा गोखरू पाठा हरडै सोंठ मिरच पीपल कचूर जमालगोटाकी जड वालछड ताडका शिर इंद्रायण कुरड्ड भंगरा खर्बूजाके बीज काकडीके बीज कलौंजी हींग आम्लवेतस दोनों कटेली हाऊबेर वच इन्होंका चूर्ण और चौगुना गोमूत्रमें सिद्ध किया घृत पथरीकों काटता है।

(१०)कुलत्थसिन्धूत्थविडङ्गसारं
सशर्करं शीतलियावशूकम् ।
बीजानि कूष्माण्डकगोक्षुराभ्यां
घृतं पचेन्ना वरुणस्य तोये ॥ ३७ ॥
दुःसाध्यसर्वाश्मरिमूत्रकृच्छ्रं
मूत्राभिघातं च समूत्रबन्धम् ।
एतानि सर्वाणि निहन्ति शीघ्रं
प्ररूढवृक्षानिव वज्रपातः ॥ ३८ ॥

(१० कुलत्थाद्यं घृतम्) कुलथी सेंधानमक वायविडंग सार खांड कपूर जवाखार कोहलाके बीज गोखरू इन्होंकी प्रतिवाप देकै वरनाके क्वाथमें घृतकों पकावै। असाध्यरूप सब पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राभिघात मूत्रबंध इन सबकों यह घृत नाशता है। जैसे वज्रका पात उगेहुये वृक्षोंकों।

(११)शरादिपञ्चमूल्या वा कषायेण पचेद्घृतम्
प्रस्थं गोक्षुरकल्केन सिद्धमद्यात्सशर्करम् ।
अश्मरीमूत्रकृच्छ्रघ्नं रेतोमार्गरुजापहम् ॥ ३९ ॥

(११ शरादिपंचमूल्यादिघृतम्) अथवा शरआदि तृणपंचकके क्वाथमें गोखरूका कल्क डाल ६४ तोलेभर घृत सिद्ध कर खांड मिलाय खावै तो अश्मरी मूत्रकृच्छ्रकों रोकता है और मूत्रमार्गरोग नष्ट करता है।

(१२)वरुणस्य तुलां क्षुण्णां जलद्रोणे विपाचयेत्
पादशेषं परिस्राव्य घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥४०॥
वरुणं कदली बिल्वं तृणजं पञ्चमूलकम्।
अमृतां चाश्मजं देयं बीजं च त्रपुषोद्भवम्॥४१
शतपर्वतिलक्षारं पलाशक्षारमेव च ।
यूथिकायाश्च मूलानि कार्षिकाणि समावपेत्४२
अस्य मात्रां पिबेज्जन्तुर्देशकालाद्यपेक्षया ।
जीर्णे तस्मिन्पिबेत्पूर्वं गुडं जीर्णं तु मस्तुना ।
अश्मरीं शर्करां चैव मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेत् ४३

(१२ वरुणाद्यं घृतम्) वरना केला वेलगिरी तृणपंचमूल गिलोय पाषाणभेद काकडीके बीज वंशलोचन तिलोंका खार केशूका खार जूईकी जड ये सब एक एक तोले ले प्रतिवास देवै । इसकी मात्राकों मनुष्य देश काल आदिकी अपेक्षासें पीवै । जीर्ण हो जावे तब प्रथम पुराना गुडकों दहीका पानीके साथ पीवै । पथरी शर्करा और मूत्रकृच्छ्रकों नाशता है ।

(१३)व्रध्नाधिकारे यत्तैलं सैन्धवाद्यं प्रकीर्तितम्
तत्तैलं द्विगुणक्षीरं पचेद्वीरतरादिना ॥ ४४ ॥
क्वाथेन पूर्वकल्केन साधितं तु भिषग्वरैः ।
एतत्तैलवरं श्रेष्ठमश्मरीणां विनाशनम् ॥ ४५ ॥
मूत्राघाते मूत्रकृच्छ्रे पिच्छिते मथिते तथा ।
भग्ने श्रमाभिपन्ने च सर्वथैव प्रशस्यते ॥ ४६ ॥

(१३ वीरतराद्यं तैलम्) व्रध्नरोगके अधिकारमें जो सैंधवादि तेल कहा है वह तेल दुगुना दूध और वीरतरादि गणके क्वाथ और पूर्व कल्ककरकै उत्तम वैद्योंनें पकाना यह श्रेष्ठ तेल पथरियोंकों नाशता है । मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र पिच्छित मथित भग्न परिश्रमसें युत इन्होंमें सब प्रकारसें श्रेष्ठ है ।

(१४)त्वक्पत्रमूलपुष्पस्य वरुणात्सत्रिकण्टकात्।
कषायेण पचेत्तैलं बस्तिना स्थापनेन च ।
शर्कराश्मरिशूलघ्नं मूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ॥ ४७ ॥

(१४ वरुणाद्यं तैलम्) वरनाके छाल जड फूल गोखरू इन्होंके क्वाथसें तेलकों पकावै पीछे स्थापन बस्तिसें वर्तै । शर्करा पथरी शूल और मूत्रकृच्छ्र इन्होंकों नाशता है ।

(१५)शल्यवित्तामशाम्यन्तीं प्रत्याख्याय समुद्धरेत्।
पायुक्षिप्ताङ्गुलीभ्यां तु गुदमेढ्रान्तरे गताम् ४८
सेवन्याः सव्यपार्श्वे च यवमात्रं विमुच्य तु ।
व्रणं कृत्वाश्मरीमात्रं कर्षेत्तां शस्त्रकर्मवित् ४९
भिन्ने तु बस्तौ दुर्ज्ञानान्मृत्युः स्यादश्मरीं विना।
निःशेषामश्मरीं कुर्याद्वस्तौ रक्तं च निर्हरेत् ५०
हृताश्मरीकदुष्णाम्भो गाहयेद्भोजयेच्च तम् ।
गुडं मूत्रविशुद्ध्यर्थं मध्वाज्याक्तव्रणं ततः ॥५१॥
दद्यात्साज्यां त्र्यहं पेयां साधितां मूत्रशोधिभिः।
आदशाहं ततो दद्यात्पयसा मृदुनोदनम्॥५२॥
स्वेदयेद्यवमध्वाढ्यं कषायैः क्षालयेद्व्रणम् ।
प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठायष्टिलोध्रैश्च लेपयेत् ॥ ५३ ॥
एतैश्च सलिलैः सिद्धं घृतमभ्यञ्जने हितम् ।
अप्रशान्ते तु सप्ताहाद्व्रणे दाहोऽपि चेष्यते ॥
दैवान्नाभ्यां तु या लग्ना तां विपाट्यापकर्षयेत् ५४

इत्यश्मरीशर्कराचिकित्सा ।

(१५ शल्योद्धरणाद्युपायाः) शल्यकर्मकों जाननेवाला वैद्य अत्यंत असाध्यरूप पथरीकों छोडकै गुदामें प्राप्तकरी दो अंगुलियोंकरकै गुदा और लिंगमें प्राप्तहुई पथरीकों निकासै । सीमनके वामी पांसुमें जवमात्रकों छोड घाव बनाय शस्त्रकर्म जाननेवाला वैद्य पथरीकों निकासै । अज्ञानसें बस्ति भिन्न होजावे तो पथरीके विनाभी मृत्यु होजाता है । शेषसें रहित पथरीकों करकै हाथोंसें रक्तकों निकासै। जिसकी पथरी निकासी जावै वह अल्प गरम पानीसें न्हावै और उसीकों पीवै । शहद और घृतसें अभ्यक्त किया घाववालाकों मूत्रकी शुद्धिके अर्थ गुड देना । मूत्रकों शोधित करनेवाले औषधोंसें बनीहुई और घृतसें युत करी ऐसी पेया देनी और दश दिनपर्यंत दूधके साथ कोमल भोजन देना । जव और शहदसें युतकिये पदार्थसें स्वेद अर्थात् पसीना देवै और क्वाथोंसें घावकों धोवै । कमल मजीठ मुलहटी लोध इन्होंसें लेप करै और इन ओषधोंकरकै सिद्ध किया घृत मालिसमें हित है । सात दिनतक घाव शांत नहीं हो तो दाहभी

वांछित है । दैवयोगसें नाभिमें लगीहुई पथरीकों पाड़कर निकासै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायसूनुपंडितरविदत्तराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायामश्मरीशर्कराचिकित्सा ।

अथ प्रमेहाधिकारः ३४

अब प्रमेहअधिकार कहतेहै ।

(१)श्यामाककोद्रवोद्दालगोधूमचणकाढकी ।
कुलत्थाश्च हिता भोज्ये पुराणमेहिनां सदा॥१॥
जाङ्गलं तिक्तशाकानि यवान्नं च तथा मधु ।
पारिजातजयानिम्बवह्निगायत्रिणां पृथक् ॥ २ ॥
पाठायाः सागुरोः पीता द्वयस्य शारदस्य च ।
जलेक्षुमद्यसिकतां शनैर्लवणपिष्टकान् ।
सान्द्रमेहान्क्रमाद्घ्नन्ति अष्टौ क्वाथाः समाक्षिकाः
दूर्वाकशेरुपूतीकपुंभीकल्वव(?)शैवलम् ।
जलेन क्वथितं पीतं शुक्रमेहहरं परम् ॥ ४ ॥
त्रिफलारग्वधद्राक्षाकषायो मधुसंयुतः ।
पीतो निहन्ति फेनाख्यं प्रमेहं नियतं नृणाम् ५

(१ प्रमेहोपायाः) प्रमेहरोगवालोंकों सामक कोदू कोदूके आकारवाला चावल गेहूं चना अहेर और कुलथी ये सब पुराने भोजनमें हित हैं । जांगल देशके जीवका मांस कडुवेशाक जवअन्न शहद ये हित हैं । देवदार अरनी नींब चीता खैर पाठा अगर श्वेतकमल इन्होंके अलग अलग शहदसें युत करे आठ क्वाथ जलप्रमेह इक्षुप्रमेह मदिराप्रमेह सिकताप्रमेह शनैःप्रमेह लवणप्रमेह पिष्टप्रमेह सांद्रप्रमेह इन्होंकों क्रमसें नाशते हैं । दूब कशेरु करंजुवा केसर नयी सेवाल इन्होंका पानीसें क्वाथ बनाय पीवै तो शुक्रप्रमेहकों हरता है । त्रिफला अमलतास दाख इन्होंका क्वाथ शहदसें संयुक्त कर पीया जावै तो फेनप्रमेहकों नाशता है ।

(२)लोध्राभयाकट्फलमुस्तकानां
विडङ्गपाठार्जुनधन्वनानाम् ।
कदम्बशालार्जुनदीप्यकानां
विडङ्गदार्वीधवशल्लकीनाम् ॥ ६ ॥
चत्वार एते मधुना कषायाः
कफप्रमेहेषु निषेवणीयाः ॥ ७ ॥

अश्वत्थाच्चतुरङ्गुल्या न्यग्रोधादेः फलत्रिकात् ।
सजिङ्गिरक्तसाराच्च क्वाथाः पञ्च समाक्षिकाः ८
नीलदरिद्रफेनाख्यक्षारमञ्जिष्ठकाह्वयान् ।
मेहान्हन्युः क्रमादेते सक्षौद्रो रक्तमेहनुत् ।
क्वाथः खर्जूरकाश्मर्यतिन्दुकास्थ्यमृताकृतः ॥९॥
लोध्रार्जुनोशीरकुचन्दनाना-
मरिष्टसेव्यामलकाभयानाम् ।
धात्र्यर्जुनारिष्टकवत्सकानां
नीलोत्पलैलातिनिशार्जुनानाम् ॥ १० ॥
चत्वार एते विहिताः कषायाः
पित्ते प्रमेहे मधुसंप्रयुक्ताः ॥ ११ ॥

(२लोध्रादिचत्वारः कषायाः) लोध हरडै कायफल नागरमोथा १, वायविडंग पाठा अर्जुनवृक्ष जवासा २, कदंब शाल अर्जुन अजमोद ३, वायविडंग दारुहलदी धोकेफूल शालई ४ ये चारों क्वाथ शहदसें संयुत कर कफके प्रमेहोंमें सेवने योग्य हैं । पीपलसें अमलताससें न्यग्रोधादिगणसें त्रिफलासें मजीठसहित लालचंदनसें अलग अलग पांच क्वाथ बनाय शहदसें संयुक्त कर पानकिये नीलप्रमेह हारिद्रप्रमेह क्षारप्रमेह मांजिष्ठप्रमेह इन तीन प्रमेहोंकों क्रमसें नाशते हैं । और खजूरिया कंभारी कुचलाकी गिरी गिलोय इन्होंका क्वाथ शहदसें संयुक्त किया रक्तप्रमेहकों नाशता है । लोध अर्जुनवृक्ष खस लालचंदन मजीठ नेत्रवाला आंवला हरडै आंवला अर्जुनवृक्ष नींब कूडा नीलाकमल इलायची सुंदर हलदी अर्जुनवृक्ष ये चारों क्वाथ शहदसें संयुक्त किये प्रमेहमें हित हैं ।

(३)छिन्नावह्निकषायेण पाठाकुटजरामठम् ।
तिक्तां कुष्ठं च संचूर्ण्य सर्पिर्मेहे पिबेन्नरः १२
कदरखदिरपूगक्वाथं क्षौद्राह्वये पिबेत् ।
अग्निमन्थकषायं तु वसामेहे प्रयोजयेत् ॥ १३ ॥
पाठाशिरीषदुस्पर्शमूर्वाकिंशुकतिन्दुकम् ।
कपित्थानां भिषक्क्वाथं हस्तिमेहे प्रयोजयेत् १४
कम्पिल्लसप्तच्छदशालजानि
विभीतरौहीतककौटजानि ।
कपित्थपुष्पाणि च चूर्णितानि
क्षौद्रेण लिह्यात्कफपित्तमेही ॥ १५ ॥
सर्वमेहहरा धात्र्या रसः क्षौद्रनिशायुतः ।
कषायस्त्रिफलादारुमुस्तकैरथवा कृतः ॥ १६ ॥

फलत्रिकं दारुनिशां विशालां
मुस्तं च निःक्वाथ्य निशांशकल्कम् ।
पिबेत्कषायं मधुसंप्रयुक्तं
सर्वेषु मेहेषु समुत्थितेषु ॥ १७ ॥

(३ छिन्नाद्यन्ये क्वाथाः) गिलोय और चीताके क्वाथमें पाठा कूडा हींग कुटकी कूट इन्होंका चूर्ण डाल घृतप्रमेहमें पीवै । श्वेतखैर खैर सुपारी इन्होंके क्वाथकों क्षौद्रप्रमेहमें पीवै । अरनीके क्वाथकों वसाप्रमेहमें पीवै । पाठा शिरस जवासा मरोरफली केशू कुचला कैथ इन्होंके क्वाथकों वैद्य हस्तिप्रमेहमें पीवै । कपिला शातला अर्जुनवृक्ष बहेडा रोहित कूडा कैथ इन्होंके फूलोंका चूर्णकर शहद मिलाय कफपित्तके प्रमेहवाला चाटै । आंवलाका रस शहद और हलदीसें युत किया सब प्रमेहोंकों हरता है । अथवा त्रिफला देवदार नागरमोथा इन्होंसें किया क्वाथ शहदसें युत किया सब प्रमेहोंकों हरता है । त्रिफला दारुहलदी इंद्रायण नागरमोथा इन्होंका क्वाथ शहदसें संयुक्त किया सब प्रमेहोंमें हित है ।

(४)कटंकटेरीमधुकत्रिफलाचित्रकैः समैः ।
सिद्धः कषायः पातव्यः प्रमेहाणां विनाशनः १८
त्रिफलादारुदार्व्यब्दक्वाथः क्षौद्रेण मेहहा ।
कुटजाशनदार्व्यब्दफलत्रयभवोऽथवा ॥ १९ ॥
त्रिफलालोहशिलाजतुपथ्याचूर्णं च लीढमेकैकम्
मधुनामरास्वरस इव सर्वान्मेहान्निरस्यति॥२०॥
शालमुष्ककंकम्पिल्लकल्कमक्षसमं पिबेत् ।
धात्रीरसेन सक्षौद्रं सर्वमेहहरं परम् ॥ २१ ॥

(४ दारुहरिद्रादिक्वाथाः) दारुहलदी महुवा त्रिफला चीता ये सब बराबर भाग ले क्वाथ बनाय पीवै यह प्रमेहोंकों नाशता है । त्रिफला देवदार दारुहलदी नागरमोथा इन्होंका क्वाथ शहदसें युत किया प्रमेहकों नाशता है । अथवा कूडा आसना दारुहलदी देवदार त्रिफला इन्होंका क्वाथभी पूर्वोक्त फल करता है । त्रिफला लोह शिलाजित हरडै इन्होंमांहसें एक एकका चूर्ण शहदसें प्रमेहोंकों नाशता है । जैसे गिलोयका स्वरस अर्जुनवृक्ष मोषावृक्ष कपिला इन्होंका कल्क १ तोलाभर ले आंवलाका रसके संग शहदसहित पीवै तो सब प्रमेह नष्ट होता है ।

(५)न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थस्योनाकारग्वधाशनम् ।
आम्रजम्बूकपित्थं च प्रियालं ककुभं धवम् २२
मधुको मधुकं लोध्रं वरुणं पारिभद्रकम् ।
पटोलं मेषशृङ्गी च दन्ती चित्रकमाढकी ॥२३॥
करञ्जत्रिफलाशक्रभल्लातकफलानि च ।
एतानि समभागानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ॥
न्यग्रोधाद्यमिदं चूर्णं मधुना सह लेहयेत् ।
फलत्रयरसं चानु पिबेन्मूत्रं विशुध्यति ॥ २५ ॥
एतेन विंशतिर्मेहा मूत्रकृच्छ्राणि यानि च ।
प्रशमं यान्ति योगेन पीडका न च जायते ।
न्यग्रोधाद्यमिदं त्वत्र चाम्रजम्ब्वस्थि गृह्यते २६

(५ न्यग्रोधाद्यं चूर्णम्) वड गूलर पीपल स्योनाक अमलतास आसना आंब जामन कैथ चिरोंजी अर्जुन धौकेफूल मुलहटी महुवा लोध वरना देवदार परवल मेढाशिंगी जमालगोटाकी जड चीता मुलतानीमाटी करंजुवा त्रिफला इंद्रजव भिलावा ये सब बराबरभाग ले मिहीन चूर्ण करावै । यह न्यग्रोधादि चूर्ण शहदके साथ चाटना इसपर त्रिफलाका रस पीनेसें मूत्र शुद्ध होता है । इसकरकै वीसप्रकारके प्रमेह सब मूत्रकृच्छ्र शांत हो जाते हैं और पीडिका नहीं उपजती हैं । इस न्यग्रोधादिचूर्णमें आंब और जामनकी गुठली लेनी ।

(६)त्रिकण्टकाश्मन्तकसोमवल्कै-
र्भल्लातकैः सातिविषैः सलोध्रैः ।
वचापटोलार्जुननिम्बमुस्तै-
र्हरिद्रया दीप्यकपद्मकैश्च ॥ २७ ॥
मञ्जिष्ठपाठागुरुचन्दनैश्च
सर्वैः समस्तैः कफवातजेषु ।
मेहेषु तैलं विपचेद्घृतं तु
पित्तेषु मिश्रं त्रिषु लक्षणेषु ॥ २८ ॥

(६ त्रिकंटकाद्यं तैलं घृतं यमकं च) गोखरू चूका श्वेतखैर भिलावा अतीश लोधवच परवल अर्जुन नींब नागरमोथा हलदी अजमोद कमल मंजीठ पाठा अगर चंदन इन सबोंकरकै तेलकों पकावै यह कफवातजप्रमेहोंमें हित है । और पित्तके प्रमेहोंमें घृतकों पकावै और तीन लक्षणोंवाले प्रमेहोंमें मिश्रित कार्य करना ।

(७)कफमेहहरक्काथसिद्धं सर्पिः कफे हितम् ।
पित्तमेहघ्ननिर्यूहसिद्धं पित्ते हितं घृतम् ॥ २९ ॥
दशमूलं करञ्जौ द्वौ देवदारु हरीतकी ।
वर्षाभूर्वरुणो दन्ती चित्रकं सपुनर्नवम् ॥ ३० ॥
सुधानीपकदम्बाश्च बिल्वभल्लातकानि च ।
शठी पुष्करमूलं च पिप्पलीमूलमेव च ॥ ३१ ॥
पृथग्दशपलान्भागांस्ततस्तोयार्मणे पचेत् ।
यवकोलकुलत्थानां प्रस्थं प्रस्थं च दापयेत् ।
तेन पादावशेषेण घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ३२ ॥
निचुलं त्रिफला भार्गी रोहिषं गजपिप्पली ।
शृङ्गवेरं विडङ्गानि वचा कम्पिल्लकं तथा ॥३३॥
गर्भेणानेन तत्सिद्धं पाययेत्तु यथाबलम् ।
एतद्धान्वन्तरं नाम विख्यातं सर्पिरुत्तमम् ३४
कुष्ठं गुल्मं प्रमेहांश्च श्वयथुं वातशोणितम् ।
प्लीहोदरं तथार्शांसि विद्रधिं पिडकाश्च याः ।
अपस्मारं तथोन्मादं सर्पिरेतन्नियच्छति ॥ ३५ ॥
पृथक्तोयार्मणे तत्र पचेद्द्रव्याच्छतं शतम् ।
शतत्रयाधिके तोयमुत्सर्गक्रमतो भवेत् ॥ ३६ ॥

(७ धान्वंतरं घृतम्) कफप्रमेहकों हरनेवाला क्काथमें सिद्ध किया घृत कफमें हित है । पित्तका प्रमेहकों हरनेवाले क्काथोंमें सिद्ध किया घृत पित्तमें हित है । दशमूल दोनों करंजुवे देवदार हरडै सांठी वरना जमालगोटाकी जड चीता नखी थोहरका दूध दोनों कदंब बेलगिरी भिलावा कचूर पौहकरमूल और पीपलामूल ये सब अलग २ चालीस तोलेभर लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै। जब बेर कुलथी ये चौंसठ २ तोलेभर देकै पकावै। जब चतुर्थांश शेष रहै तब ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। जलवेत त्रिफला भारंगी रोहिषतृण गजपीपल अदरक वायविडंग वच कपिला इन्होंका कल्क डाल सिद्ध किया घृतकों बलके अनुसार पीवै । यह धान्वंतरघृतनामसें विख्यात और उत्तम है । कुष्ठ गुल्म सब प्रमेह शोजा वातरक्त प्लीहोदर बवासीर विद्रधि पीडिका मृगीरोग उन्माद इन्होंकों यह घृत दूर करता है ।

(८)त्रिकटु त्रिफलाचूर्णतुल्ययुक्तं तु गुग्गुलुम् ।
गोक्षुरक्काथसंयुक्तं गुटिकां कारयेद्भिषक् ॥ ३७ ॥
दोषकालबलापेक्षी भक्षयेच्चानुलोमिकीम् ।
न चात्र परिहारोऽस्ति कर्म कुर्याद्यथेप्सितम् ।
प्रमेहान्मूत्रघातांश्च बालरोगोदरं जयेत् ॥ ३८ ॥

(८ त्र्यूषणादिगुटिका) सोंठ मिरच पीपल त्रिफला इन्होंका चूर्णके बराबर गूगलकों गोखरूके क्काथमें डाल वैद्य गोलियां बनावै । दोष और कालका बलकी अपेक्षावाला मनुष्य अनुलोम करनेवाली गोलीकों खावै । इसपर पहरेज नहींहै । मनोवांछित कर्म करना । सब प्रमेह मूत्रघात बालरोग और उदररोग इन्होंकों जीततीहै ।

(९)शालसारादितोयेन भावितं यच्छिलाजतु ।
पिबेत्तेनैव संशुद्धदेहः पिष्टं यथाबलम् ॥३९॥
जाङ्गलानां रसैः सार्धं तस्मिञ्जीर्णे च भोजनम् ।
कुर्यादेवं तुलां यावदुपयुञ्जीत मानवः ॥ ४० ॥
मधुमेहं विहायासौ शर्करामश्मरीं तथा ।
वपुर्वर्णबलोपेतः शतं जीवत्यनामयः ॥ ४१ ॥

(९ शिलाजतुप्रयोगः) शालसारआदि गणके क्काथसें भावित किया शिलाजितकों पीस शुद्धशरीरवाला उसीके संग बलके अनुसार पीवै। जीर्णहोनेपर जांगलदेश मांसके रसोंके संग भोजन करै। इसीतरह आराम होनेपर्यंत करता-रहै । मधुप्रमेहकों छोडकै शर्करा पथरीकों नाशताहै । सुंदर शरीर वर्ण और बलसें युत होकै १०० वर्षपर्यंत आरोग्यवाला होकै जीवताहै ।

(१०)विडङ्गत्रिफलामुस्तैः कणया नागरेण च ।
जीरकाभ्यां युतो हन्ति प्रमेहानतिदुस्तरान् ।
लौहो मूत्रविकारांश्च सर्वमेव न संशयः ॥ ४२॥

(१० विडंगादिलौहः) वायविडंग त्रिफला नागरमोथा पीपल सोंठ दोनों जीरे इन्होंसें युत किया लोहा अतिभयंकर प्रमेहोंकों नाशताहै । और सब विकारोंकों नाशताहै । इसमें संशय नहीं ।

(११)माक्षिकं धातुमप्येवं युञ्ज्यात्तस्याप्ययं गुणः ।
शालसारादिवर्गस्य क्काथे तु घनतां गते ॥ ४३॥
दन्तीलोध्रशिवाकान्तलौहताम्ररजः क्षिपेत् ।
घनीभूतमदग्धं च प्राश्य मेहान्व्यपोहति ॥४४॥
व्यायामजातमखिलं भजन्मेहान्व्यपोहति ।
पादत्रच्छत्ररहितो भैक्षाशी मुनिवद्यतः ॥ ४५ ॥
योजनानां शतं गच्छेदधिकं वा निरन्तरम् ।
मेहाञ्जेतुं बलेनापि नीवारामलकाशनः ॥ ४६ ॥

शराविकाद्याः पीडकाः साधयेच्छोथवद्भिपक् ।
पक्काश्चिकित्सेद्व्रणवत्तासां पाने प्रशस्यते ॥ ४७॥
क्काथं वनस्पतेर्वास्तं मूत्रं च व्रणशोधनम् ।
एलादिकेन कुर्वीत तैलं च व्रणरोपणम् ॥ ४८॥
आरग्वधादिना कुर्यात्काथमुद्वर्तनानि च ।
शालसारादिसेकं च भोज्यादिं च कणादिना४९
सौवीरकं सुरां शुक्तं तैलं क्षीरं घृतं गुडम् ।
अम्लेक्षुरसपिष्टान्नानूपमांसानि वर्जयेत् ॥ ५० ॥
इति प्रमेहमधुमेहपिडकाधिकारः ।

(११ माक्षिकाद्यन्ये प्रयोगाः) सोनामाखीकों लेकै शालसारआदि गणके क्काथमें पकावै । जब क्काथ घनरूप होजावै तब जमालगोटाकी जड लोध हरडै कांतलोह तांबा इन्होंका चूर्ण डालै । जब घनरूप होजावै और दग्ध होवै नहीं ऐसा जान उतारकर खावै तो सब प्रमेहोंका नाश होताहै । सब प्रकारकी कसरतकों सेवनेवाला मनुष्य प्रमेहोंकों नाशताहै । जूती और छत्रीसें रहित हुआ और भिक्षाकों भोजन करनेवाला मनुष्य मुनिकी तरह ४०० कोश अथवा अधिक निरंतर गमन करै । प्रमेहोंकों जीतनेवास्तै नीवारका अन्न और आंवलाका भोजन बलसें करै । शराविकाआदि पीडिकाओंकों वैद्य शोजाकी तरह साधै और पकीहुई पीडिकाओंकी चिकित्सा घावकी तरह करनी । वनस्पतियोंका क्काथ और बकराका मूत्र घावकों शोधताहै । और एलादिगणके क्काथमें तेलकों सिद्ध कर घावपर अंकुर लाना आरग्वधादि गणके क्काथसें घावपर उद्वर्तन करना और शालसारादि गणके क्काथसें सेचन करना और कणादि गणके ओषधसें भोजन करना । कांजी मदिरा शुक्त तेल दूध घृत गुड अम्लरस ईख पिसाहुआ अन्न अनूपदेशका मांस इन्होंकों वर्जित करै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां प्रमेहमधुमेहपीडिकाचिकित्सा ।

अथ स्थौल्याधिकारः ३९

अब स्थौल्यका अधिकार कहते है ।

(१)श्रमचिन्ताव्यवायाध्वक्षौद्रजागरणप्रियः ।
हन्त्यवश्यमतिस्थौल्यं यवश्यामाकभोजनः ॥१॥
अस्वापं च व्यवायं च व्यायामं चिन्तनानि च ।
स्थौल्यमिच्छन्परित्यक्तुं क्रमेणातिप्रवर्धयेत् ॥ २॥
प्रातर्मधुयुतं वारि सेवितं स्थौल्यनाशनम् ।
उष्णमन्नस्य मण्डं वा पिबन्कृशतनुर्भवेत् ॥ ३ ॥
सचव्यजीरकव्योषहिङ्गुसौवर्चलानलाः ।
मस्तुना शक्तवः पीता मेदोघ्ना वह्निदीपनाः ॥४॥
विडङ्गनागरक्षारकाललोहरजो मधु ।
यवामलकचूर्णं तु प्रयोगः स्थौल्यनाशनः॥ ५ ॥

(१ स्थौल्यहरा उपायाः) परिश्रम चिंता मैथुन मार्गचलना शहद जागना इन्होंकों सेवनेवाला और जव तथा श्यामक भोजन करनेवाला ऐसा मनुष्य अतिस्थूलपनाकों नाशता है । जागना मैथुन कसरत चितवन इन्होंकों स्थूलपनाके नाशकी इच्छावाला मनुष्य बढावै और स्थूलपनाकी नहीं इच्छावाला त्यागै । अन्नके गरम मंडकों पीवताहुआ मनुष्य कृशशरीरवाला होजाता है । चव्य जीरा सोंठ मिरच हींग कालानमक चीता ये तथा सत्तू दहीका पानीके संग पीवै तो मेदकों नाशते हैं । और अग्निकों जागाते हैं । वायविडंग सोंठ जवाखार, रक्तचिता लोहाका चूर्ण शहद जव आंवलाका चूर्ण इन्होंकों सेवना बुढापाकों नाशता है ।

(२)व्योषं विडङ्गशिग्रूणि त्रिफलां कटुरोहिणीम् ।
बृहत्यौ द्वे हरिद्रे द्वे पाठामतिविषां स्थिराम्॥६॥
हिङ्गुकेबूकमूलानि यमानीधान्यचित्रकम् ।
सौवर्चलमजाजीं च हपुषां चेति चूर्णयेत् ॥७॥
चूर्णतैलघृतक्षौद्रभागाः स्युर्मानतः समाः ।
शक्तूनां षोडशगुणो भागः संतर्पणं पिबेत् ॥८॥
प्रयोगात्तस्य शाम्यन्ति रोगाः सन्तर्पणोत्थिताः
प्रमेहा मूढवाताश्च कुष्ठान्यर्शांसि कामलाः ॥९॥
प्लीहपाण्ड्वामयः शोथो मूत्रकृच्छ्रमरोचकः ।
हृद्रोगो राजयक्ष्मा च कासश्वासौ गलग्रहाः१०
क्रिमयो ग्रहणीदोषाः श्वैत्र्यं स्थौल्यमतीव च ।
नराणां दीप्यते चाग्निः स्मृतिर्बुद्धिश्च जायते११

(२ व्योषाद्यशक्तूपयोगः) सोंठ मिरच पीपल वायविडंग सहोंजना त्रिफला कुटकी दोनोंकटेली हलदी दारुहलदी पाठा अतीस शालपर्णी हींग सुपारी मूली अजमान धनियां चीता कालानमक जीरा हाऊवेर इन्होंका चूर्ण करै । चूर्ण तेल घृत शहद इन्होंके भाग परिमाणसें समान लेने । सत्तुओंका सोलवां भाग एकभाग संतर्पणकों पीवै इसके प्रयोगसें संतर्पणसें उत्थित हुये रोग शांत

होते हैं। प्रमेह मूढवात कुष्ठ ववासीर कामला प्लीहरोग शोजा मूत्रकृच्छ्र अरोचक हृद्रोग राजरोग खांसी श्वास गलग्रह कृमिरोग ग्रहणीदोष श्वित्रकुष्ठ अत्यंतमुढापा इन्होंका नाश होताहै। और मनुष्योंका अग्नि दीप्त होताहै। स्मृति और बुद्धि उपजती है।

(३)बदरीपत्रकल्केन पेया काञ्जिकसाधिता।
स्थौल्यनुत्स्यात्साग्निमन्थरसं वापि शिलाजतु १२
अमृतात्रुटिवेल्लवत्सकं
कलिङ्गपथ्यामलकानि गुग्गुलुः।
क्रमवृद्धमिदं मधुप्लुतं
पिडकास्थौल्यभगन्दरं जयेत्॥ १३॥

(३ अमृताद्यो गुग्गुलुः) वडवेरीके पत्तोंका कल्ककरकै कांजीसें साधितकरी पेया अथवा अरनीसहित शिलाजित मुढापाकों नाशताहै। गिलोय छोटी इलायची वेंलगिरी कूडा इंद्रजव हरडै आंवला गूगल ये सब क्रमसें वृद्धिके अनुसार लेकै शहदसें युतकर चाटै तो पीडिका मुढापा भगंदर इन्होंका नाश होताहै।

(४)व्योषाग्नित्रिफलामुस्तविडङ्गैर्गुग्गुलुं समम्।
खादन्सर्वाञ्जयेद्व्याधीन्मेदःश्लेष्मामवातजान्॥१४

(४ नवकगुग्गुलुः) सोंठ मिरच पीपल चीता त्रिफला नागरमोथा वायविडंग इन सबके बरावर गूगल ले मिलाकै खानेवाला मनुष्य मेद कफ और आमवातसें उपजी सब व्याधियोंका नाश करता है।

(५)गुग्गुलुस्तालमूली च त्रिफला खदिरं वृषम्।
त्रिवृतालम्बुषा स्नुक्च निर्गुण्डी चित्रकं तथा॥१५
एषां दशपलान्भागांस्तोये पञ्चाढके पचेत्।
पादशेषं ततः कृत्वा कषायमवतारयेत्॥ १६॥
पलद्वादशकं देयं तीक्ष्णलौहं सुचूर्णितम्।
पुराणसर्पिषः प्रस्थं शर्कराष्टपलोन्मितम्॥ १७॥
पचेत्ताम्रमये पात्रे सुशीते चावतारिते।
प्रस्थार्धं माक्षिकं देयं शिलाजतु पलद्वयम्॥१८॥
एला त्वक्च पलार्धं च विडङ्गानि पलद्वयम्।
मरिचं चाञ्जनं कृष्णाद्विपलं त्रिफलान्वितम्॥१९॥
पलद्वयं तु काशीसं सूक्ष्मचूर्णीकृतं बुधैः।
चूर्णं दत्वा सुमथितं स्निग्धे भाण्डे निधापयेत् २०
ततः संशुद्धदेहस्तु भक्षयेदक्षमात्रकम्।
अनुपानं पिवेत्क्षीरं जाङ्गलानां रसं तथा॥२१॥
वातश्लेष्महरं श्रेष्ठं कुष्ठमेहोदरापहम्।
कामलां पाण्डुरोगं च श्वयथुं सभगन्दरम्॥२२॥
मूर्च्छामोहविषोन्मादगराणि विविधानि च।
स्थूलानां कर्षणं श्रेष्ठं मेदुरे परमौषधम्॥ २३॥
कर्षयेच्चातिमात्रेण कुक्षिं पातालसन्निभम्।
बल्यं रसायनं मेध्यं वाजीकरणमुत्तमम्॥ २४॥
श्रीकरं पुत्रजननं वलीपलितनाशनम्।
नाश्नीयात्कदलीकन्दं काञ्जिकं करमर्दकम्।
करीरं कारवेल्लं च षट् ककाराणि वर्जयेत्॥२५॥

(५लौहरसायनम्) गूगल मुशली त्रिफला खैर वांसा निशोत गोरखमंडी थोहर संभालू चीता इन्होंकों चालीस चालीस तोलेभर ले १२८० तोलेभर पानीमें पकावै। जब चतुर्थांश बाकी रहै तब क्वाथकों उतारै। तीक्ष्णलोहाका चूर्ण ४८ तोले पुराणाघृत ६४ तोले खांड ३२ तोले इन्होंकों तांबाके पात्रमें पकावै। जब अच्छीतरह शीतल हो जा तब उतारै। शहद ३२ तोले शिलाजित ८ तोले इलायची और दालचिनी दो दो तोले वायविडंग १२ तोले मिरच सहोंजना पीपल त्रिफला ये ८ तोले कसीस ८ तोले इन्होंका बुद्धिमानोंनें मिहीन चूर्ण करना। इस चूर्णकों डाल मथितकर चिकना पात्रमें स्थापित करै पीछे शुद्ध शरीरवाला एक तोलाभरकों खावै। दूध तथा जांगलदेशके मांसका रस अनुपान करना वातकफकों नाशताहै। श्रेष्ठ है कुष्ठ प्रमेह उदररोग इन्होंकों हरता है। कामला पांडुरोग शोजा भगंदर मूर्च्छा मोह विष उन्माद कृत्रिमविष इन्होंकों नाशता है। स्थूलोंकों माडा करता है मेदवालाकों उत्तम ओषध है और पातालके समान कुक्षिकों कर्पित करता है बलमें हित है रसायन है बुद्धिकों बढाता है उत्तम वाजीकरण है शोभा करताहै पुत्रकों उपजाता है वलीपलितकों नाशता है। केलाकी घड कांजी करौंदा वंशफल अथवा टींट करेला इन छह ककारोंकों वर्जित करै।

(६)त्रिफलातिविषामूर्वात्रिवृच्चित्रकवासकैः।
निम्बारग्वधषड्ग्रन्थासप्तपर्णनिशाद्वयैः॥ २६॥
गुडूचीन्द्रसुराकृष्णाकुष्ठसर्षपनागरैः।
तैलमेभिः समं पक्वं सुरसादिरसाप्लुतम्॥२७॥

पानाभ्यञ्जनगण्डूषनस्यबस्तिषु योजितम् ।
स्थूलतालस्य कण्ड्वादीञ्जयेत्कफकृतान्गदान्॥२८॥

(६ त्रिफलाद्यं तैलम्) त्रिफला अतीश मरोरफली निशोत चीता वांसा नींब अमलतास वच शातला हलदी दारुहलदी गिलोय इंद्रायण पीपल कूट सरसों सोंठ इन्होंके कल्क और सुरसादिगणके रसोंमें तेलकों पकावै पीना मालिस कुल्ला नस्य बस्तिकर्म इन्होंमें योजित करै तो मुढापा आलस्य खजआदि कफके रोग इन्होंकों जीतता है ।

(७)शिरीषलामज्जकहेमलोध्रै-
स्त्वग्दोषसंस्वेदहरः प्रहर्षः ।
पत्राम्बुलोहाभयचन्दनानि
शरीरदौर्गन्ध्यहरः प्रदेहः ॥ २९ ॥
वासादलरसो लेपाच्छङ्खचूर्णेन संयुतः ।
बिल्वपत्ररसैर्वापि गात्रदौर्गन्ध्यनाशनः॥३०॥
हरीतकीलोध्रमरिष्टपत्रं
चूतत्वचो दाडिमवल्कलं च ।
एषोऽङ्गरागः कथितोऽङ्गनानां
जङ्घाकषायश्च नराधिपानाम् ॥ ३१ ॥
दलजललघुमलयभव-
विलेपनं हरति देहदौर्गन्ध्यम् ।
विमलारणालसहितं
पीतमिवालम्बुषाचूर्णम् ॥ ३२ ॥
गोमूत्रपिष्टं विनिहन्ति कुष्ठं
वर्णोज्वलं गोपयसा च युक्तम् ।
कक्षादिदौर्गन्ध्यहरं पयोभिः
शस्तं वशीकृद्रजनीद्वयेन ॥ ३३ ॥
चिञ्चापत्रस्वरसम्रदितं कक्षादियोजितं जयति ।
दग्धहरिद्रोद्वर्तनमचिराद्देहस्य दौर्गन्ध्यम् ॥३४॥
हस्तपादश्रुतौ योज्यं गुग्गुलुं पञ्चतिक्तकम् ।
अथवा पञ्चतिक्ताख्यं घृतं खादेदतन्द्रितः ॥३५॥

इति स्थौल्यदौर्गन्ध्यचिकित्सा ।

(७ शिरीषादिप्रदेहाः) शिरस रोहिपतृण कपूर लोध इन्होंसें संघर्षण त्वचाके दोष और पसीना हरता है। जवोंकी कांजी लोहा तगर चंदन इन्होंका लेप शरीरके दुर्गंधकों हरता है। वांसाके पत्तोंके रसमें शंखका चूर्ण डाल लेप करै अथवा बेलपत्रोंके रससें लेप करै तो शरीरका दुर्गंध नष्ट होताहै। हरडै लोध नींबके पत्ते आंबकी छाल अनारकी छाल यह स्त्रियोंके अंगोंमें प्रीति करता है और राजाओंकों सुख देता है । तेजपात नेत्रवाला तगर बावची नींब इन्होंका लेप शरीररके दुर्गंधकों हरता है । शातला और कांजीसहित पान किया मुंडीका चूर्ण देहके दुर्गंधकों नाशता है । गोमूत्रसें पीसाहुआ मुंडीका चूर्ण कुष्ठकों हरताहै। गौका दूधसें पीसाहुआ वर्णकों प्रकाशित करता है । पानीसें युत किया कांखआदिके दुर्गंधकों हरता है और हलदी तथा दारुहलदीसें युत किया उत्तम वशीकरण है। दग्धकरी हलदीकों अमलीके पत्तोंके स्वरसमें मिलाय उवटना बनाय कांखआदिमें योजित करै तो शरीरके दुर्गंधकों शीघ्र नाशता है। पंचतिक्तक गूगल हाथ पौर कान इन्होंमें योजित करना अथवा पंचतिक्तनामक घृतकों सावधान होकै खावै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्रविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां स्थौल्यदौर्गंध्यचिकित्सा ।

अथोदराधिकारः ३६

अब उदररोगके अधिकार कहते है ।

(१)उदरे दोषसम्पूर्णे कुक्षौ मन्दो यतोऽनलः ।
तस्माद्भोज्यानि योज्यानि दीपनानि लघूनि च॥१॥
रक्तशालीन्यवान्मुद्गाञ्जाङ्गलांश्च मृगद्विजान् ।
पयोमूत्रासवारिष्टमधुशीधु तथा पिबेत् ॥ २ ॥
वातोदरं बलवतः पूर्वं स्नेहैरुपाचरेत् ।
स्निग्धाय स्वेदिताङ्गाय दद्यात्स्नेहविरेचनम् ॥३॥
हृते दोषे परिम्लानं वेष्टयेद्वाससोदरम् ।
तथास्यानवकाशत्वाद्वायुना ध्मापयेत्पुनः ॥ ४ ॥
दोषातिमात्रोपचारात्स्रोतोमार्गनिरोधनात् ।
सम्भवत्युदरं तस्मान्नित्यमेनं विरेचयेत् ॥ ५ ॥
विरिक्ते च यथादोषहरैः पेया शृता हिता ।
वातोदरी पिबेत्तक्रं पिप्पलीलवणान्वितम् ॥६॥
शर्करामरिचोपेतं स्वादु पित्तोदरी पिबेत् ।
यमानीसैन्धवाजाजीव्योषयुक्तं कफोदरी ॥ ७ ॥

(१ उदरे सामान्योपायाः) दोषोंसें पूर्णहुये उदरमें कुक्षिविषै जिस कारणसें मंद अग्नि होताहै उसीकारणसें

दीपन और हलके भोजन देने। लाल शालिचावल जव मूंग जांगलदेशके मृग और पक्षियोंका मांस दूध गोमूत्र आसव अरिष्ट मधु शीधु इन्होंकों पीवै। बलवालाके वातोदरकों स्नेहोंसैं चिकित्सित करै। स्निग्ध तथा स्वेदित कियेके अर्थ स्नेहका जुलाब देना। दोष हरा जावै तब परिम्लान हुये उदर अर्थात् पेटकों वस्त्रसें वेष्टित करै तथा इसकों अनवकाशपनेसें वायुकरकै फिर आध्मापित करावै। दोषोंके अत्यंत उपचारसें स्रोतोंके मार्ग रुकनेसें उदरका संभव होताहै। तिस कारणसें इस रोगीकों नित्यप्रति जुलाब देतारहै। जैसा दोष हो उसके अनुसार दोषनाशक ओषधोंसें बनी और पकीहुई पेया देनी हित है। वातका उदररोगी पीपल और नमकसहित तक्रकों पीवै। पित्तका उदररोगी खांड मिरचसहित तक्रकों पीवै। कफका उदररोगी अजमान सेंधानमक जीरा सोंठ मिरच पीपल इन्होंसहित पीवै।

(२)पिबेन्मधुयुतं तक्रं व्यक्ताम्लं नातिपेलवम्।
मधुतैलवचाशुण्ठीशताह्वाकुष्ठसैन्धवैः ॥ ८ ॥
युक्तं प्लीहोदरी जातं सव्योषं तु दकोदरी।
बद्धोदरी तु हपुषादीप्यकाजाजिसैन्धवैः ॥ ९ ॥
पिबेच्छिद्रोदरी तक्रं पिप्पलीक्षौद्रसंयुतम्।
त्र्यूषणक्षारलवणैर्युक्तं तु निचयोदरी ॥ १० ॥
गौरवारोचकार्तानां समन्दाग्न्यतिसारिणाम्।
तक्रं वातकफार्तानाममृतत्वाय कल्प्यते ॥ ११ ॥
वातोदरे पयोऽभ्यासो निरूहो दशमूलकः।
सोदावर्ते वातघ्नाम्लश्टतैरण्डानुवासनः॥ १२ ॥

(**२ तक्रयुक्तमध्वाद्यन्ये उपायाः**) शहदसें युत खट्टा और अतिपतला नहीं हो ऐसा तक्रकों पीवै और शहद तेल वच सोंठ शतावरी कूट सेंधानमक इन्होंसें युत किये तक्रकों प्लीहोदरी पीवै और सोंठ मिरच पीपल इन्होंसें युत किये तक्रकों दकोदरवाला पीवै। बद्धोदरवाला हाऊवेर अजमोद जीरा सेंधानमक इन्होंसें युत किये तक्रकों पीवै और छिद्रोदरवाला पीपल और शहदसें युत किये तक्रकों पीवै। सोंठ मिरच पीपल जवाखार सेंधानमक इन्होंसें युत किये तक्रकों निचयोदरवाला पीवै। भारीपन अरोचक मंदाग्नि अतिसार इन्होंसें पीडितहुये मनुष्योंकों तक्र अमृतके समान है। वातके उदररोगमें दूधका अभ्यास दशमूलसें निरूहबस्ति हित है। उदावर्तसहित वातोदरमें वातनाशक अम्लऔषध अरंड इन्होंसें अनुवासनबस्ति देना हित है।

(३) सामुद्रसौवर्चलसैन्धवानि
क्षारं यवानामजमोदकं च।
सपिप्पलीचित्रकश्टङ्गवेरं
हिङ्गु बिडं चेति समानि कुर्यात् ॥१३॥
एतानि चूर्णानि घृतप्लुतानि
भुञ्जीत पूर्वं कवलं प्रशस्तम्।
वातोदरं गुल्ममजीर्णभुक्तं
वायुप्रकोपं ग्रहणीं च दुष्टाम् ॥ १४ ॥
अर्शांसि दुष्टानि च पाण्डुरोगं
भगन्दरं चेति निहन्ति सद्यः ॥ १५ ॥

(**३ सामुद्राद्यं चूर्णम्**) खारीनमक कालानमक सेंधानमक जवाखार अजमोद पीपल चीता अदरख हींग मनयारीनमक ये सब समान लेने। इन्होंके चूर्ण कर घृतसें युत करने इसका ग्रास प्रथम भोजन करना श्रेष्ठ है। वातोदर गुल्म अजीर्णमें किया भोजन वायुका प्रकोप दुष्ट ग्रहणी दुष्ट बवासीर पांडुरोग और भगंदर इन्होंकों यह चूर्ण नाशता है।

(४) पित्तोदरे तु बलिनं पूर्वमेव विरेचयेत्।
अनुवास्याबलं क्षीरबस्तिशुद्धं विरेचयेत् ॥ १६ ॥
पयसा सत्रिवृत्कल्केनोरुबूकश्टतेन वा।
शातलात्रायमाणाभ्यां श्टतेनारग्वधेन वा ॥१७॥
कफादुदरिणं शुद्धं कटुक्षारान्नभोजितम्।
मूत्रारिष्टायस्कृतिभिर्योजयेच्च कफापहैः ॥ १८ ॥
सन्निपातोदरे सर्वां यथोक्तां कारयेत्क्रियाम्।
प्लीहोदरे प्लीहहरं कर्मोदरहरं तथा ॥ १९ ॥
स्विन्नाय बद्धोदरिणे मूत्रं तीक्ष्णौषधान्वितम्।
सतैलं लवणं दद्यान्निरूहं सानुवासनम् ॥ २० ॥
परिस्रंसीनि चान्नानि तीक्ष्णं चैव विरेचनम्।
छिद्रोदरमृते स्वेदाच्छ्लेष्मोदरवदाचरेत् ॥ २१ ॥
जातं जातं जलं स्राव्यं शास्त्रोक्तं शस्त्रकर्म च।
जलोदरे विशेषेण द्रवसेवां विवर्जयेत् ॥ २२ ॥
देवदारुपलाशार्कहस्तिपिप्पलिशिग्रुकैः।
साश्वगन्धैः सगोमूत्रैः प्रदिह्यादुदरं शनैः ॥२३॥
मूत्राण्यष्टावुदरिणां सेके पाने च योजयेत्।
स्नुहीपयोभावितानां पिप्पलीनां पयोऽशनः॥२४॥
सहस्रं च प्रयुञ्जीत शक्तितो जठरामयी।

शिलाजतूनां मूत्राणां गुग्गुलोस्त्रैफलस्य च॥२५॥
स्नुहीक्षीरप्रयोगश्च शमयत्युदरामयम् ।
स्नुक्पयसा परिभाविततण्डुलचूर्णैर्निर्मितः पूतः
उदरमुदारं हिंस्याद्योगोऽयं सप्तरात्रेण ।
पिप्पलीवर्धमानं वा कल्पदृष्टं प्रयोजयेत् ॥२७॥
जठराणां विनाशाय नास्ति तेन समं भुवि ।

(४ पित्ताद्युदरे विरेकादि) पित्तके उदररोगमें बलवान्कों प्रथम जुलाब देना और बलवान् नहीं हो तो प्रथम अनुवासन देकै पीछे क्षीरबस्तिसें शुद्धकर जुलाब देवै । निशोतका कल्कसहित दूधकरकै अथवा अरंडके कल्कमें सिद्ध किये दूधकरकै अथवा शातला और त्रायमाणसें सिद्ध किये दूधकरकै अथवा अमलतासमें सिद्ध किये दूधकरकै जुलाब देवै कफसें शुद्ध हुये उदररोगीकों तीक्ष्ण खारा अन्नसें भोजन कराय कफनाशक गोमूत्र अरिष्ट लोहाकी कृति इन्होंकरकै भोजन करावै । सन्निपातके उदररोगमें यथोक्त संपूर्ण क्रिया प्रयुक्त करनी । प्लीहोदरमें प्लीहनाशक तथा उदररोगनाशक कर्म करना । स्वेदितकिये बद्धोदरीके अर्थ तीक्ष्ण ओषधोंसें युत किया गोमूत्र देना तेल नमकसहित अनुवासनसहित निरूह देना । परिस्रंसवाले अन्न और तीक्ष्णविरेचन छिद्रोदरके विना स्वेदसें कफोदरकी तरह आचरण करै । उपजा उपजा पानी निकासना और शास्त्रोक्त शस्त्रकर्म करना । जलोदरमें विशेषकरकै द्रवपदार्थोंके सेवनकों वर्जित करै । देवदार केशू आक गजपीपल सहोंजना आसगंध गोमूत्र इन्होंकरकै उदरकों हौलें हौलें लेप करै । उदररोगियोंके सेचनमें और पीनेमें आठों मूत्र योजित करने । थोहरका दूधमें भिगोयेहुये हजार पीपलोंकों शक्तिके अनुसार उदररोगी खावै और दूधका भोजन करै । शिलाजित सब मूत्र गूगल त्रिफला थोहरका दूध इन्होंका प्रयोग उदररोगकों शांत करता है । थोहरका दूधसें भिगोयेहुये चावलोंके चूर्णोंकरके बनाया मालपुआ सात रात्रिकरकै उदरविकारकों नाशता है । अथवा कल्पदृष्ट वर्द्धमानपीपल प्रयुक्त करना । उदररोगोंका विनाशके अर्थ उसके समान पृथिवीमें ओषध नहीं है ।

(५)पटोलमूलं रजनी विडङ्गं त्रिफलात्वचम् २८
कम्पिल्लकं नीलिनीं च त्रिवृतां चेति चूर्णयेत् ।
षडाद्यान्कार्षिकानन्त्यांस्त्रींश्च द्वित्रिचतुर्गुणान्२९
कृत्वा चूर्णं ततो मुष्टिं गवां मूत्रेण ना पिबेत् ।
विरिक्तो जाङ्गलरसैर्भुञ्जीत मृदुमोदनम् ॥३०॥
मण्डं पेयां च पीत्वा च सव्योषं षडहः पयः ।
शृतं पिबेत्तु तच्चूर्णं पिबेदेवं पुनः पुनः ॥ ३१ ॥
हन्ति सर्वोदराण्येतच्चूर्णं जातोदकान्यपि ।
कामलां पाण्डुरोगं च श्वयथुं चापकर्षति ॥३२॥

(५ पटोलाद्यं चूर्णम्) परवलकी जड हलदी वायविडंग हरड बहेडा आंवलाकी छाल कपिला नीलिनी और निशोत इन्होंका चूर्ण करै । आदिके छह एक एक तोला कपिला २ तोले नीलिनी ३ तोले और निशोत ४ तोले ऐसे लेकै चूर्ण बनाय ४ तोलेभर चूर्णकों गौवोंका मूत्रके संग पुरुष पीवै । जुलाब लगचुकै तब जांगलदेशके जीवोंका मांसका रसके साथ हलका भोजन करै । मंड और पेयाकों पीकै सोंठ मिरच पीपलसहितकों छह दिनतक पकाहुआ दूधके संग उस चूर्णकों ऐसे वारंवार पीवै । यह चूर्ण सब उदररोग जातोदक कामला पांडुरोग और शोजा इन्होंकों दूर करता है ।

(६) यमानी हपुषा धान्यं त्रिफला सोपकुञ्चिका ।
कारवी पिप्पलीमूलमजगन्धा शठी वचा ॥३३॥
शताह्वा जीरकं व्योषं स्वर्णक्षीरी सचित्रकम् ।
द्वौ क्षारौ पौष्करं मूलं कुष्ठं लवणपञ्चकम्॥३४॥
विडङ्गं च समांशानि दन्त्या भागत्रयं तथा ।
त्रिवृद्विशाले द्विगुणे शातला स्याच्चतुर्गुणा॥३५॥
एष नारायणो नाम चूर्णो रोगगणापहः ।
नैनं प्राप्याभिवर्धन्ते रोगा विष्णुमिवासुराः॥३६॥
तक्रेणोदरिभिः पेयो गुल्मिभिर्बदराम्बुना ।
आनद्धवाते सुरया वातरोगे प्रसन्नया ॥ ३७ ॥
दधिमण्डेन विट्सङ्गे दाडिमाम्बुभिरर्शसि ।
परिकर्ते च वृक्षाम्लैरुष्णाम्बुभिरजीर्णके ॥ ३८ ॥
भगन्दरे पाण्डुरोगे कासे श्वासे गलग्रहे ।
हृद्रोगे ग्रहणीदोषे कोष्ठे मन्दानले ज्वरे ॥ ३९ ॥
दंष्ट्राविषे मूलविषे सगरे कृत्रिमे विषे ।
यथार्हं स्निग्धकोष्ठेन पेयमेतद्विरेचनम् ॥ ४० ॥

(६ नारायणचूर्णम्) अजमान हाऊवेर धनियां त्रिफला कलोंजी अजमोद पीपलामूल तुलशी कचूर वच शतावरी अथवा सौंफ सोंठ मिरच पीपल चोख चीता

जवाखार साजीखार पौहकरमूल कूट पांचोंनमक वायविडंग ये सब समान भाग और जमालगोटाकी जड तीनभाग निशोत और इंद्रायण दुगुने और शातला चौगुनी यह नारायणनामवाला चूर्ण रोगोंके समूहकों नाशताहै। इस चूर्णकों प्राप्त होकै रोग नहीं वढतेहैं। जैसे विष्णुकों प्राप्त होकै राक्षस। उदररोगियोंनें यह चूर्ण तक्रके संग पीना गुल्मवालोंनें वेरोंका क्राथके संग पीना आनद्धवातमें मदिराके संग वातरोगमें प्रसन्ना मदिराके संग विष्ठाके बंधमें दहीका मंडके संग पीना ववासीरवालोंनें अनारका रसके संग पीना परिकर्तिकामें अम्लवेतका रसके संग अजीर्णमें गरम पानीके संग भगंदर पांडुरोग खांसी श्वास गलग्रह हृद्रोग ग्रहणीदोष कोष्ठदोष मंदाग्नि ज्वर दंष्ट्राविष मूलविष विष कृत्रिमविष इन्होंमें स्निग्धकोष्ठवालानें यथायोग्य यह विरेचन पीना योग्य है।

(७) दन्ती वचा गवाक्षी च शङ्खिनी तिल्वकं त्रिवृत्।
गोमूत्रेण पिवेत्कल्कं जठरामयनाशनम् ॥ ४१ ॥
सक्षीरं माहिषं मूत्रं निराहारः पिवेन्नरः।
शाम्यत्यनेन जठरं सप्ताहादिति निश्चयः॥ ४२ ॥
गवाक्षीशङ्खिनीदन्तीनीलिनीकल्कसंयुतम्।
सर्वोदरविनाशाय गोमूत्रं पातुमाचरेत् ॥ ४३ ॥
अर्कपत्रं सलवणमन्तर्धूमं दहेत्ततः।
मस्तुना तत्पिवेत्क्षीरं गुल्मप्लीहोदरापहम् ॥४४॥
पीतः प्लीहोदरं हन्यात्पिप्पलीमरिचान्वितः।
अम्लवेतससंयुक्तः शिग्रुक्राथः ससैन्धवः॥ ४५ ॥
(गृहीत्वा यस्य संज्ञा(?)पाठयित्वेन्द्रवारुणीमूलम्।
प्रक्षिप्यते सुदूरे शाम्यते प्लीहोदरं तस्य ॥४६॥)
रोहितकाभयाक्षोदभावितं मूत्रमम्बु वा।
पीतं सर्वोदरप्लीहमेहार्शःक्रिमिगुल्मनुत् ॥ ४७ ॥

(**७ दंत्यादिकल्कः**) जमालगोटाकी जड वच इंद्रायण शंखिनी लोध निशोत इन्होंके कल्ककों गोमूत्रके संग पीवै तो उदररोगका नाश होताहै। दूधसहित भैंसाके मूत्रकों निराहार मनुष्य पीवै इसकरकै उदररोग सात दिनसें शांत होजाताहै। इसमें संशय नहीं। गवाक्षी शंखिनी दन्ती और नीलिनीका कल्कसें युत किया गोमूत्र सब प्रकारके उदरोंके नाशार्थ पीना। आकके पत्ते नमकसहित जैसा धूम न निकले वैसे प्रज्वलित (अंतर्धूम) करके दधिमंडयुक्त क्षीरमें मिलाय पीवै तो गुल्म प्लीहा उदर ये नष्ट होते हैं। शिग्रूका काढा सैंधव पीपल मिरच अमलवेत इन्होंसे युतकर पीवै तो प्लीहोदर दूर होताहै। रोहितक अभयाका चूर्णसें भावित मूत्र अथवा उदक सब प्रकारके उदर प्लीह मेह अर्श क्रिमि गुल्म इन सबोंकों दूर करता है।

(८)देवद्रुमं शिग्रु मयूरकं च
गोमूत्रपिष्टानथवाऽश्वगन्धान्।
पीत्वाशु हन्यादुदरं प्रवृद्धं
क्रमीन्सशोथानुदरं च दूष्यम् ॥ ४८ ॥
दशमूलदारुनागर-
च्छिन्नरुहापुनर्नवाभयाक्राथः।
जयति जलोदरशोथ-
श्लीपदगलगण्डवातरोगांश्च ॥ ४९ ॥
हरीतकीनागरदेवदारु
पुनर्नवाछिन्नरुहाकषायः।
सगुग्गुलुर्मूत्रयुतश्च पेयः
शोथोदराणां प्रवरः प्रयोगः ॥ ५० ॥
एरण्डतैलं दशमूलमिश्रं
गोमूत्रयुक्तस्त्रिफलारसो वा।
निहन्ति वातोदरशोथशूलं
क्राथः समूत्रो दशमूलजश्च ॥ ५१ ॥

(**८ देवदार्वादिक्राथः**) देवद्रुम शिग्रु मयूरक अथवा गोमूत्र पीसेहुये अश्वगंध पीनेसें उदर क्रिमि शोथ उदर इन्होंकों नाशता है। दशमूल दारुहलदी सोंठ छिन्नरुहा पुनर्नवा अभया इन्होंका बनाया क्राथ जलोदर शोजा श्लीपद गलगंड (गंडमाला) वातरोग इतने रोगोंकों नाशता है। हरडा सोंठ देवदार पुनर्नवा छिन्नरुहा इन्होंका कषाय गूगल तथा मूत्रसें युत पीनेसें शोजा उदर शांत होतेहैं। एरंडतेल दशमूलमिश्रित अथवा गोमूत्रयुक्त त्रिफलारस वातोदर शोथ शूल नष्ट करता है तथा दशमूलका क्राथ गोमूत्रसहितभी।

(९)पुनर्नवानिम्बपटोलशुण्ठी-
तिक्ताभयादार्वमृताकषायः।
सर्वाङ्गशोथोदरकासशूल-
श्वासान्वितं पाण्डुगदं निहन्ति ॥ ५२ ॥

पुनर्नवां दार्वभयां गुडूचीं
पिबेत्समूत्रां महिषाक्षयुक्ताम् ।
त्वग्दोषशोथोदरपाण्डुरोग-
स्थौल्यप्रसेकोर्ध्वकफामयेषु ॥ ५३ ॥
गोमूत्रयुक्तं महिषीपयो वा
क्षीरं गवां वा त्रिफलाविमिश्रम् ।
क्षीरान्नभुक्केवलमेव गव्यं
मूत्रं पिबेद्वा श्वयथूदरेषु ॥ ५४ ॥
पुनर्नवा दार्वमृता पाठा बिल्वं श्वदंष्ट्रिका ।
बृहत्यौ द्वे रजन्यौ द्वे पिप्पल्यश्चित्रकं वृषम् ।
समभागानि संचूर्ण्य गवां मूत्रेण ना पिबेत्॥५५॥
बहुप्रकारं श्वयथुं सर्वगात्रविसारिणम् ।
हन्ति शूलोदराण्यष्टौ व्रणांश्चैवोद्धतानपि॥५६॥
पुराणं माणकं पिष्ट्वा द्विगुणीकृततण्डुलम् ।
साधितं क्षीरतोयाभ्यामभ्यसेत्पायसं ततः॥५७॥
हन्ति वातोदरं शोथं ग्रहणीं पाण्डुतामपि ।
सिद्धो भिषग्भिराख्यातः प्रयोगोऽयं निरत्ययः ॥
दशमूलतुलार्धरसे
सक्षारैः पञ्चकोलैः पलिकैः ।
सिद्धं घृतार्धपात्रं
द्विमस्तुकमुदरगुल्मघ्नम् ॥ ५९ ॥

(९ पुनर्नवाष्टकः) पुनर्नवा नींब परवल सोंठ पीपल अभया दारुहलदी अमृतवेल इन्होंका काथ पीनेसें सर्वांगशोथ उदर कास शूल श्वाससहित पांडु इन सबोंकों नाशता है। पुनर्नवा दारुहलदी अभया गडूची भैंसागूगल ये गोमूत्रसहित पीवै तौ त्वचाके दोष शोथ उदर पांडुरोग स्थौल्य प्रसेक ऊर्ध्व कफरोग ये दूर होते हैं। गोमूत्रसहित भैसकादूध अथवा त्रिफलामिश्रित गौका दूध अथवा केवल गोमूत्र दूधयुत अन्न सेवन कर पीवै तो शोथ तथा उदर नष्ट होतेहैं । पुनर्नवा दारुहलदी अमृता पाठा बेलफल श्वदंष्ट्रा दो बृहती दो हरिद्रा पीपल चीता वृष ये सब औषध समान भाग ले चूर्णकर गोमूत्रसें पीवै तो सब अंगोंमें फैला हुआ बहुत प्रकारका शोजा तथा शूल आठ प्रकारका उदर बढे हुये व्रण इन्होंकों नाशता है। पुराना माणकका चूर्णकर तंडुल उसमें द्विगुणित डाल जल और दुग्धसें साधित किये पायसकों सेवै। वातोदर शोजा ग्रहणी पांडुरोग शीघ्र नाशता है। वैद्यलोगोंनें यह प्रयोग सिद्ध माना है। दशमूलक आधा तोला उसमें क्षारसहित पंचकोल एकपल और समानभाग घृत तथा दहीका पानीसहित सेवनेसें पेटका गुल्म नाशता है।

(१०)चतुर्गुणे जले मूत्रे द्विगुणे चित्रकात्पले ।
कल्के सिद्धं घृतप्रस्थं सक्षारं जठरी पिबेत्॥६०॥

(१० चित्रकघृतम्) चौगुना पानीमें और दुगुना मूत्रमें और ४ तोलेभर चीताके कल्कमें ६४ तोलेभर घृतकों सिद्ध कर उसमें जवाखार डाल उदररोगी पीवै।

(११)अर्कक्षीरपले द्वे च स्नुहिक्षीरपलानि षट्।
पथ्याकम्पिल्लकं श्यामासम्पाकं गिरिकर्णिका ६१
नीलिनी त्रिवृता दन्ती शङ्खिनी चित्रकं तथा ।
एतेषां पलिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ६२ ॥
अथास्य मलिने कोष्ठे बिन्दुमात्रं प्रदापयेत् ।
यावतोऽस्य पिबेद्बिन्दूंस्तावद्वारान्विरिच्यते ॥६३
कुष्ठं गुल्ममुदावर्तं श्वयथुं सभगन्दरम् ।
शमयत्युदराण्यष्टौ वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ।
एतद्बिन्दुघृतं नाम येनाभ्यक्तो विरिच्यते ॥६४॥

(११ बिंदुघृतम्) आकका दूध ८ तोले थोहरका दूध २४ तोले हरडै कपिला कालीनिशोत अमलतास विष्णुक्रांता नलिनी निशोत जमालगोटाकी जड शंखिनी चीता ये सब चार चार तोलेभर ले ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। इस मनुष्यके मलीनकोष्ठमें एक बुंदमात्र देना जितने बुंद दिये जावै उतनेही दस्त लगते हैं। कुष्ठ गुल्म उदावर्त शोजा भगंदर आठ प्रकारके उदररोग इन्होंकों शांत करता है। जैसे वृक्षकों इंद्रका वज्र। यह बिंदुघृत है। इसकी मालिससें जुलाब लगता है।

(१२)दधिमंडाढके सिद्धात्स्नुक्क्षीरपलकल्कितात्
घृतप्रस्थात्पिबेन्मात्रां तद्वज्जठरशान्तये ॥ ६५ ॥
तथा सिद्धं घृतप्रस्थं पयस्यष्टगुणे पिबेत् ।
स्नुक्क्षीरपलकल्केन त्रिवृता षट्पलेन च ॥६६॥
स्नुक्क्षीरदन्तीत्रिफलाविडङ्ग-
सिंहीत्रिवृच्चित्रककल्कयुक्तम् ।
घृतं विपक्वं कुडवप्रमाणं
तोयेन तस्याक्षमथार्धकर्षम् ॥ ६७ ॥
पीत्वोष्णमम्भोऽनु पिबेद्विरिक्ते
पेयां सुखोष्णां वितरेद्विधिज्ञः ।

नाराचमेतज्जठरामयानां
युक्तोपयुक्तं शमनं प्रदिष्टम् ॥ ६८ ॥
इति सर्वोदरचिकित्सा ।

(१२ नाराचघृतम्) दहीका पानी २५६ तोले थोहरका दूध ४ तोले इन्होंमें ६४ तोलेभर घृतकों सिद्धकर मात्राकों पीवै तो उदररोगकी शांति होतीहै। तैसे प्रकारसें सिद्ध किया घृतकों आठगुने दूधमें मिलाय पीवै। थोहरका दूध ४ तोले निशोत २४ तोले थोहरका दूध जमालगोटाकी जड त्रिफला वायविडंग कटेली निशोत चीता इन्होंके कल्कसें १६ तोलेभर सिद्ध किया घृत पानीके संग १ तोला तथा आधा तोलाभर लेके पीकै गरम पानी नहीं पीवै। जब दस्त लगचुके तब सुखपूर्वक गरम पेयाकों पीवै। यह नाराचरस उदरके रोगोंकों शांत करताहै।

इति गौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां सर्वोदरचिकित्सा।

अथ प्लीहाधिकारः ३७

अब प्लीहका अधिकार कहतेहै।

(१)यमानिकाचित्रकयावशूक-
षड्ग्रन्थिदन्तीमगधोद्भवानाम्।
प्लीहानमेतद्विनिहन्ति चूर्ण-
मुष्णाम्बुना मस्तुसुरासवैर्वा ॥ १ ॥
पिप्पलीं किंशुकक्षारभावितां संप्रयोजयेत्।
गुल्मप्लीहापहां वह्निदीपनीं च रसायनीम् ॥ २ ॥
विडङ्गाज्याग्निसिन्धूत्थशक्तून्दग्ध्वा वचान्वितान्।
पिबेत्क्षीरेण संचूर्ण्य गुल्मप्लीहोदरापहम् ॥ ३ ॥
तालपुष्पभवः क्षारः सगुडः प्लीहनाशनः।
क्षारं वा बिडकृष्णाभ्यां पूतीकस्याम्लनिःस्रुतम् ४
प्लीहयकृत्प्रशान्त्यर्थं पिबेत्प्रातर्यथाबलम्।
पातव्यो युक्तितः क्षारः क्षीरेणोदधिशुक्तिजः॥५॥
पयसा वा प्रयोक्तव्याः पिप्पल्यः प्लीहशान्तये।
भल्लातकाभयाजाजी गुडेन सह मोदकः ॥ ६ ॥
सप्तरात्रान्निहन्त्याशु प्लीहानमतिदारुणम्।
शोभाञ्जनकनिर्यूहं सैन्धवाग्निकणान्वितम् ॥ ७ ॥
पलाशक्षारयुक्तं वा यवाक्षारं प्रयोजयेत्।

(१ प्लीहायां सामान्योपायाः) अजमान चीता जखार वच जमालगोटाकी जड पीपल इन्होंके चूर्णकों गरम पानी दहीका पानी मदिरा आसव इन्होंमांहसें एक कोईसाके संग पीवै तो प्लीहरोग अर्थात् तिल्लीरोगका नाश होताहै। केशूके खारसें भावितकरी पीपलीकों प्रयुक्त करै तो गुल्म और तिल्लीरोगकों नाशतीहै अग्निकों दीपन करती है रसायन है। वायविडंग घृत चीता सेंधानमक वच इन्होंके सत्तुवोंकों भून चूर्ण कर दूधके संग पीवै तो गुल्म और तिल्लीरोग उदररोग इन्होंका नाश होताहै। गुडसहित ताडके फूलका खार प्लीहरोगकों नाशताहै। अथवा मनयारीनमक तथा पीपल और करंजुवाका खार बलके अनुसार प्रभातमें प्लीह और यकृत्रोगकी शांतिके अर्थ पीवै। समुद्रकी सींपीका खार दूधके संग युक्तिसें पीना योग्य है। अथवा प्लीहकी शांतिके अर्थ पीपल दूधके संग पीने योग्य है। भिलावा हरडै जीरा इन्होंकी गुडमें गोली बनाय खावै तो सातरात्रिसें भयंकर प्लीहरोगका नाश होताहै। सहोंजनाके क्राथमें सेंधानमक चीता और पीपल डाल अथवा जवाखारसहित केशूका खार प्रयुक्त करनेसें प्लीहरोग नष्ट होताहै।

(२)तिलान्सलवणांश्चैव घृतं षट्पलकं तथा॥८॥
प्लीहोद्दिष्टां क्रियां सर्वां यकृतः संप्रयोजयेत्।
लशुनं पिप्पलीमूलमभयां चैव भक्षयेत् ॥ ९ ॥
पिबेद्गोमूत्रगण्डूषं प्लीहरोगविमुक्तये।
प्लीहजिच्छरपुङ्खायाः कल्कस्तक्रेण सेवितः।
शरपुङ्खैव संचर्व्य जग्ध्वा पेयाभयाथवा ॥ १० ॥
शर्दिष्टानिर्यूहः ससैन्धवस्तिन्तिडीकसंमिश्रः।
प्लीहव्युपरम योगः पक्वाम्ररसोऽथवा समधुः ११
दध्ना भुक्तवतो वामबाहुमध्ये शिरां भिषक्।
विध्येत्प्लीहविनाशाय यकृन्नाशाय दक्षिणे ॥ १२ ॥
प्लीहानं मर्दयेद्गाढं दुष्टरक्तप्रवृत्तये।

(२ अन्ये उपायाः) नमकसहित तिलोंकों तथा षट्पलघृतकों और प्लीहरोगमें कही संपूर्ण क्रियाकों यकृत्रोगमें प्रयुक्त करै। ल्हशन पीपलामूल और हरडै इन्होंकों खावै और गोमूत्रके कुल्लेकों प्लीहरोगकी शांतिके अर्थ पीवै। शरपुंखाके कल्ककों तक्रसें सेवित करै तो प्लीहरोगकों जीतताहै। शरपुंखाही चावकै तथा खाकै अथवा पीनी तथा भोजन करनी। ब्राह्मीका क्राथमें सेंधानमक और

अमली डाल पीवै अथवा पकाहुआ आंबका रसमें शहद डाल पीवै। यह योग प्लीहरोगकों नाशता है। दहीके संग भोजन करनेवालाकी वामीबाहुके मध्यमें वैद्य शिराकों वींधै। प्लीहरोगका नाशके अर्थ और यकृत्रोगका नाशके अर्थ दाहनीबाहुके मध्यमें वींधै। दुष्टरक्तकी प्रवृत्तिके अर्थ तिल्लीकों करडा मर्दित करै।

(३)माणमार्गामृतावासास्थिराचित्रकसैन्धवम्॥
नागरं तालगण्डं च प्रत्यग्रं तु त्रिकार्षिकम्।
बिडसौवर्चलक्षारपिप्पल्यश्चापि कार्षिकाः॥१४॥
एतच्चूर्णीकृतं सर्वं गोमूत्रस्याढके पचेत्।
सान्द्रीभूते गुडीं कुर्याद्दत्त्वा त्रिपलमाक्षिकम्१५
यकृत्प्लीहोदरहरो गुल्मार्शोग्रहणीहरः।
योगः परिकरो नाम्ना चाग्निसन्दीपनः परः॥१६॥

(**३ माणाद्यगुटिका**) प्रमाणित कस्तूरी गिलोय वांसा शालपर्णी चीता सेंधानमक सोंठ ताडका मस्तक ये सब तीन तीन तोले मनयारीनमक कालानमक जवाखार पीपल ये एक एक तोला इनका चूर्णकर २५६ तोलेभर गोमूत्रमें पकावै। करडा होजाय तब १२ तोले शहद डाल गोली बनावै। यकृत्रोग प्लीहोदर गुल्म ववासीर ग्रहणीरोग इन्होंकों यह परिकर नामवाला योग नाशताहै और अग्निकों दीप्त करताहै।

(४)रोहितकाभयाक्षोदभावितं मूत्रमम्बु वा।
पीतं सर्वोदरप्लीहमेहार्शःक्रिमिगुल्मनुत्॥१७॥
पिप्पली नागरं दन्ती समांशं द्विगुणाभयम्।
चूर्णं पीतं बिडार्धांशं प्लीहघ्नं ह्युष्णवारिणा १८
क्रमवृद्ध्या दशाहानि दशपिप्पलिकं दिनम्।
वर्धयेत्पयसा सार्धं तथैवापनयेत्पुनः॥१९॥
जीर्णे जीर्णे च भुञ्जीत यष्टिकं क्षीरसर्पिषा।

(**४ रोहितादिचूर्णम्**) रोहिडा हरडैके चूर्णकों गोमूत्रमें अथवा पानीमें भिगोय पीवै तो सब उदररोग प्लीहरोग प्रमेह ववाशीर कृमिरोग गुल्म इन्होंकों नाशताहै। पीपल सोंठ जमालगोटाकी जड ये सब बराबर और हरडै दुगुनी इन्होंके चूर्णमें आधाभाग मनयारीनमक डाल गरम पानीसें पीवै तो प्लीहरोगका नाश होताहै। क्रमवृद्धिकरकै दश दिन दश पीपल बढाता और घटाताहुआ दूधके संग पीवै। और जीर्ण होनेपर सांठी चावलोंकों दूध और घृतसें खावै।

(५)पिप्पलीनां प्रयोगोऽयं सहस्रस्य रसायनः२०
दशपिप्पलिकः श्रेष्ठो मध्यमः षट् प्रकीर्तितः।
यस्त्रिपिप्पलिपर्यन्तः प्रयोगः सोऽवरः स्मृतः२१
बृंहणं वृष्यमायुष्यं प्लीहोदरविनाशनम्।
वयसः स्थापनं मेध्यं पिप्पलीनां रसायनम्॥२२॥
पञ्चपिप्पलिकश्चापि दृश्यते वर्धमानकः।
पिष्टास्ता बलिभिः पेयाः शृता मध्यबलैर्नरैः।
शीतीकृता ह्रस्वबलैर्देहदोषामयान्प्रति॥२३॥

(**५ पिप्पलीवर्धमानानि**) हजार पीपलोंका यह प्रयोग रसायन है। दश पीपल नित्य खाना यह श्रेष्ठ है। छह पीपल नित्य खाना यह मध्यम है। और तीन पीपल नित्य खाना यह कनिष्ठ प्रयोग कहा है। यह धातुओंकों बढाताहै। वीर्यमें हित है। आयुकों बढाता है। प्लीहोदरकों नाशताहै। अवस्थाकों स्थापित करताहै। बुद्धिकों बढाताहै। और रसायन है। पांच पीपलोंका नित्यप्रति योगभी वर्द्धमानक होताहै। बलवानोंनें पीसकर पीनी। मध्यबलवालोंनें पकाकै पीनी। अल्प बलवालोंनें शीतल बनाय पीनी। ये देहके दोष और रोगोंकों हरतेहैं।

(६)पिप्पलीचित्रकान्मूलं पिष्ट्वा सम्यग्विपाचयेत्
घृतं चतुर्गुणक्षीरं यकृत्प्लीहोदरापहम्॥२४॥

(**६ चित्रकघृतम्**) पीपलामूल चीताकी जड इन्होंकों पीस चौगुना दूध डाल घृतकों पकावै। यह यकृद्रोग प्लीहोदररोग इन्होंकों नाशताहै।

(७)पिप्पलीकल्कसंयुक्तं घृतं क्षीरचतुर्गुणम्।
पिबेत्प्लीहाग्निसादादियकृद्रोगहरं परम्॥२५॥

(**७ पिप्पलीघृतम्**) पीपलका कल्क और चौगुना दूधमें सिद्ध किया घृत प्लिहरोग मंदाग्निआदि यकृत्रोग इन रोगोंकों हरनेवाला कहाहै।

(८)चित्रकस्य तुलाक्काथे घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
आरणालं तद्द्विगुणं दधिमण्डं चतुर्गुणम्॥२६॥
पञ्चकोलकतालीसक्षारैर्लवणसंयुतैः।
द्विजीरकनिशायुग्मैर्मरिचं तत्र दापयेत्॥२७॥
प्लीहगुल्मोदराध्मानपाण्डुरोगारुचिज्वरान्।
वस्तिहृत्पार्श्वकट्यूरुशूलोदावर्तपीनसान्॥२८॥

हन्यात्पीतं तदर्शोघ्नं शोथघ्नं वह्निदीपनम्।
बलवर्णकरं चापि भस्मकं च नियच्छति ॥२९॥

(८ द्वितीयं चित्रकघृतम्) चीता ४०० तोलेभर ले उसके क्काथमें ६४ तोलाभर घृतकों पकावै। कांजी दुगुनी और दहीका पानी चौगुना पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ तालीस जवाखार नमक दोनोंजीरे हलदी दारुहलदी मिरच इन्होंका कल्क देकै पकावै तो प्लीहरोग गुल्म उदररोग अफारा पांडुरोग अरुचि ज्वर बस्तिशूल हृच्छूल पसलीशूल कटिशूल ऊरुशूल उदावर्त पीनस ववासीर शोजा इन्होंकों नाशताहै। अग्निकों जगाताहै बल और वर्णकों करताहै। और भस्मकरोगकों दूर करताहै।

(९)रोहितकत्वचः श्रेष्ठाः पलानां पञ्चविंशतिः।
कोलद्विप्रस्थसंयुक्तं कषायमुपकल्पयेत् ॥ ३० ॥
पलिकैः पञ्चकोलैश्च तत्सर्वैश्चापि तुल्यया।
रोहितकत्वचा पिष्टैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ३१
प्लीहाभिवृद्धिं शमयेदेतदाशु प्रयोजितम्।
तथा गुल्मज्वरश्वासक्रिमिपाण्डुत्वकामलाः ३२

(९ रोहितकं घृतम्) रोहिडाकी उत्तम छाल १०० तोले वडवेरी १२८ तोले इन्होंका क्काथ बनावै। पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ ये सब चार चार तोले और सबोंके बराबर रोहिडाकी छाल ले ६४ तोलेभर घृत पकावै। योजित किया घृत तिल्लीका बढाना गुल्म ज्वर श्वास कृमिरोग पांडुरोग कामला इन्होंकों नाशताहै।

(१०)रोहितकात्पलशतं क्षोदयेद्बदराढकम्।
साधयित्वा जलद्रोणे चतुर्भागावशेषिते ॥ ३३ ॥
घृतप्रस्थं समावाप्य छागक्षीरचतुर्गुणम्।
तस्मिन्दद्यादिमान्कल्कान्सर्वांस्तानक्षसम्मिताम्॥
व्योषं फलत्रिकं हिङ्गु यमानीं तुम्बुरुं बिडम्।
अजाजीं कृष्णलवणं दाडिमं देवदारु च ॥३५॥
पुनर्नवां विशालां च यवक्षारं सपौष्करम्।
विडङ्गं चित्रकं चैव हपुषां चविकां वचाम् ॥३६॥
एतैर्घृतं विपक्वं तु स्थापयेद्भाजने दृढे।
पाययेत्रिपलां मात्रां व्याधिं बलमपेक्ष्य च ॥३७॥
रसकेनाथ यूषेण पयसा वापि भोजयेत्।
उपयुक्ते घृते तस्मिन्व्याधीन्हन्यादिमान्बहून् ३८
यकृत्प्लीहोदरं चैव प्लीहशूलं यकृत्तथा।
कुक्षिशूलं च हृच्छूलं पार्श्वशूलमरोचकम् ॥३९
विबन्धशूलं शमयेत्पाण्डुरोगं सकामलम्।
छर्द्यतीसारशमनं तन्द्राज्वरविनाशनम्।
महारोहितकं नाम प्लीहघ्नं तु विशेषतः॥ ४० ॥

इति प्लीहयकृच्चिकित्सा।

(१० महारोहितकं घृतम्) रोहिडा ४०० तोले भर और वडवेरी २५६ तोले इन्होंकों १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै। जब चतुर्थांश शेष रहै तब बकरीका दूध चौगुना देकै ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। और उसमें एक एक तोला प्रमाणसें कल्कोंकों देवै। सोंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला हींग अजमान धनियां मनयारीनमक जीरा कालानमक अनार देवदार सांठी इंद्रायण जवाखार पौहकरमूल वायविडंग चीता हाऊवेर चव्य वच इन्होंसें पकायाहुआ घृत दृढपात्रमें स्थापित करना। रोगके बलकों देखकर तोलेभर मांहसें प्रमाणके अनुसार पीवै। मांसका रस यूष दूध इन्होंमांहसें एक कोईसाके संग भोजन करै। इस घृतकों खानेसें यत्कद्रोग प्लीहरोग उदररोग प्लीहशूल यकृच्छूल कुक्षिशूल हृच्छूल पसलीशूल अरोचक विबंधशूल पांडुरोग कमला छर्दि अतिसार इन्होंकों शांत करताहै। तंद्रा और ज्वरकों नाशताहै। यह महारोहित नामवाला घृत विशेषकरकै प्लीहाकों नाशताहै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकाभाषाटीकायां प्लीहयकृच्चिकित्सा।

अथ शोथाधिकारः ३८

अब शोथ अर्थात् शोजाका अधिकार कहतेहै।

(१)शुण्ठीपुनर्नवैरण्डपञ्चमूलशृतं जलम्।
वातिके श्वयथौ शस्तं पानाहारपरिग्रहे।
दशमूलं सर्वथा च शस्तं वाते विशेषतः ॥ १ ॥

क्षीराशनः पित्तकृतेऽथ शोथे
त्रिवृद्गुडूचीत्रिफलाकषायम्।
पिबेद्गवां मूत्रविमिश्रितं वा
फलत्रिकाच्चूर्णमथाक्षमात्रम् ॥ २ ॥

अभयादारुमधुकतिक्ता दन्ती सपिप्पली।
पटोलं चन्दनं दार्वी त्रायमाणेन्द्रवारुणी ॥ ३ ॥

एषां क्वाथः ससर्पिष्कः श्वयथुज्वरदाहहा ।
विसर्पतृष्णासन्तापसन्निपातविषापहा ।
शीतवीर्यैर्हिमजलैरभ्यङ्गादींश्च कारयेत् ॥ ४ ॥

(१ शोथोपायाः) सोंठ सांठी अरंड पंचमूल इन्होंका काथ वातके शोथमें पीना । भोजन मालिस इन्होंद्वारा श्रेष्ठ है । सब प्रकारसें दशमूलका काथ वातरोगमें विशेषकरकै श्रेष्ठ है । पित्तका शोजामें दूधकों भोजन करनेवाला निशोत गिलोय त्रिफला इन्होंके काथकों गोमूत्रमें मिलाय और १ तोलाभर त्रिफलाका चूर्ण डाल पीवै । हरडै देवदार महुवा कुटकी जमालगोटाकी जड पीपल परवल चंदन दारुहलदी त्रायमाण इंद्रायण इन्होंका काथ घृतसें युत किया शोजा ज्वर दाह इनोंकों नाशताहै । और विसर्प तृषा संताप सन्निपात विष इन्होंकों नाशताहै । शीतवीर्यवालोंनें शीतजलोंसें अभ्यंग आदि करावै ।

(२)पुनर्नवाविश्वत्रिवृद्गुडूची-
सम्पाकपथ्यामरदारुकल्कम् ।
शोथे कफोत्थे महिषाक्षयुक्तं
मूत्रं पिबेद्वा सलिलं तथैषाम् ॥ ५ ॥
कफे तु कृष्णासिकतापुराण-
पिण्याकशिग्रुत्वगुमाप्रलेपः ।
कुलत्थशुण्ठीजलमूत्रसेक-
श्चण्डागुरुभ्यामनुलेपनं च ॥ ६ ॥
अजाजिपाठाघनपञ्चकोल-
व्याघ्रीरजन्यः सुखतोयपीताः ।
शोथं त्रिदोषं चिरजं प्रवृद्धं
निघ्नन्ति भूनिम्बमहौषधे च ॥ ७ ॥
पुनर्नवानिम्बपटोलशुण्ठी-
तिक्तामृतादार्वभयाकषायः ।
सर्वाङ्गशोथोदरकासशूल-
श्वासान्वितं पाण्डुगदं निहन्ति ॥ ८ ॥

(२ पुनर्नवाष्टकः) सांठी सोंठ निशोत गिलोय अमलतास हरडै देवदार गूगल इन्होंका गोमूत्रमें अथवा काथ बनाय पीवै तो कफका शोजा नष्ट होताहै । कफका शोजामें पीपल सक्कर पुराणीखल सहोंजनाकी छाल हलदी इन्होंका लेप और कुलथी सोंठ इन्होंकों पानीमें तथा गोमूत्रमें डाल सेचन करना और शिवलिंगीसहित अगरसें लेप करना । जीरा पाठा नागरमोथा पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ कटेली हलदी इन्होंकों सुखपूर्वक गारमजलसें पीवै । त्रिदोषका शोजा और बहुत कालसें बढा हुआ शोजाकों नाशता है । तथा चिरायता और सोंठका काथभी हरताहै । सांठी नींब परवल सोंठ कुटकी गिलोय देवदार हरडै इन्होंका काथ संपूर्ण अंगोंका शोजा उदररोग खांसी शूल श्वास पांडुरोग इन्होंकों नाशताहै ।

(३)आर्द्रकस्य रसः पीतः पुराणगुडमिश्रितः ।
अजाक्षीराशिनां शीघ्रं सर्वशोथहरो भवेत् ॥९॥
पुनर्नवादारुशुण्ठीक्वाथे मूत्रे च केवले ।
दशमूलरसे वापि गुग्गुलुः शोथनाशनः ॥१०॥
बिल्वपत्ररसं पूतं शोषणं श्वयथौ त्रिजे ।
विट्सङ्गे चैव दुर्नाम्नि विदध्यात्कामलास्वपि ११
गुडपिप्पलिशुण्ठीनां चूर्णं श्वयथुनाशनम् ।
आमाजीर्णप्रशमनं शूलघ्नं बस्तिशोधनम् ॥१२॥
पुरो मूत्रेण सेव्येत पिप्पली वा पयोऽन्विता ।
गुडेन वाभया तुल्या विश्वं वा शोथरोगिणाम् १३
गुडार्द्रकं वा गुडनागरं वा
गुडाभयं वा गुडपिप्पलीं वा ।
कर्षाभिवृद्ध्या त्रिपलप्रमाणं
खादेन्नरः पक्षमथापि मासम् ॥ १४ ॥
शोथप्रतिश्यायगलास्यरोगान्
सश्वासकासारुचिपीनसांश्च ।
जीर्णज्वरार्शोग्रहणीविकारान्
हन्यात्तथान्यान्कफवातरोगान् ॥ १५ ॥

(३ शोथे गुडयुगार्द्रकरसादि) पुराणागुडसें युत किया अदरकका रस पीना और बकरीका दूधकों भोजन करनेवाला संपूर्ण शोजोंकों शीघ्र नाशताहै । सांठी देवदार सोंठ इन्होंके काथमें अथवा केवल गोमूत्रमें तथा दशमूलके रसमें युत किया गूगल शोजाकों नाशताहै । त्रिदोषका शोजामें कपडामांहकै छाना बेलपत्रका रस शोषण है । विष्ठाका बंधा ववासीर और कामलामें भी युत करना । गुड पीपल सोंठ इन्होंका चूर्ण शोजाकों नाशताहै । आमाजीर्णकों शांत करताहै । शूलकों नाशताहै । और बस्तिकों शोधताहै । गूगलकों गोमूत्रके संग अथवा पीपलकों दूधके संग अथवा गुडके साथ हरडै अथवा सोंठ खावै तो शोजामें हित होताहै । गुड और अदरक अथवा गुड

और सोंठ अथवा गुड और हरडै अथवा गुड और पीपल कर्षकी अभिवृद्धि करकै १२ तोलेपर्यंत पंदरहदिनतक अथवा एक महीनातक मनुष्य खावै तो शोजा प्रतिश्याय गलरोग मुखरोग श्वास खांसी अरुचि पीनस जीर्णज्वर ववासीर ग्रहणीविकार और अन्य कफवातके रोग इन्होंकों नाशताहै ।

(४)स्थलपद्ममयं कल्कं पयसालोड्य पाययेत् ।
प्लीहामयहरं चैव सर्वाङ्गैकाङ्गशोथजित् ॥ १६ ॥
दारुगुग्गुलुशुण्ठीनां कल्को मूत्रेण शोथजित् ।
वर्षाभूश्टङ्गवेराभ्यां कल्को वा सर्वशोथजित्॥१७॥
सिंहास्यामृतभण्डाकीकाथं कृत्वा समाक्षिकम् ।
पीत्वा शोथं जयेज्जन्तुः श्वासं कासं वमिं ज्वरम्॥
भूनिम्बविश्वकल्कं जग्ध्वा पेयः पुनर्नवाकाथः ।
अपहरति नियतमाशु शोथं सर्वाङ्गगं नृणाम् १९
शोथनुत्कोकिलाक्षस्य भस्म मूत्रेण वाम्भसा ।
क्षीरं शोथहरं दारुवर्षाभूनागरैः श्टतम् ॥ २० ॥
पेयं वा चित्रकव्योषत्रिवृद्दारुप्रसाधितम् ।

(४ पद्मकल्कादि) स्थलका कमलके कल्ककों दूधसें आलोडित कर पान करावै तो प्लीहरोग सर्वांगशोजा एकांगशोजा इन्होंकों जीतताहै । देवदार गूगल सोंठ इन्होंका कल्क गोमूत्रके साथ शोजाकों जीतताहै अथवा सांठी और अदरकका कल्क सब प्रकारका शोजाकों जीतताहै । वांसा वाराहीकंद भंडाकी इन्होंका क्वाथ बनाय शहदसें युत कर पीकै शोजा श्वास खांसी छर्दि ज्वर इन्होंकों मनुष्य जीतताहै । चिरायता और सोंठके कल्ककों खाकै फिर सांठीका क्वाथ पीना योग्य है । यह मनुष्योंके सर्वांगशोजाकों हरताहै । कोलिस्ताका भस्म बनाय गोमूत्रके संग अथवा पानीके संग पीवै तथा देवदार सांठी सोंठ इन्होंकरकै पकाया हुआ दूध अथवा चीता सोंठ मिरच पीपल निशोत देवदार इन्होंसें साधित किया दूध पीना योग्य है ।

(५)पुनर्नवामूलकपित्थदारु-
छिन्नोद्भवाचित्रकमूलसिद्धाः ।
रसा यवाग्वं च पयांसि यूषाः
शोथे प्रदेया दशमूलगर्भाः ॥ २१ ॥

क्षारद्वयं स्याल्लवणानि चत्वा-
र्ययोरजो व्योषफलत्रिके च ।
सपिप्पलीमूलविडङ्गसारं
मुस्ताजमोदामरदारुबिल्वम् ॥ २२ ॥
कलिङ्गकश्चित्रकमूलपाठे
यष्ट्याह्वयं सातिविषं पलाशम् ।
सहिङ्गु कर्षं त्वथ शुष्कचूर्णं
द्रोणं तथा मूलकशुण्ठकानाम् ॥ २३ ॥
स्याद्भस्मनस्तत्सलिलेन साध्य-
मालोड्य यावद्धनमप्यदग्धम् ।
स्यात्तं ततः कोलसमां च मात्रां
कृत्वा सुशुष्कां विधिना प्रयुञ्ज्यात्॥२४॥
प्लीहोदरश्वित्रहलीमकार्शः-
पाण्ड्वामयारोचकशोथशोषान् ।
विषूचिकागुल्मगराश्मरीश्च
सश्वासकासान्प्रणुदेत्सकुष्ठान् ॥ २५ ॥
सौवर्चलं सैन्धवं च विडमौद्भिदमेव च ।
चतुर्लवणमत्र स्याज्जलमष्टगुणं भवेत् ॥ २६ ॥

(५ क्षारगुटिका) सांठीकी जड कैथ देवदार गिलोय चीताकी जड इन्होंमें सिद्ध किये रस गुडयाणी दूध और यूष दशमूलका कल्कके युत किये शोजामें देने । साजीखार जवाखार चारोंनमक लोहाका चूर्ण सोंठ मिरच पीपल त्रिफला पीपलामूल वायविडंगसार नागरमोथा अजमोद देवदार वेलगिरी कूडा चीताकी जड पाठा मुलहटी अतीश केशू १ तोलाभर हींग और सहोंजनाकी जड और गुंठतृणका चूर्ण एक द्रोणभर इन्होंके क्वाथमें इन्होंके भस्मकों साधै तबतक आलोडित करै जब घन होजाय और दग्ध नहीं होय। पीछे वेरके समान सूखीहुई मात्राकों विधिसें प्रयुक्त करै । प्लीहोदर श्वित्रकुष्ठ हलीमक ववासीर पांडुरोग अरोचक शोजा शोष विषूचिका गुल्म विष पथरी श्वास खांसी कुष्ठ इन्होंकों नाशताहै । कालानमक सेंधानमक मनयारीनमक रेहीनमक यहां ये चारनमक हैं इससें आठगुना पानी देना ।

(६)पुनर्नवाचित्रकदेवदारु-
पञ्चोषणक्षारहरीतकीनाम् ।
कल्केन पक्वं दशमूलतोये
घृतोत्तमं शोथनिषूदनं च ॥ २७ ॥

(६ पुनर्नवाद्यं घृतम्) सांठी चीता देवदार पीपल गजपीपलका मूल चव्य कायफल सोंठ जवाखार हरडै इन्होंका कल्क और दशमूलके क्वाथमें पक्व किया गायका घृत शोजाकों नाशताहै ।

(७)पुनर्नवाक्वाथकल्कसिद्धं शोथहरं घृतम् ।
विश्वौषधस्य कल्केन दशमूलजले शृतम् ।
घृतं निहन्याच्छ्वयथुं ग्रहणीं पाण्डुतामयम् २८

(७ शुंठीघृतम्) सांठीका क्वाथ और कल्कमें सिद्ध किया घृत शोजाकों हरताहै । सोंठके कल्ककरकै दशमूलके क्वाथमें सिद्ध किया घृत शोजा ग्रहणी पांडुरोग इन्होंकों नाशताहै ।

(८)सचित्रकाधान्ययमानिपाठाः
सदीप्यकत्र्यूषणवेतसाम्लाः ।
बिल्वात्फलं दाडिमयावशूकं
सपिप्पलीमूलमथापि चव्यम् ॥ २९ ॥
पिष्ट्वाक्षमात्राणि जलाढकेन
पक्त्वा घृतप्रस्थमथोपयुञ्ज्यात् ।
अर्शांसि गुल्मान्छ्वयथुं च कृच्छ्रं
निहन्ति वह्निं च करोति दीप्तम् ॥ ३०

(८ चित्रकाद्यं घृतम्) चीता धनियां अजमान पाठा अजमोद सोंठ मिरच पीपल अम्लवेतस वेलगिरी अनार जवाखार पीपलामूल और चव्य ये सब एक एक तोलाभर लेकै २५६ तोलेभर पानीमें पकाकै ६४ तोलेभर घृतकों सिद्ध करै । ववासीर गुल्म मूत्रकृच्छ्र इन्होंकों नाशताहै । और अग्निकों दीप्त करता है ।

(९)रसे विपाचयेत्सर्पिः पञ्चकोलकुलत्थयोः ।
पुनर्नवायाः कल्केन घृतं शोथविनाशनम् ॥३१॥

(९ पंचकोलाद्यं घृतम्) पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ कुलथी इन्होंके रसमें सांठीके कल्ककरकै घृतकों पकावै । यह शोजाकों नाशताहै ।

(१०)क्षीरं घटे चित्रककल्कलिप्ते
दध्यागतं साधु विमथ्य तेन ।
तज्जं घृतं चित्रकमूलकल्कं
तक्रेण सिद्धं श्वयथुघ्नमग्र्यम् ॥ ३२ ॥
अर्शोऽतिसारानिलगुल्ममेहां-
स्तद्धन्ति संवर्धयते बलं च ॥ ३३ ॥

(१० चित्रकघृतम्) चीताके कल्कसें लिप्त किये घडेमें दही और दूध डाल अच्छीतरह मथ उस्सें निकासा हुआ घृत चीताकी जडका कल्क और तक्रमें सिद्ध करना यह उत्तम है । और शोजाकों नाशताहै । ववासीर अतीसार वातका गुल्म प्रमेह इन्होंकों वह घृत नाशताहै । और बलकों बढाताहै ।

(११)माणकक्वाथकल्काभ्यां घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
एकजं द्वन्द्वजं शोथं त्रिदोषं च व्यपोहति॥३४॥

(११ माणकं घृतम्) मानकंदका क्वाथ और कल्कसें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । यह एकदोषज दोदोषज त्रिदोषज ऐसा शोजाकों दूर करताहै ।

(१२)स्थलपद्मपलान्यष्टौ त्र्यूषणस्य चतुःपलम् ।
घृतप्रस्थं पचेदेभिः क्षीरं दत्वा चतुर्गुणम् ।
पञ्च कासान्हरेच्छीघ्रं शोथं चैव सुदुस्तरम् ३५

(१२ स्थलपद्मकघृतम्) स्थलकमल ३२तोले सोंठ मिरच पीपल १६तोले इन्होंके क्वाथमें चौगुना दूध दे ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । यह घृत पांच प्रकारकी खांसी और भयंकर शोजा इन्होंकों नाशताहै ।

(१३)शैलेयकुष्ठागुरुदारुकौन्ती-
त्वक्पद्मकैलाबुपलाशमुस्तैः ।
प्रियङ्गुस्थौणेयकहेममांसी-
तालीसपत्रप्लवपत्रधान्यैः ॥ ३६ ॥
श्रीवेष्टकध्यामकपिप्पलीभिः
पृक्कानखैर्वापि यथोपलाभम् ।
वातान्विते ऽभ्यङ्गमुशन्ति तैलं
सिद्धं सुपिष्टैरपि च प्रदेहम् ॥ ३७ ॥

(१३ शैलेयाद्यं घृतम्) लोवान कूट अगर देवदार रेणुकबीज दालचिनी कमल इलायची नेत्रवाला केशू नागरमोथा मालकांगनी गठोना कचनार वालछड तालीसपत्र क्षुद्रमोथा तेजपात धनियां श्रीवेष्टधूप रोहिषतृण पीपल पृक्का नख इन्होंमाहसे जितने मिलैं उतने ले तेलकों सिद्ध करै । इस तेलकी मालिस तथा इन औषधियोंकों पीसकर किया लेप वातका शोजामें हित है ।

(१४)शुष्कमूलकवर्षाभूदारुरास्नामहौषधैः ।
पक्वमभ्यञ्जनात्तैलं सशूलं श्वयथुं जयेत् ॥ ३८ ॥

(१४ शुष्कमूलाद्यंघृतम्) सूखा सहोंजनाकी जड सांठी देवदार रास्ना सोंठ इन्होंमें पकाया तेलकी मालिस शूलसहित शोजाकों नाशतीहै ।

(१५)पुनर्नवामृतादरुदशमूलरसाढके ।
आर्द्रकस्वरसे प्रस्थे गुडस्य तु तुलां पचेत्॥३९॥
तत्सिद्धं व्योषचव्यैलात्वक्पलैः कार्षिकैः पृथक् ।
चूर्णीकृतैः क्षिपेच्छीते मधुनः कुडवं लिहेत् ४०
लेहः पौनर्नवो नाम शोथशूलनिषूदनः ।
श्वासकासाऽरुचिहरो बलवर्णाग्निवर्धनः ॥४१॥

(१५ पुनर्नवालेहः) सांठी गिलोय देवदार दशमूल इन्होंके २५६ तोलेभर रसमें और अदरकके ६४ तोलेभर रसमें गुड ४०० तोलेभर पकाना । और सोंठ मिरच पीपल चव्य इलायची दालचिनी तेजपात ये सब एक एक तोलाभर ले चूर्ण बनाय शीतल होनेपर मिलाना और शहद १६ तोले मिलाना । यह पौनर्नवलेह शोजा और शूलकों नाशताहै । और श्वास खांसी अरुचि इन्होंकों हरताहै । और बल वर्ण अग्नि इन्होंकों बढाताहै ।

(१६)दशमूलकषायस्य कंसे पथ्याशतं पचेत् ।
तुलां गुडाद्धने दद्याद्व्योषक्षारं चतुःपलम्॥४२॥
त्रिसुगन्धं सुवर्णांशं प्रस्थार्धं मधुनो हिमे ।
दशमूलीहरीतक्यः शोथान्हन्युः सुदारुणान् ४३
ज्वरारोचकगुल्मार्शोमेहपाण्डूदरामयान् ।
प्रत्येकमेककर्षांशं त्रिसुगन्धमितो भवेत् ॥ ४४ ॥
कंसहरीतकी चैषा चरके पठ्यतेऽन्यथा ।
एतन्मानेन तुल्यत्वं तेन तत्रापि वर्ण्यते ॥४५॥

(१६ दशमूला हरीतकी) दशमूलका क्काथ १९२ तोलेभरमें १०० हरडै पकावै। घनरूप होनेमें ४०० तोलेभर गुड और सोंठ मिरच पीपलका खार १६ तोले दालचिनी इलायची तेजपात इन्होंका चूर्ण १ तोला शीतल होनेमें शहद ३२ तोले ये दशमूलहरीतकी भयंकर शोजाकों नाशतीहै । ज्वर अरोचक गुल्म बवासीर प्रमेह पांडु उदररोग इसमें दालचिनी आदि तीनों तीन तोले लेने। यह कंसहरीतकी चरकमें अन्य प्रकारसें पढी है इसके मान करकै तुल्य है तिसकरकै तहांभी वर्णित करी है ।

(१७)द्विपञ्चमूलस्य पचेत्कषाये
कंसेऽभयानां च शतं गुडाच्च ।
लेहे सुसिद्धे च विनीय चूर्णं
व्योषत्रिसौगन्ध्यमुषास्थिते च ॥ ४६ ॥
प्रस्थार्धमात्रं मधुनः सुशीते
किंचिच्च चूर्णादपि यावशूकात् ।
एकाभयां प्राश्य ततश्च लेहा-
च्छुक्तिं निहन्ति श्वयथुं प्रवृद्धम् ॥ ४७ ॥
कासज्वरारोचकमेहगुल्मा-
न्प्लीहत्रिदोषोद्भवपाण्डुरोगान् ।
कार्श्यामवातावसृगम्लपित्तं
वैवर्ण्यमूत्रानिलशुक्रदोषान् ॥ ४८ ॥
अत्र व्याख्यान्तरं नोक्तं
व्याख्या पूर्वैव यच्छुभा ॥ ४९ ॥

(१७ कंसहरीतकी) दशमूलका क्काथ १९२ तोलेभरमें हरडै १०० और गुड ४०० तोले इन्होंका लेह बनाय उसमें सोंठ मिरच पीपल दानचिनी इलायची तेजपात इन्होंका चूर्ण डालै । और सुंदर सुशीतल होनेपर ३२ तोलेभर शहद डालै और कछुक जवाखार पीछे एक हरडै खाकै २ तोलेभर लेहकों चाटै। यह प्रवृद्ध हुआ शोजाकों नाशताहै । खांसी ज्वर अरोचक प्रमेह गुल्म प्लीहरोग त्रिदोषका पांडु कृशपना आमवात रक्तरोग अम्लपित्त विवर्णता मूत्रदोष वातदोष वीर्यदोष इन्होंकों नाशताहै । यहां अन्य व्याख्या नहीं कही है । जो पहली व्याख्या है वही शुभ है ।

(१८)लेपोऽरुष्करशोथं
निहन्ति तिलदुग्धमधुनवनीतैः ।
तत्तरुतलमृद्भिर्वा
शालदलैर्वा तु न चिरेण ॥ ५० ॥
शोथे विषनिमित्ते तु विषोक्ता सम्मता क्रिया५१
ग्राम्यजानूपं पिशितलवणं शुष्कशाकं नवान्नं
गौडं पिष्टान्नं दधि सकृशरं विज्जलं मद्यमम्लम्।
धानावल्लूरं समशनमथो गुर्वसात्म्यं विदाहि
स्वप्नं चारात्रौ श्वयथुगदवान्वर्जयेन्मैथुनं च ॥५२॥
इति शोथचिकित्सा ।

(१८ शोथे लेपादि) तिल शहद दूध नौंनीघृत

इन्होंसें किया लेप भिलावाका शोजाकों नाशताहै । भिलावा वृक्षका नीचाकी माटीकरकै अथवा अर्जुनवृक्षके पत्तोंकरकै भिलावाका शोजा शीघ्र नष्ट होता है । विषसें उपजा शोजामें विषोक्तक्रिया करनी । गामका बकरा और अनूपदेशका मांस नमक सूखाशाक नवीन अन्न गुडका पदार्थ पिसाहुआ अन्न दही खिचडी जलवेत मदिरा अम्लरस भुनेहुवे गेहूं सूखा मांस अच्छा भोजन भारी भोजन प्रकृतिसें विरुद्ध भोजन दाह करनेवाला भोजन दिनमें सोना और स्त्रीसंग इन्होंकों शोजावाला रोगी वर्जित करै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां शोथचिकित्सा ।

अथ वृद्ध्यधिकारः ३९

अब वृद्धिरोगका अधिकार करतेहै।

(१)गुग्गुलुं रुबुतैलं वा गोमूत्रेण पिबेन्नरः ।
वातवृद्धिं निहन्त्याशु चिरकालानुबन्धिनीम्॥१॥
सक्षीरं वा पिबेत्तैलं मासमेरण्डसम्भवम् ।
पुनर्नवायास्तैलं वा तैलं नारायणं तथा ॥ २ ॥
पाने बस्तौ रुरोस्तैलं पेयं वा दशकाम्भसा ।
चन्दनं मधुकं पद्ममुशीरं नीलमुत्पलम् ॥ ३ ॥
क्षीरपिष्टैः प्रदेहः स्याद्दाहशोथरुजापहः ।
पञ्चवल्कलकल्केन सघृतेन प्रलेपनम् ॥ ४ ॥
सर्वं पित्तहरं कार्यं रक्तजे रक्तमोक्षणम् ।
श्लेष्मवृद्धिं तूष्णवीर्यैर्मूत्रपिष्टैः प्रलेपयेत् ॥ ५ ॥
पीतदारुकषायं च पिबेन्मूत्रेण संयुतम् ।
स्विन्नं मेदःसमुत्थं तु लेपयेत्सुरसादिना ॥ ६ ॥
शिरोविरेकद्रव्यैर्वा सुखोष्णैर्मूत्रसंयुतैः ।
संस्वेद्य मूत्रप्रभवां वस्त्रपट्टेन वेष्टयेत् ॥ ७ ॥
सीवन्याः पार्श्वतोऽधस्ताद्विध्येद्व्रीहिमुखेन वै ।
शङ्खोपरि च कर्णान्ते त्यक्त्वा सीवनिमादहेत् ८
व्यत्यासाद्वा शिरां विध्येदन्त्रवृद्धिनिवृत्तये ।
अङ्गुष्ठमध्ये त्वक् छित्त्वा दहेदङ्गविपर्यये ॥ ९ ॥

(१ वातवृद्धौ गुग्गुलुतैलादि) गूगलकों अथवा अरंडके तेलकों गोमूत्रके संग मनुष्य पीवै। यह बहुत कालसें उपजीहुई वातवृद्धिकों शीघ्र नाशता है । अथवा दूधसहित अरंडके तेलकों अथवा सांठीके तेल अथवा नारायणतेलकों पीवै अथवा अरंडका तेल दशमूलका क्वाथके संग पीना तथा बस्तिकर्ममें वर्तना योग्य है। चंदन मुलहटी कमल खस नीलाकमल इन्होंकों दूधमें पीस लेप करना । दाह शोजाकी पीडाकों नाशता है। वड गूलर पीपल परोसा पीपल वेतस इन्होंकों घृतमें कल्क बनाय लेप तथा संपूर्ण पित्तनाशक करना । रक्तकी वृद्धिमें रक्त निकासना । कफकी वृद्धिकों गोमूत्रसें पीसीहुई गरमवीर्यवाली ओषधियोंसें लेप करै । और पीला देवदारका क्वाथ गोमूत्रसें युत करकै पीना । मेदकों अच्छीतरह गोमूत्रसें स्वेदित कर सुरसादिगणकी ओषधियोंसें लेपित करै । अथवा शिरमें जुलाब करनेवाले ओषधोंकों गोमूत्रसें युतकर कछुक गरम लेप करै । मूत्रसें उपजी वृद्धिकों अच्छीतरह स्वेदित कर वस्त्रकी पट्टीसें वेष्टित करै । अथवा सीवनीके दोनों तर्फ नीचै व्रीहिमुखशस्त्रसें वींधै । कनपटीके ऊपर कानके समीपमें सीवनकों त्यागकर दग्ध करै । अथवा अंत्रवृद्धिकों दूर करनेके अर्थ व्यत्याससें शिराकों वींधै । अंगूठाके मध्य खाल काटकै अंगके विपर्ययमें दग्ध करै ।

(२)रास्नायष्ट्यमृतैरण्डबलागोक्षुरसाधितः ।
क्वाथोऽन्त्रवृद्धिं हन्त्याशु रुबुतैलेन मिश्रितः १०
तैलमेरण्डजं पीत्वा बलासिद्धपयोऽन्वितम् ।
आध्मानशूलोपचितामन्त्रवृद्धिं जयेन्नरः ॥ ११ ॥
हरीतकीं मूत्रसिद्धां सतैलां लवणान्विताम् ।
प्रातः प्रातश्च सेवेत कफवातामयापहाम् ॥१२॥

गोमूत्रसिद्धां रुबुतैलभृष्टां
हरीतकीं सैन्धवसंप्रयुक्ताम् ।
खादेन्नरः कोष्णजलानुपानां
निहन्ति वृद्धिं चिरजां प्रवृद्धाम् ॥ १३ ॥

त्रिफलाक्वाथगोमूत्रं पिबेत्प्रातरतन्द्रितः ।
कफवातोद्भवं हन्ति श्वयथुं वृषणोत्थितम् ॥१४
सरलागुरुकुष्ठानि देवदारुमहौषधम् ।
मूत्रारणालसंयुक्तं शोथघ्नं कफवातनुत् ॥ १५ ॥
भृष्टो रुबुकतैलेन कल्कः पथ्यासमुद्भवः ।
कृष्णासैन्धवसंयुक्तो वृद्धिरोगहरः परः ॥ १६ ॥

(२ रास्नाक्वाथादि) रासना मुलहटी गिलोय अरंड खरैंहटी गोखरू इन्होंसें साधित किया क्वाथमें अरंडका तेल डाल पीनेसें अंत्रवृद्धिका शीघ्र नाश होताहै । खरैं-

हटीसें सिद्ध किया दूधमें अरंडका तेल डाल पीवै तो मनुष्य अफारा शूल अंत्रवृद्धि इन्होंकों नाशताहै । हरडैकों गोमूत्रमें सिद्ध कर तेल और नमक डाल प्रभातमें सेवै तो कफवातके रोग नष्ट होतेहैं । गोमूत्रमें सिद्ध करी और अरंडके तेलमें भूनीहुई हरडैकों सेंधानमकसें संयुक्त कर खावै और आल्पगरम किया जलका अनुपान करै । यह पुरानी बढीहुई वृद्धिकों नाशता है । प्रभातमें सावधान होकै त्रिफलाके क्वाथमें गोमूत्र डाल पीवै तो कफवातसें उपजा पोतोंका शोजा नष्ट होताहै । सरलवृक्ष अगर कूट देवदार सोंठ इन्होंकों गोमूत्र और कांजीसें युत कर पीवै तो शोजा और फकवातका नाश होताहै । हरडैके कल्ककों अरंडके तेलसें भून पीपल और सेंधानमक डाल पीवै तो वृद्धिरोगका नाश होताहै ।

(३)गव्यं घृतं सैन्धवसंप्रयुक्तं
शम्बूकभाण्डे निहितं प्रयत्नात् ।
सप्ताहमादित्यकरैर्विपक्वं
निहन्ति कूरण्डमतिप्रवृद्धम् ॥ १७ ॥
ऐन्द्रीमूलभवं चूर्णं रुबुतैलेन मर्दितम् ।
त्र्यहाद्गोपयसा पीतं सर्ववृद्धिनिवारणम् ॥१८॥
रुद्रजटामूललिप्ता करटव्यङ्गचर्मणा ।
बद्धा वृद्धिः शमं याति चिरजापि न संशयः१९
निष्पिष्टमारणालेन रूपिकामूलवल्कलम् ।
लेपो वृद्ध्यामयं हन्ति बद्धमूलमपि दृढम् ॥२०॥
वचासर्षपकल्केन प्रलेपो वृद्धिनाशनः ।
लज्जागृध्रमलाभ्यां च लेपो वृद्धिहरः परः ॥२१॥

(**३ गव्यघृतादिप्रयोगः**) गायका घृत और सेंधानमककों शंखके पात्रमें घाल जतनसें धर सात दिनतक सूर्यकी किरणोंसें पकाय पीवै तो अत्यंत बढा हुआ कूरंडकों नाशताहै । इंद्रायणकी जडका चूर्णकों अरंडके तेलसें मर्दित कर तीन दिन गौका दूधसें पीवै तो सब प्रकारकी वृद्धियोंकों नाशताहै । ईश्वरीबूंटीकी जडसें लिपी हुई कागकी चामसें बंधीहुई पुराणी वृद्धिभी शांत होती है इसमें संशय नहीं । आककी जडके वक्कलकों कांजीसें पीस किया लेप दृढरूप और जडसहित वृद्धिरोगकों नाशताहै । वच सरसों इन्होंके कल्कसें किया लेप वृद्धिकों नाशताहै । लज्जावंती और गीधका मलसें किया लेप वृद्धिरोगकों हरताहै ।

(४)मूलं बिल्वकपित्थयोररलुकस्याग्नेर्बृहत्योर्द्वयोः
श्यामापूतिकरञ्जशिग्रुकतरोर्विश्वौषधारुष्करम् ।
कृष्णाग्रन्थिकचव्यपञ्चलवणक्षाराजमोदान्वितं
पीतं काञ्जिककोष्णतोयमथितं चूर्णीकृतं ब्रध्नजित्॥
अविक्षीरेण गोधूमकल्कं कुन्दुरुकस्य वा ।
प्रलेपनं सुखोष्णं स्याद्ब्रध्नशूलहरः परः ॥ २३ ॥
मृतमात्रे तु वै काके विशस्ते संप्रवेशयेत् ।
ब्रध्नं मुहूर्तं मेधावी तत्क्षणादरुजं भवेत् ॥ २४ ॥
अजाजी हपुषा कुष्ठं गोधूमं बदराणि च ।
काञ्जिकेन समं पिष्ट्वा कुर्याद्ब्रध्नप्रलेपनम् ॥ २५ ॥

(**४ बिल्वादिक्वाथचूर्णादि**) बेलवृक्ष और कैथकी जड सोनापाठा चीताकी जड दोनोंकटेली कालीनिशोत पूतिकरंजुवा सहोंजना इन्होंकी छाल सोंठ भिलावा पीपल पीपलामूल चव्य पांचोंनमक जवाखार अजमोद इन्होंके चूर्णकों अल्पगरम किया पानीसें पीवै तो ब्रध्नरोगकों नाशताहै । गेहूंका कल्क अथवा कुंदरुका कल्क भेडका दूधसें पीस अल्प गरम कर किया लेप ब्रध्नशूलकों हरताहै । मृतहुये काकमें ब्रध्नकों दो घडी प्रवेश करै तो शीघ्रही रोग दूर होताहै । जीरा हाऊबेर कूट गेहूं बेर ये सब समान ले कांजीसें पीस ब्रध्नरोगपर लेप करै ।

(५)सैन्धवं मदनं कुष्ठं शताह्वां निचुलं वचाम् ।
ह्रीबेरं मधुकं भार्गीं देवदारु सनागरम् ॥ २६ ॥
कट्फलं पौष्करं मेदां चविकं चित्रकं शठीम् ।
विडङ्गातिविषे श्यामां रेणुकां नलिनीं स्थिराम् ॥
बिल्वाजमोदे कृष्णां च दन्तीरास्ने प्रपिष्य च ।
साध्यमेरण्डजं तैलं तैलं वातविकारनुत् ॥२८॥
ब्रध्नोदावर्तगुल्मार्शःप्लीहमेहाढ्यमारुतान् ।
आनाहमश्मरीं चैव हन्यात्तदनुवासनात् ।
घृतं सौरेश्वरं योज्यं ब्रध्नवृद्धिनिवृत्तये ॥ २९ ॥

इति वृद्धिब्रध्नचिकित्सा ।

(**५ बृहत्सैंधवाख्यं तैलम्**) सेंधानमक मैनफल कूट शतावरी जलवेत वच नेत्रवाला महुवा भारंगी देवदार सोंठ कायफल पौहकरमूल मेदा चव्य चीता कचूर वायविडंग अतीस कालीनिशोत रेणुकबीज नीली शालपर्णी बेलगिरी अजमोद पीपल जमालगोटाकी जड रास्ना इन्होंकों पीस अरंडका तेल सिद्ध करना । यह तेल वातके

विकारकों नाशता है। ब्रध्न उदावर्त्त गुल्म बवासीर प्लीह-रोग प्रमेह आढ्यवात अफारा पथरी इन्होंकों अनुवास-नसें नाशता है। ब्रध्नरोग और वृद्धिरोगकों दूर करनेके-वास्ते सौरेश्वरघृत युक्त करना।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्रविद-त्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां ब्रध्नचिकित्सा।

अथ गलगण्डाधिकारः ४०

अब गलगंडरोगका अधिकार कहतेहैं।

(१)यवमुद्गपटोलानि कटु रूक्षं च भोजनम्।
छर्दिं सरक्तमुक्तिं च गलगण्डे प्रयोजयेत्॥ १॥
तण्डुलोदकपिष्टेन मूलेन परिलेपितः।
हस्तिकर्णपलाशस्य गलगण्डः प्रशाम्यति॥ २॥
सर्षपाञ्शिग्रुबीजानि शणबीजातसीयवान्।
मूलकस्य च बीजानि तक्रेणाम्लेन पेषयेत्॥ ३॥
गण्डानि ग्रन्थयश्चैव गलगण्डाः सुदारुणाः।
प्रलेपात्तेन शाम्यन्ति विलयं यान्ति चाचिरात् ४
जीर्णकर्कारुकरसो विडसैन्धवसंयुतः।
नस्येन हन्ति तरुणं गलगण्डं न संशयः॥ ५॥
जलकुम्भीकजं भस्म पक्वं गोमूत्रगालितम्।
पिबेत्कोद्रवभक्ताशी गलगण्डप्रशान्तये॥ ६॥
सूर्यावर्तरसोनाभ्यां गलगण्डोपनाहने।
स्फोटास्रावैः शमं याति गलगण्डो न संशयः॥७॥

(१ गलगंडे यवमुद्गादिप्रयोगः) जव मूंग परवल चर्चरा और रूखा भोजन छर्दि और रक्तकी छर्दि इन्होंकों गलगंडमें प्रयुक्त करै। चावलका पानीसें अरंड और केशूकी जडकों पीस किया लेप गलगंडकों शांत करताहै। सरसों सहोंजनाके बीज शणके बीज अलसी जव मूलीके बीज इन्होंकों खट्टातक्रसें पीसै। गंड ग्रंथि भयंकर गलगंड ये सब लेपसें शीघ्र नष्ट होतेहैं। पुरानी तूंबीके रसमें मनयारीनमक और सेंधानमक डाल नस्य लेनेसें तरुण गलगंडकों नाशताहै। संशय नहीं। जलमें उपजा कुंभीरका भस्म बनाय गोमूत्रमें डाल पीवै और कोदूकों खावै तो गलगंड शांत होता है। सूर्यवेल औ ल्हशनसे गलगंडको लेप पींडी बांधे स्नावसें फोडे शांत होकै गलगंड नष्ट होताहै।

(२)तिक्तालाबुफले पक्वे सप्ताहमुषितं जलम्।
मद्यं वा गलगण्डघ्नं पानात्पथ्यानुसेविनः॥ ८॥
कटूफलचूर्णान्तर्गल-
वर्षो गलगण्डमपहरति।
घृतमिश्रं पीतमिव
श्वेतगिरिकर्णिकामूलम्॥ ९॥
महिषीमूत्रविमिश्रं
लोहमलसंस्थितं घटे मासम्।
अन्तर्धूमविदग्धं
लिह्यान्मधुनाथ गलगण्डे॥ १०॥
जिह्वायाः पार्श्वतोऽधस्ताच्छिरा द्वादश कीर्तिताः।
तासां स्थूलशिरे द्वेऽधश्छिन्द्यात्ते च शनैः शनैः॥
वडिशेनैव संगृह्य कुशपत्रेण बुद्धिमान्।
स्रुते रक्ते व्रणे तस्मिन्दद्यात्सगुडमार्द्रकम्॥१२॥
भोजनं चानभिष्यन्दि यूषः कौलत्थ इष्यते।
कर्णयुग्मबहिःसन्धिमध्याभ्यासे स्थितं च यत् १३
उपर्युपरि तच्छिन्द्याद्गलगण्डे शिरात्रयम्।
विडङ्गक्षारसिन्धूग्ररास्नाग्निव्योषदारुभिः॥१४॥
कटुतुम्बीफलरसैः कटुतैलं विपाचयेत्।
चिरोत्थमपि नस्येन गलगण्डं निवारयेत्॥१५॥

(२ तुंबीतैलादि) कडुवी तोरीके पक्के फलमें सात दिन घालकर धरा पानी अथवा मदिराकों पीवै और पथ्यसें भोजन करै तो गलगंडका नाश होताहै। कायफलका चूर्ण और कोरटासें घिसै अथवा श्वेतगोकर्णीकी जडके रसमें घृत डाल पीवै तो गलगंड नष्ट होताहै। लोहाका मल और भैंसाका मूत्र घडामें घाल एकमहीनातक धर पीछे ऐसी रीतिसें जलावै कि धुवां भीतरही रहै। पीछे शहदमें डाल चाटै तो गलगंडमें हित होता है। जीभके दोनों-तर्फ नीचाकों बारह शिरा कही हैउन्होंके नीचाकी दो शिरा छेदित होलें होलें करनी। वडिशसें ग्रहण करके कुशपत्रसें बुद्धिमान् काटै। रक्त झिरचुकै तब गुडसहित अदरककों घावमें लगावै। जो अभिष्यंदी नहीं हो वह भोजन और कुलथीका यूष इच्छित है। दोनोंकानोंके बाहिर संधिका मध्यके समीप जो स्थित हो वह ऊपर ऊपर छेदित करना। ऐसे गलगंडसें तीन शिरा छेदित करनी। वायविडंग जवाखार सेंधानमक वच रास्ना चीता सोंठ मिरच पीपल

देवदार कडवी तूंबीका रस इन्होंमें कडुवा तेलकों पकावै । इसकी नस्य लेनेसें पुरानाभी गलगंड नष्ट होताहै ।

(३)तैलं पिवेच्चामृतवल्लिनिम्ब-
हिंस्राह्वयावृक्षकपिप्पलीभिः ।
सिद्धं बलाभ्यां च सदेवदारु
हिताय नित्यं गलगण्डरोगी ॥ १६ ॥

माक्षिकाढ्यः सकृत्पीतः क्राथो वरुणमूलजः ।
गण्डमालां निहन्त्याशु चिरकालानुबन्धिनीम् १७
पिष्टा ज्येष्ठाम्बुना पेयाः काञ्चनारत्वचः शुभाः ।
विश्वभेषजसंयुक्ता गण्डमालापहाः पराः ॥१८॥
आरग्वधशिफाक्षिप्रं पिष्ट्वा तण्डुलवारिणा ।
सम्यङ्नस्यप्रलेपाभ्यां गण्डमालां समुद्धरेत् ॥१९॥
गण्डमालामयार्तानां नस्यकर्मणि योजयेत् ।
निर्गुण्ड्याश्च शिफां सम्यग्वारिणा परिपेषिताम् ॥

(३ अमृताद्यं घृतम्) गिलोय नींब बालछड अम्लवेत पीपल दोनों खरैंटी देवदार इन्होंसें सिद्ध किये तेलकों गलगंडरोगी पीवै । बरनाकी जडका क्राथमें शहद डाल एकवार पीवै तो बहुतकालसे उपजी गंडमालाकों शीघ्र नाशताहै । कचनारकी सुंदर छालकों चावलोंका पानीके संग सोंठका चूर्णसें युतकर पीवै तो गलगंडकों हरतीहै । अमलतासकी जडकों चावलोंके पानीसें पीस अच्छीतरह नस्य और लेपसें गंडमालाकों नाशता है । संभालूकी जडकों पानीसें अच्छीतरह पीस गंडमालासें पीडितहुये रोगियोंकों नस्य कर्ममें युक्त करै ।

(४)कोषातकीनां स्वरसेन नस्यं
तुम्ब्यास्तु वा पिप्पलिसंयुतेन ।
तैलेन वारिष्टभवेन कुर्या-
द्वचोपकुल्ये सह माक्षिकेण ॥ २१ ॥

ऐन्द्र्या वा गिरिकर्ण्या वा मूलं गोमूत्रयोगतः ।
गण्डमालां हरेत्पीतं चिरकालोत्थितामपि ॥२२॥
अलम्बुषादलोद्भूतात्स्वरसाद्वे पले पिबेत् ।
अपच्या गण्डमालायाः कामलायाश्च नाशनः॥२३
गलगण्डगण्डमालाकुरण्डांश्च विनाशयेत् ।
पिष्टं ज्येष्ठाम्बुना मूलं लेपाद्ब्राह्मणयष्टिकम्॥२४॥

(४ कोशातकीनस्यादि) कडवी तोरीके स्वरसकरकै अथवा तूंबीके स्वरसकरकै अथवा पीपलसहित नींबके तेलकरकै अथवा शहदसहित वच और पीपलकरकै नस्य लेवै । इंद्रायणकी अथवा श्वेतगोकर्णीकी जडकों गोमूत्रके योगसें पीवै तो बहुत दिनोंसें उपजी गंडमालाकों शीघ्र हरतीहै । गोरखमुंडीके पत्तोंका रस ८ तोलेभर ले पीवै तो अपची गंडमाला और कामलाकों नाशताहै । भारंगीकी जडकों चावलोंके धोवनसें पीस लेप करनेसें गलगंड गंडमाला और कुरंड इन्होंका नाश होताहै ।

(५)अभ्यङ्गान्नाशयेन्नॄणां गण्डमालां सुदारुणाम् ।
छुच्छुन्दर्या विपक्वं तु क्षणात्तैलवरं ध्रुवम् ॥२५॥
(६)गलगण्डापहं तैलं सिद्धं शाखोटकत्वचा ।
बिम्बाश्वमारनिर्गुण्डीसाधितं चापि नावनम् २६

(५-६ छुछुंदरीशाखोटकबिंब्यादितैलम्) चकचूंदरका तेल मालिस करनेसें भयंकर गंडमालाकों शीघ्र नाशताहै । शाखोटवृक्षकी छालसें सिद्ध किया तथा कडवी तोरी कनेर संभालू इन्होंसें साधित किया तेलकी नस्य लेनेसें गलगंडरोग नष्ट होताहै ।

(७)निर्गुण्डीस्वरसे चाथ लाङ्गलीमूलकल्कितम्।
तैलं नस्यान्निहन्त्याशु गण्डमालां सुदारुणम्॥२७

(७ निर्गुंडीतैलम्) संभालूके स्वरसमें और कलहारीकी जडके कल्कमें सिद्ध किया तेल भयंकर गंडमालाकों शीघ्र नाशता है ।

(८)वनकार्पासिकामूलं तण्डुलैः सह योजितम् ।
पक्त्वा तु पूपिकां खादेदपचीनाशनाय तु॥२८॥
शोभाञ्जनं देवदारु काञ्जिकेन तु पेषितम् ।
कोष्णं प्रलेपतो हन्यादपचीमतिदुस्तराम् ॥ २९॥
सर्षपारिष्टपत्राणि दग्ध्वा भल्लातकैः सह ।
छागमूत्रेण संपिष्टमपचीघ्नं प्रलेपनम् ॥ ३० ॥
अश्वत्थकाष्ठं निचुलं गवां दन्तं च दाहयेत् ।
वराहमज्जसंयुक्तं भस्म हन्त्यपचीव्रणान् ॥ ३१ ॥

पार्ष्णिं प्रति द्वादश चाङ्गुलानि
मित्वेन्द्रवस्तिं परिवर्ज्य सम्यक् ।
विदार्य मत्स्याण्डनिभानि वैद्यो
निकृष्य जालान्यनलं विदध्यात् ॥ ३२ ॥

मणिबन्धोपरिष्टाद्वा कुर्याद्रेखात्रयं भिषक् ।
अङ्गुल्यान्तरितं सम्यगपचीनां प्रशान्तये ॥ ३३ ॥

दण्डोत्पलाभवं मूलं बद्धं पुष्येऽपचीं जयेत्।
अपामार्गस्य वा छिन्द्याज्जिह्वातलगते शिरे ॥३४॥

(८ कार्पासिकापूपादि) वनकी रुईकी जडकों चावलोंसें युत कर पूरी बनाय और पकाय खावै तो अपचीरोगका नाश होताहै । सहोंजना और देवदारकों कांजीसें पीस अल्प गरम कर लेप करनेसें भयंकर अपचीका नाश होताहै। सरसों और नींबके पत्तोंकों भिलावोंके साथ दग्धकर और बकरीके मूत्रसें पीस लेप करना अपचीकों नाशताहै । पीपलकी छाल जलवेत गौका दांत इन्होंकों दग्धकर भस्म बनाय शूरकी मज्जासें युत कर किया लेप अपचीके घावोंकों नाशताहै । टांकनोंके नीचै बारह अंगुलप्रमाण कर इंद्रबस्तिकों वर्जितकर मच्छका अंडके समान जालोंकों निकास अग्नि देवै। अथवा मणिबंध अर्थात् हाथका प्रकोष्ठकी संधिके ऊपर और अंगुलियोंके अंतरित वैद्य तीन रेखा करै। अपचीरोगकी शांतिके अर्थ पुष्यनक्षत्रमें बांधी हुई सहदेवीकी जड अपचीकों जीततीहै। अथवा ऊंगाकी जड जीततीहै।

(९)व्योषं विडङ्गं मधुकं सैन्धवं देवदारु च।
तैलमेतैः शृतं नस्यात्कृच्छ्रामप्यपचीं जयेत्॥३५॥

(९ व्योषाद्यं तैलम्) सोंठ मिरच पीपल वायविडंग मुलहटी सेंधानमक और देवदार इन्होंके क्राथोंसें सिद्ध किया तेल भयंकर अपचीकों नाशता है।

(१०)चन्दनं साभया लाक्षा वचा कटुकरोहिणी।
एतैस्तैलं शृतं पीतं समूलामपचीं जयेत् ॥ ३६ ॥

(१० चंदनाद्यं तैलम्) चंदन हरडै लाख वच कुटकी इन्होंसें सिद्ध किया तेल जडसहित अपचीकों जीतताहै।

(११)गुञ्जाहयारिश्यामाकसर्षपैर्मूत्रसाधितम्।
तैलं तु दशधा पश्चात्कणालवणपञ्चकम् ॥ ३७ ॥
मरिचैश्चूर्णितैर्युक्तं सर्वावस्थागतां जयेत्।
अभ्यङ्गादपचीमुग्रां वल्मीकार्शोऽर्बुदव्रणान्॥३८॥

(११ गुंजाद्यं तैलम्) चिरमठी कनेर कालीनिशोत आक सरसों इन्होंसें और पीपल तथा पांचोंनमक और मिरचोंके चूर्णसें युत किया तेल मालिस करनेसें सब अवस्थावोंमें प्राप्त हुई भयंकर अपची वल्मीक ववासीर अर्बुद और घाव इन्होंकों नाशताहै।

(१२)ग्रन्थिष्वामेषु कुर्वीत भिषक् शोथप्रतिक्रियां।
पक्कानापाट्य संशोध्य रोपयेद्व्रणभेषजैः ॥ ३९ ॥

हिंस्रा सरोहिण्यमृता च भार्गी
श्यामाकबिल्वागुरुकृष्णगन्धाः।
गोपित्तपिष्टाः सह तालपर्ण्या
ग्रन्थौ विधेयोऽनिलजे प्रलेपः ॥ ४० ॥
जलात्मकाः पित्तकृते हितास्तु
क्षीरोदकाभ्यां परिसेचनं च।
काकोलिवर्गस्य तु शीतलानि
पिबेत्कषायाणि सशर्कराणि ॥ ४१ ॥
द्राक्षारसेनेक्षुरसेन वापि
चूर्णं पिबेद्वापि हरीतकीनाम्।
मधूकजम्ब्वर्जुनवेतसानां
त्वग्भिः प्रदेहानवतारयेच्च ॥ ४२ ॥
कृतेषु दोषेषु यथानुपूर्वा
ग्रन्थौ भिषक् श्लेष्मसमुत्थिते तु।
स्विन्ने च विम्लापनमेव कुर्या-
दङ्गुष्ठरेणुद्दषदीसुतैश्च ॥ ४३ ॥

(१२ ग्रंथिषु शोथक्रिया) कची ग्रंथियोंमें वैद्य शोजानाशक चिकित्सा करै । और पकीहुई ग्रंथियोंकों अच्छीतरह शोधितकर घावके ओषधोंसें अंकुर लावै। वालछड कुटकी गिलोय भारंगी शामक वेलगिरी अगर शेगवा मुशली इन्होंकों गौका पित्तसें पीस वातकी ग्रंथिपर लेप करना। पित्तकी ग्रंथिमें जलकी क्रिया हित है। दूध और पानीसें सेचन करना और काकोलीगणके औषधोंका शीतल और खांडसहित क्राथ हित है। हरडोंके चूर्णकों दाखके रसकरके अथवा ईखके रसकरकै पीवै और महुवा जामन अर्जुन वेतस इन्होंकी छालोंसें लेपोंकों करै। दोषके अनुसार दोषोंमें ऐसी चिकित्सा करनेके पीछे कफकी ग्रंथिमें स्वेद देकै वैद्य अंगूठा धूली शिलाके तुकडे इन्होंसें विम्लापन करै।

(१३)विकङ्कतारग्वधकाकणन्ती-
काकादनीतापसवृक्षमूलैः।
आलेपयेदेनमलाबुभार्गी-
करञ्जकालामदनैश्च विद्वान् ॥ ४४ ॥
दन्ती चित्रकमूलत्वक् सुधार्कपयसी गुडः।
भल्लातकास्थिकासीसं लेपो भिन्द्याच्छिलामपि ॥

ग्रन्थ्यर्बुदादिजिल्लेपो मातृवाहककीटजः ।
सर्जिकामूलकक्षारः शङ्खचूर्णसमन्वितः ।
प्रलेपो विहितस्तीक्ष्णो हन्ति ग्रन्थ्यर्बुदादिकान् ॥

(१३ विकंकतादिलेपः) वेहेकल अमलतास रक्तचिरमिठी मालकांगनी हिंगणवेटकी जड इन्होंकरकै और तूंबी भारंगी करंजुवा काला निशोत मैनफल इन्होंसें वैद्य लेप करवावै जमालगोटाकी जड चीताका जडकी छाल थोहरका दूध आकका दूध गुड भिलावाकी गुठली कसीस इन्होंका लेप शिलाकोंभी काठता है। कीचडमें रहनेवाला कीडा साजी सहोंजना जवाखार शंखका चूर्ण इन्होंका लेप ग्रंथि और अर्बुद आदिकों नाशता है। मर्मसें अन्य जगह उपजी और नहीं पकीहुई ऐसी ग्रंथीकों निकास तहां वैद्य अग्नि धरै।

(१४)ग्रन्थीनमर्मप्रभवानपक्वा-
नुद्धृत्य वाग्निं विदधीत वैद्यः ।
क्षारेण वै तान्प्रतिसारयेत्तु
संलिख्य संलिख्य यथोपदेशम् ॥ ४७ ॥
ग्रन्थ्यर्बुदानां न यतो विशेषः
प्रदेशहेत्वाकृतिदोषदूष्यैः ।
ततश्चिकित्सेद्भिषगर्बुदानि
विधानविद्ग्रन्थिचिकित्सितेन ॥ ४८ ॥
वातार्बुदे चाप्युपनाहनानि
स्निग्धैश्च मांसैरथ वेसवारैः ।
स्वेदं विदध्यात्कुशलस्तु नाड्या
शृङ्गेण रक्तं बहुशो हरेच्च ॥ ४९ ॥
स्वेदोपनाहा मृदवस्तु पथ्याः
पित्तार्बुदे कायविरेचनानि ।
विघृष्य चोदुम्बरशाकगोजी-
पत्रैर्भृशं क्षौद्रयुतैः प्रलिम्पेत् ॥ ५० ॥
श्लक्ष्णीकृतैः सर्जरसप्रियङ्गु-
पतङ्गलोध्रार्जुनयष्टिकाह्वैः ॥ ५१ ॥
लेपनं शङ्खचूर्णेन सह मूलकभस्मना ।
कफार्बुदापहं कुर्याद्ग्रन्थ्यादिषु विशेषतः ॥ ५२ ॥

(१४ ग्रंथिपाचनविधिः) उपदेशके अनुसार संलिखित कर खारसें प्रतिसारित करै प्रदेश हेतु आकृति दोष दूष्य इन्होंकरकै जिस कारणसे ग्रंथि और अर्बुदोंका विशेष नहींहै। उसीकारणसें विधानकों जाननेवाला वैद्य ग्रंथिकी चिकित्साकरकै अर्बुदोंकी चिकित्सा करै। वातके अर्बुदमें उपनाहसंज्ञक स्वेदकों स्निग्ध मांस और वेसवारोंसें करै। कुशलवैद्य नलसें स्वेदकों देवै और शींगीसें बहुतसा रक्तकों निकासै पित्तके अर्बुदमें स्वेद कोमलपिंडी बंधन पथ्यपदार्थ जुलाब देवै। और गूलर गोभी इन्होंके पत्तोंसें अत्यंत घिस पीछे राल मौंहदी लालचंदन लोध अर्जुन मुलहटी इन्होंकों शहदसें पीस लेप करै। कफार्बुद और ग्रंथिआदिकोंमें शंखका चूर्ण और सहोंजनाकी भस्म मिलाय विशेषकरकै लेप करै।

(१५)निष्पावपिण्याककुलत्थकल्कै-
र्मांसप्रगाढैर्दधिमर्दितैश्च ।
लेपं विदध्यात्क्रिमयो यथात्र
मुञ्चन्त्यपत्यान्यथ मक्षिका वा ॥ ५३ ॥
अल्पावशिष्टं क्रिमिभिः प्रजग्धं
लिखेत्ततोऽग्निं विदधीत पश्चात् ।
यदल्पमूलं त्रपुताम्रसीसैः
संवेष्ट्य पत्रैरथ वायसैर्वा ॥ ५४ ॥
क्षाराग्निशस्त्राण्यवतारयेच्च
मुहुर्मुहुः प्राणमवेक्ष्यमाणः ।
यदृच्छया चोपगतानि पाकं
पाकक्रमेणोपचरेद्यथोक्तम् ॥ ५५ ॥
उपोदिका रसाभ्यक्तास्तत्पत्रपरिवेष्टिताः ।
प्रणश्यन्त्यचिरान्नॄणां पीडकार्बुदजातयः ॥ ५६ ॥
उपोदिका काञ्जिकतक्रपिष्टा
तयोपनाहो लवणेन मिश्रः ।
दृष्टोऽर्बुदानां प्रशमाय कैश्चि-
द्दिने दिने वा त्रिषु मर्मजानाम् ॥ ५७ ॥
लेपोऽर्बुदजिद्रम्भामोचकभस्मतुषशङ्खचूर्णकृतः ।
सरटरुधिरार्द्रकगन्धकयवविडङ्गनागरैर्वाथ॥५८॥
स्नुहीगण्डीरिकास्वेदो नाशयेदर्बुदानि च ।
सीसकेनाथ लवणैः पिण्डारकफलेन वा ॥ ५९ ॥
हरिद्रालोध्रपत्तुङ्गगृहधूममनःशिलाः ।
मधुप्रगाढो लेपोऽयं मेदोऽर्बुदहरः परः ॥ ६० ॥
एतामेव क्रियां कुर्यादशेषां शर्करार्बुदे ॥ ६१ ॥

इति गलगण्डगण्डमालापचीग्रन्थ्यर्बुदाधिकारः ।

(१९ निष्पावादिलेपाः) मोठ खल कुलथी इन्होंका कल्क और मांसकों दहीसें मर्दितकर लेप करै जिसकरकै कीडे और माखी अपनी संतानोंकों छोड देवै। कीडोंसें खायाहुया अल्प बचै चोचाहुआकों लिखितकर वहां पीछे अग्निकों धरै जो अल्प जडवाला हो तो रांग सीसा तांबा इन्होंसें अथवा वायसा अर्थात् श्वेतमकोहविशेषके पत्तोंसें वेष्टितकर प्राणकों देखता हुया वैद्य खार अग्नि और शस्त्रसें वारंवार क्रिया करै। जो दैवयोगसें पकजावै तो यथायोग्य पाकके क्रमसें चिकित्सा करै। पोईशाकका रससें अभ्यक्त और पोईके पत्तोंसें वेष्टित किये पीडका अर्बुदजाति शीघ्र नष्ट होतेहैं। कांजी और तक्रमें पीसीहुई पोईके कल्कमें नमक डाल पिंडीबंधन करनेसें अर्बुद शांत होतेहैं। और मर्ममें उपजे अर्बुद इसीसें तीन तीन दिन करकै बांधनेसें नष्ट होतेहैं। केला मोखावृक्ष इन्होंका भस्म तुष शंखका भस्म इन्होंके चूर्णसें किया लेप अर्बुदकों जीतताहै अथवा किरलियाके रक्तसें भिगोया गंधक जव वायविडंग सोंठ इन्होंका लेप अर्बुदकों जीतताहै। थोहर और गंडीरिकाका स्वेद अर्बुदोंकों नाशताहै। शिरस और नमक अथवा पिंडीतकके फलका लेप अर्बुदकों नाशताहै। हलदी लोध लालचंदन घरका धूआं मनशिल इन्होंमें शहद डाल किया लेप अर्बुदकों नाशताहै। शर्करार्बुदमें इसी संपूर्ण क्रियाकों करै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां गलगंडगंडमालाअपचीग्रंथ्यर्बुदचिकित्सा।

अथ श्लीपदाधिकारः ४१

अब श्लीपदरोगका अधिकार कहतेहै।

(१)लङ्घनालेपनस्वेदरेचनै रक्तमोक्षणैः।
प्रायः श्लेष्महरैरुष्णैः श्लीपदं समुपाचरेत् ॥ १ ॥
धूस्तूरैरण्डनिर्गुण्डीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः।
प्रलेपः श्लीपदं हन्ति चिरोत्थमतिदारुणम् ॥२॥
निष्पिष्टमारनालेन रूपिकामूलवल्कलम्।
प्रलेपाच्छ्लीपदं हन्ति बद्धमूलमथो दृढम् ॥ ३ ॥
पिण्डारकतरुसम्भव-
वन्दाकशिफा जयति सर्पिषा पीता।
श्लीपदमुग्रं नियतं
बद्धा सूत्रेण जङ्घायाम् ॥ ४ ॥
हितश्चालेपने नित्यं चित्रको देवदारु वा।
सिद्धार्थशिग्रुकल्को वा सुखोष्णो मूत्रपेषितः॥५॥
स्नेहस्वेदोपनाहांश्च श्लीपदेऽनिलजे भिषक्।
कृत्वा गुल्फोपरि शिरां विध्येत्तु चतुरङ्गुले ॥ ६ ॥
गुल्फस्याधः शिरां विध्येच्छ्लीपदे पित्तसम्भवे।
पित्तघ्नीं च क्रियां कुर्यात्पित्तार्बुदविसर्पवत् ॥ ७ ॥
मञ्जिष्ठां मधुकं रास्नां सहिंस्रां सपुनर्नवाम्।
पिष्ट्वारणालैर्लेपोऽयं पित्तश्लीपदशान्तये ॥ ८ ॥
शिरां सुविदितां विध्येदङ्गुष्ठे श्लेष्मश्लीपदे।
मधुयुक्तानि चाभीक्ष्णं कषायाणि पिबेन्नरः ॥ ९ ॥
पिबेत्सर्षपतैलेन श्लीपदानां निवृत्तये।
पूतीकरञ्जच्छदजं रसं वापि यथाबलम् ॥ १० ॥

(१ श्लीपदे सामान्योपायाः) लंघन लेप पसीना जुलाब रक्तका निकासना और विशेषकर कफनाशक गरम वस्तु इन्होंसें श्लीपदकी चिकित्सा करै। धतूरा अरंड संभालू सांठी सहोंजना सरसों इन्होंका लेप पुराना और भयंकर श्लीपदकों नाशताहै। आककी अथवा रुईकी जडकों कांजीसें पीस किया लेप जडसहित तथा कठोर ऐसे श्लीपदकों नाशताहै। मरुवा और बंदाककी जड घृतके संग पान करी तथा सूत्रसें जांघपर निरंतर बांधी जावै तो भयंकर श्लीपदकों नाशतीहै। चीता और देवदार अथवा सरसों और सहोंजनाका कल्क गोमूत्रसें पीसा हुआ और अल्प गरम किया लेप कराजावै तो हितहै। वातके श्लीपदमें स्नेह स्वेद और उपनाहकों वैद्य करावै तथा टंकनाके ऊपर चार अंगुलमें शिराकों वींधै। पित्तके श्लीपदमें टंकनाकै नीचै शिराकों वींधै और पित्तका अर्बुद और पित्तका विसर्पकीतरह पित्तनाशक क्रियाकों करै। मजीठ मुलहटी रास्ना वालछड सांठी इन्होंकों कांजीसें पीस किया लेप पित्तके श्लीपदकों नाशता है। कफके श्लीपदमें अंगूठाविषै अच्छीतरह जानीहुई शिराकों वींधै और शहदसें युत किये क्वाथोंकों अतिशयसें पीवै अथवा श्लीपदरोगकी शांतिकेअर्थ खलके अनुसार सरसोंका तेलकेसंग करंजुवाके पत्तोंका रसकों पीवै।

(२)अनेनैव विधानेन पुत्रजीवकजं रसम्।
काञ्जिकेन पिबेच्चूर्णं मूत्रैर्वा वृद्धदारजम् ॥ ११ ॥
रजनीं गुडसंयुक्तां गोमूत्रेण पिबेन्नरः।
वर्षोत्थं श्लीपदं हन्ति दद्रुकुष्ठं विशेषतः ॥१२॥

गन्धर्वतैलभृष्टां हरीतकीं गोजलेन यः पिबति ।
श्लीपदबन्धनमुक्तो भवत्यसौ सप्तरात्रेण ॥ १३ ॥
धान्याम्लं तैलसंयुक्तं कफवातविनाशनम् ।
दीपनं चामदोषघ्नमेतच्छ्लीपदनाशनम् ॥ १४ ॥
गोधावतीमूलयुक्तां खादेन्माषेण्डरीं नरः ।
जयेच्छ्लीपदकोपोत्थं ज्वरं सद्यो न संशयः ॥१५॥
श्लीपदघ्नो रसोऽभ्यासाद्गुडूच्यास्तैलसंयुतः ।
त्रिकटु त्रिफला चव्यं दार्वीवरुणगोक्षुरम् ॥१६॥
अलम्बुषां गुडूचीं च समभागानि चूर्णयेत् ।
सर्वेषां चूर्णमाहृत्य वृद्धदारस्य तत्समम् ॥ १७ ॥
काञ्जिकेन च तत्पेयमक्षमात्रं प्रमाणतः ।
जीर्णे चापरिहारं स्याद्भोजनं सर्वकामिकम्॥१८॥
नाशयेच्छ्लीपदं स्थौल्यमामवातं सुदारुणम् ।
गुल्मकुष्ठानिलहरं वातश्लेष्मज्वरापहम् ॥ १९ ॥

(२ वृद्धदारकचूर्णम्) इसी विधानकरकै जीया-पोताके रसकों पीवै तथा भिदाराके चूर्णकों कांजीसें अथवा गोमूत्रसें पीवै । हलदीकों गोमूत्रकेसंग मनुष्य पीवै तो एकवर्षका श्लीपद दादकुष्ठकों विशेषकर नाशताहै । सुपेद अरंडका तेलमें भुनीहुई हरडैकों गोमूत्रसें जो मनुष्य पीवै वह श्लीपदसें सात रात्रिकरकै छूट जाताहै । तेलसें संयुत करी कांजी कफवातकों नाशतीहै । दीपन है आमदोषकों नाशताहै और श्लीपदकों हरताहै । वटपत्रीपाषाणभेदकी जडसें युत करी माषेंडरीकों जो मनुष्य खावै वह श्लीपदसें उपजा ज्वरकों शीघ्र नाशता है । इसमें संशय नहीं । गिलोयके रसमें तेल डाल नित्य पीवै तो श्लीपदका नाश होता है । सोंठ मिरच पीपल त्रिफला चव्य दारुहलदी वरना गोखरू गोरखमुंडी गिलोय ये सब समानभाग लेकै चूर्ण करै । इस संपूर्ण चूर्णकेसमान भिदाराका चूर्ण लेवै पीछे १ तोलाभर चूर्ण कांजीकेसंग पीना । जीर्णहोनेपर सब प्रकारका भोजन करना श्लीपद मुढापा भयंकर आमवात गुल्म कुष्ट वात वातकफ ज्वर इन्होंकों नाशताहै ।

(३)पिप्पलीत्रिफलादारुनागरं सपुनर्नवम् ।
भागैर्द्विपलिकैरेषां तत्समं वृद्धदारकम् ॥ २० ॥
काञ्जिकेन पिबेच्चूर्णं कर्षमात्रं प्रमाणतः ।
जीर्णे चापरिहारं स्याद्भोजनं सर्वकामिकम् २१
श्लीपदं वातरोगांश्च हन्यात्प्लीहानमेव च ।
अग्निं च कुरुते घोरं भस्मकं च नियच्छति २२

(३ पिप्पल्यादिचूर्णम्) पीपल त्रिफला देवदारु सोंठ सांठी ये सब आठ आठ तोले इन सबोंके समान भिदारा इनोंका चूर्ण कर १ तोलाभर ले कांजीके संग पीवै जीर्ण होनेपर परिहार वर्जित सब तरहका भोजन करै । श्लीपद वातरोग प्लीहरोग इन्होंकों नाशताहै । अग्निकों करताहै और घोररूप भस्मककों दूर करताहै ।

(४) कृष्णाचित्रकदन्तीनां कर्षमर्धपलं परम् ।
विंशतिश्च हरीतक्यो गुडस्य तु पलं द्वयम् ।
मधुना मोदकं खादेच्छ्लीपदं हन्ति दुस्तरम् ॥

(४ कृष्णाद्योमोदकः) पीपल १ तोला चीता २ तोले जमालगोटाकी जड ४ तोले हरडै जड ८ तोले शहदसें गोली बनाय खावै यह भयंकर श्लीपदकों नाशती है ।

(५) सुरसां देवकाष्ठं च त्रिकटु त्रिफले तथा ।
लवणान्यथ सर्वाणि विडङ्गान्यथ चित्रकम्॥२४॥
चविका पिप्पलीमूलं गुग्गुलुर्हपुषा वचा ।
यवाग्रजं च पाठा च शट्येला वृद्धदारुकम् २५
कल्कैश्च कार्षिकैरेभिर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
दशमूलीकषायेण धान्ययूषद्रवेण च ॥ २६ ॥
दधिमण्डसमायुक्तं प्रस्थं प्रस्थं पृथक् पृथक् ।
पक्वं स्वादुघृतं कल्कात्पिबेत्कर्षत्रयं हविः ॥२७॥
श्लीपदं कफवातोक्तं मांसरक्ताश्रितं च यत् ।
मेदश्रितं च पित्तोत्थं हन्यादेव न संशयः २८
अपचीं गण्डमालां च अन्त्रवृद्धिं तथार्बुदम् ।
नाशयेद्ग्रहणीदोषं श्वयथुं गुदजानि च ॥ २९ ॥
परमग्निकरं हृद्यं कोष्ठक्रिमिविनाशनम् ।
घृतं सौरेश्वरं नाम श्लीपदं हन्ति सेवितम् ।
जीवकेन कृतं ह्येतद्रोगानीकविनाशनम् ॥ ३० ॥

(५ सौरेश्वरं घृतम्) तुलसी देवदार सोंठ मिरच पीपल त्रिफला सब नमक वायविडंग चीता चव्य पीपलमूल गूगल हाऊवेर वच जवाखार पाठा कचूर इलायची भिदारा ये सब एक एक तोला ले कल्क बनाय इन्होंमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । दशमूलका क्वाथ और धनियांका क्वाथ तथा रसकरकै दहीका पानी ये

सब चौंसठ चौंसठ तोलेभर ले घृतकों पकावै पीछे तीन तोलेभर पीवै कफवातका श्लीपद मांसरक्तमें आश्रित हुआ श्लीपद मेदमें आश्रित हुआ श्लीपद और पित्तका श्लीपद इन्होंकों नाशताहै संशय नहीं। अपची गंडमाला अंत्र-वृद्धि अर्बुद ग्रहणीदोष शोजा गुदाके रोग इन्होंकों नाशता है। उत्तम अग्निकों करता है। सुंदर है कोष्ठरोग और कृमिरोगकों हरता है। सौरेश्वर नामक यह घृत सेवित किया जावै तो श्लीपदकों नाशता है। यह जीवकनें किया है रोगोंके समूहकों नाशता है।

(६)विडङ्गमरिचार्केषु नागरे चित्रके तथा।
भद्रदार्व्येलकाख्येषु सर्वेषु लवणेषु च।
तैलं पक्वं पिबेद्वापि श्लीपदानां निवृत्तये ॥३१॥

इति श्लीपदचिकित्सा।

(६ विडंगाद्यं चूर्णम्) वायविडंग मिरच आक सोंठ चीता नागरमोथा दारुहलदी इलायची सब नमक इन्होंमें पकाया तेलकों श्लीपदरोगकों दूर करनेवास्ते पीवै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां श्लीपदचिकित्सा।

अथ विद्रध्यधिकारः ४२

अब इसके अनंतर विद्रधिरोगका अधिकार कहतेहै।

(१)जलौकापातनं शस्तं सर्वस्मिन्नेव विद्रधौ।
मृदुर्विरेको लघ्वन्नं स्वेदः पित्तोत्तरं विना ॥ १ ॥
वातघ्नमूलकल्कैस्तु वसातैलघृतप्लुतैः।
सुखोष्णो बहलो लेपः प्रयोज्यो वातविद्रधौ॥२॥
स्वेदोपनाहाः कर्तव्याः शिग्रुमूलसमन्विताः।
यवगोधूममुद्गैश्च सिद्धापिष्टैः प्रलेपयेत् ॥ ३ ॥
विलीयते क्षणेनैवमपक्वश्चैव विद्रधिः।
पुनर्नवादारुविश्वदशमूलाभयाम्भसा ॥ ४ ॥
गुग्गुलुं रुबुतैलं वा पिबेन्मारुतविद्रधौ।
पैत्तिकं शर्करालाजा मधुकैः शारिवायुतैः ॥ ५ ॥
प्रदिह्यात्क्षीरपिष्टैर्वा पयस्योशीरचन्दनैः।
पिबेद्वा त्रिफलाक्वाथं त्रिवृत्कल्काक्षसंयुतम् ॥ ६ ॥
पञ्चवल्कलकल्केन घृतमिश्रेण लेपनम्।
यष्ट्याह्वशारिवादूर्वानलमूलैः सचन्दनैः ॥ ७ ॥
क्षीरपिष्टैः प्रलेपस्तु पित्तविद्रधिशान्तये।
इष्टका सिकतालोहगोशकृत्तुषपांशुभिः ॥ ८ ॥
मूत्रपिष्टैश्च सततं स्वेदयेत् श्लेष्मविद्रधिम्।
दशमूलकषायेण सस्नेहेन रसेन वा ॥ ९ ॥
शोथं व्रणं वा कोष्णेन सशूलं परिषेचयेत्।
त्रिफलाशिग्रुवरुणदशमूलाम्भसा पिबेत् ॥ १० ॥
गुग्गुलुं मूत्रयुक्तं वा विद्रधौ कफसम्भवे।
पित्तविद्रधिवत्सर्वा क्रियां निरवशेषतः ॥ ११ ॥
विद्रध्योः कुशलः कुर्याद्रक्तागन्तुनिमित्तयोः।
शोभाञ्जनकनिर्यूहो हिङ्गुसैन्धवसंयुतः ॥ १२ ॥
अचिरं विद्रधिं हन्ति प्रातःप्रातर्निषेवितः।
शिग्रुमूलं जले धौतं दरपिष्टं प्रगालयेत् ॥ १३ ॥
तद्रसं मधुना पीत्वा हन्त्यन्तर्विद्रधिं नरः।
श्वेतवर्षाभुवो मूलं मूलं वरुणकस्य च ॥ १४ ॥
जलेन कथितं पीतमपक्वं विद्रधिं जयेत्।
वरुणादिगणक्वाथमपक्वेऽभ्यन्तरोत्थिते।
उषकादिप्रतीवापं पिबेत्संशमनाय वै ॥ १५ ॥

शमयति पाठामूलं
क्षौद्रयुतं तण्डुलाम्भसा पीतम्।
अन्तर्भूतं विद्रधि-
मुद्धतमाश्वेव मनुजस्य ॥ १६ ॥

अपक्वे त्वेतदुद्दिष्टं पक्वे तु व्रणवत्क्रिया ॥ १७ ॥
स्रुतेऽप्यूर्ध्वमधश्चैव मैरेयाम्लसुरासवैः।
पेयो वरुणकादिस्तु मधुशिग्रुरसोऽथवा ॥ १८ ॥
प्रियङ्गुधातकीलोध्रं कट्फलं तिलिशत्वचम्।
एतैस्तैलं विपक्तव्यं विद्रधौ रोपणं परम् ॥१९॥

इति विद्रधिचिकित्सा।

(१ विद्रधौ सामान्योपायाः) सब प्रकारकी विद्रधिमें जोखोंका लगाना कोमल जुलाब हलका भोजन और पसीना ये हित हैं। परंतु पित्तकी विद्रधिके विना वसा तेल घृत इन्होंसें युत किये वातनाशक मूलोंके कल्कोंका अल्प गरम किया लेप वातकी विद्रधिमें हित है। सहोंजनाकी जडसें युत किये स्वेद और उपनाह करने और जव गेहूं मूंग इन्होंकों पीस सिद्धकर लेप करै। इसकरकै कची विद्रधि नष्ट होतीहै। सांठी देवदार सोंठ दशमूल हरडै इन्होंके क्वाथसें गूगलकों अथवा अरंडके

तेलकों वातकी विद्रधिमें पीवै। पित्तकी विद्रधिकों खांड धानकी खील मुलहटी शारिवा अनंतमूल इन्होंकों अथवा दूधी खस चंदन इन्होंकों दूधमें पीस लेप करै। अथवा त्रिफलाके क्काथमें निशोतका कल्क १ तोलाभर डाल पीवै। वड गूलर पीपल पिलषन जलवेंत इन्होंके कल्कमें घृत डाल लेप करै। मुलहटी शारिवा अनंतमूल दूव नडकी जड चंदन इन्होंकों दूधमें पीस लेप करै तो पित्तकी विद्रधि शांत होतीहै। इंट वालूरेत लोहा गोसा उपला तुश धूलि इन्होंकों गोमूत्रसें युत कर कफकी विद्रधिकों निरंतर स्वेदित करै। दशमूलका क्काथ अथवा स्नेहसहित मांसका रसकों अल्प गरम करकै शूलसहित शोजाकों अथवा घावकों सींचै। त्रिफला सहोंजना वरना दशमूल इन्होंके क्काथसें अथवा गोमूत्रसें गूगलकों कफकी विद्रधिमें पीवै रक्तकी विद्रधि और आगंतुक विद्रधियोंकी संपूर्ण चिकित्सा कुशल वैद्य पित्तकी विद्रधिकी तरह करै। सहोंजनाके क्काथमें हींग और सेंधानमक डाल प्रभातमें नित्यप्रति सेवै तो शीघ्र विद्रधिका नाश होताहै। सहोंजनाकी जडकों धोकै शंखके संग पीस कपडासें छानै। वह रस शहदके संग पीवै तो मनुष्य अंतर्विद्रधिकों नाशताहै। सुपेदसांठीकी जड वरनाकी जड इन्होंका पानीसें क्काथ वनाय पीवै तो कची विद्रधिकों नाशताहै। कची अंतर्विद्रधिमें वरुणादिगणके क्काथमें उषकादिगणके ओषधोंकी प्रतिवाप देकै पीवै तो शांति होतीहै। पाठाकी जडकों शहदसें युत कर चावलोंके पानीसें पीवै तो मनुष्यकी भयंकर अंतर्विद्रधि नष्ट होतीहै। कची विद्रधिमें यह कहाहै। और पकीहुई विद्रधिमें घावकी तरह क्रिया करनी। ऊपरकों तथा नीचाकों झिरता हो तो ईखकी मदिरा कांजी मदिरा आसव इन्होंके संग वरुणादिगणका क्काथ पीना अथवा सहोंजनाका रसमें शहद डाल पीना। मैंहदी धायके फूल लोध कायफल अजगरकी कांचली इन्होंकरकै तेल पकावै। विद्रधिमें उत्तम रोपण करताहै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां विद्रधिचिकित्सा।

अथ व्रणशोथाधिकारः ४३

अब व्रणशोथका अधिकार कहतेहैं।

(१)आदौ विम्लापनं कुर्याद्द्वितीयमवसेचनम्।

तृतीयमुपनाहं च चतुर्थीं पाटनक्रियाम् ॥ १ ॥
पञ्चमं शोधनं चैव षष्ठं रोपणमिष्यते।
एते क्रमा व्रणस्योक्ताः सप्तमो वैकृतापहः ॥ २॥
मातुलुङ्गाग्निमन्थौ च भद्रदारुमहौषधम्।
अहिंस्रा चैव रास्ना च प्रलेपो वातशोथहा॥३॥
कल्कः काञ्जिकसम्पिष्टः स्निग्धः शाखोटकत्वचः।
सुपर्ण इव नागानां रक्तशोथविनाशनः ॥ ४ ॥
दूर्वा च नलमूलं च मधुकं चन्दनं तथा।
शीतलाश्च गणाः सर्वे प्रलेपः पित्तशोथहा॥ ५ ॥
न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षवेतसवल्कलैः।
ससर्पिष्कैः प्रलेपः स्याच्छोथनिर्वापणः स्मृतः ६
आगन्तौ शोणितोत्थे च एष एव क्रियाक्रमः।
अजगन्धाश्वगन्धा च काला सरलया सह ॥७॥
एकेशिकाजश्टङ्गी च प्रलेपः श्लेष्मशोथहा।
पुनर्नवाशिग्रुदारुदशमूलमहौषधैः ॥ ८ ॥
कफवातकृते शोथे लेपः कोष्णो विधीयते।
न रात्रौ लेपनं दद्यादृत्तं च पतितं तथा ॥ ९ ॥
न च पर्युषितं शुष्यमाणं नैवावधारयेत्।
शुष्यमाणमुपेक्षेत प्रदेहं पीडनं प्रति ॥ १० ॥
न चापि मुखमालिम्पेत्तेन दोषः प्रसिच्यते।
स्थिरान्मन्दरुजः शोथान्स्नेहैर्वातकफापहैः॥११॥
अभ्यज्य स्वेदयित्वा च वेणुनाड्या ततः शनैः।
विम्लापनार्थं मृद्गीयात्तलेताङ्गुष्ठकेन वा ॥ १२ ॥
रक्तावसेचनं कुर्यादादावेव विचक्षणः।
शोथे महति संवृद्धे वेदनावति च व्रणे ॥ १३ ॥

(१ व्रणशोथोपायाः) प्रथम विम्लापन दूसरे सेचन तीसरे उपनाह अर्थात् पिंडीबंधन चौथे पाटनक्रिया पांचमें शोधन और छठें रोपण ये क्रम व्रण अर्थात् घावके कहेहैं। और सातमें विकारनाशक कर्म करना। विजोरा अरनी नागरमोथा देवदार सोंठ वालछड रास्ना इन्होंका लेप वातके शोजाकों नाशताहै। शाखोटवृक्षकी छालकों कांजीसें पीस कल्क बनाय स्निग्ध कर लेप करै तो रक्तशोजाकों नाशताहै। जैसे सर्पोंकों गरुड। दूव नडकी जड मुलहटी चंदन सब शीतलगण इन्होंका लेप पित्तका शोजाकों नाशताहै। वड गूलर पीपल पिलषन वेत इन्होंकी छालोंकों घृतसें पीस किया लेप शोजाकों नाशताहै।

आगंतु अर्थात् चोटआदिसें उपजा और रक्तजशोजा इन्होंमें यही चिकित्सा हितहै। तुलसी आसगंध काली-निशोत निशोत पहाडमूल मेंढाशिंगी इन्होंका लेप कफके शोजाकों नाशताहै। सांठी सहोंजना देवदार दश-मूल सोंठ इन्होंका अल्प गरम किया लेप कफवातका शोजामें हित है। रात्रिमें लेप नहीं करना। दिया हुआ पतित हुआ वासी हुआ और सूखता हुआ ऐसा लेप नहीं धारण करना। पीडनके प्रति सूखताहुआ लेपकों त्याजै। घावआदिके मुखपर लेप नहीं करै। तिसंकरकै दोष निकसताहै। स्थिररूप और मंदपीडावाले ऐसे शोजोंकों वात-कफनाशक स्नेहोंसें चुपड वांसीकी जलसें हौलें हौलें स्वेदित करै। तलकरकै अथवा अंगूठाकरकै विम्लापनके अर्थ मृदित करै आदिमें वैद्य रक्तकों निकासै। बडा और वंधाहुआ शोजामें और पीडावाले घावमें।

(२) यो न याति शमं लेपस्वेदसेकापतर्पणैः।
सोऽपि नाशं व्रजत्याशु शोथः शोणितमोक्षणात्
एकतश्च क्रियाः सर्वा रक्तमोक्षणमेकतः।
रक्तं हि व्यम्लतां याति तच्चेन्नास्ति न चास्ति रुक्
स चेदेवमुपाक्रान्तः शोथो न प्रशमं व्रजेत्।
तस्योपनाहैः पक्वस्य पाटनं हितमुच्यते॥ १६॥
तैलेन सर्पिषा वापि ताभ्यां वा शक्तुपिण्डिका।
सुखोष्णः शोथपाकार्थमुपनाहः प्रशस्यते॥ १७॥
सतिला सातसीबीजा दध्यम्लाशक्तुपिण्डिका।
सकिण्वकुष्ठलवणा शस्ता स्यादुपनाहने॥ १८॥
बालवृद्धासहक्षीणभीरूणां योषितामपि।
मर्मोपरि च जाते च पक्के शोथे च दारुणे।
गवां दन्तं जले घृष्टं बिन्दुमात्रं प्रलेपयेत्॥ १९॥
अत्यन्तकठिने चापि शोथे पाचनभेदनम्।
कटुतैलान्वितैर्लेपात्सर्पनिर्मोकभस्मभिः॥ २०॥
चयः शाम्यति गण्डस्य प्रकोपः स्फुटति द्रुतम्।
चिरविल्वाग्निकौ दन्ती चित्रको हयमारकः॥ २१॥
कपोतकङ्कगृध्राणां पुरीषाणि च दारणम्।
क्षारद्रव्याणि वा यानि क्षारो वा दारणः परः॥ २२
द्रव्याणां पिच्छिलानां तु त्वङ्मूलानि प्रपीडनम्।
यवगोधूममाषाणां चूर्णानि च समासतः॥ २३॥
ततः प्रक्षालनं क्वाथः पटोलीनिम्बपत्रजः।
अविशुद्धे विशुद्धे च न्यग्रोधादित्वगुद्भवः॥ २४॥
पञ्चमूलद्वयं वाते न्यग्रोधादिश्च पैत्तिके।
आरग्वधादिको योज्यः कफजे सर्वकर्मसु॥ २५॥

(२ व्रणशोथे रक्तमोक्षणादिप्रशंसा) जो शोजा लेप स्वेद सेक अपतर्पण इन्होंसें शांत नहीं हो। वह रक्त निकासनेसें शीघ्र नष्ट होताहै। एकतर्फ संपूर्ण क्रिया और एकतर्फ रक्तका निकासना। रक्तही व्यम्लताकों प्राप्त होताहै। जो वह नहीं हो तो पीडाभी नहीं रहती है। जो कदाचित् ऐसी चिकित्सा करनेसें शोजा शांत नहीं हो तो उस पकाहुआ घावका उपनाहोंसें पाटन करना हित है। तेलकरकै अथवा घृतकरकै अथवा दोनों-करकै सत्तूकी पिंडी बनाय अल्प गरम कर शोजाकों पकानेके अर्थ उपनाह हित है। तिल जासवंदके बीज दही इन्होंसें और मदिरासें वचा द्रव्य कूठ नमक इन्होंसें युतकरी सत्तुकी पिंडी उपनाहमें हित है। बालक बूढा नहीं सहनेवाला क्षीण डरपोक स्त्री इन्होंकै और पुरुषकै मर्मके ऊपर उपजा पका और भयंकर शोजा हो तो गायके दांतकों पानीमें घिस बूंदमात्रका लेप करै और अत्यंत कठिन शोजामें भी पाचन और भेदन करावै। सांपकी कांचलीका भस्म कर कडुवा तेलमें मिलाय लेप करनेसें चय और गंडका प्रकोप शीघ्र फूटजाताहै। करंजुवा वेल गिरी जमालगोटाकी जड चीता कनेर कपोतकी वींट बगलाकी वींट गीधकी वींट इन्होंका लेप दारण होताहै। अथवा सब खार द्रव्य और खार उत्तम दारण होताहै। पिच्छल द्रव्योंकी छाल और जडसें प्रपीडन करै। और जव गेहूं उडद इन्होंके चूर्णोंकों अच्छीतरह लेप करै। पीछे परवल और नींबके पत्तोंका क्वाथसें धोवै। नहीं शुद्ध हुयेमें और विशेषकरकै शुद्ध हुयेमें न्यग्रोधादिगणकी छालका क्वाथ हित है। वातके शोथमें दशमूलका क्वाथ और पित्तके शोथमें न्यग्रोधादिगणका क्वाथ कफके शोथमें आरग्वधादिगणका क्वाथ हित है।

(३) तिलकल्कः सलवणो द्वे हरिद्रे त्रिवृद्घृतम्।
मधुकं निम्बपत्राणि लेपः स्याद्व्रणशोधनः॥ २६॥

(३ तिलाष्टकः) सन्निपातके शोथमें तिलोंका कल्क नमक हलदी दारुहलदी निशोत घृत मुलहटी नींबके पत्ते इन्होंका लेप घावकों शोधताहै।

(४) निम्बपत्रं तिला दन्ती त्रिवृत्सैन्धवमाक्षिकम्

दुष्टव्रणप्रशमनो लेपः शोधनकेसरी ॥ २७ ॥
एकं वा शारिवामूलं सर्वव्रणविशोधनम् ।
पटोलं तिलयष्ट्याह्वत्रिवृद्दन्तीनिशाह्वयम् ॥ २८ ॥
निम्बपत्राणि चालेपः सपटुव्रणशोधनः ।
त्रिफलाखदिरो दार्वीन्यग्रोधादिबला कुशाः २९
निम्बकोलकपत्राणि कषायः शोधने हितः ।
अनेन पूतिमांसानां मांसस्थानमरोहताम् ॥ ३० ॥
कल्कः संरोपणः कार्यस्तिलानां मधुकान्वितः ।
निम्बपत्रमधुभ्यां तु युक्तः संशोधनः स्मृतः ३१
पूर्वाभ्यां सर्पिषा वापि युक्तश्चाप्युपरोहणः ।
निम्बपत्रतिलैः कल्को मधुना क्षतशोधनः ।
रोपणः सर्पिषा युक्तो यवकल्केऽप्ययं विधिः ३२
निम्बपत्रघृतक्षौद्रदार्वीमधुकसंयुता ।
वर्तिस्तिलानां कल्को वा शोधयेद्रोपयेद्व्रणम् ३३

(४ निंबपत्रलेपादि) नींबके पत्ते तिल जमालगोटाकी जड निशोत सेंधानमक शहद इन्होंका लेप दुष्टघावकों शांत करताहै । और शोधनेमें सिंहरूप है । अकेली शारिवाकी जड संपूर्ण घावकों शोधतीहै । परवल तिल मुलहटी निशोत हलदी दारुहलदी नींबके पत्ते नमक इन्होंका लेप घावकों शोधताहै । त्रिफला खैर दारुहलदी न्यग्रोधादिगणके ओषध खरैंहटी कुशा नींबके पत्ते वडवेरीके पत्ते इन्होंका काथ शोधनेमें हित है । दुर्गंध और मांससें रहित और मांसस्थानमें नहीं अंकुरकों प्राप्त होतेहुये ऐसे घावोंपर तिलोंके कल्कमें शहद डाल रोपण करना । नींबके पत्ते और शहदसें युक्त किया संशोधन कहाहै । अथवा नींबके पत्ते शहद घृत इन्होंसें युत किया उपरोहण होजाताहै । नींबके पत्ते और तिलोंका कल्क बनाय उसमें शहद डाल लेप करना यह क्षतशोधन है । घृतसें युत किया रोपण होताहै । जवोंके कल्कमेंभी यही विधि उचित है । नींबके पत्ते घृत शहद दारुहलदी मुलहटी इन्होंसें युत करे तिलोंकी बत्ती अथवा कल्क घावकों शोधता है । और अंकुर लाता है ।

(५)सप्तदलदुग्धकल्कः
शमयति दुष्टव्रणं प्रलेपेन ।
मधुयुक्ता शरपुङ्खा
सर्वव्रणरोपणी कथिता ॥ ३४ ॥
मानुषशिरः कपालं
तदस्थि वा लेपयेत मूत्रेण ।
रोपणमिदं क्षतानां
योगशतैरप्यसाध्यानाम् ॥ ३५ ॥
व्रणान्विशोधयेद्वर्त्या सूक्ष्मास्यान्मर्मसन्धिगान् ।
अभयात्रिवृतादन्तीलाङ्गलीमधुसैन्धवैः ॥ ३६ ॥
सुषवीपत्रपत्तूरकर्णमोटकुठेरकाः ।
पृथगेते प्रलेपेन गम्भीरव्रणरोपणाः ॥ ३७ ॥
पञ्चवल्कलचूर्णैर्वा शुक्तिचूर्णसमन्वितैः ।
धातकीचूर्णलोध्रैर्वा तथा रोहन्ति ते व्रणाः ३८
सदाहा वेदनावन्तो व्रणा ये मारुतोत्तराः ।
तेषां तिलानुमांश्चैव भृष्टान्पयसि निर्वृतान् ३९
तेनैव पयसा पिष्ट्वा दद्यादालेपनं भिषक् ।
वातादिभूतान्सास्रावान्धूपयेदुग्रवेदनान् ॥ ४० ॥
यवाज्यभूर्जमदनश्रीवेष्टकसुराह्वयैः ।
श्रीवासगुग्गुल्वगुरुशालनिर्यासधूपिताः ॥ ४१ ॥
कठिनत्वं व्रणा यान्ति नश्यन्त्युग्राश्च वेदनाः ॥
तिलाः पयः सिता क्षौद्रं तैलं मधुकचन्दनम् ।
लेपेन शोथरुग्दाहरक्तं निर्वापयेद्व्रणान् ॥ ४३ ॥
पित्तविद्रधिवीसर्पशमनं लेपनादिकम् ।
अग्निदग्धे व्रणे सम्यक्प्रयुञ्जीत चिकित्सकः ४४
महाराष्ट्रिजटालेपो दग्धपिष्टावचूर्णितम् ।
जीर्णगेहतृणाच्चूर्णं दग्धव्रणहितं मतम् ॥ ४५ ॥

(५ सप्तदलदुग्धकल्कादि) सातलाके पत्तोंका दूधमें कल्क बनाय लेप करनेसें दुष्ट घावकों शांत करताहै । शहदसें युत करी शरपुंखा सब प्रकारके घावोंकों रोपण करतीहै । मनुष्यके शिरकी खोपरी अथवा हड्डीकों गोमूत्रसें पीस लेप करै तो सैंकडें योगोंसें असाध्य हुये घावोंका यह रोपण है । सूक्ष्म मुखवाले और मर्म तथा संधिगत घावोंकों बत्तीसें शोधित करै । हरडै निशोत जमालगोटाकी जड कलहारी शहद सेंधानमक कलौंजी तेजपात पतंग दालचिनी चूका आजबला ये अलग अलग लेप करनेंसें गंभीर घावपर अंकुर लातेहैं । पंचवल्कलके चूर्णोंमें सींपीका चूर्ण डाल अथवा धायके चूर्णसें और लोधका चूर्ण करकै वे घाव अंकुरकों प्राप्तहो । दाहसहित और पीडावाले और वायुकी अधिकतावाले ऐसे जो घाव हैं उन्होंकी शांतिके अर्थ तिलोंकों दूधमें पीस वैद्य लेप

करै । वातआदिसें उपजे और स्रावसहित ऐसे उग्र पीडा-वाले घावोंकों जब घृत भोजपत्र मैनफल श्रीवेष्टधूप देव-दार श्रीवास गूगल अगर शालका सत्त इन्होंसें धूपित किये घाव कठिनपनाकों प्राप्त होतेहैं । और उग्रपीडा नष्ट होजातीहै । तिल दूध मिश्री शहद तेल मुलहटी चंदन इन्होंका लेपकरकै शोजा शूल दाह रक्त और घाव इ-न्होंकी शांति होतीहै । पित्तकी विद्रधी और पित्तके विसर्पकों शांत करनेवाले लेप आदिकों वैद्य अग्निदग्धमें अच्छीतरह प्रयुक्त करै । जलपीपलकी जडका लेप दग्ध हुआ पिचितहुआ और अवचूर्णित हुआकों शांत करता-है । और पुरानाघरके तृणका चूर्ण दग्धव्रणमें हितहै ।

(६)जीवककल्कं पश्चा-
त्सिक्थकसर्जरसमिश्रितं हरति ।
घृतमभ्यङ्गात्पावक-
दग्धो दुःखं क्षणार्धेन ॥ ४६ ॥

अन्तर्दग्धकुठारको दहनजं लेपान्निहन्ति व्रण-
मश्वत्थस्य विशुष्कवल्कलकृतं चूर्णं तथा गुण्डनात्
अभ्यङ्गाद्विनिहन्ति तैलमखिलं गण्डूपदैः साधितं
पिष्ट्वा शाल्मलितूलकैर्जलगता लेपात्तथा वालुकाः
सद्यः क्षतं व्रणं वैद्यः सशूलं परिषेचयेत् ।
यष्टीमधुककल्केन किञ्चिदुष्णेन सर्पिषा ॥ ४८ ॥
बुद्ध्वागन्तुव्रणं वैद्यो घृतं क्षौद्रसमन्वितम् ।
शीतां क्रियां प्रयुञ्जीत पित्तरक्तोष्मनाशिनीम्
कान्तक्रमुकमेकं सुश्लक्ष्णं गव्यसर्पिषा पिष्टम् ।
शमयति लेपान्नियतं व्रणमागन्तूद्भवं न सन्देहः
अपामार्गस्य संसिक्तं पत्रोत्थेन रसेन वा ।
सद्यो व्रणेषु रक्तं तु प्रवृत्तं परितिष्ठति ॥ ५१ ॥
कर्पूरपूरितं बद्धं सघृतं संप्ररोहति ।
सद्यः शस्त्रक्षतं पुंसां व्यथापाकविवर्जितम् ५२
शरपुङ्खा काकजङ्घा प्रसूत महिषीमलम् ।
लज्जा च सद्यस्कव्रणघ्नं पृथगेव तु ॥ ५३ ॥
शुनो जिह्वाकृतश्चूर्णः सद्यः क्षतविरोहणः ।
चक्रतैलं क्षते विद्धे रोपणं परमं मतम् ॥ ५४ ॥
यवक्षारं भक्षयित्वा पिण्डं दद्याद्व्रणोपरि ।
शृंगालकोलिमूलेन नष्टशैलं विनिःसरेत् ॥५५॥
लाङ्गलीमूललेपाद्वा गवाक्षीमूलतस्तथा ।
क्षतोष्मणो निग्रहार्थं तत्कालं विसृतस्य च ५६

(६ जीविकाकल्कादि) जीवकका कल्कमें मौम रालका रस मिलाकै घृतकों सिद्ध करै मालिस करनेसें घडीमें अग्निसें दग्ध हुआके दुःखकों नाशताहै । कुठार-कवृक्षकी जडकों पात्रमें घाल ऐसी रीतिसें जलावै कि धूमा बाहिर नहीं निकसै । पीछे उसका लेप करनेसें अग्नि-दग्धका घाव नष्ट होताहै । पीपलवृक्षकी छालकों सु-खाकै चूर्ण बनाय उस्से गुंडन करै अथवा गिंडोयोंसें साधित किया तेल सब प्रकारके अग्निदग्धव्रणकों नाशताहै । और शंभल रुईकी जड वालू इन्होंकों पानीसें पीस लेप करनेसें अग्निदग्धव्रण नष्ट होतेहै । तत्काल क्षत हुये शूलसहित घावकों मुलहटीके कल्ककों घृतमें डाल कछुक गरमकर सेचन करै । आगंतुव्रणकों जानकर वैद्य शहद-सहित घृत ऐसी शीतल क्रिया जो कि रक्तपित्त और गर-माईकों नाशती हो वही प्रयुक्त करनी । सुंदररूप एक सु-पारी लेकै गायके घृतमें मिहीन पीस नित्यप्रति लेप कर-नेसें आगंतुज घावकों शांत करतीहै । संदेह नहीं । ऊं-गाके पत्तोंके रसकरकै सींचनेसें तत्कालके घावोंमें प्रवृत्त हुआ रक्त स्थित रहताहै । कपूरसहित घृतसें बंधा हुआ तत्काल शस्त्रसें कटा हुआ और शूलपाकसें वर्जित ऐसा घाव अंकुरकों प्राप्त होता है । शरपुंखा काकजंघा प्रथम ब्याई हुई भैंसका मल लज्जावंती ये सब अलग अलग त-त्काल उपजे घावकों नाशतेहैं । कुत्ताकी जीभका चूर्ण बनाय मलनेसें तत्काल क्षत हुआपर अंकुर आताहै । चक्र-तेल क्षतमें और विद्धमें उत्तम रोपण मानाहै । जवाखारकों खाकै घावके ऊपर पिठवन और वडवेरीकी जडका पिंड बनाय देवै तो नष्ट हुआ पत्थरका टुकडा निकस जाता है । कलहारीकी जडके लेपसें तथा इंद्रायणकी जडके लेपसें तत्काल क्षत हुआभी उष्मा दूर होजातीहै ।

(७)कषायशीतमधुराः स्निग्धा लेपादयो हिताः
आमाशयस्थे रुधिरे वमनं पथ्यमुच्यते ॥ ५७ ॥
पक्वाशयस्थे देयं च विरेचनमसंशयः ।
क्वाथो वंशत्वगेरण्डश्वदंष्ट्राश्मभिदा कृतः॥ ५८॥
सहिङ्गुसैन्धवः पीतः कोष्ठस्थं स्रावयेदसृक् ।
यवकोलकुलत्थानां निःस्नेहेन रसेन च ॥५९ ॥
भुञ्जीतान्नं यवागूं वा पिबेत्सैन्धवसंयुताम् ।
अत्यर्थमस्रं स्रवति प्रायशो यत्र वीक्षते ॥ ६० ॥
ततो रक्तक्षयाद्वायौ कुपितेऽतिरुजाकरे ।
स्नेहपानं परीषेकं स्नेहलेपोपनाहनम् ॥ ६१ ॥

स्नेहबस्तिं च कुर्वीत वातघ्नौषधसाधिताम् ।
इति साप्ताहिकः प्रोक्तः सद्यो व्रणहितो विधिः ॥
सप्ताहात्परतः कुर्याच्छारीरव्रणवत्क्रियाम् ।
करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीरसो हन्याद्व्रणक्रिमीन् ॥६३॥
कलायविदलीपत्रं कोषाम्रास्थि च पूरणात् ।
सुरसादिरसैः सेको लेपनः स्वरसेन वा ॥६४॥
निम्बसम्पाकजात्यर्कसप्तपर्णाश्वमारकाः ।
क्रिमिघ्ना मूत्रसंयुक्ताः सेका लेपनधावनैः ६५
प्रक्षाल्य मांसपेष्या वा क्रिमीनपहरेद्व्रणान् ।
लशुनेनाथवा दद्याल्लेपनं क्रिमिनाशनम् ॥६६ ॥

(७ कषायलेपादि) कसैले मधुर शीतल और स्निग्ध ऐसे लेपआदि हित हैं । आमाशयमें स्थितहुये रक्तविषै वमन कराना पथ्य है। और पक्वाशयविषै स्थितहुये रक्तमें विरेचन पथ्य है । संशय नहीं । वंशकी छाल अरंड गोखरू पाषाणभेद इन्होंका क्वाथ बनाय उसमें सेंधानमक और हींग डाल पान करै तो कोष्ठगत रक्तकों निकासताहै । जव वेर कुलथी इन्होंके स्नेहवर्जित रसके संग अन्नकों खावै अथवा सेंधानमकसें युतकरी यवागूकों पीवै । जहां बहुत कट जाताहै तहां बहुतसा रक्तक्षय होताहै । पीछे रक्तक्षयसें वायु कुपित होके अत्यंत पीडा करतीहै । तब स्नेहका पान स्नेहकी सेक स्नेहका लेप और उपनाहन और वातनाशक ओषधोंसें साधितकरी स्नेह-बस्ति इन्होंकों करै । ऐसे सातदिनोंतक सद्योव्रणमें हित विधि कहाहै । सात दिनसें उपरंत शरीरकी घावकी तरह क्रियाकों करै । करंजुवा निंब संभालू इन्होंका रस घावके कीडोंकों नाशताहै । मटर सातलाके पत्ते राना आंबकी गुठली इन्होंकरकै पूरनेसें और सुरसादिगणके रसकरकै सेकसें अथवा इन्होंके स्वरससें लेप करना हित है । नींब अमलतास चमेली आक सातला कन्हेर इन्होंकों गोमूत्रमें युतकर सेक लेप धोवनेद्वारा कृमियोंका नाश होताहै । अथवा मांसकी पेशीसें घावोंकों धोकर कृमियोंकों दूर करै।अथवा ल्हस्सनकरकै लेप करना कृमियोंकों नाशताहै।

(८)ये क्लेदपाकस्रुतिगन्धवन्तो
व्रणा महान्तः सरुजः सशोथाः ।
प्रयान्ति ते गुग्गुलुमिश्रितेन
पीतेन शान्तिं त्रिफलारसेन ॥ ६७ ॥

(८ त्रिफलागुग्गुलुः) जो क्लेद पाक स्राव गंध इन्होंवाले और बडे पीडावाले और शोजावाले ऐसे घाव हैं वह त्रिफलाके रसमें गूगल मिलाय पीनेसें शांत होतेहैं ।

(९)त्रिफलाचूर्णसंयुक्तो गुग्गुलुर्वटकीकृतः ।
निर्यत्रणो विवन्धघ्नो व्रणशोधनरोपणः ॥ ६८ ॥
अमृतागुग्गुलुः शस्तो हितं तैलं च वज्रकम् ।
विडङ्गत्रिफलाव्योषचूर्णं गुग्गुलुना समम् ॥६९॥
सर्पिषा वटकीकृत्वा खादेद्वा हितभोजनः ।
दुष्टव्रणापचीमेहकुष्ठनाडीव्रणापहः ॥ ७० ॥

(९ वटिकागुग्गुलुः) त्रिफलाका चूर्णमें गूगल मिलाय गोली बनावे व्रणकों मेटतीहै । बंधाकों नाशतीहै घावकों शोधकर अंकुर लातीहै । अमृतागूगल श्रेष्ठ है और वज्रक तेल हित है । वायविडंग त्रिफला सोंठ मिरच पीपल गूगल ये समभाग ले घृतसें गोली बनाय हित भोजन करने-वाला खावै । दुष्टघाव अपची प्रमेह दुष्ट नाडीव्रण इन्होंका नाश होताहै ।

(१०)अमृतापटोलमूल-
त्रिफलात्रिकटुक्रिमिघ्नानाम् ।
समभागानां चूर्णं
सर्वसमो गुग्गुलोर्भागः ॥ ७१ ॥
प्रतिवासरमेकैकां
खादेदक्षणप्रमाणाम् ।
जेतुं व्रणान्वातासृ-
ग्गुल्मोदरश्वयथुरोगादीन् ॥ ७२ ॥

(१० अमृतागुग्गुलुः) गिलोय परवलकी जड त्रिफला सोंठ मिरच पीपल वायविडंग ये सब समान भाग ले चूर्ण करै और इस चूर्णके समान गूगल ले एक एक तोलाकी गोली बनाय नित्य एक एक खावै। घाव वातरक्त गुल्मोदर शोजाआदि रोग शांत होतेहैं ।

(११)जातीनिम्बपटोलपत्रकटुकादार्वीनिशाशारिवामञ्जिष्ठाभयतुत्थसिक्थमधुकैर्नक्ताह्वबीजैः समैः । सर्पिः सिद्धमनेन सूक्ष्मवदना मर्माश्रिताः स्राविणो गम्भीराः सरुजो व्रणाः सगतिकाः शुष्यन्ति रोहन्ति च ॥ ७३ ॥

(११ जातिकाद्यं घृतम्) चमेली नींब परवलके

पत्ते कुटकी सोंफ हलदी शारिवा अनंतमूल मंजीठ नेत्रवाला नीलाथोथा मोम मुलहटी करंजुवाके बीज ये सब समान भाग लेने। इस कल्कके संग सिद्ध किया घृतसें सूक्ष्ममुखवाले मर्ममें आश्रितहुये स्राववाले गंभीर पीडावाले राधिकों झिरानेवाले ऐसे घाव सूखजातेहैं और अंकुरकों प्राप्त होतेहैं।

(१२)गौरा हरिद्रा मञ्जिष्ठा मांसी मधुकमेव च।
प्रपौण्डरीकं ह्रीवेरं भद्रमुस्तं सचन्दनम् ॥ ७४ ॥
जातीनिम्बपटोलं च करञ्जं कटुरोहिणी।
मधूच्छिष्टं समधुकं महामेदा तथैव च ॥ ७५ ॥
पञ्चवल्कलतोयेन घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
एष गौरो महावीर्यः सर्वव्रणविशोधनः॥ ७६ ॥
आगन्तुः सहजाश्चैव सुचिरोत्थाश्च ये व्रणाः।
विषमामपि नाडीं च शोधयेच्छीघ्रमेव च॥७७॥
गौराद्यं जातिकाद्यं च तैलमेवं प्रसाध्यते।
तैलं सूक्ष्मानने दुष्टे व्रणे गम्भीर एव च ॥७८॥

(१२ गौराद्यं घृतम्) गोरोचन हलदी मजीठ वालछड मुलहटी सुपेदकमल नेत्रवाला भद्रमोथा चंदन जायफल नींब परवल करंजुआ कुटकी मौंम मुलहटी महामेदा बड गूलर पीपल पिलषन नांदरुखी इन्होंके क्राथमें ५४ तोलेभर घृतकों पकावै। यह गौरघृत महावीर्यवाला है और सब प्रकारके घावोंकों शोधताहै। आगंतुक सहज और बहुत दिनसें उपजा ऐसे घावोंकों और विषमरूप नाडीकों शीघ्र शोधताहै। गौराद्य और जातिकाद्य तेल इसी प्रकार सिद्ध होताहै। सूक्ष्ममुखवाला दुष्ट और गंभीर ऐसे घावमें यह तेल हित है।

(१३)नक्तमालस्य पत्राणि वरुणानि फलानि च।
सुमनायाश्च पत्राणि पटोलारिष्टयोस्तथा ॥७९॥
द्वे हरिद्रे मधूच्छिष्टं मधुकं तिक्तरोहिणी।
मञ्जिष्ठा चन्दनोशीरमुत्पलं शारिवे त्रिवृत्।
एतेषां कार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत्॥ ८० ॥
दुष्टव्रणप्रशमनं तथा नाडीविशोधनम्।
सद्यश्छिन्नव्रणानां च करञ्जाद्यमिहेष्यते ॥८१॥

(१३ करंजाद्यं घृतम्) करंजुआके पत्ते वरनाके फल चमेलीके पत्ते परवल और नींबके पत्ते हलदी दारुहलदी मौंम मुलहटी कुटकी मजीठ चंदन खस सपेदकमल दोनों शारिवा निशोत ये सब एक एक तोला ले ६४ तोलेभर घृतकों पकावै दुष्टघावकों शांत करताहै। और नाडीव्रणकों शोधताहै। तत्काल कटनेसें उपजे घावोंकों यह करंजाद्य घृत हित है।

(१४)प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठामधुकोशीरपद्मकैः।
सहरिद्रैः शृतं सर्पिः सक्षीरं व्रणरोपणम्॥८२॥

(१४ प्रपौंडरीकाद्यं घृतम्) कमल मजीठ मुलहटी खस पद्माख हलदी दूध इन्होंमें सिद्ध किया घृत घावपर अंकुर लाताहै।

(१५)तिक्तासिक्थनिशायष्टीनक्ताह्वफलपल्लवैः।
पटोलमालतीनिम्बपत्रैर्व्रण्यं घृतं पचेत् ॥ ८३ ॥

(१५ तिक्ताद्यं घृतम्) कुटकी मौंम हलदी मुलहटी करंजुआके फल और पत्ते परवल चमेली नींब इन्होंके पत्ते इन्होंसें सिद्ध किया घृत घावमें हित है।

(१६)सिन्दूरकुष्ठविषहिङ्गुरसोनचित्र
बाणाङ्घ्रिलाङ्गलिककल्कविपक्वतैलम्।
प्रासादमन्त्रयुतफूत्कृतशुद्धफेनो
दुष्टव्रणप्रशमनो विपरीतमल्लः ॥ ८४ ॥
खड्गाभिघातगुरुगण्डमहोपदंश-
नाडीव्रणव्रणविचर्चिककुष्ठपामाः।
एतान्निहन्ति विपरीतकमल्लनाम
तैलं यथेष्टशयनासनभोजनस्य ॥ ८५ ॥

(१६ विपरीतमल्लतैलम्) सिंदूर कूट विष हींग लहसन चीता कुरंटाकी जड इन्होंके कल्कमें पकाया तेल जब झागोंसें रहित हो तब विपरीतमल्ल तेल कहाता है। यह दुष्ट घावकों शांत करताहै तलवारसें कटाहुआ भारी गंडरोग प्रमेह उपदंश नाडीव्रण घाव विचर्चिका कुष्ठ पाम इन्होंकों विपरीतमल्ल नामवाला यह तेल नाशताहै। इसपर जैसी इच्छा हो उसके अनुसार सोना बैठना और भोजन करना उचित है।

(१७)कुठारकात्पलशतं साधयेल्लल्वनेऽम्भसि।
तेन पादावशेषेण तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ८६ ॥
कल्कैः कुठारापामार्गप्रोष्ठिकामक्षिकायुतैः।

(१७ अंगारकं तैलम्) कुठारा ४०० तोलेभरकों

१०२४ तोलेभर पानीमें पकावै । जब चौथाई भाग शेष रहै तब ६४ तोलेभर तेलकों पकावै । कुठारा ऊंगा मछलीभेद माखी इन्होंका कल्क बनावै । यह अंगारक नामवाला तेल घावकों शोधकर अंकुर लाताहै । सब प्रकारकी तथा आगंतुककी नाडियोंमें इसकी मालिस उत्तम है।

(१८)प्रपौण्डरीकं मधुकं काकोल्यौ द्वे सचन्दने।
सिद्धमेभिः समं तैलं तत्परं व्रणरोपणम् ॥ ८८॥

(१८ द्वितीयं प्रपौंडरीकाख्यं तैलम्) कमल मुलहटी काकोली क्षीरकाकोली चंदन इन्होंसें सिद्ध किया तेल घावपर अंकुर लानेमें उत्तम है।

(१९)दूर्वास्वरससिद्धं वा तैलं कम्पिल्लकेन च ।
दार्वीत्वचश्च कल्केन प्रधानं रोपणं व्रणे॥ ८९ ॥
येनैव विधिना तैलं घृतं तेनैव साधयेत् ।
रक्तपित्तोत्तरं ज्ञात्वा सर्पिरेवावपाचयेत् ॥ ९० ॥

(१९ दूर्वाद्यं घृतं तैलं च) दूबके रसमें सिद्ध किया तेल अथवा कपिला औषधिके रसमें सिद्ध किया तेल अथवा दारुहलदीकी छालिके कल्कसें सिद्ध किया तेल घावपर अंकुर लानेमें उत्तम है। जिस विधिकरके तेल करना उसी विधिसें घृतकों सिद्ध करै । रक्तपित्तकी अधिकता जानकर घृतकों प्रयुक्त करै।

(२०)मञ्जिष्ठां चन्दनं मूर्वां पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत्।
सर्वेषामग्निदग्धानामेतद्रोपणमिष्यते ॥ ९१ ॥

(२० मंजिष्ठाद्यं घृतम्) मजीठ चंदन मरोडफली इन्होंकों पीस घृतकों पकावै सब प्रकारकी अग्नीसें दग्धहुयोंपर यह रोपण है ।

(२१)सिद्धं कषायकल्काभ्यां पाटल्याः कटुतैलकम्
दग्धव्रणरुजास्रावदाहविस्फोटनाशनम् ॥ ९२ ॥

(२१ पाटलीतैलम्) पाटलीके क्वाथ और कल्कसें सिद्ध किया तेल दग्धव्रणकी पीडा स्राव दाह विस्फोट इन्होंकों नाशता है ।

(२२)चन्दनं वटशुङ्गं च मञ्जिष्ठा मधुकं तथा।
प्रपौण्डरीकं मूर्वा च पतङ्गं धातकी तथा ९३
एभिस्तैलं विपक्तव्यं सर्पिः क्षीरसमन्वितम् ।
अग्निदग्धव्रणेष्विष्टं म्रक्षणाद्रोपणं परम् ॥ ९४ ॥

(२२ चंदनाद्यं तैलम्) चंदन वडके कोंपल मजीठ मुलहटी कमल मरोडफली लालचंदन धायके फूल घृत दूध इन्होंसें तेजकों पकावै अग्निदग्धव्रणोंमें मालिस करनेसें अंकुर आताहै ।

(२३)मनःशिलाले मञ्जिष्ठा सलाक्षारजनीद्वयम्।
प्रलेपः सघृतक्षौद्रस्त्वग्विशुद्धिकरः परः ॥९५॥
अयोरजः सकासीसं त्रिफलाकुसुमानि च ।
प्रलेपः कुरुते कार्ष्ण्यं सर्व एव नवत्वचि ९६
कालीयकलताम्रास्थिहेमकालारसोत्तमैः ।
लेपः सगोमयरसः सवर्णकरणः परः ॥ ९७ ॥
चतुष्पदां हि त्वग्रोमखुरशृङ्गास्थिभस्मना ।
तैलाक्ता चूर्णिता भूमिर्भवेद्रोमवती पुनः।
व्रणग्रन्थिं ग्रन्थिवच्च जयेत्क्षारेण वा भिषक् ९८

इति व्रणशोथसद्योव्रणचिकित्सा ।

(२३ मनःशिलादिप्रलेपः) मनसिल हरताल मजीठ लाख हलदी दारुहलदी घृत शहद इन्होंका लेप खालकी शुद्धिकों करताहै । लोहाका चूर्ण हीराकसीस त्रिफलाके फूल इन्होंका लेप नई खालपर कृष्णताकों करता है । दारुहलदी मालकांगनी आंबकी गुठली कचनार मजीठ गोबरका रस इन्होंका लेप अपने समान वर्ण करताहै । चौपायोंकी खाल रोम खुर सींग हड्डी इन्होंका भस्म तेलमें मिलाय पृथ्वीपैं लगावै तो फिर रोमोंवाली पृथ्वी हो जातीहै । व्रणग्रंथिकों वैद्य खारसें ग्रंथिकी तरह जीतै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां व्रणशोथसद्योव्रणचिकित्सा ।

अथ नाडीव्रणाधिकारः ४४

अब नाडीव्रणका अधिकार कहतेहै ।

(१)नाडीनां गतिमन्विष्य शस्त्रेणापाट्य शास्त्रवित्
सर्वव्रणक्रमं कुर्याच्छोधनं रोपणादिकम् ॥ १ ॥
नाडीं वातकृतां साधुपाटितां लेपयेद्भिषक् ।
प्रत्यक्पुष्पीफलयुतैस्तिलैः पिष्टैः प्रलेपयेत् ।
पैत्तिकीं तिलमञ्जिष्ठानागदन्तीनिशायुगैः ।
श्लेष्मिकीं तिलयष्ट्याह्वनिकुम्भारिष्टसैन्धवैः ।
शल्यजां तिलमध्वाज्यैर्लेपयेच्छिन्नशोधिताम्॥६॥

आरग्वधनिशाकालाचूर्णाज्यक्षौद्रसंयुता ।
मूत्रवर्तिर्व्रणे योज्या शोधनी गतिनाशिनी ॥ ४॥
घोण्टाफलत्वङ्मदनात्फलानि
पूगस्य च त्वक् लवणं च मुख्यम् ।
स्नुह्यर्कदुग्धेन सहैष कल्को
वर्तीकृतो हन्त्यचिरेण नाडीम् ॥ ५ ॥
वर्तीकृतं माक्षिकसंप्रयुक्तं
नाडीघ्नमुक्तं लवणोत्तमं वा ।
दुष्टव्रणे यद्विहितं च तैलं
तत्सेव्यमानं गतिमाशु हन्ति ॥ ६ ॥
जात्यर्कसम्पाककरं च दन्ती-
सिन्धूत्थसौवर्चलयावशूकैः ।
वर्तिः कृता हन्त्यचिरेण नाडी
स्नुक्क्षीरपिष्टा सह माक्षिकेण ॥ ७ ॥
माहिषदधिकोद्रवान्न-
मिश्रितं हरति चिरविरूढां च ।
भुक्तं कङ्गुनिकामू-
लचूर्णमतिदारुणां नाडीम् ॥ ८ ॥

(१ नाडीव्रणे उपयाः) शस्त्रकर्म जाननेवाला वैद्य नाडियोंकी गति जानकर शस्त्रसें अच्छीतरह फाड शोधन रोपणआदि संपूर्ण व्रणका क्रम करना । वैद्य अच्छीतरह फाडीहुई वातकी नाडीकों श्वेतऊंगाके फल और तिलोंकों पीस लेप करै । पित्तकी नाडीकों तिल मंजीठ इंद्रायण हलदी दारुहलदी इन्होंसें लेपित करै । कफकी नाडीकों तिल मुलहटी जमालगोटाकी जड नींब सेंधानमक इन्होंसें लेप करै । छिन्न और शोधित करी शल्यज नाडीकों तिल शहद घृत इन्होंसें लेप करै । अमलताश हलदी कालावाला इन्होंके चूर्णमें घृत और शहद मिलाय सूत्रकी बत्ती घावमें योजित करनी शोधती है और राधकों नाशतीहै । सुपारी दालचिनी मैनफल सुपारीकी छाल सेंधानमक इन्होंकों थोहरका और आकका दूधकरकै कल्क बनाय उसकी बनाई बत्ती नाडीरोगकों नाशतीहै । अथवा सेंधानमककी बत्ती बनाय शहदसें संयुक्त करी नाडीरोगकों नाशती है । और दुष्टघावमें जो विहित तेल है वह सेवित किया राधकों शीघ्र नाशताहै । चमेली आक अमलतास करंजुवा जमालगोटाकी जड सेंधानमक कालानमक जवाखार इन्होंकों थोहरका दूध और शहदसें पीस बनाई बत्ती नाडीकों शीघ्र नाशतीहै । भैंसका दही और कोदू अन्नकों मिलाय वर्ते तो पुरानी और फैलीहुई नाडी नष्ट होतीहै । कांगनीकी जडका चूर्ण भोजन किया जावै तो अतिदारुण नाडीकों नाशताहै ।

(२)कृशदुर्बलभीरूणां गतिर्मर्माश्रिता च या ।
क्षारसूत्रेण तां छिन्द्यान्न शस्त्रेण कदाचन ॥ ९ ॥
एषण्या गतिमन्विष्य क्षारसूत्रानुसारिणीम् ।
सूचीं विदध्यादभ्यन्ते चोन्नाम्य चाशु निर्हरेत्१०
सूत्रस्यान्तं समानीय गाढं बन्धं समाचरेत् ।
ततः क्षीणबलं वीक्ष्य सूत्रमन्यत्प्रवेशयेत् ॥ ११ ॥
क्षाराक्तं मतिमान्वैद्यो यावन्न छिद्यते गतिः ।
भगन्दरेऽप्येष विधिः कार्यो वैद्येन जानता॥१२॥
अर्बुदादिषु चोत्क्षिप्य मूले सूत्रं निधापयेत् ।
सूचीभिर्यववक्राभिराचितं श्वासमन्ततः ॥ १३ ॥
मूले सूत्रेण बध्नीयाच्छिन्ने चोपचरेद्व्रणम् ।

(२ कृशादीनां शिराव्यधोपायः) कृश दुर्बल और डरपोक ऐसे मनुष्योंकी और मर्ममें आश्रित हुई जो गति हो उसकों खार सूत्रसें काटै और शस्त्रसें कभीभी नहीं काटै । एषणीसें गति ढोहकै खार सूत्रके अनुसार वाली सूईकों अभ्यंतमें देकै और उन्नमितकर शीघ्र निकासै । सूत्रके अंतकों जानकर करडा बंध देना पीछे क्षीणबलकों देख अन्यसूत्रका प्रवेश करना । परंतु खारसें भिगोया सूत्रका प्रवेश करै । बुद्धिमान् वैद्य जबतक गतिका छेद नहीं हो । भगंदरमेंभी जाननेवाला वैद्यनैं यही विधि करना । अर्बुदआदियोंमें उत्क्षेपकर मूलमें सूत्रस्थापित करना जवके समान मुखवाली सूईयोंसें आचित किया श्वासकों समीप मूलमें सूत्रसें बांधै और छिन्न होनेमें घावका उपचार करै ।

(३)गुग्गुलुत्रिफलाव्योपैः समांसैराज्ययोजितः ।
नाडीदुष्टव्रणशूलभगन्दरविनाशनः ॥ १४ ॥

(३ सप्तांगगुग्गुलुः) गूगल त्रिफला सोंठ मिरच पीपल ये सब समानभाग ले घृतसें युत करै नाडी दुष्टव्रण शूल भगंदर इन्होंका नाश होताहै ।

(४)सर्जिकासिन्धुदन्त्यग्निरूपिकानलनीलिका ।
स्वरमञ्जरीबीजेषु तैलं गोमूत्रपाचितम् ।
दुष्टव्रणप्रशमनं कफनाडीव्रणापहम् ॥ १५ ॥

(४ सर्जिकाद्यं तैलम्) साजी सेंधानमक जमालगोटाकी जड चीता रुईकी जड नड नील तुलसीके बीज गोमूत्र इन्होंमें तेलकों पकावै । दुष्टव्रणकों शांत करताहै और कफके नाडीव्रणकों नाशताहै ।

(५) कुम्भीकखर्जूरकपित्थबिल्व-
वनस्पतीनां तु शलाटुवर्गे ।
कृत्वा कषायं विपचेत्तु तैल-
मावाप्य मुस्तं सरलं प्रियङ्गुम् ॥ १६ ॥
सौगन्धिकामोचरसाहिपुष्प-
लोध्राणि दत्वा खलु धातकीं च ।
एतेन शल्यप्रभवा हि नाडी
रोहेद्व्रणो वै सुखमाशु चैव ॥ १७ ॥

(५ कुंभिकाद्यं तैलम्) पुन्नाग खजूर कैथ वेलगिरी वनस्पतियोंके कचाफलका गण इन्होंके क्वाथमें तेलकों पकावै परंतु नागरमोथा सरलवृक्ष कांगनी दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर मोचरस लोध धायके फूल इन्होंका कल्क देवै । इस तेलकरकै शल्यसें उपजा नाडीव्रण अंकुरकों शीघ्र प्राप्त होताहै ।

(६)भल्लातकार्कमरिचैर्लवणोत्तमेन
सिद्धं विडङ्गरजनीद्वयचित्रकैश्च ।
स्यान्मार्कवस्य च रसेन निहन्ति तैलं
नाडीं कफानिलकृतामपचीं व्रणांश्च १८

(६ भल्लातकाद्यं तैलम्) भिलावा आक मिरच सेंधानमक वायविडंग हलदी दारुहलदी चीता इन्होंका कल्क और भंगराके रसकरकै सिद्ध किया तेल कफवातकी नाडी अपची और घावोंकों नाशताहै ।

(७) समूलपत्रां निर्गुण्डीं पीडयित्वा रसेन तु ।
तेन सिद्धं समं तैलं नाडीदुष्टव्रणापहम् ॥ १९॥
हितं पामापचीनां तु पानाभ्यञ्जननावनैः ।
विविधेषु च स्फोटेषु तथा सर्वव्रणेषु च ॥ २०॥

(७ निर्गुंडीतैलम्) मूल और पत्तोंसहित संभालूकों पीडितकर रस निकास उसमें बराबर भाग तेल मिलाय तेलकों सिद्ध करै । यह नाडीव्रणकों और दुष्टव्रणकों नाशताहै । पाम और अपचीरोगमें पीना मालिस और नस्यके द्वारा हित करताहै । और अनेक प्रकारके रोगोंमें तथा सब प्रकारके घावोंमें हित करताहै ।

२४

(८)हंसपादारिष्टपत्रं जातीपत्रं ततो रसैः ।
तत्कल्कैर्विपचेत्तैलं नाडीव्रणविरोहणम् ॥ २१ ॥
इति नाडीव्रणचिकित्सा ।

(८ हंसपादादितैलम्) अत्यंत रक्त शिंगरफ नींबके पत्ते चमेलीके पत्ते इन्होंके रस और कल्कसें तेलकों पकावै । यह नाडीव्रणपर अंकुर लाताहै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां नाडीव्रणचिकित्सा ।

अथ भगन्दराधिकारः ४९

अब भगंदरका अधिकार कहतेहै ।

(१)गुदस्य श्वयथुं ज्ञात्वा विशोष्य शोधयेत्ततः ।
रक्तावसेचनं कार्यं यथा पाकं न गच्छति १
वटपत्रेष्टकाशुण्ठीगुडूच्यः सपुनर्नवाः ।
सुपिष्टाः पीडकारम्भे लेपः शस्तो भगन्दरे ॥२॥
पीडकानामपक्वानामपतर्पणपूर्वकम् ।
कर्म कुर्याद्विरेकान्तं भिन्नानां वक्ष्यते क्रियाम् ॥
एषणीपाटनं क्षारवह्निदाहादिकं क्रमम् ।
विधाय व्रणवत्कार्यं यथादोषं यथाक्रमम् ॥ ४ ॥
त्रिवृत्तिलानागदन्तीमञ्जिष्ठा सह सर्पिषा ।
उत्सादनं भवेदेतत्सैन्धवक्षौद्रसंयुतम् ॥ ५ ॥
रसाञ्जनं हरिद्रे द्वे मञ्जिष्ठानिम्बपल्लवाः ।
त्रिवृत्तेजोवतीदन्तीकल्को नाडीव्रणापहः ॥ ६ ॥
कुष्ठं त्रिवृत्तिलादन्तीमागध्यः सैन्धवं मधु ।
रजनीत्रिफलातुत्थं हितं व्रणविशोधनम् ॥ ७ ॥
स्नुह्यर्कदुग्धदार्वीभिर्वर्तिं कृत्वा विचक्षणः ।
भगन्दरगतिं ज्ञात्वा पूरयेत्तां प्रयत्नतः ॥ ८ ॥
एषा सर्वशरीरस्थां नाडीं हन्यान्न संशयः ॥ ९॥
तिलाभयालोध्रमरिष्टपत्रं
निशावचालोध्रमगारधूमः ।
भगन्दरे नाड्युपदंशयोश्च
दुष्टव्रणे शोधनरोपणोऽयम् ॥ १० ॥

(१ भगंदरे सामान्योपायाः) गुदाका शोजाकों जान शोषितकर पीछे शोधै । जैसे पकै नहीं तैसे रक्तकों निकासै । वडके पत्ते ईंट सोंठ गिलोय सांठी इन्होंकों अच्छीतरह

पीस पीडकाओंके आरंभमें भगंदरविषै लेप करना हित है। नहीं पकीहुई पीडकाओंका लंघनपूर्वक और जुलाबपर्यंत कर्म करना। अब भिन्नोंकी क्रिया कहेंगे। एषणी पाटन खार अग्नि और दाहआदि क्रमकर दोषके अनुसार और क्रमके अनुसार घावकी तरह करना। निशोत तिल इंद्रायण मजीठ सेंधानमक घृत शहद इन्होंसें उत्सादन करना। रसोत हलदी दारुहलदी मंजीठ नींबके पत्ते निशोत तेजोवंती जमालगोटाकी जड इन्होंका कल्क नाडीव्रणकों नाशताहै। कूट निशोत तिल जमालगोटाकी जड पीपल सेंधानमक शहद हलदी त्रिफला नीलाथोथा इन्होंका कल्क घावके शोधनेमें हित है। थोहरका दूध आकका दूध दारुहलदी इन्होंकी वैद्य बत्ती बनाय भगंदरकी गति जानकर उस बत्तीकों जतनसें पूरित करै। यह संपूर्णशरीरमें स्थितहुई नाडीकों नाशतीहै। संशय नहीं। तिल हरडै लोध नींबके पत्ते हलदी वच लोध घरका धूमा इन्होंका कल्क भगंदर नाडीरोग उपदंश दुष्टघाव इन्होंमें शोधन और रोपण है।

(२) खरास्रपक्वभूरोगचूर्णलेपो भगन्दरम्।
हन्ति दन्त्यग्न्यतिविषालेपस्तद्वच्छुनोऽस्थि वा११
त्रिफलारससंयुक्तं बिडालास्थिप्रलेपनम्।
भगन्दरं निहन्त्याशु दुष्टव्रणहरं परम्॥ १२॥
त्रिफलापुरकृष्णानां त्रिपञ्चैकांशयोजिता।
गुडिका शोथगुल्मार्शोभगन्दरवतां हिता॥ १३॥

(**२ नवकार्षिको गुग्गुलुः**) गधाके रक्तमें पकायाहुआ अर्जुनवृक्षका चूर्णका लेप तथा जमालगोटाकी जड चीता अतीश इन्होंका लेप अथवा कुत्ताकी हड्डीका लेप भगंदरकों नाशताहै। त्रिफलाके रसमें बिलावकी हड्डीकों पीस किया लेप भगंदरकों और दुष्टघावकों शीघ्र नाशताहै। त्रिफला ३ भाग गूगल ५ भाग पीपल १ भाग इन्होंकी गोली शोजा गुल्म ववासीर भगंदर इनवालोंकों हित है।

(३) त्रिकटुत्रिफलामुस्तविडङ्गामृतचित्रकम्।
शठ्येलापिप्पलीमूलं हपुषा सुरदारु च॥ १४॥
तुम्बुरु पुष्करं चव्यं विशाला रजनीद्वयम्।
बिडं सौवर्चलं क्षारौ सैन्धवं गजपिप्पली॥१५॥
यावन्त्येतानि चूर्णानि तावद्द्विगुणगुग्गुलुः।
कोलप्रमाणां गुडिकां भक्षयेन्मधुना सह॥ १६॥
कासश्वासं तथा शोथमर्शांसि सभगन्दरम्।
हृच्छूलं पार्श्वशूलं च कुक्षिबस्तिगुदे रुजम्॥१७॥
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च अन्त्रवृद्धिं तथा क्रिमीन्।
चिरज्वरोपसृष्टानां क्षयोपहतचेतसाम्॥ १८॥
आनाहं च तथोन्मादं कुष्ठानि चोदराणि च।
नाडीदुष्टव्रणान्सर्वान्प्रमेहं श्लीपदं तथा।
सप्तविंशतिको ह्येष सर्वरोगनिषूदनः॥ १९॥

(**३ सप्तविंशतिको गुग्गुलुः**) सोंठ मिरच पीपल त्रिफला नागरमोथा वायविडंग तगर चीता कचूर इलायची पीपलामूल देवदार धनियां पोहकरमूल चव्य इंद्रायण हलदी दारुहलदी मनयारीनमक कालानमक जवाखार साजीखार सेंधानमक गजपीपल इन्होंका जितना चूर्ण हो उस्सें दुगुना गूगल ले बेरके प्रमाण गोली बनाय शहदके संग खावै। खांसी श्वास शोजा ववासीर भगंदर हृच्छूल पसलीशूल कुक्षिशूल बस्तिशूल गुदाशूल पथरी मूत्रकृच्छ्र अंत्रवृद्धि कृमिरोग पुरानाज्वर क्षयरोग अफारा उन्माद कुष्ठरोग उदररोग नाडीव्रण दुष्टव्रण प्रमेह श्लीपद इन्होंकों और सब रोगोंकों सप्तविंशतिकगूगल नाशताहै।

(४) जम्बूकस्य च मांसानि भक्षयेद्व्यञ्जनादिभिः।
अजीर्णवर्जी मासेन मुच्यते ना भगन्दरात्॥२०॥
पञ्चतिक्तं घृतं शस्तं पञ्चतिक्तश्च गुग्गुलुः।
न्यग्रोधादिगणो यस्तु हितः शोधनरोपणः॥२१॥
तैलं घृतं वा तत्पक्वं भगन्दरविनाशनम्।
चित्रकार्कौ त्रिवृत्पाठे मलपूहयमारकौ॥ २२॥
सुधां वचां लाङ्गलिकीं हरितालं सुवर्चिकाम्।
ज्योतिष्मतीं च संयोज्य तैलं धीरो विपाचयेत्॥
एतद्विष्यन्दनं नाम तैलं दद्याद्भगन्दरे।
शोधनं रोपणं चैव सवर्णकरणं तथा॥ २४॥

(**४ विष्यंदनं तैलम्**) गीदडके मांसकों व्यंजनादिके सह एकमहीनातक भोजन करै और अजीर्णसें वर्जित रहै तो भगंदरका नाश होताहै। पंचतिक्तघृत गूगल न्यग्रोधादिगण ये हित है और शोधन रोपण करताहै। घृत अथवा तेल पकाके वर्तै तो भगंदरका नाश होताहै। चीता आक निशोत पाठा कालागूलर कनेर थोहर वच कलहारी हरताल साजी मालकांगनी इन्होंके कल्कमें वैद्य पकावै। यह विष्यंदन नामवाला तेल भगंदरमें देना। शोधन और रोपण है और समानवर्णकों करताहै।

(५) करवीरनिशादन्तीलाङ्गलीलवणाग्निभिः ।
मातुलुङ्गार्कवत्साह्वैः पचेत्तैलं भगन्दरे ॥ २५ ॥

(५ करवीराद्यं तैलम्) कनेर हलदी जमालगोटाकी जड कलहारी नमक चीता विजोरा आक और कूडाकी साल इन्होंके संग तेलकों पकाय भगंदरमें देवै तो भगंदर जाय ।

(६) निशार्कक्षीरसिन्धवग्निपुराश्वहनवत्सकः ।
सिद्धमभ्यञ्जने तैलं भगन्दरविनाशनम् ॥ २६ ॥
व्यामामं मैथुनं युद्धं पृष्ठयानं गुरूणि च ।
संवत्सरं परिहरेदुपरूढव्रणो नरः ॥ २७ ॥
इति भगन्दरचिकित्सा ।

(६ निशाद्यं तैलम्) हलदी आकका दूध सेंधानमक चीता गूगल कनेर कूडा इन्होंमें सिद्ध किया तेलका मालिस भगंदरकों नाशता है । कसरत मैथुन युद्ध पीठकी सवारीपर चढना भारापदार्थ इन्होंकों एक वर्षतक उपरूढवर्णवाला मनुष्य त्यागै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां भगंदरचिकित्सा ।

अथोपदंशाधिकारः ४६

अब उपदंश अर्थात् आतशक रोगका अधिकार लिखते है ।

(१) स्निग्धस्विन्नशरीरस्य ध्वजमध्ये शिराव्यधः ।
जलौकःपातनं वा स्यादूर्ध्वाधः शोधनं तथा ।
पाको रक्ष्यः प्रयत्नेन शिश्नक्षयकरो हि सः ॥१॥
पटोलनिम्बत्रिफलागुडूची-
क्वाथं पिबेद्वा खदिराशनाभ्याम् ।
सगुग्गुलुं वा त्रिफलायुतं वा
सर्वोपदंशापहरः प्रयोगः ॥ २ ॥

(१ उपदंशप्रयोगत्रयम्) स्निग्ध और स्विन्न शरीरवालाका लिंगके मध्यमें सिराकों वींधै अथवा जोक लगवावै तथा वमन और जुलाबसें शोधन करावै । जतनसें पाककी रक्षा करनी चाहिये क्योंकि लिंगका क्षय करनेवाला पाक होताहै । परवल नींब त्रिफला गिलोय इन्होंका क्वाथकों अथवा खैर और आसना गूगल त्रिफला इन्होंके क्वाथकों पीवै यह प्रयोग सब प्रकारके उपदंशोंकों नाशताहै ।

(२) प्रपौण्डरीकं मधुकं रास्ना कुष्ठं पुनर्नवा ।
शरलागुरुभद्राह्वैर्वातिके लेपसेचने ॥ ३ ॥
गैरिकाञ्जनमञ्जिष्ठामधुकोशीरपद्मकैः ।
सचन्दनोत्पलैः स्निग्धैः पैत्तिकं संप्रलेपयेत् ॥४॥
निम्बार्जुनाश्वत्थकदम्बशाल-
जम्बूवटोदुम्बरवेतसेषु ।
प्रक्षालनालेपघृतानि कुर्या-
च्चूर्णानि पित्तास्रभवोपदंशे ॥ ५ ॥
त्रिफलायाः कषायेण भृङ्गराजरसेन वा ।
व्रणप्रक्षालनं कुर्यादुपदंशप्रशान्तये ॥ ६ ॥
दहेत्कटाहे त्रिफलां समांशां मधुसंयुताम् ।
उपदंशे प्रलेपोऽयं सद्यो रोपयति व्रणम् ॥ ७ ॥
रसाञ्जनं शिरीषेण पथ्यया वा समन्वितम् ।
सक्षौद्रं वा प्रलेपेन सर्वलिङ्गगदापहम् ॥ ८ ॥
बब्बोलदलचूर्णेन दाडिमत्वग्भवेन वा ।
गुण्डनं त्वस्थिचूर्णेन उपदंशहरं परम् ॥ ९ ॥
लेपः पूगफलेनाश्वमारमूलेन वा तथा ।
सेवेन्नित्यं यवान्नं च पानीयं कौपमेव च ॥१०॥
जयाजात्यश्वमारार्कसम्पाकानां दलैः पृथक् ।
कृतं प्रक्षालने क्वाथं मेढ्रपाके प्रयोजयेत् ॥ ११ ॥

(२ उपदंशे सामान्योपायाः) कमल मुलहटी रास्ना कूट सांठी सरलवृक्ष अगर भद्रमोथा इन्होंका लेप और सेक वातके उपदंशमें हित है । गेरू सुरमा मजीठ मुलहटी खस कमल चंदन सुपेदकमल इन्होंकों स्निग्ध बनाय पित्तका उपदंशपर लेप करै । नींब अर्जुनवृक्ष सोना पीपलवृक्ष कदंब शालवृक्ष जामन वड गूलर वेत इन्होंके चूर्णोंसें पित्तरक्तके उपदंशमें प्रक्षालन लेप इन्होंमें सिद्ध किया घृत यह सबमें हित है । त्रिफलाके क्वाथकरकै अथवा भंगराके रसकरकै घावकों धोवै तो उपदंशकी शांति होतीहै । हरडै बहेडा आंवला बराबर भाग ले कडाहीमें घाल दग्ध करै शहदमें मिलाय उपदंशमें किया यह लेप घावकों तत्काल रोपित करताहै । रसोतकों शिरसमें अथवा हरडैमें मिलाय अथवा शहदमें मिलाय किया लेप सब प्रकारके लिंगरोगोंकों नाशताहै । बब्बूलके पत्तोंका चूर्ण करकै अथवा अनारकी छालके चूर्णकरकै अथवा हड्डियोंके चूर्णकरके

किया गुंदन उपदंशकों हरताहै । सुपारीकरके अथवा कनेरकी जडकरके लेप करै। जवोंके अन्नकों और कुआके पानीकों सेवै । अरनी और चमेली कनेर आक अमलतास इन्होंके पत्तोंसें क्वाथ बनाय लिंगके पाकमें धोवनेके द्वारा प्रयुक्त करै ।

(३) भूनिम्बनिम्बत्रिफलापटोल-
करञ्जजातीखदिराशनानाम् ।
सतोयकल्कैर्घृतमाशु पक्वं
सर्वोपदंशापहरं प्रदिष्टम् ॥ १२ ॥

(३ भूनिंबाद्यं घृतम्) चिरायता नींब त्रिफला परवल करंजुआ चमेली खैर आस्ना इन्होंके क्वाथ और कल्कमें सिद्ध किया घृत सब प्रकारके उपदंशोंकों नाशताहै।

(४) करञ्जनिम्बार्जुनशालजम्बू-
वटादिभिः कल्ककषायसिद्धम् ।
सर्पिर्निहन्यादुपदंशदोषं
सदाहपाकं स्रुतिरागयुक्तम् ॥ १३ ॥

(४ करंजाद्यं घृतम्) करंजुआ नींब अर्जुनवृक्ष शाल जामनवड इन्होंके कल्क और क्वाथमें सिद्ध किया घृत दाहपाकसहित और स्राव तथा रोगसहित ऐसे उपदंशरोगकों नाशताहै ।

(५) अगारधूमरजनीसुराकिट्टं च तैस्त्रिभिः ।
भागोत्तरैः पचेत्तैलं कण्डूशोथरुजापहम् ।
शोधनं रोपणं चैव सवर्णकरणं तथा ॥ १४ ॥
अर्शसां छिन्नदग्धानां क्रिया कार्योपदंशवत्॥१५॥

इत्युपदंशचिकित्सा ।

(५ अगारधूमाद्यं तैलम्) घरका धूमा १ भाग हलदी २ भाग मदिराका मैल ३ भाग इन्होंमें तेलकों पकावै । यह खाज शोजा शूलकों नाशताहै शोधन है रोपण है खालके समान वर्णकों करताहै छिन्न और दग्ध करे ववासीरोंकी उपदंशकी तरह क्रिया करनी ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां उपदंशचिकित्सा ।

अथ शूकदोषाधिकारः ४७

अब शूकदोषका अधिकार कहतेहै ।

(१) हितं च सर्पिषः पानं पथ्यं चापि विरेचनम् ।
हितः शोणितमोक्षश्च यच्चापि लघुभोजनम् ॥१॥
सर्षपीं लिखितां सूक्ष्मैः कषायैरवचूर्णयेत् ।
तैरेवाभ्यञ्जनं तैलं साधयेद्व्रणरोपणम् ॥ २ ॥
क्रियेयमधिमन्थेऽपि रक्तं स्राव्यं तथोभयोः ।
अष्ठीलायां हृते रक्ते श्लेष्मग्रन्थिवदाचरेत् ॥ ३ ॥
कुम्भिकायां हरेद्रक्तं पक्वायां शोधिते व्रणे ।
तिन्दुकत्रिफलालोध्रैर्लेपस्तैलं च रोपणम् ॥ ४ ॥
अलज्यां हृतरक्तायामयमेव क्रियाक्रमः ।
स्वेदयेद्ग्रथितं स्निग्धं नाडीस्वेदेन बुद्धिमान् ॥५॥
सुखोष्णैरुपनाहैश्च सस्निग्धैरुपनाहयेत् ।
उत्तमाख्यां तु पिडकां संच्छिद्य बडिशोद्धृताम्॥६॥
कल्कैश्चूर्णैः कषायाणां क्षौद्रयुक्तैरुपाचरेत् ।
क्रमः पित्तविसर्पोक्तः पुष्करीमूढयोर्हितः ॥ ७ ॥
त्वक्पाके स्पर्शहान्यां च सेचयेन्मृदितं पुनः ।
बलातैलेन कोष्णेन मधुरैश्चोपनाहयेत् ॥ ८ ॥
रसक्रिया विधातव्या लिखिते शतपोलके ।
पृथक्पर्ण्यादिसिद्धं च तैलं देयमनन्तरम् ॥ ९ ॥
पित्तविद्रधिवच्चापि क्रिया शोणितजेऽर्बुदे ।
कषायकल्कसर्पींषि तैलं चूर्णं रसक्रियाम्॥१०॥
शोधने रोपणे चैव वीक्ष्य वीक्ष्यावतारयेत् ।
अर्बुदं मांसपाकं च विद्रधिं तिलकालकम् ।
प्रत्याख्याय प्रकुर्वीत भिषक्तेषां प्रतिक्रियाम्११

इति शूकदोषचिकित्सा ।

(१ शूकदोषे सामान्योपायाः) घृतका पीना हित है विरेचन पथ्य है फस्तका खोलना और हलका भोजन हित है । सर्षपीको लिखितकर सूक्ष्मरूप क्वाथोंसें अवचूर्णित करै और उन्ही क्वाथोंमें सिद्ध किया तेलसें मालिस करै तो घावपर अंकुर आताहै । यही क्रिया अधिमंथमेंभी करनी और इन दोनोंमें रक्त निकासना अष्ठीलामें रक्त निकासे पीछे कफकी ग्रंथिकी तरह चिकित्सा करै । कुंभिकामें रक्तकों निकासै। पकीहुई कुंभिकामें घावकों शोधित कर कुचला त्रिफला लोध इन्होंका लेप और इन्होंके तेलकी मालिस घावपर अंकुर लातीहै । अलजीमें रक्त निकासनेके पीछे यही क्रियाक्रम करना। ग्रथितकों स्निग्ध कर बुद्धिमान् नाडीस्वेदसें स्वेदित करै। सुखपूर्वक गरम और अच्छीतरह स्निग्ध ऐसे उपनाहोंसें उपनाहित करै । उत्तमापिडकाकों अच्छीतरह छेदित कर

बडिशसें उद्धृतकर क्काथोंके कल्क और चूर्णोंमें शहद डाल उपचार करै। पित्तके विसर्पमें कहाक्रम पुष्करी औ मूढामेंभी हित है। त्वक्पाक और स्पर्शहानि और मृदित इन्होंकों वारंवार सेचित करै। कछुक गरम किया बलातेल और मधुर पदार्थोंसें उपनाह करै। शतपोनकमें लिखितकर रसक्रिया करनी उचित है। पीछे पृथक्प-र्ण्यादिगणमें सिद्ध किया तेल देना रक्तक अर्बुदमें रक्तकी विद्रधिके तरह क्रिया करनी। क्काथ कल्क घृत तेल चूर्ण रसक्रिया इन्होंकों देखकर शोधनेमें और अंकुर लानेमें देवै। अर्बुद मांसपाक विद्रधि तिलकालक इन्होंका त्याग कर वैद्य अन्य शूकरोगोंकी चिकित्सा करै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररवि-दत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां शूकदोषचिकित्सा।

अथ भग्नाधिकारः ४८

अब भग्नरोगका अधिकार कहते है।

(१)आदौ भग्नं विदित्वा तु सेचयेच्छीतलाम्बुना।
पङ्केनालेपनं कार्यं बन्धनं च कुशान्वितम्।
सुश्रुतोक्तं च भग्नेषु वीक्ष्य बन्धादिमाचरेत् ॥१॥
अवनामितमुन्नह्येदुन्नतं चावनामयेत्।
आञ्छेदतिक्षिप्तमधोगतं चोपरि वर्तयेत् ॥ २ ॥
आलेपनार्थं मञ्जिष्ठामधुकं चाम्लपेपितम्।
शतधौतघृतोन्मिश्रं शालिपिष्टं च लेपनम् ॥३॥
सप्तरात्रात्सप्तरात्रात्सौम्येष्वृतुषु मोक्षणम्।
कर्तव्यं स्यात्त्रिरात्राच्च तथाग्नेयेषु जानता ॥ ४ ॥
काले च सामशीतोष्णे पञ्चरात्राद्विमोक्षयेत्।
न्यग्रोधादिकषायं च सशीतं परिषेचने ॥ ५ ॥
पञ्चमूलीविपक्वं तु क्षीरं दद्यात्सवेदने।
सुखोष्णमवतार्य वा चक्रतैलं विजानता ॥ ६ ॥
मांसं मांसरसः सर्पिः क्षीरं यूषः सतीलजः।
बृंहणं चान्नपानं च देयं भग्नं विजानता ॥ ७ ॥
गृष्टिक्षीरं ससर्पिष्कं मधुरौषधसाधितम्।
शीतलं द्राक्षया युक्तं प्रातर्भग्नः पिबेन्नरः ॥ ८ ॥
सघृतेनास्थिसंहारं लाक्षागोधूममर्जुनम्।
सन्धियुक्तेऽस्थिभग्ने च पिबेत्क्षीरेण मानवः ॥९॥
रसोनमधुलाक्षाज्यसिताकल्कं समश्नताम्।
छिन्नभिन्नच्युतास्थीनां संधानमचिराद्भवेत् १०
पीतवराटिकाचूर्णं द्विगुञ्जं वा त्रिगुञ्जकम्।
अपक्वक्षीरपीतं स्यादस्थिभग्नप्ररोहणम् ॥ ११ ॥

(१ भग्ने सामान्योपायाः) आदिमें भग्न अर्थात् टूटीहुई हड्डीकों जान शीतलपानीसें सींचै गारासें लेप करै और कुशासें बंध देवै। भग्नोंविषै सुश्रुतोक्तकों देख बंध-आदिका आचरण करै। नीचीहुई हड्डीकों उंची करै और उंचीकों नीची करै। उंचीहुई हड्डीकों विस्तृत करै और नीचाकों प्राप्तहुई हड्डीकों ऊपर करै। आलेपके अर्थ मं-जीठ और महुवाकों खट्टारसमें पीस तीनसोवार धोया-घृतमें मिलाय और शालीचावलोंकी पीठी इन्होंसें लेप करै। सौम्यऋतुओंमें सात सात रात्रिसें खोल्है। और गरमीकी ऋतुवोंमें जाननेवाला वैद्य तीन तीन रात्रिमें खोल्है और जिसमें समान शीत उष्ण हो ऐसी ऋतुमें पांच रात्रिसें खोल्है। और परिसेकमें न्यग्रोधादिक्काथकों शीतल बनाय देवै अथवा पंचमूलमें पकाया दूध पीडावाले भग्नरोगमें देवै। अथवा जाननेवाले वैद्यनें सुखपूर्वक गरमरूप चक्र-तेल देना। मांसका रस घृत दूध मटरका यूष पुष्टकरनेवाला अन्न और पान कुशलवैद्यनें भग्नरोगमें देना। खारकी व्या-ईहुई गायका दूधकों घृत और मधुर ओषधोंसें सिद्धकर शीतल बनाय दाखोंसें युक्तकर प्रभातमें भग्नरोगी पीवै और कांडवेलकों घृतके संग पीवै। लाख गेहूं अर्जुनवृक्ष इन्होंके चूर्णकों मनुष्य संधियुक्त हड्डीके टूटनेमें पीवै। ल्हसन शहद लाख घृत मिसरी इन्होंके कल्ककों खानेसें छिन्न-भिन्न और अलग हुई हड्डीवालोंकी हड्डी शीघ्र जुडजातीहै। पीली कौडीका चूर्ण दोरत्ति अथवा तीनरत्तिभर लेय क-चादूधके संग पीयाजावे तो टूटी हड्डी जुडजातीहै।

(२) क्षीरं सलाक्षामधुकं ससर्पिः
स्याज्जीवनीयं च सुखावहं च।
भग्नः पिबेत्त्वक्पयसार्जुनस्य
गोधूमचूर्णं सघृतेन वाथ ॥ १२ ॥
लाक्षास्थिसंहृत्ककुभाश्वगन्धा-
श्चूर्णीकृता नागबलापुरश्च।
संभग्नयुक्तास्थिरुजं निहन्या-
दङ्गानि कुर्यात्कुलिशोपमानि ॥ १३ ॥
अत्रान्यतोऽपि दृष्टत्वात्तुल्यश्चूर्णेन गुग्गुलुः॥१४॥

(२ लाक्षागुग्गुलुः) दूध लाख मुलहटी घृत जी-वनीयगणके ओषध इन्होंकों पीवै अथवा अर्जुनवृक्षकी

छालिकों दूधके संग पीवै अथवा घृतसहित दूधके संग गेहूंके चूर्णकों खावै तो भग्नमें हित होताहै । लाख कांडवेल अर्जुनवृक्ष आसगंध बडी खरैंहटी गूगल इन्होंका चूर्ण बनाय खावै तो हड्डीका टूटनासहित हड्डीकी पीडाका नाश होताहै और शरीरके सब अंग वज्रके समान हो जातेहैं । अन्यजगह देखनेसें यहांभी सब ओषधोंके समान गूगल लेना ।

(३) आभाफलत्रिकैर्व्योषैः सर्वैरेभिः समीकृतैः ।
तुल्यो गुग्गुलुरायोज्यो भग्नसन्धिप्रसाधकः ॥ १५॥

(३ आभागुग्गुलुः) बडी शतावरी त्रिफला सोंठ मिरच पीपल ये सब समान भाग ले और इन सबोंके बराबर गूगल ले चूर्ण करै यह भग्नकी संधिकों साधताहै ।

(४) सव्रणस्य तु भग्नस्य व्रणं सर्पिर्मधूत्तमैः ।
प्रतिसार्य कषायैश्च शेषं भग्नवदाचरेत् ॥ १६ ॥
भग्नं नैति यथा पाकं प्रयतेत तथा भिषक् ।
वातव्याधिविनिर्दिष्टान्स्नेहानत्र प्रयोजयेत् ॥ १७॥
रात्रौ रात्रौ तिलान्कृष्णान्वासयेदस्थिरे जले ।
दिवादिवैवं संशोष्य क्षीरेण परिभावयेत् ॥ १८॥
तृतीयं सप्तरात्रं च भावयेन्मधुकाम्बुना ।
ततः क्षीरं पुनः पीतान्सुशुष्कांश्चूर्णयेद्भिषक् १९॥
काकोल्यादिश्वदंष्ट्रां च मञ्जिष्ठां शारिवां तथा ।
कुष्ठं सर्जरसं मांसीं सुरदारु सचन्दनम् ॥ २०॥
शतपुष्पां च संचूर्ण्य तिलचूर्णेन योजयेत् ।
पीडनार्थं च कर्तव्यं सर्वगन्धैः शृतं पयः ॥२१॥
चतुर्गुणेन पयसा तत्तैलं विपचेत्पुनः ।
एलामंशुमतीं पत्रं जीरकं तगरं तथा ॥ २२ ॥
लोध्रं प्रपौण्डरीकं च तथा कालानुशारिवाम् ।
शैलेयकं क्षीरशुक्लामनन्तां समधूलिकाम् ॥२३ ॥
पिष्ट्वा शृङ्गाटकं चैव प्रागुक्तान्यौषधानि च ।
एभिस्तद्विपचेत्तैलं शास्त्रविन्मृदुनाग्निना ॥ २४ ॥
एतत्तैलं सदा पथ्यं भग्नानां सर्वकर्मसु ।
आक्षेपके पक्षाघाते चाङ्गशोषे तथार्दिते ॥ २५॥
मन्यास्तम्भे शिरोरोगे कर्णशूले हनुग्रहे ।
बाधिर्ये तिमिरे चैव ये च स्त्रीषु क्षयं गताः॥२६॥
पथ्यं पाने तथाभ्यङ्गे नस्ये वस्तिषु योजयेत् ।
ग्रीवास्कन्धोरसां वृद्धिरनेनैवोपजायते ॥ २७ ॥
मुखं च पद्मप्रतिमं स्वस्वगन्धिसमीरणम् ।
गन्धतैलमिदं नाम्ना सर्ववातविकारनुत् ॥ २८ ॥
राजार्हमेतत्कर्तव्यं राज्ञामेव विचक्षणैः ।
तिलचूर्णचतुर्थांशं मिलितं चूर्णमिष्यते ॥ २९ ॥
लवणं कटुकं क्षारमम्लं मैथुनमातपम् ।
व्यायामं च न सेवेत भग्नो रूक्षान्नमेव च ॥३०॥

इति भग्नचिकित्सा ।

(४ गंधतैलम्) घावसहित भग्नके घावकों घृत शहद त्रिफला इन्होंके क्काथसें प्रतिसारित कर शेषकों भग्नकी तरह आचरित करै । जैसे भग्न पकै नहीं तैसे वैद्य जतन करै । वातव्याधिमें कहे स्नेहोंकों यहां प्रयुक्त करै । रात्रिरात्रिमें वहताहुआ पानीमें काले तिलोंकों वासित करै और दिनदिनमें सुखाकै दूधसें भावितकरै । तीसरा सप्तरात्रमें मुलहटीके क्काथसें भावितकरै पीछे दूधकों पीनेवाले तिलोंकों सुखाकै वैद्य चूर्ण करै । काकोल्यादिगण गोखरू मंजीठ शारिवा कूट राल वालछड देवदार चंदन सौंफ इन्होंका चूर्ण कर तिलोंके चूर्णसें युतकरै और पीडनके अर्थ सब गंधद्रव्योंसें पकाया दूध बनावै । उस चौगुने दूधसें तिलतेलकों फिर पकावै । इलायची पिठवन तेजपात जीरा तगर लोध कमल ऊद लोवान क्षीरकाकोली धमासा मुलहटी । सिंगाडा और पूर्वोक्त सब ओषध इन्होंकों पीस इन्होंके कल्कसें शास्त्रवेत्ता तेलकों कोमल अग्निकरकै पचावै । यह तेल भग्नवालोंके सब कर्मोंमें सदा पथ्य है । आक्षेपक पक्षाघात अंगशोष लकुवा मन्यास्तंभ शिरका रोग कर्णशूल हनुग्रह बाधिर्यवात तिमिररोग स्त्रियोंके भोगसें क्षय इन रोगोंमें पीना । मालिस नस्य और बस्तिके द्वारा प्रयुक्त करना । इसी करकै ग्रीवा कंधा छाती इन्होंकी वृद्धि होतीहै । कमलके समान मुख होताहै अपना अपना गंधवाला होताहै । यह गंधतेल नामसें है सब वातके विकारोंकों नाशताहै । राजाके योग्य यह तेल राजाओंकेवास्ते वैद्योंनें करना । तिलोंका चूर्ण चौथाईभाग मिलाकै चूर्ण वांछित है । नमक कटुक खार खट्टा स्त्रीभोग घाम कसरत और रुखाअन्न इन्होंकों भग्नरोगी नहीं सेवै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां भग्नरोगचिकित्सा ।

अथ कुष्ठाधिकारः ४९

अब कुष्ठरोगका अधिकार कहते है ।

(१) वातोत्तरेषु सर्पिर्वमनं श्लेष्मोत्तरेषु कुष्ठेषु । पित्तोत्तरेषु मोक्षो रक्तस्य विरेचनं चाग्र्यम् ॥१॥ प्रोञ्छनमल्पे कुष्ठे महति च शस्तं शिराव्यधनम्। बहुदोषः संशोध्यः कुष्ठी बहुशोऽनुरक्षता प्राणान् वचावासापटोलानां निम्बस्य फलिनीत्वचः । कषायो मधुना पीतो वान्तिकृन्मदनान्वितः ॥३॥

(१ कुष्ठे पंचकषायाः) वातकी अधिकतावाले कुष्ठोंमें घृत और कफकी अधिकतावाले कुष्ठोंमें वमन पित्तकी अधिकतावाले कुष्ठोंमें रक्तका निकासना और जुलाब श्रेष्ठ है । अल्प कुष्ठमें पछनासें रक्त निकासना और महाकुष्ठमें शिराका वींधना श्रेष्ठ है। बहुत प्रकारसें प्राणोंकी रक्षा करनेवालानें बहुत दोषोंवाला कुष्ठी संशोधित करना। वच वांसा परवल नींब त्रायमाण इन्होंकी छालका क्राथ बनाय शहद और मैनफलसें युत कर पीया जावै तो छर्दिकों हरताहै ।

(२) विरेचनं तु कर्तव्यं त्रिवृद्दन्तीफलत्रिकैः ४

ये लेपाः कुष्ठानां
प्रयुज्यन्ते निर्गतास्रदोषाणाम् ।
संशोधिताशयानां
सद्यः सिद्धिर्भवति तेषाम् ॥ ५ ॥
मनःशिलाले मरिचानि तैल-
मार्कं पयः कुष्ठहरः प्रदेहः ।
करञ्जबीजैडगजः सकुष्ठो
गोमूत्रपिष्टश्च वरः प्रदेहः ॥ ६ ॥
पत्राणि पिष्ट्वा चतुरङ्गुलस्य
तक्रेण पर्णान्यथ काकमाच्याः ।
तैलाक्तगात्रस्य नरस्य कुष्ठा-
न्युद्वर्तयेदश्वहनच्छदैश्च ॥ ७ ॥
आरग्वधः सैडगजः करञ्जो
वासा गुडूची मदनं हरिद्रे ।
श्याह्वः सुराह्वः खदिरो धवश्च
निम्बो विडङ्गं करवीरकश्च ॥ ८ ॥
ग्रन्थिश्च भौर्जो लशुनः शिरीषः
सलोमशो गुग्गुलुकृष्णगन्धे ।
फणिज्झको वत्सकसप्तपर्णी-
पीलूनि कुष्ठं सुमनःप्रवालः ॥ ९ ॥
वचाहरेणुत्रिवृतानि कुम्भी
भल्लातकं गैरिकमञ्जनं च ।
मनःशिलाले गृहधूम एला-
कासीसलोध्रार्जुनमुस्तसर्जाः ॥ १० ॥
इत्यर्धरूपैर्विहिताः षडेते
गोपित्तपीताः पुनरेव पिष्टाः ।
सिद्धाः परं सर्षपतैलयुक्ता-
श्चूर्णप्रदेहा भिषजा प्रयोज्याः ॥ ११ ॥
कुष्ठानि कृच्छ्राणि नवं किलासं
सुरेन्द्रलुप्तं किटिभं सदद्रुम् ।
भगन्दरार्शांस्यपचीं सपामां
हन्युः प्रयुक्ता अचिरान्नराणाम् ॥ १२ ॥

(२ कुष्ठे विरेचनादि) निशोत जमालगोटाकी जड त्रिफला इन्होंकरकै जुलाब कराना । निकासा गयाहै रक्तदोष जिन्होंका और संशोधित किया है आशय जिन्होंका ऐसे कुष्ठोंपर जो लेप प्रयुक्त किये जाते हैं उन्होंसें शीघ्र सिद्धि होतीहै । मनशिल हरताल मिरच तेल आकका दूध इन्होंका लेप कुष्ठकों हरताहै। करंजुवाके बीज पुवाडके बीज कूट इन्होंकों गोमूत्रमें पीस किया लेप कुष्ठमें उत्तम लेप है । अमलतासके पत्तोंकों तक्रसें पीस तथा काकमाची मकोहविशेषके पत्तोंकों पीस तथा कनेरके पत्तोंसें तेलकरकै भिगोया शरीरवाला मनुष्यकै कुष्ठोंकों उद्वर्तन करै । अमलताश पुवाड करंजुवा वांसा गिलोय मैनफल हलदी दारुहलदी बेलफल देवदार खैर धायके फूल नींब वायविडंग कनेर पीपलामूल भोजपत्र ल्हसन शिरस नीला वर्णवाला हीराकसीस गूगल सहोंजना श्वेतमरवा कूडा सातला पीलू कूट चमेलीकी कोंपल वच रेणुक निशोत जमालगोटाकी जड भिलावा गेरू सुरमा मनशिल हरताल घरका धूमा इलायची कशीस लोध अर्जुनवृक्ष नागरमोथा राल । ऐसे अर्ध अर्ध श्लोकोंकरकै कहे छह चूर्ण हैं । गायके पित्तसें युत करकै वारंवार पिष्टकिये फिर सरसोंका तेलसें युत किये जावैं ऐसे चूर्ण और लेप वैद्यनें प्रयुक्त करने । कष्टसाध्य कुष्ठ नवीन किलास इंद्रलुप्त किटिभकुष्ठ दद्रूकुष्ठ भगंदर ववासीर अपची पाम इन्होंमें मनुष्योंकों प्रयुक्त किये वे शीघ्र नाशतेहैं ।

(३) मनःशिलात्वक्कुटजात्सकुष्ठा-
त्सलोमशः सैडगजः करञ्जः ।
ग्रन्थिश्च भौर्जः करवीरमूलं
चूर्णानि साध्यानि तुषोदकेन ॥ १३ ॥
पलाशनिर्दाहरसेन वापि
कर्षोद्धृतान्याढकसंमितेन ।
दार्वीप्रलेपं प्रवदन्ति लेप-
मेतत्परं कुष्ठविनाशनाय ॥ १४ ॥
कुष्ठं हरिद्रे सरसं पटोलं
निम्बाश्वगन्धे सुरदारुशिग्रु ।
ससर्षपं तुम्बुरुधान्यवन्य-
चण्डाश्च दूर्वाश्च समानि कुर्यात् ॥ १५॥
तैस्तक्रयुक्तैः प्रथमं शरीरं
तैलाक्तमुद्वर्तयितुं यतेत ।
तथास्य कण्डूः पिडकाः सकोठाः
कुष्ठानि शोथाश्च शमं प्रयान्ति ॥ १६ ॥

(३ मनःशिलाद्यन्ये प्रदेहाः) मनशिल कूडाकी छाल कूटकी छाल नीलावर्ण हीराकशीस पुवाड करंजुवा पीपलामूल भोजपत्र कनेरकी जड इन्होंके चूर्ण एक एक तोलाभर ले जवोंकी कांजीकरकै अथवा केशू और मरोरफलीका आढक अर्थात् २५६ तोले परिमित रसकरकै लेवै। जब करछीपर चिपने लगै तब लेपकों कहतेहै यह कुष्ठको नाशनेमें उत्तम है । कूट हलदी दारुहलदी मोचरस नींब आसगंध देवदार सहोंजना सरसों तुंबरु धनियां वाराहीकंद शिवलिंगी दूव ये सब समान करने । इन्होंकों तक्रसें युत कर पीछे तेलसें शरीरकों भिगोय पीछे उवटना करनेको जतन करै तैसे करनेसें इस मनुष्यकै खाज पिडका कोठ कुष्ठ और शोजा ये सब शांत होतेहैं ।

(४) धात्र्यक्षपथ्याक्रिमिशत्रुवह्नि-
भल्लातकावल्गुजलोहभृङ्गैः ।
भागाभिवृद्धैस्तिलतैलमिश्रैः
सर्वाणि कुष्ठानि निहन्ति लेपः ॥ १७ ॥
विडङ्गसैन्धवशिवाशशिरेखासर्षपकरञ्जरजनीभिः
गोजलपिष्टो लेपः कुष्ठहरो दिवसनाथसमः॥१८
विडङ्गैडगजाकुष्ठनिशासिन्धूत्थसर्षपैः ।
धान्याम्लपिष्टैर्लेपोऽयं दद्रूकुष्ठरुजापहः ॥ १९ ॥

दूर्वाभयासैन्धवचक्रमर्द-
कुठेरकाः काञ्जिकतक्रपिष्टाः ।
त्रिभिः प्रलेपैरतिबद्धमूलं
दद्रुं च कुष्ठं च निवारयन्ति ॥ २० ॥
तुल्यो रसः सालतरोस्तुषेण
सचक्रमर्दोऽप्यभयाविमिश्रः ।
पानीयभक्तेन तदाम्बुपिष्टो
लेपः कृतो दद्रुगजेन्द्रसिंहः ॥ २१ ॥

(४ धात्र्यादिलेपाः) आंवला बहेडा हरडै वायविडंग चीता भिलावा बावची लोहा भंगरा इन्होंकों उत्तरोत्तर क्रमकरकै वृद्धिभागसें ले तिलोंकों तेल मिलाय इन्होंका लेप सब प्रकारके कुष्ठोंकों नाशता है । वायविडंग सेंधानमक हरडै बावची सरसों करंजुवा हलदी इन्होंकों गोमूत्रसे पीस किया लेप सूर्यके समान है कुष्ठकों हरताहै। वायविडंग पुवाडके बीज कूट हलदी सेंधानमक सरसों इन्होंको चावलोंकी कांजीसे पीस किया लेप दद्रुकुष्ठकी पीडाकों हरता है। दूव हरडै सेंधानमक पुवाडके बीज अजबला इन्होंकों कांजी और तक्रसें पीस तीनवार किया लेपसे अत्यंत बद्धजडवाला दद्रु और कुष्ठ नष्ट होताहै। सालवृक्षका रस तुष पुवाडके बीज हरडै इन्होंकों चावलोंके पानीसें पीस किया लेप दद्रुरूपी हस्तीके सन्मुख सिंहरूप है।

(५) प्रपुन्नाडस्य बीजानि धात्रीसर्जरसः स्नुही ।
सौवीरपिष्टं दद्रूणामेतदुद्वर्तनं परम् ॥ २२ ॥
चक्रमर्दकबीजानि करञ्जं च समांशकम् ।
स्तोकं सुदर्शनामूलं दद्रुकुष्ठविनाशनम् ॥ २३ ॥
लेपनाद्भक्षणाच्चैव तृणकं दद्रुनाशनम् ।
यूथीपुन्नागमूलं च लेपात्काञ्जिकपेषितम् ॥२४ ॥
कासमर्दकमूलं च सौवीरेण च पेषितम् ।
दद्रुकिटिभकुष्ठानि जयेदेतत्प्रलेपनात् ॥ २५ ॥
शिखरिरसेन सुपिष्टं मूलकबीजं प्रलेपतः सिध्मः
क्षारेण वा कदल्या रजनीमिश्रेण नाशयति॥२६॥
गन्धपाषाणचूर्णेन यवक्षारेण पेषितम् ।
सिध्मनाशं व्रजत्याशु कटुतैलयुतेन वा ॥ २७ ॥
कासमर्दकबीजानि मूलकानां तथैव च ।
गन्धपाषाणमिश्राणि सिध्मानां परमौषधम्॥२८ ॥

धात्रीरसः सर्जरसः सपाक्यः
सौवीरपिष्टश्च तथा युतश्च ।
भवन्ति सिध्मानि यथा न भूय-
स्तथैवमुद्वर्तनकं करोति ॥ २९ ॥

(५ प्रपुंनाडाद्युद्वर्तनम्) पुवाडके बीज आंवला राल थोहर इन्होंकों कांजीसे पीस किया उवटना दद्रुओंकों नाशताहै । पुवाडके बीज करंजुवा ये समान भाग और तांनी वेलकी जड कछुक इन्होंका लेप दद्रुकुष्ठकों नाशताहै । लेपनसे और भक्षणसे रोहिषतृण दद्रुकों नाशताहै । जूई और केशरकी जडकों कांजीसे पीस लेपकरनेसे और कासमर्दकी जडको कांजीसें पीस लेप करनेसें दद्रु और किटिभकुष्ठ नष्ट होतेहै । ऊंगाकी जडके रसकरकै अच्छीतरह पीसा हुआ मूलीका बीज लेपसे सिध्मकुष्ठकों नाशता है । अथवा हलदीसे मिश्रित किया केलाके खारसे किया लेप सिध्मकों नाशताहै । गंधपाषाणका चूर्ण और जवाखार अथवा कडुवा तेल इन्होंकों पीस किया लेप सिध्मके नाशकों शीघ्र करताहै । कासमर्दके बीजोंकों तथा मूलीके वीजोंकों गंधपाषाणसे मिश्रितकर किया लेप सिध्मरोगपर उत्तम ओषधहै । आंवलाका रस राल मनयारीनमक इन्होंकों कांजीसें पीस तथा युतकर किया उद्वर्तनसे फिर सिध्म अर्थात् सींपरोग नहीं होतेहै ।

(६)कुष्टं मूलकवीजं प्रियङ्गवः सर्षपास्तथा रजनी
एतत्केशरकुष्टं निहन्ति बहुवार्षिकं सिध्म ॥३०॥
नीलकुरुण्टकपत्रं स्वरसेनालिप्य गात्रमतिबहुशः
लिम्पेन्मूलकवीजैस्तक्रेणैतद्धि सिध्मनाशाय ॥३१
चक्राह्वयं स्नुहीक्षीरभावितं मूत्रसंयुतम् ।
रवितप्तं हि किञ्चित्तु लेपनात्किटिभापहम्॥३२॥
आरग्वधस्य पत्राणि आरनालेन पेषयेत् ।
दद्रूकिटिभकुष्टानि हन्ति सिध्मानमेव च ॥३३॥
बीजानि वा मूलकसर्षपाणां
लाक्षारजन्यौ प्रपुणाडवीजम् ।
श्रीवेष्टकव्योषविडङ्गकुष्टं
पिष्ट्वा च मूत्रेण तु लेपनं स्यात् ॥ ३४ ॥
दद्रूणि सिध्मं किटिभानि पामां
कापालकुष्टं विषमं च हन्यात् ॥ ३५ ॥

(६ कुष्टादिलेपाः) कूट मूलीके बीज मालकांगनी सरसों हलदी केशर कूट इन्होंका लेप बहुत वर्षके सिध्मरोगकों नाशताहै । नीला कुरंटाका पत्तोंके स्वरसकरकै शरीरकों अत्यंत लेपितकर मूलीके बीजोंकों तक्रसें पीस किया लेप सिध्मरोगकों नाशताहै । पुवाडके बीजोंकों थोहरके दूधसे भावितकर पीछे गोमूत्रसे युतकर सूर्यसे तपाय कछुक किया लेप किटिभरोगको नाशताहै । अमलतासके पत्तोंको कांजीसे पीस किया लेप दद्रु किटिभ कुष्ठ इन्होंकों नाशताहै । अथवा सहोंजनाके और सरसोंके बीज लाख हलदी पुवाडके बीज श्रीवेष्टधूप सोंठ मिरच पीपल वायविडंग कूट इन्होंको गोमूत्रसे पीस लेप करै । दद्रु सिध्मरोग किटिभ पाम कापालकुष्ठ और विषमज्वर इन्होंको नाशताहै ।

(७)एडगजकुष्ठसैन्धवसौवीरसर्षपैः क्रिमिघ्नैश्च
क्रिमिसिध्मदद्रुमण्डलकुष्ठानां नाशनो लेपः ॥३६
स्नुक्काण्डे सर्षपात्कल्कः कुकूलानलपाचितः ।
लेपाद्विचर्चिकां हन्ति रागवेग इव त्रपाम्॥३७॥
स्नुक्काण्डे शुषिरे दग्ध्वा गृहधूमं ससैन्धवम् ।
अन्तर्धूमं तैलयुक्तं लेपाद्धन्ति विचर्चिकाम् ॥३८
एडगजातिलसर्षपकुष्ठमागधिकालवणत्रयमस्तु ।
पूतिकृतं दिवसत्रयमेतद्धन्ति विचर्चिकाद-
द्रुसकुष्ठम् ॥ ३९ ॥
उन्मत्तकस्य वीजेन माणकक्षारवारिणा ।
कटुतैलं विपक्तव्यं शीघ्रं हन्याद्विपादिकाम् ४०
नारिकेलोदके न्यस्तस्तण्डुलः पूतितां गतः ।
लेपाद्विपादिकां हन्ति चिरकालानुबन्धिनीम् ४१
सर्जरसः सिन्धुसम्भव-
गुडमधुमहिषाक्षगैरिकं सघृतम् ।
सिक्थकमेतत्पक्वं
पादस्फुटनापहं सिद्धम् ॥ ४२ ॥
अवल्गुजं कासमर्दं चक्रमर्दं निशायुतम् ।
माणिमन्थेन तुल्यांशं मस्तुकाञ्जिकपेषितम् ४३
कच्छूं कण्डूं जयत्युग्रां सिद्ध एष प्रयोगराट् ।
कोमलं सिंहास्यदलं
सनिशं सुरभिजलेन संपिष्टम् ॥ ४४ ॥
दिवसत्रयेण नियतं
क्षपयति कच्छूं विलेपनतः ।

(७ एडगजादयोऽन्ये लेपाः) पूवाडके बीज कूट सेंधानमक कांजी सरसों वायविडंग इन्होंका लेप कृमिरोग सिध्म दद्रु मंडलकुष्ठ इन्होंकों नाशताहै । थोहरके कांडमें सरसोंका कल्क घाल कोईलाकी अग्निसे पकाके लेप करनेसें विचर्चिकाकों नाशताहै जैसे प्रीतिका वेग लाजकों । थोहरके कांडमें घरका धूमा और सेंधानमककों ऐसी रीतिसें दग्ध करै कि धूमा पात्रके बाहिर नहीं जासके । उसकों तेलमें युतकर लेप करनेसें विचर्चिकाकों नाशताहै । पुवाडके बीज तिल सरसों कूट पीपल मनयारीनमक कालानमक सेंधानमक तीन दिन इन्होंकों पूति अर्थात् दुर्गंधित कर लेप करनेसें विचर्चिका दद्रु कुष्ठ इन्होंका नाश होताहै । धत्तूराके बीज और मालाकंदका खारके पानीसें कडुवा तेल पकाना यह विपादिकाकों शीघ्र नाशताहै । नारियलके रसमें चावलोंकों भिगोवै । जब दुर्गंधित होजावै तब पीस लेप करनेसें पुरानी विपादिकाका नाश होताहै । राल सेंधानमक गुड शहद भैंसागूगल गेहूं घृत मौंम इन्होंकों पका सिद्धकिया घृतकी मालिस करनेसे पादस्फुटनका नाश होताहै । बावची कासमर्द पुवाडके बीज हलदी सेंधानमक ये सब समानभाग ले दहीका पानी और कांजीसें पीस । यह सिद्ध प्रयोगराज कच्छू और भयंकर खाजकों जीतताहै । वांसाके कोमलपत्ते हलदी इन्होंकों गोमूत्रसें पीस तीनदिन निरंतर लेप करनेसें कच्छूकों नाशताहै ।

(८)हरिद्राकल्कसंयुक्तं गोमूत्रस्य पलद्वयम् ४५
पिबेन्नरः कामचारी कच्छुपामाविनाशनम् ।
शोथपाण्ड्वामयहरी गुल्ममेहकफापहा ।
कच्छुपामाहरी चैव पथ्यागोमूत्रसाधिता ॥४६॥

पिबति सकटुतैलं गण्डपाषाणचूर्णं
रविकिरणसुतप्तं पामलो यः पलार्धम् ।
त्रिदिनतदनुसिक्तः क्षीरभोजी च शीघ्रं
भवति कनकदीप्त्या कामयुक्तो मनुष्यः ४७

(८ गोमूत्रपानादि) आठ तोलेभर गोमूत्रमें हलदीका कल्क डाल कामचारी मनुष्य पीवै तो कच्छू और पामका नाश होताहै । गोमूत्रमें साधितकरी हरडै शोजा पांडुरोग गुल्म प्रमेह कफरोग कच्छू और पाम इन्होंकों नाशतीहै । गंधपाषाणके चूर्णकों कडुवा तेलमें मिलाय सूर्यकी किरणोंसें तपाय दो दो तोलेभर जो पामरोगी पीवै । तीनदिन उसीसें सेक करै और दूधका भोजन करै तो वह मनुष्य शीघ्रही सोनाके समान कांतिसें युत होताहै ।

(९)निशासुधारग्वधकाकमाची-
पत्रैः सदार्वीप्रपुणाडबीजैः ।
तक्रेण पिष्टैः कटुतैलमिश्रैः
पामादिषूद्वर्तनमेतदिष्टम् ॥ ४८ ॥

सिन्दूरमरिचचूर्णं महिषीनवनीतसंयुतं बहुशः ।
लेपाद्विनिहन्ति पामां तैलं करवीरसिद्धं वा ४९
मांसीचन्दनसम्पाककरञ्जारिष्टसर्षपम् ।
शटीकुटजदार्व्यब्दं हन्ति कुष्ठमयं गणः ॥ ५० ॥

भल्लातकद्वीपिसुधार्कमूलं
गुञ्जाफलं त्र्यूषणशङ्खचूर्णम् ।
तुत्थं सकुष्ठं लवणानि पञ्च
क्षारद्वयं लाङ्गलिकां च पक्त्वा ॥ ५१ ॥
स्नुहार्कदुग्धे घनमायसस्थं
शलाकया तं विदधीत लेपम् ।
कुष्ठे किलासे तिलकालके च
अशोषदुर्नामसु चर्मकीले ॥ ५२ ॥

विषवरुणहरिद्राचित्रकागारधूम-
मनलमरिचदूर्वाः क्षीरमर्कस्नुहाभ्याम् ।
दहति पतितमात्रात्कुष्ठजातीरशेषाः
कुलिशमिव सरोषाच्छक्रहस्ताद्विमुक्तम्

(९ हरिद्रादिलेपाः) हलदी थोहर अमलतास मकोहविशेष इन्होंके पत्ते दारुहलदी और पुवाडके बीज इन्होंकों तक्रसें पीस कडुआ तेलमें मिलाय पामआदि रोगोंमें उवटना मलना कहाहै । सिंदूर और मिरचोंके चूरनकों भैंसके नौंनी घृतमें मिलाय अथवा कनेरमें सिद्धकिया तेलकों बहुतवार लेप करनेसें पामका नाश होताहै । भिलावा चीता थोहरकी जड आखकी जड चिरमठी सोंठ मिरच पीपल शंखका चूरण नीलाथोथा कूट पांचों नमक जवाखार साजीखार कलहारी इन्होंकों कडाहीमें घाल थोहर और आकके दूधमें सलाईसें पकाय करडा करै पीछे लेप करै । कुष्ठ किलास तिलकालक सब प्रकारकी ववासीर और चर्मकीलमें हित होताहै । मीठातेलिया वरना हलदी चीता घरका धूमा वालछड मिरच दूव आकका दूध थोहरका दूध इन्होंकों मिलावै । इन्होंके लगानेमात्र-

सेंभी सब प्रकारके कुष्ठोंकी जात नष्ट हो जातीहै जैसे इन्द्रके हाथसें क्रोधकरके छुटाहुआ वज्रसें पर्वतआदि ।

(१०)शशाङ्कलेखा सविडङ्गसारा
सपिप्पलीका सहुताशमूला ।
सायोमला सामलका सतैला
सर्वाणि कुष्ठान्युपहन्ति लीढा ॥ ५४ ॥
तीव्रेण कुष्ठेन परीतदेहो
यः सोमराजीं नियमेन खादेत् ।
संवत्सरं कृष्णतिलद्वितीयां
स सोमराजीं वपुषातिशेते ॥ ५५ ॥
घर्मसेवी कदुष्णेन वारिणा वागुजीं पिवेत् ।
क्षीरभोजी त्रिसप्ताहात्कुष्ठरोगाद्विमुच्यते ॥५६॥
एकस्तिलस्य भागौ द्वौ सोमराज्यास्तथैव च ।
भक्ष्यमाणमिदं प्रातर्गुह्यदद्रुविनाशनम् ॥ ५७ ॥
अवल्गुजाद्बीजकर्षं पीत्वा कोष्णेन वारिणा ।
भोजनं सर्पिषा कार्यं सर्वकुष्ठप्रणाशनम् ॥ ५८॥
त्रिफलापटोलरजनीमञ्जिष्ठारोहिणीवचानिम्बैः ।
एष कषायोऽभ्यस्तो निहन्ति कफपित्तजं कुष्ठम्

(१० नवकषायाः) बावची वायविडंग पीपल चीताकी जड लोहाका मैल आंवला तेल इन्होंकों मिलाय चाटै तो सब प्रकारके कुष्ठ नष्ट होतेहैं । भयंकर कुष्ठसें युत देहवाला जो मनुष्य कालेतिलोंसें युतकरी बावचीकों नियमसें एकवर्षतक खावै वह अतिप्रकाशित शरीरवाला होजाताहै । अथवा घामकों सेवनेवाला कछुक गरम किया पानीके साथ बावची सातदिनोंतक पीवै और दूधका भोजन करता रहै वह कुष्ठरोगसें छुट जाताहै । तिल १ भाग बावची २ भाग इन्होंकों प्रभातमें भक्षण करै तो गुह्यदद्रुओंका नाश होताहै । बावचीके १ तोलाभर बीजोंकों कछुक गरम किया पानीके संग पीकै घृतके संग भोजन करना सब प्रकारके कुष्ठोंकों नाशताहै । त्रिफला परवल हलदी मजीठ कुटकी वच नींब इन्होंके क्राथका निरंतर अभ्यास किया जावै तो कफपित्तके कुष्ठका नाश होताहै ।

(११)छिन्नायाः स्वरसो वापि सेव्यमानो
यथाबलम् ।
जीर्णे घृतेन भुञ्जीत स्वल्पं यूषोदकेन वा ।
अतिपूतिशरीरोऽपि दिव्यरूपो भवेन्नरः॥ ६० ॥
पटोलखदिरारिष्टत्रिफलाकृष्णवेत्रजम् ।
तिक्ताशनः पिबेत्क्वाथं कुष्ठी कुष्ठं व्यपोहति ६१
तिलाज्यत्रिफलाक्षौद्रव्योषभल्लातशर्कराः ।
वृष्याः सप्त समो मेध्यः कुष्ठहा कामचारिणः ६२
विडङ्गत्रिफलाकृष्णाचूर्णं लीढं समाक्षिकम् ।
हन्ति कुष्ठं क्रिमीन्मेहान्नाडीव्रणभगन्दरान् ६३
इन्द्राशनं समादाय प्रशस्तेऽहनि चोद्धृतम् ।
तच्चूर्णं मधुसर्पिर्भ्यां लिहेत्क्षीरघृताशनः ॥ ६४॥
हत्वा च सर्वकुष्ठानि जीवेद्वर्षशतद्वयम् ॥६५॥
यः खादेदभयारिष्टं मरिचामलकानि वा ।
स जयेत्सर्वकुष्ठानि मासादूर्ध्वं न संशयः॥६६॥
दह्यमानाच्च्युतः कुम्भे मूलगे खदिराद्रसः ।
साज्यधात्रीरसक्षौद्रो हन्यात्कुष्ठं रसायनम् ६७

(११ छिन्नास्वरसादिसेवनम्) अथवा जैसा बल हो उसके अनुसार गिलोयका स्वरस सेवित किया जावै और जीर्णहोनेपर घृतके संग अथवा यूषका पानीके संग स्वल्प भोजन करै । अत्यंत दुर्गंधित शरीरवाला मनुष्यभी दिव्यरूपवाला हो जाताहै। परवल खैर नींब त्रिफला स्याहजीरा वेत इन्होंके क्राथकों तिक्त भोजन करनेवाला पीवै तो कुष्ठी कुष्ठकों नाशताहै । तिल घृत त्रिफला शहद त्रिकुटा भिलावा खांड ये सातों समान लेने वीर्यकों बढाते हैं इच्छापूर्वक वर्तनेवालाके कुष्ठकों नाशतेहैं । वायविडंग त्रिफला पीपल इन्होंके चूर्णमें शहद डाल चाटै तो कुष्ठ कृमिरोग प्रमेह नाडीव्रण भगंदर इन्होंकों नाशताहै । श्रेष्ठ दिनमें उखाडी हुई चिरमटीकी जडकों ले चूर्ण बनाय उसमें शहद और घृत डाल दूध और घृतका भोजन करनेवाला चाटै । सब प्रकारके कुष्ठोंकों नाशकर २०० वर्ष जीवताहै । जो मनुष्य हरडै और नींबकों अथवा मिरच और आंवलाकों खावै वह महीनाके उपरंत सब कुष्ठोंकों जीतताहै संशय नहीं । दह्यमान हुआ खैरसें कलशामें च्युत हुआ रसमें घृत आंवलाका रस शहद इन्होंकों मिलावै । यह रसायन कुष्ठकों नाशताहै ।

(१२)वयस्थैडगजाकुष्ठकृष्णाभिर्गुडिका कृता ।
बास्तमूत्रेण संपिष्टा लेपाच्छ्वित्रविनाशिनी ६८
पूतीकार्कस्नुगिन्द्रद्रुमाणां
मूत्रे पिष्टाः पल्लवाः सौमनाश्च

लेपाच्छ्वित्रं घ्नन्ति दद्रुव्रणांश्च
कुष्ठान्यर्शांसि भग्ननाडीव्रणांश्च ॥ ६९ ॥
गजचित्रव्याघ्रचर्ममसीतैलविलेपनात् ।
श्वित्रं नाशं व्रजेत्किं वा पूतिकीटविलेपनात्७०
कुडवोऽवल्गुजबीजाद्धरितालचतुर्थभागसंमिश्रः।
मूत्रेण गवां पिष्टः सवर्णकरणः परः श्वित्रे ७१

(१२ वयस्यादयो लेपाः) मकोह पुवाड कूट पीपल इन्होंसें बनाई और बकराके मूत्रसें पीसी ऐसी गोली लेपसे श्वित्रकुष्ठकों नाशतीहै। करंजुवा आक पोहकर अमलतास चमेली इन्होंके पत्तोंको गोमूत्रसे पीस लेपसे श्वित्र दद्रुके व्रण कुष्ठ ववासीर भग्न और नाडीव्रण इन्होंका नाश होताहै। हस्ती चीता भगेरा इन्होंके चामकी स्याहीको तेलमें डाल लेप करनेसे अथवा पूतिकीट अर्थात् दुर्गंधित कीडाके लेपसे श्वित्रकुष्ठका नाश होताहै। बावचीके बीज १६ तोले हरताल ४ तोले इन्होंको गोमूत्रसे पीस श्वित्रकुष्ठपर लेप करै तो खालके समान वर्ण हो जाता है।

(१३) धात्रीखदिरयोः क्वाथं पीत्वा वल्गुजसंयुतम् ।
शङ्खेन्दुधवलं श्वित्रं तूर्णं हन्ति न संशयः॥७२॥
क्षरेषु दग्धे गजलण्डजे च
गजस्य मूत्रेण बहु स्रुते च ।
द्रोणप्रमाणं दशभागयुक्ते
दत्त्वा पचेद्वीजमवल्गुजस्य ॥ ७३ ॥
एतद्यदा चिक्कणतामुपैति
तदा सुसिद्धां गुडिकां प्रयुञ्ज्यात् ।
विश्वं विलिम्पेदथ तेन घृष्टं
तदा व्रजत्याशु सवर्णभावम् ॥ ७४ ॥
श्वेतजयन्तीमूलं पिष्टं पीतं च गव्यपयसैव ।
श्वित्रं निहन्ति नियतं रविवारे वैद्यनाथस्याज्ञा

(१३ धात्रीक्वाथादि) आंवला और खैरके क्वाथमें बावचीको मिलाय पीवै तो शंख और चंद्रमाके समान धौले श्वित्रकुष्ठकों शीघ्र नाशता है संशय नहीं। पुवाडकों अच्छी तरह दग्धकर और हस्तीके मूत्रसे बहुत झिराय १०२४ तोलेभर पानीमें दशमां भाग बावचीका डाल पकावै। जब यह चिक्कणपनाको प्राप्त हो जावै तब गोलियां बनावै। उस गोलीको घिस सवतर्फ लेप करनेसे श्वित्रकुष्ठ शीघ्रही खालके समान हो जाताहै। सुपेद अरनीकी जडकों पीस गौका दूधके संग अंतवारकों नियमसे पीवै तो श्वित्रकुष्ठका नाश होताहै। यह धन्वंतरिजीकी आज्ञाहै।

(१४)पुष्पकाले तु पुष्पाणि फलकाले फलानि च
संचूर्ण्य पिचुमर्दस्य त्वङ्मूलानि दलानि च ७६
द्विरंशानि समाहृत्य भागिकानि प्रकल्पयेत् ।
त्रिफलात्र्यूषणं ब्राह्मी श्वदंष्ट्रारुष्कराग्निकाः७७
विडङ्गसारवाराहीलोहचूर्णामृताः समाः ।
हरिद्राद्वयावल्गुजव्याधिघाताः सशर्कराः ॥७८॥
कुष्ठेन्द्रयवपाठाश्च कृत्वा चूर्णं सुसंयुतम् ।
खदिरासननिम्बानां घनक्वाथेन भावयेत् ॥७९॥
सप्तधा पञ्चनिम्बं तु मार्कवस्वरसेन तु ।
स्निग्धशुद्धतनुर्धीमान्योजयेच्च शुभे दिने ॥ ८०॥
मधुना तिक्तहविषा खदिराशनवारिणा ।
लेह्यमुष्णाम्बुना वापि कोलवृद्ध्या पलं पिबेत्
जीर्णे च भोजनं कार्यं स्निग्धं लघु हितं च यत्
विचर्चिकोदुम्बरपुण्डरीक-
कपालदद्रूकिटिभालसादीन् ।
शतारुविस्फोटविसर्पपामां
कफप्रकोपं त्रिविधं किलासम् ॥ ८३ ॥
भगन्दरश्लीपदवातरक्तं
जातान्ध्यनाडीव्रणशीर्षरोगान् ।
सर्वान्प्रमेहान्प्रदरांश्च सर्वान्
दंष्ट्राविषं मूलविषं निहन्ति ॥ ८४ ॥
स्थूलोदरः सिंहकृशोदरश्च
सुश्लिष्टसन्धिर्मधुनोपयोगात् ।
समोपयोगादपि ये दशन्ति
सर्पादयो यान्ति विनाशमाशु ॥ ८५ ॥
जीवेच्चिरं व्याधिजराविमुक्तः
शुभेरतश्चन्द्रसमानकान्तिः ॥ ८६ ॥

(१४ कुष्ठहरं चूर्णम्) पंचनिंबः फूलोंके समय फूल और फलके समय फल और छाल जड पत्ते नींबके ये सब दोदो भाग लेकै पीछे एकएक भाग लेवै। पीछे त्रिफला सोंठ मिरच पीपल ब्राह्मी गोखरू भिलावा चीता विडंगसार बाराहीकंद गिलोय ये सब समान भाग लेने। हलदी दारुहलदी बावची अमलतास खांड कूट इंद्रजव पाठा इन्होंका चूर्ण मिलावै। खैर आसना नींब इन्होंका करडा क्वाथमें सातवार

भावित करै और पंचनिंबकों भंगराके रसमें भावित करै। पीछे स्निग्ध और शुद्ध शरीरवाला मनुष्य शुभदिनमें योजित करै। शहदके संग तथा तिक्त घृतके संग तथा खैरका क्वाथके संग अथवा गरम पानीके संग ८ मासेसे लेकै ४ तोलेभरतकको पीवै। और जीर्ण होनेपर चिकना हलका और हित भोजन करना। विचर्चिका उदुंबर पुंडरीक कपाल दद्रु किटिभ आलसआदि शतारु विस्फोट विसर्प कफका कोप तीनप्रकारका किलास भगंदर श्लीपद वातरक्त अंधपना नाडीव्रण शिरका रोग सब प्रमेह सब प्रदर दंष्ट्राविष मूलविष इन सबकों नाशताहै। शहदके उपयोगसे स्थूलउदरवाला मनुष्य सिंहके समान कृश उदरवाला हो जाताहै। और अच्छीतरह मिली हुई संधियोंवाला होजाताहै जो सर्पआदि समीपके योगसे डशते हैं वेभी शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। रोग और बुढापासे वर्जित हुआ शुभमें रत हुआ और चंद्रमाके समान कांतिवाला होकै बहुतकालतक जीवताहै।

(१५)चित्रकं त्रिफला व्योषमजाजीं कारवीं वचाम्
सैन्धवातिविषे कुष्ठं चव्यैलायावशूकजम् ॥८७॥
विडङ्गान्यजमोदां च मुस्तान्यमरदारु च।
यावन्त्येतानि सर्वाणि तावन्मात्रं तु गुग्गुलुम्
संक्षुद्य सर्पिषा सार्धं गुडिकां कारयेद्भिषक्।
प्रातर्भोजनकाले च भक्षयेत्तु यथाबलम् ॥८९॥
हन्त्यष्टादशकुष्ठानि क्रिमीन्दुष्टव्रणानि च।
ग्रहण्यर्शोविकारांश्च मुखामयगलग्रहान् ॥९०॥
गृध्रसीमथ भग्नं च गुल्मं चाशु नियच्छति।
व्याधीन्कोष्ठगतांश्चान्याञ्जयेद्विष्णुरिवासुरान् ९१

(**१९ एकविंशतिको गुग्गुलुः**) चीता त्रिफला सोंठ मिरच पीपल जीरा कलोंजी वच सेंधानक अतीस कूठ चव्य इलायची इंद्रजव वायविडंग आजमोद नागरमोथा देवदार जितने ये सब हों उतनाही गूगल इन्होंको कूटकै वैद्य घृतके संग गोलियां बनावै। प्रभातका भोजनके समय बलके अनुसार गोलीकों खावै। अठारह प्रकारके कुष्ठ कृमिरोग दुष्टघाव ग्रहणीदोष बवासीरके विकार मुखके रोग गलग्रह गृध्रसी भग्न और कोष्ठगतरोग इन्होंकों नाशता है जैसे दैत्योंकों विष्णु।

(१६) पञ्च भल्लातकांश्छित्वा साधयेद्विधिवज्जले
कषायं तं पिबेच्छीतं घृतेनाक्तौष्ठतालुकः ॥९२॥
पञ्चवृद्ध्या पिबेद्यावत्सप्ततिं ह्रासयेत्ततः।
जीर्णेऽद्यादोदनं शीतं घृतं क्षीरोपसंहितम् ९३
एतद्रसायनं मेध्यं वलीपलितनाशनम्।
कुष्ठार्शःक्रिमिदोषघ्नं दुष्टशुक्रविनाशनम् ॥९४॥
तैलं भल्लातकानां च पिबेन्मासं यथाबलम्।
सर्वोपतापनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं दृढम् ॥ ९५ ॥
प्रलेपोद्वर्तनस्नानपानभोजनकर्मणि।
शीलितं खादिरं वारि सर्वत्वग्दोषनाशनम् ९६
निम्बं पटोलं दार्वीं
दुरालभां तिक्तकरोहिणीं त्रिफलाम्।
कुर्यादर्धपलांशान्पर्पटकं त्रायमाणां च ॥ ९७ ॥
सलिलाढकसिद्धानां रसेऽष्टभागस्थिते क्षिपेत्पूते
चन्दनकिराततिक्तकमागधिकात्रायमाणां च ९८
मुस्तावत्सकबीजं कल्कीकृतमर्धकर्षान्भागान्।
नवसर्पिषश्च षट्पलमेतत्सिद्धं घृतं पेयम् ॥९९॥
कुष्ठज्वरगुल्मार्शोग्रहणीपाण्ड्वामयश्वयथून्।
हन्ति पामाविसर्पपीडकान्कण्डुमदगन्धसिद्धम् ॥

(**१६ तिलषट्पलकघृतम्**) पांचभिलावोंकों छिन्नकर पानीमें विधिपूर्वक साधित करै। उस शीत क्वाथकों घृतसे चुपडा हुआ ओष्ठ और तालुवावाला मनुष्य पीवै। पांचकी वृद्धिसें पीने लगै और सत्तरसे पांच पांच घटाने लगै। जीर्ण होनेपर शीतल चावल और दूधसे निकासा हुआ घृत लेवै। यह रसायन है पवित्र है वलीपलितकों नाशताहै कुष्ठ बवासीर कृमिदोष दुष्टवीर्य इन्होंकों नाशताहै। भिलावोंके तेलकों बलके अनुसार एक महीनातक पीवै तो संपूर्ण दुःखोंसे रहित हुआ मनुष्य सौ १०० वर्षतक दृढ हुआ जीवताहै। लेप उवटना स्नान पीना भोजन इनकर्मोंमें शीलित किया खैरका पानी त्वचाके संपूर्ण दोषोंकों नाशताहै। नींब परवल दारुहलदी धमासा कुटकी त्रिफला पित्तपापडा त्रायमाण ये सब आधा आधा तोला लेने। पानी २५६ तोलेभरमें मिलाय क्वाथ बनावै। जब आठमां हिस्सा शेष बचै तब वस्त्रमांहकै छान उसमें चंदन चिरायता पीपल त्रायमाण नागरमोथा इंद्रजव ये सब आधा आधा तोलाभर ले कल्क बनावै और नवीन घृत २४ तोले ऐसे लेकै घृतकों सिद्धकर पीवै। कुष्ठ ज्वर गुल्म बवासीर ग्रहणीदोष पांडुरोग शोजा पामा विसर्प फुनसी इन्होंकों नाशताहै। यह श्वेतशिरस कस्तूरी सुगंध द्रव्य इन्होंमें सिद्ध करना।

(१७)निम्बं पटोलं व्याघ्रीं च गुडूचीं वासकं तथा
कुर्याद्दशपलान्भागानेकैकस्य सुकुट्टितान् १०१
जलद्रोणे विपक्तव्यं यावत्पादावशेषितम् ।
घृतप्रस्थं पचेत्तेन त्रिफलागर्भसंयुतम् ॥ १०२॥
पञ्चतिक्तमिदं ख्यातं सर्पिः कुष्ठविनाशनम् ।
अशीतिं वातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान्
विंशतिं श्लैष्मिकांश्चैव पानादेवापकर्षति ।
दुष्टव्रणक्रिमीनर्शः पञ्चकासांश्च नाशयेत् १०४

(१७ पंचतिक्तकं घृतम्) नींब परवल कटेली गिलोय वांसा इन सबकों कूठ चालीस चालीस तोलेभर लेवै। पीछे १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै। जब चौथाई भाग शेष रहै तब त्रिफलाका कल्क मिलाय ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। यह पंचतिक्तघृत कहाहै। कुष्ठ८० अस्सी वातके रोग ४०पित्तके रोग २० कफके रोग दुष्टघाव कृमिरोग बवासीर और पांचप्रकारकी खांसी इन्होंकों पीनेसें नाशताहै।

(१८)त्रिफलाद्विनिशावासायासपार्पटकूलकान्
त्रायन्तीकटुकानिम्बान्प्रत्येकं द्विपलोन्मितान् ॥
क्वाथयित्वा जलद्रोणे पादशेषेण तेन तु ।
घृतप्रस्थं पचेत्कल्कैः पिप्पलीघनचन्दनैः॥१०६॥
त्रायन्तीशक्रभूनिम्बैस्तत्पीतं तिक्तकं घृतम् ।
हन्ति कुष्ठज्वरार्शांसि श्वयथुं ग्रहणीगदम् ।
पाण्डुरोगं विसर्पं च क्लीबानामपि शस्यते १०७

(१८ तिक्तकं घृतम्) त्रिफला हलदी दारुहलदी वांसा पित्तपापडा कूलक त्रायमाण कुटकी नींब ये सब आठ आठ तोले ले १०२४ तोलेभर पानीमें क्वाथ बनावै। जब चतुर्थांश शेष रहै तब घृतकों पकावै। परंतु पीपल नागरमोथा चंदन त्रायमाण इंद्रजव चिरायता इन्होंका कल्क डाल घृतकों सिद्ध करै। कुष्ठ ज्वर बवासीर शोजा ग्रहणीदोष पांडुरोग विसर्प इन्होंकों नाशताहै और नपुंसकोंकोंभी हित करताहै।

(१९)सप्तच्छदं प्रतिविषां सम्पाकं तिक्तरोहिणीं पाठाम् ।
मुस्तमुशीरं त्रिफलां पटोलपिचुमर्दपर्पटकम् ॥
धन्वायासं सचन्दनमुपकुल्ये पद्मकं रजन्यौ च ।
षड्ग्रन्थां सविशालां शतावरीशारिवे चोभे ।
वत्सकबीजं वासां मूर्वाममृतां किराततिक्तं च ।
कल्कान्कुर्यान्मतिमान्यष्ट्याह्वं त्रायमाणां च ११०
कल्कस्तु चतुर्भागो
जलमष्टगुणं रसोऽमृतफलानाम् ।
द्विगुणो घृताच्च देय-
स्तत्सर्पिः पाययेत्सिद्धम् ॥ १११ ॥
कुष्ठानि रक्तपित्तं
प्रबलान्यर्शांसि रक्तवाहीनि ।
विसर्पमम्लपित्तं
वातासृक्पाण्डुरोगं च ॥ ११२ ॥
विस्फोटकान्सपामा-
नुन्मादकान्कामलां ज्वरं पाण्डुम् ।
हृद्रोगगुल्मपिडका-
मसृग्दरं गण्डमालां च ॥ ११३ ॥
हन्यादेतत्सद्यः
पीतं काले यथाबलं सर्पिः ।
योगशतैरप्यजिता-
न्महाविकारान्महातिक्तकम् ॥ ११४ ॥

(१९ महातिक्तकं घृतम्) शातला अतीस अमलतास कुटकी पाठा नागरमोथा खस त्रिफला परवल नींब पित्तपापडा जवासा धमासा चंदन पीपल पद्माक हलदी दारुहलदी बच इंद्रायण शतावरी दोनों शारिवा अनंतमूल इंद्रजव वांसा मरोरफली गिलोय चिरायता मुलहटी और त्रायमाण इन्होंके कल्कोंकों बुद्धिमान् करै। कल्क ४ भाग पानी आठगुना परवलका रस दुगुना इन्होंमें एकगुना घृत मिलाय सिद्धकर पीवै। कुष्ठ रक्तपित्त भयंकर और रक्तकों वहानेवाले बवासीर विसर्प अम्लपित्त वातरक्त और पांडुरोग विस्फोटक पाम उन्माद कामला ज्वर पांडुरोग हृद्रोग गुल्म फुनसी प्रदर और गंडमाला इन्होंके समयपर बलके अनुसार पान किया घृत नाशता है। यह महातिक्तघृत सैंकडेयोगोंसें नहीं जीते हुये महाविकारोंकोंभी जीतता है।

(२०)खदिरस्य तुलाः पञ्च शिंशपाशनयोस्तुले ।
तुलार्धाः सर्व एवैते करञ्जारिष्टवेतसाः ॥११५॥
पर्पटः कुटजश्चैव वृष्यः क्रिमिहरस्तथा ।
हरिद्रे कृतमालश्च गुडूची त्रिफला त्रिवृत् ११६
सप्तपर्णस्तु संक्षुण्णो दशद्रोणे च वारिणः।
अष्टभागावशेषं तु कषायमवतारयेत् ॥ ११७ ॥

धात्रीरसं च तुल्यांशं सर्पिषश्चाढकं पचेत् ।
महातिक्तककल्कैश्च यथोक्तैः पलसंमितैः॥११८॥
निहन्ति सर्वकुष्ठानि पानाभ्यङ्गान्निषेवणात् ।
महाखदिरमित्येतत्परं कुष्ठविनाशनम् ॥ ११९ ॥

(२० महाखदिरकं घृतम्) खैर २००० तोले सीसम ४०० तोले चीता ४०० तोले और २०० तोलेभर ये सब करंजुवा नींब वेतस पित्तपापडा कूडाकी छाल ईख अथवा आंवला वायविडंग हलदी दारुहलदी अमलतास गिलोय त्रिफला निशोत शातला इन्होंकों कूट छीन दशद्रोणभर पानीसें क्वाथ बनावै । जब चतुर्थांश शेष रहै तब क्वाथकों उतारै । आंवलाका रस २५६ तोले घृत २५६ तोले इन सबकों मिलाय महातिक्तकघृतकों पकावै परंतु पूर्वोक्त ओषधोंके कल्क चार चार तोलेभर देने । यह महाखदिर घृत पीना मालिसके द्वारा सेवनेसें सबप्रकारके कुष्ठोंकों निश्चय नाशताहै ।

(२१)निम्बामृतावृषपटोलनिदिग्धिकानां
भागान्पृथग्दशपलान्विपचेद्घटेऽपाम् ।
अष्टांशशेषितजलेन सुनिःसृतेन
प्रस्थं घृतस्य विपचेत्पिचुभागकल्कैः ॥
पाठाविडङ्गसुरदारुगजोपकुल्या-
द्विक्षारनागरनिशामिशिचव्यकुष्ठैः ।
तेजोवतीमरिचवत्सकदीप्यकाग्नि
रोहिण्युरुष्करवचाकणमूलयुक्तैः ॥१२१॥
मञ्जिष्ठयातिविषयावरया यमान्या
संशुद्धगुग्गुलुपलैरपि पञ्चसंख्यैः ।
तत्सेवितं विषमतिप्रबलं समीरं
सन्ध्यस्थिमज्जगतमप्यथ कुष्ठमीदृक् १२२
नाडीव्रणार्बुदभगन्दरगण्डमालां
जत्रूर्ध्वसर्वगतगुल्मगुदोत्थमेहान् ।
यक्ष्मारुचिश्वसनपीनसकासशोष-
हृत्पाण्डुरोगगलविद्रधिवातरक्तम् १२३

(२१ पंचतिक्तकगुग्गुलुः) नींब गिलोय रेणुका परवल कटेली इन सबकों चालीस चालीस तोलेभर ले शेष७६८ तोलेभर पानीमें पकावै । जब पकनेमें अष्टमांश शेष रहै तब ६४ तोलेभर घृत और एक एक तोलाभर कल्क ।१०२२ पाठा वायविडंग देवदार गजपीपल साजीखार जवाखार सोंठ हलदी सोंप चव्य कूठ तेजोवंती मिरच कूडाकी छाल अजमोद चीता हरडै भिलावा वच पीपलामूल मजीठ अतीस त्रिफला अजमान ये सब लेने और अच्छीतरह शोधा हुआ गूगल २० तोले इनकों मिलाय सेवै तो अत्यंत बलवान् विष संधिहड्डी मज्जागत वात कुष्ठ नाडीव्रण अर्बुद भगंदर गंडमाला ऊपरला जोतागतवायु सर्वांगवात गुल्मरोग प्रमेह राजरोग अरुचि श्वास पीनस खांसी शोष पांडुरोग गलविद्रधि वातरक्त इन्होंकों नाशताहै ।

(२२)वासागुडूचीत्रिफलापटोल-
करञ्जनिम्बाशनकृष्णवेत्रम् ।
तत्क्वाथकल्केन घृतं विपक्वं
तद्वज्रकं कुष्ठहरं प्रदिष्टम् ॥ १२४ ॥
विशीर्णकर्णाङ्गुलिहस्तपादः
क्रिम्यर्दितो भिन्नगलोऽपि मर्त्यः ।
पौराणिकीं कान्तिमवाप्य जीवे-
दव्याहतो वर्षशतं च कुष्ठी ॥ १२५ ॥

(२२ वज्रकं घृतम्) वांसा गिलोय त्रिफला परवल करंजुवा नींब आसना काली शारिवा वेत इन्होंका क्वाथ और कल्कसे घृतको पकावै । वह वज्रकघृत कुष्ठनाशक कहाहै। गलगये है कान अंगुली हाथ और पैर जिसके ऐसा और कीडोंसे पीडित और भिन्नहुआ गलवाला ऐसा कुष्ठरोगी पुराणी कांतिकों प्राप्त होकै अव्याहत हुआ १०० वर्षपर्यंत जीवता है ।

(२३)आरग्वधं धवं कुष्ठं हरितालं मनःशिलाम्
रजनीद्वयसंयुक्तं पचेत्तैलं विधानवित् ।
एतेनाभ्यञ्जयेच्छ्वित्री क्षिप्रं श्वित्रं विनश्यति ॥

(२३ आरग्वधाद्यं तैलम्) अमलतास धवके फूल कूट हरताल मनशिल हलदी दारुहलदी इन्होंके कल्कमें विधानको जाननेवाला वैद्य तेलकों पकावै । इसकरकै श्वित्रकुष्ठवाला मालिस करै तो श्वित्र शीघ्र नष्ट होजाता है ।

(२४)मञ्जिष्ठारुङ्निशाचक्रमर्दारग्वधपल्लवैः ।
तृणकस्वरसे सिद्धं तैलं कुष्ठहरं कटु ॥ १२७ ॥

(२४ तृणकं तैलम्) मजीठ कूट हलदी पुवाडकेबीज अमलतासके पत्ते इन्होंका कल्क और रोहिष तृणके स्वरसमें कडुवा तेलकों सिद्ध करै वह कुष्ठकों हरताहै ।

(२५)हरिद्रात्रिफलादारुहयमारकचित्रकम् ॥
सप्तच्छदश्च निम्बत्वक्करञ्जो वालकं नखी ।
कुष्ठमेडगजाबीजं लाङ्गलीगणिकारिका ॥ १२९॥

जातीपत्रं च दार्वी च हरितालं मनःशिलाः ।
कलिङ्गातिलपत्रं च अर्कक्षीरं च गुग्गुलुः १३०
गुडत्वङ्मरिचं चैव कुङ्कुमं ग्रन्थिपर्णकम् ।
सर्जपर्णाशखदिरविडङ्गं पिप्पलीं वचाम् ॥१३१
घनरेण्वमृतायष्टिकेशरं ध्यामकं विषम् ।
विश्वकट्फलमञ्जिष्ठाबोलस्तुम्बीफलं तथा १३२
स्नुहीसम्पाकयोः पत्रं वागुजीबीजमांसिके ।
एलाज्योतिष्मतीमूलं शिरीषो गोमयाद्रसः १३३
चन्दने कुष्ठनिर्गुण्डी विशाला मल्लिकाद्वयम् ।
वासाश्वगन्धा ब्राह्मी च श्याह्वं चम्पककट्फलम्
एतैः कल्कैः पचेत्तैलं तृणकस्वरसद्रवम् ।
सर्वत्वग्दोषहरणं महातृणकसंज्ञितम् ॥ १३५ ॥

(२५ महातृणकं तैलम्) हलदी त्रिफला देवदार कनेर चीता सातला नींबकी छाल करंजुवा नेत्रवाला नख कूट पुवाडके बीज कलहारी अरनी चमेलीके पत्ते दारुहलदी हरताल मनशिल श्वेतनिशोत तिल तेजपात आकका दूध गूगल दालचिनी मिरच केशर गठोना राल अल्पपत्तोंवाली तुलसी खैर वायविडंग पीपल वच नागरमोथा रेणुका गिलोय मुलहटी केशर रोहिषतृण मीठा तेलिया सोंठ कायफल मजीठ बीजाबोल तूंबीकाफल थोहरके पत्ते अमलतासके पत्ते वावचीके बीज वालछड इलायची मालकांगनीकी जड शिरस गोवरका रस चंदन कूट संभालू इंद्रायण दोनों चमेली वांसा आसगंध ब्राह्मी वेलफल चंपा कायफल इन्होंके कल्क और रोहिषतृणका रस इन्होंमें तेलकों पकावै । यह महातृणकसंज्ञक तेल सब प्रकारके त्वचादोषोंकों हरताहै ।

(२६)सप्तपर्णकरञ्जार्कमालतीकरवीरजम् ।
मूलं स्नुहाशिरीषाभ्यां चित्रकास्फोतयोरपि १३६
करञ्जबीजं त्रिफलां त्रिकटुं रजनीद्वयम् ।
सिद्धार्थकं विडङ्गं च प्रपुन्नाडतिलैः सह १३७
मूत्रपिष्टैः पचेत्तैलमेभिः कुष्ठविनाशनम् ।
अभ्यङ्गाद्वज्रकं नाम नाडीदुष्टव्रणापहम् ॥१३८॥

(२६ वज्रकतैलम्) सातला करंजुवा आक मालती कनेर इन्होंकी जड थोहरकी जड शिरसकी जड चीताकी जड श्वेतशारिवाकी जड करंजुवाके बीज त्रिफला सोंठ मिरच पीपल हलदी दारुहलदी सरसों वायविडंग पुवाड तिल इन्होंकों गोमूत्रसें पीस तेलकों पकावै । यह कुष्ठकों नाशताहै । मालिस करनेसे वज्रक नामवाला तेल नाडीव्रणकों और दुष्टव्रणकों नाशताहै ।

(२७)मरिचालशिलाह्वार्कपयोश्वारिजटात्रिवृत् ।
शकृद्रसविशालारुङ्निशायुग्दारुचन्दनैः ॥१३९॥
कटुतैलात्पचेत्प्रस्थं द्व्यक्षैर्विषपलान्वितैः ।
सगोमूत्रं तदभ्यङ्गाद्दद्रुश्वित्रविनाशनम् ।
सर्वेष्वपि च कुष्ठेषु तैलमेतत्प्रशस्यते ॥१४०॥

(२७ मरिचाद्यं तैलम्) मिरच हरताल मनशिल आकका दूध कनेरकी जड निशोत गोवरका रस इंद्रायण कूट हलदी दारुहलदी देवदार चंदन ये सब दोदो तोले और मीठा तेलिया ४ तोले इन्होंके कल्कमें ६४ तोलेभर कडुवा तेल मिलाय पकावै और गोमूत्र डालै मालिस करनेसे दाद और श्वित्रकुष्ठकों नाशताहै । सब प्रकारके कुष्ठोंमें यह तेल श्रेष्ठ है ।

(२८)मरिचं त्रिवृतादन्तीक्षीरमार्कं शकृद्रसः ।
देवदारु हरिद्रे द्वे मांसी कुष्ठं सचन्दनम् ॥१४१
विशाला करवीरं च हरितालं मनःशिला ।
चित्रको लाङ्गलाख्या च विडङ्गं चक्रमर्दकम्
शिरीषं कुटजो निम्बं सप्तपर्णस्नुहामृताः ।
सम्पाको नक्तमालोऽब्दः खदिरं पिप्पली वचा॥
ज्योतिष्मती च पलिका विषस्य द्विपलं भवेत् ।
आढकं कटुतैलस्य गोमूत्रं तु चतुर्गुणम् १४४
मृत्पात्रे लौहपात्रे वा शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ।
पक्त्वा तैलवरं ह्येतन्म्रक्षयेत्कौष्ठिकान्व्रणान्
पामाविचर्चिकादद्रुकण्डूविस्फोटकानि च ।
वलयः पलितं छायानीलीव्यङ्गस्तथैव च ।
अभ्यङ्गेन प्रणश्यन्ति सौकुमार्यं च जायते १४६
प्रथमे वयसि स्त्रीणां यासां नस्यं तु दीयते ।
परामपि जरां प्राप्य न स्तना यान्ति नम्रताम्
बलीवर्दस्तुरङ्गो वा गजो वा वायुपीडितः ।
एभिरभ्यञ्जनैर्गाढं भवेन्मारुतविक्रमः ॥ १४८ ॥

(२८ बृहन्मरिचाद्यं तैलम्) मिरच निशोत जमालगोटाकी जड आकका दूध गोवरका रस देवदार हलदी दारुहलदी वालछड कूट चंदन इंद्रायण कनेर हरताल मनशिल चीता कलहारी वायविडंग पुवाड शिरस कूडाकी छाल नींब शातला थोहर गिलोय अमलतास करंजुवा नागर-

मोथा खैर पीपल वच कांगनी ये सब चार चार तोले और मीठा तेलिया ८ तोले कडुवा तेल २५६ तोले और चौगुना गोमूत्र इन्होंकों माटीके पात्रमें अथवा लोहाके पात्रमें कोमल अग्निसे हौलें २पकावै। इस उत्तम तेलकों पकाकै कुष्ठके घावोंपर चुपडै । पाम विर्चचिका दाद खाज विस्फोटक वलीपलित छाया नीलिका व्यंग ये सब मालिस करनेसे नष्ट होतेहैं और सकुमारपना उपजताहै । जिन स्त्रियोंकों प्रथम अवस्थामें नस्य दिया जाताहै उनके वृद्ध अवस्थामेंभी चूंची ढीली नहीं होती है । वायुसे पीडित हुआ बैल घोडा अथवा हस्ती येभी मालिस करनेसे पवनके समान पराक्रमवाले हो जाते हैं ।

(२९)नक्तमालं हरिद्रे द्वे अर्कस्तगरमेव च ।
करवीरं वचाकुष्ठमास्फोता रक्तचन्दनम् १४९
मालती सप्तपर्णं च मञ्जिष्ठा सिन्धुवारिका ।
एषामर्धपलान्भागान्विषस्यापि पलं तथा १५०
चतुर्गुणे गवां मूत्रे तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
श्वित्रविस्फोटकिटिभकीटलूताविचर्चिकाः १५१
कण्डूकच्छुविकाराश्च ये व्रणा विषदूषिताः ।
विषतैलमिदं नाम्ना सर्वव्रणविशोधनम् ॥१५२॥

(**२९ विषतैलम्**) करंजुवा हलदी दारुहलदी आक तगर कनेर वच कूट श्वेतशारिवा लालचंदन चमेली सातला मंजीठ संभालू ये सब दो दो तोले और मीठातेलिया ४ तोले चौगुना गोमूत्र इन्होंमें ६४ तोलेभर तेलकों पकावै । श्वित्रकुष्ठ विस्फोटक किटिभ कुष्ठ कीडा मकडीदोष विर्चचिका खाज कृच्छ्र दादके विकार विषसे दूषित हुये घाव इन सबकों यह विषतेल नाशताहै और सब प्रकारके घावोंकों शोधताहै ।

(३०)श्वेतकरवीररसो गोमूत्रं चित्रकं विडङ्गं च
कुष्ठेषु तैलयोगः सिद्धोऽयं संमतो भिषजाम्१५३

(**३० कारवीराद्यं तैलम्**) श्वेतकनेरका रस गोमूत्र चीता वायविडंग इन्होंमें सिद्ध किया तेल सब कुष्ठोंमें वैद्योंनें उत्तम मानाहै ।

(३१)श्वेतकरवीरमूलं विषांशसाधितं गवां मूत्रे।
चर्मदलपामासिध्मविस्फोटक्रिमिकिटिभजित्तैलम्

(**३१ श्वेतकरवीराद्यं तैलम्**) श्वेतकनेरकी जड और मीठातेलिया तेल इन्होंकों गोमूत्रमें साधितकर किया लेप चर्मदल पाम सिध्म विस्फोटक कृमिरोग किटिभ इन्होंकों नाशताहै ।

(३२)सिन्दूरार्धपलं पिष्ट्वा जीरकस्य पलं तथा ।
कटुतैलं पचेन्मार्नी सद्यः पामाहरं परम्॥१५५॥

(**३२ सिंदूराद्यं तैलम्**) सिंदूर २ तोले जीरा ४ तोले इन्होंमें ३२ तोले भर कडुवा तेलकों पकावै। यह तत्काल पामकों नाशताहै ।

(३३)सिन्दूरं चन्दनं मांसी विडङ्गं रजनीद्वयम् ।
प्रियङ्गु पद्मकं कुष्ठं मञ्जिष्ठां खदिरं वचाम् १५६
जात्यर्कत्रिवृतानिम्बकरञ्जविषमेव च ।
कृष्णवेत्रकलोध्रं च प्रपुन्नाडं च संहरेत् ॥१५७॥
श्लक्ष्णपिष्टानि सर्वाणि योजयेत्तैलमात्रया ।
अभ्यङ्गेन प्रयुञ्जीत सर्वकुष्ठविनाशनम् ॥ १५८ ॥
पामाविचर्चिकाकण्डूविसर्पादिविनाशनम् ।
रक्तपित्तोत्थितान्हन्ति रोगानेवंविधान्बहून् १५९

(**३३ महासिंदूराद्यं तैलम्**) सिंदूर चंदन बालछड वायविडंग हलदी दारुहलदी कांगनी पद्माक कूट मजीठ खैर वच चमेली आक निशोत नींब करंजुवा मीठातेलिया कृष्णवेत्र लोध पुवाडके बीज इन्होंकों लेवै । इनकों मिहीन पीस तेलमें मिलाय मालिस करनेसें सब प्रकारका कुष्ठ नष्ट होताहै । पाम विर्चचिका खाज विसर्प आदि रक्तपित्तके विकार इस प्रकारके बहुतसें रोगोंकों नाशताहै ।

(३४)मञ्जिष्ठात्रिफलालाक्षानिशाशिलालगन्धकैः।
चूर्णितैस्तैलमादित्यपाकं पामाहरं परम् ॥१६०॥

(**३४ आदित्यकं तैलम्**) मजीठ त्रिफला लाख हलदी मनशिल हरताल गंधक इन्होंके चूर्णमें तेलकों सूर्यके घाममें पकावै । यह आदित्यपाक तेल पामकों निश्चय हरताहै ।

(३५)स्वरसेन च दूर्वायाः पचेत्तैलं चतुर्गुणम् ।
कच्छुविचर्चिकापामा अभ्यङ्गादेव नाशयेत्१६१

(**३५ दूर्वाद्यं तैलम्**) चौगुने दूबके रसमें तेलकों पकावै यह मालिसकरनेसें कच्छ दाद विर्चचिका पाम इन्होंकों नाशताहै ।

(३६)अर्कपत्ररसे पक्वं कटुतैलं निशायुतम् ।
मनःशिलायुतं वापि पामाकच्छ्वादिनाशनम् १६२

(३६ अर्कतैलम्) आकके पत्तोंके रसमें कडुवा तेलकों पकावै । हलदीसें अथवा मनशिलसें युत करै पाम और कच्छआदिकों नाशताहै ।

(३७)गण्डीरिकाचित्रकमार्कवार्क-
कुष्ठद्रुमत्वग्लवणैः समूत्रैः ।
तैलं पचेन्मण्डलदद्रुकुष्ठ-
दुष्टव्रणारुक्किटिभापहारि ॥ १६३ ॥

(३७ गंडीराद्यं तैलम्) थोहर चीता भंगरा आक कूट इन्होंकी छाल नमक गोमूत्र इन्होंमें तेलकों पकाकै मालिस करनेसें मंडल दद्रु कुष्ठ दुष्टघाव शताह्व किटिभ इन्होंकों नाशताहै ।

(३८)चित्रकस्याथ निर्गुण्ड्या हयमारस्य मूलतः ।
नाडी च बीजाद्विषतः काञ्जिपिष्टं पलं पलम् १६४
करञ्जतैलाष्टपलं काञ्जिकस्य पलं पुनः ।
मिश्रितं सूर्यसन्तप्तं तैलं कुष्ठव्रणास्रजित् १६५॥

(३८ पृथ्वीसारतैलम्) चीताकी जड और संभालूकी जड तथा कनेरकी जड नाडी शाकके बीज मीठा तेलिया ये सब चार चार तोलेभर ले कांजीमें पीसै । करंजुवाके तेल ३२ तोले फिर कांजी ४ तोले इन्होंकों मिलाय सूर्यमें तपावै । यह तेल कुष्ठका घाव और रक्तकों जीतताहै ।

(३९)सोमराजी हरिद्रे द्वे सर्षपारग्वधं गदम् ।
करञ्जैडगजाबीजं गर्भं दत्वा विपाचयेत् ॥१६६॥
तैलं सर्षपसम्भूतं नाडीदुष्टव्रणापहम् ।
अनेनाशु प्रशाम्यन्ति कुष्ठान्यष्टादशैव तु॥१६७॥
नीलिकापिडकाव्यङ्गं गम्भीरं वातशोणितम् ।
कण्डूकृच्छ्रप्रशमनं कच्छुपामाविनाशनम्॥१६८॥

(३९ सोमराजीतैलम्) बावची हलदी दारुहलदी सरसों अमलतास कूट करंजुवा पुवाडके बीज इन्होंका कल्क दे पकावै । यह सिद्ध किया सरसोंका तेल नाडीव्रण दुष्टव्रणकों नाशताहै । इसकरके अठारहप्रकारके कुष्ठ शीघ्र नष्ट होतेहैं । नीलिका पिडका व्यंग गंभीर वातरक्त खाज कृच्छ्र कच्छदाद और पाम इन्होंकों नाशताहै ।

(४०)पक्षात्पक्षाच्छर्दनान्यभ्युपेया-
न्मासान्मासात्स्रंसनं चाप्यधस्तात् ।
त्र्यहात्त्र्यहान्नस्ततश्चावपीडा-
न्मासेष्वसृङ्मोक्षयेत्षट्सु षट्सु ॥ १६९ ॥
योषिन्मांससुरात्यागः शालिमुद्गयवादयः ।
पुराणास्तिक्तशाकं च जाङ्गलं कुष्ठिनां हितम् १७०

इति कुष्ठचिकित्सा ।

(४० रेचनादिकालः) पंधरह पंधरह दिनमें वमन और महीना महिनामें जुलाब और तीन तीन दिनमें नस्य तथा अवपीड और छह छह महीनोंमें रक्तका निकासना ये सब करावै । स्त्रीसंग मांस मदिरा इन्होंकों त्यागै और शालिचावल मूंग जव इन आदि पुराने अन्न और कडुवे शाक और जांगलदेशके प्राणीका मांस ये सब कुष्ठवालोंकों हितहैं ।

इति गौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां कुष्ठचिकित्सा ।

अथोदर्दकोठशीतपित्ताधिकारः ५०

अब इसके अनंतर उदर्दकोठ शीतपित्त इन्होंका अधिकार कहतेहै ।

(१)अभ्यङ्गः कटुतैलेन सेकश्चोष्णाम्बुभिस्ततः ।
उदर्दे वमनं कार्यं पटोलारिष्टवारिणा ॥ १ ॥
त्रिफलापुरकृष्णाभिर्विरेकश्चात्र शस्यते ।
त्रिफलां क्षौद्रसहितां पिबेद्वा नवकार्षिकाम् ।
विसर्पोक्तममृतादि भिषगत्रापि योजयेत् ॥ २ ॥
सितां मधुकसंयुक्तां गुडमामलकैः सह ।
सगुडं दीप्यकं यस्तु खादेत्पथ्यान्नभुङ्नरः ॥ ३ ॥
तस्य नश्यति सप्ताहादुदर्दः सर्वदेहजः ।
सिद्धार्थरजनीकल्कैः प्रपुन्नाडतिलैः सह ॥ ४ ॥
कटुतैलेन संमिश्रमेतदुद्वर्तनं हितम् ।
दूर्वानिशायुतो लेपः कच्छुपामाविनाशनः ॥५ ॥
क्रिमिदद्रुहरश्चैव शीतपित्तहरः परः ।
अग्निमन्थभवं मूलं पिष्टं पीतं च सर्पिषा ॥ ६ ॥
शीतपित्तोदर्दकोठान्सप्ताहादेव नाशयेत् ।
कुष्ठोक्तं च क्रमं कुर्यादम्लपित्तघ्नमेव च ॥ ७ ॥

उदर्दोक्तां क्रियां चापि कोठरोगे समासतः ।
सर्पिः पीत्वा महातिक्तं कार्यं शोणितमोक्षणम्८

(१ उदर्दादौ अभ्यंगादि) कडुवा तेलसें मालिस कर पीछे गरम पानीसें सेक और परवल तथा नींबका रससें वमन ये सब उदर्दरोगमें करने । त्रिफला गूगल पीपल इन्होंसें जुलाब यहां श्रेष्ठ है । अथवा नवकर्षभर त्रिफला और शहदकों पीवै । विसर्परोगमें कहा अमृतादिकोंभी वैद्य यहां प्रयुक्त करै । मुलहटीसहित मिश्रीकों तथा आंवलोंसहित गुडकों खावै । गुडसहित अजमोदकों पथ्यसेवी मनुष्य खावै तो उसका सात दिनमें संपूर्ण शरीरमें उपजाउ-दर्द नष्टहो जाताहै । सरसों हलदी पुवाडके बीज तिल इन्होंकों कडुआ तेलमें मिलाकिया उवटना हित है। दूब और हलदीकों मिलाके किया लेप कच्छदादकों और पामकों नाशता है और कृमि दाद और शीतपित्तकों निश्चय नाशताहै । अरनीकी जडकों पीस घृतके संग पीवै तो शीतपित्त उदर्द कोष्ठ इन्होंकों सात दिनोंमें नाशताहै । कुष्ठमें कहा कर्म और अम्लपित्तनाशक कर्म और उदर्द-रोगमें कही क्रियाकों विस्तारसें कोठरोगमें करै । महातिक्तघृतका पान करकै रक्तका निकासना उचित है।

(२)निम्बस्य पत्राणि सदा घृतेन
धात्रीविमिश्राण्यथवोपयुञ्ज्यात् ।
विस्फोटकोठक्षतशीतपित्तं
कण्डूस्रपित्तं सहसा च जह्यात् ॥ ९॥
क्षारसिन्धूत्थतैलैश्च गात्राभ्यङ्गं प्रयोजयेत् ।
गम्भारिकाफलं पक्वं शुष्कमुत्स्वेदितं पुनः॥१०॥
क्षीरेण शीतपित्तघ्नं खादितं पथ्यसेविना ।
तैलोद्वर्तनयोगेन योज्य एलादिको गणः ॥ ११ ॥
शुष्कमूलकयूषेण कौलत्थेन रसेन वा ।
भोजनं सर्वदा कार्यं लावतित्तिरिजेन वा॥१२॥
शीतलान्यन्नपानानि बुद्ध्वा दोषगतिं भिषक् ।
उष्णानि वा यथाकालं शीतपित्ते प्रयोजयेत् १३

इत्युदर्दकोठशीतपित्तचिकित्सा ।

(२ निंबपत्रसेवनादि) सब कालमें नींबके पत्तोंके संग अथवा आंवलासें मिलाके खावै तो विस्फोट कोठ क्षत शीतपित्त खाज अम्लपित्त इन्होंकों वेगसे नाशताहै । जवाखार सेंधानमक तेल इन्होंकरकै शरीरपर मालिस करनी । पकाहुआ कंभारीका फलकों सुखाय और उत्स्वेदित कर दूधके संग पथ्यसेवी मनुष्य खावै तो शीतपित्तका नाश होताहै । एलादिगणके ओषधोंका तेलमें उवटना बनाय योजित करना । सुखाहुआ सहोंजनाका रसके संग अथवा कुलथीका रसके संग सबकालमें लावा और तीतरके मांसका रसके संग भोजन करना। वैद्य दोषकी गतिकों जान शीतल अथवा गरम अन्नपान शीतपित्तमें समयके अनुसार प्रयुक्त करै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तार्थसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां शीतपित्तचिकित्सा ।

अथाम्लपित्ताधिकारः ५१

अब अम्लपित्तका अधिकार कहतेहै ।

(१)वान्तिं कृत्वाम्लपित्ते तु विरेकं मृदु कारयेत् ।
सम्यग्वान्तविरिक्तस्य सुस्निग्धस्यानुवासनम् १॥
आस्थापनं चिरोद्भूते देयं दोषाद्यपेक्षया ।
क्रिया शुद्धस्य शमनी ह्यनुबन्धव्यपेक्षया ॥ २ ॥
दोषसंसर्गजे कार्या भेषजाहारकल्पना ।
ऊर्ध्वगं वमनैर्धीमानधोगं रेचनैर्हरेत् ।
तिक्तभूयिष्ठमाहारं पानं वापि प्रकल्पयेत् ॥ ३ ॥
यवगोधूमविकृतीस्तीक्ष्णसंस्कारवर्जिताः ।
यथास्वं लाजशक्तून्वा सितामधुयुतान्पिबेत् ॥४॥
निस्तुषयववृषधात्री
क्वाथस्त्रिसुगन्धिमधुयुतः पीतः ।
अपनयति चाम्लपित्तं
यदि भुङ्क्ते मुद्गयूषेण ॥ ५ ॥
कफपित्तवमीकण्डूज्वरविस्फोटदाहहा ।
पाचनो दीपनः क्वाथः शृङ्गवेरपटोलयोः ॥ ६ ॥
पटोलं नागरं धान्यं क्वाथयित्वा जलं पिबेत् ।
कण्डुपामार्तिशूलघ्नं कफपित्ताग्निमान्द्यजित् ॥७॥
पटोलविश्वामृतरोहिणीकृतं
जलं पिबेत्पित्तकफोच्छ्रये तु ।
शूलभ्रमारोचकवह्निमान्द्य-
दाहज्वरच्छर्दिनिवारणं तत् ॥ ८ ॥
यवकृष्णापटोलानां क्वाथं क्षौद्रयुतं पिबेत् ।
नाशयेदम्लपित्तं च अरुचिं च वमिं तथा ॥९॥

(१ अम्लपित्ते सामान्योपायाः) अम्लपित्तमें वमन कराके पीछे कोमल जुलाब कराना । अच्छीतरह वांत और विरिक्त और अच्छीतरह स्निग्ध कियाकों अनुवासन कराना । बहुतकालसें उपजे अम्लपित्तमें दोषआदिकी अपेक्षासें आस्थापन करना । शुद्धक्रियाकों अनुबंधकी व्यपेक्षाकरके शमन करनेवाली क्रिया करनी । दोषोंके मिलापमें ओषध और भोजनकी कल्पना करनी । ऊर्ध्वगत अम्लपित्तकों बुद्धिमान् वमनोंसें और अधोगत अम्लपित्तकों जुलाबसें हरै । अत्यंत कडुवा भोजन और पानकों प्रकल्पित करै । तीक्ष्ण संस्कारसें वर्जित करी जव और गेहूंकी विकृतिकों अथवा यथायोग्य मिश्री और शहदसें युत करै । धानकी खीलोंके सत्तुवोंकों पीवै । तुषरहित जव वांसा आंवला इन्होंके क्वाथमें दालचिनी इलायची तेजपातका चूर्ण और शहद डाल पीवै और जो मूंगका यूपके संग भोजन करै तो अम्लपित्तकों नाशता है । और कफ पित्त छर्दि ज्वर विस्फोट और दाह इन्होंकों नाशता है । अदरक और परवलका क्वाथ पाचन और दीपन है । परवल सोंठ धनियां इन्होंका क्वाथ बनाय जलकों पीवै तो खाज पामा शूल कफ पित्त मंदाग्नि इन्होंकों जीतता है । परवल सोंठ वाराहीकंद इन्होंके क्वाथकों पित्तकफकी अधिकतावाले अम्लपित्तमें पीवै तो शूल भ्रम अरोचक मंदाग्नि दाह ज्वर छर्दि इन्होंकों दूर करताहै । जव पीपल परवल इन्होंके क्वाथमें शहद डाल पीवै तो अम्लपित्त अरुचि और छर्दिका नाश होताहै ।

(२)वासामृतापर्पटकनिम्बभूनिम्बमार्कवैः ।
त्रिफलाकुलकैः क्वाथः सक्षौद्रश्चाम्लनाशनः १०
फलत्रिकं पटोलं च तिक्ताक्वाथः सितायुतः ।
पीतः क्षीतकमध्वाक्तो ज्वरच्छर्द्यम्लपित्तजित् ॥
पथ्याभृङ्गरजश्चूर्णं युक्तं जीर्णगुडेन तु ।
जयेदम्लपित्तजन्यां छर्दिमन्नविदाहजाम् ॥ १२ ॥

(२ वासादशांगः) वासा गिलोय पित्तपापडा नींब चिरायता भंगरा त्रिफला परवल इन्होंके क्वाथमें शहद डाल पीवै तो अम्लपित्तका नाश होताहै । त्रिफला परवल कुटकी इन्होंके क्वाथमें मिश्री मुलहटी शहद डाल पीवै तो ज्वर छर्दि और अम्लपित्तकों जीतताहै । हरडै और भंगराके चूर्णकों पुराना गुडके संग खावै तो अम्लपित्तसें उपजी और अन्न विदाहसें उपजी छर्दिकों नाशता है ।

(३)वासानिम्बपटोल-
त्रिफलाशनयासयोजितो जयति ।
अधिककफाम्लपित्तं
प्रयोजितो गुग्गुलुः क्रमेण ॥ १३ ॥
छिन्नाखदिरयष्ट्याह्वदार्व्यम्भो वा मधुद्रवम् ।
सद्राक्षामभयां खादेत्सक्षौद्रां सगुडां च ताम् १४
कटुका सितावलेह्या पटोलविश्वं च क्षौद्रसंयुक्तम् ।
रक्तस्रुतौ च युक्त्या वा खण्डकूष्माण्डकं श्रेष्ठम् १५
पटोलधन्याकमहौषधाब्दैः
कृतः कषायो विनिहन्ति शीघ्रम् ।
मन्दानलं पित्तबलासदाह-
च्छर्दिज्वरामानिलशूलरोगान् ॥ १६ ॥
छिन्नोद्भवानिम्बपटोलपत्रं
पलत्रिकं सुक्वथितं सुशीतम् ।
क्षौद्रान्वितं पित्तमनेकरूपं
सुदारुणं हन्ति हि चाम्लपित्तम् ॥ १७ ॥

(३ वासादिगुग्गुलुः) वांसा नींब परवल त्रिफला आसना इन्होंमें योजित किया गूगल क्रमसें कफकी अधिकतावाला अम्लपित्तकों नाशता है । गिलोय खैर मुलहटी दारुहलदी इन्होंके क्वाथमें शहद डाल पीवै अथवा मुनक्कादाख और हरडैकों शहदसें तथा गुडसें युतकर खावै । कुटकीकों मिश्रीमें मिलाय चाटै । तथा परवल और सोंठकों शहदमें मिलाय चाटै रक्तके स्रावमें युक्तिसें खंडकूष्मांडक श्रेष्ठ है । परवल धनियां सोंठ नागरमोथा इन्होंसें बनाया क्वाथ मंदाग्नि पित्तकी खांसी दाह छर्दि ज्वर आमवात शूल इन रोगोंकों शीघ्र नाशता है । गिलोय नींब परवलके पत्ते इन्होंके बारह तोलेभर क्वाथकों शीतल कर उसमें शहद डाल पीवै तो अनेक प्रकारका पित्त और भयंकर अम्लपित्तकों नाशताहै ।

(४)पटोलत्रिफलानिम्बशृतं मधुयुतं पिबेत् ।
पित्तश्लेष्मज्वरच्छर्दिदाहशूलोपशान्तये ॥ १८ ॥
सिंहास्यामृतभण्डाकी क्वाथं पीत्वा समाक्षिकम् ।
अम्लपित्तं जयेज्जन्तुः कासं श्वासं ज्वरं वमिम् १९
वासाघृतं तिक्तघृतं पिप्पलीघृतमेव च ।
अम्लपित्ते प्रयोक्तव्यं गुडकूष्माण्डकं तथा॥२०॥

पक्तिशूलापहा योगास्तथा खण्डामलक्यपि ।
पिप्पलीमधुसंयुक्ता चाम्लपित्तविनाशिनी॥२१॥
जम्बीरस्वरसः पीतः सायं हन्त्यम्लपित्तकम् २२
गुडपिप्पलिपथ्याभिस्तुल्याभिर्मोदकः कृतः ।
पित्तश्लेष्मापहः प्रोक्तो मन्दमग्निं च दीपयेत् २३
हिङ्गु च कतकफलानि
चिञ्चात्वचो घृतं च पुटदग्धम् ।
शमयति तदम्लपित्त-
मम्लभुजो यदि यथोत्तरं द्विगुणम्॥२४॥
कान्तापात्रे वराकल्को व्युषितोऽभ्यासयोगतः ।
सिताक्षौद्रसमायुक्तः कफपित्तहरः स्मृतः॥२५॥

(४ पटोलादयः क्वाथाः) परवल त्रिफला नींब इन्होंके क्वाथमें शहद डाल पीवै तो पित्त कफ ज्वर छर्दि दाह शूल इन्होंकी शांति होतीहै । वांसा वाराहीकंद बडी कटेली इन्होंका क्वाथ बनाय उसमें शहद डाल पीवै तो अम्लपित्त खांसी श्वास ज्वर छर्दि इन्होंकों नाशताहै । वांसावृत तिक्तघृत और पिप्पलीघृत गुडकूष्मांडक ये सब अम्लपित्तमें प्रयुक्त करने । पक्तिशूलकों नाशनेवाले योग तथा खंडामलकी पीपल और शहदसें संयुक्त कर खावै तो अम्लपित्तकों नाशतीहै । सायंकालमें जंबीरीनींबूका रस पीवै तो अम्लपित्तकों नाशताहै । गुड पीपल और हरडै ये सब बराबरभाग ले गोली बनाय खावै तो पित्तकफकों नाशतीहै । और मंद अग्निकों दीप्त करतीहै । हींग निर्मलीके बीज अमलीकी छाल और घृत इन्होंकों पुटपाकमें दग्ध करै परंतु उत्तरोत्तर क्रमसें दुगने लेवै । अम्ल पदार्थकों भोजन करनेवाला खावै तो वह अम्लपित्तकों नाशताहै । कांतलोहाके पात्रमें त्रिफलाका कल्ककों रात्रिभर धर मिश्री और शहद डाल अभ्यासके योगसें कफपित्तकों हरनेवाला कहाहै ।

(५)एकोंऽशः पञ्चनिम्बानां द्विगुणो वृद्धदारकः ।
शक्तुर्दशगुणो देयः शर्करामधुरीकृतः ॥ २६ ॥
शीतेन वारिणा पीतः शूलं पित्तकफोत्थितम् ।
निहन्ति चूर्णं सक्षौद्रमम्लपित्तं सुदारुणम् २७॥

(५ पंचनिंबादिचूर्णम्) नींबके पत्ते फल जड फल अंकुर इन्होंका १ भाग भिदारा २ भाग सत्तू १० भाग इन्होंमें खांड डाल शीतल पानीसें पीवै तो पित्तकफका शूलकों और शहदसें भयंकर अम्लपित्तकों नाशताहै ।

(६)आशुभक्तोदकैः पिष्टमभ्रकं तत्र संस्थितम्२८
कन्दमाणास्थिसंहारखण्डकर्णरसैरथ ।
तण्डुलीयं च शालिं च कालमारिषजेन च॥२९॥
वृश्चीरबृहतीभृङ्गलक्ष्मणाकेशराजजैः ।
पेषणं भावनं कुर्यात्पुटं चानेकशो भिषक् ॥३०॥
यावन्निश्चन्द्रकं तत्स्याच्छुद्धिरेवं विहायसः ।
स्वर्णमाक्षिकशालिं च ध्मातं निर्वापितं जले३१
त्रैफलेऽथ विचूर्ण्यैवं लौहं कान्तादिकं पुनः ।
बृहत्पत्रकरीकर्णत्रिफलावृद्धदारजैः ॥ ३२ ॥
माणकन्दास्थिसंहारशृङ्गवेरभवै रसैः ।
दशमूलीमुण्डितिकातालमूलीसमुद्भवैः ॥ ३३ ॥
पुटितं साधुयत्नेन शुद्धिमेवमयो व्रजेत् ।
वशिरं श्वेतवाट्यालं मधुपर्णी मयूरकम् ॥३४॥
तण्डुलीयं च वर्षाह्वं दत्वाधश्चोर्ध्वमेव च ।
पाक्यं सजीर्णमण्डूरं गोमूत्रेण दिनत्रयम्॥३५॥
अन्तर्बाष्पमदग्धं च तथा स्थाप्यं दिनत्रयम् ।
विचूर्णितं शुद्धिरियं लोहकिट्टस्य दर्शिता॥३६॥
जयन्त्या वर्धमानस्य आर्द्रकस्य रसेन तु ।
वायस्याश्चानुपूर्व्यैवं मर्दनं रसशोधनम् ॥ ३७ ॥
गन्धकं नवनीताख्यं क्षुद्रितं लौहभाजने ।
त्रिधा चण्डातपे शुष्कं भृङ्गराजरसाप्लुतम्॥३८॥
ततो वह्नौ द्रवीभूतं त्वरितं वस्त्रगालितम् ।
यत्नाद्भृङ्गरसे क्षिप्तं पुनः शुष्कं विशुध्यति ॥३९॥

(६ लेहकिट्टआदिधातुशोधनम्) चावलोंके पानीसें अभ्रककों पीस उसमें स्थितकर पीछे मानकंद कांडवेल अरंड दालचिनी इन्होंके रसोंकरकै और चौलाई शालिचावल माठा रक्तसांठी बडीकटेली भंगरा लक्ष्मणाबूंटी भंगरा इन्होंकरकै वारंवार भावना और पुट देवै । जबतक चंद्रिकारहित भोडल होवै तब उसकी शुद्धि जाननी । सोनामाखी चौलाई इन्होंकों धमाकै त्रिफला पानीमें बुझाय फिर कांतलोहा आदिकों श्वेतलोध गजपीपल दालचिनी त्रिफला भिदारा इन्होंके रसोंसें और मानकंद कांडवेल अदरक इन्होंके रसोंकरकै और दशमूल मूंडी मुशली इन्होंके रसोंकरकै अच्छीतरह जतनसें पुटित करै । ऐसे लोहाकी शुद्धि होतीहै । गजपीपल श्वेत खरैंहटी मुलहटी श्वेत ऊंगा चौलाई सांठी इन्होंकों नीचै और ऊपर देकै पुराना मंडूरकों गोमूत्रके संग तीन दिन प-

कावै। भांफ भीतरही रहै और बहुत दग्ध नहीं हो तैसे तीन दिन स्थापित करै। फिर चूर्ण करै। लोहाका मलकी यही शुद्धि कहीहै। अरनी भिदारा अदरखका रस और मकोह इन्होंमें पाराकों मर्दन करै ऐसे पारा शुद्ध होताहै। गंधक नौनीघृत इन्होंकों लोहाके पात्रमें घाल तीनवार तेज घाममें सुखावै और भंगराकेरससें युत करै। पीछे अग्निसें ताव दे शीघ्र वस्त्रसें छान फिर जतनसे भंगराके रसमें गेर फिर सुखानेसें शुद्ध होताहै।

(७)गगनाद्विपलं चूर्णं लौहस्य पलमात्रकम्।
लौहकिट्टपलार्धं च सर्वमेकत्र संस्थितम् ॥४०॥
मण्डूकपर्णीवशिरतालमूलीरसैः पुनः।
वरीभृङ्गकेशराजकालमारिषजैरथ ॥ ४१ ॥
त्रिफलाभद्रमुस्ताभिः स्थालीपाकाद्विचूर्णितम्।
रसगन्धकयोः कर्षौ प्रत्येकं ग्राह्यमेकतः ॥ ४२ ॥
तन्मर्दनाच्छिलाखल्वे यत्नतः कज्जलीकृतम्।
वचा चव्यं यमानी च जीवकेशरपुष्पिका ॥४३॥
व्योषं मुस्तं विडङ्गं च ग्रन्थिकं खरमञ्जरी।
त्रिवृता चित्रको दन्ती सूर्यावर्तोऽसितस्तथा ४४
भृङ्गमाणककन्दश्च खण्डकर्णक एव च।
दण्डोत्पलाकेशराजकालावकडकोऽपि च ॥४५॥
एषामर्धपलं ग्राह्यं पटघृष्टं सुचूर्णितम्।
प्रत्येकं त्रिफलायाश्च पलार्धं पलमेव च ॥ ४६ ॥
एतत्सर्वं समालोड्य लोहपात्रे तु भावयेत्।
आतपे दण्डसंघृष्टमार्द्रकस्य रसैस्त्रिधा ॥ ४७ ॥
तद्रसेन शिलापिष्टं गुडिकां कारयेद्भिषक्।
बदरास्थिनिभां शुष्कां सुनिगुप्तां निधापयेत्४८
तत्प्रातर्भोजनादौ तु सेवितं गुडिकात्रयम्।
अम्लोदकानुपानं च हितं मधुरवर्जितम् ॥४९॥
दुग्धं च नारिकेलं च वर्जनीयं विशेषतः।
भोज्यं यथेष्टमिष्टं च वारि भक्ताम्लकाञ्जिकम्५०
हन्त्यम्लपित्तं विविधं शूलं च परिणामजम्।
पाण्डुरोगं च गुल्मं च शोथोदरगुदामयान्५१॥
यक्ष्माणं पञ्चकासांश्च मन्दाग्नित्वमरोचकम्।
प्लीहानं श्वासमानाहमामवातं सुदारुणम्।
गुडी क्षुधावती सेयं विख्याता रोगनाशिनी५२

(७ क्षुधावतीगुटिका) भोडलका चूर्ण ८ तोले लोहा ४ तोले लोहाका मल २ तोले इन सबकों एक जगह स्थित कर मजीठ गजपीपल मुशली इन्होंके रसोंकरकै फिर शतावरी भंगरा नीला भंगरा काला सुरमा माठा इन्होंके रसोंकरकै और पीछे त्रिफला नागरमोथा भद्रमोथा इन्होंके संग स्थालीपाकसें चूर्णितकर पारा और गंधक एक एक तोला लेना। उन्होंकों खरलमें घोंटनेसें कज्जली बनाय। वच चव्य अजमान जीवक सौंफ सोंठ मिरच पीपल नागरमोथा वायविडंग पीपलामूल तुलसी निशोत चीता जमालगोटाकी जड नीला भंगरा कैथ भंगरा मानकंद रातालु सहदेई जलभंगरा कालीनिशोत ये सब दो दो तोले इन सबका चूर्ण कर कपडामाहकर छानै। और हरडै बहेडा आंवला ये प्रत्येक दो दो तोले तथा चार चार तोले इन सबोंकों समालोडितकर लोहाके पात्रमें भावना देवै। घाममें अदरकके रसविषै तीनवार दंडासें घोटै। उसका रससें शिलापर पीस वैद्य गोलियां बनावै। वेरकी गुठलीके समान और सूखी गोलियोंकों अच्छीतरह गुप्त कर स्थापित करै। प्रभातका भोजन आदिमें उन तीन गोलियोंकों सेवै। अम्लरसका अनुपान करै और मधुर पदार्थकों वर्जित करै। दूध और नारियलकोंभी विशेषकरकै वर्जित करै। इच्छाके अनुसार और मनोवांछित जल चावलकी कांजी आदिकों सेवै। अनेक प्रकारका अम्लपित्त और परिणामजशूल पांडुरोग गुल्मरोग शोजा उदररोग गुदरोग राजरोग पांचप्रकारकी खांसी मंदाग्नि अरोचक तिल्लीरोग श्वास अफारा आमवात यह क्षुधावती गोली इन रोगोंकों नाशनेवाली कहीहै।

(८)पिष्ट्वाजाजीं सधन्याकं घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
कफपित्तारुचिहरं मन्दानलवमिं जयेत् ॥ ५३ ॥

(८ जीरकाद्यं घृतम्) जीरा और धनियांकों पीस कर ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। यह घृत कफ पित्त अरुचि इन्होंकों नाशताहै। मंदाग्निकों और छर्दिकों जीतता है।

(९)पटोलशुण्ठ्योः कल्काभ्यां केवलं कुलकेन वा।
घृतप्रस्थं विपक्तव्यं कफपित्तहरं परम् ॥ ५४ ॥

(९ पटोलशुण्ठीघृतम्) परवल और सोंठके कल्कोंकरकै अथवा एक कोईसा कल्ककरकै ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। यह घृत कफपित्तकों निश्चयसें हरताहै।

(१०)पिप्पलीक्वाथकल्केन घृतं सिद्धं मधुप्लुतम्।
पिबेत्तत्प्रातरुत्थाय अम्लपित्तनिवृत्तये ॥ ५५ ॥

(१० पिप्पलीघृतम्) पीपलका क्वाथ और कल्क करकै घृतकों सिद्ध कर प्रभातमें ऊठ शहद मिलाय पीवै तो अम्लपित्त दूर होताहै ।

(११)द्राक्षामृताशक्रपटोलपत्रैः
सोशीरधात्रीघनचन्दनैश्च ।
त्रायन्तिकापद्मकिरातधान्यैः
कल्कैः पचेत्सर्पिरुपेतमेभिः ॥ ५६ ॥
युञ्जीत मात्रां सह भोजनेन
सर्वर्तुपानेऽपि भिषग्विदध्यात् ।
बलासपित्तं ग्रहणीं प्रवृद्धां
कासाग्निसादं ज्वरमम्लपित्तम् ।
सर्वं निहन्याद्घृतमेतदाशु
सम्यक्प्रयुक्तं ह्यमृतोपमं च ॥ ५७ ॥

(११ द्राक्षाद्यं घृतम्) दाख गिलोय इंद्रजव परवलके पत्ते खस आंवला नागरमोथा चंदन त्रायमाण पद्माक चिरायता धनियां इन्होंका कल्कसें युत किया घृतकों पकावै । भोजनके संग मात्राकों प्रयुक्त करै और सब ऋतुवोंके पानमेंभी वैद्य देवै । कफ पित्त भयंकर ग्रहणीदोष खांसी मंदाग्नि ज्वर अम्लपित्त अच्छीतरह प्रयुक्त किया यह घृत इन सबकों नाशता है और अमृतके समान है ।

(१२)शतावरीमूलकल्कं घृतप्रस्थं पयःसमम् ।
पचेन्मृद्वग्निना सम्यक् क्षीरं दत्वा चतुर्गुणम्५८
नाशयेदम्लपित्तं च वातपित्तोद्भवान्गदान् ।
रक्तपित्तं तृषां मूर्च्छां श्वासं सन्तापमेव च ५९

इत्यम्लपित्तचिकित्सा ।

(१२ शतावरीघृतम्) शतावरीकी जडका और कल्क जलबराबर ले उसमें ६४ तोलेभर घृत और चौगुना दूध मिलाय कोमल अग्निसें पकावै । अम्लपित्तकों और वातपित्तसें उपजे रोगोंकों और रक्तपित्त तृषा मूर्च्छा श्वास संताप इन्होंकों नाशता है ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां अम्लपित्तचिकित्सा ।

अथ विसर्पविस्फोटाधिकारः ५२

अब विसर्प और विस्फोटका अधिकार कहतेहै ।

(१)विरेकवमनालेपसेचनासृग्विमोक्षणैः ।
उपाचरेद्यथादोषं विसर्पानविदाहिभिः ॥ १ ॥
पटोलपिचुमर्दाभ्यां पिप्पल्या मदनेन च ।
विसर्पे वमनं शस्तं तथैवेन्द्रयवैः सह ॥ २ ॥
त्रिफलारससंयुक्तं सर्पिस्त्रिवृतया सह ।
प्रयोक्तव्यं विरेकार्थे विसर्पज्वरशान्तये ॥ ३ ॥
रसमामलकानां वा घृतमिश्रं प्रदापयेत् ।
तृणवर्जं प्रयोक्तव्यं पञ्चमूलचतुष्टयम् ।
प्रदेहसेकसर्पिर्भिर्विसर्पे वातसम्भवे ॥ ४ ॥

(१ विसर्पविस्फोटे उपायाः) विरेचन वमन लेप सेचन रक्तका निकासना इन्होंकरकै और नहीं दाह करनेवाले पदार्थोंसें जैसा दोष हो उसके अनुसार विसर्पोंकी चिकित्सा करै । परवल और नींबकरकै पीपल और मैनफलकरकै तथा इंद्रजवोंके साथ विसर्परोगमें वमन श्रेष्ठ है विसर्पसें उपजा ज्वरकी शांतिकेलिये त्रिफलाका रससें तथा निशोतसें जुलाबके अर्थ घृत प्रयुक्त करना । अथवा आंवलोंके रसमें घृत मिलाय प्रयुक्त करै तथा तृणपंचकसें वर्जित पंचमूलचतुष्टय प्रयुक्त करना । वातसें उपजे विसर्पमें लेप सेक और घृतसें चिकित्सा करनी ।

(२)कुष्ठं शताह्वासुरदारुमुस्ता-
वाराहिकुस्तुम्बुरुकृष्णगन्धाः ।
वातेर्कवंशार्तगलाश्च योज्याः
सेकेषु लेपेषु तथा घृतेषु ॥ ५ ॥
प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठापद्मकोशीरचन्दनैः ।
सयष्टीन्दीवरैः पित्ते क्षीरपिष्टैः प्रलेपयेत् ॥ ६ ॥
कशेरुशृङ्गाटकपद्मगुन्द्राः
सशैवलाः सोत्पलकर्दमाश्च ।
वस्त्रान्तराः पित्तकृते विसर्पे
लेपा विधेयाः सघृताः सुशीताः ॥ ७ ॥
प्रदेहाः परिषेकाश्च शस्यन्ते पञ्चवल्कलैः ।
पद्मकोशीरमधुकचन्दनैर्वा प्रशस्यते ॥ ८ ॥
पित्ते तु पद्मिनीपङ्कं पिष्टं वा शङ्खशैवलम् ।
गुन्द्रामूलं तु शुक्तिर्वा गैरिकं वा घृतान्वितम् ९॥

न्यग्रोधपादा गुन्द्रा च कदलीगर्भ एव च ।
बिसग्रन्थिकलेपः स्याच्छतधौतघृताप्लुतः ॥१०॥
हरेणवो मसूराश्च मुद्गाश्चैव सशालयः ।
पृथक्पृथक्प्रदेहाः स्युः सर्वैर्वा सर्पिषा सह ११॥
द्राक्षारग्वधकाश्मर्यत्रिफलैरण्डपीलुभिः ।
त्रिवृद्धरीतकीभिश्च विसर्पे शोधनं हितम् ॥१२॥

(२ वाते कुष्ठादियोजनम्) कूट शतावरी देवदार नागरमोथा वाराहीकंद नेपाली धनियां सहोंजन तालीसपत्र नीला कोरंटा ये सब सेक लेप और घृतमें युत करने । कमल मंजीठ पद्माक खस चंदन मुलहटी कृष्णकमल इन्होंकों दूधसें पीस पित्तके विसर्पमें लेप करै । कसेरु सिंगाडा कमल भद्रमोथा सेवंती सुपेद कमल कर्दम इन्होंकों पीस वस्त्रमांहसें छान घृतसें युत कर पित्तके विसर्पमें लेप करना । पंचवल्कलोंसें लेप और सेक करना श्रेष्ठ है । अथवा पद्माक खस मुलहटी चंदन इन्होंसें लेप करना श्रेष्ठ है । पित्तके विसर्पमें कमलिनीके कर्दमकों अथवा शंख और सेवंतीकों पीस अथवा भद्रमोथाकी जडकों पीस अथवा सींपीकों पीस अथवा गेरूकों घृतसें युत और शीतल कर पित्तके विसर्पमें लेप करै । वडकी जड मोथाकी अथवा मैंहदीकी जड कापूर कमलकी डंडी जठोना इन्होंकों पीस १०० वार धोयाहुआ घृतमें मिलाय लेप करै । रेणुकबीज मसूर मूंग शालिचावल इन्होंकों अलग अलग अथवा मिलाकै समघृतसें युतकर लेप करने । दाख अमलतास कंभारी त्रिफला अरंड पीलु निशोत हरडै इन्होंकरकै शोधन करना विसर्पमें हित है ।

(२)गायत्रीसप्तपर्णाब्दवासारग्वधदारुभिः ।
कुटन्नटैर्भवेल्लेपो विसर्पे श्लेष्मसम्भवे ॥ १३ ॥
अजाश्वगन्धा शरलाथ काला
सैकेशिका वाप्यथवाजश्रृङ्गी ।
गोमूत्रपिष्टो विहितः प्रलेपो
हन्याद्विसर्पं कफजं सुशीघ्रम् ॥ १४ ॥
मदनं मधुकं निम्बं वत्सकस्य फलानि च ।
वमनं च विधातव्यं विसर्पे कफसम्भवे ॥ १५॥
त्रिफला पद्मकोशीरसमङ्गाकरवीरकम् ।
फलमूलमनन्ता च लेपः श्लेष्मविसर्पहा ॥ १६ ॥
आरग्वधस्य पत्राणि त्वचः श्लेष्मातकोद्भवाः ।
शिरीषपुष्पकामाची हिता लेपावचूर्णनैः ॥१७॥

(३ खदिरलेपादि) खैर सातला नागरमोथा वांसा अमलतास देवदार टेंभुर्नी इन्होंका लेप कफके विसर्पमें हित है । काकडासिंगी आसगंध श्वेतनिशोत कालानिशोत पहाडमूल अथवा मेंढासींगी इन्होंकों गोमूत्रमें पीस शीतलही किया लेप कफके विसर्पकों शीघ्र नाशताहै । मैनफल मुलहटी नींब इंद्रजव इन्होंकरकै वमन कफके विसर्पमें करना । त्रिफला पद्माक खस मंजीठ कनेर नलशरकी जड धमासा इन्होंका लेप कफके विसर्पकों नाशताहै । अमलतासके पत्ते भोंकरकी छाल शिरसके फूल मकोह इन्होंकरकै लेप और अवचूर्ण करना हित है ।

(४)मुस्तारिष्टपटोलानां क्वाथः सर्वविसर्पनुत् ।
धात्रीपटोलमुद्गानामथवा घृतसंप्लुतः ॥ १८ ॥
अमृतविषपटोलं निम्बकल्कैरुपेतं
त्रिफलखदिरसारं व्याधिघातं च तुल्यम् ।
क्वथितमिदमशेषं गुग्गुलोर्भागयुक्तं
जयति विषविसर्पान्कुष्ठमष्टादशाख्यम् ॥ १९ ॥

(४ नवकषायगुग्गुलुः) नागरमोथा नींब परवल इन्होंका क्वाथ सब विसर्पोंकों नाशताहै । अथवा आंवला परवल और मूंगका क्वाथ घृतसें संयुतकर वर्ता जावै तो विसर्पोंकों नाशताहै । वाराहीकंद मीठातेलिया परवल नागरमोथा शातला खैर कृष्णवेत नींबके पत्ते हलदी दारुहलदी इन्होंका लेप अनेक प्रकारका विष विसर्प कुष्ठ विस्फोट खाज मसूरी शीतपित्त और ज्वर इन्होंकों नाशताहै ।

(५)अमृतवृषपटोलं मुस्तकं सप्तपर्णं
खदिरमसितवेत्रं निम्बपत्रं हरिद्रे ।
विविधविषविसर्पान्कुष्ठविस्फोटकण्डू-
रपनयति मसूरीं शीतपित्तं ज्वरं च ॥ २० ॥
पटोलामृतभूनिम्बवासकारिष्टपर्पटैः ।
खदिराब्दयुतैः क्वाथो विस्फोटार्तिज्वरापहः २१

(५ अमृतादिक्वाथः) गिलोय वृष परवल नागरमोथा सातला खैर शुभ्रवेतस नीमके पत्ते हलदी दारुहलदी इन्होंका क्वाथ अनेकप्रकारके विष विसर्प कुष्ठ विस्फोट कंडू मसूरिकारोग शीतपित्त और ज्वर इन्होंकों नाशताहै । परवल गिलोय भूनिंब वासक अरिष्ट पापडा खैर और नागरमोथा इन्होंका काढा बनाय सेवन करनेसें विस्फोटपीडा और ज्वर इन्होकों हरताहै ।

(६) पटोलत्रिफलारिष्टगुडूचीमुस्तचन्दनैः ।
समूर्वा रोहिणी पाठा रजनी सदुरालभा २२
कषायं पाययेदेतच्छ्लेष्मपित्तज्वरापहम् ।
कण्डूत्वग्दोषविस्फोटविषवीसर्पनाशनम् ॥२३॥

भूनिम्बवासाकटुकापटोल-
फलत्रिकाचन्दननिम्बसिद्धः ।
विसर्पदाहज्वरवक्त्रशोष-
विस्फोटतृष्णावमिनुत्कषायः ॥ २४ ॥

सकफे पित्तयुक्ते तु त्रिफलां योजयेत्पुरैः २५
दुरालभां पर्पटकं पटोलं कटुकां तथा ।
सोष्णं गुग्गुलुसंमिश्रं पिबेद्वा खदिराष्टकम् २६
कुण्डलीपिचुमर्दाम्बु खदिरेन्द्रयवाम्बु वा ।
विस्फोटं नाशयत्याशु वायुर्जलधरानिव ॥२७॥
चन्दनं नागपुष्पं च तण्डुलीयकशारिवे ।
शिरीषवल्कलं जातीलेपः स्याद्दाहनाशनः २८
शुकतरुनतमांसी रजनी पद्मा च तुल्यानि ।
पिष्टानि शीततोयेन लेपः स्यात्सर्वविस्फोटे २९
शिरीषमूलमञ्जिष्ठाचव्यामलकयष्टिकाः ।
सजातीपल्लवक्षौद्रा विस्फोटे कवलग्रहाः ॥३०॥
शिरीषोदुम्बरौ जम्बु सेकालेपनयोर्हिताः ।
श्लेष्मातकत्वचो वापि प्रलेपाश्च्योतने हिताः ३१

शिरीषयष्टीनतचन्दनैल-
मांसीहरिद्राद्वयकुष्ठबालैः ।
लेपो दशाङ्गः सघृतः प्रदिष्टो
विसर्पकण्डूज्वरशोथहारी ॥ ३२ ॥

शिरीषोशीरनागाह्वहिंस्राभिर्लेपनाद्द्रुतम् ।
विसर्पविषविस्फोटाः प्रशाम्यन्ति न संशयः ३३

(६ पटोलादिकषायः) परवल त्रिफला नींब गिलोय नागरमोथा चंदन मरोरफली हरडै पाठा हलदी धमासा इन्होंका काथ बनाय पीवै । यह कफ और पित्तज्वरकों नाशताहै । और खाज खालका दोष विस्फोट विष विसर्प इन्होंकों नाशताहै । चिरायता वांसा कुटकी परवल त्रिफला चंदन नींब इन्होंमें सिद्ध किया काथ विसर्प दाह ज्वर मुखका शोष विस्फोट तृषा छर्दि इन्होंकों नाशताहै । कफपित्तसें युत हुये विसर्पमें गूगलके संग त्रिफलाकों युक्त करै । धमासा पित्तपापडा परवल कुटकी इन्होंकों युक्त करै अथवा खदिराष्टककों गूगलसें युतकर पीवै । अथवा गिलोय नींब नेत्रवाला खैर इंद्रजव इन्होंका काथ विस्फोटकों शीघ्र नाशताहै । जैसे वायु बादलोंकों । चंदन नागकेशर चौलाई शारिवा शिरसकी छाल चमेली इन्होंका लेप दाहकों नाशताहै । शिरस तगर वालछड हलदी मंजीठ ये सब बराबरभाग ले शीतल पानीसें पीस सब प्रकारके विस्फोटमें लेप होताहै । शिरसकी जड मंजीठ चव्य आंवला मुलहटी चमेलीके पत्ते शहद इन्होंके कवलग्रह विस्फोटमें हित हैं । शिरस गूलर जामन ये सेकमें और लेपमें हित हैं । अथवा भोंकरकी छालभी लेपमें और आश्चोतनमें हित है । शिरस मुलहटी तगर चंदन इलायची वालछड हलदी दारुहलदी कूट नेत्रवाला घृतसहित यह दशांगलेप विसर्प खाज ज्वर शोजा इन्होंकों नाशताहै । शिरस खस नागकेशर वालछड इन्होंकरकै लेपसें विसर्प विष विस्फोट ये शीघ्र नष्ट होते हैं इसमें संशय नहीं ।

(७)वृषखदिरपटोलपत्रनिम्ब-
त्वगमृतामलकीकषायकल्कैः ।
घृतमभिनवमेतदाशु पक्वं
जयति विसर्पगदान्सकुष्ठगुल्मान् ॥ ३४॥

(७ वृषाद्यं घृतम्) वांसा खैर परवलके पत्ते नींब दालचिनी गिलोय आंवला इन्होंका काथ और कल्कमें नवीनघृतकों पकावै । यह विसर्प कुष्ठ गुल्म इन रोगोंकों नाशताहै ।

(८)पटोलसप्तच्छदनिम्बवासा
फलत्रिकं छिन्नरुहाविपक्वम् ।
तत्पञ्चतिक्तं घृतमाशु हन्ति
त्रिदोषविस्फोटविसर्पकण्डूः ॥ ३५ ॥

(८ पंचतिक्तघृतम्) परवल सातला नींब वांसा त्रिफला गिलोय इन्होंमें पकाया घृत पंचतिक्त है। वह त्रिदोषका विस्फोट विसर्प खाज इन्होंकों नाशताहै ।

(९)पद्मकं मधुकं लोध्रं नागपुष्पस्य केशरम् ।
द्वे हरिद्रे विडङ्गानि सूक्ष्मैला तगरं तथा ॥३६॥
कुष्ठं लाक्षापत्रकं च सिक्थकं तुत्थमेव च ।
बहुवारः शिरीषश्च कपित्थफलमेव च ॥ ३७ ॥
तोयेनालोड्य तत्सर्वं घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।

यांश्च रोगान्निहन्याद्धै तान्निबोध महामुने ॥३८॥
सर्पकीटाखुदष्टेषु लूतामूत्रकृतेषु च ।
विविधेषु स्फोटकेषु तथा कुष्ठविसर्पिषु ॥ ३९॥
नाडीषु गण्डमालासु प्रभिन्नासु विशेषतः ।
अगस्त्यविहितं धन्यं पद्मकं तु महाघृतम् ॥४०॥

(९ महापद्मकघृतम्) पद्माक मुलहटी लोध नागरकेसर हलदी दारुहलदी वायविडंग छोटी इलायची तगर कूट लाख तालीसपत्र मौंम नीलाथोथा भोंकर शिरस और कैथका फल इन सबकों पानीसें पीस उसमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । जिन रोगोंकों यह नाशता है उनकों हे महामुने मुजसें जान । सर्प कीडा और मूसाका डंक मकडी मूत्रकृत रोग अनेक प्रकारके स्फोटक कुष्ठ विसर्प नाडीव्रण गंडमाला इन सबमें विशेषकरकै अगस्त्यजीका रचा महापद्मकघृत हित और उत्तम है ।

(१०)रोगस्तु स्नायुकाख्यो यः क्रिया तत्र विसर्पवत्
गव्यं सर्पिस्त्र्यहं पीत्वा निर्गुण्डीस्वरसं त्र्यहम् ।
पिबेत्स्नायुकमत्युग्रं हन्त्यवश्यं न संशयः ॥ ४१ ॥
शोभाञ्जनमूलदलैः
काञ्जिकपिष्टैः सलवणैर्लेपः ।
हन्ति स्नायुकरोगं
यद्वा मोचकत्वचो लेपः ॥ ४२ ॥
इति विसर्पविस्फोटचिकित्सा ।

(१० स्नायुके निर्गुंडीरसादि) स्नायुकाख्य अर्थात् नाहरवा रोग जो है उसमें विसर्परोगकीतरह क्रिया करनी । गायके घृतकों तीन दिन पीकै संभालके स्वरसकों तीन दिन पीवै तब भयंकर स्नायुककों निश्चय नाशताहै इसमें संशय नहीं । सहोंजनाकी जड और पत्तोंकों कांजीसें पीस सेंधानमक मिलाय किया लेप अथवा मोखावृक्षकी छालका किया लेप स्नायुकरोगकों नाशताहै ।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां विसर्पविस्फोटचिकित्सा ।

अथ मसूर्यधिकारः ५३

अब मसूरिकारोगका अधिकार कहतेहै ।

(१)सर्वासां वमनं पथ्यं पटोलारिष्टवासकैः ।
कषायैश्च वचावत्सयष्ट्याह्वफलकल्कितैः ॥ १ ॥
सक्षौद्रं पाययेद्ब्राह्म्या रसं वा हैलमोचिकम् ।
वान्तस्य रेचनं देयं शमनं चाबले नरे ॥ २ ॥
सुपवीपत्रनिर्यासं हरिद्राचूर्णसंयुतम् ।
रोमान्तीज्वरविस्फोटमसूरीशान्तये पिबेत् ॥ ३ ॥
उभाभ्यां हृतदोषस्य विशुष्यन्ति मसूरिकाः ।
निर्विकाराश्चाल्पपूयाः पच्यन्ते चाल्पवेदनाः॥४॥
कण्टाकुम्भाडुमूलं क्वथनविधिकृतं
हिङ्गुमाषैकयुक्तं
पीतं बीजं जयायाः सघृतमुषितवाः
पीतमद्भिः सिकव्या ।
मायामूलं शिफा वा दमनकुसुमजा
सोषणा वाथ पूतिः
योगा वास्यम्बुनैते प्रथममथगदे
दृश्यमाने प्रयोज्याः ॥ ५ ॥
उद्धृत्य मुष्टिमाच्छाद्य भेषजं यत्प्रयुज्यते ।
तन्मुष्टियोगमित्याहुर्मुष्टियोगपरायणाः ॥ ६ ॥

(१ मसूरिकासामान्योपायाः) सब प्रकारकी मसूरियोंमें परवल नींब वांसा इन्होंके क्वाथ और वच कूडाकी छाल मुलहटी मैनफल इन्होंके कल्कोंसें वमन करना हितहै । ब्राह्मीके रसमें शहद डाल पीवै अथवा जल ब्राह्मीका रस अथवा बथुवाके रसकों पीवै । वमन कराकै जुलाब देना और निर्बल मनुष्यकों शमन देवै । कलोंजी जीराके पत्तोंके रसमें हलदीका चूर्ण डाल पीवै तो रोमांती ज्वर विस्फोट मसूरी इन्होंकी शांति होतीहै । वमन और जुलाब इन दोनोंसें हृतदोषवालाके विकारसें रहित और अल्प रादवाली और अल्प पीडावाली ऐसी मसूरिका पकजातीहै । सुपेद कटेलीकंद गिलोय इन्होंका क्काथ बनाय उसमें एक मासाभर हींग डाल अथवा घृतसहित कौंचके बीजोंकों पीवै । तथा सेकंटीकी जडकों पीवै तथा महाकंद वनस्पतिकी जडको अथवा दमनाकी जडकों अथवा मिरचोंसहित करंजुवाकों पीवै । ये सब योग दृश्यमान प्रथम इस रोगमें पीने । उठाकै मुष्टिको आच्छादित कर जो औषध प्रयुक्त किया जाताहै उसकों मुष्टियोगमें परायण वैद्य मुष्टियोग कहतेहैं ।

(२)उष्ट्रकण्टकमूलं वाप्यनन्तामूलमेव वा ।
विधिगृहीतं ज्येष्ठाम्बु पीतं हन्ति मसूरिकाम् ७

तद्वच्छृगालकण्टकमूलं च व्युषिताम्भसा ।
मसूरीं मूर्च्छितो हन्ति गन्धकार्धस्तु पारदः॥८॥
निशाचिञ्चाच्छदे शीतवारिपीते तथैव तु ।
यावत्संख्यामसूर्यङ्गे तावद्भिः शेलुजैर्दलैः ॥ ९ ॥
छिन्नैरातुरनाम्ना तु गुणी व्येति न वर्धते ।
व्युषितं वारि सक्षौद्रं पीतं दाहगुणीहरम्॥१०॥
शेलुत्वक्कृतशीताम्भःसेको वा कायशोषणे ।
उग्राज्यवंशनीलीयववृषकार्पासकीकसब्राह्मी ११
स्वरसमयूरकलाक्षाधूपो रोमान्तिकादिहरः ।
तर्पणं वातजायां प्राग्लाजचूर्णैः सशर्करैः ॥१२॥
भोजनं तिक्तयूषैश्च प्रतुदानां रसेन वा ।
द्विपञ्चमूलं रास्ना च दार्व्युशीरं दुरालभा १३
सामृतं धान्यकं मुस्तं जयेद्वातसमुत्थिताम् ।

(२ उग्रमूलांबुपानादि) ऊंट कठाराकी जडकों अथवा धमासाकी जडकों तथा विधिसें गृहीत किया चावलोंका पानी मसूरिकाकों नाशताहै । भूईकोहला वेलवृक्षकी जड इन्होंकों वासी पानीकेसाथ लेवै । अथवा गंधकसे आधा पारा ले मिलाकै मूर्छित किया मसूरीकों नाशताहै । हलदी और अमलीके पत्तोंकों शीतल पानीके संग पीवै। जितनी संख्याकी मसूरी अंगमें हों उतनेही भोंकरके पत्तोंकों काटनेसें गुणी मसूरिका नष्ट होतीहै । और वढती नहीं । भोंकरवृक्षकी छालका क्राथकों शीतलकर और रात्रिभर धर शहदसें युत कर पीवै अथवा शरीरके शोषमें सेक करै। वच घृत नील इंद्रजव वांसा कपासकी जड विनोलाकी गिरि और ब्राह्मीका स्वरस सुपेद ऊंगा लाख इन्होंका धूप रोमांतिकआदि मसूरिकाओंकों नाशताहै । वातकी मसूरिकामें प्रथम धानकी खीलोंके चूर्णमें खांड डाल तर्पण करावै और कडुवे पदार्थोंके यूषसें अथवा चोंचसें चुगनेवाले पक्षियोंका मांसके रससें भोजन करावै । दशमूल रास्ना दारुहलदी खस धमासा वाराहीकंद धनियां नागरमोथा इन्होंसें वातकी मसूरिकाकों जीतै ।

(३)गुडूचीं मधुकं रास्नां पञ्चमूलं कनिष्ठकम् १४
चन्दनं काश्मर्यफलं वलामूलं विकङ्कतम् ।
पाककाले मसूर्यां तु वातजायां प्रयोजयेत्॥१५॥
द्राक्षाकाश्मर्यखर्जूरपटोलारिष्टवासकैः ।
लाजामलकदुस्पर्शैः सितायुक्तैश्च पैत्तिके ॥ १६ ॥
शिरीषोदुम्बराश्वत्थशेलुन्यग्रोधवल्कलैः ।
प्रलेपः सघृतः शीघ्रं व्रणविस्फोटदाहहा ॥ १७॥
दुरालभां पर्पटकं भूनिम्बं कटुरोहिणीम् ।
श्लैष्मिक्यां पित्तजायां वा पाने निःक्राथ्य दापयेत्

(३ वातजायां गुडूच्यादि) गिलोय मुलहटी रास्ना लघुपंचमूल चंदन कंभारीका फल खरैंहटीकी जड वेहेकल इन सबकों वातकी मसूरिकाविषै पाककालमें प्रयुक्त करै । दाख कंभारीफल खजूरिया परवल नींव वांसा धानकी खील आंवला धमासा इन्होंमें मिश्री मिलाय पित्तकी मसूरिकामें प्रयुक्त करै । शिरस गूलर पीपल भोंकर वड इन्होंकी छालकों घृतमें पीस किया लेप घाव और विस्फोटके दाहकों शीघ्र नाशताहै । धमासा पित्तपापडा चिरायता कुटकी इन्होंका क्राथ बनाय कफकी मसूरिकामें अथवा पित्तकी मसूरिकामें पान करावै ।

(४)निम्बं पर्पटकं पाठां पटोलं कटुरोहिणीम् ।
वासां दुरालभां धात्रीमुशीरं चन्दनद्वयम्॥१९॥
एष निम्बादिकः ख्यातः पीतः शर्करया युतः ।
हन्ति त्रिदोषमसूरीं ज्वरवीसर्पसम्भवाम् ॥२०॥
उत्थिता प्रविशेद्या तु पुनस्तां वाह्यतो नयेत्२१

(४ निंबादि) नींव पित्तपापडा पाठा परवल कुटकी वांसा धमासा आंवला खस दोनों चंदन यह निंबादि कहाहै । खांडसें युत कर पीया जावै तो त्रिदोषकी मसूरिका ज्वर और विसर्पसें उपजी मसूरिकाकों नाशताहै । जौनसी मसूरी उठकर फिर भीतर प्रवेश करै उसकों बाहिर निकासना उचित है ।

(५)पटोलकुण्डलीमुस्तवृषधन्वयवासकैः ।
भूनिम्बनिम्बकटुकापर्पटैश्च शृतं जलम् ॥ २२ ॥
मसुरीं शमयेदामां पक्कां चैव विशोषयेत् ।
नातः परतरं किञ्चिद्विस्फोटज्वरशान्तये ॥२३॥

पटोलमूलारुणतण्डुलीयकं
पिवेद्धरिद्रामलककल्कसंयुतम् ।
मसूरिकास्फोटविदाहशान्तये
तदेव रोमान्तिवमिज्वरापहम् ॥ २४ ॥
पटोलमूलारुणतण्डुलीयकं
तथैव धात्रीखदिरेण संयुतम् ।
पिवेज्जलं सुक्वथितं सुशीतलं
मसूरिकारोगविनाशनं परम् ॥ २५ ॥

(५ पेटादालिजलम्) परवल गिलोय नागरमोथा वांसा धमासा जवासा चिरायता नींब कुटकी और पित्त-पापडा इन्होंका क्वाथ बनावै । यह कच्ची और पक्की मसूरीकों शोषताहै । विस्फोट ज्वरकी शांतिके वास्ते इस्सें परै अन्य ओषध कोई नहींहै । परवलकी जड मंजीठ चौलाई इन्होंके क्वाथमें हलदी और आंवलाका क्वाथ डाल पीवै । मसूरी और विस्फोटकी तथा दाहकी शांति होतीहै । और वही रोमांतिका छर्दि ज्वर इन्होंकों नाशतीहै। परवलकी जड मंजीठ चौलाई इन्होंके क्वाथमें आंवला और खैरका क्वाथ डाल शीतल बनाय पीवै तो मसूरिकारोगका निश्चय नाश होताहै ।

(६)खदिरत्रिफलारिष्टपटोलामृतवासकैः ।
क्वाथोऽष्टकाङ्गो जयति रोमान्तिकमसूरिकाः ।
कुष्ठवीसर्पविस्फोटकण्ड्वादीनपि तानतः ॥ २६ ॥

(६ खदिराष्टकः) खैर त्रिफला नींब परवल वाराहीकंद वांसा इन्होंका अष्टांगक्वाथ रोमांतिकमसूरिकाओंकों जीतताहै । और कुष्ठ विसर्प विस्फोट खाज इन आदिकोंभी नाशताहै ।

(७)अमृतादिकषायस्तु जयेत्पित्तकफात्मिकाम् ।
सौवीरेण तु संपिष्टं मातुलुङ्गस्य केशरम् ॥ २७॥
प्रलेपात्पातयत्याशु दाहं चाशु नियच्छति ।
पाददाहं प्रकुरुते पिडका पादसंभवा ॥ २८ ॥
तत्र सेकं प्रशंसन्ति बहुशस्तण्डुलाम्बुना ।
पाककाले तु सर्वास्ता विशोषयति मारुतः २९॥
तस्मात्संबृंहणं कार्यं न तु पथ्यं विशोषणम् ।
गुडूची मधुकं द्राक्षा मोरटं दाडिमैः सह॥३०॥
पाककाले तु दातव्यं भेषजं गुडसंयुतम् ।
तेन पाकं व्रजत्याशु न च वायुः प्रकुप्यति ३१॥
लिहेद्वा वादरं चूर्णं पाचनार्थं गुडेन तु ।
अनेनाशु विपच्यन्ते वातपित्तकफात्मिकाः ३२॥

(७ अमृतादयः क्वाथाः) अमृतादिक्वाथ पित्तकफकी मसूरीकों जीतताहै । बिजोराकी केसरकों कांजीसें पीस लेप करनेसें मसूरिका नष्ट होतीहै और दाह शीघ्र शांत होताहै । पैरमें उपजी पिडका पैरमें दाहकों करतीहै तिसमें चावलोंके पानीसें बहुतवार सेक करना श्रेष्ठ है । पकनेके कालमें सब उन मसूरिकाओंकों वायु सुखाताहै तिस कारणसें पुष्टिकारक पथ्य देना और विशोषणरूप पथ्य नहीं देना । गिलोय मुलहटी दाख ईखकी जड अनार इन्होंमें गुड डाल पकनेके कालमें देना । तिसकरकै मसूरी शीघ्र पकतीहै । और वायु कुपित नहीं होता अथवा पकानेके अर्थ बेरोंके चूर्णकों गुडमें मिलाय खावै । इसकरकै वात पित्त और कफकी मसूरी शांत होतीहै ।

(८)शूलाध्मानपरीतस्य कम्पमानस्य वायुना ।
धन्वमांसरसाः शस्ता ईषत्सैन्धवसंयुताः ॥३३॥
दाडिमाम्लरसैर्युक्ता यूषाः स्युररुचौ हिताः ।
पिवेदम्भस्तप्तशीतं भावितं खदिराशनैः ॥ ३४ ॥
शौचे वारि प्रयुञ्जीत गायत्रीबहुवारजम् ।
जातीपत्रं समञ्जिष्ठं दार्वीपूगफलं शमीम् ॥ ३५॥
धात्रीफलं समधुकं कथितं मधुसंयुतम् ।
मुखरोगे कण्ठरोगे गण्डूषार्थं प्रशस्यते ॥ ३६ ॥
अक्ष्णोः सेकं प्रशंसन्ति गवेधुमधुकाम्बुना ।
मधुकं त्रिफलामूर्वादार्वीत्वङ्नीलमुत्पलम् ॥ ३७॥
उशीरलोध्रमञ्जिष्ठाः प्रलेपाश्च्योतने हिताः ।
नश्यन्त्यनेन दृग्जाता मसूर्यो न द्रवन्ति च ३८
पञ्चवल्कलचूर्णेन क्लेदिनीमवचूर्णयेत् ।
भस्मना केचिदिच्छन्ति केचिद्गोमयरेणुना॥३९॥
क्रिमिपातभयाच्चापि धूपयेच्छरलादिना ।
वेदनादाहशान्त्यर्थं स्रुतानां च विशुद्धये ॥४०॥
सगुग्गुलं वराक्वाथं युञ्ज्याद्वा खदिराष्टकम् ।
कृष्णाभयारजो लिह्यान्मधुना कण्ठशुद्धये॥ ४१॥
अथाष्टाङ्गावलेहो वा कवडश्चार्द्रकादिभिः ।
पञ्चतिक्तं प्रयुञ्जीत पानाभ्यञ्जनभोजनैः ॥ ४२ ॥
कुर्याद्व्रणविधानं च तैलादीन्वर्जयेच्चिरम् ।
विषघ्नैः सिद्धमन्त्रैश्च प्रसृज्यात्तु पुनः पुनः ।
तथा शोणितसंसृष्टाः काश्चिच्छोणितमोक्षणैः४३

(८ धन्वमांसरसादि) शूल और अफारासें पीडितकों तथा वायुकरकै कंपित हुआकों जांगलदेशका जीवके मांसके रसमें कछुक सेंधानमक डाल पीना श्रेष्ठ है । अरुचिमें अनार और बिजोराके रससें युत किये यूष हित हैं । खैर और आसनासें युत किया पानीकों तपाकै फिर शीतल बनाय पीवै । और शोधन करनेकेवास्तै खैर ल्हेसुवा इनके क्वाथका जल उत्तम है । जावित्री मंजीठ दारुहलदी सुपारी जांटी आंवला महुआ इन्होंका क्वाथ बनाय शहद

डाल मुखरोग और कंठरोगमें गंडूष (कुल्ले) करवाने। कासतृण महुआ इन्होंके जलसें नेत्रोंका सेक करना अच्छाहै। और महुआ त्रिफला मरोडफली दारुहलदी तेजपात नीला कमल खस लोध मंजीठ ये सब औषधी नेत्रोंके लेपमें और अर्क निचोडनेमें उत्तम कहीहै । इस औषधीसें नेत्रमें उत्पन्न हुई मसूरिका नष्ट होतीहै । और झिरती नहीं। क्लेदवाली गीली मसूरिकामें पंचवल्कल अर्थात् वड पीपल गूलर पिलषन वेत इन्होंकी वक्कलके चूर्णकों बुरकावै। अथवा इस रोगमें भस्म बुरकावै अथवा सूखा गोवरकी धूली बुरकावै। क्रिमि जीव गिरनेके भयमें सरल आदिकोंकी धूप देनी योग्यहै । त्रिफलाके क्राथमें गूगल अथवा खदिराष्टकचूर्ण मिलाय सेक करनेसें पीडा और दाह शांत होतीहै। झिरती हुई मसूरिका शुद्ध होतीहै। पीपल हरडै इन्होंके चूर्णमें शहद डाल चाटनेसें कंठकी शुद्धि होतीहै अथवा अष्टांगचूर्णका अवलेह और अदरक आदिकोंका कवल धारण करना योग्यहै। और पान मालिस भोजन इन्होंमें पंचतिक्तक्काथ देना। घाव भरनेका विधान करै। तैल आदिकोंकों वर्ज देवै। विषनाशक सिद्धमंत्रोंसें वारंवार झाडा दिवावे और रुधिरसें उत्पन्न हुई मसूरिकाओंका रुधिर निकलावे।

(९)निशाद्वयोशीरशिरीषमुस्तकैः
सलोध्रभद्रश्रियनागकेशरैः।
सस्वेदविस्फोटविसर्पकुष्ठ-
दौर्गन्ध्यरोमान्तिहरः प्रदेहः ॥ ४४ ॥
बिम्ब्यतिमुक्तकाऽशोकप्लक्षवेतसपल्लवैः।
निशि पर्युषितः क्राथो मसूरीभयनाशनः ॥४५॥
चैत्रासितभूतदिने रक्तपताकान्विता स्नुहीभवने।
धवलितकलशन्यस्ता पापरुजो दूरतो धत्ते॥४६॥

इति मसूरीचिकित्सा।

(**९ हरिद्रादिप्रदेहः**) दोनों हलदी खस शिरस नागरमोथा लोध चंदन नागकेशर इन्होंका लेप करनेसें स्वेदरोग विस्फोटक विसर्प कुष्ठ दुर्गंध रोमांच इन रोगोंका नाश होताहै। कडुई तोरी टेंभुरनीवृक्ष अशोक पिलषन वेत इन्होंके पत्ते इनकों रात्रिमें जलमें भिगोय प्रातःकाल इससें धोवनेसें मसूरिकारोग दूर होताहै। चैत्रकृष्णपक्षकी चतुर्दशीकों थोहरके वृक्षकों अपनें घरमें ला उसे सफेद कलशपैं स्थापित करै और लाल पताकासें विभूषित करै तो मसूरिका दूर होवै।

इति वेरीनिवासिगौडवंशावतंसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्तशास्त्रिराजवैद्यविरचितायां चक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिकायां भाषाटीकायां मसूरिकाचिकित्सा।

अथ क्षुद्ररोगाधिकारः ५४

अब क्षुद्ररोगकों कहैंगे।

(१)तत्राजगल्लिकामामां जलौकाभिरुपाचरेत्।
शुक्तिसौराष्ट्रिकाक्षारकल्कैश्चालेपयेन्मुहुः ॥ १ ॥
कठिनां क्षारयोगैश्च द्रावयेदजगल्लिकाम्।
श्लेष्मविद्रधिकल्केन जयेदनुशयीं भिषक् ॥ २ ॥
विवृतामिन्द्रवृद्धां च गर्दभीं जालगर्दभम्।
इरिवेल्लिकां गन्धनामां जयेत्पित्तविसर्पवत् ॥३॥
मधुरौषधसिद्धेन सर्पिषा शमयेद्व्रणान्।
रक्तावसेकैर्बहुभिः स्वेदनैरपतर्पणैः ॥ ४ ॥
जयेद्विदारिकां लेपैः शिग्रुदेवद्रुमोद्भवैः।
पनसिकां कच्छपिकामनेन विधिना भिषक्॥५॥
साधयेत्कठिनानन्याञ्शोथान्दोषसमुद्भवान्।
अन्त्रालजीं कच्छपिकां तथा पाषाणगर्दभम्॥६॥
सुरदारुशिलाकुष्ठैः स्वेदयित्वा प्रलेपयेत्।
कफमारुतशोथघ्नो लेपः पाषाणगर्दभे ॥ ७ ॥

(**१ क्षुद्ररोगेषु सामान्योपायाः**) कच्चा अजगल्लिकारोगमें जोंक लगवानी चाहिये और सीपी फटकरी इन्होंके खारका वारंवार लेप करै। करडी अजगल्लिकासंज्ञक-फुन्सीकों क्षारयोगोंसें द्रव नरम करवावै। अनुशयी रोगकों कफकी विद्रधिमें कहेहुए कल्कसें जीतै। विवृता इंद्रवृद्धा गर्दभी जालगर्दभ इरिवेल्लिका इन फुन्सियोंके रोगोंमें पित्तके विसर्पमें कहाहुआ इलाज करै। और मधुर औषधोंमें पकाये हुए घृतसें घावोंकों भरै। विदारिकारोगमें फस्त खुलाना बहुत प्रकारके पसीनें दिवाने लंघन करवाना योग्य है। और सहोंजना देवदार इनकी छालका लेप करै। पनसिका और कच्छपिका फुन्सीरोगकी चिकित्साभी ऐसेही करै। अन्य दोषोंसें उत्पन्न हुए शोथ शोजेकोंभी इसीतरह दूर करै और अंत्रालजी कच्छपिका पाषाणगर्दभ इन रोगोंमें पसीना दिवाके देवदारु मनसिल कूट इन्होंका लेप करै। और पाषाणगर्दभ अर्थात् हा-

ढीकी संधिका सूजनरोगमें कफवातके शोथकों दूर करनेवाले लेपकों करै ।

(२)शस्त्रेणोद्धृत्य वल्मीकं क्षाराग्निभ्यां प्रसाधयेत् ।
मनःशिलालभल्लातसूक्ष्मैलागुरुचन्दनैः ॥ ८ ॥
जातीपल्लवकल्कैश्च निम्बतैलं विपाचयेत् ।
वल्मीकं नाशयेत्तद्धि बहुच्छिद्रं बहुस्त्रवम् ॥९॥
पाददारीषु च शिरां व्यधयेत्तलशोधनीम् ।
स्नेहस्वेदोपपन्नौ तु पादौ चालेपयेन्मुहुः ॥ १० ॥
मधूच्छिष्टवसामज्जाघृतक्षारैर्विमिश्रितैः ।
सर्जाख्यसिन्धूद्भवयोश्चूर्णं मधुघृताप्लुतम् ।
निर्मथ्य कटुतैलाक्तं हितं पादप्रमार्जनम् ॥ ११ ॥

(२ शस्त्राग्न्यादिप्रयोगाः) वल्मीकरोगकों शस्त्रसें उद्धृत करके क्षार और अग्निसें जला देवै । मनसिल भिलावा छोटी इलायची अगर चंदन जावित्री इन्होंके कल्कमें नींबतेलकों पकावै । यह तेल बहुत छिद्रोंवाले वल्मीकरोगकों दूर करताहै । पाददारीरोगोंमें तलवेकी नाडीकों विंधवावे और स्नेह स्वेद रोगसें पीडित हुए पैरोंकै मोंम वसा और मज्जाका घृत तीनों क्षार इन्होंका लेप करै । और राल समुद्रझाग इन्होंके चूर्णमें शहद घृत कडुआ तेल इनकों डाल मंथै । फिर पैरोंकै लेप करना हित है ।

(३)उपोदिकासर्षपनिम्बमोच-
कर्कारुकैर्वारुकभस्मतोये ।
तैलं विपक्वं लवणांशयुक्तं
तत्पाददारीं विनिहन्ति लेपात् ॥ १२ ॥
अलसेऽम्लैश्चिरं सिक्तौ चरणौ परिलेपयेत् ।
पटोलारिष्टकाशीसत्रिफलाभिर्मुहुर्मुहुः ॥ १३ ॥
करञ्जवीजं रजनी काशीसं मधुकं मधु ।
रोचना हरितालं च लेपोऽयमलसे हितः॥१४॥
लाक्षाभयारसालेपः कार्यं वा रक्तमोक्षणम् ।
जातीपत्रं च संमर्द्य दद्यादलसके भिषक् ॥१५॥

(३ उपोदिकाक्षारतैलम्) पोईशाक सिरसम नींब मोचरस तूंबी काकडी इन्होंकी भसके पानीमें तेलकों पकावे एक भाग नमक मिलावे । यह तेल लेप करनेसें पाददारीरोगकों दूर करताहै । पैरके अलसरोगमें खट्टे क्वाथोंसें वारंवार पैरोंकों सेकै । पीछे परवल नींब कसीस त्रिफला इन्होंका वारंवार लेप करै । करंजुवाका बीज हलदी कसीस महुआ शहद गोरोचन हरताल इन्होंका लेप करना अलसरोगमें हित है । लाख हरडै इन्होंके रसका लेप करै अथवा फस्त खुलावे अथवा जावित्रीकों घिसके अलसरोगमें लगाना हित है ।

(४)बृहतीरससिद्धेन तैलेनाभ्यज्य बुद्धिमान् ।
शिलारोचनकाशीसचूर्णैर्वा प्रतिसारयेत् ॥ १६ ॥
दहेत्कदरमुद्धृत्य तैलेन दहनेन वा ।
चिप्पमुष्णाम्बुना स्विन्नमुत्कृत्याभ्यज्य तं व्रणम्
दत्त्वा सर्जरसं चूर्णं बद्ध्वा व्रणवदाचरेत् ।
स्वरसेन हरिद्रायाः पात्रे कृष्णायसेऽभयाम् १८
घृष्ट्वा तज्जेन कल्केन लिम्पेच्चिप्पं पुनः पुनः ।
चिप्पे सटङ्कणास्फोतामूललेपो नखप्रदः ॥ १९ ॥
निम्बोदकेन वमनं पद्मिनीकण्टके हितम् ।
निम्बोदककृतं सर्पिः सक्षौद्रं पानमिष्यते ॥२०॥
पद्मनालकृतः क्षारः पद्मिनीं हन्ति लेपतः ।
निम्बारग्वधकल्कैर्वा मुहुरुद्वर्तनं हितम् ॥ २१ ॥
निलीपटोलमूलाभ्यां साज्याभ्यां लेपनं हितम् ।
जालगर्दभरोगे तु सद्यो हन्ति च वेदनाम् ॥२२॥

(४ प्रसारणादि) और बुद्धिमान वैद्य कटेलीके रसमें सिद्ध किये हुए तेलका लेप कर मनसिल गोरोचन कसीस इन्होंके चूर्णकों बुरकावे । कैरमें कदरसंज्ञक ग्रंथि होगयीहो उसे तेलसें अथवा अग्निसें जलादेवै । चिप्प अर्थात् खारुवाकों गरम जलसें पसीना दिवाय शस्त्रसें काटि तिस घावमें तेल लगाय रालका चूर्ण भरके बांध देवे । फिर व्रणकी तरह इलाज करै । हरडैको पोलादलोहेके खरलमें हलदीके स्वरसमें खरल करै । फिर घिसेहुए इस कल्कका लेप करनेसें चिप्परोग दूर होताहै । और सुहागा सफेद गोकर्णीकी जड इन्होंका लेप करनेसें चिप्परोग दूर होके नख उत्पन्न हो जाताहै । पद्मिनीकंटकरोग अर्थात् पद्मिनीसरीखे कांटे होजावें तो नींबके स्वरससें वमन कराना हित है । और नींबके स्वरसमें सिद्ध किया हुआ घृतमें शहद मिलाय पान करना हित है । पद्मिनीकी नालीका क्षारके लेप करनेसें पद्मिनीरोग दूर होताहै । अथवा नींब और अमलतासके कल्कका वारंवार उबटना मसलै । नील और परवलकी जडको पीस घृत मिलाय लेप करना हितहै ।

यह लेप जालगर्दभरोगमें शीघ्रही पीडाकों दूर करता है।

(५)अहिपूतनके धात्र्याः पूर्वं स्तन्यं विशोधयेत्।
त्रिफलाखदिरकाथैर्व्रणानां धावनं सदा॥ २३॥
करञ्जत्रिफलातिक्तैः सर्पिः सिद्धं शिशोर्हितम्।
रसाञ्जनं विशेषेण पानालेपनयोर्हितम्॥ २४॥
गुदभ्रंशे गुदं स्नेहैरभ्यज्याशु प्रवेशयेत्।
प्रविष्टे स्वेदयेच्चापि बद्धं गोष्फणया भृशम् २५
कोमलं पद्मिनीपत्रं यः खादेच्छर्करान्वितम्।
एतन्निश्चित्य निर्दिष्टं न तस्य गुदनिर्गमः॥२६॥
वृक्षाम्लानलचाङ्गेरीबिल्वपाठायवाग्रजम्।
तक्रेण शीलयेत्पायुभ्रंशार्तोऽनलदीपनम्॥ २७॥
गुदं च गव्यपसया म्रक्षयेदविशङ्कितः।
दुष्प्रवेशो गुदभ्रंशो विशत्याशु न संशयः॥२८॥
मूषिकाणां वसाभिर्वा गुदे सम्यक्प्रलेपनम्।
स्विन्नमूषिकमांसेन चाथवा स्वेदयेद्गुदम्॥ २९॥

(५ स्तन्यशोधनादि) चूंचियोंके अहिपूतनरोगमें पहले धायके दूधकों शुद्ध करै और त्रिफला तथा खैरके काथसें व्रणोंकों धोवै। करंजुवा त्रिफला नींब इन्होंमें सिद्ध किया हुआ घृत बालककों देना हित है। और विशेषकरके रसोतका पान अथवा लेप करना। गुदभ्रंश अर्थात् कांचि निकलनेमें गुदाकों तैल आदि स्नेहोंसें मसलसें भीतरकों प्रवेश करै। पीछे पसीना दिवाके गोष्फणा-यंत्रसें अच्छीतरह बांध देवै। जो पुरुष कमलिनीके कोमल २ पत्तोंकों खांडके संग खाताहै उसकों कभी गुदभ्रंशरोग नहीं होताहै। बिजोरा चीता चूका बेलगिरी पाठा जवाखार इन्होंकों तक्रमें मिलाय सेवन करनेसें गुदभ्रंशरोगवालेकी जठराग्नि तेज होतीहै। जिसकै अतिकठोर गुदभ्रंशरोग हो वह गौकी वसासें अपनी कांचिकों चुपरै तो निश्चय गुदभ्रंश दूर होय। मूंसियोंकी वसाका लेप करना अथवा सिजाये हुए मूंसीकी मांसका पसीना दिवानेसें गुदभ्रंश दूर होताहै।

(६)चाङ्गेरीकोलदध्यम्लनागरक्षारसंयुतम्।
घृतमुत्क्वथितं पेयं गुदभ्रंशरुजापहम्।
शुण्ठीक्षारावत्र कल्कौ शिष्टं तु द्रवमिष्यते ३०॥

(६ चांगेरीघृतम्) चूका बेर दही इन्होंकी कांजी सूंठि जवाखार इन्होंमें घृतकों पकावै फिर इस घृतके पीनेसें गुदभ्रंशरोग दूर होताहै। इस योगमें सूंठि जवाखार इन दो औषधोंका कल्क बनाके मिलावै। अन्य सब द्रव है।

(७)क्षीरे महत्पञ्चमूलं मूषिकामन्तवर्जिताम्।
पक्त्वा तस्मिन्पचेत्तैलं वातघ्नौषधसाधितम् ३१
गुदभ्रंशमिदं तैलं पानाभ्यङ्गात्प्रसाधयेत्॥ ३२॥

(७ मूषिकाद्यं तैलम्) आंतरहित मूंसीकों और बृहत्पंचमूलकों दूधमें पकावै। पीछे वातनाशक औषधोंमें सिद्धकिये हुए तेलकों इस दूधमें पकावै। यह तेल पीयेसें और मालिस करनेसें गुदभ्रंश अर्थात् कांचि निकलनेके रोगकों दूर करताहै।

(८)स्वेदोपनाहं परिकर्तिकायां
कृत्वा समभ्यज्य घृतेन पश्चात्।
प्रवेशयेच्चर्म शनैः प्रशिष्टे-
र्मांसैः सुखोष्णैरुपनाहयेच्च॥ ३३॥
स्नेहस्वेदैस्तथैवैनां चिकित्सेदवपाटिकाम्।
निरुद्धप्रकशे नाडीं द्विमुखीं कनकादिजाम् ३४
क्षिप्त्वा त्यक्त्वा चुल्लकादिस्नेहेन परिषेचयेत्।
तैलेन वा वचादारुगन्धैः सिद्धेन च त्र्यहात्३५
पुनः स्थूलतरा नाडी देया स्रोतोविवृद्धये।
शस्त्रेण सेवनीं त्यक्त्वा भित्वा व्रणवदाचरेत्३६
स्निग्धं च भोजनं वद्धे गुदेऽप्येष क्रियाक्रमः।
चर्मकीलं जतुमणिं मसकांस्तिलकालकान्॥३७॥
उद्धृत्य शस्त्रेण दहेत्क्षाराग्निभ्यामशेषतः।
रुबुनालस्य चूर्णेन घर्षी मसकनाशनः॥ ३८॥

(८परिकीर्तिकायाम्) लिंगके चामरोगमें उपनाहसंज्ञक पसीना दिवाय पीछे शनै २ चामकों प्रवेश कर सुखसें सुहातेहुए गरम २ मांसोंसें उपनाहसंज्ञक पसीना दिवावे। अवपाटिका अर्थात् लिंगकी चमडीका उतरनामें लिंगमें वायुसे निरुद्ध प्रकाशनामक रोग होनेमें उपनाहसंज्ञक पसीना दिवावै। अथवा चुल्लकादि स्नेहसें सेक करै अथवा वच दारुहलदी गंधक इन्होंमें सिद्ध किये हुए तेलसें तीन दिनतक सेक करै। और नाडीके स्रोतोंकी वृद्धिके वास्तै लिंगकी सीमनकों छोड अन्य जगह शस्त्रसें काट व्रणकी तरह चिकित्सा कर बांध देवै और चिकना भोजन खुलावे। यही विधि गुदाके रोगमें जानना। चर्मकीलक जतुमणि नाम

लहसुन मस्सा तिल इनकों शस्त्रसें उखाडके अग्नि और क्षारसें दग्ध कर देवै। अरंडकी नालीके चूर्णसें घिसनेसें मस्सा दूर होताहै। अथवा सांपकी कांचलीकी भस्म लगानेसें मस्सा दूर होताहै।

(८)निर्मोकभस्मघर्षाद्वा मसः शान्तिं व्रजेत्सदा।
युवानपिडकान्यच्छनीलिकाव्यङ्गशर्कराः ॥ ३९॥
शिराव्यधैः प्रलेपैश्च जयेदभ्यञ्जनैस्तथा।
लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिडकापहः ॥ ४० ॥
तद्वद्गोरोचनायुक्तं मरिचं मुखलेपतः।
सिद्धार्थकवचालोध्रसैन्धवैश्च प्रलेपनम् ॥ ४१ ॥
वमनं च निहन्त्याशु पिडकां यौवनोद्भवाम्।
व्यङ्गेषु चार्जुनत्वग्वा मञ्जिष्ठा वा समाक्षिका४२
लेपः सनवनीता वा श्वेताश्वखुरजा मसी।
रक्तचन्दनमञ्जिष्ठालोध्रकुष्ठप्रियङ्गवः ॥ ४३ ॥
वटाङ्कुरमसूराश्च व्यङ्गघ्ना मुखकान्तिदाः।
व्यङ्गानां लेपनं शस्तं रुधिरेण शशस्य च ॥४४॥
मसूरैः सर्पिषा पिष्टैर्लिप्तमास्यं पयोऽन्वितैः।
सप्ताहाच्च भवेत्सत्यं पुण्डरीकदलप्रभम् ॥ ४५ ॥
मातुलुङ्गजटासर्पिःशिलागोशकृतो रसः।
मुखकान्तिकरो लेपः पिडकातिलकालजित् ४६
नवनीतगुडक्षौद्रकोलमज्जप्रलेपनम्।
व्यङ्गजिद्वरुणत्वग्वा छागक्षीरप्रपेषिता ॥ ४७ ॥
जातीफलकल्कलेपो नीलिव्यङ्गादिनाशनः।
सायं च कटुतैलेनाभ्यङ्गो वक्त्रप्रसादनः ॥ ४८ ॥

(८ तारुण्यपिडिकासु) जवान अवस्थामें उपजी यौवनकी फुनसी झांई नीलिका व्यंग शर्करा इन रोगोंका इलाज शिरावेध लेप अभ्यंजन इन प्रकारोंसें करै। लोध धनियां वच इन्होंके लेप करनेसें यौवनकी पिडिका दूर होवे। अथवा गोरोचन काली मिरच इनके लेपसे दूर होवे। और सिरसम कवच लोध सेंधानमक इन्होंके लेप करनेसें अथवा वमन करानेसें यौवनकी पिडिका दूर हीवे। मुखके व्यंगरोगमें कौहवृक्षकी छाल मंजीठ शहद इनका लेप करना श्रेष्ठ है। अथवा सफेद घोडेके खुरकी भस्मकों नौंनी घृतमें मिलाय लेप करना। लाल चंदन मंजीठ लोध कूट मालकांगनी वडके अंकुर मसूर इन्होंका लेप करनेसें व्यंग दूर होताहै। और मुखकी कांति बढतीहै। शूसाके रुधिरका लेपसें व्यंग दूर होताहै। अथवा मसूरधान्यकों घृत और दूधमें पीस सात दिनतक लेप करनेसें व्यंग दूर होवै। कमलके पत्रसमान मुख होवै। अथवा विजोराकी जड घृत मनशिल गोवरका रस इनका लेप करनेसें मुखकी कांति बढती है। पिडिका तिल इन्होंका नाश होताहै। अथवा नौनीघृत गुड शहद वेरकी गुठली इन्होंका लेपसें व्यंग दूर होताहै। बकरीके दूधमें वरणाकी छालकों पीस मुखपै लेप करनेसें व्यंग दूर होताहै। अथवा जायफलके कल्कका लेप करनेसें नलिका और व्यंग दूर होताहै। तथा सायंकालमें कडुवा तेलकी मालिस करनेसें मुखकी कांति स्वच्छ होतीहै।

(९)कालीयकोत्पलामय-
दधिसरबदरास्थिमध्यफलिनीभिः।
लिप्तं भवति च वदनं
शशिप्रभं सप्तरात्रेण ॥ ४९ ॥
तुषरहितमसृणयव-
चूर्णसयष्टीमधुकलोध्रलेपेन।
भवति मुखं परिनिर्जित-
चामीकरचारुसौभाग्यम् ॥ ५० ॥
रक्षोघ्नशर्वरीद्वयं
मञ्जिष्ठागैरिकाह्वयैस्तु पयः।
सिद्धेन लिप्तमानन-
मुद्यद्विधुबिम्बवद्विभाति ॥ ५१ ॥
परिणतदधिशरपुंखैः
कुवलयदलकुष्ठचन्दनोशीरैः।
मुखकमलकान्तिकारी
भ्रुकुटीतिलकालकाञ्जयति ॥ ५२ ॥

(९ मुखकांतिकरा अन्ये उपायः) काला अगर कमल कूट दही शंखकी नाभि मालकांगनी इन्होंका सातदिनतक लेप करनेसें चंद्रमाके समान मुख होताहै। तुषरहित जवोंका चूर्ण कमलकी नाली मुलहटी महुआ लोध इन्होंका लेप करनेसें सुवर्णके समान कांतिवाला उत्तम मुख होजाताहै। शिरस दोनों हलदी मंजीठ गेरू इनकों भेडका दूधमें पकाय लेप करनेसें चंद्रमाके समान मुख होताहै। तगर दही शरपुंखा कमलके पत्ते कूट चंदन खश इन्होंका लेप करनेसें मुखकी कांति बढती है। भ्रुकुटी तिल इन्होंका नाश होताहै।

(१०)हरिद्राद्वययष्ट्याह्वकालीयककुचन्दनैः ।
प्रपौण्डरीकमञ्जिष्ठापद्मपद्मककुङ्कुमैः ॥ ५३ ॥
कपित्थतिन्दुकप्लक्षवटपत्रैः पयोऽन्वितैः ।
लेपयेत्कल्कितैरेभिस्तैलं वाभ्यञ्जनं चरेत् ॥ ५४ ॥
पिप्लवं नीलिकाव्यङ्गांस्तिलकान्मुखदूषिकान् ।
नित्यसेवी जयेत्क्षिप्रं मुखं कुर्यान्मनोरमम् ॥ ५५ ॥

(१० हरिद्राद्वयतैलम्) दोनों हलदी मुलहटी कालीयक लाल चंदन पतंग मजीठ कमल पदमाक केशर कैथ टेंटूवृक्ष पिलषन वड इन वृक्षोंके पत्ते इन्होंकों दूधमें पीस कल्क बनाय तिसमें तेलकों पकावै । इस तेलकी मालिस करनेसें पिप्लरोग नीलिकाव्यंग तिल मुखके दोष इन्होकों दूर करताहै । इस तेलका नित्य सेवन करनेसें शीघ्रही सुंदर मुख होजावे ।

(११)मधुकस्य कषायेण तैलस्य कुडवं पचेत् ।
कल्कैः प्रियङ्गुमञ्जिष्ठाचन्दनोत्पलकेशरैः ॥ ५६ ॥
कनकं नाम तत्तैलं मुखकान्तिकरं परम् ।
अभीरुनीलिकाव्यङ्गशोधनं परमर्चितम् ॥ ५७ ॥

(११ कनकतैलम्) मुहुआवृक्षके क्वाथमें सोलह तोले तेल मिलाय पीछे मालकांगनी मंजीठ चंदन कमल केशर इन्होंका कल्क मिलाय इस तेलकों पकावै । यह तेल मुखकी कांतिकों बढाताहै । नीलिका व्यंगमुखकी झांई इन्होंकों दूर करताहै ।

(१२)मञ्जिष्ठा मधुकं लाक्षा मातुलुङ्गं सयष्टिकम् ।
कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं तथा ॥ ५८ ॥
आजं पयस्तद्द्विगुणं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ।
नीलिकापिडकाव्यङ्गानभ्यङ्गादेव नाशयेत् ॥ ५९ ॥
मुखं प्रसन्नोपचितं वलीपलितवर्जितम् ।
सप्तरात्रप्रयोगेण भवेत्कनकसन्निभम् ॥ ६० ॥

(१२ मंजिष्ठादितैलम्) मंजीठ महुआ लाख विजौरा मुलहटी इन सबोंकों एक एक तोला प्रमाण ले सोलह तोले तेल और बत्तीस तोले बकरीका दूध लेवै फिर इन्होंकों शनै शनै मंद अग्निसें पकावै । यह तेल मालिससें नीलिका यौवनपिडिका व्यंग इन्होंका नाश करताहै । मुख स्वच्छ होवे । मुखकी गुलझठ दूर होवे । सात रात्रितक इसकी मालिस करनेसें सुवर्णके समान मुख होजावे ।

(१३)कुङ्कुमं चन्दनं लाक्षा मञ्जिष्ठा मधुयष्टिका ।
कालीयकमुशीरं च पद्मकं नीलमुत्पलम् ॥ ६१ ॥
न्यग्रोधपादाः प्लक्षस्य शुङ्गाः पद्मस्य केशरम् ।
द्विपञ्चमूलसहितैः कषायैः पलिकैः पृथक् ॥ ६२ ॥
जलाढकं विपक्तव्यं पादशेषमथोद्धरेत् ।
मञ्जिष्ठा मधुकं लाक्षा पत्तङ्गं मधुयष्टिका ॥ ६३ ॥
कर्षप्रमाणैरेतैस्तु तैलस्य कुडवं तथा ।
अजाक्षीरं तद्द्विगुणं शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥ ६४ ॥
सम्यक्पक्वं परं ह्येतन्मुखवर्णप्रसादनम् ।
नीलिकापिडकाव्यङ्गानभ्यङ्गादेव नाशयेत् ॥ ६५ ॥
सप्तरात्रप्रयोगेण भवेत्काञ्चनसन्निभम् ।
कुङ्कुमाद्यमिदं तैलमश्विभ्यां निर्मितं पुरा ॥ ६६ ॥

(१३ कुंकुमादितैलम्) केशर चंदन लाख मंजीठ मुलहटी दारुहलदी खश पद्माक नीला कमल वडकी डाढी पिलषनकी कोंपल कमलकेशर इन सबोंकों चार चार तोले लेवे । पीछे २५६ तोले जलमें दशमूलका क्वाथ बनाके उसमें इन औषधोंकों मिला देवे । फिर यह क्वाथ चतुर्थांश बाकी रहे तब उतार लेवे । पीछे मंजीठ महुआ लाख पतंग मुलहटी इनकों एक एक तोला ले कल्क बनाय सोलह तोले तेल मिलावे । बत्तीस तोले बकरीका दूध मिलावे और इस क्वाथकों मिलावे । फिर मंद अग्निसें शनै शनै इस तेलकों पकावे । अच्छी तरह पकाया हुआ यह तेल मुखके वर्णकों स्वच्छ करताहै । नीलिका पिडिका व्यंग ये सब दूर होतीहैं सातरात्रीतक इसकी मालिस करनेसें कांचनके समान मुख होजावे । यह कुंकुमादितेल पहले अश्विनीकुमारोंने रचा है ।

(१४)कुङ्कुम किंशुकं लाक्षा मञ्जिष्ठा रक्तचन्दनम् ।
कालीयकं पद्मकं च मातुलुङ्गस्य केशरम् ॥ ६७ ॥
कुसुम्भं मधुयष्टीकं फलिनी मदयन्तिका ।
निशे द्वे रोचना पद्ममुत्पलं च मनःशिला ॥ ६८ ॥
काकोल्यादिसमायुक्तैरेतैरक्षसमैर्भिषक् ।
लाक्षारसपयोभ्यां च तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ६९ ॥
कुङ्कुमाद्यमिदं तैलं चाभ्यङ्गात्काञ्चनोपमम् ।
करोति वदनं सद्यः पुष्टिलावण्यकान्तिदम् ।
सौभाग्यलक्ष्मीजननं वशीकरणमुत्तमम् ॥ ७० ॥

(१४ द्वितीयं कुंकुमादितैलम्) केशर केशू लाख मंजीठ लालचंदन दारुहलदी कमल विजौराकी केशर

कुसुंभा मुलहटी मालकांगनी मोगरी दोनों हलदी गोरोचन पद्माक, कमल मनशिल इन सबोंकों एक एक तोला लेवे और काकोली आदिगणके औषधोंकों लेवे। फिर इन्होंकों लाखका रस और बकरीके दूधमें पकावे फिर इसमें १ सेर तेलकों पकावे। यह कुंकुमादितेल मालिस करनेसें सुवर्णके समान मुख करताहै। तात्काल पुष्टि और कांतिकों बढाताहै सौभाग्य तथा लक्ष्मीकों बढाताहै उत्तम वशीकरण है।

(१५)मधुकं चन्दनं कङ्कु सर्षपं पद्मकं तथा।
कालीयकं हरिद्रा च लोध्रमेभिश्च कल्कितैः ॥७१॥
विपचेद्धि घृतं वैद्यस्तत्पक्कं वस्त्रगालितम्।
पादांशं कुङ्कुमं सिक्थं क्षिप्त्वा मन्दानले पचेत् ७२
तत्सिद्धं शिशिरे नीरे प्रक्षिप्याकर्षयेत्ततः।
तदेतद्वर्णकं नाम घृतं वर्णप्रसादनम् ॥ ७३ ॥
अनेनाभ्यासलिप्तं हि वलीभूतमपि क्रमात्।
निष्कलङ्केन्दुबिम्बाभं स्याद्विलासवतीमुखम् ७४

अरूंषिकायां रुधिरेऽवसिक्ते
शिराव्यधेनाथ जलौकसा वा।
निम्बाम्बुसिक्तैः शिरसि प्रलेपो
देयोऽश्ववर्चोरससैन्धवाभ्याम् ॥ ७५ ॥

पुराणमथ पिण्याकं पुरीषं कुक्कुटस्य वा।
मूत्रपिष्टं प्रलेपोऽयं शीघ्रं हन्यादरूंषिकाम् ॥७६॥
अरूंषिघ्नं भृष्टकुष्टचूर्णं तैलेन संयुतम्।

(१५ वर्णकघृतम्) मुलहटी चंदन मालकांगनी सिरसम कमल दारुहलदी हलदी लोध इन्होंका कल्क बनाय इस कल्कमें घृतकों पकाय पीछे इस घृतकों वस्त्रमांहके छान लेवे फिर चौथाई केंशर और मोंम मिलाके पीछे मंदाग्निसें शनैशनै पकाके शीतल जलमें छोडदेवे। तहां जमजावे तब उतार लेवे ऐसे यह वर्णकनामक घृत वर्णकों स्वच्छ करताहै। इसकों जो नियमसें लगावे उसके मुखकी वली गुलझट दूर होवें और स्त्रीका मुख निष्कलंक चंद्रमाके समान होजावे अरूंषिका अर्थात् वालोंकी जगह रूषापन होके तहां खाज हो उसमें नाडी वेधनसें अथवा जोंकसें रुधिरकों निकलावें पीछे नींबके जलसें झारै और घोडाकी लीद पारा सेंधानमक इन्होंका शिरमें लेप करै। अथवा पुरानी खल बुरगाकी वीट इन्होंकों गोमूत्रमें पीस लेप करनेसें शीघ्रही अरूंषिका रोग दूर होताहै। कूटकों भून चूर्ण बनाय तेलमें मिलाय लेप करनेसें अरूंषिका दूर होतीहै।

(१६)हरिद्राद्वयभूनिम्बत्रिफलारिष्टचन्दनैः।
एतत्तैलमरूंषीणां सिद्धमभ्यञ्जने हितम् ॥ ७७ ॥
दारुणे तु शिरां विध्येत्स्निग्धां स्विन्नां ललाटजाम्
अवपीडाशिरोवस्तीनभ्यङ्गांश्चावचारयेत् ॥ ७८ ॥
कोद्रवाणां तृणक्षारपानीयं परिधावने।
कार्यो दारुणके मूर्ध्नि प्रलेपो मधुसंयुतः ॥७९॥
प्रियालबीजमधुककुष्टमिश्रैः ससैन्धवैः।
काञ्जिकस्था त्रिसप्ताहं माषा दारुणकापहा ८०॥

सह नीलोत्पलकेशरयष्टी
मधुकतिलैः सदृशमामलकम्।
चिरजातमपि च शीर्षे
दारुणरोगं शमं नयति ॥ ८१ ॥

(१६ हरिद्राद्वयतैलम्) दोनों हलदी चिरायता त्रिफला नींब चंदन इन्होंके कल्कमें तेलकों पकावे इसकी मालिस करनेसें सब प्रकारकी अरूंषिका दूर होतीहै। दारुण अर्थात् शिरमें खाज होनेके रोगमें चिकनी कीहुई और पसीना दिवाईहुई मस्तककी नाडीकों वींधें और अवपीडन शिरकी बस्ति मालिस इनकों करै। और चौलोंके तृणका क्षारकों पानीमें मिलाय तिस्सें धोवे। इसी क्षारमें शहद मिलाय मस्तकमें मालिस करै चिरौंजीका बीज महुआ कूट इन्होंका लेप करना अथवा इक्कीस दिनतक कांजीमें भिगोये हुए उडदोंका लेप करना। नीलाकमल केशर मुलहटी महुआ तिल आंवला इन्होंका लेप करनेसें बहुत कालसें उपजा हुआ शिरका दारुण रोग दूर होताहै।

(१७)त्रिफलाद्या रजोमांसीमार्कवोत्पलशारिवैः।
ससैन्धवैः पचेत्तैलमभ्यङ्गादुक्थिकां जयेत् ॥८२॥
चित्रकं दन्तिमूलं च कोपातकीसमन्वितम्।
कल्कं पिष्ट्वा पचेत्तैलं केशदद्रुविनाशनम् ॥ ८३ ॥
गुञ्जाफलैः शृतं तैलं भृङ्गराजरसेन तु।
कण्डूदारुणहृत्कुष्ठकपालव्याधिनाशनम् ॥ ८४ ॥

(१७ त्रिफलाद्यं तैलम्) त्रिफलाका चूर्ण जटामांसी भंगरा कमल अनंतमूल सेंधानमक इन्होंमें सिद्ध किये हुए तेलकी मालिस करनेसें शिरमें उपजा दारुण रोग दूर होताहै। चीता जमालगोटाकी जड कडुवीतोरी इन्होंका

कल्क बनाय तिसमें कडुवे तेलकों पकावे। यह तेल वालोंके दद्रुवोंकों दूर करताहै। चिरमठी और भंगराका रसमें सिद्ध कियाहुआ तेल कंडू अर्थात् खाजि दारुण कुष्ठ कपालकी व्याधि इन्होंकों दूर करताहै।

(१८)भृङ्गराजत्रिफलोत्पलशारि
लोहपुरीषसमन्वितकारि।
तैलमिदं पच दारुणहारि
कुञ्चितकेशघनस्थिरकारि ॥ ८५ ॥
प्रपौण्डरीकमधुकपिप्पलीचन्दनोत्पलैः।
कार्षिकैस्तैलकुडवं तैर्द्विरामलकीरसः ॥ ८६ ॥
साध्यः सप्रतिमर्शः स्यात्सर्वशीर्षगदापहः।

(१८ भृंगराजतैलम्) भंगरा त्रिफला कमल लोहका मैल इन सबोंके कल्कमें सिद्ध कियाहुआ तेल शिरका दारुणरोगकों हरताहै और क्षीणवालोंके करडे दृढ स्थिर करताहै। सहस्रदल कमल महुआ पीपली चंदन कमल इन सबोंकों एक एक तोला प्रमाण ले सोलह तोले कडुवा तेल बत्तीस तोले आंवलाका रस मिलाय पीछे इस तेलकों पकावे। इसकी मालिस करनेसें शिरके संपूर्ण रोग दूर होतेहैं।

(१९)मालतीकरवीराग्निनक्तमालविपाचितम् ८७
तैलमभ्यञ्जने शस्तमिन्द्रलुप्तापहं परम्।
इदं हि त्वरितं हन्ति दारुणं नियतं नृणाम् ८८॥
धात्र्याम्रमज्जलेपात्स्यात्स्थिररोरुस्निग्धकेशता।
इन्द्रलुप्ते शिरां विद्धा शिलाकासीसतुत्थकैः८९॥
लेपयेत्परितः कल्कैस्तैलं चाभ्यञ्जने हितम्।
कुटन्नटशिखीजातीकरञ्जकरवीरजैः ॥ ९० ॥
अवगाढपदं चैव प्रच्छयित्वा पुनः पुनः।
गुञ्जाफलैश्चिरं लिम्पेत्केशभूमिं समन्ततः ॥९१॥
हस्तिदन्तमसीं कृत्वा मुख्यं चैव रसाञ्जनम्।
लोमान्यनेन जायन्ते नृणां पाणितलेष्वपि ॥९२॥
भल्लातकबृहतीफलगुञ्जामूलफलेभ्य एकेन।
मधुसहितेन विलिप्तं सुरपतिलुप्तं शमं याति ९३॥
बृहतीफलरसपिष्टं गुञ्जाफलमूलं चैन्द्रलुप्तस्य।
कनकनिघृष्टस्य सतो दातव्यं प्रच्छितस्य सदा९४
घृष्टस्य कर्कशैः पत्रैरिन्द्रलुप्तस्य गुण्डनम्।
चूर्णितैर्मरिचैः कार्यमिन्द्रलुप्तनिवारणम् ॥ ९५ ॥

छागक्षीररसाञ्जन-
पुटदग्धगजेन्द्रदन्तमसीलिप्ताः।
जायन्ते सप्तरात्रात्
खल्व्यामपि कुञ्चिताश्चिकुराः ॥ ९६ ॥
मधुकेन्दीवरमूर्वा
तिलाज्यगोक्षीरभृङ्गलेपेन।
अचिराद्भवन्ति घनकेशा
दृढमूकायतानृजवः ॥ ९७ ॥

(१९ मालत्यादितैलम्) मालती कनेर चीता करंजुवा इन्होंमें सिद्ध कियाहुआ तेल इंद्रलुप्त अर्थात् वालोंको उडना इन रोगोंकों दूर करताहै। नियमसें लगायाहुआ यही तेल मनुष्योंके दारुण रोगकों दूर करताहै और आंवला आंब इन्होंकी गुठलीका लेपसें चिकने और स्थिर वाल होतेहैं। इंद्रलुप्तरोगमें मस्तककी नाडीकों वींधके सब जगह शिलाजीत कसीस नीलाथोथा इन्होंका लेप करदेवे और इनके कल्कमें सिद्ध कियाहुआ तेल मालिस करनेमें हित है। बहुत दिनसें उत्पन्न हुए इंद्रलुप्तरोगमें टेंटूवृक्ष चीता जायफल करंजुवा कनेर इन्होंके काथसें झारिके पीछे वाल उगनेंकी जगह चिरमठीका लेप कर बहुत देरतक रक्खै। अथवा हस्तीदांतकी स्याही रसौत इन्होंके लेप करनेसें मनुष्योंकी हथेलीमेंभी वाल उत्पन्न होसकेहैं। भिलावा कटेहली कायफल चिरमठी और चिरमठीकी जड इनमांहसें एक कोईसेकों पीस शहदमें मिलाय लेप करनेसें इंद्रलुप्तरोग दूर होताहै। अथवा कटेहलीके ढींढरेके रसमें चिरमठीकी जडकों पीस सुवर्णसें घिसाहुआ इंद्रलुप्तरोगमें लेप करना हित है। अथवा कठोर पत्तोंसें घिसेहुए शिरमें मिरचोंका चूर्ण लगानेसें इंद्रलुप्तरोग दूर होताहै। बकरीका दूध रसौत पुटमें दग्ध कियाहुआ हस्तीदांतकी स्याही इन्होंका लेप करनेसें सात दिनमें गंजाके शिरमेंभी उत्तम वाल उगजातेहैं और महुआ कमल मूर्वा तिल घृत गौका दूध भंगरा इन्होंका लेप करनेसें शीघ्रही मनुष्यके काले दृढ स्थिर वाल उत्पन्न होजातेहैं।

(२०)स्नुहीपयः पयोऽर्कस्य मार्कवो लाङ्गलीविषम्
मूत्रमाजं सगोमूत्रं रक्तिका सेन्द्रवारुणी ॥ ९८ ॥
सिद्धार्थं तीक्ष्णतैलं च गर्भं दत्त्वा विपाचितम्।
वह्निना मृदुना पक्वं तैलं खालित्यनाशनम् ॥९९॥

कूर्मपृष्ठसमानापि रुज्याया रोमतस्करी ।
दिग्धा सानेन जायेत ऋक्षशारीरलोमशा १००॥

(२० स्नुह्याद्यं तैलम्) थोहरका दूध आकका दूध भंगरा कलहारी अतीस बकरीका मूत्र गोमूत्र चिरमठी इंद्रायण सिरसम इन औषधोंमें कडुवे तेलको शनै शनै मंद अग्निसें पकावे यह तेल लेप करनेसें गंजापनकों दूर करताहै । जिसके मस्तककी खोपरी कछुवाके समान गंजी निकस रही हो उसकैभी इस लेपसें रीछके वालोंसरीखे वाल उगजातेहैं ।

(२१)वटावरोहकेशिन्योश्चूर्णेनादित्यपाचितम् ।
गुडूचीस्वरसे तैलं चाभ्यङ्गात्केशरोपणम् १०१ ॥

(२१ आदित्यपाकगुडूचीतैलम्) वडकी डाढी जटामांसी इन्होंके चूर्णसें युक्त कियाहुवा गिलोयके स्वरसमें मिलाय सूर्यके घांममें धरके सिद्ध कियाहुआ तैल मालिस करनेसें वालोंकों उत्पन्न करताहै ।

(२२)चन्दनं मधुकं मूर्वा त्रिफला नीलमुत्पलम् ।
कान्ता वटावरोहश्च गुडूची विसमेव च ॥१०२॥
लौहचूर्णं तथा केशी शाविरे द्वे तथैव च ।
मार्कवस्वरसेनैव तैलं मृद्वग्निना पचेत् ॥ १०३ ॥
शिरस्युत्पतिताः केशा जायन्ते घनकुञ्चिताः ।
दृढमूलाश्च स्निग्धाश्च तथा भ्रमरसन्निभाः ।
नस्येनाकालपलितं निहन्यात्तैलमुत्तमम् ॥१०४॥

(२२ चंदनादितैलम्) चंदन महुआ मूर्वा त्रिफला नीला कमल सफेद दूव वडकी डाढी कमलकंद लोहेका चूर्ण जटामांसी दोनों अनंतमूल इन्होंके कल्कसें युक्त भंगराके स्वरमें मंद मंद अग्निसें तेलकों पकावे इस तेलसें शिरके वाल चिकने और कटडे होजातेहैं । करडी जड हो जातीहै और भौंराके समान काले होजातेहैं इस तेलकी मालिस करनेसें अकालमें उत्पन्न हुआ वलीपलितरोग दूर होताहै ।

(२३)तैलं सयष्टीमधुकैः क्षीरे धात्रीफलैः शृतम् ।
नस्ये दत्तं जनयति केशाञ्श्मश्रूणि चाप्यथ १०५
त्रिफला नीलिनीपत्रं लोहं भृङ्गरजःसमम् ।
अविमूत्रेण संयुक्तं कृष्णीकरणमुत्तमम् ॥ १०६ ॥
त्रिफलाचूर्णसंयुक्तं लोहचूर्णं विनिक्षिपेत् ।
ईषत्पक्के नारीकेले भृङ्गराजरसान्विते ॥ १०७॥
मासमेकं तु निक्षिप्य सम्यग्गर्भात्समुद्धरेत् ।
ततः शिरो मुण्डयित्वा लेपं दद्याद्भिषग्वरः१०८
संवेष्ट्य कदलीपत्रैर्मोचयेत्सप्तमे दिने ।
क्षालयेत्त्रिफलाक्वाथैः क्षीरमांसरसाशिनः १०९
कपालरञ्जनं चैतत्कृष्णीकरणमुत्तमम् ।
उत्पलं पयसा सार्धं मासं भूमौ निधापयेत् ११०
केशानां कृष्णकरणं स्नेहनं च विधीयते ।
भृङ्गपुष्पं जवापुष्पं मेषीदुग्धप्रपेषितम् ॥ १११ ॥
तेनैवालोडितं लौहपात्रस्थं भूम्यधः कृतम् ।
सप्ताहादुद्धृतं पश्चाद्भृङ्गराजरसेन तु ॥ ११२ ॥
आलोड्याभ्यज्य च शिरो वेष्टयित्वा वसेन्निशाम्
प्रातस्तु क्षालनं कार्यमेवं स्यान्मूर्धरञ्जनम् ।
एवं सिन्दूरबालाम्बशङ्खभृङ्गरसैः क्रिया ॥ ११३ ॥

(२३ मधुकादितैलम्) मुलहटी महुआवृक्ष आंवला इन्होंमें पकाया हुआ दूधके क्वाथमें सिद्ध कियाहुआ तेलकी नस्य देनेसें शिरके वाल और डाढीके वाल उत्पन्न होतेहैं । त्रिफला नीलके पत्ते भंगराका चूर्ण इन्होंकों समान भागले भेडके मूत्रमें पीस वालोंकै लगानेसें काले वाल होजातेहैं । कछुक पकेहुए नारियलमें लोहेका चूर्ण और त्रिफलाका चूर्ण इन्होंकों समान भाग गेरै उसमें भंगराका रस घालदेवे पीछे मुख बंद कर एक महीनातक धरा रक्खै । फिर वैद्यजन रोगीके शिरकों मुंडवाके इस औषधका लेप करके केलोंके पत्तोंसें शिरकों बांध देवे पीछे सात दिनमें खोलै तब त्रिफलाके क्वाथसें धोवै और दूध तथा मांसका भोजन करवावै ऐसे कर शिर रंगा शिरके संपूर्णवाल काले हो जातेहैं । कमलकों दूधसें युक्त कर एक महीनातक भूमिमें गाडा रक्खे फिर इसके लगानेसें वाल चिकने और काले होजातेहैं । भंगराका पुष्पजवापुष्प इन्होंकों भेडके दूधमें पीस लोहेके पात्रमें घालि खरल कर पीछे सात दिनतक इसकों भूमिमें गाड दे फिर निकालके भंगराका रस मिलाय सायंकालमें शिरकै लेप करे पीछे प्रातःकाल धो गेरै । ऐसे करनेसें काले वाल होतेहैं । इसीतरह सिंदूर शंख भंगराका रस इन्होंकीभी क्रिया होतीहै ।

(२४)नवदग्धशङ्खचूर्णं
काञ्जिकसिक्तं हि सीसकं घृष्ट्वा ।
लेपात्कचानकेदलाव-
बद्धान्शुभ्रान्करोति नीलतरान् ॥११४॥

लोहमलामलककल्कैः
सजवाकुसुमैर्नरः सदा स्नायी ।
पलितानीह न पश्यति
गङ्गास्नायीव नरकाणि ॥ ११५ ॥
निम्बस्य बीजानि हि भावितानि
भृङ्गस्य तोयेन तथाशनस्य ।
तैलं तु तेषां विनिहन्ति नस्या-
दुग्धान्नभोक्तुः पलितं समूलम् ॥ ११६ ॥
निम्बस्य तैलं प्रकृतिस्थमेव
नस्ये निषिक्तं विधिना यथावत् ।
मासेन गोक्षीरभुजो नरस्य
जराग्रभूतं पलितं निहन्ति ॥ ११७ ॥
क्षीरात्समार्कवरसाद्द्विप्रस्थे मधुकात्पले ।
तैलस्य कुडवं पक्वं तन्नस्यं पलितापहम् ॥ ११८ ॥

(२४ शंखचूर्णादिलेपः) नवीन दग्ध कियेहुए शंखके चूर्णकों कांजीमें भिगोय फिर सीसेकों पीसके मिलादेवे । पीछे इसका लेप कर शिरकै आकके पत्ते बांध देवै । ऐसे करनेसें सफेद वालभी अत्यंत काले होजातेहैं । लोहेका मैल आंवला जवाके पुष्प इन्होंके कल्ककी मालिस कर स्नान करनेसें मनुष्य वलीपलितरोगकों दूर करदेताहै । जैसे गंगामें स्नान करनेवाला पुरुष नरकोंकों दूर करताहै । नींबकी निंबोलियोंकों भंगराके रसमें अथवा आशनाके रसमें भावना दे तिन्होंमें तेलकों सिद्ध करै । इस तेलकी नस्य लेनेवाला दूधकों भोजन करनेवाला पुरुषका वलीपलितरोग मूलसहित नष्ट होजाताहै । जो पुरुष यथार्थविधिसें स्वस्थ अवस्थामें इस तेलकी नस्य लिया करताहै उसकै वृद्ध अवस्थामेंभी वलीपलितरोग दूर जाताहै । दूध और भंगराके रसकों १२८ तोले ग्रहण करै आठ तोले महुआवृक्षकी छाल ले इनमें सोलह तोले तेलकों पकावे इसकी मालिस करनेसें वलीपलितरोग दूर होताहै ।

(२५)आदित्यवल्लिमूलानि कृष्णशैरीयकस्य च ।
सुरसस्य च पत्राणि फलं कृष्णाशनस्य च ॥ ११९ ॥
मार्कवं काकमाची च मधुकं देवदारु च ।
पृथग्दशपलांशानि पिप्पल्यत्रिफलाञ्जनम् १२० ॥
प्रपौण्डरीकं मञ्जिष्ठालोध्रं कृष्णागुरूत्पलम् ।
आम्रास्थिकर्दमः कृष्णो मृणाली रक्तचन्दनम् ॥
नीलीभल्लातकास्थीनि कासीसं मदयन्तिका ।
सोमराज्यशनः शस्त्रं कृष्णो पिण्डीतचित्रकौ १२२
पुष्पाण्यर्जुनकाश्मर्योश्चाम्रजम्बूफलानि च ।
पृथक्पञ्चपलैर्भागैः सुपिष्टैराढकं पचेत् ॥ १२३ ॥
वैभीतकस्य तैलस्य धात्रीरसचतुर्गुणम् ।
कुर्यादादित्यपाकं वा यावच्छुष्को भवेद्रसः १२४
लोहपात्रे ततः पूतं संशुद्धमुपयोजयेत् ।
पाने नस्यक्रियायां च शिरोऽभ्यङ्गे तथैव च १२५
एतच्चाक्षुष्यमायुष्यं शिरसः सर्वरोगनुत् ।
महानीलमिति ख्यातं पलितघ्नमनुत्तमम् १२६ ॥

(२५ महानीलतैलम्) सूर्यवल्लीकी जड काला कोरंटा सुरस पोंदीनाके पत्ते नीलके बीज भंगरा मकोह महुआ देवदारु इन सबोंकों अलग अलग चालीस तोले लेवे और पीपल रसोत कमल मंजीठ लोध अगर आंबकी गुठली कालाआजबला कमलकी डंडी लालचंदन नील भिलावा कसीस मोगरी सोमवल्ली आसना पोलाद काला मरुवा चीता कौह्ववृक्षके फूल खंभारीके फूल आंबके फल जामनके फल इन सबोंकों अलग अलग वीसवीस तोले लेवे इन सबोंकों पीसके तैयारकर पीछे २९६ तोले बहेडाका तेल और तेलसें चौगुना आंवलाका रस लेवे फिर इन सबोंकों मिलाके घांममें रखके पकावे जबतक उत्तम रस हो तबतक घाममेंही धरारक्खै पीछे छानके लोहेके पात्रमें घाल धरै । इस तेलकों पीनेमें नस्यमें तथा शिरकी मालिस करनेमें वरते तो नेत्रोंकी ज्योति वढै आयु वढै शिरके संपूर्ण रोग दूर होवे। यह महानीलतैल कहाताहै वलीपलितरोगकों दूर करताहै ।

(२६)भृङ्गराजरसे पक्वं शिखिपित्तेन कल्कितम् ।
घृतं नस्येन पलितं हन्यात्सप्ताहयोगतः ॥ १२७ ॥
काञ्जिकपिष्टशेलुकमज्जि सच्छिद्रलौहगे ।
यदर्कतापात्पतति तैलं तन्नस्यम्रक्षणात् ॥ १२८ ॥
केशा नीलालिसङ्काशाः सद्यः स्निग्धा भवन्ति च
नयनश्रवणग्रीवादन्तरोगांश्च हन्त्यदः ॥ १२९ ॥
कासीसं रोचनातुल्यं हरितालं रसाञ्जनम् ।
अम्लपिष्टैः प्रलेपोऽयं वृषकच्छ्वहिपूतयोः ॥ १३० ॥
पटोलपत्रत्रिफलारसाञ्जनविपाचितम् ।
पीतं घृतं निहन्त्याशु कृच्छ्रामप्यहिपूतनाम् १३१

रजनीमार्कवमूलं पिष्टं शीतेन वारिणा तुल्यम् ।
हन्ति विसर्पं लेपाद्वराहदशनाह्वयं घोरम् १३२॥
नागकेशरचूर्णं वा शतधौतेन सर्पिषा ।
पिष्ट्वा लेपो विधातव्यो दाहे हर्षे च पादयोः१३३

इति क्षुद्ररोगचिकित्सा ।

(२६ भृंगराजघृतादि) मोरके पित्तेका कल्क बनाय तिसमें घृत मिलाय पीछे भंगराके रसमें पकावे इसकी नस्य देनेसें वलीपलितरोग दूर होताहै । शेलूक अर्थात् भोंकरनामसें प्रसिद्ध वृक्षकी मज्जाकों कांजीमें पीस कल्क बनाय तिसकों छिद्रवाले लोहेके यंत्रमें घालके घाममें धरदेवे । पीछे उसमांहसें जो तेल गिरै उस तेलकी नस्य लेनेसें सब वाल काले होजातेहैं और तात्कालही चिकने होजातेहैं । यही तेल नेत्र कान दांत ग्रीवा इनके रोगोंकों दूर करताहै । कसीस गोरोचन हरताल रसौत इन्होंकों समान भाग ले कांजीमें पीस वृषकच्छू पोतरोंके रोगमें और अहिपूतरोगमें लेप करना श्रेष्ठ है । और परवलके पत्ते त्रिफला रसौत इन्होंमें पकावेहुए घृतके पीनेसें बहुत दिनोंसें उत्पन्न हुआभी अहिपूतनारोग दूर होताहै । हलदी भंगराकी जड इन्होंकों समान भाग ले शीतल जलमें पीस लेप करनेसें शूरके दांतोंके समान घोर विसर्परोग दूर होजाताहै । और सौ १०० वार धोयेहुए घृतमें नागकेशरका चूर्ण मिलाय लेप करनेसें पैरोंकी दाह और हर्ष दूर होताहै । इति क्षुद्ररोगचिकित्सा ।

अथ मुखरोगाधिकारः ५५

अब मुखरोगकी चिकित्साकों कहतेहैं ।

(१)ओष्ठप्रकोपे वातोत्थे शाल्वनेनोपनाहनम् ।
मस्तिष्के चैव नस्ये च तैलं वातहरैः शृतम् ।
स्वेदोऽभ्यङ्गः स्नेहपानं रसायनमिहेष्यते ॥ १ ॥
श्रीवेष्टकं सर्जरसं गुग्गुलुं सुरदारु च ।
यष्टिमधुकचूर्णं च विदध्यात्प्रतिसारणम् ॥ २ ॥
वेधं शिराणां वमनं विरेकं
तिक्तस्य पानं रसभोजनं च ।
शीताम्प्रलेपान्परिषेचनं च
पित्तोपसृष्टेष्वधरेषु कुर्यात् ॥ ३ ॥
पित्तरक्ताभिघातोत्थाञ्जलौकाभिरुपाचरेत् ।
पित्तविद्रधिवच्चापि क्रियां कुर्यादशेषतः ॥ ४ ॥
शिरोविरेचनं धूमः स्वेदः कवलधारणम् ।
हृतरक्ते प्रयोक्तव्यमोष्ठकोपे कफात्मके ॥ ५ ॥
त्रिकटुः सर्जिकाक्षारः क्षारश्च यावशूकजः ।
क्षौद्रयुक्तं विधातव्यमेतच्च प्रतिसारणम् ।
मेदोजे स्वेदिते भिन्ने शोधिते ज्वलनो हितः ६
प्रियङ्गुत्रिफलालोध्रं सक्षौद्रं प्रतिसारणम् ।
हितं च त्रिफलाचूर्णं मधुयुक्तं प्रलेपनम् ॥ ७ ॥
सर्जरसकनकगैरिक-
धन्याकघृततैलसिन्धुसंयुक्तम् ।
सिद्धं सिक्थकमधुरे
स्फुटितोच्चटिते व्रणं हरति ॥ ८ ॥

इत्योष्ठगता चिकित्सा ।

(१ ओष्ठरोगे उपायाः) वातके कोपसें उत्पन्न हुए ओष्ठपाकरोगमें शाल्वन उपनाहसंज्ञक पसीना दिवावे और वातहर औषधोंमें पकायेहुए तेलकों चामके मस्तिष्कनामक यंत्रमें अथवा नस्यमें धारण करवावै । पसीना मालिस स्नेहपान ये क्रिया इस रोगमें रसायन कहातीहै । सरल धूप राल गूगल देवदार मुलहटी महुआ इन्होंका चूर्ण बुरकाना श्रेष्ठ है नाडीवेध करना वमन जुलाब कडुई औषधोंका पान रसोंका भोजन शीलीवस्तुओंका लेप परिषेक ये सब क्रिया पित्तसे पकेहुए ओष्ठरोगमें श्रेष्ठ है पित्तरक्तसें उत्पन्न हुए ओष्ठपाकरोगमें जोंक लगाना श्रेष्ठ है अन्य सब पित्तकी विद्रधिके समान क्रिया करनी चाहिये । कफसें उपजे रक्तरहित ओष्ठपाकमें शिरकी जुलाब धूमा स्वेद कवलधारण ये क्रिया करनी चाहिये । सूंठ मिरच पीपल साजीखार जवाखार इन्होंकों पीस शहद मिलाय लेपकरनेसें ओष्ठपाक दूर होताहै । मेदसें उपजे ओष्ठपाकमें पसीना दिवाके भेदन कर शोधन कर दग्ध करना हित है । पीछे मालकांगनी लोध इन्होंकों शहदमें मिलाय होठोंपर लेप करदेवै त्रिफलाके चूर्णमें शहद डाल लेप करना हित है और राल नागकेशर गेरू धनियां घृत तेल सिंदूर इन्होंमें पकायाहुआ मोम लगानेसें फटाहुआ और व्रणवाला होठ अच्छा होजाताहै ।

(२)शीतादे हृतरक्ते तु तोये नागरसर्षपान् ।
निःक्वाथ्य त्रिफलां चापि कुर्याद्गण्डूषधारणम्॥९
प्रियङ्गवश्च मुस्ता च त्रिफला च प्रलेपनम्॥१०॥

कुष्ठं दार्वीमब्दलोध्रं समङ्गा
पाठा तिक्ता तेजनी पीतिका च ।
चूर्णं शस्तं घर्षणं तद्द्विजानां
रक्तस्रावं हन्ति कण्डूं रुजां च ॥ ११ ॥
चलदन्तस्थिरकरं कार्यं बकुलचर्वणम् ।
आर्तगलदलक्वाथगण्डूषो दन्तचालनुत् ॥ १२ ॥
दन्तचाले हितं श्रेष्ठं तिलोग्राचर्वणं सदा ।
दन्तपुप्पुटके कार्यं तरुणे रक्तमोक्षणम् ॥ १३ ॥
सपञ्चलवणः क्षारः सक्षौद्रः प्रतिसारणम् ।
दन्तानां तोदहर्षे च वातघ्नाः कवला हिताः १४
दन्तचाले तु गण्डूषो बकुलत्वक्कृतो हितः ।
माक्षिकं पिप्पलीसर्पिर्मिश्रितं धारयेन्मुखे ॥१५॥
दन्तशूलहरं प्रोक्तं प्रधानमिदमौषधम् ।
विस्राविते दन्तवेष्टे व्रणं तु प्रतिसारयेत् ॥१६ ॥
लोध्रपत्तुङ्गमधुकलाक्षाचूर्णैर्मधूत्तरैः ।
गण्डूषे क्षीरिणो योज्याः सक्षौद्रघृतशर्कराः १७

इति ओष्ठरोगकी चिकित्सा

(२ दंतरोगे उपायाः) शीतादनाम दंतरोगमें सूंठ सिरसम इन्होंका क्काथमें त्रिफला मिलाय कुरले करवाना श्रेष्ठहैं । मालकांगनी नागरमोथा त्रिफला इन्होंका लेप करना हित है । और कूट दारुहलदी नागरमोथा लोध मंजीठ पाठा कुटकी मूर्वा पीतजूई इन्होंका चूर्ण बनाय दांतोंकै घिसनेसें दांतोंका रक्तस्राव कंडू खाज ये सब दूर होतेहैं । बकुल चावनेसें हिलतेहुए दांत स्थिर होतेहैं । काला कोरंटाके पत्तोंके क्काथसें कुरले करनेसें हिलतेहुए दांत स्थिर होजातेहैं और तिल वच इन्होंका चावना हित है । नवीन दंतपुप्पुटरोगमें रुधिर निकलाना श्रेष्ठ है । पांचों नमक जवाखार इन्होंमें शहद लेप करनेसें दंतपुप्पुटरोग दूर होताहै । दंततोद अथवा दंतहर्ष रोगमें वातनाशक औषधोंके कवलधारण करवाना हित है । और दांतोंके हिलनेमें बकुलकी छालके क्काथसें कुरले करने श्रेष्ठ हैं । शहद पीपली घृत इन्होंकों मिलाय मुखमें धारण करना श्रेष्ठ है । और यही औषध दंतशूलरोग हरनेमें मुख्य कहीहै । गिरायेहुए दंतवेष्टरोगमें व्रणमें लोध पतंग महुआ लाख इन्होंका चूर्ण बनाय शहद मिलाय मुखमें धारण करवावै और नींबआदि क्षीरीवृक्षोंकी छालके क्काथमें शहद घृत खांड मिलाय कुरले धारण करवाने श्रेष्ठ हैं ।

(३) शैशिरे हृतरक्ते च लोध्रमुस्तरसाञ्जनैः ।
सक्षौद्रैः शस्यते लेपो गण्डूषे क्षीरिणो हिताः१८
क्रियां परिदरे कुर्याच्छीतादोक्तां विचक्षणः ।
संशोध्योभयतः कार्यं शिरश्चोपकुशे ततः ॥१९॥
काकोदुम्बरिकागोजीपत्रैर्विस्रावयेद्भिषक् ।
क्षौद्रयुक्तैश्च लवणैः सव्योषैः प्रतिसारयेत्॥२०॥
पिप्पल्यः सर्षपाः श्वेता नागरं नैचुलं फलम् ।
सुखोदकेन संगृह्य कवलं तस्य योजयेत् ॥ २१ ॥
शस्त्रेण दन्तवैदर्भे दन्तमूलानि शोधयेत् ।
ततः क्षारं प्रयुञ्जीत क्रियाः सर्वाश्च शीतलाः २२
उद्धृत्याधिकदन्तं तु ततोऽग्निमवचारयेत् ।
क्रिमिदन्तकवच्चात्र विधिः कार्यो विजानता ।
छित्वाधिमांसं सक्षौद्रैरेतैश्चूर्णैरुपाचरेत् ॥ २३ ॥
पाठावचातेजोवतीसर्जिकायावशूकजैः ।
क्षौद्रद्वितीयाः पिप्पल्यः कवलश्चात्र कीर्तितः२४
पटोलनिम्बत्रिफलाकषायश्चात्र धावने ।
शिरोविरेकश्च हितो धूमो वैरेचनश्च यः॥ २५ ॥
नाडीव्रणहरं कर्म दन्तनाडीषु कारयेत् ।
यं दन्तमधिजायेत नाडी तद्दन्तमुद्धरेत् ॥ २६ ॥

(३ दंतानां शैशिरे) दांतोंके शैशिररोगमें रुधिर निकलाके लोध नागरमोथा रसौत इन्होंकों पीस शहद मिलाय दांतोंकै लेप करना और दूधवाले वृक्षोंके क्काथसें कुरले करवावै और परिदरनामक रोगमें संपूर्ण इलाज शीतादरोगमें कहेहुए करने । उपकुशनामवाले रोगमें वमन तथा जुलाब इन दोनोंप्रकारोंसें शोधन करवाके पीछे कालीगूलर गोभीके पत्ते इन्होंके क्काथसें शिरकों डारै । और सूंठ मिरच पीपल पांचोंनमक इन्होंकों पीस शहद मिलाय मुखमें बुरकाना श्रेष्ठ है । और पीपली सफेद सिरसम सूंठ जलवेतका फल इन्होंका क्काथ बनाय गरम जलसें कुरले धारण करना योग्य है । दंतवैदर्भरोगमें शस्त्रसें दांतोंकी जडोंका शोधन करे तिस्से अनंतर दांतोंकै क्षार लगाके फिर संपूर्ण शीतल इलाज करै । और अधिक दंतकों उखाडके तहां अग्निदाह करदेवै तहां क्रिमिदंत अर्थात् कीडावाले दांतोंके इलाजके समान चिकित्सा करै । दांतोंके अधिमांस अर्थात् वढेहुए मांसकों छेदन करके पाठा वच तेजोवंती साजीखार जवाखार इन्होंके चूर्णमें शहद डाल लेप करना हित है । और दोनों पीपली शहद

इन्होंका कवलधारण करवाना हित है । परवल और नींबके पत्ते त्रिफला इन्होंके क्वाथसें मुखका धोवना हित है और शिरकी जुलाब करवाना हित है । शिरकों विरेचन करनेवाला धूमां देना योग्य है । दांतोंकी नाडियोंके रोगमें नाडीव्रणनाशक औषध करै ।

(४)छित्त्वाधिमांसं शस्त्रेण यदि नोपरिजो भवेत् ।
शोधयित्वा दहेच्चापि क्षारेण ज्वलनेन वा॥२७॥
गतिर्हि नस्ति हन्वस्थि दशने समुपेक्षिते ।
तस्मात्समूलं दशनमुद्धरेद्भग्नमस्थि च ॥ २८ ॥
उद्धृते तूत्तरे दन्ते शोणितं संप्रसिच्यते ।
रक्ताभियोगात्पूर्वोक्ता घोरा रोगा भवन्ति च २९
चलमप्युत्तरं दन्तमतो नापहरेद्भिषक् ।
कषायं जातीमदनकटुकस्वादुकण्टकैः ॥ ३० ॥
लोध्रखदिरमञ्जिष्ठायष्ट्याह्वैश्चापि यत्कृतम् ।
तैलं संशोधनं तद्धि हन्याद्दन्तगतां गतिम्॥३१॥
कषायं परतः कृत्वा पिष्ट्वा लोध्रादिकल्कितम् ।
कण्टकीमदनो योज्यः स्वादुकण्टो विकङ्कतः३२
सुखोष्णाः स्नेहकवलाः सर्पिषस्त्रैवृतस्य वा ।
निर्यूहाश्चानिलघ्नानां दन्तहर्षप्रमर्दनाः ॥ ३३ ॥
स्नैहिकश्च हितो धूमो नस्यं स्नैहिकमेव च ।
अहिंसन्दन्तमूलानि शर्करामुद्धरेद्भिषक् ॥३४ ॥
लाक्षाचूर्णैर्मधुयुतैस्ततस्तां प्रतिसारयेत् ।
दन्तहर्षक्रियां चापि कुर्यान्निरवशेषतः ॥ ३५ ॥

(४ दंतोत्पाटनछेदनादि) जिस दांतमें नाडीका रोग होजावे उसका निकलानाभी श्रेष्ठ है । दांतके अधिमांसकों शस्त्रसें छेदनकर शोधन करके तिसकों अग्निसें अथवा क्षारसें दग्ध करदेवै । ठोडीकी अस्थि और दांतके रोगका इलाज नहीं करवावे तो अतिक्लेश होताहै । इसवास्ते दांतकों और टूटीहुई अस्थिकों जडसहित उखाड डालै । उपरके दांत उखडानेमें अत्यंत रुधिर निकलताहै तब उस रुधिरके योगसें अतिघोररोग उत्पन्न होजातेहैं । इसलिये बुद्धिमान् वैद्य हिलतेहुएभी उपरके दांतकों नहीं उखडावै । जावित्री मैनफल कुटकी छोटा गोखरू लोध खैर मंजीठ मुलहटी इन्होंमें सिद्ध कियाहुआ तेल दांतोंके रोगका संशोधन करताहै । दांतोंका हिलना बंद होताहै । अथवा लोधआदि औषधोंका क्वाथसें कुरले करवावै अथवा लोधआदि औषधोंका कल्क बनाय तिसमें कटेहली मैनफल गोखरू दुर्गंधि खैर त्रैवृतघृत अर्थात् निशोतआदि औषधोंमें सिद्ध कियाहुआ घृत इनकों मिलाय सुखसें सुहाताहुआ गरम ग्रास धारण करवावै और वातनाशक औषधोंमें सिद्ध कियाहुए काढाके देनेसें दंतहर्षरोग दूर होताहै और स्नेहवाला धूम तथा स्नेहवाला नस्य देना हित है । दांतोंकी जडकों काटती हुई शर्कराकों बुद्धिमान् वैद्य शस्त्रसें उतरवादेवै । तिस्सें अनंतर शहदसें युक्त कियेहुए लाखके चूर्णकों बुरकादेवै और संपूर्ण क्रिया दंतहर्षरोगकी करनी योग्य है ।

(५)कपालिकाः कृच्छ्रसाध्यास्तत्राप्येषा क्रियामता
जयेद्विस्रावणैः स्विन्नमचलं क्रिमिदन्तकम्॥३६॥
तथावपीडैर्वातघ्नैः स्नेहगण्डूषधारणैः ।
भद्रदार्वादिवर्षाभूलेपैः स्निग्धैश्च भोजनैः ।
हिङ्गु सोष्णं तु मतिमान्क्रिमिदन्तेषु दापयेत् ३७

बृहतीभूमिकदम्बक-
पञ्चाङ्गुलिकण्टकारिकाथैः ।
गण्डूषस्तैलयुतः
क्रिमिदन्तकवेदनाशमनः ॥ ३८ ॥

नीलीवायसजङ्घा-
स्नुग्दुग्धीनां तु मूलमेकैकम् ।
संचर्व्य दशनविधृतं
दशनक्रिमिपातनं प्राहुः ॥ ३९ ॥

चलमुद्धृत्य वा स्थानं दहेत्तु शुषिरस्य वा ।

(५ दंतकपालिकारोगे) दांतोंके कपालिका रोग कृच्छ्रसाध्य कहाहै तबभी यही क्रिया करनी । और जो कीडावाला दांत हिलता नहीं हो उसकों विस्रावण औषधोंसें पसीना दिवावै और वातनाशक अवपीडन कर्म कराने तथा स्नेहोंके कुरले धारण करवावै । भद्रमोथा दारुहलदी सांठी इन्होंका लेप करवावै चिकने भोजन खुलावे । और कीडावाले दांतरोगमें बुद्धिमान् वैद्य गरम २ हींगको धारण करवावै । कटेहली गोरखमुंडी अरंड कटेहली इन्होंके क्वाथमें तेल मिलाय कुरले धारण करवाने हित है । अथवा नील मकोह थोहर दूधी इन औषधोंमांहसें एक कोईसीकी जडकों दांतोंके बीचमें रक्खे तो कीडावाला दंतरोग दूर होवे । अथवा हिलतेहुए दांतकों उखडाके उसके छिद्रकी जगहकों दग्ध करदेवै ।

(६)ततो विदारीयष्ट्याह्वशृङ्गाटककशेरुभिः ।
तैलं दशगुणं क्षीरं सिद्धं नस्ये तु योजयेत् ॥४०॥
हनुमोक्षे समुद्दिष्टा कार्या चार्दितवत्क्रिया ।
फलान्यम्लानि शीताम्बु रूक्षान्नं दन्तधावनम् ४१
तथातिकठिनान्भक्ष्यान्दन्तरोगी विवर्जयेत् ।
सप्तच्छदार्कदुग्धाभ्यां पूरणं क्रिमिदन्तनुत् ४२॥
जीवनीयेन दुग्धेन क्रिमिरन्ध्रप्रपूरणम् ।
अर्कक्षीरेणैवमेकयोगः सद्भिः प्रशस्यते ॥ ४३ ॥
द्रोणपुष्पीद्रवः फेनमधुतैलसमायुतः ।
क्रिमिदन्तविनाशाय कार्यं कर्णस्य पूरणम् ॥ ४४ ॥
पटोलकटुकाव्योषपाठासैन्धवभार्गिकैः ।
चूर्णैर्मधुयुतो लेपः कवलो मधुतैलकैः ।
जिह्वारोगेषु कर्तव्यं विधानमिदमौषधम् ॥ ४५ ॥
मुस्तामधुकनिर्गुण्डीखदिरोशीरदारुभिः ।
समञ्जिष्ठाविडङ्गैश्च सिद्धं तैलं हरेत्क्रिमीन् ॥ ४६ ॥

(६ विदार्यादितैलम्) विदारीकंद मुलहटी सिंघाडा कशेरुकंद इन औषधोंके कल्कमें तेलकों मिलाय तेलसें दशगुना दूध मिलाय पीछे इसकों पकावे । यह तेल नस्यमें देना हित है । और हनुमोक्षरोगमें कहीहुई क्रिया करनी खट्टे फलोंका खाना शीला जल पीना रूखा अन्न दांतून करनी करडे भोजन करना इन सब बातोंकों दांतोंके रोगवाला पुरुष वर्जदेवै । और सातला आकका दूध इन्होंकों कीडावाले दांतमें भरदेवै तो दांतोंका कीडा दूर होवे । जीवनीयगण औषधके काथसें अथवा आकके दूधसें क्रिमिवाले दांतकों भर देवै तो अथवा द्रोणपुष्पीके रसमें समुद्रझाग शहद तेल इन्होंकों मिलाय कानमें पूरनेसें कीडावाले दांतका कीडा दूर होवे । और परवल कुटकी सूंठ मिरच पीपल पाठा सेंधानमक भारंगी इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय लेप करनेसें अथवा शहद और तेलके कुरले धारण करवानेसें दांतोंका कीडा दूर होताहै और यही विधान जिव्हाके रोगोंमेंभी करना हित है । नागरमोथा महुआ संभालू खैर खश दारुहलदी मंजीठ वायविडंग इन्होंमें सिद्ध कियाहुआ तेल दांतोंके कीडोंकों दूर करताहै ।

(७)ओष्ठप्रकोपेऽनिलजे यदुक्तं प्राक् चिकित्सितम्
कण्टकेष्वनिलोत्थेषु तत्कार्यं भिषजा खलु ॥४७॥
पित्तजेषु निघृष्टेषु निस्रुते दुष्टशोणिते ।
प्रतिसारणगण्डूषान्नस्यं च मधुरं हितम् ॥ ४८ ॥

कण्टकेषु कफोत्थेषु लिखितेष्वसृजः क्षये ।
पिप्पल्यादिर्मधुयुतः कार्यं तु प्रतिसारणम् ॥४९॥
गृह्णीयात्कवलान्वापि गौरसर्षपसैन्धवैः ।
पटोलनिम्ववार्ताकुक्षारयूषैश्च भोजयेत् ॥ ५० ॥

जिह्वाजाड्यं चिरजं
माणकभस्मलवणघर्षणं हन्ति ।
ईषत्स्नुक्क्षीराक्तं
जम्बीराद्यम्लचर्वणं वापि ॥ ५१ ॥

कर्कटाङ्घ्रिक्षीरपक्वघृताभ्यङ्गेन नश्यति ।
दन्तशब्दः कर्कटाङ्घ्रिलेपाद्वा दन्तयोजितात् ५२
उपजिह्वां तु संलिख्य क्षारेण प्रतिसारयेत् ।
शिरोविरेकगण्डूषधूमैश्चैनामुपाचरेत् ॥ ५३ ॥
व्योषक्षाराभयावह्निचूर्णमेतत्प्रघर्षणम् ।
उपजिह्वाप्रशान्त्यर्थमेतैस्तैलं विपाचयेत् ॥ ५४ ॥
छिन्नां घर्षेद्गलशुण्डीं व्योपोग्राक्षौद्रसिन्धुजैः ।
कुष्ठोषणवचासिन्धुकणापाठाप्लवैरपि ॥ ५५ ॥
सक्षौद्रैर्भिषजा कार्यं गलशुण्ड्या विघर्षणम् ।
उपनासाव्यधो हन्ति गलशुण्डीमशेषतः ॥ ५६ ॥
गलशुण्डीहरं तद्वच्छेफालीमूलचर्वणम् ।
वचामतिविषां पाठां रास्नां कटुकरोहिणीम् ।
निःक्काथ्य पिचुमर्दं च कवलं तत्र योजयेत् ॥५७॥

इति दन्तरोगचिकित्सा ।

(७ जिव्हारोगचिकित्सा) वायुसें उत्पन्न हुए ओष्ठपाकरोगमें जो पहले क्रिया करनी कही है वही क्रिया वायुसें उत्पन्न हुए जिव्हाके कंटकोंकी करै और पित्तसें उपजे हुए जिव्हाके कांटोंकों कठोर वस्तुसें रगडवाके तिनका दुष्ट रुधिरकों निकलाय फिर मधुर औषधोंकों बुरकाय मधुर औषधोंके कुरले धारण करवावै और नस्य दिवावै । कफसें उत्पन्न हुए कंटकोंका रुधिर निकलाय तहां पीपल सूंठ मिरच इनकों पीस शहद मिलाके लेप करै । अथवा सफेद सिरसम सेंधानमक इन्होंका कवल धारण करवावै । और परवल नींब बथुवा इन्होंमें सिद्ध कियेहुए यूषोंका भोजन करवावै । माणककंदका भस्म सेंधानमक इन्होंके मसलनेसें जिव्हाका शिथिलपना दूर होताहै । अथवा जंबीरनींबू अनार इत्यादिक खट्टे फलोंकों कछुक थोहरके दूधसें भिगोके चावै तो जीभका शिथिलपना दूर होवे । काकडासींगीकी जड दूध घृत इनकों प-

काय पीछे इस घृतका लेप करनेसें जिव्हाका जडपना दूर होताहै । काकडासींगीकी जडका लेप करनेसें अथवा दांतमें रखनेसें दांतका कडकडा शब्द दूर होताहै । उपजिव्हा अर्थात् जीभ फूलके दूसरी जीभसी दीखने लगजावे तहां जीभकों खिणके तहां खार भर देवै और शिरोविरेक गंडूष धूमपान ये विधि करै । सूंठ मिरच पीपली जवाखार हरडै चीता इन्होंके चूर्ण रगडनेसें जिव्हाका जडपना दूर होताहै । अथवा इन्हीं औषधोंमें पकायाहुआ तेल लगानेसें उपजिव्हारोग दूर होताहै । गलशुंडीकों अर्थात् गंठूकों छेदन करवाके तिसकी जगह सूंठ मिरच पीपल वच शहद समुद्रझाग इन्होंसें अथवा कूट पीपल वच समुद्रझाग पाठा पिलषन इनकों पीस शहद मिलाय गलशुंडीपै बुरकाना हित है । अथवा उपनासारोगकी तरह वींधनेसें गलशुंडीरोग दूर होताहै । सफेद संभालूकी जडके चावनेसें गलशुंडी दूर होतीहै और वच अतीस पाठा रास्ना कुटकी नींब इन्होंका क्वाथ बनाय कुरले धारण करनेसें गंठू दूर होतेहैं । इति जिव्हारोगकी चिकित्सा ।

(८)क्षारसिद्धेषु मुद्गेषु यूपाश्चाप्यशने हिताः ।
तुण्डीकेर्यध्रुषे कूर्मे संघाते तालुपुप्पुटे ॥ ५८ ॥
एष एव विधिः कार्यो विशेषः शस्त्रकर्मणि ।
तालुपाके तु कर्तव्यं विधानं पित्तनाशनम् ॥५९॥
स्नेहस्वेदौ तालुशोषे विधिश्चानिलनाशनः ।
साध्यानां रोहिणीनां तु हितं शोणितमोक्षणम्६०
छर्दनं धूमपानं च गण्डूषो नस्यकर्म च ।
वातिकीं तु हृते रक्ते लवणैः प्रतिसारयेत् ॥ ६१ ॥
सुखोष्णांस्तैलकवलान्धारयेच्चाप्यभीक्ष्णशः ।
पतङ्गशर्कराक्षौद्रैः पैत्तिकीं प्रतिसारयेत् ॥ ६२ ॥
द्राक्षापरूपकक्वाथो हितश्च कवलग्रहे ।
आगारधूमकटुकैः कफजां प्रतिसारयेत् ॥ ६३ ॥
श्वेताविडङ्गदन्तीषु सिद्धं तैलं ससैन्धवम् ।
नस्यकर्मणि दातव्यं कवलं च कफोच्छ्रये ॥६४॥
पित्तवत्साधयेद्वैद्यो रोहिणीं रक्तसंभवाम् ।
विस्राव्य कण्ठशालूकं साधयेत्तुण्डिकेरिवत्॥६५॥
एककालं यवान्नं च भुञ्जीत स्निग्धमल्पशः ।
उपजिह्विकवच्चापि साधयेदधिजिह्विकाम् ॥ ६६॥
उन्नाम्य जिह्वामाकृष्य बडिशेनाधिजिह्विकाम् ।
छेदयेन्मण्डलाग्रेण तीक्ष्णोष्णैर्घर्षणादिभिः ॥६७॥
एकवृन्दं तु विस्राव्य विधिं शोधनमाचरेत् ।
शिलायुश्चापि यो व्याधिस्तं च शस्त्रेण साधयेत्६८
अमर्मस्थं सुपक्वं च भेदयेद्गलविद्रधिम् ।
कण्ठरोगेष्वसृङ्मोक्षस्तीक्ष्णैर्नस्यादिकर्म च ॥६९॥
क्वाथपानं तु दार्वीत्वङ्निम्बताक्ष्यकलिङ्गजम् ।
हरीतकीकषायो वा पेयो माक्षिकसंयुतः ॥ ७० ॥
कटुकातिविषादारुपाठामुस्तकलिङ्गकाः ।
गोमूत्रक्वथिताः पेयाः कण्ठरोगविनाशनाः ॥७१॥

(८ कंठरोगचिकित्सा) तुंडीक अर्यध्रुष कूर्म संघात तालु पुप्पुट इन रोगोंमें क्षारोंमें सिद्ध कियेहुए मूगोंके यूषका भोजन करना श्रेष्ठ है इन सब रोगोंमें यही विधि है परंतु शस्त्रकर्ममें विशेष विधान है । तालुपाकरोगमें पित्तकों नष्ट करनेवाला विधान करना चाहिये । तालुशोषमें स्नेह और स्वेद दिवावे और वातनाशक विधि करै और रोहिणी नामवाले साध्य रोगमें रुधिर निकलाना श्रेष्ठ है । छर्दी धूमपान गंडूष नस्यकर्म ये विधि करै और वातवाली रोहिणीका रुधिर निकलाके तहां नमक बुरकादेवै । और वारंवार सुहाते हुए गरम २ तेलोंका धारण करना । पित्तसें उत्पन्न हुई रोहिणीके ऊपर पतंग खांड शहद इन्होंका बुरकाना हित है । और दाख फालसा इन्होंके क्वाथसें कुरले धारण करवाने योग्य हैं । कफसें उपजी रोहिणीके ऊपर घरका धूंमा कुटकी इन्होंकों बुरकावै । सफेद संभालू वेलगिरी जमालगोटाकी जड इन्होंमें सिद्ध कियेहुए तेलमें सेंधानमक मिलाय कफसें उत्पन्न हुई रोहिणी दूरकरनेके वास्तै नस्य दिवावे और कवल धारण करवावै । रुधिरसें उत्पन्न हुई रोहिणीका इलाज पित्तकी रोहिणीके समान करै । कंठशालूक रोहिणीकों विस्रावण कराके पीछे तुंडिकेरीके इलाजकों करै । एकवार जवोंका भोजन करवावै चिकना भोजन बहुत स्वल्प करै अधिजिव्हकरोगका इलाज उपजिव्हककी तरह करै । अधिजिव्हाकों दबाके खींचके बडिश शस्त्रसें वींधदेवै और तीक्ष्ण उग्र वस्तुओंसें घिसके छेदन करदेवै। एक वृंदनामक गलेमें गोल सूजन हो जाताहै तिसका विस्रावण कर्म करके शोधन करै। और गिलायु नामवाली जो कंठकी व्याधि होतीहै उसकों शस्त्रसें छेदन करके इलाज करै । मर्ममें स्थित नहीं हुई अच्छीतरह नहीं पकीहुई ऐसी गलविद्रधिकों छेदन करदेवै और कंठरोगमें रुधिर निकलना तीक्ष्ण नस्य आदि कर्म करना और दारु

हलदी दालचिनी नींब रसोत इंद्रजव हरडै इन्होंका काथ बनाय तिसमें शहद मिलाय पीना हित है । कुटकी अतीस दारुहलदी पाठा नागरमोथा इंद्रजव इन्होंका गोमूत्रमें काथ बनाके पीवे तो कंठके संपूर्ण रोग दूर होवे ।

(९)गृहधूमो यवक्षारः पाठाव्योषरसाञ्जनम् ।
तेजोह्वात्रिफलालोहं चित्रकश्चेति चूर्णितम् ॥७२॥
सक्षौद्रं धारयेदेतद्गलरोगविनाशनम् ।
कालकं नाम तच्चूर्णं दन्तजिह्वास्यरोगनुत् ॥ ७३ ॥
पिप्पलीप्पिपलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ।
सर्जिकाक्षारतुल्यांशैश्चूर्णोऽयं गलरोगनुत् ॥७४॥

(९ अथ कालकचूर्णम्) घरका धूंमा जवाखार पाठा सूंठ मिरच पीपल रसौत तेजोवंती त्रिफला लोहा चीता इन्होंका चूर्ण बनाय शहद मिलाय मुखमें धारण करना । यह गलके संपूर्ण रोगोंकों दूर करताहै । यह कालक नामवाला चूर्ण, दांत, जिव्हा, मुख, इन सबोंके रोगोंकों दूर करताहै । पीपल पीपलामूल चव चीता सूंठ साजीखार इन्होंकों समानभाग ले चूर्ण बनाय मुखमें धारण करनेसें गलके रोग दूर होतेहैं ।

(१०)मनःशिलायवक्षारो हरितालं ससैन्धवम् ।
दार्वीत्वक्चेति तच्चूर्णं माक्षिकेण समायुतम्॥७५॥
मूर्छितं घृतमण्डेन कण्ठरोगेषु धारयेत् ।
मुखरोगेषु च श्रेष्ठं पीतकं नाम कीर्तितम् ॥७६॥

(१० पीतकचूर्णम्) मनसिल जवाखार हरताल सेंधानमक दारुहलदी दालचिनी इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय पीछे घृतकी फूहीमें भावना देवै । इस चूर्णकों कंठरोगमें धारण करवावै यह पीतकनामवाला चूर्ण मुखके रोगोंमेंभी युक्त करना योग्य है ।

(११)यवाग्रजं तेजवतीं सपाठां
रसाञ्जनं दारु निशां सकृष्णाम् ।
क्षौद्रेण कुर्याद्गुडिकां मुखेन
तां धारयेत्सर्वगलामयेषु ॥ ७७ ॥

दशमूलं पिवेदुष्णं यूषं मूलकुलत्थयोः ।
क्षीरेक्षुरसगोमूत्रदधिमस्त्वम्लकाञ्जिकैः ॥ ७८ ॥
विदध्यात्कवलान्वीक्ष्य दोषं तैलघृतैरपि ।
पञ्चकोलकतालीसपत्रैलामरिचत्वचः ॥ ७९ ॥
पलाशमुष्ककक्षारयवक्षाराश्च चूर्णिताः ।
गुडे पुराणे क्वथिते द्विगुणे गुडिकाः कृताः ॥ ८० ॥
कर्कन्धुमात्राः सप्ताहं स्थिता मुष्ककभस्मनि ।
कण्ठरोगेषु सर्वेषु धार्याः स्युरमृतोपमाः ॥ ८१ ॥

(११ क्षारगुटिका) जवाखार तेजोवंती पाठा रसौत दारुहलदी पीपल इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय गोली बांधके मुखमें धारण करनेसें गलके संपूर्ण रोग दूर होतेहैं। दशमूलका गरम क्वाथ पीवै अथवा मूली और कुलथीमें सिद्ध कियेहुए यूपकों पीवै अथवा दूध ईखका रस गोमूत्र दही कांजी इन्होंके कुरले धारण करवावे । अथवा दोषकों विचारके घृतके तथा तेलके कुरले धारण करनेसें कंठके रोग दूर होतेहैं । अथवा पीपल, पीपलामूल सूंठ चव्य चीता तालीसपत्र इलायची मिरच दालचिनी ढाकका खार घंटा पाटलीवृक्षका खार जवाखार इन्होंका चूर्ण बनाय पुराने गुडके दूने क्वाथमें वेरके समान गोली बांध लेवे पीछे सातदिनतक पाडलवृक्षकी भस्ममें स्थित रक्खै । ये गोली कंठमें संपूर्ण रोगोंमें धारण करनी योग्य है। अमृतके समान उत्तम है ।

(१२)मूत्रस्विन्नां शिवां तुल्यां मधुरीकुष्ठतालकैः ।
अभ्यस्य मुखरोगांस्तु जयेद्चिरसतामपि ॥ ८२ ॥
वातात्सर्वसरं चूर्णैर्लवणैः प्रतिसारयेत् ।
तैलं वातहरैः सिद्धं हितं कवलनस्ययोः ॥ ८३ ॥
पित्तात्मके सर्वसरे शुद्धकायस्य देहिनः ।
सर्वपित्तहरः कार्यो विधिर्मधुरशीतलः ॥ ८४ ॥
प्रतिसारणगण्डूषान्धूमं संशोधनानि च ।
कफात्मके सर्वसरे क्रमं कुर्यात्कफापहम् ॥ ८५ ॥
मुखपाके शिरावेधः शिरःकायविरेचनम् ।
कार्यं च बहुधा नित्यं जातीपत्रस्य चर्वणम् ॥८६॥
जातीपत्रामृताद्राक्षायासदार्वीफलत्रिकैः ।
क्वाथः क्षौद्रयुतः शीतो गण्डूषो मुखपाकनुत् ८७
कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रयवानां चूर्णतस्त्र्यहात् ।
मुखपाके व्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ॥ ८८ ॥

रसाञ्जनं लोध्रमथाभयं च
मनःशिलानागरगैरिकं च ।
पाठा हरिद्रा गजपिप्पली च
स्याद्धारणं क्षौद्रयुतं मुखस्य ॥ ८९ ॥

(१२ मुखरोगे) गोमूत्रमें भिजाईहुई हरडै आंवला कूट तालपत्र इनके चूर्ण खानेसें मुखके रोग और विरसता दूर होतीहै । वायुसें सर्वसर अर्थात् मुखमें छाले हो गयेहों तो नमकोंका चूर्ण बुरकावे अथवा वातनाशक औषधोंमें सिद्ध कियाहुआ तेल नस्य देनेमें और कवल धारण करनेमें हित है । पित्तसें उत्पन्न हुए सर्वसर मुखके रोगमें जुलाबसें शरीरका शोधन कर पीछे संपूर्ण शीतल और मधुर पित्तनाशक विधि करै । कफसें उत्पन्न हुए सर्वसररोगमें प्रतिसारण गंडूष धूम संशोधन यह सब विधि करनी चाहिये । और मुखपाकरोगमें नाडीका वेध शिरका विरेचन करना। नित्यप्रति वारंवार जावित्रीका चावना उत्तम है । जावित्री गिलोय दाख धमासा दारुहल्दी त्रिफला इन्होंका क्काथ बनाय शहद डाल शीतल कर कुरले धारण करनेसें मुखपाकरोग दूर होताहै । कालाजीरा कूट इंद्रजव इन्होंका चूर्ण तीनदिनतक मुखमें धारण करनेसें मुखपाक दुर्गंधि व्रण क्लेद ये सब दूर होतेहैं । रसौत लोध हरडै मनसिल सूंठ गेरू पाठा हलदी गजपीपल इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय मुखमें धारण करना हित है ।

(१३)पटोलनिम्बजम्ब्वाम्रमालतीनवपल्लवाः ।
पञ्चपल्लवजः श्रेष्ठः कषायो मुखधावने ॥ ९० ॥
पञ्चवल्ककषायो वा त्रिफलाक्काथ एव वा ।
मुखपाकेषु सक्षौद्रः प्रयोज्यो मुखधावने ॥९१॥
स्वरसः क्वथितो दार्व्या घनीभूतो रसक्रिया ।
सक्षौद्रा मुखरोगासृक्दोषनाडीव्रणापहा ॥९२॥

सप्तच्छदोशीरपटोलमुस्त-
हरीतकीतिक्तकरोहिणीभिः ।
यष्ट्याह्वराजद्रुमचन्दनैश्च
क्काथं पिबेत्पाकहरं मुखस्य ॥ ९३ ॥
पटोलशुण्ठीत्रिफलाविशाला-
त्रायन्तितिक्ताद्विनिशामृतानाम् ।
पीतः कषायो मधुना निहन्ति
मुखे स्थितश्चास्यगदानशेषान् ॥ ९४ ॥

क्वथितास्त्रिफलापाठामृद्वीकाजातिपल्लवाः ।
निषेव्या भक्षणीया वा त्रिफला मुखपाकहा ॥९५॥
तिला नीलोत्पलं सर्पिः शर्करा क्षीरमेव च ।
सक्षौद्रो दग्धवक्त्रस्य गण्डूषो दाहपाकनुत् ।
तैलेन काञ्जिकेनाथ गण्डूषश्चूर्णदाहहा ॥ ९६ ॥
घनकुष्ठैलाधान्यकयष्टीमध्वेलवालुकाकवलः ।
वदनेऽतिपूतिगन्धं हरति सुरालशुनगन्धं च ९७

(१३ पटोलादिकषायः) परवल नींब जामन आंब मालती इन्होंके नवीन पत्तोंके अथवा पंचपल्लवोंके क्काथसें मुखका धोवना श्रेष्ठ है । पंचवल्कलोंकों क्काथमें अथवा त्रिफलाके क्काथमें शहद मिलाय मुखपाकरोगमें मुखके धोवनेमें श्रेष्ठ है । दारुहलदीके स्वरसका क्काथ बनावे। करडा क्काथ होजावे तब उसमें शहद डाल मुखमें धारण करे तो मुखरोग रुधिरदोष नाडीव्रण इन्होंकों दूर करताहै । सातला खश परवल नागरमोथा हरडै कुटकी मुलहटी अमलतास चंदन इन्होंका क्काथमें शहद मिलाय पीवै तो मुखपाकरोग दूर होवे । परवल सूंठ त्रिफला इंद्रायण त्रायमाणा कुटकी दोनों हलदी गिलोय इन्होंका क्काथ बनाय शहद मिलाय पीनेसें मुखके संपूर्ण रोगोंकों दूर करता है । त्रिफला पाठा मुनक्कादाख जावित्री इन्होंके क्काथसें अथवा त्रिफलाके सेवन करनेसें मुखपाकरोग दूर होताहै । तिल नीलाकमल घृत खांड दूध इन्होंमें शहद मिलाय कुरले धारण करवानेसें जले हुए मुखका दाह और पाक दूर होताहै । तेलसें अथवा कांजीसें गंडूष धारण करवानेसें मुखका दाह दूर होताहै और नागरमोथा कूट इलायची धनियां मुलहटी शहद एलुवा इन्होंका ग्रास बनाय मुखमें धारण करनेसें मुखकी दुर्गंधि मदिरासें और लस्सनसें उपजी मुखकी दुर्गंधि दूर होतीहै ।

(१४)तुलां तथा नीलकुरंटकस्य
द्रोणेऽम्भसः संश्रपयेद्यथावत् ।
पूत्वा चतुर्भागरसे तु तैलं
पचेच्छनैरर्धपलप्रयुक्तैः ॥९८ ॥
कल्कैरनन्ताखदिरारिमेद-
जम्ब्वाम्रयष्टीमधुकोत्पलानाम् ।
तत्तैलमाश्वेव धृतं मुखेन
स्थैर्यं द्विजानां विदधाति सद्यः ॥ ९९ ॥

(१४ महासहचरतैलम्) नीला कोरटाकों तुला अर्थात् ४०० तोले लेवे पीछे १०२४ तोले जलमें पकावे। चतुर्थांश रस बाकी रहे तब यथार्थ विधिसें तेल मिलाय उसकों मंद मंद अग्निसें पकावे। तिसमें गिलोय खैर दुर्गं-

धिवाला खैर जामन आंब मुलहटी महुआ कमल इन सब औषधोंकों दोदो तोले प्रमाण ले कल्क बनाय पकते हुए तिस तेलमें गेरै। मुखमें धारण किया हुआ यह तेल शीघ्रही दांतोंकों स्थिर करताहै।

(१५)इरिमेदत्वक्पलशत-
मभिनवमापोथ्य खण्डशः कृत्वा।
तोयाढकैश्चतुर्भि-
र्निःक्वाथ्य चतुर्थशेषेण॥ १००॥
तेन क्वाथेन मतिमा-
न्तैलस्यार्धाढकं शनैर्विपचेत्।
कल्कैरक्षसमांशै-
र्मञ्जिष्ठालोध्रमधुकानाम्॥ १०१॥
इरिमेदखदिरकट्फल-
लाक्षान्यग्रोधमुस्तसूक्ष्मैलानाम्।
कर्पूरागुरुपद्मक-
लवङ्गकंकोलजातीफलानाम्॥ १०२॥
पतङ्गगैरिकवराङ्गकुसुमधातकीनां च।
सिद्धं भिषग्विदध्यादिदं मुखोत्थेषु रोगेषु॥१०३॥
परिशीर्णदन्तविद्रधिशैशिरशीताददन्तहर्षेषु।
क्रिमिदन्तदारणचलितप्रदुष्टमांसावशीर्णेषु।
मुखदौर्गन्ध्ये कार्यं प्रागुक्तेष्वामयेषु तैलमिदम्॥

(१५ इरिमेदादितैलम्) दुर्गंधवाला खैरकी छाल ४०० तोले लेवे तिसके टुकडे करके पीछे १०२४ तोले जलमें क्वाथ बनावे। चतुर्थांश बाकी रहे तब उसमें १२८ तोले तेल मिलाके शनैशनै पकावे। तिसमें मंजीठ लोध महुआ दुर्गंधिवाला खैर कायफल लाख वड नागरमोथा छोटी इलायची कपूर अगर पद्माक लौंग कंकोल जावित्री त्रिफला पतंग गेरु दालचिनी धायके पुष्प इन्होंकों एक कए तोला प्रमाण ले कल्क बनाय पकते हुए तिस तेलमें डालै। यह तेल मुखके संपूर्ण रोगोंमें युक्त करना। परिशीर्ण दन्तविद्रधि शैशिर शीताद दंतहर्ष क्रिमिदंत दारण चलितदंत दांतोंका दुष्टमांस अवशीर्णमांस मुखकी दुर्गंधि इन सब रोगोंमें वरतना श्रेष्ठहै।

(१६)तैलं लाक्षारसं क्षीरं पृथक्प्रस्थं समं पचेत्।
चतुर्गुणेऽरिमक्वाथे द्रव्यैश्च पलसम्मितैः॥ १०५॥
लोध्रकट्फलमञ्जिष्ठापद्मकेशरपद्मकैः।
चन्दनोत्पलयष्ट्याह्वैस्तैलं गण्डूषधारणम्॥१०६॥
दालनं दन्तचालं च हनुमोक्षं कपालिकाम्।
शीतादं पूतिवक्त्रं च अरुचिं विरसास्यताम्।
हन्यादास्यगदानेतान्कुर्याद्दन्तानपि स्थिरान्॥

(१६ लाक्षादितैलम्) तेल लाखका रस दूध इन सबोंकों अलग अलग एक सेर प्रमाण लेके इससे चौगुने खैरका क्वाथमें पकावे। तिसमें लोध कायफल मंजीठ नागकेशर पद्माक चंदन कमल मुलहटी इन्होंकों चारचार तोले प्रमाण लेके क्वाथ बनाय मिला देवै। पीछे इस तेलकों पकावे। इस तेलके कुरले धारण करै तो दांतोंका हिलना हनुमोक्ष कपालिका शीताद पूतिवक्त्र अरुचि विरसता ये सब मुखके रोग दूर होवे और दांत स्थिर हो जावे।

(१७)बकुलस्य फलं लोध्रं वज्रवल्लीकुरुण्टकम्।
चतुरङ्गुलवव्वोलवाजिकर्णारिमाशनम्॥ १०८॥
एषां कषायकल्काभ्यां तैलं पक्वं मुखे धृतम्।
स्थैर्यं करोति चलतां दन्तानां धावनेन च॥१०९॥

(१७ बकुलादितैलम्) बकुलवृक्षकी छाल लोध वज्रवल्ली कोरंटा अमलतास बकल रालवृक्षकी छाल खैर आसना इन्होंके कल्क और क्वाथमें तेलकों पकावे। पीछे इस तेलकों मुखमें धारण करै अथवा इससें दांतोंकों धोवे तो हिलते हुए दांत स्थिर हो जावे।

(१८)एलालताल्वनिकाफलशीतकोप-
कोलद्विकानि खदिरस्य कृते कषाये।
तुल्यांशकानि दशभागमिते निधाय
प्रोद्भिन्नकैतकपुटे पुटवद्विपाच्य॥११०॥
प्रागंशतुल्यशशिनाभितदेकसंघं
पिष्ट्वा नवेन सहकाररसेन हस्तौ।
लिप्त्वा यथाभिलषितां गुडिकां विदध्यात्
स्त्रीपुंसयोर्वदनसौरभवन्धुभूताम्॥१११॥

(१८ सहकारगुटिका) इलायची कस्तूरी नूनी त्रिफला कपूर कोषफल कंकोल इन सबोंकों दोदो भाग प्रमाण लेवे। पीछे दशभाग खैरकों ग्रहण कर तिसका क्वाथ वनाय तिस क्वाथमें इन औषधियोंके कल्ककों मिलाके केवडाके पुटमें घालके पुटपाक विधिके अनुसार पकावे। पीछे इन सब औषधोंके बराबरभाग कपूर और कस्तूरीकों मिलाके वैद्य पुरुष अपने हाथोंकों उत्तम आंवके

रसकों लीपके इस औषधीकी गोलियां बांधे । ये गोलियां मुखमें रखनेसें मुखकी दुर्गंधिकों दूर करती है और बहुत उत्तम सुगंधि करदेती है ।

(१९)खदिरस्य तुलां सम्यग्जलद्रोणे विपाचयेत्। शेषेऽष्टभागे तत्रैव प्रतिवापं प्रदापयेत् ॥ ११२ ॥
जातीकर्पूरपूगानि कक्कोलकफलानि च । इत्येषा गुडिका कार्या मुखसौभाग्यवर्धिनी । दन्तौष्ठमुखरोगेषु जिह्वाताल्वामयेषु च ॥ ११३ ॥

(१९ स्वल्पखदिरवटिका) चारसौ ४०० तोले खैरकों १०२४ तोले जलमें पकावे पीछे अष्टमांश बाकी रहे तब जावित्री कपूर सुपारी कंकोल इन्होंके चूर्णकों बुरकादेवै । फिर इसकी गोली बांधलेवे । यह गोली मुखके सौभाग्यकों बढाती है और दांत होठ मुखरोग जिव्हारोग तालुरोग इनकों दूर करती है ।

(२०)गायत्रीसारतुलयेरिमवल्कलानां
सार्धं तुलायुगलमम्बुघटैश्चतुर्भिः ।
निःक्वाथ्य पादमवशिष्टं सुवस्त्रपूतं
भूयः पचेदथ शनैर्मृदुपावकेन ॥ ११४ ॥
तस्मिन्घनत्वमुपगच्छति चूर्णमेषां
श्लक्ष्णं क्षिपेच्च कवलग्रहभागिकानाम् ।
एलामृणालसितचन्दनचन्दनाम्बु-
श्यामातमालविकषाघनलोहयष्टी॥११५॥
लज्जाफलत्रयरसाञ्जनधातकीभ-
श्रीपुष्पगैरिककटङ्कटकट्फलानाम् ।
पद्माह्वलोध्रवटरोहयवासकानां
मांसीनिशासुरभिवल्कलसंयुतानाम्११६
कक्कोलजातिफलकोषलवङ्गकानि
चूर्णीकृतानि विदधीत पलांशकानि ।
शीतेऽवतार्य घनसारचतुःपलं च
क्षिप्त्वा कलायसदृशीर्वटिकाः प्रकुर्यात् ॥
शुष्का मुखे विनिहिता विनिवारयन्ति
रोगान्गलौष्ठरसनाद्विजतालुजातान् ।
कुर्युर्मुखे सुरभितां पटुतां रुचिं च
स्थैर्यं परं दशनगं रसनालघुत्वम् ॥११८॥

(२० अथ बृहत्खदिरवटिका) खैरसारकी वक्कल ४०० तोले दुर्गंधिवाले खैरकी छाल ६०० तोले फिर इन्होंकों चार घट जलमें पकावे। एक घट जल बाकी रहजावे तब उतार वस्त्रमांहसें छानके फिर शनैशनै मंद अग्निसें पकावे । करडा होने लगे तब इलायची कमलकी डंडी सफेद चंदन लाल चंदन नेत्रवाला निशोत तेजपात मंजीठ नागरमोथा लोहा मुलहटी लज्जावंती त्रिफला रसौत धायके फूल नागकेशर लौंग गेरू दारुहलदी कायफल पद्माक लोध वडके अंकुर जवासा जटामांसी हदली बकुल वृक्षकी वक्कल इन सबोंकों एक एक ग्रास प्रमाण ले बारीक चूर्ण बनाय तिस पकते हुए रसमें गेर देवै । और कंकोल जायफल कोषफल लौंग इन्होंकों चार चार तोले प्रमाण ले बारीक चूर्ण बनाके डालै फिर इसकों अग्निसें उतार लेवे । शीतल होजावे तब सोलह तोले कपूर मिलाके पीछे मोठके समान गोलियां बांध लेवे । फिर गोली सूख जावे तब मुखमें धारण करै तो गल ओष्ठ जिव्हा दांत तालु इन्होंमें उत्पन्न हुए रोग दूर होवे और मुखमें सुगंधि उत्पन्न होतीहै विरसता दूर होतीहै दांतोंकी परम स्थिरता होतीहै । जिव्हामें हलकापन होताहै ।

इति चक्रदत्तभाषायां मुखरोगचिकित्सा ।

अथ कर्णरोगाधिकारः ५६

अब कर्णरोगका अधिकार कहतेहै ।

(१)कपित्थमातुलाङ्गाम्लशृङ्गवेररसैः शुभैः । सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णं कर्णशूलोपशान्तये ॥ १ ॥
शृङ्गवेरं च मधु च सैन्धवं तैलमेव च । कदूष्णं कर्णयोर्देयमेतद्वा वेदनापहम् ॥ २ ॥
लशुनार्द्रकशिग्रूणां सुरङ्ग्या मूलकस्य च । कदल्याः स्वरसः श्रेष्ठः कदुष्णः कर्णपूरणे । समुद्रफेनचूर्णेन युक्त्या वाप्यवचूर्णयेत् ॥ ३ ॥
आर्द्रकसूर्यावर्तक-
शोभाञ्जनमूलमूलकस्वरसाः ।
मधुतैलसैन्धवयुताः
पृथगुष्णाः कर्णशूलहराः ॥ ४ ॥
शोभाञ्जनकनिर्यासस्तिलतैलेन संयुतः । व्यक्तोष्णः पूरणः कर्णे कर्णशूलोपशान्तये ॥ ५ ॥
अष्टानामपि मूत्राणां मूत्रेणान्यतमेन च । कोष्णेन पूरयेत्कर्णौ कर्णशूलोपशान्तये ॥ ६ ॥
अश्वत्थपत्रखल्वं वा विधाय बहुपत्रकम् । तैलाक्तमङ्गारपूर्णं विदध्याच्छ्रवणोपरि ॥ ७ ॥

यत्तैलं च्यवते तस्मात्खल्वादङ्गारतापितात् ।
तत्प्राप्तं श्रवणस्रोतः सद्यो गृह्णाति वेदनाम् ॥८॥
अर्कपत्रपटे दग्धस्नुहीपत्रभवो रसः ।
कदुष्णं पूरणादेव कर्णशूलनिवारणः ॥ ९ ॥

(१ कर्णरोगे उपायाः) कैथ विजोरा इन्होंकी कांजी अदरकका रस इन्होंकों गरम कर कानमें पूरण करे तो कानका शूल दूर होवे । अदरक शहद सेंधण नमक तेल इन्होंकों कछुक गरम कर कानमें पूरण करे तो कानकी पीडा दूर होवे । अथवा लस्सन अदरक सहौंजना सुरंगी अर्थात् गुजरातमें कांवली नामसें प्रसिद्ध औषधकी जड केला इन्होंका स्वरस बनाय कछुक गरम कर कानमें धारण करनेसें कर्णशूल दूर होवे । अथवा समुद्रझागके चूर्णकों पूरण करे तो कर्णशूल दूर होवे । अदरक नीला भंगरा सहौंजनाकी जड मूली इन्होंके स्वरसमें शहद और सेंधानमक मिलाय कानमें पूरण करे तो कर्णशूल दूर होवे । सहौंजनाके निर्यासमें तिलोंका तेल मिलाय कछुक गरम कर कानमें पूरण करे तो कानकी शूल दूर होवे । गोमूत्र आदि आठ मूत्रोंमांहसें एक कोइसे मूत्रकों कछुक गरम कर कानमें घाले तो कानकी शूल शांत होवे । अथवा पीपलके बहुतसे पत्तोंका खल्व समूह बनाय तेलसें भिगोय अंगारसें युक्त कर कानके ऊपर धारण करै । तिसमाहसें जो तेल कानमें टपकता है वह संपूर्ण कर्णशूलकों दूर करताहै । आकके पत्तोंके पुटमें दग्ध किया हुआ थोहरके पत्तोंका रस कछुक गरम कर कानमें पूरण करनेसें कानकी शूल शांत होतीहै ।

(२)महतः पञ्चमूलस्य काण्डान्यष्टाङ्गुलानि च ।
क्षौमेणावेष्ट्य संसिच्य तैलेनादीपयेत्ततः ॥ १०॥
यत्तैलं च्यवते तेभ्यः सुखोष्णं तत्प्रयोजयेत् ।
ज्ञेयं तद्दीपिकातैलं सद्यो गृह्णाति वेदनाम् ॥११॥
एवं कुर्याद्भद्रकाष्ठे कुष्ठे काष्ठे च सारले ।
मतिमान्दीपिकातैलं कर्णशूलनिवारणम् ॥ १२ ॥

अर्कस्य पत्रं परिणामपीत-
माज्येन लिप्तं शिखिनावतप्तम् ।
आपीड्य तोयं श्रवणे निषिक्तं
निहन्ति शूलं बहुवेदनं च ॥ १३ ॥

तीव्रशूलातुरे कर्णे सशब्दे क्लेशवाहिनि ।
वस्तमूत्रं क्षिपेत्कोष्णं सैन्धवेनावचूर्णितम् ॥१४॥
वंशावलेखसंयुक्ते मूत्रे वाजाविके भिषक् ।
तैलं पचेत्तेन कर्णं पूरयेत्कर्णशूलिनः ॥ १५ ॥
हिङ्गुतुम्बुरुशुण्ठीभिः साध्यं तैलं तु सार्षपम् ।
कर्णशूले प्रधानं तु पूरणं हितमुच्यते ॥ १६ ॥

(२ दीपिकातैलम्) बृहत्पंचमूलके कांडोंकों ग्रहण कर रेशमी वस्त्रसें लपेट तेलसैं भिगोय अग्निसैं प्रज्वलित कर देवै । तिसमांहसैं जो २ गरम तेल टपकै उसकों दीपिकातेल कहतेहैं। इससें कानकी शूल दूर होती है । इसीतरह भद्रकाष्ठ कूट सरलवृक्षका काष्ठ इनकोंभी रेशमी वस्त्रसें लपेट तेलमें भिगोय तेल निकासके कानमें पूरे तो कानकी शूल दूर होवे। जो आकका पत्ता पकके पीला हो गयाहो उसकों घृतसें चोपरिकै अग्निसे तपाय कानमें निचोरे तो बहुत पीडावाली कानकी शूल शांत होवे । जो तीक्ष्णशूलवाला शब्दसें और क्लेशसें युक्त कान होवे उसमें बकराके मूत्रकों कछुक गरम कर सेंधानमकसें युक्त कर कानमें पूरण करे तो कर्णशूल दूर होवे । अथवा वंशलोचनसें युक्त किये हुए बकरीके मूत्र तथा भेडके मूत्रसें युक्त किये हुए तेलकों पकाके कानमें घाले तो कर्णशूल दूर होवे । हींग धनियां सूंठ इन्होंमें सिद्ध किये हुए सिरसमके तेलकों कानमें घाले तो कानकी शूल दूर होवे ।

(३)बालमूलकशुण्ठीनां क्षारो हिङ्गु सनागरम् ।
शतपुष्पावचाकुष्ठं दारुशिग्रुरसाञ्जनम् ॥ १७ ॥
सौवर्चलं यवक्षारः सर्जिकोद्भिदसैन्धवम् ।
भूर्जग्रन्थिविडं मुस्तं मधु शुक्तं चतुर्गुणम् ॥१८॥
मातुलुङ्गरसश्चैव कदल्या रस एव च ।
तैलमेभिर्विपक्तव्यं कर्णशूलहरं परम् ॥ १९ ॥
बाधिर्यं कर्णनादश्च पूयास्रावश्च दारुणः ।
पूरणादस्य तैलस्य क्रिमयः कर्णसंश्रिताः ॥ २०॥
क्षिप्रं विनाशं गच्छन्ति कृष्णात्रेयस्य शासनात् ।
क्षारतैलमिदं श्रेष्ठं मुखदन्तामयापहम् ॥ २१ ॥
मधुप्रधानं शुक्तं तु मधुशुक्तं तथापरम् ।
जम्बीरस्य फलरसं पिप्पलीमूलसंयुतम् ॥ २२ ॥
मधुभाण्डे विनिक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत् ।
मासेन तज्जातरसं मधुशुक्तमुदाहृतम् ॥ २३ ॥
कर्णनादे कर्णक्ष्वेडे कटुतैलेन पूरणम् ।
नादबाधिर्ययोः कुर्यात्कर्णशूलोक्तमौषधम् ॥२४॥

(३ अथ क्षारतैलम्) नेत्रवाला मूली सूंठ इन्होंका क्षार हींग नागरमोथा सौंप वच कूट दारुहलदी सहोंजना रसौत कालानमक जवाखार साजीखार कालरनमक सेंधानमक भोजपत्र गठौना मनियारीनमक नागरमोथा चार भाग आगे कहा हुआ लक्षणवाला मधुशुक्त विजौराका रस केलाका रस इन्होंमें तेलकों पकावे । यह तेल कानकी शूल हरनेमें अत्यंत उत्तम कहाहै । बाधिर्य कर्णनाद पूयास्राव कानमें गिरे हुए क्रिमि इन सबोंकों पूरणमात्रसें दूर करताहै । यह कृष्णत्रेय ऋषिका संमतहै । यह क्षारतैल मुखके और दांतोंके रोगोंकों दूर करनेमें श्रेष्ठ कहाहै । अब पहले कहे हुए मधुशुक्तके लक्षणकों कहतेहै । मधु अर्थात् शहद जहां प्रधान होवे उसकों मधुशुक्त कहतेहै । जंबरी नींबूके रसमें पीपली पीपलामूल इन्होंका चूर्ण मिलाय शहदके बरतनमें घालके धान्यके कोठेमें धरदेवे । फिर एक महीनातक धरा रहे तब वह मधुशुक्त नामवाला रस कहाताहै । कर्णनाद और कर्णक्ष्वेडरोगमें कर्णनाद तथा बाधिर्यरोगमें कर्णशूलमें कही हुई औषध करनी योग्य है ।

(४)अपामार्गक्षारजले
तत्कृतकल्केन साधितं तिलजम् ।
अपहरति कर्णनादं
बाधिर्यं चापि पूरणतः ॥ २५ ॥

(४ अपामार्गक्षारतैलम्) ऊंगाके क्षारसें युक्त किये हुए जलमें ऊंगाका कल्क मिलाय तिसमें तिलोंके तेलकों पकाय कानमें घाले तो कर्णनाद और कानकी बधिरता दूर होवे ।

(५)सर्जिकामूलकं शुष्कं हिङ्गुकृष्णामहौषधम् ।
शतपुष्पा च तैस्तैलं पक्कं शुक्तचतुर्गुणम् ।
प्रणादशूलबाधिर्यं स्रावं चाशु व्यपोहति ॥ २६॥

(५ सर्जिकादितैलम्) साजी, सूखी मूली हींग पीपल सूंठ सौंफ इन्होंमें तेलकों पकावे । पकतेहुए तेलमें तेलसें चौगुनी कांजी मिलावे ऐसे सिद्ध किया हुआ यह तेल कानके नाद शूल बधिर्य शूल स्राव इन रोगोंकों कानमें पूरण करनेसें दूर करताहै ।

(६)दशमूलीकषायेण तैलप्रस्थं विपाचयेत् ।
एतत् कल्कं प्रदायैव बाधिर्ये परमौषधम् ॥२७॥

(६ दशमूलीतैलम्) दशमूलके क्वाथमें औ कल्कमें तेलकों पकाय बाधिर्यवाले कानमें पूरण करे तो कानकी बधिरता दूर होवे ।

(७)फलं बिल्वस्य मूत्रेण पिष्ट्वा तैलं विपाचयेत् ।
साजक्षीरं तद्धि हरेद्वाधिर्यं कर्णपूरणे ॥ २८ ॥
एष एव विधिः कार्यः प्रणादे नस्यपूर्वकः ।
गुडनागरतोयेन नस्यं स्यादुभयोरपि ॥ २९ ॥
चूर्णं पञ्चकषायाणां कपित्थरससंयुतम् ।
कर्णस्रावे प्रशंसन्ति पूरणं मधुना सह ॥ ३० ॥
मालतीदलरसमधुना पूरितमथवा गवां मूत्रैः ।
दूरेण परित्यज्यते च श्रवणयुगं पूतिरोगेण ॥३१॥
हरितालं सगोमूत्रं पूरणं पूतिकर्णजित् ।
सर्जत्वक्चूर्णसंयुक्तः कार्पासीफलजो रसः ।
मधुना संयुतः साधु कर्णस्रावे प्रशस्यते ॥ ३२ ॥

(७ बिल्वतैलम्) बेलफलकों गोमूत्रमें पीस बकरीके दूधसें युक्त किये हुए तेलमें मिलाय तिस तेलकों पकाय कानमें घाले तो कानकी बधिरता दूर होवे । कर्णनादरोगमेंभी नस्यपूर्वक यही विधि करनी चाहिये । गुड और सूंठके जलसें नस्य देनी हित है । कर्णस्रावरोगमें पंचकषायोंके चूर्णकों कैथके रससें और शहदसें युक्त कर कानमें घालना हितहै । मालतीके पत्तोंके रसमें शहद मिलाय अथवा गोमूत्र मिलाय कानमें घाले तो कानकी दुर्गंधि राधि दूर होवे । दुर्गंधिवाले कानमें गोमूत्रमें हरताल मिलाके पूरण करना हितहै और राल्वृक्षकी छालके चूर्णमें विनौलेका रस मिलाय और शहद मिलाय कानमें पूरण करे तो कर्णस्राव दूर होवे ।

(८)जम्ब्वाम्रपत्रं तरुणं समांशं
कपित्थकार्पासफलं च सार्द्रम् ।
क्षुण्वा रसं तं मधुना विमिश्रं
स्रावापहं संप्रवदन्तितज्ज्ञाः ॥ ३३ ॥
एतैः शृतं निम्बकरञ्जतैलं
ससार्षपं स्रावहरं प्रदिष्टम् ॥ ३४ ॥
पुटपाकविधिस्विन्नहस्तिविड्जातगोण्डकः ।
रसः सतैलसिन्धूत्थः कर्णस्रावहरः परः ॥ ३५॥

(८ जम्ब्वाद्यतैलम्) जामनके और आंवके कोमल पत्तोंकों समान भाग ले कैथ और गीला विनौलाका रस

मिलाय और शहद मिलाय कानमें घाले तो कर्णस्राव दूर होवे। अथवा इन्हीं औषधोंमें सिद्ध किया हुआ नींबका तेल अथवा करंजुवाका तेल तथा सिरसमके तेलकों कानमें घाले तो कर्णस्राव दूर होवे। हस्तीकी लीदकों पुटपाकविधिसें पकावे। पीछे तिस पके हुए गोलेका रसमें तेल और सेंधानमक मिलाय कानमें घाले तो यह तेल कर्णस्राव हरनेमें अति उत्तम कहाहै।

(९)जम्बूकस्य तु मांसेन कटुतैलं विपाचयेत्।
तस्य पूरणमात्रेण कर्णनाडी प्रशाम्यति ॥ ३६ ॥
निशागन्धपले पक्वं कटुतैलं पलाष्टकम्।
धूस्तूरपत्रजरसे कर्णनाडीजिदुत्तमम् ॥ ३७ ॥

(९ नाडीशोधनतैलम्) गीदडके मांसमें कडुवे तेलकों पकाके कानमें घाले तो कानकी नाडी शांत होवे। चार तोले गंधक ४ तोले हलदी ३२ तोले कडुवा तेल इन सबोंकों धतूराके रसमें पकावे। यह कानकी नाडीके रोगकों दूर करताहै।

(१०)अथ कर्णप्रतीनाहे स्नेहस्वेदौ प्रयोजयेत्।
ततो विरिक्तशिरसः क्रियां प्राप्तां समाचरेत्॥३८
कर्णपाकस्य भैषज्यं कुर्यात्क्षतविसर्पवत्।
नाडीस्वेदोऽथ वमनं धूममूर्ध्वविरेचनम् ॥ ३९॥
विधिश्च कफहा सर्वः कर्णकण्डूं व्यपोहति।
क्लेदयित्वा तु तैलेन स्वेदेन प्रविलाप्य च॥४०॥
शोधयेत्कर्णगूथं तु भिषक् सम्यक् शलाकया।
निर्गुण्डीस्वरसस्तैलं सिन्धुधूमरजो गुडः ॥४१॥
पूरणात्पूतिकर्णस्य शमनो मधुसंयुतः।
जातिपत्ररसे तैलं विपक्वं पूतिकर्णजित् ॥ ४२ ॥
वरुणार्ककपित्थाम्रजम्बूपल्लवसाधितम्।
पूतिकर्णापहं तैलं जातीपत्ररसेन वा ॥ ४३ ॥
सूर्यावर्तकस्वरसं सिन्धुवाररसस्तथा।
लाङ्गलीमूलजरसं त्र्यूषणेनावचूर्णितम् ॥ ४४ ॥
पूरयेत्क्रिमिकर्णं तु जन्तूनां नाशनं परम्।
क्रिमिकर्णकनाशार्थं क्रिमिघ्नं योजयेद्विधिम् ४५
वार्ताकुधूमश्च हितः सर्षपस्नेह एव च।
हलिसूर्यावर्तव्योषस्वरसेनातिपूरिते ॥ ४६ ॥
कर्णे पतन्ति सहसा सर्वास्तु क्रिमिजातयः।
नीलवुन्नारसस्तैलसिन्धुकाञ्जिकसंयुतः ॥ ४७ ॥
कदुष्णः पूरणात्कर्णे निःशेषः क्रिमिपातनः।
धूपनः कर्णदौर्गन्ध्ये गुग्गुलुः श्रेष्ठ उच्यते ४८
राजवृक्षादितोयेन सुरसादिजलेन वा।
कर्णप्रक्षालनं कार्यं चूर्णैरेतैः प्रपूरणम् ॥ ४९ ॥
घृतं रसाञ्जनं नार्याः क्षीरेण क्षौद्रसंयुतम्।
प्रशस्यते चिरोत्थेऽपि सास्रावे पूतिकर्णके॥५०॥

(१० स्नेहस्वेदाद्यन्ये उपायाः) कानके प्रतीनाहरोगमें स्नेह और स्वेद कराना हित है। पीछे शिरका जुलाब कराके विहित क्रियाकों करै। कर्णपाकका इलाज कर्णक्षत तथा कानके विसर्परोगकी तरह करै और नाडी स्वेद वमन धूम मस्तकका जुलाब ये विधि करनेसें। अथवा संपूर्ण कफनाशक इलाज करनेसें कानकी खाजि दूर होतीहै। कर्णगूथ अर्थात् कानमें वढाहुवा मैलका रोगमें स्वेद दिवाके तेलसें युक्त कर शलाईसें अच्छीतरह कानका शोधन करै। और संभालूका स्वरस तेल सेंधानमक धूमांकी रज गुड शहद इन सबोंकों मिलाय कानमें पूरे तो दुर्गंधिवाला कान निर्मल होवे। अथवा जूहीके पत्तोंके रसमें सिद्ध किया हुआ तेलकों कानमें घाले तो कानकी दुर्गंधि दूर होवे। वरणा आक कैथ आंब जामन जूही इन्होंके पत्तोंमें पकाया हुआ तेल कानकी दुर्गंधिकों दूर करताहै। भंगराका रसमें अथवा संभालूके रसमें तथा कलहारीकी जडके रसमें सूंठ मिरच पीपल इन्होंके चूर्णकों मिलाय कानमें घाले तो कानके क्रिमि नष्ट होवें। अथवा क्रिमिनाशक अन्य विधियोंकों करै। वार्ताकू शाकका धूमा पूरण करना अथवा सिरसमका तेल पूरण करना। भंगराके रसमें सूंठ मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण मिलाय कानमें घाले तो कानके संपूर्ण क्रिमि दूर होवे। नीलके रसमें सेंधानमक और कांजी मिलाय कछुक गरम कर कानमें घाले तो कानके संपूर्ण क्रिमि दूर होवे। और कानकी दुर्गंधिकों दूर करनेके वास्ते गूगलका धूप देना हितहै। अमलतास आदि औषधके जलसें अथवा काली तुलसीके जलसें कानकों धोके पीछे इन आगे कहे हुए चूर्णोंकों घालै। रसौतकों स्त्रीके दूधमें घीस शहद मिलाय कानमें घाले तो बहुत कालसें उपजा हुआ स्रावसहित पूतिकर्णक कानका रोग दूर होवे।

(११)कुष्ठहिङ्गुवचादारुशताह्वाविश्वसैन्धवैः ।
पूतिकर्णापहं तैलं बस्तमूत्रेण साधितम् ॥ ५१ ॥

(११ कुष्ठादितैलम्) कूट हींग वच दारुहलदी शतावरी सूंठ सेंधानमक इन्होंमें सिद्ध कर बकराके मूत्रमें सिद्ध किये हुए तेलकों कानमें घाले तो कानकी दुर्गंधि दूर होवे ।

(१२)विद्रधौ चापि कुर्वीत विद्रध्युक्तं हि भेषजम् ।
शतावरीवाजिगन्धापयस्यैरण्डबीजकैः ॥ ५२ ॥
तैलं विपक्वं सक्षीरं पालीनां पुष्टिकृत्परम् ।
गुञ्जाचूर्णयुते जाते माहिषे क्षीर उद्धृतम् ॥५३॥
नवनीतं तदभ्यङ्गात्कर्णपालिविवर्धनम् ।
विषगर्भे तिक्ततुम्बीतैलमष्टगुणे खरात् ॥ ५४ ॥
मूत्रे पक्वं तदभ्यङ्गात्कर्णपालिविवर्धनम् ।
कल्केन जीवनीयेन तैलं पयसि साधितम् ५५
आनूपमांसक्वाथेन पालीपोषणवर्धनम् ।
माहिषनवनीतयुतं सप्ताहं धान्यराशिपरिवसितं
नवमुसलिकन्दचूर्णमृद्धिकरं कर्णपालीनाम् ।
कर्णस्य दुर्व्यधे भूते संरम्भो वेदना भवेत् ५७
तत्र दुर्व्यधरोहार्थं लेपो मध्वाज्यसंयुतैः ।
मधूकयवमञ्जिष्ठारुबुमूलैः समन्ततः ॥ ५८ ॥
अनेकधातुच्छिन्नस्य सन्धिः कर्णस्य वै भिषक् ।
यो यथाभिनिविष्टः स्यात्तं तथा विनियोजयेत्
धान्याम्लोष्णोदकाभ्यां तु सेको वातेन दूषिते ।
रक्तपित्तेन पयसा श्लेष्मणा तूष्णवारिणा ॥६०॥
ततः सीव्य स्थिरं कुर्यात्सन्धिं बन्धेन वा पुनः ।
मध्वाज्येन ततोऽभ्यज्य पिचुना सन्धिवेष्टकम् ।
कपालचूर्णेन ततश्चूर्णयेत्पथ्ययाथवा ॥ ६१ ॥

इति कर्णरोगचिकित्सा ।

(१२ विद्रध्युक्ता अन्ये चोपायाः) कानकी विद्रधिमें पूर्व कही हुई विद्रधिके इलाज करै । शतावरी आसगंध दूधी अरंडके बीज इन्होंमें पकायेहुए तेलमें दूध मिलाय कानमें घाले तो कानकी पाली पुष्ट होवे । सब रोग दूर होवे । चिरमठीके चूर्णमें भैंसका दूध मिलाय तिस दूधकों मंथके नौनीघृत निकासके जिस घृतका लेप करनेसें कानकी पाली वढतीहै । विषगर्भनामवाला तेल और कडुईतुंबीमें सिद्ध कियाहुआ तेलकों आठगुने गधाके मूत्रमें पकाके लेप करनेसें कानकी पाली बढतीहै । जीवनीयगण औषधोंका कल्क बनाय तिसमें दूध मिलाय फिर तेल मिलाके तिसकों पकाके कानमें घालनेसें कानकी पाली पुष्ट होतीहै । अनूपदेशके जीवोंके मांसके क्वाथ पूरनेसें कर्णपाली वढतीहै । अथवा भैंसके नूनीघृतकों सात दिनतक धान्यके कोठेमें रखके तिसका लेप करै । अथवा नवीन मुसलीकंदके सेवनेसें कानकी पाली बढतीहै । जो कान दुष्टप्रकारसें वींधा जावे उसमें संरंभ और पीडा होतीहै । तहां महुआ इंद्रजव मंजीठ अरंडकी जड इन्होंकों पीस लेप करनेसें अनेकप्रकारसें कटा हुआ कानकी संधि भरजातीहै । जो जिस प्रकारसें कटा हो उसकों उसी विधिसें जोडै । वातसें दूषित हुए कानकों धान्यकी कांजीसें अथवा गरम जलसें धोवे । रक्तपित्तसें दूषित हुएकों दूधसें धोवै । कफसें दूषित कानकों गरम जलसें धोवै । तिस्सें अनंतर कटेहुये कानकों सीमकर स्थिर कर देवै । अथवा संधिकों बांधदेवै अथवा शहद और घृतसें युक्त किये हुए फोहेकों बांधदेवै वा शंखका तथा हरडैका चूर्ण बुरकादेवै ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां कर्णरोगचिकित्सा ।

अथ नासारोगाधिकारः ५७

अब नासारोगका अधिकार कहतेहै ।

(१) पञ्चमूलीशृतं क्षीरं स्याच्चित्रकहरीतकी ।
सर्पिर्गुडः षडङ्गश्च यूषः पीनसशान्तये ॥ १ ॥

(१ नासारोगोपायाः) पंचमूलका क्वाथ दूध चीता हरडै गुड घृत इन छह वस्तुओंसें सिद्ध कियाहुआ यूषसें पीनसरोग शांत होताहै ।

(२)व्योषचित्रकतालीसतिन्तिडीचाम्लवेतसम्
सचव्याजाजीतुल्यांशमेलात्वक्पत्रपादिकम् ॥२॥
व्योषादिकं चूर्णमिदं पुराणगुडसंयुतम् ।
पीनसश्वासकासघ्नं रुचिस्वरकरं परम् ॥ ३ ॥

(२ योषादिचूर्णम्) सूंठ मिरच पीपल चीता तालीसपत्र अमली चूका चव्य जीरा इलायची तेजपात इन सबोंकों समानभाग ले चूर्ण बनाय पुराने गुडमें गोली बांध लेवे । यह व्योषआदि चूर्ण पीनस श्वास खांसी इन्होंकों दूर करताहै । और रुचिकों बढाताहै ।

(३)पाठाद्विरजनीमूर्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ।
दन्त्या च तैलं संसिद्धं नस्यं सम्यक्तु पीनसे॥४॥

व्याघ्रीदन्तीवचाशिग्रुसुरसव्योपसैन्धवैः ।
पाचितं नावनं तैलं पूतिनासागदं जयेत् ॥ ५ ॥
त्रिकटुविडङ्गसैन्धवबृहतीफलशिग्रुसुरसदंतीभिः
तैलं गोजलसिद्धं नस्यं स्यात्पूतिनस्यस्य ॥ ६ ॥
कलिङ्गहिङ्गुमरिचलाक्षासुरसकट्फलैः ।
कुष्ठोग्राशिग्रुजन्तुघ्नैरवपीडः प्रशस्यते ॥ ७ ॥
तैरेव मूत्रसंयुक्तैः कटु तैलं विपाचयेत् ।
अपीनसे पूतिनस्ये शमनं कीर्तितं परम् ॥ ८ ॥
नासापाके पित्तहरं विधानं
कार्यं सर्वं बाह्यमभ्यन्तरं च ।
हरेद्रक्तं क्षीरिवृक्षत्वचश्च
योज्याः सेके सघृताश्च प्रदेहाः ॥ ९ ॥
पूयास्रक्तपित्तघ्नाः कषाया नावनानि च ।
शुण्ठीकुष्ठकणाबिल्वद्राक्षाकल्ककषायवत् ।
साधितं तैलमाज्यं वा नस्यं क्षवथुरुक्प्रणुत् १०
दीप्ते रोगे पैत्तिके संविधानं
सर्वं कुर्यान्माधुरं शीतलं च ।
नासानाहे स्नेहपानं प्रधानं
स्निग्धा धूमा मूर्ध्नि बस्तिश्च नित्यम् ११

(३ पाठादिनानाविधतैलानि) पाठा दोनों हलदी मूर्वा पीपली जावित्री जमालगोटाकी जड इन्होंमें तेलकों सिद्ध कर नस्य देनेसें पीनसरोग दूर होताहै। कटेहली जमालगोटाकी जड वच सहौंजना काली तुलसी सूंठ मिरच पीपल सेंधानमक इन्होंमें तेलकों पकावे। तिसकी नस्य देनेसें पूतिनासारोग दूर होवे। सूंठ मिरच पीपल वायविडंग सेंधानमक कटेहलीका फल सहोंजना कालीतुलसी जमालगोटाकी जड इन्होंकों गोमूत्र मिलाय तिसमें तेलकों पकाय नस्य देनेसें पूतिनासारोग दूर होताहै। इंद्रजव हींग मिरच लाख मोचरस कायफल कूट पीपली सहोंजना वायविडंग इन औषधोंसें अवपीडकर्म कराना हितहै। अथवा इन्हीं औषधोंमें गोमूत्र मिलाय तिसमें कडुवा तेलकों पकाय नस्य देनेसें पीनस और पूतिनस्यरोग दूर होताहै। नासापाकरोगमें पित्तनाशक विधान करै। रक्तकों निकलावे और दूधवाले वृक्षोंकी छालके जलसे सेक करै। घृतका लेप करै और राधि रक्तपित्त इनकों नष्ट करनेवाले क्वाथ वा नस्य देना नासापाकरोगमें हितहै। और सूंठ कूट पीपल बेलगिरी दाख इन्होंके कल्कमें अथवा क्वाथमें सिद्ध कियेहुय तेलकी अथवा घृतकी नस्य देनेसें क्षवथु अर्थात् छींक बंद होतीहै। पित्तसें उपजे नासादाहमें संपूर्ण मधुर और शीतल विधान करना। नासानाहरोगमें स्नेहपानविधि करनी मुख्यहै। और स्नेहके धूमें दिवावे। शिरोबस्तिकर्म करावे।

(४)वातिके तु प्रतिश्याये पिबेत्सर्पिर्यथाक्रमम्
पञ्चभिर्लवणैः सिद्धं प्रथमेन गणेन च ॥ १२ ॥
नस्यादिषु विधिं कृत्स्नमवेक्षेतार्दितेरितम् ।
पित्तरक्तोत्थयोः पेयं सर्पिर्मधुरकैः शृतम् ॥१३॥
परिषेकान्प्रदेहांश्च कुर्यादपि च शीतलान् ।
कफजे सर्पिषा स्निग्धं तिलमाषविपक्वया ॥१४॥
यवाग्वा वामयित्वा वा कफघ्नं क्रममाचरेत् ।
दार्वीङ्गुदीनिकुम्भैश्च किणिह्या सुरसेन च ॥१६॥
वर्तयोऽत्र कृता योज्या धूमपाने यथाविधि ।
अथवा सघृतान्सक्तून्कृत्वा मल्लिकसम्पुटे ।
नवप्रतिश्यायवतां धूमं वैद्यः प्रयोजयेत् ॥ १७ ॥
यः पिबति शयनकाले शयनारूढः सुशीतलं मह्यां
सलिलं पीनसयुक्तः स मुच्यते तेन रोगेण ॥
पुटपक्वं जयापत्रं सिन्धुतैलसमन्वितम् ।
प्रतिश्यायेषु सर्वेषु शीलितं परमौषधम् ॥ १९॥
सोषणं गुडसंयुक्तं स्निग्धदध्यम्लभोजनम् ।
नवप्रतिश्यायहरं विशेषात्कफपाचनम् ॥ २० ॥
प्रतिश्याये नवे शस्तो यूषश्चिञ्चादलोद्भवः ।
ततः पक्वं कफं ज्ञात्वा हरेच्छीर्षविरेचनैः ॥२१॥
शिरसोऽभ्यञ्जनस्वेदनस्यकट्वम्लभोजनैः ।
वमनैर्घृतपानैश्च तान्यथास्वमुपाचरेत् ॥ २२ ॥
भक्षयति भुक्तमात्रे
सलवणमुत्स्विन्नमाषमत्युष्णम् ।
स जयति सर्वसमुत्थं
चिरजातं च प्रतिश्यायम् ॥ २३ ॥
पिप्पल्यः शिग्रुबीजानि विडङ्गं मरिचानि च ।
अवपीडः प्रशस्तोऽयं प्रतिश्यायनिवारणः ॥२४॥
समूत्रपिष्टाश्चोद्दिष्टाः क्रियाः क्रिमिषु योजयेत् ।
नावनार्थं क्रिमिघ्नानि भेषजानि च बुद्धिमान् ।
शेषाणां तु विकाराणां यथास्वं स्याच्चिकित्सितम्

(४ वातिकादौ सर्पिःपानादि) वातसें उपजे प्र-

तिश्याय रोगमें यथाक्रमसें पांच नमकोंमें सिद्ध किये हुए और प्रथम वातनाशकगणमें सिद्ध किये हुए घृतकों पीवे। और रोगीके अनुसार संपूर्ण नस्य आदिकोंकी विधि करै। पित्तरक्तसें उत्पन्न हुए नासारोगमें मधुर औषधोंमें सिद्ध कियेहुए घृतकों पीवै । शीतल परिषेक और लेप करने हितहै । कफसें उपजे नासापाकमें घृतसें स्नेह कराय पीछे तिलोंकी और उडदोंकी यवागू पिलाके वमन कराय कफनाशक क्रम करै । अथवा दारुहलदी हींगणवेट जमालगोटाकी जड ऊंगा इन सब औषधोंके स्वरसमें बत्तियोंकों भिगोके पीछे यथार्थविधिसें धूमपानमें युक्त करै। अथवा सत्तुओंकों घृतसें युक्त कर मल्लिकसंपुटमें दग्ध करे । उसका धूमा दिवानेसें प्रतिश्यायरोग दूर होवे । जो पुरुष रात्रिकों शयन करनेके समय पृथ्वीमें सोके शीतल जल पीवे वह पीनसरोगसें दूर होजाताहै । अरणीके पत्तोंकों पुटमें पकाय तिसमें सेंधानमक और तेल मिलाय नासिकामें युक्त करै। यह सब प्रतिश्याय रोगोंमें परम औषध कहाहै सूंठ मिरच पीपल इन्होंकों गुडमें मिलाय भोजन करे अथवा चिकना दहीका और खट्टा भोजन करे तो नवीन प्रतिश्यायरोग दूर होवे और कफ पकजावे । नवीन प्रतिशायमें अमलीके पत्तोंका यूष बनाय पीना हित है । इससें पीछे कफ पकजावे तब शनै शनै शिरका विरेचन करवावै। शिरका अभ्यंजन स्वेद नस्य चरचरा और खट्टा भोजन ये विधि करनी हित है । और घृतपान आदिकोंसें वमन कराना हित है । जो पुरुष भोजन करनेके बाद सिजायेहुए नमकसें युक्त किये हुए उडदोंकों भक्षण करताहै वह चिरकालसें उत्पन्न हुएभी प्रतिश्यायरोगकों दूर करताहै । पीपली सहोंजनाके बीज वायविडंग मिरच इन्होंसें अवपीडकर्म करे तो प्रतिश्यायरोग दूर होवे। और जो नासिकामें क्रिमि गिर गये हों तो क्रिमिनाशक औषधोंकों गोमूत्रमें पीस बुद्धिमान् वैद्य नस्य देवे और अन्य बाकी रहे विकारोंकों दोषोंके अनुसार दूर करै ।

(५)रक्तकरवीरपुष्पं जात्यशनकमल्लिकायाश्च ।
एतैः समं तु तैलं नासार्शोनाशनं श्रेष्ठम् ॥२६॥

(५ करवीरतैलम्) लाल कनेर आसना चमेली इन्होंके पुष्पोंकों ग्रहण कर तिसमें तेलकों पकाय नस्य देनेसें नासिकाका अर्शरोग दूर होताहै ।

(६)गृहधूमकणादारुक्षारनक्ताह्वसैन्धवैः ।
सिद्धं शिखरिबीजैश्च तैलं नासार्शसां हितम् २७

(६ शिखरीतैलम्) घरका धूमां पीपल दारुहलदी जवाखार करंजुवा सेंधानमक उंगाके बीज इन्होंमें सिद्ध कियेहुए तेलकी नस्य देनेसें नासार्शरोग दूर होताहै ।

(७)चित्रकचविकादीप्यक-
निदिग्धिकाकरञ्जबीजलवणार्कैः ।
गोमूत्रयुक्तं सिद्धं
तैलं नासार्शसां विहितम् ॥ २८ ॥

(७ चित्रकतैलम्) चीता चव्य अजमान कटेहली करंजुवाके बीज नमक आक गोमूत्र इन्होंमें सिद्ध किये हुए तेलका नस्य देनेसें नासिकामें उपजा अर्शरोग दूर होताहै ।

(८)चित्रकस्यामलक्याश्च गुडूच्या दशमूलजम् ।
शतं शतं रसं दत्त्वा पथ्याचूर्णाढकं गुडात् २९
शतं पचेद्घनीभूते पलं द्वादशकं क्षिपेत् ।
व्योषत्रिजातयोः क्षारात्पलार्धमपरेऽहनि ॥ ३०॥
प्रस्थार्धं मधुनो दत्त्वा यथाग्न्यद्यादतन्द्रितः ।
वृद्धयेऽग्नेः क्षयं कासं पीनसं दुस्तरं क्रिमीन् ।
गुल्मोदावर्तदुर्नामश्वासान्हन्ति रसायनम् ३१

इति नासारोगचिकित्सा ।

(८ चित्रकहरीतकी) चीता आंवला गिलोय दशमूल इन्होंके सौसौ पल अर्थात् ४०० तोले अलग अलग रस ग्रहण कर तिसमें २५६ तोले हरडैका चूर्ण मिलाके पकावे । पकते पकते करडा होजावे तब ४८ तोले गुड मिलावे । पीछे दूसरे दिन सूंठ मिरच पीपल तीनों प्रकारके क्षार इन्होंकों दोदो तोले डालै और ३२ तोले शहद डालै। पीछे इस औषधकों जठराग्निके बलाबल विचारके भक्षण करवावै तो जठराग्नि दीप्त हो क्षयी खांसी पीनस कृमि गुल्म उदावर्त्त बवासीर श्वास ये सब रोग दूर होवैं । यह रसायन कहाताहै ।

इति चक्रदत्तभाषायां नासारोगचिकित्सा ।

अथ नेत्ररोगाधिकारः ५८

अब नेत्ररोगचिकित्सा कहतेहै

(१)लङ्घनालेपनस्वेदशिराव्यधविरेचनैः ।
उपाचरेदभिष्यन्दानञ्जनाश्च्योतनादिभिः ॥ १ ॥
श्रीवासातिविषालोध्रैश्चूर्णितैरल्पसैन्धवैः ।
अव्यक्तेऽक्षिगदे कार्यं प्रोतस्थैर्गुण्डनं बहिः ॥२॥

अक्षिकुक्षिभवा रोगाः प्रतिश्यायव्रणज्वराः ।
पञ्चैते पञ्चरात्रेण प्रशमं यान्ति लङ्घनात् ॥ ३ ॥
स्वेदः प्रलेपस्तिक्तान्नं सेको दिनचतुष्टयम् ।
लङ्घनं चाक्षिरोगाणामामानां पाचनानि षट् ।
अञ्जनं पूरणं क्वाथपानमामेन शस्यते ॥ ४ ॥
धात्रीफलनिर्यासो नवदृक्कोपं निहन्ति पूरणतः
सक्षौद्रसैन्धवो वा शिग्रूद्भवपत्ररससेकः ॥ ५ ॥
दार्वीरसाञ्जनं वापि स्तन्ययुक्तं प्रपूरणम् ।
निहन्ति शीघ्रं दाहाश्रुवेदनाः स्यन्दसम्भवाः ॥६

करवीरतरुणकिसलय-
च्छेदोद्भववहुलसलिलसंपूर्णम् ।
नयनयुगं भवति दृढं
सहसैव तत्क्षणात्कुपितम् ॥ ७ ॥

शिखरिमूलं ताम्रकभाजने स्तोकसैन्धवोन्मिश्रम् ।
मस्तु निघृष्टं भरणाद्धरति नवं लोचनोत्कोपम् ॥
सैन्धवदारुहरिद्रागैरिकपथ्यारसाञ्जनैः पिष्टैः ।
दत्तो वहिः प्रलेपो भवत्यशेषाक्षिरोगहरः ॥९॥
तथा शारवकं लोध्रं घृतभृष्टं विडालकः ।
कार्यो हरीतकीतद्वद्घृतभृष्टो विडालकः॥ १० ॥
शालाक्यक्ष्णोर्वहिर्लेपो विडालक उदाहृतः ॥
गिरिमृच्चन्दननागरखटिकांशयोजितो वहिर्लेपः।
कुरुते वचया मिश्रो लोचनमगदं न सन्देहः१२
भूम्यामलकी घृष्टाससैन्धवगृहवारियोजिता ताम्रे
याता घनत्वमक्ष्णोर्जयति वहिर्लेपतः पीडाम् ॥

(१ नेत्ररोगेसामान्योपायाः) नेत्रके अभिष्यंद अर्थात् लाल आदि दूषित वर्ण होना आंशु गिरनी खुजली होना ऐसे अभिष्यंदनामक रोगमें अंजन घालना और आश्चोतनकर्म अर्थात् औषधोंका निचोडना हित है। सरलवृक्षकी छाल अतीस लोध इन्होंके चूर्णमें कछुक सेंधानमक मिलाय अप्रकट हुए नेत्ररोगमें नेत्रोंके बाहिर पोटली बांधके फेरनी योग्यहै। आंखिमें तथा कूषिमें उपजे रोग प्रतिश्याय व्रण ज्वर ये पांच रोग लंघन करानेसें पांच रात्रिमें दूर होतेहैं। स्वेद प्रलेप कडुवा अन्नका भोजन सेक नेत्रदूखने पीछे चारदिनोंका व्यतीत होना लंघन कराना ये छह वस्तु कच्चे नेत्ररोगकों पकातीहै। कच्चे नेत्ररोगमें अंजन औषधपूरण, क्वाथपान ये इलाज नहीं करने चाहिये। आंवलेके फलका निर्यास आंखिमें पूरण करे तो नवीन नेत्रदूखना दूर होवे। सहौंजनाके पत्तोंके रसमें सेंधानमक और शहद मिलाय तिससें आंखोंका सेकना हित है। अथवा दारुहलदी रसौत इन्होंकों स्त्रीके दूधमें पीस अंजन घालना श्रेष्ठ है। इससें शीघ्रही दाह अभिष्यंदसें उपजी नेत्रकी पीडा ये सब दूर होतीहै। नेत्र दूखनेकी आदिमें कनेरके नवीन पत्तोंके तोडनेसें जो पानी निकसे उसकों नेत्रमें आंजै तौ निर्मल आंखि होवे। ऊंगाकी जडकों तांबाके पात्रमें घिसै उसमें कछुक सेंधानमक मिलाय पीछे दहीके पानीमें पीस आंखिमें आंजै तो नेत्र अच्छे होवै। सेंधानमक दारुहलदी गेरू हलदी रसौत इन्होंकों पीस आंखोंके बाहिर लेप करनेसें नेत्रके संपूर्ण रोग दूर होतेहैं। और लोध घृतमें भूनी हुई हरडै इन्होंकों पीस आंखोंके बाहिर शलाईसें लेप करे तो दूखती हुई आंखी निर्मल होवे। पर्वतकी मृत्तिका चंदन खडिया वच इन्होंकों पीस आंखोंके बाहिर लेप करनेसें आंखका रोग दूर होताहै। भूमीआंवला सेंधानमक इन्होंकों छप्परकी चीलके पानीसे तांबाके पात्रमें घिसै फिर आंखोंके बाहिर करडा करडा लेप करै तो आंखिकी पीडा दूर होवे।

(२)आश्च्योतनं मारुतजे क्वाथो विल्वादिभिर्हितः
कोष्णः सैरण्डवृहतीतर्कारीमधुशिग्रुभिः ॥ १४ ॥
एरण्डपल्लवे मूले त्वचि चाजं पयः शृतम् ।
कण्टकार्याश्च मूलेषु सुखोष्णं सेचने हितम् १५
सम्पक्वेऽक्षिगदे कार्यं चाञ्जनादिकमिष्यते ।
प्रशस्तवर्त्मता चाक्ष्णोः संरम्भाश्रुप्रशान्तता १६
मन्दवेदनता कण्डूः पक्वाक्षिगदलक्षणम् ।
अञ्जनादिविधिश्चाग्रे निखिलेनाभिधास्यते ॥१७॥
बृहत्येरण्डमूलत्वक्शिग्रोर्मूलं ससैन्धवम् ।
अजाक्षीरेण पिष्टं स्याद्वर्तिर्वाताक्षिरोगनुत् १८
हरिद्रे मधुकं पथ्यादेवदारु च पेषयेत् ।
आजेन पयसा श्रेष्ठमभिष्यन्दे तदञ्जनम् ॥ १९ ॥
गैरिकं सैन्धवं कृष्णां नागरं च यथोत्तरम् ।
पिष्टं द्विरंशतोऽद्भिर्वा गुडिकाञ्जनमिष्यते ॥२०॥
प्रपौण्डरीकयष्ट्याह्वनिशामलकपद्मकैः ।
शीतैर्मधुसितायुक्तैः सेकः पित्ताक्षिरोगनुत् २१
द्राक्षामधुकमञ्जिष्ठाजीवनीयैः शृतं पयः ।
प्रातराश्च्योतनं पथ्यं शोथशूलाक्षिरोगिणाम् २२

(२ नेत्राभिष्यंदसेकादि) वायुसें उपजे आंखिके अभिष्यंद रोगमें बिल्वादिक औषधोंके गरम गरम क्राथसें आश्चोतनकर्म करै । अथवा अरंड कटेहली अरणी महुआ सहौंजना इनके क्राथसें आंखोंकों सेकै अरंडके । पत्तोंमें जडमें अथवा वक्कलमें बकरीके दूधकों पकावे । अथवा कटेहलीकी जडमें दूधकों पकावे । तिस्सें आंखोंकों सेकै। जिसकी आंखि दूखती हुई पकजावे तब अंजन घालना योग्यहै । नेत्रके कोइये स्वच्छ हों और आंशु गिरती हुई बंद होवें । पीडा मंद होवे खाजि होवे यह पकेहुए नेत्रके लक्षणहैं । और अंजन आदि संपूर्ण विधिकों आगे कहेंगे । बडी कटेहलीकी जड और छाल सहौंजनाकी जड सेंधानमक इन्होंकों बकरीके दूधमें पीस बत्ती बनाय आंखमें घालनेसें नेत्ररोग दूर होताहै । दोनों हलदी महुआ हरडै देवदारु इन्होंकों बकरीके दूधमें पीस आंखिमें घाले तो अभिष्यंदरोग दूर होवे । गेरू सेंधानमक पीपलु सूंठ इन्होंकों यथोत्तरभाग अधिक ग्रहण कर जलमें पीस गोली बनाय अंजन घालै । कमल मुलहटी हलदी आंवला पद्माक इन्होंकों पीस शहद और मिसरी मिलाय पित्तसें दूखती हुई आंखिका सेक करना । दाख मुलहटी मंजीठ जीवनीयगण औषध इन्होंकों ग्रहण कर दूधमें क्काथ बनाय तिसकों प्रातःकाल आंखिमें निचोडे तो आंखिका शोजा शूल दूर होवै ।

(३)निम्बस्य पत्रैः परिलिप्य लोध्रं
स्वेदाग्निना चूर्णमथापि कल्कम् ।
आश्चयोतनं मानुषदुग्धयुक्तं
पित्तास्रवातापहमग्र्यमुक्तम् ॥ २३ ॥

कफजे लङ्घनं स्वेदो नस्यं तिक्तान्नभोजनम् ।
तीक्ष्णैः प्रधमनं कुर्यात्तीक्ष्णैश्चैवोपनाहनम् २४

फणिज्जकास्फोतकपीतबिल्व-
पत्तूरपीलुसुरसार्जभङ्गैः ।
स्वेदं विदध्यादथवा प्रलेपं
बर्हिष्ठशुण्ठीसुरदारुकुष्ठैः ॥ २५ ॥

शुण्ठीनिम्बदलैः पिण्डः सुखोष्णैः स्वल्पसैन्धवैः
धार्यश्चक्षुषि संलेपाच्छोथकण्डूरुजापहः ॥ २६ ॥
वल्कलं पारिजातस्य तैलकाञ्जिकसैन्धवम् ।
कपोद्भूताक्षिशूलघ्नं तरुघ्नं कुलिशं तथा ॥ २७ ॥

ससैन्धवं लोध्रमथाज्यभृष्टं
सौवीरपिष्टं सितवस्त्रबन्धम् ।
आश्चयोतनं तन्नयनस्य कुर्यात्
कण्डूं च दाहं च रुजां च हन्यात् २८

(३ निम्बपत्रकल्कादि) लोधकों नींबके पत्तोंसें लपेट फिर अग्निसें सेकके इसका चूर्ण बनाय अथवा कल्क बनाय स्त्रीके दूधमें मिलाय आंखोंमें निचोडनेसें पित्तरक्त वात इन्होंसें उपजा नेत्ररोग दूर होताहै । कफसें उपजे नेत्रके अभिष्यंदरोगमें लंघन स्वेद नस्य कडुवा अन्नका भोजन तीक्ष्ण औषधोंकरके प्रधमन करना और तीक्ष्ण औषधोंसें उपनाह अर्थात् पिंडी बांधनेका कर्म करना। फणिज्जक श्वेतगोकर्णी बेलफल पीलूवृक्ष तुलसी इन औषधोंका कल्क बनाय आंखिकै पसीना दिवाना हित है । अथवा नेत्रवाला सूंठ देवदारु कूट इन्होंसें पसीना दिवाना हितहै । सूंठ नींबके पत्ते इन्होंका पिंड बनाय सुखसें सुहाताहुआ गरमकर कछुक सेंधानमक मिलाय आंखोंकै लेप करनेसें खाजि दूर होतीहै । नींबका वक्कल तेल कांजी सेंधानमक इन्होंके कल्कका लेप करनेसें कफसें उत्पन्न हुआ नेत्रका शूल दूर होताहै । लोधकों घृतमें भूनि सेंधानमक मिलाय कांजीमें पीस सफेद वस्त्रसें पोटली बांध आंखमें निचोडनेसें नेत्रकी खाजि दाह पीडा ये सब दूर होतीहैं ।

(४)स्निग्धैरुष्णैश्च वातोत्थः पित्तजो मृदुशीतलैः
तीक्ष्णरुक्षोष्णविशदैः प्रशाम्यन्ति कफात्मकाः ।
तीक्ष्णोष्णमृदुशीतानां व्यत्यासात्सान्निपातिकः ।
तिरीटत्रिफलायष्टीशर्कराभद्रमुस्तकः ।
पिष्टैः शीताम्बुना सेको रक्ताभिष्यन्दनाशनः३०
कशेरुमधुकानां च चूर्णमम्बरसंयुतम् ।
न्यस्तमप्स्वन्तरीक्ष्यासु हितमाश्च्योतनं भवेत् ३१
दार्वीपटोलमधुकं सनिम्बं पद्मकोत्पलम् ।
प्रपौण्डरीकं चैतानि पचेत्तोये चतुर्गुणे ॥ ३२ ॥
विपाच्य पादशेषं तु तत्पुनः कुडवं पचेत् ।
शीतीभूते तत्र मधु दद्यात्पादांशिकं ततः ॥३३॥
रसक्रियैषा दाहाश्रुरोगरक्तरुजापहा ।
तिक्तस्य सर्पिषः पानं बहुशश्च विरेचनम् ३४
अक्ष्णोरपि समन्ताच्च पातनं तु जलौकसः ।
पित्ताभिष्यन्दशमनो विधिश्चाप्युपपादितः ॥३५॥

शिग्रुपल्लवनिर्यासः सुघृष्टस्ताम्रसम्पुटे ।
घृतेन धूपितो हन्ति शोथघर्षाश्रुवेदनाः ॥ ३६ ॥
पिष्टैर्निम्बस्य पत्रैरतिविमलतरै-
र्जातिसिन्धूत्थमिश्रा
अन्तर्गर्भे दधाना पटुतरगुडिका-
पिष्टलोध्रेण भृष्टा ।
तूलैः सौवीरसार्द्रैरतिशयमृदुभि-
र्वेष्टिता सा समन्ता-
च्चक्षुःकोपप्रशान्तिं चिरमुपरिदृशो-
र्भ्राम्यमाणा करोति ॥ ३७ ॥

(४ वातादिके भिन्नभिन्ना उपायाः) वातसें उपजा नेत्ररोगकों चिकनी और गरम औषधोंसें अच्छा करै। कफसें उपजे रोग तीक्ष्ण और गरम इलाजोंसें अच्छे होते हैं। संनिपातसें उपजे नेत्ररोगमें तीक्ष्ण गरम कोमल शीतल ये संपूर्ण इलाज करै। और लोध त्रिफला मुलहटी खांड भद्रमोथा इन्होंकों पीस शीला जलमें मिलाय सेक करनेसें रक्ताभिष्यंद दूर होवे। और कसेरु मुलहटी इन्होंके चूर्णकों वस्त्रमें घाल पोटली बांधके जलमें डबोय पीछे आंखोंमें निचोडना हितहै। दारुहलदी परवल मुलहटी निंब पद्माक कमल हसदलवाला नीलाकमल इन्होंकों चौगुने जलमें पकावे। चतुर्थांश बाकी रहे तब उतार छानके फिर पकावे। पीछे सोलह तोले बाकी रहे तब उतारि शीतल कर चार तोले शहद मिलावे। यह रसक्रिया कहातीहै। दाह अश्रुरोग रक्तरोग इन्होंकों दूर करतीहै। कडुवा घृतकों बहुतसा पीके जुलाब लेना हितहै। अथवा आंखोंकै चारोंतर्फ जोंकोंका लगवाना हितहै। पित्तके अभिष्यंद रोगकों शमन करनेवाली यह विधि कहदी है। और सहौंजनाके पत्तोंके रसकों तांबाके संपुटमें खरल कर घृत मिलाय धूप देनेसें नेत्रका शोजा खाजि आंशु गिरना ये सब रोग दूर होतेहैं। जावित्री सेंधानमक इन्होंकों पीस गोली बनाय तिसके ऊपर कोमल कोमल नींबके पत्तोंकों पीसके लपेट देवै और लोधकों लपेट देवै फिर रुईके फोहेकों कांजीमें भिगोय इसके ऊपर लपेट देवै पीछे इस गोलीकों आंखोंके ऊपरकै फेरै तो दूखती हुई आंखोंका कोप दूर होताहै।

(५)बिल्वपत्ररसः पूतः सैन्धवाज्येन चान्वितः ।
शुल्बे वराटिकाघृष्टो धूपितो गोमयाग्निना ॥३८॥
पयसालोडितश्चाक्ष्णोः पूरणाच्छोथशूलनुत् ।
अभिष्यन्देऽधिमन्थे च स्रावे रक्ते च शस्यते ३९
सलवणकटुतैलं काञ्जिकं कांस्यपात्रे
घनितमुपलघृष्टं धूपितं गोमयाग्नौ ।
सपवनकफकोपं छागदुग्धावसिक्तं
जयति नयनशूलं स्रावशोथं सरागम् ॥४०॥
तरुस्थविद्धामलकरसः सर्वाक्षिरोगनुत् ।
पुराणं सर्वथा सर्पिः सर्वनेत्रामयापहम् ॥ ४१ ॥
अयमेव विधिः सर्वो मन्थादिष्वपि शस्यते ।
अशान्तौ सर्वथा मन्थे भ्रुवोरुपरि दाहयेत् ४२
जलौकःपातनं शस्तं नेत्रपाके विरेचनम् ।
शिराव्यधं वा कुर्वीत सेका लेपाश्च शुक्रवत् ४३

(५ बिल्वांजनम्) बेलपत्रका रसमें सेंधानमक और घृत मिलाय तांबाके पात्रमें घालि कौडीसें घिसै फिर आरनोंकी अग्निसें धूप देके फिर दूध मिलाय आंखोंमें घाले तो नेत्रशूल दूर होवे और यह अभिष्यंद अधिमंथ रक्तस्राव इन रोगोंमें श्रेष्ठहै। नमक कडुवातेल कांजी इन्होंकों कांसीके पात्रमें घालि करडा होवे तबतक पत्थरसें घिसै पीछे गोबरकी अग्निसे धूप देके बकरीके दूधमें भिगोय नेत्रोंमें घालनेसें वायु और कफके कोपसें उत्पन्न हुए नेत्ररोगमें शूल स्राव शोथ खाजि ये सब पीडा दूर होतीहै। वृक्षसें तोडेहुए गीले आवलोंके रसकों आखमें घालै तो संपूर्णरोग दूर होवे। पुराना घृत सब प्रकारसे नेत्रके रोगोंकों हरताहै। यही विधि नेत्रके अधिमंथरोगमें कहीहै जो अधिमंथरोग शांत नहीं होवे तो भ्रुकुटियोंके ऊपरकी जगहकों दग्ध करदेवै। नेत्रपाकरोगमें नेत्रोंकै जोंक लगवानी अथवा जुलाब दिवाना हित है। अथवा नाडीकों विंधवावै फूलामें कही हुई विधिके अनुसार सेक और लेप करै।

(६)विभीतकशिवाधात्रीपटोलारिष्टवासकैः ।
क्वाथो गुग्गुलुना पेयः शोथशूलाक्षिपाकहा ४४
पील्लं च सव्रणं शुक्रं रागादींश्चापि नाशयेत् ।
एतैश्चापि घृतं पक्वं रोगांस्तांश्च व्यपोहति ४५

(६ षडंगगुग्गुलुः) बहेडा हरडै आंवला परवल नींब वांसा इन्होंका क्वाथ बनाय गूगल मिलाय पीवे तो नेत्रका शोजा शूलपाक व्रणवाला फूला खाजि आदि इन

सब रोगोंकों दूर करै और इनही रोगोंमें सिद्ध किया हुआ घृतभी इनरोगोंकों दूर करताहै ।

(७) आटरूषाभयानिम्बधात्रीमुस्ताक्षकूलकैः ।
रक्तस्रावं कफं हन्ति चक्षुष्यं वासकादिकम् ४६

(७ वासकादिऔषधम्) वांसा हरडै नींब आंवला नागरमोथा वहेडा इन्होंके क्वाथ आदिसें नेत्रमें होनेवाला रक्तस्राव कफ ये सब दूर होतेहैं ।

(८) वासा घनं निम्बपटोलपत्रं
तिक्तामृताचन्दनवत्सकत्वक् ।
कलिङ्गदार्वी दहनं च शुण्ठी-
भूनिम्बधात्र्यावभयाविभीतम् ॥ ४७ ॥
श्यामायवक्काथमथाष्टभागं
पिवेदिमं पूर्वदिने कषायम् ।
तैमिर्यकण्डूपटलार्वुदं च
शुक्रं निहन्याद्व्रणमव्रणं च ॥ ४८ ॥
पीलुं च काचं च महारजश्च
नक्तान्ध्यरागं श्वयथुं सशूलम् ।
निहन्ति सर्वान्नयनामयांश्च
वासादिरेषः प्रथितप्रभावः ॥ ४९ ॥

(८ बृहद्वासादिक्काथः) वांसा नागरमोथा नींब परवलके पत्ते कुटकी गिलोय चंदन कूडाकी छाल इंद्रजव दारुहलदी चीता सूंठ चिरायता आंवला हरडै बहेडा पीपल इन्होंकों आठगुने जलमें पकाय क्काथ वनाय पीनेसें तिमिर अर्थात् अंधेरी खाजि पटलार्बुद फूला ये सब नेत्ररोग दूर होतेहैं और नेत्रका काचरोग रात्योंधा शोजा शूल ये और अन्य संपूर्ण नेत्ररोग दूर होतेहैं। ऐसे प्रभाववाला यह वासादिक्काथ कहाताहै ।

(९)पथ्यास्तिस्रोविभीतक्यः षट्र् धात्र्योद्वादशैवतु
प्रस्थार्धे सलिले काथमष्टभागावशेषितम् ॥५०॥
पीत्वाभिष्यन्दमास्रावं रागश्च तिमिरं जयेत् ५१
संरम्भरागशूलाश्रुनाशनं दृक्प्रसादनम् ।
नेत्रे त्वभिहते कुर्याच्छीतमाश्च्योतनादिकम् ५२
दृष्टिप्रसादजननं विधिमाशु कुर्यात्
स्निग्धैर्हिमैश्च मधुरैश्च तथा प्रयोगैः ।
स्वेदाग्निधूमभयशोकरुजाभितापै-
रभ्याहतामपि तथैव भिषक्चिकित्सेत् ५३

आगन्तुदोषं प्रसमीक्ष्य कार्यं
वक्त्रोष्मणा स्वेदितमादितस्तु ।
आश्च्योतनं स्त्रीपयसा च सद्यो
यच्चापि पित्तक्षतजापहं स्यात् ॥ ५४ ॥
सूर्योपरागानलविद्युदादि-
विलोकनेनोपहतेक्षणस्य ।
सन्तर्पणं स्निग्धहिमादिकार्यं
सायं निषेव्यास्त्रिफलाप्रयोगाः ॥ ५५ ॥
निशाब्दत्रिफलादार्वी सितामधुकसंयुतम् ।
अभिघाताक्षिशूलघ्नं नारीक्षीरेण पूरणम् ॥ ५६ ॥
इत्कुटाङ्कुरजस्तद्वत्स्वरसो नेत्रपूरणम् ।
आजं घृतं क्षीरपात्रं मधुकं चोत्पलानि च ५७
जीवकर्षभकौ चापि पिष्ट्वा सर्पिर्विपाचयेत् ।
सर्वनेत्राभिघातेषु सर्पिरेतत्प्रशस्यते ॥ ५८ ॥

(९ पथ्यादयः क्राथाः) हरडै तीन वहेडा छह आंवले वारह इन्होंकों बत्तीस तोले जलमें चढा क्काथ बनाय अष्टमांश बाकी रहे तब उतारि पीवे तो नेत्रका अभिष्यंद स्राव राग तिमिर ये सब दूर होवें और संरंभ शूल आंशु गिरना ये सब दूर होतेहैं और दृष्टि निर्मल होतीहै और नेत्र दुखके अच्छा होजावे तब शीतल औषधोंका रस निचोडना हित है। और स्निग्ध शीतल मधुर इत्यादिक प्रयोगोंकरके दृष्टिकों स्वच्छ करै और स्वेद अग्निकी धूमां भय शोक पीडा अभिताप इन उपद्रवोंसें दूषित हुए नेत्रकाभी यह इलाज करै। वैद्यजन नेत्रमें आंवते हुए दोषकों विचारिके मुखकी झांखोंसें नेत्रकों सेकै अथवा शीघ्रही स्त्रीके दूधसें सेक करै और पित्तक्षतकों दूर करनेवाले औषध करै। सूर्य अंवरकी लाली अग्नि बिजली इन्होंके देखनेसें जो दृष्टि हत हो जावे तो चिकनी और शीतल आदि औषधोंसें संतर्पण कर्म करना और सायंकालमें त्रिफलाके जलसें धोवन हित है। हलदी नागरमोथा त्रिफला दारुहलदी मिसरी मुलहटी इन्होंकों स्त्रीके दूधमें पीस नेत्रमें पूरण करनेसें नेत्रमें चोट लगीहुईकी शूल दूर होतीहै। अथवा ऊंट कटाराके स्वरसकों नेत्रमें घालना श्रेष्ठ है बकरीका घृत और दूधमें मुलहटी कमल जीवक वृषभ इन्होंकों पीसके मिलाय फिर इस घृतकों पकावे यह घृत नेत्रमें लगी हुई संपूर्ण चोटोंकों दूर करताहै ।

(१०)सैन्धवं दारु शुण्ठी च मातुलुङ्गी रसो घृतम्।
स्तन्योदकाभ्यां कर्तव्यं शुष्कपाके तदञ्जनम् ॥५९॥
वाताभिष्यन्दवच्चान्यद्वाते मारुतपर्यये ।
पूर्वभुक्तं हितं सर्पिः क्षीरं चाप्यथ भोजने ॥६०॥
वृक्षादन्यां कपित्थे च पञ्चमूले महत्यपि ।
सक्षीरं कर्कटरसे सिद्धं चापि पिबेद् घृतम्॥६१॥
अभिष्यन्दमधीमन्थं रक्तोत्थमथवार्जुनम् ।
शिरोत्पातं शिराहर्षमन्यांश्चाक्षिभवान्गदान्॥६२॥
स्निग्धस्याज्येन कौम्भेन शिराव्याधैः शमं नयेत्।
अम्लाध्युपितशान्त्यर्थं कुर्याल्लेपान्सुशीतलान् ६३
तैन्दुकं त्रैफलं सर्पिर्जीर्णं वा केवलं हितम् ।
शिराव्यधं विना कार्यः पित्तस्यन्दहरो विधिः ६४
सर्पिः क्षौद्राञ्जनं च स्याच्छिरोत्पातस्य भेषजम् ।
तद्वत्सैन्धवकासीसं स्तन्यपिष्टं च पूजितम् ॥६५॥
शिराहर्षेऽञ्जनं कुर्यात्फाणितं मधुसंयुतम् ।
मधुना तार्क्ष्यशैलं वा कासीसं वा समाक्षिकम् ६६

(१० नेत्रे सैंधवादिप्रयोगाः) सेंधानमक दारुहलदी सूंठ विजौराका रस घृत इन्होंकों स्त्रीके दूधमें और जलमें पीस शुष्कपाकवाले नेत्रमें घालना हितहै । वायुसें उत्पन्न हुये अभिष्यंदमें तथा अन्य रोगमें पहले घृतका भोजन कराय पीछे दूध पिलाना हितहै । अमरवेल कैथ बृहत्पंचमूल बेलपत्र इन्होंमें अलग अगल सिद्ध किया हुआ दूधसहित घृतका पीना श्रेष्ठहै । अभिष्यंद अधिमंथ नेत्रार्जुन अर्थात् फूला शिरोत्पात शिरोहर्ष इन रोगोंकों और अन्य नेत्ररोगोंकों घृतसें स्निग्ध कराय शिरावेध अर्थात् नस विंधवाके शांत करै । अम्लाध्युषितरोगकी शांतिके वास्ते शीतल लेप करने चाहिये। कुचलामें सिद्ध किया हुआ अथवा त्रिफलामें सिद्ध किया हुआ घृतका अथवा केवल पुराना घृतका लेप करना और शिरावेधके विना पित्तके अभिष्यंदकों हरनेवाली विधि करनी चाहिये और घृत शहदका अंजन यह शिरोत्पातकी औषध है । शिराहर्ष नेत्रकी नसकी विमारीमें सेंधानमक कसीस इन्होंकों स्त्रीके दूधमें पीस अंजन घालना । अथवा रावकों शहदमें मिलाय अंजन घालना योग्यहै । अथवा शहदमें मिलाए हुये रसोतकों वा शहदयुक्त कसीसकों घालै ।

(११)व्रणशुक्रप्रशान्त्यर्थं षडङ्गं गुग्गुलुं पिबेत् ।
कतकस्य फलं शङ्खं तिन्दुकं रूप्यमेव च ॥६७॥
कांस्ये निघृष्टं स्तन्येन क्षतशुक्रार्तिरागजित् ।
चन्दनं गैरिकं लाक्षामालती कलिकासमा ॥६८॥
व्रणशुक्रहरी वर्तिः शोणितस्य प्रसादनी ।
शिरया वा हरेद्रक्तं जलौकाभिश्च लोचनात् ॥६९
अक्षमज्जाञ्जनं सायं स्तन्येन शुक्रनाशनम् ।
एकं वा पुण्डरीकं च छागीक्षीरावसेचितम् ॥७०॥
रागास्रुवेदनां हन्यात्क्षतपाकात्ययाजकाः ।
तुत्थकं वारिणा युक्तं शुक्रं हन्त्यक्षिपूरणात्॥७१॥
समुद्रफेनदक्षाण्डत्वक्सिन्धूत्थैः समाक्षिकैः ।
शिग्रुबीजयुतैर्वर्तिः शुक्रघ्नी शीग्रुवारिणा ॥ ७२ ॥

धात्रीफलं निम्बपटोलपत्रं
यष्ट्याह्वलोध्रं खदिरं तिलाश्च ।
क्वाथः सुशीतो नयने निषिक्तः
सर्वप्रकारं विनिहन्ति शुक्रम् ॥ ७३ ॥

(११ नेत्रव्रणे षडंगगुग्गुलादि) नेत्रके व्रण और फूलेकी शांतके वास्तै पीछे कहे हुए षडंगगूगलकों पीवै । और निर्मली शंख कुचला रूपामाखी इन्होंकों कांसीके पात्रमें घालि स्त्रीके दूधमें घिसके अंजन घालनेसें चोट फूलाकी पीडा ये सब दूर होतीहै । और चंदन गेरू लाख चमेलीकी कली इन्होंकों समान भाग ले बत्ती बनाय लेवै । यह बत्ती व्रण और फूलकों दूर करतीहै और रुधिरकों शुद्ध करतीहै । अथवा नेत्रकी नसोंकै जोंक लगाके रुधिरका निकलाना । बहेडाकी गुठलीकों स्त्रीके दूधमें पीस अंजन घालनेसें फूला दूर होताहै और कमलकों बकरीके दूधमें पीस अवसेचन करनेसें नेत्रका रोग अंशू चोट नेत्रपाक ये दूर होतेहैं । अथवा नीलाथोथाकों जलमें पीस नेत्रमें घाले तो फूला दूर होवे । समुद्रझाग कोहलाकी छाल सेंधानमक सहोंजनाके बीज इन्होंकों सहोंजनाके जलमें पीस वत्ती वनाय आंखमें घाले तो फूला दूर होवे । आंवलाका फल नींबके पत्ते परवलके पत्ते मुलहटी लोध खैर तिल इन्होंका काथ वनाय शीला कर नेत्रमें परिषेक करनेसें सबप्रकारके फूले दूर होवें ।

(१२)क्षुण्णपुन्नागपत्रेण परिभावितवारिणा ।
श्यामाक्वाथेऽम्बुना वाथ सेचनं कुसुमापहम् ७४
दक्षाण्डत्वक्शिलाशङ्खकाचचन्दनगैरिकैः ।
तुल्यैरञ्जनयोगोऽयं पुष्पार्मादिविलेखनः ॥७५॥

शिरीषबीजमरिचपिप्पलीसैन्धवैरपि ।
शुक्रे प्रघर्षणं कार्यमथवा सैन्धवेन च ॥ ७६ ॥

बहुशः पलाशकुसुम-
स्वरसैः परिभाविता जयत्यचिरात् ।
नक्ताह्वबीजवर्तिः
कुसुमचयं दृक्षु चिरजमपि ॥ ७७ ॥

सैन्धवत्रिफलाकृष्णाकटुकाशङ्खनाभयः ।
सताम्ररजसो वर्तिः पिष्ट्वा शुक्रविनाशिनी ॥७८॥
चन्दनं सैन्धवं पथ्यापलाशतरुशोणितम् ।
क्रमवृद्धमिदं चूर्णं शुक्रार्मादिविलेखनम् ॥ ७९ ॥

(१२ सेचनादि) पुवाडके पत्तोंको तोड जलमें मिलाय रस बनाके तिससें अथवा पीपलीके क्राथसें नेत्रमें सेक करनेसें फूला दूर होवे । कोहलाकी छाल शिलाजीत शंख कांच चंदन गेरू इन्होंकों समानभाग ले अंजन बनाय नेत्रमें फूलापर गेरै तो फूला कटजावे । शिरसके बीज मिरच पीपल सेंधानमक इन्होंसें अथवा केवल सेंधानमकसें फूलेका प्रघर्षण करे तो फूला दूर होवे । केशूके पुष्पोंके स्वरससें नेत्रकों बहुतवार परिभावित करे तो फूला दूर होवे । अथवा करंजुवाके बीजोंकी बत्ती बनाय आंखिमें घाले तो फूला दूर होवे । सेंधानमक त्रिफला पीपली कुटकी शंखकी नाभि तांबाकी रज इन्होंकों पीस बत्ती बनाय आंखिमें घाले तो फूला दूर होवे । चंदन सेंधानमक हरडै केशू वृक्षके पुष्पोंका केशर इन्होंकों एकोत्तर वृद्धिभाग ग्रहण कर चूर्ण बनाय आंखमें घाले तो फूला तथा अर्मरोग दूर होवे ।

(१३)दन्तैर्हस्तिवराहोष्ट्रगवाश्वाजखरोद्भवैः ।
सशङ्खमौक्तिकाम्भोधिफेनैर्मरिचपादिकैः ।
क्षतशुक्रमपि व्याधिं दन्तवर्तिर्निवर्तयेत् ॥ ८० ॥
शङ्खस्य भागाश्चत्वारस्ततोऽर्धेन मनःशिला ।
मनःशिलार्धं मरिचं मरिचार्धेन सैन्धवम् ॥८१॥
एतच्चूर्णाञ्जनं श्रेष्ठं शुक्रयोस्तिमिरेषु च ।
पिच्चटे मधुना योज्यमर्बुदे मस्तुना तथा ॥८२॥
तार्क्ष्यं मधुकसारो वा बीजं चाक्षस्य सैन्धवम् ।
मधुनाञ्जनयोगाः स्युश्चत्वारः शुक्रशान्तये॥८३॥
वटक्षीरेण संयुक्तं श्लक्ष्णं कर्पूरजं रजः ।
क्षिप्रमञ्जनतो हन्ति शुक्रं चापि घनोन्नतम्॥८४॥
त्रिफलामज्जमञ्जल्यामधुकं रक्तचन्दनम् ।
पूरणं मधुसंयुक्तं क्षतशुक्राजकाश्रुजित् ॥ ८५ ॥
तालस्य नारीकेलस्य तथैवारुष्करस्य च ।
करीरस्य च वंशानां कृत्वा क्षारं परिस्रुतम्॥८६॥
करभास्थिकृतं चूर्णं क्षारेण परिभावितम् ।
सप्तकृत्वोऽष्टकृत्वो वा श्लक्ष्णं चूर्णं तु कारयेत्॥८७
एतच्छुष्केष्वसाध्येषु कृष्णीकरणमुत्तमम् ।
यानि शुक्राणि साध्यानि तेषां परममञ्जनम् ८८

(१३ दंतवर्तिः) हत्ती शूर ऊंट गौ घोडा बकरी गधा इन्होंके दांत और इन दांतोंसें चतुर्थांश शंख समुद्रझाग मिरच इनकों ग्रहण कर बत्ती बनावे । यह दंतवर्ति क्षत हुए फूलेकोंभी दूर करतीहै । शंख चारभाग तिससें आधाभाग मनशिल मनशिलसें आधी मिरच मिरचसें आधा भाग सेंधानमक इन्होंका चूर्ण बनाय नेत्रमें घाले तो फूला और तिमिररोग दूर होवे । पिचटरोगमें इसकों शहदमें मिलाके घालै और अर्बुदरोगमें दहीके पानीमें घिसके घालना योग्यहै । सोनामाखी मुलहटीका सत बहेडाका बीज सेंधानमक इन चारोंकों अलग २ शहदमें मिलाय नेत्रमें घाले तो फूला दूर होवे । कपूरकों वडके दूधमें पीस अंजन घाले तो बहुत करडा उठाहुआ फूलाभी शीघ्रही कटजावे । त्रिफला कमल गोरोचन मुलहटी लालचंदन इन्होंकों शहदसें मिलाय आंखमें घाले तो चोटका फूला आंशु ये दूर होवे । ताडवृक्ष नारियल भिलावा कैर वांस इन्होंके क्षारमें ऊंटके अस्थिके चूर्णकों भावना दे पीछे सात आठवार भावना देके इस चूर्णकों बारीक बना लेवे । यह चूर्ण असाध्य फूलोंकोंभी दूर करदेता है और जो साध्य फूले होवें उनका तो यह परम अंजन कहाहै ।

(१४)पटोलं कटुकां दार्वीं निम्बं वासां फलत्रिकम् ।
दुरालभां पर्पटकं त्रायन्तीं च पलोन्मिताम् ॥८९॥
प्रस्थमामलकानां च क्राथयेदुल्वनेऽम्भसि ।
पादशेषे रसे तस्मिन्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ॥ ९० ॥
कल्कैर्भूनिम्बकुटजमुस्तयष्ट्याह्वचन्दनैः ।
सपिप्पलीकैस्तत्सिद्धं चक्षुष्यं शुक्रयोर्हितम्॥९१॥
घ्राणकर्णाक्षिवर्त्मत्वङ्मुखरोगव्रणापहम् ।
कामलाज्वरवीसर्पगण्डमालाहरं परम् ॥ ९२ ॥

(१४ पटोलाद्यं घृतम्) परवल कुटकी दारुहलदी

नींब वांसा त्रिफला धमासा पित्तपापडा लज्जावंती इन्होंकों चार २ तोले प्रमाण लेवे और ६४ चौसठ तोले आंवलोंका १०२४ तोले जलमें क्वाथ बनावे । तिसमें इन औषधोंकों पकावे । फिर यह क्वाथ चतुर्थांश बाकी रहे तब उतारि उसमें ६४ तोले घृतकों पकावे । तिसमें चिरायता कूडाकी छाल नागरमोथा मुलहटी चंदन पीपली इन औषधोंका कल्क बनाके मिलादेवै । यह घृत नेत्रोंमें हित है और फूलेकों दूर करताहै । नासिका कान नेत्रका कोइयेका रोग त्वचारोग मुखरोग व्रण इन्होंकों दूर करताहै और कामला ज्वर विसर्प गंडमाला इनकों हरनेमें परम उत्तमहै ।

(१५)कृष्णाविडङ्गमधुयष्टिकसिन्धुजन्म-
विश्वौषधैः पयसि सिद्धमिदं छगल्याः ।
तैलं नृणां तिमिरशुक्रशिरोऽक्षिशूल-
पाकात्ययाञ्जयति नस्यविधौ प्रयुक्तम्॥९३॥
अजकां पार्श्वतो विद्ध्वा सूच्या विस्राव्य चोदकम्।
व्रणं गोमयचूर्णेन पूरयेत्सर्पिषा सह ॥ ९४ ॥
सैन्धवं वाजिपादं च गोरोचनसमन्वितम् ।
शेलुत्वग्रससंयुक्तं पूरणं चाजकापहम् ॥ ९५ ॥

(१५ कृष्णाद्यतैलम्) पीपली वायविडंग मुलहटी सेंधानमक सूंठ इन्होंका कल्क बलाय बकरीके दूधमें पकाय तिसमें तेलकों । पकावे यह तेल नस्यमें देनेसें तिमिर फूला शिरका रोग नेत्रशूल पाकात्यय इन रोगोंकों दूर करताहै। नेत्रमें उपजी अजगल्लिकाकों सूईसें बरोबरोंमें बींधके उसका जल निकास देवै फिर तिस घावकों गोवरके चूर्ण और घृतसें भरदेवै । सेंधानमक सफेद गोकर्णी गोरोचन ल्हेसवाकी छालका रस इन्होंके पूरनेसें अजकारोग दूर होताहै ।

(१६)शशकस्य शिरःकल्के शेषाङ्गक्वथिते जले ।
घृतस्य कुडवं पक्वं पूरणं चाजकापहम् ॥ ९६ ॥
शशकस्य कषाये च सर्पिषः कुडवं पचेत् ।
यष्टीप्रपौण्डरीकस्य कल्केन पयसा समम् ॥९७॥
छगल्याः पूरणाच्छुक्रक्षतपाकात्ययाजकाः ।
घ्नन्ति भ्रूशङ्खशूलं च दाहरागानशेषतः ॥ ९८ ॥

(१६ शशकादिघृतम्) शूशाके शिरकों पीस कल्क बनाय बाकीरसें शूशाके शरीरके क्वाथमें पकावे । तिसमें सोलह तोले घृतकों पकावे । इस घृतके घालनेसें अजकारोग दूर होताहै । शूशाके क्वाथमें सोलह तोले घृतकों पकावे और मुलहटी कमल इन्होंके कल्कमें सोलह तोले बकरीके दूधकों पकावे । तिसमें सिद्ध किया हुआ यह घृत नेत्रमें घालनेसें भ्रुकुटी कनपटी इन्होंकी शूल नेत्रकी दाह खाजि इन्होंकों दूर करताहै ।

(१७)त्रिफला घृतं मधु यवाः
पादाभ्यङ्गः शतावरी मुद्गाः ।
चक्षुष्यः संक्षेपात्
वर्गः कथितो भिषग्भिरयम् ॥ ९९ ॥
लिह्यात्सदा वा त्रिफलां सुचूर्णितां
मधुप्रगाढां तिमिरेऽथ पित्तजे ।
समीरजे तैलयुतां कफात्मके
मधुप्रगाढां विदधीत युक्तितः ॥ १०० ॥
कल्कः क्वाथोऽथवा चूर्णं त्रिफलाया निषेवितम्।
मधुना हविषा वापि समस्ततिमिरान्तकृत् ॥१०१
यस्त्रैफलं चूर्णमपथ्यवर्जी
सायं समश्नाति हविर्मधुभ्याम् ।
स मुच्यते नेत्रगतैर्विकारै-
र्भृत्यैर्यथा क्षीणधनो मनुष्यः ॥ १०२ ॥
सघृतं वा वराक्वाथं शीलयेत्तिमिरामयी ।
जाता रोगा विनश्यन्ति न भवन्ति कदाचन ।
त्रिफलायाः कषायेण प्रातर्नयनधावनात् ॥१०३॥
जलगण्डूषैः प्रातर्बहुशोऽम्भोभिः प्रपूर्य मुखरन्ध्रम्
निर्दयमुक्षन्नक्षि क्षपयति तिमिराणि नासद्यः१०४
भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यत्प्रदीयते ।
अचिरेणैव तद्वारि तिमिराणि व्यपोहति ॥१०५॥

(१७ त्रिफलादिसेवनम्) त्रिफला घृत शहद जव पैरोंकी मालिस शतावरी मूंग इन सब औषधोंका वर्ग वैद्यजनोंनें नेत्रकों सुखदायी कहाहै । अथवा सब नेत्ररोगोंमें त्रिफलाके चूर्णकों शहदमें मिलाके चाटै और पित्तसें उत्पन्न हुए तिमिररोगमेंभी यही विधि है । वायुसें उत्पन्न हुयेमें तेलमें मिलाके और कफसें उपजे तिमिरमेंभी शहद मिलाके चाटै । त्रिफलाके कल्ककों अथवा क्वाथकों अथवा चूर्णकों अथवा कल्ककों शहदके संग वा घृतके संग भक्षण करे तो संपूर्ण तिमिररोग दूर होवे । जो पुरुष अपथ्य वस्तुकों त्यागके सायंकालमें त्रिफलाके चूर्णकों घृत और शहदमें मिलाके भक्षण करताहै वह सं-

पूर्ण नेत्रोंके रोगोंसें छुटजाताहै। जैसे निर्धन पुरुष भृत्योंसें छुटजावे तैसे। अथवा त्रिफलाके क्काथमें घृत मिलाय नेत्रमें घाले तो तिमिररोग दूर होवे। अथवा त्रिफलाके क्काथसें नेत्रोंकों धोवै तो नेत्रमें उत्पन्न हुए सब रोग दूर होतेहैं। और फिर नवीन रोग नहीं होते। त्रिफलाके जलसें प्रातःकाल कुरलोंसें मुखकों भरके फिर निर्दयी होके उन कुरलों रोगीके नेत्रोंमें मारे तो तिमिररोग दूर होवे। जो पुरुष भोजन करके हाथोंकों धोके फिर दोनों हाथोंकों मसलके नेत्रोंपर फेरै तो थोडेही कालमें नेत्रका तिमिररोग दूर होवे।

(१८)कतकस्य फलं शङ्खं त्र्यूषणं सैन्धवं सिता।
फेनो रसाञ्जनं क्षौद्रं विडङ्गानि मनःशिला।
कुक्कुटाण्डकपालानि वर्तिरेषा व्यपोहति॥१०६॥
तिमिरं पटलं काचमर्म शुक्रं तथैव च।
कण्डूक्लेदार्बुदं हन्ति मलं चाशु सुखावती १०७

(१८ सुखावतीवर्तिः) कतकवृक्षका फल शंखका चूर्ण सुंठ मिरच पीपल सेंधानमक मिसरी समुद्रझाग रसौत शहद वायविडंग मनशिल मुरगाके अंडोंके कपाल इन्होंकी बत्ती बनाय नेत्रमें घाले तो तिमिर पटल काच अर्म फूला खाजि क्लेद अर्बुद ये सब नेत्रके रोग दूर होवें और नेत्रका मल दूर होवे।

(१९)हरीतकी वचा कुष्ठं पिप्पली मरिचानि च।
बिभीतकस्य मज्जा च शङ्खनाभिर्मनःशिला १०८
सर्वमेतत्समं कृत्वा छागक्षीरेण पेषयेत्।
नाशयेत्तिमिरं कण्डूं पटलान्यर्बुदानि च॥१०९॥
अधिकानि च मांसानि यश्च रात्रौ न पश्यति।
अपि द्विवार्षिकं पुष्पं मासेनैकेन साधयेत् ११०
वर्तिश्चन्द्रोदया नाम नृणां दृष्टिप्रसादनी॥१११॥
हरीतकी हरिद्रा च पिप्पल्यो लवणानि च।
कण्डूतिमिरजिद्वर्तिर्न क्वचित्प्रतिहन्यते ॥ ११२॥

(१९ चंद्रोदयावर्तिः) हरडै वच कूट पीपल मिरच बहेडाकी गुठली शंखकी नाभि मनसील इन सबोंकों समान भाग ले बकरीके दूधमें पीस बत्ती बनाय नेत्रमें घाले तो तिमिर खाजि पटल अर्बुद अधिमांस रात्योंधा इन सबरोगोंकों दूर करै। और दोवर्षसें परे हुए फूलेकोंभी एकही महीनेमें दूर करती है। यह चंद्रोदयानामवाली बत्ती मनुष्योंकी दृष्टिकों निर्मल करतीहै। हरडै हलदी पीपल सब नमक इन्होंकी बत्ती बनाय आंखमें घाले तो नेत्रकी कंडू अर्थात् खाजि दूर होवे और दृष्टि स्वच्छ होवे।

(२०)अशीतिस्तिलपुष्पाणि षष्टिःपिप्पलीतण्डुलाः
जातीकुसुमपञ्चाशन्मरिचानि च षोडश।
एषा कुमारिका वर्तिर्गतं चक्षुर्निवारयेत्॥११३॥

(२० कुमारिकावर्तिः) तिलोंके पुष्प ८० पीपली ६० चावल ६० जूहीके पुष्प ५० मिरच १६ इन्होंकी बत्ती बनावे। यह कुमारिकानामवाली बत्ती नष्ट हुये नेत्रकोंभी स्वच्छ दृष्टिवाला करतीहै।

(२१)त्रिफलाकुक्कुटाण्डत्वक्कासीसमयसो रजः।
नीलोत्पलं विडङ्गानि फेनं च सरितां पतेः ११४
आजेन पयसा पिष्ट्वा भावयेत्ताम्रभाजने।
सप्तरात्रं स्थितं भूयः पिष्ट्वा क्षीरेण वर्तयेत्॥११५॥
एषा दृष्टिप्रदा वर्तिरन्धस्याभिन्नचक्षुषः।
चन्दनत्रिफलापूगपलाशतरुशोणितैः ॥ ११६ ॥
जलपिष्टैरियं वर्तिरशेषतिमिरापहा।
निशाद्वयाभयामांसीकुष्ठकृष्णाविचूर्णिता॥११७॥
सर्वनेत्रामयान्हन्यादेतत्सौगतमञ्जनम्।
व्योषोत्पलाभयाकुष्ठताक्ष्यैर्वर्तिं कृताः हरेत् ११८
अर्बुदं पटलं काचं तिमिरार्माश्रुनिस्रुतिम्।
त्र्यूषणं त्रिफलावक्रसैन्धवालमनःशिलाः॥११९॥
क्लेदोपदेहकण्डूघ्नी वर्तिः शस्ता कफापहा।
एकगुणा मागधिका
द्विगुणा च हरीतकी सलिलपिष्टा १२०
वर्तिरियं नयनसुखा-
र्मतिमिरपटलकाचाश्रुहरी ॥ १२१ ॥

(२१ त्रिफलादिवर्तयः) त्रिफला मुरगाके अंडाकी त्वचा कसीस लोहाकी रज नीला कमल वायविडंग समुद्रझाग इन्होंकों तांबाके पात्रमें पीस फिर सात दिन बकरीके दूधमें भिगोय रक्खै। पीछे अच्छीतरह खरल कर इसकी बत्ती बनालेवे। यह बत्ती अंधेकीभी दृष्टिकों निर्मल कर देतीहै। चंदन त्रिफला सुपारी केशूवृक्षके पुष्पोंकी केशर इनकों जलमें पीस बत्ती बनाय आंखिमें घाले तो संपूर्ण तिमिररोग दूर होवें। दोनों हलदी जटामांसी कूट पीपली इन्होंका अंजन बनाय आंखिमें घालै

तो नेत्रके संपूर्ण रोग दूर होवें । सुंठ मिरच पीपल हरडै कूट रसोत इन्होंकी बत्ती बनाय आंखिमें घालै तो अर्बुद पटल काच तिमिर अर्म आंशूगिरना ये सब रोग दूर होवें । सुंठ मिरच पीपली त्रिफला तगर सेंधानमक हरताल मनसिल इन्होंकी बत्ती क्लेद शोजा खाजि इन्होंकों दूर करती है । और नेत्रके कफकों दूर करतीहै । पीपली एक भाग हरडै दो भाग इन्होंकों जलमें पीस बत्ती बनाय आंखिमें घाले तो खाजि अर्म तिमिर पटल नेत्रसें जल गिरना ये सब दूर होवें ।

(२२)अञ्जनं श्वेतमरिचं पिप्पली मधुयष्टिका ।
विभीतकस्य मध्यं तु शङ्खनाभिर्मनःशिला ॥१२२
एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पेषयेत् ।
छायाशुष्कां कृतां वर्तिं नेत्रेषु च प्रयोजयेत् ॥१२३
अर्बुदं पटलं काचं तिमिरं रक्तराजिकाम् ।
अधिमांसं मलं चैव यश्च रात्रौ न पश्यति ।
वर्तिश्चन्द्रप्रभा नाम जातान्ध्यमपि शोधयेत्१२४

(२२ **चंद्रप्रभावर्तिः**) सुरमा सफेद मिरच पीपली मुलहटी बहेडाकी गुठली शंखकी नाभि मनशिल इन्होंकों समान भाग ले बकरीके दूधमें पीस बत्ती बनाय छायामें सुखा लेवे । इसकों नेत्रोंमें घाले तो अर्बुद पटल काच तिमिर नेत्रकी लाली अधिमांस मैल अर्थात् ढीढ रात्यौंधा ये सब दूर होवें । यह चंद्रप्रभानामवाली बत्ती अंधे पुरुषोंकोंभी अच्छे कर सकतीहै ।

(२३)त्रिफलाव्योषसिन्धूत्थयष्टीतुत्थरसाञ्जनम् ।
प्रपौण्डरीकं जन्तुघ्नं लोध्रं ताम्रं चतुर्दश ॥१२५॥
द्रव्याण्येतानि संचूर्ण्य वर्तिः कार्या नभोऽम्बुना ।
नागार्जुनेन लिखिता स्तम्भे पाटलिपुत्रके॥१२६॥
नाशनी तिमिराणां च पटलानां तथैव च ।
सद्यः प्रकोपं स्तन्येन स्त्रिया विजयते ध्रुवम् ॥१२७
किंशुकस्वरसेनाथ पीलुपुष्पकरक्ततः ।
अञ्जनाल्लोध्रतोयेन चासन्नतिमिरं जयेत् ॥ १२८ ॥
चिरसंच्छादिते नेत्रे बस्तमूत्रेण संयुता ।
उन्मीलयत्यकृच्छ्रेण प्रसादं चाधिगच्छति॥१२९॥

(२३ **नागार्जुनीयांजनम्**) त्रिफला सूंठ मिरच पीपली सेंधानमक मुलहटी नीलाथोथा रसोत कमल वायविडंग लोध तांबा इन चौदह वस्तुओंकों वर्षाके पानीमें खरल कर बत्ती बना लेवे । यह बत्ती नागार्जुननें पाटलिपुत्रके स्तंभमें लिखीहै । यह तिमिररोगोंकों और नेत्रके पटलोंके रोगोंकों दूर करतीहै । स्त्रीके दूधमें घिसके घाले तो दूखती हुई आंखि अछी होजावे । केशूके स्वरसमें रगडके घाले तो पीलु फूला नेत्रकी लाली ये दूर होवे । लोधके जलमें घिसके घाले तो थोडे दिनका उत्पन्न हुआ तिमिररोग दूर होवे । और जो नेत्र बहुत दिनोंसें आच्छादित हो रहाहो तिसमें बकराके मूत्रमें घिसके घालै । जो नेत्र कष्टसें खुलताहै वह शीघ्रही अच्छीतरह खुलने लगजावे ।

(२४)पिप्पलीं सतगरोत्पलपत्रां
वर्तयेत्समधुकां सहरिद्राम् ।
एतया सततमञ्जयितव्यं
यः सुपर्णसममिच्छति चक्षुः ॥ १३० ॥
व्योषायश्चूर्णसिन्धूत्थत्रिफलाञ्जनसंयुता ।
गुडिका जलपिष्टेयं कोकिला तिमिरापहा॥१३१॥
त्रीणि कटूनि करञ्जफलानि
द्वे रजनी सहसैन्धवकं च ।
बिल्वतरोर्वरुणस्य च मूलं
वारिचरं दशमं प्रवदन्ति ॥ १३२ ॥
हन्ति तमस्तिमिरं पटलं च
पिच्चिटशुक्रकमथार्जुनं च ।
अञ्जनकं जनरञ्जनकं च
दृक्च न नश्यति वर्षशतं च ॥ १३३ ॥

(२४ **पिप्पल्याद्यंजनानि**) पीपल तगर कमलके पत्ते हलदी इन्होंकों पीस शहद मिलाय बत्ती बनालेवे। यह बत्ती नेत्रमें घालीजावे तो गरुडके समान दिव्य दृष्टि होजावे । सूंठ मिरच पीपल लोहाकी रज सेंधानमक त्रिफला सुरमा इन्होंकों जलमें पीस गोली बनाय लेवे । यह गोली तिमिररोगकों दूर करतीहै । सूंठ मिरच पीपल करंजुवाके फल दोनों हलदी सेंधानमक बेलवृक्षकी जड वरणाकी जड शंख इन्होंकों पीस अंजन बनाय नेत्रमें घाले तो अंधेरी तिमिर पटल पिचिटरोग फूला ये सब रोग दूर होवें । यह अंजन मनुष्योंकों प्रसन्न करनेवाला है । इसके घालनेसें सैंकडों वर्षतक दृष्टि नहीं बिगडतीहै ।

(२५)नीलोत्पलं विडङ्गानि पिप्पली रक्तचन्दनम्।
अञ्जनं सैन्धवं चैव सद्यस्तिमिरनाशनम्॥१३४॥

पत्रगैरिककर्पूरयष्टीनीलोत्पलाञ्जनम् ।
नागकेशरसंयुक्तमशेषतिमिरापहम् ॥ १३५ ॥
शङ्खस्य चतुरो भागास्तदर्धेन मनःशिला ।
मनःशिलार्धं मरिचं मरिचार्धेन पिप्पली ॥१३६॥
वारिणा तिमिरं हन्ति अर्बुदं हन्ति मस्तुना ।
पिच्चिटं मधुना हन्ति स्त्रीक्षीरेण तदुत्तमम्॥१३७
हरिद्रानिम्बपत्राणि पिप्पल्यो मरिचानि च ।
भद्रमुस्तं विडङ्गानि सप्तमं विश्वभेषजम् ॥१३८॥
गोमूत्रेण गुडी कार्या छागमूत्रेण चाञ्जनम् ।
ज्वरांश्च निखिलान्हन्ति भूतावेशं तथैव च १३९
वारिणा तिमिरं हन्ति मधुना पटलं तथा ।
नक्तान्ध्यं भृङ्गराजेन नारीक्षीरेण पुष्पकम् ।
शिशिरेण परिस्रावमर्बुदं पिच्चिटं तथा॥ १४० ॥

(२५ नीलकमालाद्यंजनम्) नीला कमल वायविडंग पीपली लालचंदन सुरमा सेंधानमक इन्होंका चूर्ण बनाय आंखमें घाले तो तत्काल तिमिररोग दूर होवे । तेजपात गेरू कपूर मुलहटी नीला कमल अंजन नागकेशर इन्होंका अंजन घाले तो संपूर्ण तिमिररोग दूर होवे । शंख चारभाग मनसिल दोभाग मिरच एकभाग पीपली आधाभाग इन्होंकों जलमें पीस दहीके पानीमें घिसके आंखिमें घाले तो तिमिर और अर्बुदरोग दूर होवे। शहदमें मिलाके घाले तो पिच्चिटरोग दूर हो । स्त्रीके दूधमें पीसके घाले तो फूला दूर हो । हलदी नींबके पत्ते पीपली मिरच भद्रमोथा वायविडंग सूंठ इन्होंकों गोमूत्रमें पीस गोली बनालेवे । पीछे बकराके मूत्रमें पीस नेत्रमें घाले तो संपूर्ण ज्वर और भूतप्रेतकी बाधा दूर होवे । जलमें पीसके घाले तो तिमिररोग दूर होवे । शहदके संग घाले तो पटलरोग दूर होवे । भंगराके रसमें पीसके घाले तो रात्यौंधा दूर होवे । स्त्रीके दूधमें घिसके घाले तो फूला दूर होवे ।

(२६)संगृह्योपरतानलक्तकरसे-
नामृज्य गण्डूपदान्
लाक्षारञ्जिततूलवर्तिनिहितान्
यष्टीमधून्मिश्रितान् ।
प्रक्षाल्योत्तमसर्पिपानलशिखा-
सन्तापजं कज्जलं
दूरासन्ननिशान्ध्यसर्वतिमिर-
प्रध्वंसकृच्चोदितम् ॥ १४१ ॥

भूमौ निघृष्टयाङ्गुल्या अञ्जनं शमनं तयोः ।
तिमिरकाचार्महरं धूमिकायाश्च नाशनम्॥१४२॥
त्रिफलाभृङ्गमहौषधमध्वाज्यच्छागपयसि गोमूत्रे ।
नागं सप्त निषिक्तं करोति गरुडोपमं चक्षुः॥१४३॥
त्रिफलासलिलयोगे भृङ्गराजद्रवे च
हविषि च विषकल्के क्षार आजे मधूत्रे ।
प्रतिदिनमथ तप्तं सप्तधा सीसमेकं
प्रणिहितमथ पश्चात्कारयेत्तच्छलाकाम् ॥ १४४ ॥
सवितुरुदयकाले साञ्जना व्यञ्जना वा
करकरिकसमेता नर्मपैच्चिस्यरोगान् ।
असितसितसमुत्थान्सन्धिवर्त्माभिजातान्
हरति नयनरोगान्सेव्यमाना शलाका ॥ १४५ ॥

(२६ कज्जलांजनम्) और इसी औषधकों करपूरमें घिसके घाले तो परिस्राव पिच्चिट अर्बुद ये रोग दूर होवे । मेरेहुए गिंडोये जीवोंकों ग्रहण कर तिनकों आलके रंगमें भिगोके लाखके रंगमें भिगोई हुई रूईमें लपेट तिस रूईकी वत्ती बनाय तिसकै मुलहटी शहद और घृत लगाके उसकों जलावे । उससें जो कज्जल उत्पन्न हो उसकों नेत्रमें घाले तो दूरसें नहीं दीखना रात्यौंधा संपूर्ण तिमिररोग ये सब दूर होवें । अंगुलीकों भूमीमें घिसके तिससें अंजन घाले तो तिमिर काच अर्म धूंध ये रोग दूर होवें। त्रिफला भंगरा सूंठ शहद बकरीका दूध गोमूत्र इन्होंमें सात दिनतक सीसाकों भावना दे चूर्ण बनाके घाले तो गरुडके समान दिव्य दृष्टि होजावे। इसकी यह विधिहै कि त्रिफलाके जलमें और भंगराके द्रव्यमें घृतके कल्कमें और शहदमें बकरीके दूधमें गोमूत्रमें दिनदिन प्रति सात दिनतक तपाये हुये शीसाकों डबोके बुझावै । फिर इस शीसेकी सलाई बनाके अकेलीकों अथवा अंजनसहितकों आंखिमें फेरे तो अर्म पिच्चिट नेत्रकी संधिमें उत्पन्न हुए रोग इन सबोंकों यह सलाई दूर करदेतीहै ।

(२७)चिञ्चापत्ररसं निधाय विमले
चौदुम्बरे भाजने
मूलं तत्र निघृष्टसैन्धवयुतं
गौञ्जं विशोष्यातपे ।
तच्चूर्णं विमलाञ्जनेन सहितं
नेत्राञ्जने शस्यते
काचार्मार्जुनपिच्चिटे सतिमिरे
स्रावं च निर्वासयेत् ॥ १४६ ॥

चित्राषष्ठीयोगे सैन्धवममलं विचूर्ण्य तेनाक्षि ।
शममञ्जनेन तिमिरं गच्छति वर्षादसाध्यमपि १४७
दद्यादुशीरनिर्यूहे चूर्णितं कणसैन्धवम् ।
तच्छ्रुतं सघृतं भूयः पचेत्क्षौद्रं क्षिपेद्घने ॥१४८॥
शीते तस्मिन्हितमिदं सर्वजे तिमिरेऽञ्जनम् १४९
धात्रीरसाञ्जनक्षौद्रसर्पिर्भिस्तु रसक्रिया ।
पित्तानिलाक्षिरोगघ्नी तैमिर्यपटलापहा ॥१५०॥

(२७ चिंचादिचूर्णम्) अमलीके पत्तोंके रसकों गूलरके पात्रमें घालि तिसमें सेंधानमक और चिरमठीकी जडकों पीसके मिलादेवे फिर उसकों घाममें सुखा लेवे । इस चूर्णकों नेत्रमें घाले तो काच अर्म पिचिट तिमिर स्राव ये सब रोग दूर होवें । षष्ठीकों चित्रा होवे उस दिन सेंधानमकका चूर्ण बनाय नेत्रमें घाले तो वर्षोंसें असाध्य तिमिररोगभी शीघ्रही दूर होताहै । खसखसके निर्यूहमें सेंधानमक और पीपलीका चूर्ण मिलाके पकावे। पकनेके समय घृत मिलावे । फिर पकता हुआ करडाहो जावे तब शहद डालै । यह औषध शीला होजावे तब संपूर्ण तिमिररोगवाले नेत्रमें अंजन घालना हितहै । आंवला रसौत शहद घृत इन्होंकी रसक्रिया बनाके नेत्रमें घाले तो पित्तवायुसें उपजा नेत्ररोग तिमिर पटल ये सब दूर होवें ।

(२८)शृङ्गवेरं भृङ्गराजं यष्टीतैलेन मिश्रितम् ।
नस्यमेतेन दातव्यं महापटलनाशनम् ॥ १५१ ॥
लिङ्गनाशे कफोद्भूते यथावद्विधिपूर्वकम् ।
विद्ध्वा दैवकृते छिद्रे नेत्रं स्तन्येन पूरयेत् ॥१५२॥
ततो दृष्टेषु रूपेषु शलाकामाहरेच्छनैः ।
नयनं सर्पिषाभ्यज्य वस्त्रपट्टेन वेष्टयेत् ॥ १५३ ॥
ततो गृहे निराबाधे शयितोत्तान एव च ।
उद्गारकासक्षवथुष्ठीवनोत्कम्पनानि च ॥ १५४ ॥
तत्कालं नाचरेदूर्ध्वं यन्त्रणास्नेहपोतवत् ।
त्र्यहात्र्यहाद्धारयेत्तु कषायैरनिलापहैः ॥१५५॥
वायोर्भयात्र्यहादूर्ध्वं स्नेहयेदक्षि पूर्ववत् ।
दशरात्रं तु संयम्य हितं दृष्टिप्रसादनम् ॥१५६॥
पश्चात्कर्म च सेवेत लघ्वन्नं चापि मात्रया ।
रागश्चोषोर्बुदं शोथो बुद्बुदं केकराक्षिता ॥ १५७॥
अधिमन्थादयश्चान्ये रोगाः स्युर्दुष्टवेधजाः ।
अहिताचारतो वापि यथास्वं तानुपाचरेत् ॥१५८
रुजायामक्षिरोगे वा भूयो योगान्निबोध मे ।

(२८ शृंगवेरनस्यादि) अदरक भंगरा मुलहटी इन्होंमें सिद्ध किये हुए तेलकी नस्य देनेसें महापटलरोग दूर होताहै । कफसें उत्पन्न हुए लिंगनाश अर्थात् मोतियाबिंदमें यथार्थ विधिसें दैवसे किये हुए छिद्रोंकों वींधके फिर नेत्रकों दूधसें भरदेवै । फिर स्वरूप दीखनेलगजावे तब शनै शनै शलाईकों निकासलेवे और नेत्रकों घृतसें चोपरिकै वस्त्रसें बांधदेवै । फिर जहां वायु आदिकी पीडा न हो ऐसे घरमें सीधा सुनादेवै और उस समय रोगीकों ढकार खांसी छींक थूंकना कंपना इनका आचरण नहीं करना । स्नेहपान करनेवालेकी तरह रहना योग्य है । और तीन तीन दिनके बाद नेत्रमें वायुकों नष्टकरनेवाले क्वाथोंकों नेत्रमें पूरण करता रहै । वायुके भयसें तीन तीन दिनमें स्नेहसें नेत्रकों पूरण करै ऐसे नियमपूर्वक दशदिन व्यतीत होजावे तब दृष्टि स्वच्छ होजातीहै । पीछेभी मात्राके अनुसार हलके अन्नोंका भोजन करता रहै । जो बुरे प्रकारसें नेत्र वींधाजावे तो राग चोष शोजा बुद्बुद केकराक्षिपना अधिमंथ इन नामोंवाले रोग उत्पन्न होजाते हैं । इन रोगोंकों दूर करनेके वास्तै अपथ्य वस्तुओंका सेवन नहीं करै और जो इस आंखिमें पीडा रहजावे तिसके अन्य रोगोंकों मुजसें सुनों ।

(२९)कल्किताः सघृता दूर्वायवगैरिकशारिवाः ॥
सुखलेपाः प्रयोक्तव्या रुजा रोगोपशान्तये ।
पयस्याशारिवापत्रमञ्जिष्ठामधुकैरपि ॥ १६० ॥
अजाक्षीरान्वितैर्लेपः सुखोष्णः पथ्य उच्यते ।
वातघ्नसिद्धे पयसि सिद्धं सर्पिश्चतुर्गुणे ॥१६१॥
काकोल्यादिप्रतीवापं प्रयुञ्ज्यात्सर्वकर्मसु ।
शाम्यत्येवं न चेच्छूलं स्निग्धस्विन्नस्य मोक्षयेत् ॥
ततः शिरां दहेच्चापि मतिमान्कीर्तितां यथा ।
दृष्टेरतः प्रसादार्थमञ्जने शृणु मे शुभे ॥ १६३ ॥

(२९ दूर्वारसादिना सुखलेपः) दूब जव गेरू सिरयाई इन्होंकों पीस घृतमें कल्क बनाय पीडाकी शांतिके वास्तै सुखपूर्वक लेप करदेवै । दूधी सिरयाईके पत्ते मंजीठ मुलहटी इन्होंकों बकरीके दूधमें पीस सुहाता हुआ गरम गरम लेप करना हित है । वातनाशक सिद्ध कियेहुए चौ-

गुने दूधमें घृतकों सिद्ध करै । फिर तिसमें काकोली आदि गण औषधोंकों पीसके मिलादेवे । फिर इसकों नेत्रके सब कर्मोंमें नियुक्त करै।जो यदि इस प्रकारसेंभी नेत्रकी शूल दूर नहीं होवे तो स्निग्ध कर. पसीना दिवाय नेत्रपै फस्त खुलावै अथवा नसकों विंधवादेवै और कतरादेवै। दृष्टि स्वच्छहोनेके वास्ते अंजनकों सुनो ।

(३०)मेषशृङ्गस्य पत्राणि शिरीषधवयोरपि ।
मालत्याश्चापि तुल्यानि मुक्तावैदूर्यमेव च॥१६४॥
अजाक्षीरेण संपिष्य ताम्रे सप्ताहमावपेत् ।
प्रणिधाय तु तद्वर्तिं योजयेदञ्जने भिषक् ॥१६५॥
स्रोतोजं विद्रुमं फेनं सागरस्य मनःशिला ।
मरिचानि च तद्वर्तिं कारयेत्पूर्ववद्भिषक् ॥१६६॥
रसाञ्जनं घृतं क्षौद्रं तालीसं स्वर्णगैरिकम् ।
गोशकृद्रससंयुक्तं पित्तोपहतदृष्टये ॥ १६७ ॥

(३० वर्त्यंजनम्) मींढासींगीके पत्ते शिरसके पत्ते धवके पत्ते चमेलीके पत्ते इन्होंकों समान भाग लेवे और मोती वैडूर्य मणि इनकोंभी समानभाग ग्रहण कर इन्होंकों सात दिनतक तांबाके पात्रमें बकरीके दूधसें युक्त करके खरल करै । फिर इसकी बत्ती बनाके नेत्रमें घालना हित है । शंख मूंगा समुद्रझाग मनशिल मिरच इन्होंकी बत्ती बनाय घालना हित है । अथवा रसौत घृत शहद तालीसपत्र सोनागेरू इन्होंकों पीस गोवरके रसमें मिलाय बत्ती बनालेवे । इस बत्तीसें पित्तसें हत हुई दृष्टि शांत होतीहै ।

(३१)नलिनोत्पलकिञ्जल्कं गोशकृद्रससंयुतम् ।
गुडिकाञ्जनमेतत्स्याद्दिनरात्र्यन्धयोर्हितम् ॥१६८
नदीजशङ्खत्रिकटून्यथाञ्जनं
मनःशिला द्वे च निशे गवां शकृत् ।
सचन्दनेयं गुडिकाथ चाञ्जने
प्रशस्यते रात्रिदिनेष्वपश्यताम् ॥ १६९ ॥
कणाच्छागयकृन्मध्ये पक्त्वा तद्रसपेषिता ।
अचिराद्धन्ति नक्तान्ध्यं तद्वत्सक्षौद्रमूषणम्॥१७०
पचेत्तु गौधं हि यकृत्प्रयुक्तं
प्रकल्पितं मागधिकाभिरम्बुना ।
निषेवितं तत्सकृदञ्जनेन
निहन्ति नक्तान्ध्यमसंशयं खलु ॥ १७१ ॥
दध्ना निघृष्टं मरिचं रात्र्यन्ध्याञ्जनमुत्तमम् ।
ताम्बूलयुक्तं खद्योतभक्षणं च तदर्थकृत्॥१७२॥
शफरीमत्स्यक्षारो नक्तान्ध्यं चाञ्जनाद्विनिहन्ति ।
तद्वद्रामठटङ्कणकर्णमलं चैकशोऽञ्जनान्मधुना ॥
केशराजान्वितं सिद्धं मत्स्यण्डं हन्ति भक्षितम् ।
नक्तान्ध्यं नियतं नृणां सप्ताहात्पथ्यसेविनाम्१७४

(३१ गुटिकांजनम्) कमलकी केशरकों गोवरके रसमें खरल कर गोली बनाय आंखिमें अंजन घाले तो दिनमें स्वच्छ दृष्टि हो और रात्यौंधा दूर होवे । नदीमें उत्पन्न हुआ शंख सूंठ मिरच पीपल सुरमा मनशिल दोनों हलदी गोवर चंदन इन्होंकी गोली बनाय आंखमें घाले तो दिनमें और रात्रिमें स्वच्छ दृष्टि रहै।पीपलीकों बकरीकी तिल्लीके रसमें पीसके तिसें बकरीकी तिल्लीमेंही पकावे । इसमें शहद मिलाय आंखमें घाले तो शीघ्रही रात्यौंधा दूर होताहै । गोहकी तिल्लीमें पीपलीकों पकाय जलमें पीस आंखिमें घाले तो निश्चय रात्यौंधा दूर होवे । मिरचकों दहीमें पीस अंजन घाले तो रात्यौंधा दूर होवे । पटवीजना पक्षीकों पानमें लगाके भक्षण करे तो रात्यौंधा दूर होवे । मछलीका अथवा बडा मच्छका खारकों आंखिमें घाले तो रात्यौंधा दूर होवे । हींग सुहागा कानका मैल इनकों एक एककों शहदमें मिलाय अंजन घाले तो रात्यौंधा दूर होवे । भंगराके रसमें सिद्ध की हुई रावकों भक्षण करे तो पथ्य वस्तुके सेवनेसें रात्यौंधा दूर होताहै ।

(३२)त्रिफलाक्वाथकल्काभ्यां सपयस्कं शृतं घृतम्
तिमिराण्यचिराद्धन्ति पीतमेतन्निशामुखे ॥१७५

(३२ त्रिफलाघृतम्) त्रिफलाके क्वाथ और कल्कमें दूधसहित घृतकों पकावे फिर इसकों संध्यासमयमें पीवे तो संपूर्ण तिमिररोग शीघ्रही दूर होवे ।

(३३)त्रिफलाया रसप्रस्थं प्रस्थं भृङ्गरसस्य च ।
वृषस्य च रसप्रस्थं शतावर्याश्च तत्समम् ॥१७६॥
अजाक्षीरं गुडूच्याश्च आमलक्या रसं तथा ।
प्रस्थं प्रस्थं समाहृत्य सर्वैरेभिर्घृतं पचेत् ॥१७७॥
कल्कः कणासिताद्राक्षात्रिफलानीलमुत्पलम् ।
मधुकं क्षीरकाकोली मधुपर्णी निदिग्धिका॥१७८
तत्साधुसिद्धं विज्ञाय शुभे भाण्डे निधापयेत् ।
ऊर्ध्वपानमधःपानं मध्यपानं च शस्यते ॥१७९॥
यावन्तो नेत्ररोगास्तान्पानादेवापकर्षति ।
सरक्ते रक्तदुष्टे च रक्ते चातिस्रुतेऽपि च ॥१८०॥

नक्तान्ध्ये तिमिरे काचे नीलिकापटलार्बुदे ।
अभिष्यन्देऽधिमन्थे च पक्ष्मकोपे सुदारुणे ॥१८१॥
नेत्ररोगेषु सर्वेषु वातपित्तकफेषु च ।
अदृष्टिं मन्ददृष्टिं च कफवातप्रदूषिताम् ॥१८२॥
स्रवतो वातपित्ताभ्यां सकण्ड्वासन्नदूरदृक् ।
गृध्रदृष्टिकरं सद्यो बलवर्णाग्निवर्धनम् ।
सर्वनेत्रामयं हन्यात्त्रिफलाद्यं महद्घृतम् ॥१८३॥

(३३ महात्रिफलाघृतम्) त्रिफलाका रस चौसठ तोले भंगराका रस चौसठ तोले वांसाका रस ६४ तोले शतावरीका रस ६४ तोले और बकरीका दूध ६४ तोले गिलोयका रस ६४ तोले आमलाका रस ६४ तोले ऐसे इन सबोंकों ग्रहण कर पीछे इस रसमें घृतकों पकावे। तिसमें पीपली मिसरी दाख त्रिफला नीलाकमल मुलहटी क्षीरकाकोली दूधी कटेहली इन्होंका कल्क बनाय पकते हुए इस घृतमें मिलावे। फिर यह अच्छी तरह पकजावे तब उत्तम बरतनमें घाल धरै। फिर इस घृतका ऊर्ध्वपान करै अथवा अधःपान करै अथवा मध्यपान करै। यह पीनेसें नेत्रके संपूर्ण रोगोंकों दूर करता है। रक्तवाला रक्तसें दूषित अत्यंत रक्त झिरनेवाला नेत्ररोग रात्यौंधा तिमिररोग काच नीलिका पटलार्बुद अभिष्यंद अधिमंथ दारुण पक्ष्मकोप इन सब रोगोंकों दूर करता है। और वात पित्त कफ इन सब दोषोंसें उत्पन्न हुये नेत्ररोगोंके दूर करनेकेवास्ते परम उत्तम है। और अदृष्टि कफवातसें उत्पन्न हुई मंददृष्टि वातपित्तका स्राव नेत्रकी कंडू इन सब रोगोंकों दूर करताहै। और शीघ्रही गीधके समान उत्तम दृष्टि होतीहै और बल तथा जठराग्नि बढता है। यह त्रिफलाआदि महान् घृत संपूर्ण नेत्ररोगोंकों दूर करताहै।

(३४)त्रिफला त्र्यूषणं द्राक्षा मधुकं कटुरोहिणी।
प्रपौण्डरीकं सूक्ष्मैला विडङ्गं नागकेशरम्॥१८४॥
नीलोत्पलं शारिवे द्वे चन्दनं रजनीद्वयम् ।
कार्षिकैः पयसा तुल्यं त्रिगुणं त्रिफलारसम्१८५
घृतप्रस्थं पचेदेतत्सर्वनेत्ररुजापहम् ।
तिमिरं दोषमास्रावं कामलां काचमर्बुदम् ॥१८६
वीसर्पं प्रदरं कण्डूं रक्तं श्वयथुमेव च ।
खालित्यं पलितं चैव केशानां पतनं तथा॥१८७॥

विषमज्वरमर्माणि शुक्रं चाशु व्यपोहति ।
अन्ये च बहवो रोगा नेत्रजा ये च वर्त्मजाः ।
तान्सर्वान्नाशयत्याशु भास्करस्तिमिरं यथा ॥१८८
न चैवास्मात्परं किञ्चिद्दृषिभिः काश्यपादिभिः ।
दृष्टिप्रसादनं दृष्टं यथा स्यात्त्रैफलं घृतम् ॥१८९॥

फलत्रिकाभीरुकषायसिद्धं
कल्केन यष्टीमधुकस्य युक्तम् ।
सर्पिः समं क्षौद्रचतुर्थभागं
हन्यात्त्रिदोषं तिमिरं प्रवृद्धम् ॥ १९० ॥

(३४ द्वितीयं त्रैफलघृतम्) त्रिफला सूंठ मिरच पीपली दाख मुलहटी कुटकी कमल छोटीइलायची वायविडंग नागकेशर नीलाकमल दोनों सारिवा चंदन दोनों हलदी इन सबोंकों एक एक तोलाप्रमाण ले इन सबोंके समान दूध और इनसें तिगुना त्रिफलाके रसकों ग्रहण कर फिर इनकों पकावे। इस औषधमें ६४ तोले घृतकों पकावे। यह घृत संपूर्ण नेत्ररोगोंकों दूर करताहै और तिमिर दोष आस्राव कामला काच अर्बुद विसर्प प्रदर कंडू रक्तशोजा गंजापन वलीपलित अर्थात् वाल सफेद होने इन सब रोगोंकों दूर करताहै और विषमज्वर मर्मके रोग फूला इनकों तथा अन्य बहुतसे नेत्रमें होनेवाले रोगोंकों शीघ्रही दूर करताहै जैसे सूर्य अंधेरेकों दूर करदेताहै तैसाही यह घृत नेत्रके संपूर्ण रोगोंकों दूर करताहै। कश्यप आदि ऋषियोंनें इस त्रिफलाके घृतसें उपरांत अन्य कोई औषध नेत्रके हितमें उत्तम नहीं कहाहै। त्रिफला शतावरी इन्होंका क्काथमें और मुलहटी महुआ वृक्ष इन्होंके क्काथमें समानभाग घृत मिलाय तिसकों पकावे और चौथा भाग शहद मिलावे। यह घृत त्रिदोषसें उत्पन्न हुये महान् तिमिररोगकों दूर करताहै।

(३५)भृङ्गराजरसप्रस्थे यष्टीमधुपलेन च ।
तैलस्य कुडवं पक्वं सद्यो दृष्टिं प्रसादयेत् ।
नस्याद्वलीपलितघ्नं मासेनैतन्न संशयः ॥ १९१ ॥

गवां शकृत्क्काथविपक्वमुत्तमं
हितं च तैलं तिमिरेषु नस्ततः ।
घृतं हितं केवलमेव पैत्तिके
तथानुतैलं पवनासृगुत्थयोः ॥ १९२ ॥

(३५ भृंगराजाद्यं तैलम्) चौसठ तोले भंगराके रसमें चार तोले मुलहटीके कल्ककों मिलाय तिसमें

सोलह तोले तेलकों पकावे । यह तेल नस्य देनेसें शीघ्रही दृष्टिकों स्वच्छ करताहै । और एक महीनातक नस्य देनेसें निश्चय वलीपलितरोग दूर होताहै । गौओंके गोवरका क्वाथमें तेलकों पकावे । इस तेलकी नस्य देनेसें तिमिररोग दूर होताहै । अथवा केवल पित्तसेंही उत्पन्न हुए तिमिररोगमें इसी प्रकार घृतकों सिद्ध कर नस्य देना हितहै ।

(३६)जीवकर्षभकौ मेदा-
द्राक्षांशुमती निदिग्धिका वृहती ।
मधुकं वला विडङ्गं
मञ्जिष्ठा शर्करा तथा रास्ना ॥ १९३ ॥
नीलोत्पलं श्वदंष्ट्रा प्रपौण्डरीकं पुनर्नवा लवणम् ।
पिप्पल्यः सर्वेषां भागैरक्षांशिकैः पिष्टैः ॥ १९४ ॥
तैलं यदि वा सर्पिर्दत्वा क्षीरं चतुर्गुणं पक्कम् ।
तिमिरं पटलं काचं नक्तान्ध्यं चार्वुदं तथान्ध्यं च
श्वेतं च लिङ्गनाशं नाशयति परं च नीलिकाव्यङ्गम्
मुखनासादौर्गन्ध्यं पलितं चाकालजं हनुस्तम्भम्
कासं श्वासं शोषं हिक्कां स्तम्भं तथात्ययं नेत्रे ।
मुखजैक्ष्य(?)मर्धभेदं रोगं वाहुग्रहं शिरःस्तम्भम् ।
रोगानथोर्ध्वजत्रोः सर्वानचिरेण नाशयति १९७
नस्यार्थं कुडवं तैलं पक्तव्यं नृपवल्लभे ।
अक्षांशैः शाणिकैः कल्कैरन्ये भृङ्गादितैलवत् १९८

(३६ नृपवल्लभतैलम्) अथवा घृत जीवक ऋषभक मेदा दाख सालवण कटेहली वडीकटेहली मुलहटी खरैंहटी वायविडंग मंजीठ खांड रास्ना नीलाकमल गोखरू सांठीनमक पिपली इन सबोंकों एक एक तोला प्रमाण लेके पीस लेवे।पीछे घृतकों अथवा तेलकों पकावे। इस तेल घृतसें चौगुना दूध मिलाय पीछे अच्छी तरह पकावे । यह सिद्ध हुआ घृत सेवन करनेसें तिमिर पटल काच रात्यौंधा अर्बुद अंधेरी सफेद लिंगनाश नीलिकाव्यंग मुखकी तथा नासिकाकी दुर्गंधि अकालमें उत्पन्न हुआ वलीपलितरोग हनुस्तंभ खांसी श्वास शोप हिचकी ये सब रोग दूर होतेहैं । और मुखके रोग अर्धांगवायु वाहुग्रह शिरस्तंभ ये सब रोग दूर होतेहैं । और शीघ्रही जोतोंके रोगोंकों दूर करताहै । यहां तेलकों अथवा घृतकों १६ तोले ग्रहण करै अन्य औषधोंकों एक एक तोला अथवा चार चार मासे ग्रहण कर कल्क वनाके मिलावे । कईक आचार्योंनें भृंगराजतेलके समान सिद्ध करना ऐसा कहाहै ।

(३७)तैलस्यपचेत्कुडवंमधुकस्य पलेन कल्कपिष्टेन
आमलकरसप्रस्थं क्षीरप्रस्थेन संयुतं कृत्वा ॥
अभिजिन्नाम्ना तैलं तिमिरं हन्यान्मुनिप्रोक्तम् ।
विमलां कुरुते दृष्टिं नष्टामप्यानयेदिदं शीघ्रं २००

(३७ अभिजित्तैलम्) चार तोले मुलहटीका कल्कमें सोलह तोले तेल आंवलाका रस ६४ तोले दूध ६४ तोले इन सवोंकों मिलाय इस तेलकों पकावे । यह अभिजित्नामवाला तेल नेत्रके तिमिररोगकों दूर करताहै और नष्ट हुई दृष्टिकोंभी निर्मल करताहै ।

(३८)अर्म तु छेदनीयं स्यात्कृष्णाप्राप्तं भवेद्यदा ।
वडिशाविद्धमुन्नम्य त्रिभागं चात्र वर्जयेत्॥२०१॥
पिप्पली त्रिफला लाक्षा लौहचूर्णं ससैन्धवम् ।
भृङ्गराजरसे पिष्टं गुडिकाञ्जनमिष्यते ॥ २०२ ॥
अर्म सतिमिरं काचं कण्डूं शुक्रं तदर्जुनम् ।
अजकां नेत्ररोगांश्च हन्यान्निरवशेषतः ॥ २०३ ॥
पुष्पाख्यतार्क्ष्यजसितोदधिफेनशङ्ख-
सिन्धूत्थगैरिकशिलामरिचैः समांशैः ।
पिष्टैश्च माक्षिकरसेन रसक्रियेयं
हन्त्यर्मकाचतिमिरार्जुनवर्त्मरोगान् ॥ २०४ ॥
कौन्तस्य सर्पिषः पानैर्विरेकालेपसेचनैः ।
स्वादुशीतैः प्रशमयेच्छुक्तिकामञ्जनैस्ततः॥२०५॥
प्रवालमुक्तावैदूर्यशङ्खस्फटिकचन्दनम् ।
सुवर्णरजतं क्षौद्रमञ्जनं शुक्तिकापहम् ॥ २०६ ॥
शङ्खः क्षौद्रेण संयुक्तः कतकः सैन्धवेन वा ।
सितयार्णवफेनो वा पृथगञ्जनमर्जुने ॥ २०७ ॥
पैत्तं विधिमशेषेण कुर्यादर्जुनशान्तये ।
वैदेही श्वेतमरिचं सैन्धवं नागरं समम् ॥२०८॥
मातुलुङ्गरसैः पिष्टमञ्जनं पिटकापहम् ॥ २०९ ॥

(३८ शुक्तजेषु छेदनादि) जो यदि अर्मरोग काली पुतलीमें प्राप्त होजावे तो छेदन करना योग्यहै । ऊपरकों नवायके वडिशनामक कांटेसें वींधै और त्रिभाग जगहकों नहीं वींधै । पीपली त्रिफला लाख लोहेका चूर्ण सेंधानमक इन्होंकों भंगराके रसमें पीस गोली बनाय अंजन घाले तो अर्म तिमिर काच कंडू फूला अजका इन संपूर्ण नेत्ररोगोंकों दूर करताहै । सौंफ रसौत मिसरी समुद्रझाग शंख सेंधानमक गेरू शिलाजीत मिरच इन सवोंकों समान भाग ले शहदमें खरल करके आंखिमें घाले तो अर्म

काच तिमिर फूला नेत्रके कोइयेका रोग ये सब दूर होवे। रेणुकबीजमें सिद्ध किया हुआ घृतका पीना जुलाब लेप मधुर और शीतल औषधोंका आसेक अंजन घालना इन क्रियाओंसें शुक्तिकानामक रोग दूर होताहै। और मूंगा मोती वैडूर्यमणि शंख कपूर चंदन सोना चांदी शहद इन्होंकों खरल कर अंजन घाले तो शुक्तिकारोग दूर होवे। अथवा शंखकों पीस शहदमें मिलाय नेत्रमें घाले वा निर्मलीके बीज और सेंधानमककों पीस नेत्रमें घाले वा मिसरी समुद्रझाग इनकों पीस अंजन घाले तो फूला दूर होवे। और विशेषकरिकै फूलाकी शांतिके वास्ते पित्तकी विधि करनी चाहिये। और पीपली सफेद मिरच सेंधानमक सूंठ इन्होंकों विजोराके रसमें खरलकर आंखिमें घाले तो पिष्टक अर्थात् नेत्रके ठोलोका रोग दूर होवे।

(३९)भित्त्वोपनाहं कफजं पिप्पलीमधुसैन्धवैः।
विलिखेन्मण्डलाग्रेण प्रच्छयेद्वा समन्ततः २१०
पथ्याक्षधात्रीफलमध्यबीजै-
स्त्रिद्व्येकभागैर्विदधीत वर्तिम्।
तयाञ्जयेदश्रुमतिप्रगाढ-
मक्ष्णोर्हरेत्कष्टमपि प्रकोपम्॥ २११॥
स्रावेषु त्रिफलाक्वाथं यथादोषं प्रयोजयेत्।
क्षौद्रेणाज्येन पिप्पल्या मिश्रं विध्येच्छिरां तथा॥
त्रिफलामूत्रकासीससैन्धवैः सरसाञ्जनैः।
रसक्रिया क्रिमिग्रन्थौ भिन्ने स्यात्प्रतिसारणम्॥

(३९ संधिजेषूपनाहभेदनादि) कफसें उत्पन्न हुए नेत्रके उपनाहकों भेदन कर लेखनकर्म कर तहां पीपली सेंधानमक शहद इन्होंकों भरदेवै। और हरडै १ भाग बहेडा २ भाग आंवला ३ भाग इन्होंके मध्यभागकी गुठलीकों क्रमसें तीनभाग दोभाग और एकभाग ग्रहण करै। फिर पीसके बत्ती बनाय नेत्रमें घाले तो आंखिकी आंशू गिरती हुई बंद हो और अत्यंत कष्ट दूर होवे। नेत्रके स्रावसें दोषके अनुसार त्रिफलाके क्काथकों प्रयुक्त करै। जिस नेत्रमें क्रिमियोंकी ग्रंथी होजावे उस ग्रंथिकों भेदन कर त्रिफला गोमूत्र कसीस सेंधानमक रसौत इन्होंकों खरलकर ऊपर बुरकावै।

(४०)स्विन्नां भित्त्वा विनिष्पीड्य भिन्नामञ्जनना-
मिकाम्।
शिलैलानतसिन्धूत्थैः सक्षौद्रैः प्रतिसारयेत् २१४
रसाञ्जनमधुभ्यां च भिन्नां वा शस्त्रकर्मवित्।
प्रतिसार्याञ्जनैर्युञ्ज्यादुष्णैर्दीपशिखोद्भवैः॥२१५॥
स्वेदयेद्धृष्टयाङ्गुल्या हरेद्रक्तं जलौकसा।
रोचनाक्षारतुत्थानि पिप्पल्यः क्षौद्रमेव च॥२१६
प्रतिसारणमेकैकं भिन्नेन गण इष्यते।
निमिषे नासया पेयं सर्पिस्तेन च पूरणम्॥२१७॥
स्वेदयित्वा बिसग्रन्थिं छिद्राण्यस्य निराश्रयम्।
पक्वं भित्त्वा तु शस्त्रेण सैन्धवेनावचूर्णयेत्॥२१८॥
वर्त्मावलेखं बहुशस्तद्वच्छोणितमोक्षणम्।
पुनः पुनर्विरेकं च पिल्लरोगातुरो भजेत्॥२१९॥
पिल्ली स्निग्धो वमेत्पूर्वं शिराव्याधं स्रुतेऽसृजि।
शिलारसाञ्जनव्योषगोपित्तैश्चक्षुरंजयेत्॥ २२०॥
हरितालवचादारुसुरसारसपेषितम्।
अभयारसपिष्टं वा तगरं पिल्लनाशनम्॥ २२१॥
भावितं बस्तमूत्रेण सस्नेहं देवदारु च।
काकमाचीफलैकेन घृतयुक्तेन बुद्धिमान्॥२२२॥
धूपयेत्पिल्लरोगार्तं पतन्ति क्रिमयोऽचिरात्।

(४० भिन्नायां प्रतिसारणादि) नेत्रके अंजननामिकारोगमें पसीना दिवाय भेदन करके निष्पीडन करै। पीछे शिलाजीत इलायची तगर सेंधानमक शहद इन्होंसें प्रतिसारणकर्म करै। अथवा शस्त्रके कर्मकों जाननेवाला वैद्य इसकों भेदन करके रसौत और शहदकों मसल देवै। ऐसा प्रतिसारण कर्म करके दीपककी शिखाकी गरम गरम स्याहीका अंजन घालै। अथवा अंगुलीकों घिसके लगावे तिससें पसीना दिवावे। जोंक लगवाके रक्त निकलादेवै। पीछे क्रमसें गोरोचन जवाखार नीलाथोथा पीपली शहद इनमांहसें एक एकको बुरकादेवै। और जिसकी पलक झिपकती नहीं हो उसकों घृत पिलावे और आंखोंमेंभी घृतकों पूरण करै। बिसग्रंथिकों पसीना दिवावै। फिर इसके पके हुए छिद्रोंकों वींधके तहां सेंधानमककों बुरकादेवै। नेत्रके कोइयेके रोगोंका वारंवार रुधिर निकलादेवै और जिसके नेत्रमें पिल्लरोग हो उसकों वारंवार जुलाब दिवावै। चिकनी औषध पिलाके वमन कराय पीछे शिरावेधन करवावै। पीछे शिलाजीत रसौत सूंठ मिरच पीपली इन्होंकों गौके पित्तेमें खरल कर अंजन घाले तो पिल्लरोग दूर हो। हरताल वच देवदारु इन्होंकों तुलसीके रसमें पीस अथवा तगरकों हरडैके स्वरसमें पीस आंखिमें घाले तो पिल्लरोग दूर होवे।

देवदारुकों बकराके मूत्रमें भावना दे तिसमें घृत मिलाय अथवा मकोहके फलकों घृतमें मिलाय अग्निपर गेर धूप देवे तो पिल्वरोगवालेके क्रिमि दूर होतेहैं।

(४१)रसाञ्जनं सर्जरसो जातीपुष्पं मनःशिला ॥
समुद्रफेनो लवणं गैरिकं मरिचानि च।
एतत्समांशं मधुना पिष्टं प्रक्लिन्नवर्त्मनि ॥२२४॥
अञ्जनं क्लेदकण्डूघ्नं पक्ष्मणां च प्ररोहणम्।
मस्तकास्थिचुलुक्यास्तु तुषोदलवणान्वितम् ॥
ताम्रपात्रेऽञ्जनं घृष्टं पिल्ले प्रक्लिन्नवर्त्मनि।
ताम्रपात्रे गुहामूलं सिन्धूत्थं मरिचान्वितम्२२६
आरणालेन संघृष्टमञ्जनं पिल्लनाशनम्।
हरिद्रे त्रिफलां लोध्रं मधुकं रक्तचन्दनम् २२७
भृङ्गराजरसे पिष्ट्वा घर्षयेल्लोहभाजने।
तथा ताम्रे च सप्ताहं कृत्वा वर्तिं रजोऽथवा२२८
पिच्चिटी धूमदर्शी च तिमिरोपहतेक्षणः।
प्रातर्निश्यञ्जयेन्नित्यं सर्वनेत्रामयापहम् ॥ २२९ ॥

मञ्जिष्ठामधुकोत्पलोदधिकफ-
त्वक्सेव्यगोरोचना-
मांसीचन्दनशङ्खपत्रगिरिमृ-
त्तालीसपुष्पाञ्जनैः।
सर्वैरेव समांशमञ्जनमिदं
शस्तं सदा चक्षुषोः
कण्डूक्लेदमलाश्रुशोणितरुजा-
पिल्लार्मशुक्रापहम् ॥ २३० ॥

(४१ चूर्णांजनम्) रसौत राल जूहीका पुष्प मनशिल समुद्रझाग नमक गेरू मिरच इन्होंकों समानभाग ले शहदमें खरल कर आंखिमें घाले तो क्लिन्न वर्त्मरोग दूर होताहै और क्लेद तथा खाजि दूर होवे पलक वढजावे। मच्छीकी मस्तककी हड्डीकों कांजीके पानीमें और नमकमें मिलाके तांबाके पात्रमें खरल करै। फिर क्लिन्नवर्त्म और पिल्वरोगमें घाले तो ये रोग दूर होवें। सालवणकी जडको तांबाके पात्रमें घिसै उसमें सेंधानमक मिलाय और काली मिरच मिलावे। फिर इसकों कांजीके रसमें खरलकर अंजन घाले तो पिल्वरोग दूर होवे। और दोनों हलदी त्रिफला लोध मुलहटी लाल चंदन इन्होंकों भंगराके रसमें मिलाय लोहाके पात्रमें खरल करै अथवा तांबाके पात्रमें खरल करै। फिर बत्ती वनाके अथवा अंजन बनाके आंखोंमें घाले तो पिच्चिट धूंध तिमिर इत्यादिक संपूर्ण नेत्ररोग दूर होवे। मंजीठ मुलहटी कमल समुद्रझाग तेजपात गोरोचन जटामांसी चंदन शंख पर्वतकी मृत्तिका तालीसपत्र जस्तकी भस्म इन्होंकों समान भाग ले अंजन बनावे। यह अंजन नेत्रोंमें हित है कंडू क्लेद नेत्रकी ढीढ आंशु रुधिरकी पीडा इन सब नेत्ररोगोंकों दूर करताहै।

(४२)तुत्थकस्य पलं श्वेतमरिचानि च विंशतिः।
त्रिंशता काञ्जिकपलैः पिष्ट्वा ताम्रे निधापयेत्२३१
पिल्लानपिल्लान्कुरुते बहुवर्षोत्थितानपि।
तत्सेकेनोपदेहाश्रुकण्डूशोथांश्च नाशयेत्॥२३२॥
याप्यः पक्ष्मोपरोधस्तु रोमोद्धरणलेखनैः।
वर्त्मन्युपचितं लेख्यं स्राव्यमुत्क्लिष्टशोणितम्२३३
प्रवृद्धान्तर्मुखं रोम सहिष्णोरुद्धरेच्छनैः।
सन्दंशेनोद्धरेद्दृष्ट्यां पक्ष्मरोमाणि बुद्धिमान् २३४
रक्षन्नक्षि दहेत्पक्ष्म तप्तहेमशलाकया।
पक्ष्मरोगे पुनर्नैवं कदाचिद्रोमसंभवः ॥ २३५ ॥

उत्सङ्गिनी बहुलकर्दमवर्त्मनी च
श्यावं च यच्च पटितं त्विह बद्धवर्त्म।
क्लिष्टं च पोथकियुतं त्विह वर्त्म यच्च
कुम्भीकिनी च सह शर्करयावलेख्याः २३६
श्लेष्मोपनाहनगणौ च बिसं च भेद्यो
ग्रन्थिश्च यः क्रिमिकृतोऽञ्जननामिका च२३७

(४२ तुत्थकांजनादि) नीलाथोथा चार तोले सफेद मिरच ८० तोले इन्होंकों १२० तोले कांजीमें मिलाय तांबाके पात्रमें घालके खरल करै। यह अंजन बहुत वर्षोंसें उत्पन्न हुए पिल्वरोगोंकों दूर करताहै। अथवा इन औषधोंसें सेक करे तो उपदेह आंशु कंडू शोजा ये दूर होवें। जो पलक कटनेका रोग याप्य अर्थात् कष्टसाध्य हो रहाहो तो रोमोंका उद्धार कर लेखनकर्म करै औ नेत्रके कोइयेमें संचित हुए रुधिरकों निकला डालै। बढी-हुई नेत्रकी पलककों नेत्रमें प्रवेश हुईकों बुद्धिमान वैद्य धीरजवाले रोगीके नेत्रोंमांहसें चिमटासरीखे संदंशयंत्रकरके शनै शनै निकासै। अथवा नेत्रकी रक्षा करता हुआ वैद्यजन तपाईहुई सुवर्णकी सलाईसें पलकोंकों दग्ध करदेवै। ऐसे करनेसें रोमोंकी वृद्धि नहीं होतीहै। उत्संगिनी अर्थात् खाजिवाली ग्रंथि तथा बहुतसी कींचवाली कर्दमवर्त्मनी श्यावरोग बद्धवर्त्म क्लिष्ट पोथिकी ग्रंथि कुंभिकिनी

ग्रंथि शर्करा इन नेत्रकी गूंमडियोंका लेखनकर्म करै अर्थात् खिणनेका कर्म करै और कफसें उपजा उपनाह बिसनामक ग्रंथि क्रिमिग्रंथि अंजननामिका इनकोंभी खिणके औषध भरै ।

(४३)घृतसैन्धवचूर्णेन कफानाहं पुनः पुनः ।
विलिखेन्मण्डलाग्रेण प्रच्छयेद्वा समन्ततः॥२३८
पटोलामलकक्वाथैराश्च्योतनविधिर्हितः ।
फणिज्जकरसोनस्य रसैः पोथकिनाशनः ॥२३९॥
आनाहपिडकां स्विन्नां तिर्यग्भित्त्वाग्निना दहेत्।
अर्शस्तथा वर्त्म नाम्ना शुष्कार्शोऽर्बुदमेव च२४०
मण्डलाग्रेण तीक्ष्णेन मूले छिन्द्याद्भिषक् शनैः ।
सिन्धूत्थपिप्पलीकुष्ठपर्णिनीत्रिफलारसैः ॥२४१॥
सुरामण्डेन वर्तिः स्याच्छ्लेष्माभिष्यन्दनाशिनी ।
पोथकीवर्त्मोपरोधक्रिमिग्रन्थिकतूणके ॥ २४२ ॥

इति नेत्ररोगचिकित्सा ।

(४३ वर्त्मजेषु घृताद्याश्च्योतनविधिः) नेत्रके कफानाहरोगकों खिणके तहां घृतसें युक्त कियेहुए सेंधानमकके चूर्णकों भरदेवै। और परवल आंवला इन्होंके क्वाथसें अथवा राब लहसन इनके रससें आश्च्योतनविधि करनेसें पोथिकी ग्रंथि दूर हो । आनाहकी गूंमडीकों पसीना दिवाय तिरछी भेदन कर अग्निसें दग्ध करदेवै और नेत्रके वर्त्मार्श शुष्कार्श अर्बुद इन रोगोंकों वैद्यजन मूलसें छेदन कर पीछे सेंधानमक पीपली कूट पिठवण इन औषधोंकों त्रिफलाके रसमें भिगोय फिर मदिराके मंडमें बत्ती बनाय आंखिमें घाले । इस बत्तीसें नेत्रका अभिष्यंद दूर होवे और पोथकी ग्रंथि वर्त्मोपरोध क्रिमियोंकी ग्रंथि तूणक ये सब रोग दूर होवे ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां नेत्ररोगचिकित्सा ।

अथ शिरोरोगाधिकारः ५९

अब शिरोरोगाधिकारकों कहतेहै ।

(१)वातिके शिरसो रोगे स्नेहस्वेदान्सनावनान्।
पानान्नमुपहारांश्च कुर्याद्वातामयापहान् ॥ १ ॥
कुष्ठमेरण्डतैलं च लेपात्काञ्जिकपेषितम् ।
शिरोर्तिं नाशयत्याशु पुष्पं वा मुचुकुन्दजम् ॥२॥
पञ्चमूलीशृतं क्षीरं नस्ये दद्याच्छिरोगदे ।
आशिरोव्यायतं चर्म कृत्वाष्टाङ्गुलमुच्छ्रितम् ॥३॥
तेनावेष्ट्य शिरोऽधस्तान्माषकल्केन लेपयेत् ।
निश्चलस्योपविष्टस्य तैलैरुष्णैः प्रपूरयेत् ॥ ४ ॥
धारयेदारुजःशान्तेर्यामं यामार्धमेव वा ।
शिरोबस्तिर्जयत्येष शिरोरोगं मरुद्भवम् ॥ ५ ॥
हनुमन्याक्षिकर्णार्तिमर्दितं मूर्धकम्पनम् ।
तैलेनापूर्य मूर्धानं पञ्चमात्राशतानि च ॥ ६ ॥
तिष्ठेच्छ्लेष्मणि पित्तेऽष्टौ दशवाते शिरोगदी ।
एक एव विधिः कार्यस्तथा कर्णाक्षिपूरणे ॥ ७ ॥

(१ वातिके शिरोरोगे) वातसें उत्पन्न हुए शिरके रोगमें स्नेह और स्वेद करवावै नस्य दिवावै और वातकों दूर करनेवाले भोजनकों और पानको करवावै। कूट अरंडका तेल कांजी इन सबोंकों पीस शिरकै लेप करनेसें शिरकी पीडा दूर होवे। अथवा मुचकुन्द वृक्षके पुष्पका लेप करनेसें शिरका दर्द दूर हो। पंचमूलमें दूधका क्वाथ बनाये नस्य देनेसें शिरका रोग दूर हो शिरके सब तर्फ आजावे ऐसे चर्मकों चार अंगूल ऊंची बांधदेवै और तिसके नीचे उडदोंके कल्कका लेप करदेवै । फिर उस रोगीपुरुषकों निश्चल स्वस्थ होके बिठादेवै फिर उस चर्ममें गरम गरम तेल भरदेवै । रोगीकी पीडा दूर हो तबतक एक पहर अथवा दो पहरतक धारण रक्खै तो यह शिरकी बस्ति वातसें उत्पन्न हुई शिरकी पीडाकों दूर करतीहै। ठोडीका रोग आंखि कानइन्होंकी पीडा मस्तकका कांपना इन रोगोंकों शांतिके वास्तै पानसै ५०० मात्रातक इसीतरह तेलसें मस्तककों पूरण रक्खै । यह पानसौ मात्रा कफसें उत्पन्न हुए रोगमें है पित्तमें आठसौ और वातसें उपजे शिरके रोगमें एक हजार मात्रापर्यंत शिरपैं तेलकों धारण रक्खै । यही विधि कान आंखि नासिका इन्होंके रोगमेंभी पूरनेकी है ।

(२)पैत्ते घृतं पयःसेकाः शीतलेपाः सनावनाः ।
जीवनीयानि सर्पींषि पानान्नं चापि पित्तनुत्॥८॥
पित्तात्मके शिरोरोगे स्निग्धं सम्यग्विरेचयेत् ।
मृद्वीकात्रिफलेक्षूणां रसैः क्षीरैर्घृतैरपि ॥ ९ ॥
शतधौतघृताभ्यङ्गः शीतवातादिसेवनम् ।
शीतस्पर्शाश्च संसेव्याः सदा दाहार्तिशान्तये१०
चन्दनोशीरयष्ट्याह्वबलाव्याघ्रीनखोत्पलैः ।
क्षीरपिष्टैः प्रदेहः स्याच्छृतैर्वा परिषेचनम् ॥११॥
मृणालबिसशालूकचन्दनोत्पलकेशरैः ।
स्निग्धशीतैः शिरो दिह्यात्तद्वदामलकोत्पलैः ॥१२

यष्ट्याह्वचन्दनानन्ताक्षीरसिद्धं घृतं हितम् ।
नावनं शर्कराद्राक्षामधुकैर्वापि पित्तजे ॥ १३ ॥
त्वक्पत्रशर्करापिष्टा नावनं तण्डुलाम्बुना ।
क्षीरसर्पिर्हितं नस्यं रसा वा जाङ्गलाः शुभाः॥१४
रक्तजे पित्तवत्सर्वं भोजनालेपसेचनम् ।
शीतोष्णयोश्च व्यत्यासो विशेषो रक्तमोक्षणम्१५

(२ पैत्तिके शिरोरोगे) पित्तसें उपजे शिरोरोगमें घृत और दूधका सेक करै शीतललेप और नस्य करवावै और जीवनीयगणऔषधोंसें सिद्ध कियेहुए अन्नपानका सेवन करै। पित्तसें उपजे शिरोरोगमें चिकनी औषध मुनक्का दाख त्रिफला ईखका रस इन्होंसें विरेक जुलाब दिवाना हित है शिरकी दाहकी शांतिके वास्तै सौवार धोयेहुए घृतकी मालिस करै । और शीतल वायु आदि तथा शीतल स्पर्शोंका सेवन करै। चंदन खश मुलहटी खरैंहटी कटेहली नखला कमल इन्होंकों दूधमें पीस लेप करै अथवा इन औषधोंका दूधमें क्काथ बनाय परिषेक करना हित है । कमलकी नाली कमलकंद जायफल चंदन कमलकेशर इन्होंकों घृतमें पकाय शीतल कर लेप करना हित है । अथवा आंवला कमल मुलहटी चंदन गिलोय इन्होंकों दूधमें पकाय तिसमें घृतकों पकावे । इस घृतकी नस्य देनेसें अथवा खांड दाख मुलहटी इन्होंके क्काथकी नस्य देनेसें पित्तसें उपजा शिरका दर्द दूर होवे । तेजपात खांड इन्होंकों चावलोंके पानीमें पीस नस्य देवै अथवा दूध और घृतकी नस्य देना हित है और जांगल देशके जीवोंके रसभी हित हैं । रक्तसें उत्पन्न हुए शिरके रोगमें संपूर्ण भोजन लेप सेक आदि क्रिया पित्तके विधानकी तरह करै और शीतलता वा गरमाईकी विपर्ययता न होने देवै और विशेषकरिकै रुधिर निकला डालै ।

(३)कफजे लङ्घनं स्वेदो रूक्षोष्णैः पाचनात्मकैः।
तीक्ष्णावपीडा धूमाश्च तीक्ष्णाश्च कवला हिताः१६
अच्छं च पाययेत्सर्पिः पुराणं स्वेदयेत्ततः ।
मधूकसारेण शिरः स्विन्नं चास्य विरेचयेत्॥१७॥
कृष्णाब्दशुण्ठीमधुकशताह्वोत्पलपाकलैः ।
जलपिष्टैः शिरोलेपः सद्यः शूलनिवारणः ॥१८॥
देवदारु नतं कुष्टं नलदं विश्वभेषजम् ।
लेपः काञ्जिकसंपिष्टस्तैलयुक्तः शिरोऽर्तिनुत्॥१९

सन्निपातभवे कार्या दोषत्रयहरी क्रिया ।
सर्पिःपानं विशेषेण पुराणं त्वादिशन्ति हि ॥२०॥
त्रिकटुकपुष्कररजनी
रास्नासुरदारुतुरगगन्धानाम् ।
क्काथः शिरोऽर्तिजालं
नासापीतो निवारयति ॥ २१ ॥
नागरकल्कमिश्रं क्षीरं नस्येन योजितं पुंसाम् ।
नानादोषोद्भूतां शिरोरुजं हन्ति तीव्रतराम्॥२२॥
नतोत्पलं चन्दनकुष्ठयुक्तं
शिरोरुजायां सघृतः प्रदेहः ।
प्रपौण्डरीकं सुरदारु कुष्टं
यष्ट्याह्वमेलाकमलोत्पले च ।
शिरोरुजायां सघृतः प्रदेहो
लोहैरकापद्मकचोरकैश्च ॥ २३ ॥

(३ कफजे) कफसें उत्पन्न हुए शिरके रोगमें लंघन करवावै । और रूखे वा गरम तथा पाचनात्मक पदार्थोंसें पसीना दिवावै । तीक्ष्ण अवपीड तीक्ष्ण धूम तीक्ष्ण कवलधारण ये विधि करनी । स्वच्छ पुराना घृतकों पिलावे फिर पसीना दिवाय फिर मुलहटीके सतसें नस्य दिवावै । पीपली नागरमोथा सूंठ मुलहटी शतावरी कमल कूट इन्होंकों जलमें पीस शिरकै लेप करै तो शीघ्रही शिरका दर्द दूर होवे । देवदारु तगर कूट नेत्रवाला सूंठ इन्होंकों कांजीमें पीस तेल मिलाय शिरकै लेप करै तो शिरकी शूल दूर होवे । और सन्निपातसें उत्पन्न हुए शिरके दर्दमें त्रिदोषकों दूर करनेवाली क्रिया करनी चाहिये और विशेषतासें पुराने घृतका पीना हित कहाहै । त्रिकटु अर्थात् सूंठ मिरच पीपल कमल हलदी रास्ना देवदारु आसगंध इन्होंका क्काथ बनाय नासिकाके द्वारा पीवे तो शिरका दर्द दूर होवे । सूंठका कल्कमें दूध मिलाय नस्य देवे तो मनुष्योंका अनेक दोषोंसें उत्पन्न हुआ शिरका दर्द दूर होवे । तगर कमल चंदन कूठ इन्होंकों पीस घृत मिलाय लेप करनेसें शिरका दर्द दूर होवे। और कमल देवदारु कूट मुलहठी इलायची कमल इन्होंका कल्क बनाय तिसमें घृत मिलाय अथवा लोहाकी रज पटेरा कमल गठोना इन्होंके कल्कमें घृत मिलाय लेप करनेसें शिरका दर्द दूर होवे ।

(४)शताह्वैरण्डमूलं च ग्रावव्याघ्रीफलैः शृतम् ।
तैलं नस्यं मरुच्छ्लेष्मतिमिरोर्ध्वगदापहम् ॥ २४ ॥

(४ शताह्वाद्यं तैलम्) शतावरी अरंडकी जड तगर कटेहलीके फल इन्होंमें पकायेहुए तेलकी नस्य देनेसें कफसें उत्पन्न हुआ शिरका दर्द दूर होताहै ।

(५)जीवकर्षभकौ द्राक्षासितायष्टीबलोत्पलैः।
तैलं नस्यं पयःपक्वं वातपित्तशिरोगदे ॥ २५ ॥

(५ जीवकाद्यं तैलम्) जीवक ऋषभक दाख मिसरी मुलहटी खरैंहटी कमल दूध इन्होंमें पकायेहुए तेलकी नस्य देनेसें वातपित्तसें उत्पन्न हुआ शिरका दर्द दूर होताहै ।

(६)जीवकर्षभकौ द्राक्षा मधूकं मधुकं बला ।
नीलोत्पलं चन्दनं च विदारी शर्करा तथा ॥२६॥
तैलप्रस्थं पचेदेभिः शनैः पयसि षड्गुणे ।
जाङ्गलस्य तु मांसस्य तुलार्धस्य रसेन तु ॥ २७ ॥
सिद्धमेतद्भवेन्नस्यं तैलमर्धावभेदकम् ।
बाधिर्यं कर्णशूलं च तिमिरं गलशुण्डिकाम्॥२८॥
वातिकं पैत्तिकं चैव शीर्षरोगं नियच्छति ।
दन्तचालं शिरःशूलमर्दितं चापकर्षति ॥ २९ ॥

(६ बृहज्जीवकाद्यं तैलम्) जीवक ऋषभक दाख महुआवृक्षकी छाल मुलहटी खरैंहटी नीलाकमल चंदन विदारीकंद खांड । इन्होंमें चौसठ ६४ तोले तेलकों पकावे । इसमें तेलसें छहगुना दूध और दोसौ २०० तोले जांगलदेशके जीवोंके मांसका रस मिलाके पकावे । पीछे सिद्धहुए इस तेलकी नस्य देनेसें अधशिरा बाधिर्य कर्णशूल तिमिर गलशुंडिका । वातसें तथा पित्तसें उत्पन्न हुआ शिरका दर्द दांतोंका हिलना शिरकी शूल ये सब रोग दूर होतेहैं ।

(७)एरण्डमूलं तगरं शताह्वा
जीवन्ति रास्ना सहसैन्धवं च ।
भृङ्गं विडङ्गं मधुयष्टिका च
विश्वौषधं कृष्णतिलस्य तैलम् ॥ ३० ॥
आजं पयस्तैलविमिश्रितं च
चतुर्गुणे भृङ्गरसे विपक्कम् ।
षड्बिन्दवो नासिकया विधेयाः
शीघ्रं निहन्युः शिरसो विकारान् ॥३१॥
च्युतांश्च केशांश्चलितांश्च दन्तान्
दुर्बद्धमूलांश्च दृढीकरोति ।
सुपर्णदृष्टिप्रतिमं च चक्षु-
र्बाह्वोर्बलं चाभ्यधिकं ददाति ॥ ३२ ॥

क्षयजे क्षयमासाद्यं कर्तव्यो बृंहणो विधिः ।
पाने नस्ये च सर्पिः स्याद्वातघ्नैर्मधुरैः शृतम्॥३३
क्रिमिजे व्योषनक्ताह्वशिग्रुबीजैश्च नावनम् ।
अजामूत्रयुतं नस्यं क्रिमिजे क्रिमिजित्परम्॥३४॥

(७ षड्बिन्दुतैलम्) अरंडकी जड तगर शतावरी जीवंती रास्ना सेंधानमक भंगरा वायविडंग मुलहटी सूंठ इन औषधोंके कल्कमें काले तिलोंका तेल । और बकरीका दूध मिलाय तेलसें चौगुना भंगराका रस मिलाय पीछे इस तेलकों पकावे। फिर इस तेलकी छह बूंद नस्यमें देवे तो शीघ्रही शिरके संपूर्ण विकार दूर होवे । और उडेहुए वाल हिलतेहुऐ दांत इन सबोंकों दृढकर देताहै गरुडके समान उत्तम दृष्टि हो जातीहै और भुजाओंमें बलकी वृद्धि होतीहै। क्षयोंसें उत्पन्न हुए शिरके दर्दमें वीर्यकों बढानेवाली विधि करनी । वातनाशक मधुर औषधोंमें सिद्ध कियेहुए घृतकों पिलावै और नस्य देवै । क्रिमियोंसें उत्पन्न हुए शिरके दर्दमें सूंठ मिरच पीपल सहोंजनाके बीज इन्होंकों बकरीके मूत्रमें पीस नस्य देना हित है ।

(८)अपामार्गफलव्योषनिशाक्षारकरामठैः ।
सविडङ्गं शृतं मूत्रे तैलं नस्यं क्रिमिं जयेत्॥३५॥
नागरं सगुडं विश्वं पिप्पली वा ससैन्धवा ।
भुजस्तम्भादिरोगेषु सर्वेषूर्ध्वगदेषु च ॥ ३६ ॥
सूर्यावर्ते विधातव्यं नस्यकर्मादि भेषजम् ।
पाययेत्सगुडं सर्पिर्घृतपूरांश्च भक्षयेत् ॥ ३७ ॥
सूर्यावर्ते शिरोवेधो नावनं क्षीरसर्पिषा ।
हितः क्षीरघृताभ्यासस्ताभ्यां चैव विरेचनम् ।
क्षीरपिष्टैस्तिलैः स्वेदो जीवनीयैश्च शस्यते॥३८॥

सशर्करं कुङ्कुममाज्यभृष्टं
नस्यं विधेयं पवनासृगुत्थे ।
भ्रूशङ्खकर्णाक्षिशिरोर्धशूले
दिनाभिवृद्धिप्रभवे च रोगे ॥ ३९ ॥
कृतमालपल्लवरसे
खरमञ्जरिकल्कसिद्धनवनीतम् ।
नस्येन जयति नियतं
सूर्यावर्तं सुदुर्वारम् ॥ ४० ॥

(८ अथापामार्गतैलम्) ऊंगा त्रिफला सूंठ मिरच पीपल हलदी जवाखार हींग वायविडंग इन्होंकों गोमूत्रमें पकाय तिसमें तेलकों पकावे फिर इसकी नस्य देनेसें क्रिमियोंका नाश होताहै । नागरमोथा गुड सूंठ पीपली सेंधानमक इन्होंके कल्ककी नस्य देनेसें भुजस्तंभरोग और संपूर्ण शिरके रोग दूर होतेहैं । सूर्यावर्त अर्थात् सूर्य बढनेके साथ दिनमें जो विशेष पीडा होतीहै ऐसे शिरके दर्दमेंभी यही नस्य देवै और गुडसहित घृतकों पिलावै वेवरोंका भोजन करवावै । इस सूर्यावर्तमें नसकों विंधवावै और दूध तथा घृतकी नस्य दिवावै दूध और घृतकों हिलाके जुलाब दिवावै । अथवा तिलोंकों दूधमें पीस तिसका लेप कराके पसीना दिवावै वा जीवनीयगणऔषधोंकों पीस तिसका लेप करना हित है । केशरकों घृतमें भून खांड मिलाय तिसकी नस्य देनेसें वात और रक्तसें उत्पन्न हुआ शिरका दर्द दूर होवे और भृकुटि कनपटी कान आंखि अधशिरा दिनके बढनेके अनुसार शिरमें दर्द होना इन सब रोगोंमेंभी इसका नस्य देना हित है । करंजुवाके पत्तोंके रसमें ऊंगाका कल्क मिलाय तिसमें नौंनीघृतकों पकाय तिसकी नस्य देवै तो दारुण सूर्यावर्त शिरका रोग दूर होवे ।

(९)दशमूलीकषायं तु सर्पिःसैन्धवसंयुतम् ।
नस्यमर्धावभेदघ्नं सूर्यावर्तशिरोऽर्तिनुत् ॥ ४१ ॥
शिरीषमूलकफलैरवपीडं च योजयेत् ।
अवपीडो हितो वा स्याद्वचापिप्पलीभिः श्टतः४२
जाङ्गलानि च मांसानि कारयेदुपनाहनम् ।
तेनास्य शाम्यति व्याधिः सूर्यावर्तः सुदारुणः ।
एष एव विधिः कृत्स्नः कार्यश्चार्धावभेदके॥४३॥
शारिवोत्पलकुष्ठानि मधुकं चाम्लपेषितम् ।
सर्पिस्तैलयुतो लेपः सूर्यावर्तार्धभेदयोः ॥४४॥
पिबेत्सशर्करं क्षीरं नीरं वा नारिकेलजम् ।
सुशीतं वापि पानीयं सर्पिर्वा नस्ततस्तयोः॥४५॥
अनन्तवाते कर्तव्यः सूर्यावर्तहितो विधिः ।
शिरावेधश्च कर्तव्योऽनन्तवातप्रशान्तये ॥ ४६ ॥
आहारश्च विधातव्यो वातपित्तविनाशनः ।
मधुमस्तुकसंयावहविःपूरैश्च यः क्रमः ॥ ४७ ॥
सूर्यावर्ते हितं यत्तच्छङ्खके स्वेदवर्जितम् ।
क्षीरसर्पिः प्रशंसन्ति नस्तपानं च शङ्खके ॥४८॥
शतावरीं कृष्णतिलान्मधुकं नीलमुत्पलम् ।
मूर्वां पुनर्नवां चापि लेपं साध्ववतारयेत् ॥४९॥
शीततोयावसेकांश्च क्षीरसेकांश्च शीतलान् ।
कल्कैश्च क्षीरिवृक्षाणां शङ्खकस्य प्रलेपनम्॥५०॥
क्रौञ्चकादम्बहंसानां शरार्याः कच्छपस्य च ।
रसैः संविहितस्याथ तस्य शङ्खकसन्धिजाः॥५१॥
ऊर्ध्वं तिस्रः शिराः प्राज्ञो भिन्द्यादेव न ताडयेत्
शिरःकम्पेऽमृतारास्नाबलास्नेहसुगन्धिभिः॥५२॥
स्नेहस्वेदादि वातघ्नं शिरोबस्तिश्च शस्यते ।

(९ दशमूलक्काथघृतादि) दशमूलके क्काथमें सेंधानमक और घृत मिलाय तिसकी नस्य देनेसें मस्तकका भडकना सूर्यावर्त येसब शिरकेरोग दूर होतेहैं। शिरसकी जड और फालोंसें अवपीडन कर्म करना योग्य है अथवा वच पीपली इन्होंमें सिद्ध कियेहुए क्काथसें अवपीडन कर्म करना योग्य है । जांगलदेशके जीवोंके मांससें उपनाहसंज्ञक पसीना दिवाना तिससें दारुण सूर्यावर्तरोग दूर होताहै और यही विधि अर्धावभेदक अर्थात् अधशिरा शिरदर्दमें करनी योग्य है । खांडसहित दूधकों पीवे अथवा नारियलके जलकों खांडसें युक्त कर पीवे अथवा शीतल जल वा घृतकी नस्य देनेसें अनंतवात शिरका दर्द दूर होवे यह विधि सूर्यावर्तरोगमेंभी अच्छी है और अनंतवातकी शांतिके वास्तै नसका विंधवाना हित है । और वातपित्तकों नष्ट करनेवाले आहार करने योग्य है । शहद मोहनभोग घेवर इत्यादिक भोजन करने योग्य है । सूर्यावर्तमें जो विधि कही है वही कनपटीके भरकनेमें करनी चाहिये परंतु पसीना नहीं देवै और दूधका पीना वा नस्य देना श्रेष्ठ कहाहै । शतावरी कालेतिल मुलहटी नीलाकमल मूर्वा सांठी इन्होंका लेप करना हित है । शीतल जलोंका अवसेच करना अथवा शीतल दूधका अवसेच करना योग्य है और दूधवाले वृक्षोंकी छालके कल्कोंका लेप करनेसें कनपटीका दर्द दूर होताहै। और कनपटीकी संधीकी दर्दवालोंकों कूंजिकादंब राजहंस शराटीनामवाला पक्षी कछुवा इन्होंके मांसके रसका सेवन करना योग्य है । और उत्तम वैद्य ऊपरकी तीन नसौंकों विंधवा देवै परंतु वहां कछु ताडना न करै । शिरःकंपरोग अर्थात् शिरके कांपनेमें गिलोय रास्ना खरैंहटी स्नेह अर्थात् घृत तेलआदि वातनाशक औषध इन्होंकरके शिरोबस्ति धारण करवाना योग्य है ।

(१०)यष्टीमधुवलारास्नादशमूलाम्बुसाधितम् ।
मधुरैश्च घृतं सिद्धमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ॥ ५३ ॥

(१० यष्ट्याद्यं घृतम्) मुलहटी खरैंहटी रास्ना इन्होंके कल्ककों दशमूलके क्वाथकों पकावे तिसमें घृतकों पकावे। यह मधुर औषधोंमें सिद्ध कियाहुआ घृत ऊर्ध्वजत्रु अर्थात् जोतोंके ऊपरके रोगोंकों दूर करताहै।

(११)दशमूलवलारास्नामधुकैस्त्रिपलैः सह ।
मयूरं पक्षपित्तान्त्रशकृत्पादास्यवर्जितम् ॥ ५४ ॥
जले पक्त्वा घृतप्रस्थं तस्मिन्क्षीरसमं पचेत् ।
मधुरैः कार्षिकैः कल्कैः शिरोरोगार्दितापहम् ५५
कर्णनासाक्षिजिह्वास्यगलरोगविनाशनम् ।
मयूराद्यमिदं ख्यातमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ॥ ५६ ॥
आखुभिः कुक्कुटैर्हंसैः शशैश्चापि हि बुद्धिमान् ।
कल्केनानेन विपचेत्सर्पिरूर्ध्वगदापहम् ॥ ५७ ॥
दशमूलादिना तुल्यो मयूर इह गृह्यते ।
अन्ये त्वाकृतिमानेन मयूरग्रहणं विदुः ॥ ५८ ॥

(११ मयूराद्यं घृतम्) दशमूल खरैंहटी मुलहटी इन्होंकों बारहबारह तोले प्रमाण लेवेऔर पांख पित्ता आंत विष्ठास्थान पैर मुख इन्होंसें रहित मयूरकों ग्रहण कर तिसकों और पिछली कही औषधोंकों जलमें पकावे। फिर उसी जलमें चौसठ तोले घृतकों और चौसठ तोले दूधकों पकावे। फिर इसमें एक एक तोला प्रमाण मधुर औषधोंका कल्क मिलावे। यह घृत मालिस करनेसें संपूर्ण शिरके रोगोंकों दूर करता है। और कान नासिका आंखि जिव्हा मुख गल इनके रोगोंकों दूर करता है। यह मयूराद्य घृत ऊर्ध्वजत्रु अर्थात् कंधाके ऊपरके रोगोंकों दूर करनेके वास्ते प्रसिद्ध है। और बुद्धिमान् वैद्य इनही औषधोंसें मूसे मुरगे हंस शूशा इन्होंके कल्कमें इनही औषधोंसें घृतकों पका लेवे। यहां मोरके मांसकों दशमूल आदि औषधोंके समान भाग लेवै। कई वैद्योंका ऐसा मत है जितना बाकी रहा मयूरका शरीर है उतनाही लेना योग्य है।

(१२)प्रपौण्डरीकमधुकपिप्पलीचन्दनोत्पलैः ।
सिद्धं धात्रीरसे तैलं नस्येनाभ्यञ्जनेन वा ।
सर्वानूर्ध्वगदान्हन्ति पलितानि च शीलितम् ५९

(१२ प्रपौंडरीकाद्यं तैलम्) सहस्रदलवाला कमल मुलहटी पीपली चंदन कमल आंवलाका रस इन्होंमें सिद्ध किये हुये तेलकी नस्य देनेसें अथवा मालिस करनेसें कंधेके ऊपरके संपूर्ण रोग दूर होते हैं और पलित अर्थात् शिरके सफेद वाल काले होजाते हैं।

(१३)शतं मयूरमांसस्य दशमूलवलातुलाम् ।
द्रोणेऽम्भसः पचेत्क्षुण्वा तस्मिन्पादस्थिते ततः ॥
निषिच्य पयसो द्रोणं पचेत्तत्र घृताढकम् ।
प्रपौण्डरीकवर्गोक्तैर्जीवनीयैश्च भेषजैः ॥ ६१ ॥
मेधाबुद्धिस्मृतिकरमूर्ध्वजत्रुगदापहम् ।
मायूरमेतन्निर्दिष्टं सर्वानिलहरं परम् ॥ ६२ ॥
मन्याकर्णशिरोनेत्ररुजापस्मारनाशनम् ।
विषवातामयश्वासविषमज्वरकासनुत् ॥ ६३ ॥

इति शिरोरोगचिकित्सा ।

(१३ बृहन्मयूराद्यं घृतम्) मयूरका मांस चारसौ तोले दशमूल और खरैंहटी चारसौ तोले इन्होंका कल्क बनाय एकहजार चौवीस तोले जलमें क्वाथ बनावे। जब चतुर्थांश बाकी रहे तब एकहजार चौवीस तोले दूध मिलाय फिर पकावे और इसमें दोसौ छपन्न तोले घृतकों पकावे। फिर इसमें प्रपौंडरीकवर्गमें कही हुई और जीवनीयगणमें कही हुई औषधोंके कल्ककों मिलावे। यह घृत मेधा और बुद्धिकों वढाता है। कंधेके ऊपरके सब रोगोंकों दूर करता है। यह घृत वातसें उत्पन्न हुए संपूर्ण रोगोंकों दूर करनेके वास्ते अति उत्तम कहा है। ठोडी कान शिर नेत्र इन्होंकी पीडा मृगीरोग विषरोग वातरोग श्वास विषमज्वर खांसी इन सब रोगोंकों दूर करता है।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां शिरोरोगचिकित्सा।

अथासृग्दराधिकारः ६०

अब प्रदररोगकी चिकित्सा कहतेहै।

(१)दध्ना सौवर्चलाजाजी मधुकं नीलमुत्पलम् ।
पिबेत्क्षौद्रयुतं नारी वातासृग्दरपीडिता ॥ १ ॥
पिबेदैणेयकं रक्तं शर्करामधुसंयुतम् ।
वासकस्वरसं पैत्ते गुडूच्या रसमेव वा ॥ २ ॥
रोहीतकान्मूलकल्कं पाण्डुरेऽसृग्दरे पिबेत् ।
जलेनामलकाद्बीजकल्कं वा ससितामधु ॥ ३ ॥
धातक्याश्चाक्षमात्रं वा आमलक्या मधुद्रवम् ।
काकजानुकमूलं वा मूलं कार्पासमेव वा ॥ ४ ॥

पाण्डुप्रदरशान्त्यर्थं पिबेत्तण्डुलवारिणा ।
अशोकवल्कलक्वाथशृतं दुग्धं सुशीतलम् ।
यथाबलं पिबेत्प्रातस्तीव्रासृग्दरनाशनम् ॥ ५ ॥
दार्वीरसाञ्जनवृषाब्दकिरातबिल्व-
भल्लातकैरवकृतो मधुना कषायः ।
पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं सशूलं
पीतासितारुणविलोहितनीलशुक्लम् ॥६॥
रसाञ्जनं तण्डुलीयस्य मूलं
क्षौद्रान्वितं तण्डुलतोयपीतम् ।
असृग्दरं सर्वभवं निहन्ति
श्वासं च भार्गी सह नागरेण ॥ ७ ॥

(१ असृग्दरे उपायाः) कालानमक जीरा मुलहटी नीलाकमल इन्होंकों दहीमें मिलाय तिसमें शहद डालके पीवे तो वातसें उत्पन्न हुआ स्त्रीका प्रदररोग दूर होवे। मृगके रुधिरमें शहद और खांड मिलाके पीवे अथवा वांसाका स्वरस वा गिलोयके स्वरसकों पीवे तो स्त्रीका प्रदररोग दूर होवे। रोहिडाकी जडका कल्ककों पांडुर अर्थात् कछुक थोडा लाल रुधिर वहता हो ऐसे प्रदररोगमें पीवे। अथवा आंवलोंके कल्ककों जलमें मिलाय मिसरी और शहद डालके पीना योग्य है। धायके पुष्प बहेडा आंवला इन्होंके स्वरसमें शहद डाल पीवे। अथवा मकोहकी जड वा कार्पासी अर्थात् वाडीकी जडकों चावलोंके जलके संग पीवे तो पांडु प्रदररोग दूर हो। और अशोकवृक्षकी छालकों दूधमें औटाय शीतल कर बलाबलके अनुसार स्त्री प्रातःकाल पीवे तो दारुण प्रदररोग दूर होवे। दारुहलदी रसौत वांसा नागरमोथा चिरायता वेलगिरी भिलावा करै इन्होंका क्वाथ बनाय तिसमें शहद मिलाय पीवे तो शूलसहित दारुण प्रदररोग दूर होवे। पीला काला लाल ज्यादै लाल नीला सफेद ऐसे सब प्रकारका प्रदर अर्थात् योनिसें गिरता हुआ रुधिर बंद होजाताहै।

(२)दशमूलं समुद्धृत्य पेषयेत्तण्डुलाम्बुना ।
एतत्पीत्वा त्र्यहान्नारी प्रदरात्परिमुच्यते ॥ ८ ॥
क्षौद्रयुक्तं फलरसं कोष्ठोदुम्बरजं पिबेत् ।
असृग्दरविनाशाय सशर्करपयोऽन्नभुक् ॥ ९ ॥
प्रदरं हन्ति बलाया मूलं दुग्धेन मधुयुतं पीतम्
कुशवाट्यालकमूलं तण्डुलसलिलेन रक्ताख्यम् ।
शमयति मदिरापानं तदुभयमपिरक्तसंज्ञशुक्लाख्यौ
गुडेन बदरीचूर्णं मोचमामं तथा पयः ।
पीता लाक्षा च सघृता पृथक्प्रदरनाशना ॥ १२
रक्तपित्तविधानेन प्रदरांश्चाप्युपाचरेत् ॥
असृग्दरे विशेषेण कुटजाष्टकमाचरेत् ॥ १३ ॥

(२ स्त्रियाःप्रदरे दशमूलांब्वादि) रसौत चौलाईकी जड इन्होंकों चावलोंके जलमें पीस शहद डाल पीवे तो सब प्रकारका प्रदररोग दूर होवे। और भारंगी सूंठ इन्होंके क्वाथमें शहद डाल पीवे तो प्रदरवाली स्त्रीका श्वास दूर होता है। दशमूलकों चावलोंके जलमें पीस तिस जलकों तीन दिनतक पीवे तो स्त्रीका प्रदररोग दूर हो। काली गूलरके फलके रसकों शहदसें युक्त कर पीवे और खांड तथा दूधके संग भोजन करे तो प्रदररोग दूर होवे। खरैंहटीकी जडकों दूधमें पीस तिसमें शहद मिलाय पीवे तो प्रदररोग शांत होवे। और कुशाकी अथवा खरैंहटीकी जडकों चावलोंके जलमें पीस पीवे तो लालवर्णका प्रदररोग दूर होवे। अथवा जो स्त्री मदिरा पीवे तो उसका सफेद वर्णका वा लाल वर्णका प्रदररोग दूर होवे। वेरोंके चूर्णमें गुड मिलाके दूधके संग पीवे अथवा मोचरसकों कच्चे दूधमें पीस पीवे तो प्रदररोग दूर होवे। लाखकों घृतसें युक्तकर पीवे तो प्रदररोग दूर होवे। और रक्तपित्तरोगमें कहे हुए विधानभी यहां करने योग्य हैं और इस प्रदररोगमें विशेष करिकै कुटजाष्टक पीछे कहा हुआ चूर्णका सेवन करै।

(३)पाठाजम्ब्वाम्रयोर्मध्यं शिलाभेदरसाञ्जनम् ।
अम्बष्ठकीमोचरसः समङ्गापद्मकेशरान् ॥ १४ ॥
वाह्लीकातिविषामुस्तं विल्वं लोध्रं सगैरिकम् ।
कट्फलं मरिचं शुण्ठीमृद्वीका रक्तचन्दनम् १५
कट्वङ्गवत्सकानन्ताधातकीमधुकार्जुनम् ।
पुष्येणोद्धृत्य तुल्यानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् १६
तानि क्षौद्रेण संयुज्य पाययेत्तण्डुलाम्बुना ।
असृग्दरातिसारेषु रक्तं यच्चोपवेश्यते ॥ १७ ॥
दोषागन्तुकृता ये च बालानां तांश्च नाशयेत् ।
योनिदोषं रजोदोषं श्वेतं नीलं सपीतकम् १८
स्त्रीणां श्यावारुणं यच्च तत्प्रसह्य निवर्तयेत् ।
चूर्णं पुष्यानुगं नाम हितमात्रेयपूजितम् ॥ १९

(३ पुष्यानुगं चूर्णम्) पाठा जामनकी गुठली आं-

बकी गुठली शिलाजीत रसौत अंबष्ठकी अर्थात् गुजरातमें पहाडीमूल नामसें प्रसिद्ध मोचरस मंजीठ कमलकेशर हींग अतीस नागरमोथा बेलपत्र लोध गेरू कायफल मिरच सूंठ मुनक्का दाख लालचंदन टेंटूवृक्ष और कूडाकी छाल गिलोय धायके फूल मुलहटी अर्जुनवृक्षकी छाल इन सबोंकों पुष्यनक्षत्रके दिन समान भाग ग्रहण कर बारीक चूर्ण बना लेवे। फिर चावलोंके धोवनके जलमें मिलाय शहद डालके पीवे तो स्त्रियोंका प्रदररोग शांत होवे और जो अतीसारमें रुधिर आवता हो वहभी दूर होता है। स्त्रियोंके जो वात आदि दोषोंसें प्रदर आदि रोग होवें तो सब दूर हो जाते हैं। और योनिदोष रजोदोष श्वेत नील पीला काला लाल ऐसे सब प्रकारके स्त्रियोंके प्रदररोग अर्थात् रुधिरगिरना बंद हो जाता है। यह पुष्यानुगनामवाला चूर्ण प्रदररोगमें हित है। आत्रेयजी मुनीनें कहा है।

(४)मुद्गमाषस्य निर्यूहे रास्नाचित्रकनागरैः।
सिद्धं सपिप्पलीबिल्वैः सर्पिः श्रेष्ठमसृग्दरे २०
कुमुदं पद्मकोशीरं गोधूमो रक्तशालयः।
मुद्गपर्णी पयस्या च काश्मरी मधुयष्टिका ॥ २१
बलातिबलयोर्मूलमुत्पलं तालमस्तकम्।
विदारी शतमूली च शालपर्णी सजीवका २२
फलंत्रिकस्यबीजानि प्रत्यग्रं कदलीफलम्।
एषामर्धपलान्भागान्गव्यं क्षीरं चतुर्गुणम् ॥ २३
पानीयं द्विगुणं दत्त्वा घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
प्रदरे रक्तपित्ते च रक्तगुल्मे हलीमके ॥ २४ ॥
बहुरूपं चयत्पित्तं कामलावातशोणिते।
अरोचके ज्वरे जीर्णे पाण्डुरोगे मदे भ्रमे ॥ २५
तरुणी चाल्पपुष्पा च या च गर्भं न विन्दति।
अहन्यहनि च स्त्रीणां भवति प्रीतिवर्धनम्।
शीतकल्याणकं नाम परमुक्तं रसायनम् ॥ २६

(४ मुद्गाद्यं घृतम्) मूंग और उडदोंके क्काथमें रास्ना चीता नागरमोथा पीपली बेलगिरी इन औषधोंसें सिद्ध कियाहुआ घृत प्रदररोगमें श्रेष्ठ कहा है। कुमोदनी कमल खश गेहूं लाल चावल मूंगपर्णी दूधी खंभारी मूलहटी खरैंहटी गंगेरन इन्होंकी जड कमल ताडका मस्तक विदारीकंद शतावरी सालपर्णी जीवक त्रिफलाके बीज नवीन केलाका फल इन सबोंकों दोदो तोलाप्रमाण लेवे और गौका दूध इन सब औषधोंसें चौगुना लेवे। औषधोंसें दूना पानी मिलावे पीछे इसका क्काथ बनाय तिसमें चौसठ तोले घृतकों पकावे। यह घृत प्रदररोग रक्तपित्त रक्तगुल्म हलीमक बहुत रूपवाला पित्त कामला वातरक्त अरुचि जीर्णज्वर पांडुरोग मदभ्रम इन रोगोंमें हित कहा है। और जो स्त्री रजस्वला नहीं होती हो जिसके गर्भ नहीं ठहरता है उन स्त्रियोंकों यह घृत दिन २ प्रति प्रीतिकों बढानेवाला कहा है। यह शीतकल्याणकनामवाला घृत अति उत्तम रसायन कहाहै।

(५)शतावरीरसप्रस्थं क्षोदयित्वावपीडयेत्।
घृतप्रस्थसमायुक्तं क्षीरं द्विगुणितं भिषक् ॥ २७
अत्र कल्कानिमान्दद्यात्स्थूलोदुम्बरसंमितान्।
जीवनीयानि यान्यष्टौ यष्टिपद्मकचन्दने ॥ २८ ॥
श्वदंष्ट्रा चात्मगुप्ता च बला नागबला तथा।
शालपर्णी पृश्निपर्णी विदारी शारिवाद्वयम् २९
शर्करा च समा देया काश्मर्याश्च फलानि च।
सम्यक् सिद्धं तु विज्ञाय तद्धृतं चावतारयेत्३०
रक्तपित्तविकारेषु वातपित्तकृतेषु च।
वातरक्तं क्षयं श्वासं हिक्कां कासं च दुस्तरम् ॥
अङ्गदाहं शिरोदाहं रक्तपित्तसमुद्भवम्।
असृग्दरं सर्वभवं मूत्रकृच्छ्रं सुदारुणम्।
एतान्रोगाञ्शमयति भास्करस्तिमिरं यथा ॥३२॥

इत्यसृग्दरचिकित्सा।

(५ बृहच्छतावरी घृतम्) शतावरीकों कूट अवपीडनकर्म कर चौंसठ तोले रस निकाल तिसमें चौसठ तोले घृतकों पकावे। तिसमें घृतसें दूना दूधकों मिलावे। इस घृतमें इन आगे कही हुई औषधोंके कल्ककी बडे गूलरके फलके समान गोली बनाके मिलावे। जीवनीय आदि आठ गण औषध मुलहटी कमल चंदन गोखरू कौंच गंगेरन खरैंहटी सालपर्णी पिठवण विदारीकंद दोनों अनंतमूल इन औषधोंका कल्क बनाके मिलावे और इन सब औषधोंके समानभाग खांड मिलावे और खंभारीके फल मिलावे। ऐसे सब औषधोंकों मिलाय पीछे अच्छीतरह घृत पकजावे तब अग्निसें नीचे उतार लेवे। यह घृत रक्तपित्तके विकारोंमें और वातपित्तके विकारोंमें अति उत्तम कहा है और वातरक्त क्षयी श्वास हिचकी दारुण खांसी अंगदाह रक्तपित्तसें उत्पन्न हुई शिरकी दाह सब प्रकारका प्र-

दररोग दारुण मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगोंकों दूर करता है। जैसे सूर्य अंधेरेकों दूर कर देता है तैसे।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां प्रदररोगाधिकारः।

अथ योनिव्यापदधिकारः ६१

अब योनिव्यापदका अधिकार कहतेहै।

(१)योनिव्यापत्सु भूयिष्ठं शस्यते कर्म वातजित्।
बस्त्यभ्यङ्गपरिषेकप्रलेपाः पिचुधारणम् ॥ १ ॥
वचोपकुञ्चिकाजातीकृष्णावृषकसैन्धवम्।
अजमोदां यवक्षारं चित्रकं शर्करान्वितम् ॥ २ ॥
पिष्ट्वा प्रसन्नयालोड्य खादेत्तद्घृतभर्जितम्।
योनिपार्श्वार्तिहृद्रोगगुल्मार्शोविनिवृत्तये ॥ ३ ॥
गुडूचीत्रिफलादन्तीक्वाथैश्च परिषेचनम्।
नतवार्ताकिनीकुष्ठसैन्धवामरदारुभिः ॥ ४ ॥
तैलात्प्रसाधिताद्धार्यः पिचुर्योनौ रुजापहः।
पित्तलानां तु योनीनां सेकाभ्यङ्गपिचुक्रियाः ॥५॥
शीताः पित्तहराः कार्याः स्नेहनार्थं घृतानि च।
योन्यां बलासदुष्टायां सर्वरूक्षोष्णमौषधम् ॥ ६ ॥
पिप्पल्या मरिचैर्माषैः शताह्वाकुष्ठसैन्धवैः।
वर्तिस्तुल्या प्रदेशिन्या धार्या योनिविशोधनी ७
हिंस्राकल्कं तु वातार्ता कोष्णमभ्यज्य धारयेत्।
पञ्चवल्कस्य पित्तार्ता श्यामादीनां कफोत्तरा ८
मूषिकामांससंयुक्तं तैलमातपभावितम्।
अभ्यङ्गाद्धन्ति योन्यर्शः स्वेदस्तन्मांससैन्धवैः ॥९

(१ योनिरोगे उपायाः) योनिकी व्यापदोंविषै अतिशयसें वातकों जीतनेवाला कर्म बस्तिकर्म अभ्यंग परिषेक लेप पिचुधारण ये श्रेष्ठ हैं। वच कलोंजी जायफल पीपल वांसा सेंधानमक अजमोद जवाखार चीता खांड इन्होंकों प्रसन्न मदिरासें पीस और आलोडित कर घृतमें भून खावै। योनिरोग पसलीरोग हृद्रोग गुल्म बवासीर ये रोग दूर होते हैं। गिलोय त्रिफला जमालगोटाकी जड इन्होंके क्वाथोंसें परिसेक करै। अगर वार्ताकु कूट सेंधानमक देवदारु इन्होंकरकै सिद्ध किया तेलमें पिचु अर्थात् रुईका फोहा भिगोय योनिमें धारै तो पीडा नष्ट हो। पित्तवाली योनियोंकों सेक अभ्यंग पिचुक्रिया पित्तनाशक शीतल क्रिया करनी। और स्नेहनके अर्थ घृत चुपडना। कफसें दुष्ट हुई योनिमें संपूर्ण रूखी और गरम औषध करनी। पीपल मिरच उडद शौंफ कूट सेंधानमक इन्होंकी तर्जनी अंगुलीके समान बत्ती बनाय धारण करी योनिकों शोधती है। वातसें पीडित हुई स्त्री वालछडके कल्ककों कछुक गरम कर योनिकों चुपड धारण करै। पित्तसें पीडित हुई पंचवल्कलाके कल्ककों धारण करै और कफसें पीडित हुई स्यामादिके कल्ककों धारण करै। मूसीके मांससें संयुक्त किया और घाममें भावित किया तेलकी मालिससें और मूसीका मांस और सेंधानमककरकै पसीना देनेसें योनिका मस्सा नष्ट होताहै।

(२)गोपित्ते मत्स्यपित्ते वा क्षौमं त्रिःसप्तभावितम्
मधुना किण्वचूर्णं वा दद्यादचरणापहम् ॥१०॥
स्रोतसां शोधनं शोथकण्डूक्लेदहरं च तत् ॥
कामिन्याः पूतियोन्याश्च कर्तव्यः स्वेदनो विधिः
क्रमः कार्यस्ततः स्नेहपिचुभिस्तर्पणं भवेत्।
शल्लकीजिङ्गिनीजम्बुधवत्वक्पञ्चवल्कलैः ॥१२॥
कषायैः साधितः स्नेहः पिचुः स्याद्विप्लुतापहः।
कर्णिन्यां वर्तिका कुष्ठपिप्पल्यर्काग्रसैन्धवैः॥१३॥
बस्तमूत्रकृता धार्या सर्वं च श्लेष्मनुद्धितम्।
त्रैवृतं स्नेहनं स्वेद उदावर्तानिलार्तिषु।
तदेव च महायोन्यां स्रस्तायां तु विधीयते॥१४॥
आखोर्मांसं सपदि बहुधा खण्डखण्डीकृतं यत्
तैले पाच्यं द्रवति नियतं यावदेतन्न सम्यक्।
तत्तैलाक्तं वसनमनिशं योनिभागे दधाना
हन्ति व्रीडाकरभगफलं नात्र सन्देहबुद्धिः ॥१५

(२ गोरोचनादि चूर्णम्) गौके पित्तमें अथवा मछलीके पित्तमें इकीस २१ वार भावित किया रेसमी वस्त्र अथवा मदिरासें वन्वा द्रव्यका चूरण देवै तो अचरण नामक योनिरोग नष्ट होता है। स्रोतोंका शोधन होता है। सोजा खाज और ग्लानिकों नाशता है। वामिनी और पूतियोनिकों स्वेदनविधि करना उचित है। पीछे क्रमकरकै स्नेह पिचुवोंसें तर्पण होता है। शालई मदनमंजरी जामन धव इन्होंकी छाल और पंचवल्ककी छाल इन्होंके क्वाथोंसें साधित किया स्नेह पिचु विप्लुताकों नाशता है। कर्णिनीमें कूट पीपल आक सुंदर सेंधानमक बकराका मूत्र इन्होंकों मिलाय बनाई बत्ती धारण करनी और कफनाशक सब औषध हित है। निशोत स्नेहन स्वेद जो उदावर्त और वातपीडामें जो कहा है वही महायोनी और स्रस्तामें करना।

तात्काल मूसाका मांसके टूकडे बनाय तेलमें घाल पकावै। जबतक अच्छीतरह नहीं झिरै उस तेलमें वस्त्रकों भिगोय योनिभागमें धारण करनेवाली स्त्री लज्जाकारक योनिरोगकों नाशती है। इसमें संदेह नहीं।

(३)शतपुष्पातैललेपाद्बदरीदलजात्तथा।
पेटिकामूललेपाच्च योनिर्भिन्ना प्रशाम्यति॥ १६
सुषवीमूललेपेन प्रविष्टान्तर्बहिर्भवेत्।
योनिर्मूषरसाभ्यङ्गान्निःसृता प्रविशेदपि॥ १७॥
लोध्रतुम्बीफलालेपो योनिदार्ढ्यं करोति च।
वेतसमूलनिःक्वाथक्षालनेन तथैव च॥ १८॥
मूषिकावागुलिवसाम्रक्षणं योनिदार्ढ्यदम्।
वचानीलोत्पलं कुष्ठं मरिचानि तथैव च॥१९॥
अश्वगन्धा हरिद्रा च गाढीकरणमुत्तमम्॥२०॥
मदनफलमधुकर्पूरपूरितं भवति कामिनीजनस्य।
विगलितयौवनस्य च वराङ्गमतिगाढं सुकुमारम्

(३ शतपुष्पातैलादिलेपः) सोंफका तेलके लेपसें तथा वडवेरीके वक्कलका लेपसें तथा पेटीकी जडके लेपसें भिन्न हुई योनी शांत होती है। कलोंजीकी जडके लेप करकै भीतर प्रविष्ट हुई योनि बाहिर होती है। और मूसाके मांसका रसकी मालिससें निकसी हुई योनी भीतर प्रविष्ट होती है। लोध और तूंबीका लेप योनिकों दृढ करता है। और वेतकी जडका क्वाथसें धोनेकरके योनि दृढ होती है। मूसी और वागुलीकी वसासें चुपडना योनिकों दृढ करता है। वच नीला कमल कूट मिरच आसगंध और हलदी इन्होंका लेप योनिकों गाढी करता है। मैनफल शहद कपूर इन्होंसें पूरित करी योनी बूढीस्त्रीकीभी अत्यंत गाढी और सुंदर होजाती है।

(४)पञ्चपल्लवयष्ट्याह्वमालतीकुसुमैर्घृतम्।
रविपक्वमन्यथा वा योनिगन्धविनाशनम्॥ २२॥
इक्ष्वाकुबीजदन्तीचपलागुडमदनकिण्वयष्ट्याह्वैः।
सस्नुक्क्षीरैर्वर्तिर्योनिगता कुसुमसञ्जननी॥२३॥
सकाञ्जिकं जवापुष्पं भृष्टं ज्योतिष्मतीदलम्।
दूर्वापिष्टं च सम्प्राश्य वनिता त्वार्तवं लभेत् २४
धात्र्यञ्जनाभयाचूर्णं तोयपीतं रजो हरेत्।
शेलुच्छदमिश्रपिष्टं भक्षणं च तदर्थकृत्॥ २५॥
पुष्पोद्धृतं लक्ष्मणायाश्चक्राङ्गायास्तु कन्यया।
पिष्टं मूलं दुग्धघृतपीतमृतौ तु पुत्रदम्॥ २६॥
क्वाथेन हयगन्धायाः साधितं सघृतं पयः।
ऋतुस्नाता बाला पीत्वा गर्भं धत्ते न संशयः२७
पिप्पल्यः शृङ्गवेरं च मरिचं केशरं तथा।
घृतेन सह पातव्यं वन्ध्यापि लभते सुतम् २८

(४ पंचपल्लवादि घृतम्) पंचपल्लव मुलहटी मालतीके फूल इन्होंमें घृतकों घाममें पकावै अथवा अन्यतरह पकावै तो योनीका गंध नष्ट होता है। कडवी तूंबीके बीज जमालगोटाकी जड पीपल गुड मैनफल मदिरासें वचाद्रव्य मुलहटी थोहरका दूध इन्होंसें बनाई बत्ती योनिमें प्राप्त करी जावे तो स्त्रीके फूल अर्थात् मासिक धर्मकों उपजाती है। कांजीसहित जासवंदका फूल दूवसे पीसे हुए मालकांगनीके पत्तेकों खाकै स्त्री आर्तव अर्थात् फूलोंकों प्राप्त होती है। आंवला सुरमा हरडै इन्होंके चूर्णकों पानीसें पीवे अथवा भोंकरके पत्तेकों मिलाके खावै तो फूलोंका आना बंद होताहै। पुष्यनक्षत्रमें लक्ष्मणा और चक्रांगाकी जडकों कन्यासे पिसवाकै दूध और घृतमें मिलाय ऋतुकालमें पीवै तो पुत्र उत्पन्न होता है। आसगंधके क्वाथकरकै घृतसहित सिद्ध किया दूधकों ऋतुकालसें स्नान करनेवाली नारी पीवै तो गर्भकों धारण करै इसमें संशय नहीं। पीपल अदरख मिरच केशर इन्होंकों घृतके संग पीवै तो वंध्याभी पुत्रकों प्राप्त होतीहै।

(५)स्वर्णस्य रूप्यकस्य च
चूर्णं ताम्रस्य चाज्यसंमिश्रे।
पीते शुद्धे क्षेत्रे
भेषजयोगाद्भवेद्गर्भः॥ २९॥
कृत्वा शुद्धौ स्नानं
विलङ्घ्य दिवसान्तरे ततः प्रातः।
स्नात्वा द्विजाय भक्त्या
सम्पूज्य तथैव लोकनाथेशम्॥ ३०॥
श्वेतबलाङ्घ्रिकयष्टीं
कर्षं कर्षं पलं तु शर्करायाः।
पिष्ट्वैकवर्णजीवित
वत्साया गोस्तु दुग्धेन॥ ३१॥
समधिकघृतेन पीतं
नात्र दिने देयमन्नमन्यच्च।

क्षुधिते सदुग्धमन्नं
दद्यादापुरुषसन्निधेस्तस्याः ॥ ३२ ॥
समदिवसे शुभयोगे
दक्षिणपार्श्वावलम्बिनी धीरा ।
त्यक्तव्यन्तरसङ्ग-
प्रहृष्टमनसोऽतिवृद्धधातोश्च ।
पुरुषस्य सङ्गमात्रा-
ल्लभते पुत्रं ततो नियतम् ॥ ३३ ॥

(५ गर्भजननोपायाः) सोना चांदी और तांबाके चूरणमें घृत मिलाय पीवै तो शुद्ध योनिमें औषधके योगसें गर्भ प्राप्त होताहै । शुद्धिमें स्नान करै और दिनकों लंघित कर प्रातःकालमें ब्राह्मणकों दान देवे और महादेवकी पूजा करै । सुपेद खरैंहटीकी जड और मुलहटी एक २ तोलाभर ले और चार तोलेभर खांड मिलाय और पीस पीछे एकवर्णवाला और जिसका वच्छावच्छी जीवता हो उसके दूधके संग बहुतसा घृत मिलाय पीवै और इस दिनमें और अन्न नहीं दे और भूख लगनेमें दूधसहित अन्न देवे। पुरुषका संयोगपर्यंत समदिनमें और शुभ योगमें दहिनी पांशुसें सोतीहुई और धीरच्चित्तवाली स्त्रीसें भोगसमय अंतर नहीं रखनेवाला और प्रसन्नमनवाला और अत्यंत बढे हुये धातुवाला पुरुपके संगममात्रसें निश्चय पुत्रकों प्राप्त होतीहै।

(६)गोष्ठजातवटस्य प्रागुक्तशाखजे शुभे ।
माषौ द्वौ च तथा गौरसर्षपौ दधियोजितौ ।
पुष्यापीतौ द्रुतापन्नगर्भायाः पुत्रकारकौ ॥ ३४ ॥
कानकान्राजतान्वापि लौहान्पुरुषकानमून् ।
ध्मातान्निवर्णान्पयसो दध्नो वाप्युदकस्य वा ।
क्षिप्त्वाञ्जलौ पिबेत्पुष्ये गर्भे पुत्रत्वकारकान् ३५

(६ पुत्रजननोपायाः) गोशालामें उत्पन्न हुआ वडकी पूर्व और उत्तरकी शाखा लेकै दो उडद और दो सफेद सरसोंके दाने दहीमें मिलाय पुष्यनक्षत्रमें पीवै तो शीघ्र गर्भ धारण करनेवाली स्त्रीके पुत्र होताहै । सोनाके वा चांदीके वा लोहाके सूक्ष्म पुरुष बनाय अग्निमें तपाकै अग्निसमान बनाय दूध दही अथवा पानीकी भरी अंजलीमें गेरकै पुष्यनक्षत्रमैं पीवै तो गर्भमें पुत्र उपजताहै ।

(७)मञ्जिष्ठा मधुकं कुष्टं त्रिफला शर्करा बला ।
मेदा पयस्या काकोली मूलं चैवाश्वगन्धजम् ३६
अजमोदा हरिद्रे द्वे हिङ्गुकं कटुरोहिणी ।
उत्पलं कुमुदं द्राक्षा काकोल्यौ चन्दनद्वयम् ३७
एतेषां कार्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
शतावरीरसक्षीरं घृताद्देयं चतुर्गुणम् ॥ ३८ ॥
सर्पिरेतन्नरः पीत्वा नित्यं स्त्रीषु वृषायते ।
पुत्राञ्जनयते नारी मेधाढ्यान्प्रियदर्शनान् ३९
या चैव स्थिरगर्भा स्याद्या वा जनयते मृतम् ।
अल्पायुषं वा जनयेद्या च कन्यां प्रसूयते ४०
योनिदोषे रजोदोषे परिस्रावे च शस्यते ।
प्रजावर्धनमायुष्यं सर्वग्रहनिवारणम् ॥ ४१ ॥
नाम्ना फलघृतं ह्येतदश्विभ्यां परिकीर्तितम् ।
अनुक्तं लक्ष्मणामूलं क्षिपन्त्यत्र चिकित्सकाः ४२
जीवद्वत्सैकवर्णाया घृतमत्र प्रशस्यते ।
आरण्यगोमयेनापि वह्निज्वाला प्रदीयते ॥ ४३ ॥

(७ फलघृतम्) मंजीठ मुलहटी कूट त्रिफला खांड खरैंहटी मेदा क्षीरकाकोली काकोली आसगंधकी जड अजमोद हलदी दारुहलदी हींग कुटकी कमल कुमोदनी दाख काकोली दोनों चंदन ये सब एक २ तोला ले इसमें ६४ तोलेभर घृतकों पकावे । शतावरीका रस और दूध २५३ तोले दे इस घृतकों पीवै तो मनुष्य स्त्रियोंमें अच्छीतरह भोग करताहै। और स्त्री पीवै तो अच्छीबुद्धीवाले और प्रियदर्शनवाले पुत्रोंकों उपजातीहै। जिसके गर्भ स्थिर नहीं रहताहो अथवा जो मरा पुत्रकों उपजाती हो या अल्प उमरवाला पुत्रकों उपजाती हो या जो कन्याकों उपजाती हो इन्होंमें और योनिदोष रजोदोष परिस्राव इन्होंमें श्रेष्ठ है। प्रजाकों बढाताहै आयुमें हितहै सब ग्रहोंकों निवारताहै। नामकरकै यह फलघृत अश्विनीकुमारोंनें कहाहै । नहीं कहा लक्ष्मणाके मूलकोंभी वैद्य यहां डालतेहैं। जिसके वच्छावच्छी जीवते हो ऐसी एकवर्णवाली गौका घृत यहां श्रेष्ठ है और वनके गोवरकरकै यहां अग्नि जलाई जातीहै ।

(८)सहचरे द्वे त्रिफलां गुडूचीं सपुनर्नवाम् ।
शुकनासां हरिद्रे द्वे रास्नां मेदां शतावरीम् ४४
कल्कीकृत्य घृतप्रस्थं पचेत्क्षीरचतुर्गुणम् ।
तत्सिद्धं प्रपिबेन्नारी योनिशूलप्रपीडिता ४५
पिण्डिता चलिता या च निःसृता विवृता च या
पिण्डयोनिस्तु विस्रस्ता षण्डयोनिश्च या स्मृता

प्रपद्यन्ते तु ताः स्थानं गर्भं गृह्णन्ति चासकृत् ।
एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरं परम् ॥ ४७ ॥

(८ द्वितीयं फलघृतम्) दोनों कोरंटे त्रिफला गिलोय सांठी कंभारी हलदी दारुहलदी रास्ना मेदा शतावरी इन्होंका कल्क बनाय २५६ तोले दूध मिलाय ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। उस सिद्ध हुये घृतकों योनिशूलसें पीडित हुई नारी पीवै। पिंडिता चलिता निःसृता विवृता पिंडयोनि विस्रस्ता और खंडयोनि ये जो योनि कहीहै वे सब स्थानकों प्राप्त होती है और वारंवार गर्भकों धारण करतीहै। यह नामकरकै फलघृत है योनिदोषकों हरनेवाला और उत्तम है।

(९)सिद्धार्थकं वचा ब्राह्मी शङ्खपुष्पी पुनर्नवा ।
पयस्यामययष्ट्याह्वकटुकैलाफलत्रयम् ॥ ४८ ॥
शारिवे रजनी पाठा भृङ्गदारु सुवर्चला ।
मञ्जिष्ठा त्रिफला श्यामा वृषपुष्पं सगैरिकम् ४९
धीमान्पक्त्वा घृतप्रस्थं सम्यङ्मात्राभिमन्त्रितम् ।
द्विमासगर्भिणी नारी षण्मासात् न प्रयोजयेत् ॥
सर्वाङ्गं जनयेत्पुत्रं शूरं पण्डितमानिनम् ।
जडगद्गदमूकत्वं पानादेवापकर्षति ॥ ५१ ॥
सप्तरात्रप्रयोगेण नरः श्रुतिधरो भवेत् ।
नाग्निर्दहति तद्वेश्म न वज्रं हन्ति न ग्रहाः ५२
न तत्र म्रियते बालो यत्रास्ते सोमसञ्ज्ञितः ।
वन्ध्यापि लभते पुत्रं सर्वामयविवर्जितम् ।
योनिदुष्टाश्च या नार्यो रेतोदुष्टाश्च ये नराः ५३
अस्य प्रभावात्कुक्षिस्थः स्फुटवाग्व्याहरत्यपि ।
द्राक्षा परूषकाश्मर्यौ फलत्रयमुदाहृतम् ॥ ५४ ॥
"ओं नमो महाविनायकाया
मृतं रक्ष मम फलसिद्धिं
देहि रुद्रवचनेन स्वाहा"
सप्तदूर्वाभिमन्त्रितम् ॥ ५५ ॥

(९ सोमघृतम्) सरसों वच ब्राह्मी शंखपुष्पी सांठी क्षीरकाकोली कूट मुलहटी कुटकी त्रिफला दोनों अनंतमूल हलदी पाठा भंगरा देवदार सूरजवेल मंजीठ त्रिफला निशोत वांसाके फूल गेरू बुद्धिमान् वैद्य ६४ तोलेभर घृतकों इस पूर्वोक्त द्रव्यमें अच्छीतरह पकायकै और मंत्रसें अभिमंत्रित कर दूसरा माससें गर्भवाली स्त्री सेवै और छठा महिनासें अगाडी नहीं प्रयुक्त करै। संपूर्ण अंगोंवाला शूर वीर पंडितमानी ऐसा पुत्रकों उपजातीहै। जड गद्गद और गूंगापनकों पीनेसेंही दूर करतीहै। सात रात्रि इस घृतकों सेवनेसें मनुष्य दूसराकी श्रुतिकों धारण करनेवाला होताहै। और उसके शरीरकों अग्नि नहीं जलाताहै। और विजली और ग्रह नहीं पीडित करतेहैं। और जहां यह औषध रहता है तहां बालक नहीं मरताहै। और इसके प्रतापसें वंध्यास्त्रीभी सब रोगोंसें वर्जित पुत्रकों प्राप्त होतीहै। योनिसें दुष्ट हुई नारी और वीर्यसें दुष्ट हुये पुरुष शुद्ध हो जातेहैं। इसके प्रभावसें कुक्षिमें स्थित हुआ बालक स्पष्टवाणीवाला होकै बोलसकताहै इसमें त्रिफलाकी जगें दाख फालसा और कंभारी लेना। "ओनमो महाविनायकायामृतं रक्ष रक्ष मम फलसिद्धिं देहि रुद्रवचनेन स्वाहा" सात दूर्वोसें मंत्री अभिमंत्रित करै।

(१०)नीलोत्पलोशीरमधूकयष्टी
द्राक्षाविदारीकुशपञ्चमूलैः ।
स्याज्जीवनीयैश्च घृतं विपक्वं
शतावरीकारसदुग्धमिश्रम् ॥ ५६ ॥
तच्छर्करापादयुतं प्रशस्त-
मसृग्दरे मारुतरक्तपित्ते ।
क्षीणे बले रेतसि संप्रनष्टे
कृच्छ्रे च रक्तप्रभवे च गुल्मे ॥ ५७ ॥

(१० निलोत्पलादिघृतम्) नीला कमल खस महुआ मुलहटी दाख विदारीकंद कुश पंचमूल और जीवनीयगणके औषध इन्होंमें शतावरीका रस और दूध मिलाय घृतकों पकावै। चौथाई खांड मिलाय प्रदररोग वात रक्तपित्त क्षीणबल नष्टवीर्य मूत्रकृच्छ्र और रक्तगुल्म इनोंमें गुण करताहै।

(११)शतावरीमूलतुलाश्चतस्रः संप्रपीडयेत् ।
रसेन क्षीरतुल्येन पचेत्तेन घृताढकम् ॥ ५८ ॥
जीवनीयैः शतावर्या मृद्वीकाभिः परूषकैः ।
पिष्टैः प्रियालैश्चाक्षांशैर्द्वियष्टीमधुकैर्भिषक् ५९
सिद्धशीते च मधुनः पिप्पल्याश्चाष्टकं पलम् ।
दत्त्वा दशपलं चात्र सितायास्तद्विमिश्रितम् ६०
ब्राह्मणान्प्राशयेत्पूर्वं लिह्यात्पाणितलं ततः ।
योन्यसृक्शुक्रदोषघ्नं वृष्यं पुंसवनं च तत् ॥६१॥

क्षतक्षयं रक्तपित्तं कासं श्वासं हलीमकम् ।
कामलां वातरक्तं च विसर्पं हृच्छिरोग्रहम् ।
उन्मादादीनपस्मारान्वातपित्तात्मकाञ्जयेत् ६२
दग्ध्वा शङ्खं क्षिपेद्रम्भास्वरसे तत्तु पेषितम् ।
तुल्यालं लेपतो हन्ति रोमगुह्यादिसम्भवम् ६३
रक्ताञ्जनापुच्छचूर्णयुक्तं तैलं तु सार्षपम् ।
सप्ताहं व्युषितं हन्ति मूलाद्रोमाण्यसंशयः ।
कुसुम्भतैलाभ्यङ्गो वा रोम्णामुत्पाटितेऽन्तकृत् ॥

(११ बृहच्छतावरीघृतम्) शतावरीकी जड १६०० तोले लेकै अच्छीतरह पीडित करै । रसके बराबर दूध मिलाकै २५६ तोले घृतकों पकावै ५६ जीवनीयगणके औषध शतावरी मनुक्का फालसा चिरोंजी ये सब एकएक तोला और मुलहटी दो तोले डालै। सिद्ध होकै शीतल होनेमें शहद और पिप्पल ३२ तोले मिलावै पीछे ४० तोले मिसरी मिलाकै प्रथम ब्राह्मणोंकों खुलाकै पीछे एक तोलाभर आप खावै । योनिरोग प्रदररोग वीर्यदोष इन्होंकों नाशताहै । वीर्यकों पुष्ट करताहै और पुरुषपनाकों उपजाता है । क्षतक्षय रक्तपित्त खांसी श्वास हलीमक कामला वातरक्त विसर्प हृद्रोग शिरोग्रह इन्होंकों और उन्माद आदि रोग और वातपित्तके अपस्माररोग इन्होंकों जीतता है । शंखकों दग्ध कर केलाके रसमें गेरै पीछे पीसकर बराबर हरताल मिलाय लेप करनेसें गुदा आदिके रोम नष्ट होते हैं । रक्तांजनाकी पुच्छका चूर्णमें सरसोंका तेल मिलाय सात दिन धर लेप करनेसें जडसें रोमोंका नाश होताहै इसमें संशय नहीं । अथवा कसुंभका तेलकी मालिससें रोम उड जातेहैं ।

(१२)आरग्वधमूलपलं कर्षद्वितयं च शङ्खचूर्णस्य।
हरितालस्य च खरजे मूत्रप्रस्थे कटुतैलं पक्वम्
तैलं तदिदं शङ्खहरितालचूर्णितं लेपात् ।
निर्मूलयति च रोमाण्यन्येषां सम्भवो नैव ६६
कर्पूरभल्लातकशङ्खचूर्णं
क्षारो यवानां च मनःशिला च ।
तैलं विपक्वं हरितालमिश्रं
रोमाणि निर्मूलयति क्षणेन ॥ ६७ ॥

(१२ आरग्वधादितैलम्) अमलतासकी जड ४ तोले शंखका चूर्ण २ तोले हरताल २ तोले और गधाका मूत ६४ तोले इनोंमें कडवा तेलकों पकावै । इसका लेप करनेसें रोम दूर होतेहैं और नये रोमोंकी उत्पत्ति नहीं होतीहै । कपूर भिलावा शंख इन्होंका चूर्ण जवाखार मनशिल हरताल इन्होंमें पकाया तेल क्षणभरमें रोमोंकों दूर करताहै ।

(१३)शुक्तिशम्बूकशङ्खानां दीर्घवृन्तात्समुष्ककात्
दग्ध्वा क्षारं समादाय खरमूत्रेण गालयेत् ६८
क्षारार्धमागं विपचेत्तैलं च सार्षपं बुधः ।
इदमन्तःपुरे देयं तैलमात्रेयपूजितम् ॥ ६९ ॥
बिन्दुरेकः पतेद्यत्र तत्र रोमापुनर्भवः ।
मदनादिव्रणे देयमश्विभ्यां च विनिर्मितम् ७०
अर्शसां कुष्ठरोगाणां पामादद्रुविचर्चिकाम् ।
क्षारतैलमिदं श्रेष्ठं सर्वक्लेदहरं परम् ॥ ७१ ॥

इति योनिव्यापच्चिकित्सा ।

(१३ क्षारतैलम्) शिंपी छोटा शंख बडाशंख पीलालोध घंटा पाटलीवृक्ष इन्होंकों जलाकै खार बनाय गधाका मूत्रमें घोटै। खारसें ५ मा भाग कडवा तेल मिलाय पकावै। यह तेल अंतःपुरमें देना आत्रियमुनिका पूजित है । जहां इसकी एक बूंद पडै तहांही रोम उत्पन्न नहीं होतेहैं । मदनादि घावमें देना अश्विनीकुमारोंनें यह रचाहै । ववासीरके मस्से कुष्ठरोग पाम दाद विचर्चिका और सब प्रकारके क्लेद इन्होंकों यह क्षारतेल नाशताहै और बहुत उत्तमहै ।

इति चक्रदत्तभाषाटीका योनिव्यापत्चिकित्सा ।

अथ स्त्रीरोगाधिकारः ६२

अब स्त्रीरोगका अधिकार कहतेहै ।

(१)मधुकं शाकबीजं च पयसा सुरदारु च ।
अश्मन्तकः कृष्णतिलास्ताम्रवल्ली शतावरी ॥१॥
वृक्षादनी पयस्या च तथैवोत्पलशारिवा ।
अनन्ता शारिवा रास्ना पद्मा मधुकमेव च ॥२॥
बृहतीद्वयकाश्मर्यक्षीरिशुङ्गास्त्वचो घृतम् ।
पृथक्पर्णी बला शिग्रु श्वदंष्ट्रा मधुयष्टिका ३
शृङ्गाटकं बिसं द्राक्षा कशेरु मधुकं सिता ।
मासेषु सप्त योगाः स्युरर्धश्लोकास्तु सप्तसु ॥४॥
यथाक्रमं प्रयोक्तव्या गर्भस्रावे पयोऽन्विताः ।

कपित्थबिल्वबृहतीपटोलेक्षुनिदिग्धिकाः ॥ ५ ॥
मूलानि क्षीरसिद्धानि दापयेद्भिषगष्टमे ।
नवमे मधुकानन्तापयस्याशारिवाः पिबेत् ॥६॥
पयस्तु दशमे शुण्ठ्या शृतशीतं प्रशस्यते ।
सक्षीरा वा हिता शुण्ठी मधुकं देवदारु च ॥७॥
एवमाप्यायते गर्भस्तीव्रा रुक् चोपशाम्यति ।
कुशकाशोरुबूकानां मूलैर्गोक्षुरकस्य च ।
शृतं दुग्धं सितायुक्तं गर्भिण्याः शूलनुत्परम् ८

(१ स्त्रीगर्भहिता उपायाः) मुलहटी शाकबीज क्षीरकाकोली देवदार एक। आपटा काले तिल मजीठ शतावरी दो। अमरवेल क्षीरकाकोली कमल शारिवा अनंतमूल तीन। धमासा शारिवा अनंतमूल रास्ना कमलिनी मुलहटी चार। दोनों कटेहली कंभारी वंशलोचन शृंगा दालचिनी घृत पांच। पृष्ठपर्णी खरैंहटी सहोंजना गोखरू मुलहटी छठा। सिंघाडा कमलकी डंडी दाख कसेरू मुलहटी मिसरी सात। ये सातोंयोग सात महीनोंतक क्रमसें दूधमें मिलाके गर्भस्रावमें देने, कैथ बेलगिरी बडी कटेहली परवल ईख छोटी कटेहली इनोंकों दूधमें सिद्ध कर आठमा महीनामें देनी। नौमा महीनामें मुलहटी धमासा क्षीरकाकोली शारिवा अनंतमूल इनोंकों पीवै। दशमा महीनामें सूंठके संग पकाके शीतल किया दूध श्रेष्ठ है। अथवा दूधसहित सूंठि मुलहटी देवदार ये हित हैं। इसप्रकार गर्भ पुष्ट होताहै और पीडा शांत होतीहै। कुश काश अरंड गोखरू इनोंकी जडकों दूधमें पकाय मिसरी मिलाय पीनेसें गर्भिणीका शूल नष्ट होताहै।

(२)कशेरुशृङ्गाटकजीवनीय-
पद्मोत्पलैरण्डशतावरीभिः।
सिद्धं पयः शर्करया विमिश्रं
संस्थापयेद्गर्भमुदीर्णशूलम् ॥ ९ ॥
कशेरुशृङ्गाटकपद्मकोत्पलं
समुद्गपर्णीमधुकं सशर्करम् ।
सशूलगर्भस्रुतिपीडिताङ्गना
पयोविमिश्रं पयसान्नभुक् पिबेत् ॥१०॥
गर्भे शुष्के तु वातेन बालानां चापि शुष्यताम्।
सितामधुककाश्मर्यैर्हितमुत्थापने पयः ॥ ११ ॥
गर्भशोषे त्वामगर्भाः प्रसहाश्च सदा हिताः ।

(२ गर्भस्थैर्याय संस्कृतं दुग्धम्) कसेरू सिंघाडा जीवनीयगणके औषध कमल सपेद कमल अरंड शतावरी इनोंकरकै सिद्ध किया दूधमें खांड मिलाय पीवै तो बढाहुवा शूलवाला गर्भ स्थित रहताहै। कसेरू सिंघाडा कमल रानमूंग मुलहटी इनोंकों दूधमें पकाय खांड मिलाय शूल और गर्भस्रावसें पीडित हुई स्त्री पीवै और दूधके संग अन्नकों खावै। वातकरकै गर्भके सूखनेमें और सूखते हुये बालकोंकों मिसरी शहद और कंभारी इनोंकरके सिद्ध किया दूध देना हित है। गर्भशोषमें काग गीध वाज आदि जीवोंके कच्चे गर्भ खाना सदा हित है।

(३)पाठा लाङ्गलिसिंहास्यमयूरकजटैः पृथक् १२
नाभिबस्तिभगालेपात्सुखं नारी प्रसूयते ।
परूषकस्थिरामूललेपस्तद्वत्पृथक्पृथक्॥ १३॥
वासामूले ध्रुवं तद्वत्कटिबद्धे सूते द्रुतम् ।
पाठायास्तु शिफां योनौ या नारी संप्रधारयेत्।
उरःप्रसवकाले च सा सुखेन प्रसूयते ।
तुषाम्बुपरिपिष्टेन मूलेन परिलेपयेत् ॥ १५ ॥
लाङ्गल्याश्चरणौ सूते क्षिप्रमेतेन गर्भिणी।
आटरूपकमूलेन नाभिबस्तिभगालेपः कर्तव्यः१६
तालतरूद्भवमूले मुक्तकच्छे धृते पुंसाम्।
गृहाम्बुना गेहधूमपानं गर्भापकर्षणम् ॥ १७ ॥
मातुलुङ्गस्य मूलानि मधुकं मधुसंयुतम्।
घृतेन सह पातव्यं सुखं नारी प्रसूयते ॥ १८ ॥

पुटदग्धसर्पकञ्चुक-
मसृणमसी कुसुमसारसहिताञ्जिताक्षी ।
झटिति विशल्या जायेत
गर्भवती मूढगर्भापि ॥ १९ ॥

(३ नाभ्यादिषु पाठादयो लेपाः) पाठा कलहारी वांसा श्वेत ऊंगा इन्होंकी जडोंकों अलगअलग पीस नाभि बस्तिस्थान और योनिपर लेप करनेसें नारी सुखपूर्वक बालककों उपजातीहै। फालसा शालपर्णी इन्होंकी जडका अलगअलग किया लेपसेंभी नारी अच्छीतरह बालककों उपजातीहै। वांसाकी जडकों कटीपर बांधनेसें नारी निश्चय शीघ्र बालककों उपजातीहै। पाठाकी जडकों जो नारी योनिपर धारण करतीहै वह प्रसवकालमें अच्छीतरह बालककों उपजातीहै। कलहारीकों जवोंकी कांजीका पानीसें पीस पैरोंपर लेप करनेसें गर्भिणी अच्छीतरह शीघ्र बालककों उपजातीहै। वांसाकी जडकरकै नाभि बस्तिस्थान और योनिपर लेप करना उचित है। लांगड खोलकै पुरुष ता-

डवृक्षकी जडकों धारण करै । घरका पानीकरकै घरका धूमाकों पीवै तो गर्भ छूटजाताहै । विजोराकी जड मुलहटी शहद इन्होंकों घृतके संग पीवै तो नारी सुखपूर्वक बालक उपजातीहै । पुटकरकै सांपकी कांचलीकों दग्ध कर कोमल स्याहीकों शहदमें मिलाय नेत्रोंमें आंजै तो गर्भवती और मूढगर्भवाली शीघ्र विशल्या होजातीहै ।

(४)गृहाम्बुना हिङ्गुसिन्धुपानं गर्भापकर्षणम् ।
इहामृतं च सोमश्च चित्रभानुश्च भामिनि ।
उच्चैःश्रवाश्च तुरगो मन्दिरे निवसन्तु ते ॥२०॥
इदममृतमपां समुद्भूतं वै-
भवलघुगर्भमिमं विमुञ्चतु स्त्री ।
तदनलपवनार्कवासवास्ते
सह लवणाम्बुधरैर्दिशन्तु शान्तिम् ॥२१॥
मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः ।
मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि मारिच स्वाहा ॥२२॥
जलं च्यवनमन्त्रेण सप्तवाराभिमन्त्रितम् ।
पीत्वा प्रसूयते नारी—

(४ सुखप्रसवे मंत्रितांब्वादि) घरका पानीके संग हींग और सेंधानमकका पान करनेसें गर्भ खींचताहै । यहां अमृत और सोम चित्रभानु और उच्चैःश्रवा अश्व हेभामिनि तेरे मंदिरमें वसो । यह अमृतजलसें समुद्भूत किया है वैभवकरके लघुरूप इस गर्भकों छोडो अग्नि वायु सूर्य इंद्र खारसमुद्र ये सब उस गर्भकी शांति करो । **" मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि मारिच स्वाहा "** इस च्यवनमंत्रकरके अभिमंत्रित किये जलकों पीकै स्त्री सुखसें बालककों प्रसवतीहै ।

(५)दृष्ट्वा चोभयत्रिंशकम् ॥ २३ ॥
तथोभयपञ्चदशदर्शनं सुखसूतिकृत् ।
नारी ऋतुवसुभिः सह पक्षदिगष्टादशभिरेव च॥
अर्कभुवनाब्धिसहितैरुभयत्रिंशकमिदमाश्चर्यम् ।
वसुगुणाब्ध्येकबाणनवषट्सप्तयुगैः क्रमात् ॥२५॥
सर्वे पञ्चदशद्विस्तु त्रिंशकं नवकोष्ठके ।
कटुतुम्ब्यहिनिर्मोककृतवेधनसर्षपैः ॥ २६ ॥
कटुतैलान्वितो धूमो योनेः पातयतेऽमराम् ।
कचवेष्टितयाङ्गुल्या घृष्टे कण्ठे सुखं पतत्यमरा ॥

(५ गर्भयंत्रदर्शनादि) दोनों तरफसें उभयत्रिंशक जंत्रकों देखकै सुखसें नारी बालककों उपजातीहै । उभयपंचदश जंत्रकों देखनेसें नारी सुखसें संतानकों उपजातीहै। छह आठ पंदरह दश अठारह बारह चौदह और चार इन्होंकरकै उभयत्रिंशक आश्चर्यरूप होताहै । आठ तीन चार एक पांच नव छह सात यह क्रमसें पंचदश जंत्र होताहै और नवकोठोंमें दुगनी रीतिसें त्रिंशक होताहै । कडुवी तूंबी सांपकी कांचली कडुवी तोरी सरसों इन्होंकों कडुवा तेलमें डाल धूमा देनेसें जेरकों काढती है । बालोंसें वेष्टित करी अंगुलीकरकै कंठकों घिलनेसें सुखपूर्वक जेर पतित होतीहै ।

(६)एरण्डस्य वनेः? काको गङ्गातीरमुपागतः ।
इतः पिबति पानीयं विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥
अनेन सप्तधामन्त्र्य जलं देयं विशल्यकम् ॥२९॥
मूलेन लाङ्गलिक्या वा संलिप्ते पाणिपादे च ।
अमरापातनं मद्यैः पिप्पल्यादिरजः पिबेत् ॥३०॥
गरीमदनदहनमूलं चिरजमपि ।
गर्भं मृतममृतं वा निपातयति ॥ ३१ ॥

(६ गर्भिणीविशल्यकरणमंत्रः) **"एरंडस्य बनेः? काको गंगातीरमुपागतः । इतः पिबति पानीयं विशल्या गर्भिणी भवेत्"** । इसकरके सातवार जलकों अभिमंत्रित कर जल देनेसें शल्य नष्ट होताहै । कलहारीकी जडकरकै हाथ और पैरपर लेप करनेमें और मदिराके संग पीपल आदिका चूर्ण पीवै तो जेर पडती है । ताड मैनफल चीता इन्होंकी जड पुराना मरा और नहीं मरा गर्भकों निकासती है ।

(७)शालिमूलाक्षमात्रं वा मूत्रेणाम्लेन वान्वितम् ।
उपकुञ्चिकां पिप्पलीं च मदिरां लाभतः पिबेत् ॥
सौवर्चलेन संयुक्तां योनिशूलनिवारणीम् ।
सूताया हृच्छिरोबस्तिशूलं मकन्दसङ्ज्ञितम् ॥३३॥
यवक्षारं पिबेत्तत्र सर्पिषोष्णोदकेन वा ।
पिप्पल्यादिगणक्वाथं पिबेद्वा लवणान्वितम्॥३४॥
पारावतशकृत्पीतं शालितण्डुलवारिणा ।
गर्भपातान्तरोत्थे तु रक्तस्रावनिवारणम् ॥ ३५ ॥
जलपिष्टवरुणपत्रैःसघृतैरुद्वर्तनालेपौ तु ।
किक्किशरोगं हरतो गोमयघर्षादथो विहितौ॥३६॥

(७ मदिरासेवनादि) चौलाईकी जड एक तोलाभर ले गोमूत्रके संग अथवा कांजीके संग पीवै। कलौंजी और पीपलकों मदिराके संग पीवै तो गर्भ नष्ट होताहै। काला नमकसें संयुक्त करी मदिराकों पीवै तो योनिका शूल नष्ट होताहै। और बालक उपजानेवालीका हृच्छूल शिरका शूल बस्तिशूल मक्कलसंज्ञक रोग इन्होंकों नाशतीहै। घृतके संग अथवा गरम पानीके संग जवाखारकों पीवै अथवा नमकसहित पिप्पल्यादि गणके क्राथकों पीवै। शालिचावलोंका पानीके संग परेवाकी वींटकों पीवै तो गर्भपातमें रक्तस्रावकों निवारताहै। जलमें पिसे हुये वरनाके पत्तोंमें घृत डाल उवटना और लेप करै अथवा गोवरसें घिसै तो किक्किशरोगकों हरते हैं।

(८)ह्रीबेरारणालरक्तचन्दनवला
धन्याकवत्सादनी
मुस्तोशीरयवासपर्पटविषा-
क्राथं पिवेद्गर्भिणी।
नानादोषयुतातिसारकगदे
रक्तस्रुतौ वा ज्वरे
योगोऽयं मुनिभिः पुरा निगदितः
सूत्यामये शस्यते॥ ३७॥
अमृतानागरसहचर-
भद्रोत्कटपञ्चमूलजलदलश्टतम्।
मधुसंयुक्तं निवार
यति सज्वरं सूतिकातङ्कम्॥ ३८॥
सहचरपुष्करवेतसमूलं
वैकङ्कतं दारु कुलत्थसमम्।
जलमत्र सैन्धवहिङ्गुयुतं
सद्यो घोरसूतिकाशूलहरम्॥ ३९॥

(८ ह्रीबेरादिक्राथः) नेत्रवाला सोनापाठा लालचंदन खरैंहटी धनियां गिलोय नागरमोथा खस जवांसा पित्तपापडा अतीस इन्होंके क्राथकों गर्भिणी पीवै। अनेक दोषसें युत अतिसाररोगमें रक्तस्रावमें अथवा ज्वरमें यह योग मुनियोंनें पहले कहा है। सूतीरोगमें उत्तम है। गिलोय सोंठ कोरंटा भद्रमोथा दालचिनी पंचमूल नेत्रवाला तेजपात इन्होंका क्राथमें शहद डाल पीवै तो ज्वरसहित सूतिकारोगकों नष्ट करताहै। कोरंटा पौहकरमूल वेत इन्होंकी जड वेहकल देवदार कुलथी इन्होंका क्राथमें सेंधानमक हींग डाल पीवै तो शीघ्र सूतिकाका शूल नष्ट होताहै।

(९)दशमूलीकृतः क्राथः सद्यः सूतिरुजापहः।
पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यं शुण्ठी यमानिका॥
जीवके द्वे हरिद्रे द्वे विडसौवर्चलं तथा।
एतैरेवौषधैः पिष्टैरारणालं विपाचितम्॥ ४१॥
आमवातहरं वृष्यं कफघ्नं वह्निदीपनम्।
काञ्जिकं वज्रकं नाम स्त्रीणामग्निविवर्धनम्॥४२॥
मक्कन्दशूलशमनं परं क्षीराभिमर्दनम्।
क्षीरपाकविधानेन काञ्जिकस्यापि साधनम्॥४३॥

(९ वज्रकांजिकम्) दशमूलका क्राथ सूतिकाके शूलकों शीघ्र हरताहै। पीपल पीपलामूल चव्य सोंठ अजमान दोनों जीरे दोनों हलदी मनयारीनमक कालानमक इन औषधोंकों पीसकै कांजीकों पकावै आमवातकों हरता है। वीर्यकों पुष्ट करताहै कफकों नाशताहै और अग्निकों जगाताहै। वज्रनामक कांजी स्त्रियोंके अग्निकों बढाता है। मक्कल शूलकों नाशता है उत्तम है और दूध आदिकों बढाता है। क्षीरपाकका विधान करकै कांजीकोंभी साधना।

(१०)जीरकं हपुषा धान्यं शताह्वा सुरदारु च।
यमानी त्र्यष्टको हिङ्गुपत्रिका कासमर्दकम्॥४४॥
पिप्पली पिप्पलीमूलमजमोदाथ वाष्पिका।
चित्रकं च पलांशानि तथान्यच्च चतुःपलम्॥४५॥
कशेरुकं नागरं च कुष्ठं दीप्यकमेव च।
गुडस्य च शतं दद्याद् घृतप्रस्थं तथैव च॥४६॥
क्षीरद्विप्रस्थसंयुक्तं शनैर्मृद्वग्निना पचेत्।
पञ्चजीरक इत्येष सूतिकानां प्रशस्यते॥ ४७॥
गर्भार्थिनीनां नारीणां वृंहणीये समारुते।
विंशतिं व्यापदो योनेः कासं श्वासं ज्वरं क्षयम्॥
हलीमकं पाण्डुरोगं दौर्गन्ध्यं बहुमूत्रताम्।
हन्ति पीनोन्नतकुचाः पद्मपत्रायतेक्षणाः।
उपयोगात्स्त्रियो नित्यमलक्ष्मीमलवर्जिताः॥४९॥

(१०पंचजीरकगुडः) जीरा हाऊवेर धनियां शतावरी देवदार अजमान त्र्यष्टक हिंगुपत्रिका कासमर्द पीपल पीपलामूल अजमोद कलोंजी जीरा चीता ये सब चारचार तोले और अन्य वस्तु सोलह सोलह तोले कसेरु सोंठ कूठ अजमोद गुड ४०० तोले घृत ६४ तोले। पीछे १२८ तोलेभर दूध डालकै हौलें हौलें मंद अग्निसें पकावै। यह पंचजीरक सू-

तिकाओंकों श्रेष्ठ है । गर्भार्थिनी नारियोंकों पुष्ट करताहै । वायुसहित रोगमें योनिकी वीस व्यापत् खांसी श्वास ज्वर क्षय हलीमक पांडुरोग दौर्गंध्य बहुमूत्रता इन्होंकों नाशता है । पुष्ट और उन्नत कुचाओंवाली कमलका पत्ताके समान विस्तृत नेत्रोंवाली दरिद्र और मलसें वर्जित ऐसी स्त्रियां इसके प्रतापसें होतीहैं ।

(११)वनकार्पासिकेक्षूणां मूलं सौवीरकेण वा ।
विदारीकन्दं सुरया पिबेद्वा स्तन्यवर्धनम् ॥५०॥
दुग्धेन शालितण्डुलचूर्णपानं विवर्धयेत् ।
स्तन्यं सप्ताहतः क्षीरसेविन्यास्तु न संशयः ॥५१॥
हरिद्रादिं वचादिं वा पिबेत्स्तन्यविशुद्धये ।
तत्र वातात्मके स्तन्ये दशमूलीजलं पिबेत् ॥५२॥
पित्तदुष्टेऽमृताभीरुपटोलं निम्बचन्दनम् ।
धात्री कुमारश्च पिबेत्काथयित्वा सशारिवम्॥५३
कफे वा त्रिफलामुस्ताभूनिम्बं कटुरोहिणीम् ।
धात्री स्तन्यविशुद्ध्यर्थं मुद्गयूषरसाशिनी ॥ ५४ ॥
भार्गीवचादारुपाठाः पिबेत्सातिविषाः शृताः५५
कुकुरामञ्जुकामूलं चर्वितमास्ये विधारितं जयति ।
सप्ताहात्स्तनकीलं स्तन्यं चैकान्ततः कुरुते॥५६॥

(११ दुग्धवर्धनोपायाः) वनकी कपास और ईखकी जडकों कांजीके संग अथवा विदारीकंदकों मदिराके संग पीवै तो चूंचियोंमें दूधकों बढाताहै । शालिचावलोंका चूर्णकों दूधके संग सात दिन पीनेसें दूधकों सेवनेवाली स्त्रीका दूध बढाताहै । इसमें संशय नहीं । हरिद्रादिगणकों अथवा वचादिगणकों दूध बढानेके अर्थ पीवै । तहां वातकरकै दूध दुष्ट होजाय तो दशमूलका क्काथ पीना । पित्तसें दुष्ट हुये दूधमें गिलोय शतावरी परवल नींब चन्दन शारिवा अनंतमूल इन्होंके क्काथकों धाय माता और बालक पीवै । अथवा कफसें दुष्ट हुये दूधमें त्रिफला नागरमोथा चिरायता कुटकी इन्होंके क्काथकों और मूंगका यूषरस सेवनेवाली धायका दूध शुद्ध रहताहै । भारंगी वच देवदार पाठा अतीस इन्होंका क्काथ बनाय पीवै । कुकुरा मंजुकाकी जड चावकै मुखमें धारित कियी जावै तो चूंचियोंकी कीलकों जीतताहै । और दूधकों एकांतसें करताहै ।

(१२)शोथं स्तनोत्थितमवेक्ष्य भिषग्विदध्या-
द्यद्विद्रधावभिहितं त्विह भेषजं तु ।
आमे विदह्यति तथैव गते च पाकं
तस्याः स्तनौ सततमेव च निर्दुहीत ॥ ५७ ॥
विशालामूललेपस्तु हन्ति पीडां स्तनोत्थिताम् ।
निशाकनकफलाभ्यां लेपश्चापि स्तनार्तिहा॥५८॥
मूषिकवसया शूकरगजमहिषमांसचूर्णसंयुतया ।
अभ्यङ्गमर्दनाभ्यां कठिनपीनस्तनौ भवतः ॥५९॥
महिषीभवनवनीतं व्याधिवलोग्रा तथैव नागवला
पिष्टा मर्दनयोगात्पीनं कठिनं स्तनं कुरुते ॥६०॥

(१२ स्तनशोथे) चूंचियोंपर उपजा शोजाकों देखकर वैद्य जो विद्रधिरोगमें औषध कहाहै उसकों करै । कच्चामें दाह लगै तथा पकजानेमें उस स्त्रीकी चूंचियोंकों दुह देवै । इंद्रायणकी जडका लेप चूंचियोंकी पीडाकों हरताहै । हलदी और धतूराके फलसें लेपभी चूंचियोंकी पीडाकों हरताहै । मूषाकी वसा शूरका मांस हस्तीका मांस भैंसका मांस इन्होंका चूर्णकरकै मालिस और मर्दनसें कठिन और पुष्ट चूंची होजातीहै । भैंसका नौंनीघृत कूट खरैंहटी वच बडी खरैंहटी इनकों पीस और मर्दन करनेसें पुष्ट और कठिन चूंचीकों करताहै ।

(१३)श्रीपर्णीरसकल्काभ्यां तैलं सिद्धं तिलोद्भवं ।
तत्तैलं तूनकेनैव स्तनस्योपरि धारयेत् ।
पतितावुत्थितौ स्त्रीणां भवेयातां पयोधरौ ॥६१॥

(१३ श्रीपर्णीतैलम्) शालपर्णीका रस और कल्कसें सिद्ध किया तिलोंका तेलमें उस तेलकों रूईसें चूंचीपर धारै । इसकरकै स्त्रियोंकी पतित हुई चूंचियां उत्थित हों ।

(१४)कासीसतुरगगन्धा
शारिवागजपिप्पलीविपक्केन ।
तैलेन यान्ति वृद्धिं
स्तनकर्णवराङ्गलिङ्गानि ॥ ६२ ॥
प्रथमर्तौ तण्डुलाम्भो
नस्यं कुर्यात्स्तनौ स्थिरौ ।
गोमहिषीघृतसहितं
तैलं श्यामाकृताञ्जलिवचाभिः ॥ ६३ ॥
सत्रिकटुनिशाभिः
सिद्धं नस्यं स्तनोत्थापनं परम् ।
तनूकरोति मध्यं
पीतं मथितेन माधवीमूलम् ॥ ६४ ॥

स्याच्छिथिलापि च गाढा
सुरगोपाज्याभ्यङ्गसङ्गतो योनिः ।
शरवहलस्थिरबन्धन-
रज्वा सन्ताडनाद्धि दयितेन ॥ ६५ ॥
नश्यत्यबलाद्वेषः पत्यौ सहजः कृतोऽथवा योगैः।
दत्त्वैव दुग्धभक्तं विप्रायोत्पाट्य सितबलामूलम्।
पुष्ये कन्यापिष्टं दत्तमनिच्छाहरं भक्ष्ये ॥ ६६ ॥

इति स्त्रीरोगचिकित्सा ।

(१४ कासीससिद्धतैलादि) हीराकसीस आसगंध शारिवा गजपीपल इन्होंकरकै सिद्ध किया तेलसें चूंची कान योनि लिंग बढतेहैं । प्रथम ऋतुकालमें चावलोंके पानीका नस्य चूंचियोंकों स्थिर करताहै । गाय भैंसका घृतसहित तेलकों कालीनिशोत कृतांजली वच सोंठ मिरच पीपल हलदी इन्होंमें सिद्ध कर नस्य लेवे तो चूंची उत्थित होतीहै । माधवीकी जड मथितके संग पीवै तो मध्यकों पतली बनातीहै। देवदार और शारिवाकों घृतमें मिलाय लेप करनेसें शिथिल योनिभी करडी होतीहै। शर बड्गुल स्थिर बंधन रज्जुकरकै संताडन इन्होंकरकै पतिके संग स्त्रीका वैर नष्ट होताहै। अथवा पतिमें योगोंकरकै सहज किया कर्तव्य स्त्रीका वैरकों नष्ट होताहै । ब्राह्मणके अर्थ दूधसहित भोजन देकै पुष्यनक्षत्रमें श्वेत खरैंहटीकी जडकों उपाड कन्याके हाथसें पिसवाकै दे तो भक्ष्यमें अनिच्छाकों हरताहै।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां स्त्रीरोगचिकित्सा ।

अथ बालरोगाधिकारः ६३

अब बालरोगका अधिकार कहतेहै ।

(१)कुष्ठवचाभयाब्राह्मीकमलं क्षौद्रसर्पिषा।
वर्णायुःकान्तिजननं लेहं बालस्य दापयेत् ॥ १ ॥
स्तन्याभावे पयश्छागं गव्यं वा तद्गुणं पिबेत् ।
तर्कारी गुडिकां तप्तां निर्वाप्य कटुतैलके ।
तत्तैलं पानतो हन्ति बालानामुल्बमुद्धतम् ॥२॥
व्योषशिवोग्रा रजनी कल्कं वा पीतमथ पयसा ।
उल्वं निःशेषं कुरुते पटुतां बालस्य चात्यन्तम्३
मृत्पिण्डेनाग्नितप्तेन क्षीरसिक्तेन सोष्मणा ।
स्वेदयेदुत्थितां नाभिं शोथस्तेन प्रशाम्यति ॥४॥
नाभिपाके निशालोध्रप्रियङ्गुमधुकैः शृतम् ।
तैलमभ्यञ्जने शस्तमेभिर्वाप्यवचूर्णनम् ॥ ५ ॥

(१ बालानां कुष्ठादिलेहो दुग्धादिच) कूट वच हरडै ब्राह्मी पीला कमल इन्होंकों शहद और घृतसें मिलाय लेह बनाकै बालककों देवै । यह बल आयु और कांतिकों उपजाताहै । स्त्रीका दूधके अभावमें बकरीका दूध अथवा गायका दूध स्त्रीका दूधके समान गुणवाला पीवै । वडवेरीकी गोली बनाकै तपाय और कडुआ तेलमें बुझाय उसकों पीनेसें बालकोंका बढा हुआ जेरविकारकों नाशताहै। सोंठ मिरच पीपल हरडै वच हलदी इन्होंके कल्ककों दूधके संग पीवै । इसकरकै जेरका विकारकों निःशेष करताहै। और बालकके अत्यंत चतुराईकों करताहै। अग्निसें तप्त किये पिंडकों दूधमें बुझाकै उसकी वांफकरकै ऊठीहुई नाभिकों स्वेदित करै तो उसकरकै शोजा शांत होताहै । नाभिके पकनेमें हलदी लोध कांगनी मुलहटी इन्होंकरकै पकाया तेल श्रेष्ठ है । अथवा इन औषधोंकरकै मलनेसेंभी यही फल होताहै ।

(२)सोमग्रहणे विधिवत्
त्केकिशिखामूलमुद्धृतं बद्धम् ।
जघनेऽथ कन्धरायां
क्षपयत्यहिण्डिकां नियतम् ॥ ६ ॥
सप्तदलपुष्पं मरिचं पिष्टं गोरोचनासहितम् ।
पीतं तद्वत्तण्डुलभक्तकृतो दग्धपिष्टकप्राशः ॥७॥
जम्बूकनासावायसजिह्वा नाभिर्वराहसंभूता ।
कांस्यं रसोऽथ गरलं प्रावृड्भेकस्य वामजङ्घास्थि
इत्येकशोथमिलितं विधृतं ग्रीवादिकटिदेशे ।
अहिण्डिकाप्रशमनमभ्यङ्गो नातिपथ्यविधिः॥९॥
अनामके घुर्घुरिकावुक्कामरिचरोचना ।
नवनीतं च संमिश्र्य खादेत्तद्रोगनाशनम् ॥१०॥
तैलाक्तशिरस्तालुनिसप्तदलार्कस्नुहीभवं क्षीरम् ।
दत्त्वा रजनीचूर्णं दत्ते नश्येदनामकोरोगः ॥११॥
लेहयेच्च शुना बालं नवनीतेन लेपितम् ।
स्फुटकपत्रजरसोद्वर्तनं च हि तद्धितम् ॥ १२ ॥

(२ मयूरशिखाधारणादि) चंद्रमाके ग्रहणमें विधिकरकै मोरशिखाकी जडकों उखाड पिंडीमें बांधै तो अहिंडिकाकों निश्चय दूर करताहै । शातलाके पुष्प मिरच गोरोचन इन्होंकों पीस तिसी प्रकार चावलोंका भातके संग ले तो पूर्वोक्त फल होताहै । गीदडकी नासिका काककी जीभ शूरकी नाभि कांसी पारा मीठा तेलिया वर्षाऋतुके

मेंडककी वामी जांघका हड्डी इस प्रकार एकएक अथवा मिलित कियाकों ग्रीवा आदि कटिदेशमें धारण करै या मालिस करै तो अहिंडिकाकों शांत करताहै। इसमें पथ्यविधि नहीं है। अनामकरोगमें घुंघुरिकाका अग्रमांस मिरच वंशलोचन नौंनीघृत इन्होंकों मिलाकै खावै तो उस रोगका नाश होताहै। तेलसें शिर और तालुकों चुपड शातला आक और थोहरका दूध हलदीका चूर्ण इन्होंकों मिला देनेसें अनामकरोग नष्ट होताहै। नौंनीघृतसें बालककों लघु लीपकर कुत्तासें चटवावै। टवटवीतके पत्तोंके रससें उद्वर्तन करना उसमें हित है।

(३)तैलस्य भागमेकं।
मूत्रस्य द्वौ च शिम्बिदलरसस्य।
गव्यं पयश्चतुर्गुण
मेवं दत्त्वा पचेत्तैलम्।
तेनाभ्यङ्गः सततं रोगमनामकाख्यमपहरति१३॥
अर्कतूलकमाविकरोमाण्यादाय केशराजस्य।
स्वरसेनाक्ते वस्त्रे कृत्वा वर्तिं च तैलाक्ताम्॥१४
तज्जातकज्जलाञ्जितलोचनयुगलोऽप्यलंकृतोबालः
कष्टमनामकरोगं क्षपयति भूतादिकं चापि॥१५॥
चालनिकातलसंस्थितपोतं संप्लाव्य गव्यमूत्रेण।
ओकोदशालिकायां रजकक्षारोदकस्नानम्॥१६॥
दासक्रयणश्रावणवरा-
टिकारसेन्द्रपूरिता धृता कण्ठे।
नलिनीदले च शयनं
सुकष्टमनामकाख्यरोगघ्नम्॥ १७॥
भैषज्यं पूर्वमुद्दिष्टं नराणां यज्ज्वरादिषु।
देयंतदेव बालानां मात्रा तस्य कनीयसी॥१८॥
प्रथमे मासि जातस्य शिशोर्भेषजरक्तिका।
अवलेह्या तु कर्तव्या मधुक्षीरसिताघृतैः॥ १९॥
एकैकां वर्धयेत् तावद्यावत्संवत्सरो भवेत्।
तदूर्ध्वं मासवृद्धिः स्याद्यावद्वाषोडशाब्दिकाः२०

(३ तैलाभ्यंगादि) तेल १ भाग गोमूत्र २ भाग शिंबीदल २ भाग गायका दूध चौगुना इनोंमें तेलकों पकावै। तेलकी मालिस नित्य करै तो अनामकाख्यरोग नष्ट होताहै। आककी रूई भेडके रोम भंगराका स्वरसमें वस्त्रकों भिगोय वत्ति बनाय तेलमें भिगोय उससें उपजी स्याहीसें बालकके दोनों नेत्रोंमें अंजन करै तो कष्टरूप अनामकरोग और भूतआदिकभी नष्ट होतेहैं। नावडोंगी आदिपर बालककों स्थित कर गोमूत्रसें चालनीकरकै स्नान कराकै एकांत स्थानमें धोबी धोतेहों उस पानीसें तथा खारा पानीसें स्नान करावै। दाससें लले? खरीदै। श्रावणमें निकसी कौडीमें पारा घाल बालकके कंठमें धारण करावै। कमलिनीके पत्तापर शयन करावै। ये सब कष्टरूप अनामक रोगकों नाशतेहैं। नरोंके ज्वर आदि रोगोंमें जो पहले औषध कहाहै वही बालकोंकों देना पर उसकी अल्प मात्रा देनी। पहला महीनामें उपजा बालककों १ रत्ती ओषध देना और शहद दूध मिश्री घृतसें चटनी बनाकै देनी। एक एक रत्तीकों तबतक बढावै जबतक एक वर्ष हो उस्सें उपरंत प्रतिवर्ष एक मासाकी वृद्धि करै। जबतक सोलह वर्षका हो।

(४)हरिद्राद्वययष्ट्याह्वसिंहीशक्रयवैः कृतः।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नः कषायस्तस्य दोषजित्२१॥

(४ हरिद्रादि) हलदी दारुहलदी मुलहटी कटेली इंद्रजव इन्होंका क्वाथ बालकके ज्वरातिसारकों नाशताहै और उसके दोषकों जीतताहै।

(५)घनकृष्णारुणाशृङ्गीचूर्णं क्षौद्रेण संयुतम्।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नं कासश्वासवमीहरम्॥२२॥

(५ बालचतुर्भद्रिका) नागरमोथा पीपल काकडाशींगी इन्होंका चूर्ण शहदसें संयुक्त किया बालकके ज्वरातिसार खांसी श्वास और मोहकों नाशताहै।

(६)धातकीबिल्वधन्याकलोध्रेन्द्रयववालकैः।
लेहः क्षौद्रेण बालानां ज्वरातीसारवान्तिजित्२३
रजनीदारुशरलश्रेयसी बृहतीद्वयम्।
पृश्निपर्णी शताह्वा च लीढं माक्षिकसर्पिषा २४
ग्रहणीदीपनं हन्ति मारुतार्तिं सकामलाम्।
ज्वरातीसारपाण्डुघ्नं बालानां सर्वशोथनुत् २५
मिशी कृष्णाञ्जनं लाजा शृङ्गीमरिचमाक्षिकैः।
लेहः शिशोर्विधातव्यश्छर्दिकासज्वरापहः॥२६॥

(६ धातक्यादि) धोके फूल वेलगिरी धनियां लोध इंद्रजव नेत्रवाला शहद इन्हों का लेह बालकोंके ज्वरातिसार छर्दिकों नाशताहै। हलदी देवदार शरल हरडै दोनों कटेली पृश्निपर्णी शतावरी इन्होंकों शहद और घृतमें मिलाय लेह करै। ग्रहणीकों दीपन करताहै वातरोग कामला ज्वरातिसार पांडुरोग सब प्रकारका शोजा बालकोंकेन इन सबे रोगोंकों नाशताहै। सोंप पीपल सुरमा धानकी

खील काकडाशिंगी मिरच शहद इन्होंसें किया लेह बालककों देना छर्दि खांसी और ज्वरकों नाशताहै ।

(७)शृङ्गीं समुस्तातिविषां विचूर्ण्य
लेहं विदध्यान्मधुना शिशूनाम् ।
कासज्वरच्छर्दिभिरर्दितानां
समाक्षिकां चातिविषां तथैकाम् ॥ २७ ॥
पीतं पीतं वमेद्यस्तु स्तन्यं तन्मधुसर्पिषा ।
द्विवार्ताकीफलरसं पञ्चकोलं च लेहयेत् ॥२८॥
आम्रास्थिलाजसिन्धूत्थैर्लेहः क्षौद्रेण छर्दिनुत्२९
पिप्पलीमरिचानां तु चूर्णं समधुशर्करम् ।
रसेन मातुलुङ्गस्य हिक्काच्छर्दिनिवारणम् ॥३०॥
पेटीपाठामूलाज्जम्ब्वः
सहकारवल्कलतः कल्कः ।
इत्येकशश्च पिण्डो
विधृतो हृन्नाभिमध्यताल्वादि ।
छर्दतिसारजं वेगं
प्रबलं धत्ते तदेव नियमेन ॥ ३१ ॥

(७ शृंग्यादिलेहः) कांकडाशींगी नागरमोथा अतीस इन्होंका चूर्ण बनाय शहदसें लेह बनावै अथवा अतीस और शहदका लेह बनावै। खांसी ज्वर छर्दि इन्होंकरकै पीडित किये बालकोंकों देवै । जो बालक दूधकों पीपीकै गेरै उसकों दोनों कटेलीके फलोंका रस पीपल पीपलामूल चव्य चीता सोंठ इन्होंकों घृत शहदसें मिलाय चाटै । आंबकी गुठली धानकी खील सेंधानमक इन्होंका लेह बनाय शहदसें चाटै तो छर्दि नष्ट होतीहै । पीपल और मिरचोंके चूर्णकों शहद खांडमें डाल विजोराके रसें चाटै तो हिचकी और छर्दीका नाश होताहै । पेटिका पाठाकी जड जामनकी जड कोरंटाकी वक्कल इन्होंका अलग अलग कल्क हृदय नाभिका मध्य और तालु आदिमें धारण किया जावै तो नियमसें छर्दि और अतिसारके वेगकों धारता है ।

(८)बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनां
जलं सलोध्रं गजपिप्पली च ।
क्वाथावलेहौ मधुना विमिश्रौ
बालेषु योज्यावतिसारितेषु ॥ ३२ ॥
समङ्गाधातकीलोध्रशारिवाभिः शृतं जलम् ।
दुर्धरेऽपि शिशोर्देयमतीसारे समाक्षिकम् ॥३३॥
नागरातिविषामुस्तबालकेन्द्रयवैः शृतम् ।
कुमारं पाययेत्प्रातः सर्वातीसारनाशनम्॥ ३४ ॥
समङ्गा धातकी पद्मं वयस्या कच्छुरा तथा ।
पिष्टैरेतैर्यवागूः स्यात्सर्वातीसारनाशिनी ॥३५॥
बिल्वमूलकषायेण लाजाश्चैव सशर्कराः ।
आलोड्य पाययेद्बालं छर्द्यतीसारनाशनम्॥३६ ॥
कल्कः प्रियङ्गुकोलास्थिमध्यमुस्तरसाञ्जनैः ।
क्षौद्रलीढः कुमारस्य छर्दितृष्णातिसारनुत् ३७॥

(८ बिल्वक्काथावलेहादि) वेलगिरी धौके फूल नेत्रवाला लोध गजपीपल इन्होंके क्काथ और अवलेह शहदसें संयुक्त किये अतिसारवाले बालकोंकों देने । मजीठ धौके फूल लोध शारिवा इन्होंका काढामें शहद डाल बालककों भयंकर अतिसारमेंभी देना । सोंठ अतीस नागरमोथा नेत्रवाला इंद्रजव इन्होंका क्काथ प्रभातमें बालककों पान करावै । सब अतिसारोंकों नाशता है । मजीठ धौके फूल आंवला लाल धमासा इन्होंकों पीसकर गुडयाणी बनावै । सब अतिसाररोंकों नाशती है । वेलवृक्षकी जडके क्काथकरकै खांडसहित धानकी खीलोंकों आलोडित कर बालककों पान करावै। छर्दि और अतिसारका नाश होताहै। कांगनी वेरकी गुठली कीणिरी(?) नागरमोथा रसोत इन्होंकों शहदमें डाल बालककों देवैं । छर्दि तृषा और अतिसारका नाश होताहै ।

(९)मोचरसः समङ्गा च धातकी पद्मकेशरम् ।
पिष्टैरेतैर्यवागूः स्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥३८॥
लेहस्तैलसिताक्षौद्रतिलयष्ट्याह्वकल्कितः ।
बालस्य रुन्ध्यान्नियतं रक्तस्रावं प्रवाहिकाम् ३९
लाजासयष्टीमधुकं शर्कराक्षौद्रमेव च ।
तण्डुलोदकसंसिक्तं क्षिप्रं हन्ति प्रवाहिकाम् ४०
अङ्कोटमूलमथवा
तण्डुलसलिलेन वटजमूलं वा ।
पीतं हन्त्यतिसारं
ग्रहणीरोगं सुदुर्वारम् ॥ ४१ ॥
सितजीरसर्जचूर्णं
बिल्वदलोत्थाम्बुमिश्रितं पीतम् ।
हन्त्यामरक्तशूलं
गुडसहितः श्वेतसर्जो वा ॥ ४२ ॥

मरिचमहौषधकुटजं
द्विगुणीकृतमुत्तरोत्तरं क्रमशः ।
गुडतक्रयुक्तमेतद्
ग्रहणीरोगं निहन्त्याशु ॥ ४३ ॥
बिल्वशक्राम्बमोचाब्दसिद्धमाजं पयः शिशोः ।
समां सरक्तां ग्रहणीं पीतं हन्यात्त्रिरात्रतः ॥४४॥
तद्वदजाक्षीरसमो जम्बूत्वगुद्भवो रसः ।
गुदपाके तु बालानां पित्तघ्नीं कारयेत्क्रियाम् ४५
रसाञ्जनं विशेषेण पानालेपनयोर्हितम् ॥ ४६ ॥

(९ मोचरसादियवागूः) मोचरस मजीठ धौके फूल कमलकेशर इन्होंकों पीस यवागू अर्थात् गुडयाणी बनानी रक्तातीसारकों नाशतीहै । तेल मिश्री शहद तिल मुलहटी । इन्होंका कल्क बालकके रक्तस्राव और प्रवाहिकाकों रोकताहै । धानकी खील मुलहटी खांड शहद इन्होंकों पानीसें लेवै तो बालकोंकी प्रवाहिकाकों शीघ्र नाशताहै । पिस्ताकी जडकों अथवा वडकी जडकों चावलोंके पानीसें पीवै तो भयंकर अतीसार और ग्रहणीरोगकों नाशताहै । सपेद जीरा अजवला इन्होंके चूर्णकों बेलपत्रके रससें पीवै अथवा गुडसहित श्वेत अजवलाकों खावै तो आम रक्तशूलकों नाशताहै । मिरच सोंठ कूडा उत्तरोत्तर क्रमसें दुगुने ले गुड और तक्रमें मिलाय लेवै तो ग्रहणीरोगकों शीघ्र नाशताहै । वेलगिरी इंद्रजव नेत्रवाला मोचरस नागरमोथा इन्होंमें बकरीके दूधकों सिद्ध कर पीवै तो समान और रक्तसहित ग्रहणीकों तीन रात्रिसें हरताहै । तैसेही बकरीका दूधके समान जामनकी छालका रस डाल पीवै । बालकोंकी गुदा पकजानेमें तो पित्तनाशक क्रिया करनी । पीनेमें और लेपमें रसोत विशेषकरकै हित है ।

(१०)कणोपणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैन्धवैः कृतः ।
मूत्रग्रहे प्रयोक्तव्यः शिशूनां लेह उत्तमः॥ ४७ ॥
घृतेन सिन्धुविश्वैलाहिङ्गुभार्गीरजो लिहन् ।
आनाहं वातिकं शूलं जयेत्तोयेन वा शिशुः४८
हरीतकी वचा कुष्टं कल्कं माक्षिकसंयुतम् ।
पीत्वा कुमारः स्तन्येन मुच्यते तालुपातनात्४९
मुखपाके तु बालानां साम्रसारमयोरजः ।
गैरिकं क्षौद्रसंयुक्तं भेषजं सरसाञ्जनम् ॥ ५० ॥
अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाके प्रलेपनम् ।
दार्वीयष्ट्याभयाजातीपत्रक्षौद्रैस्तथापरम् ॥ ५१ ॥
सह जम्बीररसेन स्नुग्दलरसघर्षणं सद्यः ।
कृतमुपहन्ति हि पाकं मुखजं बालस्य चाश्वेव॥
लावतित्तिरपल्लूररजः पुष्परसान्वितम् ।
द्रुतं करोति बालानां पद्मकेशरवन्मुखम् ॥५२ ॥

(१० पिप्पलीलेहादि) पीपल मिरच मिश्री शहद छोटी इलायची सेंधानमक इन्होंकरकै किया लेह बालकोंके मूत्रग्रहमें प्रयुक्त करना । घृतकरकै सेंधानमक सोंठ इलायची हींग भारंगी इन्होंका चूर्ण मिलाय पानीसें बालक ले तो अफारा वातशूल इन्होंकों जीतताहै । हरडै वच कूट इन्होंका शहदसें संयुक्त किया कल्ककों माके दूधसें पीकै बालक तालुपातसें छूटताहै । बालकोंके मुखपाकमें तो आंवका सत्त लोहाका चूर्ण गेरू रसोत इन्होंकों शहदसें संयुक्त कर चाटै । पीपलकी छाल औ पत्ते शहद इन्होंकरकै मुखपाकमें लेप करना तथा दारुहलदी मुलहटी हरडै जायफल शहद इन्होंसें लेप करै । विजौराका रसकरकै पोहरके पत्तोंका रसकों मुखमें घिसै तो बालकका मुखपाक निश्चय नष्ट होताहै । लावा तीतर चकवा इन्होंका चूर्ण और फूलोंका रस बालकोंके मुखकों सुंदर केशरके समान करताहै ।

(११)दन्तोद्भवोत्थरोगेषु न बालमतियन्त्रयेत् ।
स्वयमप्युपशाम्यन्ति जातदन्तस्य ते गदाः ५४॥
सदन्तो यस्तु वा ये तु दन्ताः प्रोथस्य चोत्तराः
कुर्युस्तस्य कुतः शान्तिं बालस्यापि द्विजातयः ।
दद्यात्सदक्षिणं बालं नैनमेनं प्रपूजयेत् ॥ ५५ ॥
पञ्चमुलीकषायेण सघृतेन पयः शृतम् ।
सशृङ्गवेरं सगुडं शृतं हिक्कार्दितः पिबेत् ॥५६॥
सुवर्णगैरिकस्यापि चूर्णानि मधुना सह ।
लीढ्वा सुखमवाप्नोति क्षिप्रं हिक्कार्दितः शिशुः ॥
चित्रकं शृङ्गवेरं च तथा दन्ती गवाक्ष्यपि ।
चूर्णं कृत्वा तु सर्वेषां सुखोष्णेनाम्बुना पिबेत् ।
श्वासं कासमथो हिक्कां कुमाराणां प्रणाशयेत् ॥
द्राक्षायासाभयाकृष्णाचूर्णं सक्षौद्रसर्पिषा ।
लीढं श्वासं निहन्त्याशु कासं च तमकं तथा ॥
पुष्करातिविषाशृङ्गीमागधीधन्वयासकैः ॥
तच्चूर्णं मधुना लीढं शिशूनां पञ्चकासनुत् ६०॥
दाडिमस्य च बीजानि जीरकं नागकेशरम् ।
चूर्णितं शर्कराक्षौद्रलीढं तृष्णाविनाशनम् ॥६१॥

(११ बालकानां दंतोद्भवविकारे) दंतसें उपजे रोगोंमें बालककी अत्यंत चिकित्सा नहीं करै। जब दंत उपज चुकैंगे तब रोग आपही शांत होजावेंगे। जो बालक दंतोंसहित उपजै अथवा जिस बालकके ऊपरली पंक्तिमें प्रथम दंत उपजैं उस बालककी शांति ब्राह्मण कैसे करैं। दक्षिणासहित उस बालकाकों देवै उसकों अच्छा समझ रक्खै नहीं। पंचमूलका क्वाथ घृत दूध अदरख गुड इन्होंकों पकाकै हिचकीवाला पीवै। सोनाके वर्णवाला गेरूके चूर्णकों शहदके संग चाटकै हिचकीसें पीडित हुवा बालक सुखी होजाताहै। चीता अदरख जमालगोटाकी जड इंद्रायण इन सबका चूर्ण कर सुखपूर्वक गरम पानीसें पीवै। श्वास खांसी हिचकी ये सब बालकोंकी नष्ट होतीहै। दाख धमासा हरडै पीपल इन्होंके चूर्णकों शहद और घृतसें चाटै तो खांसी और तमकश्वास नष्ट होताहै। पोहकरमूल अतीस कांकडाशींगी पीपल धमासा जवासा इन्होंके चूर्णकों शहदसें मिलाय चाटै तो पांच प्रकारकी खांसी नष्ट होतीहै। अनारके बीज जीरा नागकेशर इन्होंका चूर्ण कर खांड शहद डाल चाटै तो तृषा नष्ट होतीहै।

(१२)मायूरपक्षभस्म
व्युषितजलं तेन भावितं पेयम्।
तृष्णाघ्नं वटकाष्टक-
भस्मजलं वक्त्रशोषजिद्धृतं वक्त्रे ॥ ६२ ॥
पिष्टैश्छागेन पयसा दार्वीमुस्तकगैरिकैः।
बहिरालेपनं शस्तं शिशोर्नेत्रामयापहम् ॥६३॥
मनःशिला शङ्खनाभिः पिप्पल्योऽथ रसाञ्जनम्।
वर्तिः क्षौद्रेण संयुक्ता बाले सर्वाक्षिरोगनुत् ६४
मातुः स्तन्यकटुस्नेहकाञ्जिकैर्भावितो जयेत्।
स्वेदाद्दीपशिखोत्तप्तो नेत्रामयमलक्तकः ॥ ६५ ॥
शुण्ठीभृङ्गनिशाकल्कः पुटपाकः ससैन्धवः।
कुकूलकेऽक्षिरोगेषु भद्रमाश्च्योतनं हितम् ॥६६॥
क्रिमिघ्नालशिलादार्वीलाक्षाकाञ्चनगैरिकैः।
चूर्णाञ्जनं कुकूले स्याच्छिशूनां पोथकीषु च६७
सुदर्शनामूलचूर्णादञ्जनं स्यात्कुकूलके ॥ ६८ ॥
गृहधूमनिशाकुष्टवाजिकेन्द्रयवैः शिशोः।
लेपस्तक्रेण हन्त्याशु सिध्मपामाविचर्चिकाः ६९

(१२ बालतृषाशांत्युपायाः) मोरके पंखकी राखमें पानी मिलाय और पीना अथवा वटकाष्टक अर्थात् वडआदि आठोंका भस्म मुखमें धारण किया जावै तो तृषाकों नाशताहै। दारुहलदी नागरमोथा गेरू इन्होंकों बकरीके दूधसें पीसकर बालकके नेत्रोंपर बाहिर लेप करना नेत्ररोगकों नाशताहै। मनशिल शंखकी नाभि पीपल रसोत शहद इन्होंकी बत्ति बनावै। बालकके सब नेत्ररोगोंकों नाशतीहै। लाखकों माताका दूध कडुवा तेल कांजी इन्होंमें भेगोय पीछे दीपककी शिखासें तपाय सेकनेसें नेत्ररोग नष्ट होताहै। सोंठ भंगरा हलदी सेंधानमक इन्होंका पुटपाक बनाय कुकूलकमें और नेत्ररोगोंमें निचोडना हित है। वायविडंग हरताल मनशिल दारुहलदी लाख सोनागेरू इन्होंके चूर्णका अंजन बालकोंके कुकूलक और पोथकी रोगमें हित है। सुदर्शना बूंटीके चूर्णकों आंजनेसें कुकूलकमें हित होताहै। घरका धूमा हलदी कूट आसगंध इंद्रजव इन्होंकों तक्रमें पीस लेपसें बालकके सींप पाम विचर्चिका ये नष्ट होतेहैं।

(१३)पादकल्केऽश्वगन्धायाः क्षीरे दशगुणे पचेत्।
घृतं पेयं कुमाराणां पुष्टिकृद्बलवर्धनम् ॥ ७० ॥

(१३ अश्वगंधघृतम्) घृतसें चौथाईभाग आसगंधका कल्क और दूध दशगुण ले घृतकों सिद्ध कर पीवै तो कुमारोंकों पुष्टि करता है और बलकों बढाताहै।

(१४)चाङ्गेरीस्वरसे सर्पिश्छागक्षीरसमे पचेत्।
कपित्थव्योषसिन्धूत्थसमङ्गोत्पलबालकैः ॥ ७१ ॥
सबिल्वधातकीमोचैः सिद्धं सर्वातिसारनुत्।
ग्रहणीं दुस्तरां हन्ति बालानां तु विशेषतः ७२

(१४ बालचाङ्गेरीघृतम्) चूकका स्वरस और बकरीका दूध बराबरभाग ले घृतकों पकावै। परंतु कैथ सोंठ मिरच पीपल सेंधानमक मजीठ सपेद कमल नेत्रवाला बेलगिरी धोके फूल मोचरस इन्होंका कल्क मिलाय सिद्ध करै। सबप्रकारका अतीसार भयंकर ग्रहणी बालकोंके इन रोगोंकों विशेषकर नाशताहै।

(१५)शङ्खपुष्पी वचा ब्राह्मी कुष्टं त्रिफलया सह।
द्राक्षा सशर्करा शुण्ठी जीवन्ती जीरकं बला७३
शठी दुरालभा बिल्वं दाडिमं सुरसः स्थिरा।
मुस्तं पुष्करमूलं च सूक्ष्मैला गजपिप्पली ॥७४॥
एषां कर्षसमैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
कषाये कण्टकार्याश्च क्षीरे तस्मिंश्चतुर्गुणे ॥७५॥

एतत्कुमारकल्याणघृतरत्नं सुखप्रदम् ।
बलवर्णकरं धन्यं पुष्ट्यग्निबलवर्धनम् ॥ ७६ ॥
छायासर्वग्रहालक्ष्मीक्रिमिदन्तगदापहम् ।
सर्वबालामयहरं दन्तोद्भेदं विशेषतः ॥ ७७ ॥

(१५ कुमारकल्याणघृतम्) शंखपुष्पी वच ब्राह्मी कूट त्रिफला दाख खांड सोंठ जीवंती जीरा खरैंहटी कचूर धमासा वेलगिरी अनार मोचरस शालपर्णी नागरमोथा पोहकरमूल छोटी इलायची गजपीपल ये सब एकएक तोलाभर ले ६४ तोलेभर घृतकों पकावै । और कटेलीका काथमें चौगुना दूध मिलाय सिद्ध करै। यह कुमारकल्याणघृतरत्न है यह सुखकों देता है बल और वर्णकों करता है धन्य है पुष्टि और अग्निकों बढाता है । क्षय सब ग्रह अलक्ष्मी कृमि दंतरोग इनकों हरताहै सब बालकरोगोंकों और विशेषकके दंतोद्भेदरोगकों नाशताहै ।

(१६)वचा कुष्ठं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमथापि च ।
शारिवा सैन्धवं चैव पिप्पलीघृतमष्टमम् ॥७८॥
मेध्यं घृतमिदं सिद्धं पातव्यं च दिने दिने ।
दृढस्मृतिः क्षिप्रमेधाः कुमारो बुद्धिमान्भवेत् ७९
न पिशाचा न रक्षांसि न भूता न च मातरः ।
प्रभवन्ति कुमाराणां पिबतामष्टमङ्गलम् ॥ ८० ॥

(१६ अष्टमङ्गलघृतम्) वच कूट ब्राह्मी सिरसों शारिवा सेंधानमक पीपल आठमा घृत । यह घृत सिद्ध करना बुद्धिकों बढाताहै रोज पीना योग्य है बालक दृढ स्मृतिवाला शीघ्रबुद्धिवाला बुद्धिमान् होताहै । अष्टमंगलघृतकों पीनेवाले बालककों पिशाच राक्षस भूत मातृगण ये नहीं पीडित करतेहैं ।

(१७)लाक्षारससमं सिद्धं तैलं मस्तु चतुर्गुणम् ।
रास्नाचन्दनकुष्ठाब्दवाजिगन्धानिशायुगैः ॥८१॥
शताह्वादारुयष्ट्याह्वमूर्वातिक्ताहरेणुभिः ।
बालानां ज्वररक्षोघ्नमभ्यङ्गाद्बलवर्णकृत् ॥ ८२ ॥

(१७ लाक्षादितैलम्) लाखका रस और तेल बराबरभाग ले और दहीका पानी चौगुना और रास्ना चंदन कूट नागरमोथा आसगंध हलदी दारुहलदी शतावरी देवदार मुलहटी मरोरफली कुटकी रेणुकबीज इन्होंका कल्क मिलाय तेल सिद्ध करै उसका मालिस करनेसें बालकोंके ज्वर और राक्षसदोषकों नाशताहै । बल और वर्णकों करताहै ।

(१८)सहामुण्डितिकोदीच्यकाथस्नानं ग्रहापहम् ।
सप्तच्छदनिशाकुष्ठचन्दनैश्चानुलेपनम् ॥ ८३ ॥
सर्पत्वग्लशुनं मूर्वासर्षपारिष्टपल्लवाः ।
वैडालविड्जालोममेषशृङ्गीवचामधु ॥ ८४ ॥
धूपः शिशोर्ज्वरघ्नोऽयमशेषग्रहनाशनः ।
बलिशान्तीष्टकर्माणि कार्याणि ग्रहशान्तये॥८५॥
मन्त्रश्चायं प्रयोक्तव्यस्तत्रादौ सर्वकामिकः॥८६॥

(१८ ग्रहपीडाहरस्नानादि) रानमूंग मुंडी नागरमोथा इन्होंका काथ बनाय किया स्नान ग्रहदोषकों हरताहै । और शातला हलदी कूट चंदन इन्होंका अनुलेप करना । सांपकी कांचली ल्हश्शन मरोरफली रससों नींबके पत्ते बिलावकी विष्ठा बकरीके रोम मेंढाका शींग वच शहद इन्होंका धूप बालकके ज्वरकों और संपूर्ण ग्रहदोषकों नाशताहै । बलि शांति इष्टकर्म ये सब ग्रहोंकी शांतिके अर्थ करने । तहां आदिमें सर्वकामिक यह मंत्र प्रयुक्त करना ।

(१९)"ॐ नमो भगवते गरुडाय त्र्यम्बकाय सद्यस्तवस्तुतः स्वाहा । ॐ कं पं टं शं वैनतेयाय नमः । ॐ ह्रीं ह्रूं क्षः"। बालदेहप्रमाणेन पुष्पमालां तु सर्वतः । प्रगृह्य मच्छिकाभक्तबलिर्देयस्तु शान्तिकः । "ओंकारी स्वर्णपक्षी बालकं रक्ष रक्ष स्वाहा" । गरुडबलिः। ॐ नारायणाय नमः ॥ ८७ ॥

(१९ बलिमन्त्रो विधिश्च)"ॐनमो भगवते गरुडाय त्र्यंबकाय सद्यस्तवस्तुतः स्वाहा ॐकंपंटंशं वैनतेयाय नमः। ॐह्रींह्रूंक्षः" बालकका देहके प्रमाण करकै पुष्पोंकी माला बनाय सबतर्फसें ग्रहणशांतिरूप भक्तबलि देना "ॐकारी स्वर्णपक्षी बालकं रक्षरक्ष स्वाहा" गरुडबलि यह है "ॐनारायणाय नमः"

(२०)प्रथमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति नन्दना नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । अशुभं शब्दं मुञ्चति आत्कारं च करोति स्तन्यं न गृह्णाति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां कृत्वा शुक्लौदनं शुक्लपुष्पं शुक्लसप्तध्वजाः सप्तप्रदीपाः सप्तस्व-

स्तिकाः सप्तवटकाः सप्तशष्कुलिकाः जम्बुलिकाः सप्तमुष्टिकाः गन्धं पुष्पं ताम्बूलं मत्स्यं मांसं सुरामग्रभक्तं च पूर्वस्यां दिशि चतुष्पथे मध्याह्ने बलिर्देयः । ततोऽश्वत्थपत्रं कुम्भे प्रक्षिप्य शान्त्युदकेन स्नापयेत् । रसोनसिद्धार्थकमेषशृङ्गनिम्बपत्रशिवनिर्माल्यैर्बालकं धूपयेत् । "ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट् स्वाहा " एवं दिनत्रयं बलिं दत्त्वा चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ८८ ॥

(२० प्रथमवर्षमासदिनेषु ग्रहपीडायाम्) प्रथमदिनमें प्रथम महीनेमें अथवा प्रथम वर्षमें नन्दनानाम मातृकाकरकै गृहीत बालककों प्रथम ज्वर हो अशुभशब्दकों छोडै आत्कारकों करै औ चूंचीके दूधकों ग्रहण नहीं करै । उसकी बलि कहेंगे जिसकरकै शुभ प्राप्त हो । नदीके दोनों किनारोंकी माटी लेकै पुतली बनाय सपेद चावल सपेद पुष्प सपेद सात ध्वजा सात दीपक सात मूली सात वडे सात पूरी तीन जामन सात मुष्टि चंदन फूल नागरपान मछलीका मांस मदिरा सुंदर चावल पूर्वदिशामें चौराहाविषै मध्याह्नमें बलि देना । पीछे पीपलका पत्ताकों कलशामें घाल शांतिजलसें स्नान करावै । ल्हश्शन सरसों वकराका शींग नींबके पत्ते गंगाजल इन्होंसें बालककों धूपित करै "ॐनमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट् स्वाहा" ऐसे तीन दिन बलि देकै चौथे दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करावै तिस्सें शुभ प्राप्त होताहै ।

(२१)द्वितीये दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति सुनन्दा नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । चक्षुरुन्मीलयति गात्रमुद्वेजयति न शेते क्रन्दति स्तन्यं न गृह्णाति आत्कारश्च भवति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । तण्डुलं हस्तपृष्ठैकं दधिगुडघृतं च मिश्रितं शरावैकं गन्धताम्बूलं पीतपुष्पं पीतसप्तध्वजाः सप्तप्रदीपाः दशस्वस्तिकाः मत्स्यमांससुरातिलचूर्णानि । पश्चिमस्यां दिशि चतुष्पथे बलिर्देयः । दिनानि त्रीणि सन्ध्यायां ततः शान्त्युदकेन स्नापयेत् । शिवनिर्माल्यसिद्धार्थमार्जारलोम उशीरबालघृतैर्धूपं दद्यात् । "ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट् स्वाहा" । चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत् ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ८९ ॥

(२१ द्वितीयवर्षादौ) दूसरा दिनमें दूसरा महीनामें और दूसरा वर्षमें सुनंदानाम मातृकासें गृहीत बालककों प्रथम ज्वर होता है नेत्रोंकों खोलताहै शरीरकों कंपाता है शयन नहीं करताहै पुकारताहै चूंचीके दूधकों नहीं ग्रहण करताहै आत्कार होताहै । उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरकै शुभ प्राप्त होगा। चावल एक हातका पृष्ठ दही गुड घृत इन्होंसें मिश्रित एक शहनक गंध नागरपान पीला फूल पीली सात ध्वजा सात दीपक दशमूली मछलीका मांस मदिरा तिलोंका चून पश्चिम दिशामें तीन दिन सायंकालमें चौराहाविषे बलि देना । पीछे शांतिजलसें स्नान करावै। गंगाजल सरसों बिलावके रोम खस नेत्रवाला घृत इन्होंकरकै धूप देवै "ॐनमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रीं फट् स्वाहा" चौथे दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करावै पीछे शुभ प्राप्त होताहै ।

(२२)तृतीये दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति पूतना नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गात्रमुद्वेजयति स्तन्यं न गृह्णाति मुष्टिं बध्नाति क्रन्दति ऊर्ध्वं निरीक्षते। बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां कृत्वा गन्धपुष्पताम्बूलरक्तचन्दनं रक्तपुष्पं रक्तसप्तध्वजाः सप्तप्रदीपाः सप्तस्वस्तिकाः पक्षिमांससुरा अग्रभक्तं च दक्षिणस्यां दिशि अपराह्णे चतुष्पथे बलिर्दातव्यः । शिवनिर्माल्यगुग्गुलुसर्षपनिम्बपत्रमेषशृङ्गैर्दिनत्रयं धूपयेत् । "ॐ नमो नारायणाय बालस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ह्रासय ह्रासय स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ९० ॥

(२२तृतीयवर्षादौ) तिसरे दिनमें तिसरे महीनेमें अथवा तीसरे वर्षमें पूतनानाम मातृका ग्रहण करती है उस्सें गृहीत करनेकरकै प्रथम ज्वर हो शरीरकों कंपाताहै चूंचीकों ग्रहण

नहीं करताहै मुष्टिकों बांधताहै पुकारताहै ऊपरकों देखताहै। उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरकै शुभ प्राप्त हो। नदीके दोनों किनारोंकी माटी लेकै पुतली बनाय चंदन फूल नागरपान लाल चंदन लाल फूल सात लाल ध्वजा सात दीपक सात मूली पक्षियोंका मांस मदिरा छुता भात दक्षिणदिशामें अपराह्ण अर्थात् १८ घडी दिन चढे तब चौराहामैं बलि देना। गंगाजल गूगल सरसों नींबके पत्ते बकराके शींग इन्होंसें तीन दिन धूप देवै "ॐनमो नारायणाय बालस्य व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च न्हासय न्हासय स्वाहा" चौथे दिन ब्राह्मणकों भोजन करावै पीछे शुभ प्राप्त होताहै।

(२३)चतुर्थदिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति मुखमुण्डिका नाम मातृका। तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः। ग्रीवां नामयति अक्षिणी उन्मीलयति स्तन्यं न गृह्णाति रोदिति स्वपिति मुष्टिं बध्नाति। बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम्। नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां कृत्वा उत्पलपुष्पं गन्धताम्बूलं दश ध्वजाः चत्वारः प्रदीपाः त्रयोदश स्वस्तिकाः मत्स्यमांससुरा अग्रभक्तं च उत्तरस्यां दिशि अपराह्णे चतुष्पथे बलिं दद्यात्। आद्यमासिको धूपः "ॐ नमो नारायणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम्॥ ९१॥

(२३ चतुर्थवर्षादौ) चौथा दिनमें चौथा महीनामें अथवा चौथा वर्षमें बालककों मुखमंडिकानाम मातृका ग्रहण करतीहै उसके ग्रहण करनेकरकै प्रथम ज्वर होताहै। ग्रीवाकों निवाताहै नेत्रोंकों खोलताहै। चूंचीकों नहीं ग्रहण करताहै रोताहै सोताहै मुष्टिकों बांधताहै। उसकी बलिकों कहेंगे जिसकरकै शुभ प्राप्त हो। नदीके दोनों किनारोंकी माटी लेके पुतली बनाय सुपेद कमलका फूल चंदन नागरपान दश ध्वजा चार दीपक तेरह मूली मछलीका मांस मदिरा छुता भोजन उत्तरदिशामें अपराह्ण अर्थात् १८ घडी दिन चढे पीछे चौराहामैं बलि देना। पहला महीनामें जो धूप कहा है वह देना "ॐनमो नारायणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चौथा दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करवावै तिस्सें शुभ प्राप्त होताहै।

(२४)पञ्चमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति कटपूतना नाम मातृका तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः। गात्रमुद्वेजयति स्तन्यं न गृह्णाति मुष्टिं च बन्धाति बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम्। कुम्भकारचक्रस्य मृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां निर्माय गन्धताम्बूलं शुक्लौदनं शुक्लपुष्पं पञ्चध्वजाः पञ्चप्रदीपाः पञ्चवटकाः ऐशान्यां दिशि बलिर्दातव्यः। शान्त्युदकेन स्नापयेच्छिवनिर्माल्यसर्पनिर्मोकगुग्गुलुनिम्बपत्रवालकघृतैर्धूपं दद्यात्। "ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा।" चतुर्थे दिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम्॥ ९२॥

(२४ पंचमवर्षादौ) पांचमा दिनमें पांचमा महीनामें अथवा पांचमा वर्षमें कटपूतनानाम मातृका ग्रहण करतीहै उस्सें ग्रहण करनेकरकै प्रथम ज्वर होताहै शरीरकों कंपाताहै चूचीके दूधकों नहीं ग्रहण करताहै मुष्टिकों बांधताहै। उसकी बलिकों कहतेहै जिस्सें शुभ हो। कुंभारके चाककी माटीकों ले पुतली बनाय चन्दन नागरपान सुपेद चावल सुपेद फूल पांच ध्वजा पांच दीपक पांच वडे ऐशानदिशामें बलि देना। शांतिजलसें स्नान करावै। गंगाजल सांपकी कांचली गूगल नींबके पत्ते नेत्रवाला घृत इन्होंकरकै धूपकों देवै "ॐनमो नारायणाय अमुकस्य व्याधिं चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा" चौथे दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करवावै तिसके अनंतर शुभ होताहै।

(२५)षष्ठे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति शकुनिका नाम मातृका। तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः। गात्रभेदं च दर्शयति दिवारात्रावुत्थानं भवति ऊर्ध्वं निरीक्षते। बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम्। पिष्टकेन पुत्तलिकां कृत्वा शुक्लपुष्पं रक्तपुष्पं पीतपुष्पं गन्धताम्बूलं दश प्रदीपाः दशध्वजाः दशस्वस्तिकाः दशमुष्टिकाः दशवटकाः क्षीरजम्बूडिका मत्स्यमांससुरा आग्नेय्यां दिशि निष्क्रान्ते मध्याह्ने बलिं दापयेत्। शान्त्युदकेन स्नापयेत्। शिवनिर्माल्यरसोनगुग्गुलुसर्पनिर्मोकनिम्बपत्रघृतैर्धूपं दद्यात्। "ॐनमो नारायणाय चूर्णय चूर्णय

हन हन स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ९३ ॥

(२५ षष्ठवर्षादौ) छठा दिनमें छठा महीनामें अथवा छठा वर्षमें शकुनिकानाम मातृका ग्रहण करतीहै उसकरके ग्रहण करनेकरकै प्रथम ज्वर होताहै शरीरके विदारणकों दिखाताहै दिनराति उठा रहताहै ऊपरकों देखताहै । उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरकै शुभ प्राप्त हो । पीठीसें पुतली बनाय सपेद पुष्प रक्त पुष्प पीला पुष्प चंदन नागरपान दश दीपक दश ध्वजा दश मूली दश मुष्टिक दश वडे दूध जंबूडिका मछलीका मांस मदिरा अग्निदिशामें मध्याह्न निकसेपीछे बलिकों देवै । शांतिजलसें स्नान करवावै गंगाजल स्हश्शान गूगल सांपकी कांचली नींबके पत्ते घृत इन्हींसें धूप देवै "ॐनमो नारायणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा" चौथा दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करवावै तिस्सें पीछे शुभ उपजताहै ।

(२६)सप्तमे दिवसे मासे वर्षे वा यदा गृह्णाति शुष्करेवती नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गात्रमुद्वेजयति मुष्टिं वध्नाति रोदिति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । रक्तपुष्पं शुक्लपुष्पं गन्धताम्बूलं रक्तौदनं कृशरास्त्रयोदश स्वस्तिकाः मत्स्यमांससुरास्त्रयोदशध्वजाः पञ्च प्रदीपाः पश्चिमदिग्भागे ग्रामनिष्काशे अपराह्णे वृक्षमाश्रित्य बलिं दद्यात् । शान्त्युदकेन स्नानं गुग्गुलुमेषशृङ्गीसर्षपोशीरवालकघृतैर्धूपयेत् । "ॐ नमो नारायणाय दीप्ततेजसे हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राणह्मं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम्॥९४॥

(२६ सप्तमवर्षादौ) सातमा दिनमें सातमा महीनामें और सातमा वर्षमें जब शुष्करेवतीनाम मातृका ग्रहण करतीहै उसके ग्रहणमात्रकरकै प्रथम ज्वर होताहै शरीरकों कंपाताहै मुष्टिकों बांधताहै रोताहै। उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरकै शुभ प्राप्त होताहै। लाल फूल सुपेद फूल चंदन नागरपान लाल चावल कसार अथवा खीचडी तेरह मूले मछलीका मांस मदिरा तेरह ध्वजा पांच दीपक ग्रामसे पश्चिम दिशामें निकसकै दुपहरापीछे वृक्षकों आश्रित हो बलि देवै । शांतिजलसें स्नान और गूगल मेंढाका शींग सरसों खस नेत्रवाला घृत इन्होंकरकै धूप देवै "ॐनमो नारायणाय दीप्ततेजसे हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चौथा दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करावै तिस्सें शुभ प्राप्त होताहै ।

(२७)अष्टमे दिवसे मासे वार्षे वा यदि गृह्णाति अर्यका नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गृध्रगन्धः पूतिगन्धश्च जायते आहारं च न गृह्णाति उद्वेजयति गात्राणि । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । रक्तपीतध्वजाः चन्दनं पुष्पं शष्कुल्यः पर्पटिकाः मत्स्यमांससुराजम्बुडिकाः प्रत्यूषे बलिर्देयः प्रान्तरे । मन्त्रः "ॐनमो नारायणाय चतुर्दिङ्मोक्षणाय व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च ॐ न्हीं फट् स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ९५ ॥

(२७अष्टमवर्षादौ) आठमा दिनमें आठमा महीनामें आठमा वर्षमें जब अर्यकानाम मातृका ग्रहण करतीहै उसकरकै ग्रहण करनेसें प्रथम ज्वर होताहै गीधकैसा गंध और दुर्गंध उपजताहै और भोजनकों नहीं ग्रहण करताहै अंगोंकों कंपाताहै। उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरकै शुभ उपजता है । लाल और पीली ध्वजा चन्दन फूल पूरी पापडी मछलीका मांस मदिरा जंबूडिका। प्रभातमें बलि देना प्रांतरमें मंत्रहै " ॐनमो नारायणाय चतुर्दिशमोक्षणाय व्याधिं हन हन मुञ्च मुञ्च दह दह ॐ न्हीं फट् स्वाहा" चौथे दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करवावै तिस्सें शुभ उत्पन्न होताहै ।

(२८)नवमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति भूसूतिका नाम मातृका। तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । नित्यं छर्दिर्भवति गात्रभेदं दर्शयति मुष्टिं वध्नाति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । नद्युभयतटमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां निर्माय शुक्लवस्त्रेण वेष्टयेच्छुक्लपुष्पं गन्धताम्बूलं शुक्लत्रयोदशध्वजाः त्रयोदशदीपाः त्रयोदशस्वस्तिकाः त्रयोदशपुत्तलिकाः त्रयोदशमत्स्यपुत्तलिकाः मत्स्यमांससुराः उत्तरदिग्भागे ग्रामनिष्काशे बलिं दद्यात् । शान्त्युदकेन स्नानं गुग्गुलुनिम्बपत्रगोशृङ्गश्वेतसर्षप-

घृतैर्धूपं दद्यात् । मन्त्रः "ॐनमो नारायणाय चतुर्भुजाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा ।" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सम्पद्यते शुभम् ॥ ९६ ॥

(२८ नवमवर्षादौ) नवमा दिनमें नवमा महीनामें अथवा नवमा वर्षमें भूसूतिकानाम मातृगण ग्रहण करताहै उसकरकै ग्रहण करनेसें प्रथम ज्वर होताहै नित्य छर्दि होतीहै अंगके विदारणकों दिखाताहै मुष्टिकों बांधताहै । उसकी बलिकों कहतेहैं जिसकरकै शुभ उपजता है। नदीके दोनों किनारोंकी माटी लेकै पुतली बनाय सुपेद वस्तुसें लपेटै सुपेद फूल चंदन नागरपान तेरह सुपेद ध्वजा तेरह दीपक तेरह मूली तेरह पुतली तेरह मछलीकी पुतली मछलीका मांस मदिरा ग्रामसें उत्तर दिशासें निकसकै बलि देनी शांतिजलसें स्नान करना । गूगल नींबके पत्ते गौका शींग सुपेद सरसों घृत इन्होंसें धूपकों देवै और मंत्र यह है " ॐनमो नारायणाय चतुर्भुजाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चौथा दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करवावै तिस्सें शुभ उत्पन्न होताहै ।

(२९)दशमे दिवसे मासे वर्षे वा गृह्णाति निर्ऋता नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । गात्रमुद्वेजयति आत्कारं करोति रोदिति मूत्रं पुरीषं च भवति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । पारावारमृत्तिकां गृहीत्वा पुत्तलिकां निर्माय गन्धताम्बूलं रक्तपुष्पं रक्तचन्दनं पञ्चवर्णध्वजाः पञ्चप्रदीपाः पञ्चस्वस्तिकाः पञ्चपुत्तलिकाः मत्स्यमांससुराः वायव्यां दिशि बलिं दद्यात् । काकविष्ठागोमांसगोशृङ्गरसोनमार्जारलोमनिम्बपत्रघृतैर्धूपयेत् । "ॐनमो नारायणाय चूर्णितहस्ताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सुस्थो भवति बालकः ॥ ९७ ॥

(२९ दशमवर्षादौ) दशमा दिनमें दशमा महीनामें अथवा दशमा वर्षमें निर्ऋतानाम मातृका ग्रहण करतीहै उसकरके ग्रहण करनेसें प्रथम ज्वर होताहै शरीरकों कंपाताहै अत्कारकों करताहै रोताहै मूत्र और विष्ठा अति होतीहै । उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरकै शुभ होवै। समुद्रकी माटी लेकै पुतली बनाय चंदन नागरपान लाल फूल लाल चंदन पांचवर्णोंवाली ध्वजा पांच दीपक पांच मूली पांच पुतली मछलीका मांस मदिरा वायव्यदिशामें बलि देना । काककी वींट गौका मांस गौका शींग ल्हश्शन बिलावके रोम नींबके पत्ते घृत इन्होंसें धूप देवै "ॐनमो नारायणाय चूर्णितहस्ताय मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चौथा दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करवावै तिस्सें सुस्थ बालक होताहै ।

(३०)एकादशे दिवसे मासे वर्षे वा यदि गृह्णाति पिलिपिच्छिका नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । आहारं न गृह्णाति ऊर्ध्वदृष्टिर्भवति गात्रभङ्गो भवति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । पिष्टकेन पुत्तलिकां कृत्वा रक्तचन्दनरक्तं च तस्या मुखं दुग्धेन सिञ्चेत् । पीतपुष्पं गन्धताम्बूलं सप्तपीतध्वजाः सप्तप्रदीपाः अष्टौ वटकाः अष्टौ शष्कुलिकाः अष्टौ पूरिकाः मत्स्यमांससुराः पूर्वस्यां दिशि बलिर्दातव्यः । शान्त्युदकेन स्नानं शिवनिर्माल्यगुग्गुलुगोशृङ्गसर्पनिर्मोकघृतैर्धूपयेत् । "ॐनमो नारायणाय मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सुस्थो भवति बालकः ॥ ९८ ॥

(३० एकादशवर्षादौ) ग्यारहवा दिनमें आरहवा महीनामें अथवा ग्यारहवा वर्षमें जब पिलिपिच्छिकानाम मातृका ग्रहण करतीहै उसके ग्रहणमात्रसें प्रथम ज्वर होताहै भोजनको नहीं ग्रहण करताहै ऊपरकों दृष्टि होतीहै अंगभंग होताहै। उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरकै शुभ होताहै । पीठीसें पुतली बनाय लाल चंदनसें पुतलीके मुखकों लाल बनाय दूधसें मुखकों सींचै । पीला फूल चंदन नागरपान सात पीली ध्वजा सात दीपक आठ वडे आठ पूरी आठ कचौरी मछलीका मांस मदिरा पूर्वदिशामें बलि देना शांतिजलसें स्नान और गंगाजल गूगल गौका शींग सांपकी कांचली घृत इन्होंसें धूप देना "ॐनमो नारायणाय मुञ्च मुञ्च स्वाहा" चौथे दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करवावै तिस्सें बालक सुस्थ होताहै ।

(३१)द्वादशे दिवसे मासे वर्षे वा यदि गृह्णाति कामुका नाम मातृका । तया गृहीतमात्रेण प्रथमं भवति ज्वरः । विहस्य वादयति करेण

तर्जयति गृह्णाति क्रामति निःश्वसिति मुहुर्मुहुराहारं न करोति । बलिं तस्य प्रवक्ष्यामि येन सम्पद्यते शुभम् । क्षीरेण पुत्तलिकां कृत्वा गन्धं ताम्बूलं शुक्लपुष्पं शुक्लसप्तध्वजाः सप्तप्रदीपाः सप्तपूपिकाः करस्थेन दधिभक्तेन सर्वकर्मबलिं दद्याच्छान्त्युदकेन स्नापयेत् । शिवनिर्माल्यगुग्गुलुसर्षपघृतैर्धूपयेत् । "ॐ नमो नारायणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा" चतुर्थदिवसे ब्राह्मणं भोजयेत्ततः सुस्थो भवति बालकः ॥९९॥

इति बालरोगचिकित्सा ।

(३१ द्वादशवर्षादौ) बारहमें दिन बारहमें महीने अथवा बारहमें वर्षमें जब कामुकानाम मातृका ग्रहण करतीहै उस्सें ग्रहणमात्रकरकै प्रथम ज्वर होताहै बहुत हंसके बादताहै हातसें झिडकताहै ग्रहण करताहै पुकारताहै वारंवार सुबकताहै भोजन नहीं करताहै । उसकी बलिकों कहतेहै जिसकरके शुभ हो । दूधसें पुतली बनाय चंदन नागरपान सुपेद फूल सुपेद सात ध्वजा सात दीपक सात पूडी हाथमें स्थित किये दहीभातसें सब कर्म बलिकों देवै। शांतिजलसें स्नान करावै। गंगाजल गूगल सरसों घृत इन्होंसें धूप देवै "ॐनमो नारायणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा" चौथे दिनमें ब्राह्मणकों भोजन करावै तिस्सें सुस्थ अर्थात् आनंदित होताहै यहां रावणकृत कुमारतंत्र समाप्त हुवा ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां बालरोगचिकित्सा ।

अथ विषाधिकारः ६४

अब विषके अधिकारकों कहतेहै ।

(१)अरिष्टाबन्धनं मन्त्रं प्रयोगश्च विषापहः ।
दंशनं दंशकस्याहेः फलस्य मृदुनोऽपि वा ॥१॥

मूलं तण्डुलवारिणा पिबति यः
प्रत्यङ्गिरासम्भवं
निष्पिष्टं शुचि भद्रयोगदिवसे
तस्याहिभीतिः कुतः ।
दर्पादेव फणी यदा दशति तं
मोहान्वितो मूलपं
स्थाने तत्र स एव याति नियतं
वक्त्रं यमस्याचिरात् ॥ २ ॥

मसूरं निम्बपत्राभ्यां खादेन्मेषगते रवौ ।
अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विषात्तस्य न संशयः ३
धवलपुनर्नवजटया तण्डुलजलपीतया च पुष्यर्क्षे ।
अपहरति विषधरविषोपद्रवमावत्सरं पुंसाम् ४
गृहधूमो हरिद्रे द्वे समूलं तण्डुलीयकम् ।
अपि वासकिनादष्टः पिबेद्दधि घृताप्लुतम् ।
कूलिकामूलनस्येन कालदष्टोऽपि जीवति ॥ ५ ॥
श्लेष्मणः कर्णगूथस्य वामानामिकया कृतः ।
लेपो हन्याद्विषं घोरं नृमूत्रासेचनं तथा ॥ ६ ॥
शिरीषपुष्पस्वरसे भावितं श्वेतसर्षपम् ।
सप्ताहं सर्पदष्टानां नस्यपानाञ्जने हितम् ॥ ७ ॥
द्विपलं नतकुष्ठाभ्यां घृतक्षौद्रं चतुःपलम् ।
अपि तक्षकदष्टानां पानमेतत्सुखप्रदम् ॥ ८ ॥
वन्ध्यकर्कोटजं मूलं छागमूत्रेण भावितम् ।
नस्यं काञ्जिकसंयुक्तं विषोपहतचेतसः ॥ ९ ॥

(१ विषहरा उपायाः) अरिष्टाबंधन मंत्र और प्रयोग विषकों नाशताहै अथवा टरकांकडीके कोमल फलका सेवनाभी विषकों हरताहै । जो मनुष्य प्रत्यंगिराके मूलकों बिना पीसै सुंदर मंगलसें युत दिनमें चावलोंका पानीके संग पीवै उसकों सर्पसें भय नहीं होता। जो कदाचित् मोहसें युत हुआ सर्प उसकों डस लेताहै तो उसी स्थानमें वह सर्प शीघ्र मरजाताहै । मसूरकों नींबके पत्तोंसें मेषके सूर्यमें खावै उसकों एकवर्षतक सर्पसें भय नहीं होता इसमें संशय नहीं । धोली नखीकी जडकों चौलाईमें मिलाकै पुष्यनक्षत्रमें पीवै तो पुरुषोंकूं एक वर्षतक विषधारीका विषके उपद्रवकों हरताहै । घरका धूमा हलदी दारुहलदी मूलसहित चौलाई इन्होंमें दही और घृत मिलाय पीवै तो वासुकीसर्पसें डसा हुआभी अच्छा होताहै । जमालगोटाकी जडकी नस्यकरकै कालसें दष्ट हुआभी नहीं जीवताहै अथवा कानके मलसें वामी नासिकामें किया लेप तथा मनुष्यके मूत्रसें सींचना घोरविषकों हरताहै । शिरसका फूलके स्वरसमें भिगोया सुपेद सरसों सात दिनतक सर्पसें डसोंकों नस्य और पीने अंजनमें हित है। तगर और कूट आठ तोले घृत और शहद सोलह तोले लेकै तक्षक सर्पसें डसे हुओंकोंभी प्यावै तो सुख देताहै । वांझ ककोडाकी जडकों बकराके मूत्रसें भावित कर कांजी मिलाय विषसें उपहत हुआ चित्तवालेकों नस्य देना।

(२)त्रिवृद्विशालामधुकं हरिद्रे
मञ्जिष्ठवर्गो लवणं च सर्वम् ।
कटुत्रिकं चैव विचूर्णितानि
शृङ्गे निदध्यान्मधुना युतानि ॥ १० ॥
एषोऽगदो हन्त्युपयुज्यमानः
पानाञ्जनाभ्यञ्जननस्ययोगैः ।
अवार्यवीर्यो विषवेगहन्ता
महागदो नाम महाप्रभावः ॥ ११ ॥
पीते विषे स्याद्वमनं च त्वक्स्थे
प्रदेहसेकादि सुशीतलं च ॥ १२ ॥
कपित्थमांसं ससिताक्षौद्रं कण्ठगते विषे ।
लिह्यादामाशयगते ताभ्यां चूर्णपलं नतात्॥१३॥
विषे पक्वाशयगते पिप्पलीरजनीद्वयम् ।
मञ्जिष्ठां च समं पिष्ट्वा गोपित्तेन नरः पिबेत्१४
रजनीसैन्धवक्षौद्रसंयुक्तं घृतमुत्तमम् ।
पानं मूलविषार्तस्य दिग्धविद्धस्य चेष्यते॥१५॥
सितामधुयुतं चूर्णं ताम्रस्य कनकस्य वा ।
लेहः प्रशमयत्युग्रं सर्वसंयोगजं विषम् ॥ १६ ॥
अङ्कोटमूलनिःक्वाथं फाणितं सघृतं लिहेत् ।
तैलाक्तः स्विन्नसर्वाङ्गो गरदोषविषापहः ॥१७॥
कटभ्यर्जुनशैरीयशेलुक्षीरिद्रुमत्वचः ।
कषायचूर्णकल्काः स्युः कीटलूताव्रणापहाः॥१८॥
अगारधूममञ्जिष्ठारजनीलवणोत्तमैः ।
लेपो जयत्याखुविषं कर्णिकायाश्च पानतः ॥ १९॥

(२ त्रिवृतादिचूर्णम्) निशोत इंद्रायण महुआ हलदी दारुहलदी मंजिष्ठवर्ग सब नमक सोंठ मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण कर शहदसें युत बनाय शींगमें धरै। यह अगद पान अंजन मालिस और नस्यमें प्रयुक्त करना इसका वीर्य निष्फल नहीं होताहै। विषके वेगकों नाशताहै महाप्रभाववाला महागदनामक यह है । विषके पीनेमें वमन कराना खालमें विष स्थित हो तो लेप सेक आदि शीतल कर्म करना । कण्ठमें विष प्राप्त हो तो कपित्थ अर्थात् वानरविशेषके मांसमें मिश्री और शहद डाल खावै आमाशयमें विष प्राप्त हो तो ४ तोलेभर तगरका मिश्री शहद डाल चूर्णमें चाटै । पक्वाशयमें प्राप्त हुये विषमें पीपल हलदी दारुहलदी मंजीठ ये बराबरभाग लेकै गौके पित्तेसें पीस मनुष्य पीवै । हलदी सेंधानमक शहद घृत इन्होंका पीना दग्ध और विद्ध किये मूलके विषसें पीडितकों हितहै। तांबाका अथवा सोनाके चूरणमें मिश्री शहद डाल चाटै तो सब संयोगज विषकों शांत करताहै। पिस्तेकी जडके क्वाथमें राब और घृत डाल चाटै। तेलसें भिगोया शरीरवाला और पसीनासें युत किये संपूर्ण अंगोंवाला मनुष्य गर अर्थात् कृत्रिम विषका दोष और विषकों नाशताहै । मालकांगनी कौहवृक्ष कुरंटा ल्हेसवा दूधवाले वृक्ष इन्होंकी छालके क्वाथ चूर्ण और कल्क कीडा और मकडीके घावकों नाशतेहै । घरका धूम मंजीठ हलदी सेंधानमक इन्होंका लेप और अरनीका पान मूषाके विषकों नाशताहै ।

(३)यः कासमर्दनपत्रं वदने प्रक्षिप्य कर्णे फूत्कारम्।
मनुजो ददाति शीघ्रं जयति विषं वृश्चिकानां सः ॥
दंशे भ्रमेणविधिना वृश्चिकविषहृत्कुचैरपदगुडिका
पुरधूपपूर्वमर्कच्छदमिव पिष्ट्वा कृतो लेपः ॥ २१ ॥
जीरकस्य कृतः कल्को घृतसैन्धवसंयुतः ।
सुखोष्णो वृश्चिकार्तानां सुलेपो वेदनापहः २२
अमलाघर्षणं दंशे कण्टकं च तदुद्धरेत् ।
करणे विषजे लेपात्फणिज्जकरसोऽथवा ॥ २३ ॥
कुङ्कुमकुनटीकर्कटहरितालैः कुसुम्भसंमिलितैः ।
कृतगुडिकाभ्रामणतो विदष्टगोधासरटविषजित्
अङ्कोटपत्रधूमो मीनविषं झटिति विघटयेच्छृङ्गी ।
गोधावरटीविषमिवालेपेन कुटजकपालिजटा ॥
कनकोडुंबरफलमिव तंडुलजलपिष्टंपीतमपहरति
कनकदलद्रवघृतगुडदुग्धपलैकं शुनां गरलम्
लेप इव भेकगरलं शिरीषबीजैः स्नुहीपयःसिक्तैः
हरति गरलं त्र्यहमशिताङ्कोटजटाकुष्ठसम्मिलिता।
मरिचमहौषधबालकनागाह्वैर्मक्षिकाविषे लेपः ।
लालाविषमपनयतोमूलेमिलितेपटोलनीलिकयोः।

(३ वृश्चिकविषे) जो कासमर्दका पत्ताकों मुखमें घालकै कानमें फूत्कारकों करताहै वह वीछूके विषकों शीघ्र नाशताहै । भ्रमकरकै डसनेमें विधिकरकै मनशिलकी गोलीकों पीस किया लेप विछूके विषकों हरताहै जैसे गूगलकी धूप आकके पत्तोंकों । जीराका कल्क बनाय घृत और सेंधानमकसें युत कर अल्प गरम कर वीछूसें पीडितोंकों किया लेप पीडाकों नाशताहै। दंशमें आंवलासें घिसै और दंशमांहसें कांटाकों निकासै अथवा सुपेद मरुवाके

रससें लेप करै। केशर मनशिल काकडाशिंगी कुसुंभा इन्होंकों मिलाय गोली वनाय भ्रमानेसें गोह और किरलिया आदिका विष नष्ट होताहै। चिरोंजीवृक्षके पत्तोंका धूमा मछलीके विषकों शीघ्र नाशताहै तथा काकडाशिंगीभी नाशती है। गोह मकडी इन्होंके विषकों कूडा और वायविडंगकी जड नाशतीहै। धतूरा और गूलरके फलकों चावलोंके पानीसें पीस उसमें धतूराके पत्तोंका रस घृत गुड दूध ये सब मिलाय ४ तोलेभर ले पीवै तो कुत्तोंका विष नष्ट होताहै। शिरसके बीजोंकों थोहरके दूधसें पीस लेप करै तो मेंडकका विष नष्ट होताहै। चिरोंजीकी जडमें कूट मिलाय तीन दिन खावै तो गरलका नाश होताहै। मिरच सोंठ नेत्रवाला कौहवृक्षकी जड इन्होंका लेप माखीके विषकों हरताहै। परवल और नीलकी जड मिलाके किया लेप लालसें उपजा विषकों हरतेहै।

(४)सोमवल्कोऽश्वकर्णश्च गोजिह्वा हंसपाद्यपि।
रजन्यौ गैरिकं लेपो नखदन्तविषापहः ॥ २९ ॥
वचा हिङ्गु विडङ्गानि सैन्धवं गजपिप्पली।
पाठाप्रतिविषा व्योषं काश्यपेन विनिर्मितम् ३०
दशाङ्गमगदं पीत्वा सर्वकीटविषं जयेत्।
कीटदष्टक्रियाः सर्वाः समानाः स्युर्जलौकसाम्
पृक्काप्लवस्थौणेय-
काक्षी शैलेयरोचनातगरम्।
ध्यामकं कुङ्कुमं मांसी
सुरसाग्रैलालकुष्ठघ्नम् ॥ ३२ ॥
बृहतीशिरीषपुष्प-
श्रीवेष्टकपद्मचारटिविशालाः।
सुरदारुपद्मकेशर-
शारवकमनःशिलाकौन्त्यः ॥ ३३ ॥
जात्यर्कपुष्पसर्षप-
रजनीद्वयहिङ्गुपिप्पलीद्राक्षाः।
जलमुद्गपर्णीमधुक-
मदनकमथसिन्धुवाराश्च ॥ ३४ ॥
सम्पाकलोध्रमयूरकगन्धफलीलाङ्गलीविडङ्गाः।
पुष्ये समुद्धृत्य समं पिष्टा गुडिका विधेया स्युः
सर्वविषघ्नो जयकृ-
द्विषमृतसञ्जीवनो ज्वरनिहन्ता।

पेयविलेपनधारण-
धूमग्रहणैर्गृहस्थश्च ॥ ३६ ॥
भूतविषजन्त्वलक्ष्मी
कार्मणमन्त्राग्न्यशन्यरीन्हन्यात्।
दुःस्वप्नस्त्रीदोषा-
नकालमरणाम्बुचौरभयम् ॥ ३७ ॥
धनधान्यकार्यसिद्धि-
श्रीपुष्टिवर्णायुर्वर्धनो धन्यः।
मृतसञ्जीवन एव
प्रागमृताद्ब्रह्मणाभिहितः ॥ ३८ ॥

(**४ सोमवल्कादयो लेपाः**) सुपेद खैर शालईवृक्ष गोभी लाल लज्जावंती हलदी दारुहलदी गेरू इन्होंका लेप नख और दंतके विषकों नाशताहै। वच हींग वायविडंग सेंधानमक गजपीपल सोनापाठा अतीश सोंठ मिरच पीपल काश्यपनें रचाहै। इस दशाङ्ग अगदकों पीकै सब कीडोंके विषकों जीतताहै। कीडासें डसनेमें जो क्रिया कहीहैं वे सब जलवासी जीवोंके डसनेमें समान है। पृक्का क्षुद्रमोथा गठौना शिलाजीत गोरोचन तगर रोहिषतृण केसर वालछड तुलसी त्रिफला इलायची खैर बडी कटेली शिरसका फूल श्रीवेष्टधूप कमल स्थलकमलिनी इंद्रायण देवदार कमलकेसर शारिवा मनशिल रेणुकबीज चमेलीके फूल आकके फूल सरसों हलदी दारुहलदी हींग पीपल दाख नेत्रवाला मूंगपर्णी महुवा मैनफल संभालू अमलतास लोध इलायची पृष्ठपर्णी वायविडंग ये सब समान पुष्यनक्षत्रमें लेकै गोलियां बनानी। सब विषोंकों नाशताहै। जय करताहै विषसे माराकों जीवाताहै। ज्वरकों हरताहै इसकों पीना लेप धारण और धूमा ग्रहण इन्होंके द्वारा लेवै। भूत विष जंतु अलक्ष्मी मंत्र अग्नि विजली वैरी इन्होंकों नाशताहै। दुःस्वप्न स्त्रीदोष अकालमरण जलभय चौरभय इन्होंकों नाशताहै। धन धान्य कार्यसिद्धि लक्ष्मी पुष्टि वर्ण आयु इन्होंकों बढाताहै। धन्य है। यह मृतसंजीवन ब्रह्माजीनें अमृतसें पहले कहाहै। यह मृतसंजीवन अगद है।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां विषरोगचिकित्सा।

रसायनाधिकारः ६९

अब रसायन अधिकार कहतेहै।

(१)यज्जराव्याधिविध्वंसि भेषजं तद्रसायनम्।

पूर्वे वयसि मध्ये वा शुद्धदेहः समाचरेत् ॥१॥
नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रसायनो विधिः ।
नाभाति वाससि म्लिष्टे रङ्गयोग इवार्पितः ॥२॥
गुडेन मधुना शुण्ठ्या कृष्णया लवणेन वा ।
द्वे द्वे खादन्सदा पथ्ये जीवेद्वर्षशतं सुखी ॥ ३ ॥
सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडः क्रमात् ।
वर्षादिष्वभया सेव्या रसायनगुणैषिणा ॥ ४ ॥
त्रैफलेनायसीं पत्रीं कल्केनालेपयेन्नवाम् ।
तमहोरात्रिकं लेपं पिबेत्क्षौद्रोदकाप्लुतम् ॥ ५ ॥
प्रभूतस्नेहमशनं जीर्णे तस्मिन्प्रयोजयेत् ।
अजरोऽरुकसाभ्यासाज्जीवेच्चापि समाः शतम् ॥

(१ रसायनप्रकारः) जो बुढापा और व्याधिकों नाशनेवाला औषध हो वह रसायन कहाताहै । प्रथम अवस्थामें अथवा मध्य अवस्थामें शुद्ध शरीरवाला मनुष्य आचरण करै । नहीं शुद्ध किया शरीवालाकों रसायनविधि प्रयुक्त नहीं करना । जैसे मैला हुआ वस्त्रमें अर्पित किया रंगका योग नहीं प्रकाशित होताहै । गुड शहद सोंठ पीपल और नमक इन्होंमेंसे एक कोईसाके संग दोदो हरडोंकों खाता हुआ मनुष्य १०० वर्षतक जीवताहै और सुखी रहताहै । सेंधानमक खांड सोंठ पीपल शहद गुड इन्होंकरकै क्रमसें वर्षा आदि ऋतुओंमें रसायनके गुण चाहने करनेवालानें हरडै सेवनी । त्रिफलाकरकै लोहाकी नई पत्रीकों लीपै उस दिनरातिभर रहे लेपकों शहद पानीसें युत कर पीवै । उसके जीर्ण होनेपर बहुत स्नेहवाला भोजन देना । इसके अभ्यासकरकै बुढापासें रहित पीडासें रहित होकै १०० वर्षतक जीवताहै ।

(२)पञ्चाष्टौ सप्तदश वा पिप्पलीः क्षौद्रसर्पिषा ।
रसायनगुणान्वेषी समामेकां प्रयोजयेत् ॥ ७ ॥
तिस्रस्तिस्रस्तु पूर्वाह्णे भुक्ताग्रे भोजनस्य च ।
पिप्पल्यः किंशुकक्षारभाविता घृतभर्जिताः ॥८॥
प्रयोज्या मधुसंमिश्रा रसायनगुणैषिणा ।
जेतुं कासं क्षयं श्वासं शोषं हिक्कां गलामयम्९
अर्शांसि ग्रहणीदोषं पाण्डुतां विषमज्वरम् ।
वैस्वर्यं पीनसं शोषं गुल्मं वातबलासकम् ॥१०॥
जरणान्तेऽभयामेकां प्राग्भक्ते द्वे बिभीतके ।
भुक्त्वा तु मधुसर्पिर्भ्यां चत्वार्यामलकानि च ११
प्रयोजयेत्समामेकां त्रिफलाया रसायनम् ।
जीवेद्वर्षशतं पूर्णमजरोऽव्याधिरेव च ॥ १२ ॥

(२ त्रिफलायारसायनम्) पांच, आठ, अथवा सात दश पीपलोंकों शहद घृतसें रसायनगुणकी इच्छावाला १ वर्षपर्यंत लेवै । प्रभातमें तीन और भोजनके अग्रभागमें तीन केशूके खारमें भावित करी और घृतसें भूनी हुई पीपली शहदसें युत कर रसायनका गुणकी इच्छावालानें सेवनी । खांसी क्षय श्वास शोजा हिचकी गलरोग बवासीर ग्रहणीदोष पांडुता विषमज्वर स्वरभेद पीनस शोष गुल्म वात कफ ये नष्ट होतेहैं । भोजन करनेके अंतमें एक हरडै दिनके भोजनमें दो बहेडे और चार आंवले इन्होंकों शहद घृतसें खावै । १ वर्षपर्यंत यह त्रिफलाका रसायन है । बुढापा और व्याधिसें रहित होकै १०० वर्षपर्यंत जीवताहै ।

(३)मण्डूकपर्ण्याः स्वरसः प्रयोज्यः
क्षीरेण यष्टीमधुकस्य चूर्णम् ।
रसो गुडूच्यास्तु समूलपुष्प्याः
कल्कः प्रयोज्यः खलु शङ्खपुष्प्याः ॥१३॥
आयुःप्रदान्यामयनाशकानि
बलाग्निवर्णस्वरवर्धनानि ।
मेध्यानि चैतानि रसायनानि
मेध्या विशेषेण तु शङ्खपुष्पी ॥ १४ ॥
पीताश्वगन्धा पयसार्धमासं
घृतेन तैलेन सुखाम्बुना वा ।
कृशस्य पुष्टिं वपुषो विधत्ते
बालस्य शस्यस्य यथाम्बुवृष्टिः ॥ १५ ॥
धात्रीतिलान्भृङ्गरजोविमिश्रान्
ये भक्षयेयुर्मनुजाः क्रमेण ।
ते कृष्णकेशा विमलेन्द्रियाश्च
निर्व्याधयो वर्षशतं भवेयुः ॥ १६ ॥

(३ मंडूकपर्ण्यादिरसायनम्) मेंडकपर्णीका स्वरस प्रयुक्त करना । मुलहटीके चूर्णकों दूधसें और मूल पुष्पसहित गिलोयका रस और शंखपुष्पीका कल्क निश्चय प्रयुक्त करना । आयुको देतेहै रोगकों नाशतेहैं । और बल अग्नि स्वर इन्होंकों बढातेहैं ये रसायन है बुद्धिकों बढातेहै और विशेषकरके शंखपुष्पी बुद्धिकों बढातीहै । घृतसें तेलसें अथवा अल्प गरम किया पानीसें कृश शरीरकी पुष्टिकों

करताहै । जैसे छोटी खेतीकी वर्षासें वृद्धि होतीहै । आंवला तिल भंगराका चूर्ण इन्होंकों मिलाय क्रमसें जो मनुष्य खावै वे कृष्णबालोंवाले और स्वच्छ इंद्रियोंवाले और व्याधिसें रहित ऐसे होकै १०० वर्षपर्यंत जीवतेहैं ।

(४)वृद्धदारकमूलानि श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत् ।
शतावर्या रसेनैव सप्तरात्राणि भावयेत् ॥ १७॥
अक्षमात्रं तु तच्चूर्णं सर्पिषा सह भोजयेत् ।
मासमात्रोपयोगेन मतिमाञ्जायते नरः ॥ १८ ॥
मेधावी स्मृतिमांश्चैव वलीपलितवर्जितः ।
हस्तिकर्णरजः खादेत्प्रातरुत्थाय सर्पिषा ॥ १९॥
यथेष्टाहाराचारोऽपि सहस्रायुर्भवेन्नरः ।
मेधावी बलवान्कामी स्त्रीशतानि व्रजत्यसौ २०
मधुना त्वश्ववेगः स्याद्बलिष्टः स्त्रीसहस्रगः ।
मन्त्रश्चायं प्रयोक्तव्यो भिषजा चाभिमन्त्रणे ॥२१॥
"ओं नमो महाविनायकाय अमृतं रक्ष रक्ष मम फलसिद्धिं देहि रुद्रवचनेन स्वाहा" ॥ २२ ॥

(४ वृद्धदारकचूर्णम्) विधाराकी जडकों मिहीन चूर्ण कर शतावरीके रससें सातवार भावना देवै। एक तोलाभर वह चूर्ण घृतके संग भोजन करनेसें उत्तम बुद्धिवाला और स्मृतिवाला वलीपलितसें वर्जित ऐसा मनुष्य होजाताहै। प्रभातमें ऊठकै घृतके संग अरंडके चूर्णकों अथवा हस्तिकंदके चूर्णकों खावै और मनोवांछित भोजन तथा आचारवाला रहै तब हजारवर्षकी आयुवाला मनुष्य रहता है। उत्तम बुद्धिवाला बलवाला कामी और सैंकडो स्त्रियोंसें भोग करताहै और शहदके संग खावै तो घोडाके समान वेगवाला अधिक बलवाला और हजारह स्त्रियोंसें भोग कर सक्ताहै। वैद्यनें अभिमंत्रणमें यह मंत्र प्रयुक्त करना। "ओंनमो महाविनायकाय अमृतं रक्ष रक्ष मम फलसिद्धिं देहि रुद्रवचनेन स्वाहा"

(५)धात्रीचूर्णस्य कर्षं स्वरसपरिगतं
क्षौद्रसर्पिःसमांशं
कृष्णामानीसिताष्टप्रसृतयुतमिदं
स्थापितं भस्मराशौ ।
वर्षान्ते तत्समश्नन्भवति विपलितो
रूपवर्णप्रभावै-
र्निर्व्याधिर्बुद्धिमेधा स्मृतिबलवचन-
स्थैर्यसत्वैरुपेतः ॥ २३ ॥

गुडूच्यपामार्गविडङ्गशङ्खिनी-
वचाभयाकुष्ठशतावरीसमा ।
घृतेन लीढा प्रकरोति मानवं
त्रिभिर्दिनैः श्लोकसहस्रधारिणम् ॥२४॥

(५ आमलकीगुडूचीचूर्ण) आंवलाका चूर्ण २५६ तोलेभर ले आंवलाके स्वरसमें भिगोय शहद और घृत बराबर भाग ले पीपल ३२ तोले मिश्री ६४ तोले इन सबकों मिलाय कलशामें घाल अन्नके समूहमें स्थापित करै। १ वर्षके अंतमें उसकों खाता हुआ मनुष्य सपेदवालोंसें रहितरूप वर्ण प्रभावसें युत और व्याधिसें रहित और बुद्धि उत्तम बुद्धि स्मृति बल वचन स्थिरता सत्व इन्होंसें युत होताहै। गिलोय ऊंगा वायविडंग शंखपुष्पी वच हरडै कूट शतावरी ये सब समान भाग ले घृतमें मिलाय चाटै तो तीन दिनकरकै मनुष्यकों हजार श्लोकोंकों धारण करनेवाला बनातीहै ।

(६)समूलपत्रमादाय ब्राह्मीं प्रक्षाल्य वारिणा ।
उदूखले क्षोदयित्वा रसं वस्त्रेण गालयेत् ॥२५॥
रसे चतुर्गुणे तस्मिन्घृतप्रस्थं विपाचयेत् ।
औषधानि तु पेष्याणि तानीमानि प्रदापयेत् २६
हरिद्रा मालती कुष्टं त्रिवृता सहरीतकी ।
एतेषां पलिकान्भागाञ्शेषाणि कार्षिकाणि तु२७
पिप्पल्योऽथ विडङ्गानि सैन्धवं शर्करा वचा ।
सर्वमेतत्समालोड्य शनैर्मृद्वग्निना पचेत् ॥२८॥
एतत्प्राशितमात्रेण वाग्विशुद्धिश्च जायते ।
सप्तरात्रप्रयोगेण किन्नरैः सह गीयते ॥ २९ ॥
अर्धमासप्रयोगेण सोमराजीवपुर्भवेत् ।
मासमात्रप्रयोगेण श्रुतमात्रंतु धारयेत् ॥ ३० ॥
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि अर्शांसि विविधानि च ।
पञ्च गुल्मान् प्रमेहांश्च कासं पञ्चविधं जयेत्३१
वन्ध्यानां चैव नारीणां नराणां चाल्परेतसाम् ।
घृतं सारस्वतं नाम बलवर्णाग्निवर्धनम् ॥ ३२ ॥

(६ ब्राह्मीघृतम्) मूल और पत्तोंसहित ब्राह्मीकों पानीसें धोकै ऊखलमें घाल कूटकै रसकों वस्त्रसें छानै उस चौगुने रसमें ६४ तोलेभर घृत डाल पकावै । इन औषधोंकों पीसकर मिलावै । हलदी मालती कूट निशोत हरडै ये सब चार चार तोले ले और शेष रहे एकएक तोले पीपल वायविडंग सेंधानमक खांड वच इन सबकों

आलोडित कर हौलेंहौलें मंद अग्निसें पकावै। इसकों खानेकरकै वाणीकी शुद्धि होतीहै और सात रात्रि सेवनेसें किन्नरोंके साथ गान कर सक्ताहै। पंदरह दिन सेवनेसें चंद्रमाके प्रकाश समान शरीरवाला होजाताहै। एक महीना सेवनेसें शुनतेही धारण करताहै अठारह कुष्ठ अनेक प्रकारके ववासीर पांच गुल्म प्रमेह पांच प्रकारकी खांसी इन्होंकों जीतताहै। वंध्यास्त्रियोंकों और अल्पवीर्यवाले पुरुषोंकों हित है। यह सारस्वतघृत बल वर्ण और अग्निकों वढाताहै। यह ब्राह्मीघृतहै।

(७)कासश्वासातिसारज्वरपिडककटी-
कुष्ठकोठप्रकारान्
मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरः
कर्णशूलाक्षिरोगान्।
ये चान्ये वातपित्तक्षतजकफकृता
व्याधयः सन्ति जन्तो-
स्तांस्तानभ्यासयोगादपनयति पयः
पीतमन्ते निशायाः॥ ३३॥
व्यङ्गवलीपलितघ्नं पीनसवैस्वर्यकासशोथघ्नम्।
रजनीक्षयेऽम्बुनस्यं रसायनं दृष्टिजनन च ३४

(७ उषःपानम्) खांसी श्वास अतिसार ज्वर कटिपीडा कुष्ठ कोठरोग मूत्रघात उदररोग ववासीर शोजा गलरोग शिरोरोग नेत्ररोग इन्होंकों और वात पित्त कफकी व्याधियोंकों और मनुष्यके अनेक प्रकारके रोगोंकों रात्रिके अंतमें पीया पानी हरताहै। प्रभातमें पानीका नस्य व्यंग वलीपलित इन्होंकों नाशताहै और पीनस स्वरभेद खांसी शोजा इन्होंकों हरताहै रसायन है और दृष्टिकों उपजाताहै।

(८)नागार्जुनो मुनीन्द्रः
शशास यल्लोहशास्त्रमतिगहनम्।
तस्यार्थस्य स्मृतये
वयमेतद्विशदाक्षरैर्ब्रूमः॥ ३५॥
मेने मुनिः स्वतन्त्रे
भूयः पाकं न पलपञ्चकादर्वाक्।
सुबहुप्रयोगदोषा-
दूर्ध्वं न पलत्रयोदशकात्॥ ३६॥
तत्रायसि पाचनीये
पञ्चपलादौ त्रयोदशपलकान्ते।
लौहाद्विगुणा त्रिफला
ग्राह्या षड्भिः पलैरधिका॥ ३७॥
मारणपुटनस्थाली-
पाकाः स्त्रिफलैकभागसम्पाद्यः।
त्रिफलाया भागद्वितयं
ग्रहणीयं लोहपाकार्थम्॥ ३८॥
सर्वत्रायस्तुटनाद्यर्थैकांशे शरावसंख्यातम्।
प्रतिपलमेव त्रिगुणं पाथः क्वाथार्थमादेयम् ३९
सप्तपलादौ भागे पञ्चदशान्तेऽम्भमां शरावैश्च।
द्याद्यैकादशकान्तैरधिकं तद्वारि कर्तव्यम्॥४०॥
तत्राष्टमो विभागः शेषः क्वाथस्य यत्नतः स्थाप्यः।
तेन हि मारणपुटनस्थालीपाका भविष्यन्ति ४१

(८ लोहरसायनप्रकारः) नागार्जुन मुनियोंका इंद्र अति कठिणरूप लोहशास्त्रकों कहता भया। उसका अर्थकी स्मृतिके अर्थ सुंदर अक्षरोंसें हम कहतेहै। अपने ग्रंथमें २० तोलेभरसें पहले दूसरें पञ्चाककों मुनि नहीं मानता भया और बहुत प्रयोगके दोषसें ५२ तोलेभरसें ऊपर दूसरा पाककों नहीं मानता भया। तहां लोहा पकानेमें २० तोलेभरसें लेकै ५२ तोलोंपर्यंत लोहासें तिगुनी त्रिफला लेनी। २४ तोलोंसें अधिक मारण पुटन स्थालीपाक ये त्रिफलाके एकभागसें संपादित करने। लोहाका पाकके अर्थ त्रिफलाके २ भाग लेने। सब जगह लोहाकों तुटन आदिके वास्तै २०४८ तोलेभर कहाहै और क्वाथके वास्तै चार चारतोलोंके प्रति त्रिगुणा पानी देना। सात पलसें लेकै पंदरह पलपर्यंत तीन शराव पानी देना। शराव २०४८ तोलेभर होताहै। तीन पलसें लेकै एकादश पलपर्यंत अधिक पानी करना तहां क्वाथका आठमां भाग जतनसें शेष रखकै स्थापित करना। उसहीकरकै मारण पुटन और स्थालीपाक होतेहैं।

(९)पाकार्थे तु त्रिफला
भागद्वितये शरावसंख्यातम्।
प्रतिपलमम्बुसमं स्या-
दधिकं द्वाभ्यां शरावाभ्याम्॥ ४२॥
तत्र चतुर्थो भागः
शेषो निपुणेन यत्नतो ग्राह्यः।
अयसः पाकार्थत्वा-
त्स च सर्वस्मात्प्रधानतमः॥ ४३॥

पाकार्थमश्मसारे पञ्चपलादौ त्रयोदशपलान्ते।
दुग्धशरावद्वितयं पादैरेकादिकैरधिकम् ॥ ४४ ॥
पञ्चपलादिकमात्रा तदभावे तदनुसारतो ग्राह्यम्।
चतुरादिकमेकान्तं शक्तावधिकं त्रयोदशकात् ॥
त्रिफलात्रिकटुकचित्रक-
कान्तकामकविडङ्गचूर्णानि ।
अन्यान्यपि देयानि
पलाशवृक्षस्य च बीजानि ॥ ४६ ॥
जातीफलजातीकोषैलाकक्कोलकलवङ्गानाम् ।
सितकृष्णजीरकयोरपि चूर्णान्ययसः समानि स्युः
त्रिफलात्रिकटुविडङ्गा नियता अन्ये यथाप्रकृति॥
कालायसदोषहृतेर्जातीफलादेर्लवङ्गान्तस्य ।
क्षेपः प्राप्त्यनुरूपः सर्वस्योनस्य चैकाद्यैः ॥ ४८ ॥
कान्तक्रामकमेकं निःशेषं दोषमपहरत्ययसः ।
द्विगुणत्रिगुणचतुर्गुणमाज्यं ग्राह्यं यथाप्रकृति ॥
यदि भेषजभूयस्त्वं स्तोकत्वं वापि चूर्णानाम् ।
अयसा साम्यं संख्या भूयोऽल्पत्वेन भूयोऽल्पा
एवं धात्वनुसारात्तत्तत्कथितौषधस्य बाधेन ।
सर्वत्रैव विधेयस्तत्तदकथितस्यौषधस्योहः ॥५१॥

(९ **लोहशुद्धिकरणम्**) पाकके अर्थ तो त्रिफलाके २ भागमें एक शराव कहाहै । पलपलके प्रति पानी बराबर देना । जब दो शरावोंसें अधिक रहै तहां शेष रहा चौथा भाग कुशल वैद्यनें जतनसें ग्रहण करना । लोहाके पाकार्थपनेसें वह संपूर्णसें अत्यंत प्रधान है । पाकके अर्थ लोहसारमें पांच पल आदिमेंसें लेकै तेरह पलपर्यंत दूधके दो शराव देने । एकआदि पादोंकरकै अधिक होताहै । पंचपलआदि मात्रा है उसके अभावमें उसके अनुसारसे ग्रहण करना चारसें आदि ले एकपर्यंत शक्ति होनेमें तेरह पलसें अधिक है । हरडै बहेडा आंवला सोंठ मिरच पीपल चीता केशर सपेद लोध वायविडंग इन्होंके चूर्ण और केशूका बीजोंके चूर्ण जायफल जावित्री इलायची कंकोल लौंग सपेद जीरा कृष्ण जीरा इन सबके चूर्ण लोहाके समान लेने । हरडै बहेडा आंवला सोंठ मिरच पीपल वायविडंग ये नियमसें लेने और अन्य ओषध जैसी प्रकृति हो उसके अनुसार लेने । काला लोहाके दोषोंकों हरनेवाले जायफलसें लेकै लौंगपर्यंत ओषधोंका गेरना प्राप्तिके अनुरूप है । केशर और सपेद लोध लोहाके संपूर्ण दोषकों हरताहै । दुगुना त्रिगुना और चौगुना घृत जैसी प्रकृति हो उसके अनुसार ग्रहण करना । जो ओषध बहुत हो और चूर्ण अल्प हो तो लोहाकरकै समान संख्या रखनी । इस प्रकार धातुके अनुसारसें उस उस कहे हुये ओषधके बाध करकै सब जगह नहीं कहा ओषधका विचार करना ।

(१०)कान्तादिलौहमारण-
विधानसर्वस्वमुच्यते तावत् ।
यस्य कृते तल्लौहं
पक्तव्यं तस्य शुभे दिवसे ॥ ५२ ॥
समृदङ्गारकवालित
नतभूभागे शिवं समभ्यर्च्य ।
वैदिकविधिना वह्निं
निधाय हुत्वाहुतीस्तत्र ॥ ५३ ॥
धर्मात्सिध्यति सर्वं
श्रेयस्तद्धर्मसिद्धये किमपि ।
शक्त्यनुरूपं दद्या-
द्विजाय सन्तोषिणे गुणिने ॥ ५४ ॥
सन्तोष्य कर्मकारं
प्रसादपूगादिदानसम्मानैः ।
आदौ तदश्मसारं
निर्मलमेकान्ततः कुर्यात् ॥ ५५ ॥
तदनु कुठारच्छिन्न-
त्रिफलागिरिकर्णिकास्थिसंहारैः ।
करिकर्णच्छदमूलक-
शतावरीकेशराजाख्यैः ॥ ५६ ॥
शालिं च मूलककशी-
मूलप्रावृजभृङ्गराजैश्च ।
लिप्त्वा दग्धव्यं तद्
दुष्टक्रियलोहकारेण ॥ ५७ ॥
चिरजलभावितनिर्मल-
शालाङ्गारेण परित आच्छाद्य ।
कुशलाध्मापितभस्त्रा
नवरतमुक्तेन पवनेन ॥ ५८ ॥
वह्नेर्बाह्यज्वाला
बोद्धव्या जातु नैव कुञ्चिकया ।
मृल्लवणसलिलभाजा
किन्तु स्वच्छाम्बु संप्लुतया ॥ ५९ ॥

द्रव्यान्तरसंयोगा-
त्स्वां शक्तिं भेषजानि मुञ्चन्ति ।
मलधूलीमत्सर्वं
सर्वत्र विवर्जयेत्तस्मात् ॥ ६० ॥
सन्दंशेन गृहीत्वान्तः-
प्रज्वालिताग्निमध्यपमुनीय ।
गलति यथायथमग्रे
तथैव मृदु वर्धयेन्निपुणः ॥ ६१ ॥
तलनिहितोर्ध्वमुखा-
ङ्कुशलग्नं त्रिफलाजले ।
विनिक्षिप्य निर्वापये-
च्छेषं त्रिफलाम्बु रक्षेच्च ॥ ६२ ॥
यल्लौहं न मृतं त-
त्पुनरपि पक्तव्यमुक्तमार्गेण ।
यन्न मृतं तथापि
तत्त्यक्तव्यमलौहमेव ततः ॥ ६३ ॥
तदनु घनलौहपात्रे
कालायसो मुद्गरेण संचूर्ण्य ।
दत्त्वा बहुशः सलिलं
प्रक्षाल्याङ्गारमुद्धृत्य ॥ ६४ ॥
तदयः केवलमग्नौ
शुष्कीकृत्याथवातपे पश्चात् ।
लौहशिलायां पिष्या-
दसितेऽश्मनि वा तदप्राप्तौ ॥ ६५ ॥

(**१० कांतादिलोहमारणविधिः**) आदिमें कांत आदि लोहाकों मारनेका विधान कहतेहै। जिसके लिये बहु लोह हो उसको शुभदिनमें पकाना । माटीसहित अंगारोंसें वालित किया नीचे पृथ्वीके भागमें शिवकी पूजा करकै वेदकी विधिसें अग्निकों स्थापित कर उसमें आहुतिओंकों होमै । धर्मसें संपूर्ण सिद्ध होताहै उस धर्मकी सिद्धिके अर्थ शक्तिके अनुरूप कुछभी दान संतोषी गुणी ब्राह्मणके अर्थ देवै । कर्मकारकों और समान प्रसाद और सुपारी आदिके देनेसें प्रसन्न कर आदिमें उस सारलोहाकों अच्छीतरह निर्मल करै । उसके पीछें कंद गिलोय त्रिफला विष्णुक्रांता अस्थिसंहार अरंडके पत्ते और जड शतावरी भंगरा ईखकी जड कशईकी जड वर्षाऋतुमें उपजा भंगरा इन्होंसें लोहा लीपकै दुष्ट क्रियावाला लुहारनें लोहा दग्ध करना । सोनाके पानीसें भावित कर निर्मल शालाके अंगार अर्थात् कोईलोंसें चारोंतर्फसें आच्छादित कर चतुर मनुष्यसें प्रेरित करी भस्त्रा अर्थात् फूंकनीसें निरंतर पवन करकै और अग्निकी ज्वाला बाहिर नहीं जासकै ऐसे जानता रहना । कलोंजीकों रेहनमकका पानीसें अथवा स्वच्छ पानीसें युत करै । द्रव्यांतरके संयोगसें अपनी शक्तिकों ओषध छोडतेहै । मल और धूलीवाली संपूर्ण वस्तुकों वर्जित करै । तिसकारणसें चिमटासें ग्रहणकर भीतर ज्वालित करा अग्निके मध्यमें प्राप्तकर जैसे अग्रभागमें गलै तैसेही कुशल वैद्यकों मलकों बढावै तलभागमें निहत जो ऊर्ध्वमुख अंकुश उसमें लगाके त्रिफलाके जलमें गेर और शेषकों निर्वापित करै । और त्रिफलाके जलकी रक्षा करै । जो लोह नहीं मरा हो वह फिरभी उक्त मार्गसें पकाना । तबभी जो नहीं मरै तो वह त्याग देना । वह अलोह जानना । पीछे घनरूप लोहाके पात्रमें काला लोहाके मुद्गरसें संचूरित कर बहुतसा पानी देकै धोकै और अंगारकों निकास उस अकेला लोहाकों अग्निमें सुखाकै पीछे घाममें सुखाकै लोहाके खरलमें अथवा काला पत्थरपर पीसै । यहां मारणविधि समाप्त हुआ ।

(११)अथ कृत्वायोभाण्डे
दत्त्वा त्रिफलाम्बुशेषमन्यद्वा ।
प्रथमं स्थालीपाकं
दद्याद्द्रवक्षयात्तदनु ॥ ६६ ॥
गजकर्णपत्रमूल-
शतावरीभृङ्गकेशराजरसैः ।
प्राग्वत्स्थालीपाकं
कुर्यात्प्रत्येकमेकैकं वा ॥ ६७ ॥

(**११ स्थालीपाकविधिः**) इसके अनंतर लोहाके पात्रमें त्रिफला जल और शेषकों देकै द्रवके क्षयपर्यंत स्थालीपाककों देवै । अरंडके पत्ते और मूल शतावरी भंगरा काला भंगरा इन्होंके रसोंकरकै एकएकके प्रति स्थालीपाक करै । यहां स्थालीपाकविधि समाप्त हुआ ।

(१२)हस्तप्रमाणवदनं
श्वभ्रं हस्तैकखातसममध्यम् ।
कृत्वा कटाहसदृशं
तत्र करीषं तुषं च काष्ठं च ॥ ६८ ॥

अन्तर्धनतरमध्यं
शुषिरं परिपूर्य दहनमायोज्य ।
पश्चादयसश्चूर्णं
श्लक्ष्णं पङ्कोपमं कुर्यात् ॥ ६९ ॥
त्रिफलाम्बु भृङ्गकेशर-
शतावरीकन्दमाणसहजरसैः ।
भल्लातककरिकर्ण-
च्छदमूलपुनर्नवास्वरसैः ॥ ७० ॥
क्षिप्त्वाथ लोहपात्रे
मार्दे वा लोहमार्दपात्राभ्याम् ।
तुल्याभ्यां पृष्ठेना
च्छाद्यान्तेरन्ध्रमालिप्य ॥ ७१ ॥
तत्पुटपात्रम् तत्र
श्वभ्रज्वलने निधाय भूयोपिः ।
काष्ठकरीषतुषैस्त-
त्संच्छाद्याहर्निशं दहेत्प्राज्ञः ॥ ७२ ॥
एवं नवभिर्भेषज-
राजैस्तु पचेत्सदैवपुटपाकम् ।
प्रत्येकमेकमेभि-
र्मिलितैर्वा त्रिचतुरान्वारान् ॥ ७३ ॥
प्रतिपुटनं तत्पिष्यात्
स्थालीपाकं विधाय तथैव ।
तादृशदिनं पिंष्यात्
द्विगलद्रजसा तु युज्यते यत्र ॥ ७४ ॥
तदयश्चूर्णं पिष्टं
घृष्टं घनसूक्ष्मवाससि श्लक्ष्णम् ।
यदि रजसा सदृशं स्यात्
केतक्यास्तर्हि तद्भद्रम् ॥ ७५ ॥
पुटने स्थालीपाके
धिकृतपुरुषे स्वभावरुगधिगमात् ।
कथितमपि हेयमौषध-
मुचितमुपादेयमन्यदपि ॥ ७६ ॥

(१२ पुटनविधिः) हाथके प्रमाण मुखवाला और एक हाथ खोदनेसें समान मध्यवाला ऐसा खड्डा कडाहके सदृश बनाके उसमें आरने तुष और काठ देकै भीतर बहुत घनरूप छिद्रकों पूरित कर अग्निकों लगाकै पीछे मिहीन रूप लोहाके चूर्णकों कर पंक अर्थात् कीचडके समान न करै । त्रिफला नेत्रवाला भंगरा केशर शतावरी मानकंद कोरंटा इन्होंके रसोंकरकै और भिलावा अरंडका पत्ता और मूल सांठी इन्होंके स्वरसोंकरकै लोहाके पात्रमें अथवा माटीके पात्रमें घाल तुल्यरूप लोहा और माटीके पात्रोंकरकै पृष्ठसें आच्छादित कर अंतमें छिद्रको आलेपित कर वह पुटपात्र खडाके अग्निमें स्थापित कर बहुतसे काठ आरनें तुष इन्होंकरकै आच्छादित कर दिनरात वैद्य जलावै । इसप्रकार नव ओषधोंसें पुटपाककों पकावै । इन्होंमेंसे एकएककरकै अथवा मिलोंकरकै तीन चार वार प्रतिपुट दे तैसेही स्थालीपाक देकै पीसै । जिस पत्थरके चूनसें युत हो सकै ऐसे पत्थरपर नहीं पीसै । वह लोहाका चून पिसा हुआ और घिसा घनरूप मिहीन वस्त्रसें छानना । जो रजके समान हो तब केतकीके रससें युत करै । पुटन और स्थालीपाकमें अधिकृत पुरुषका स्वभाव और पीडाके अनुसार कहा हुआ ओषध त्यागना और नहीं कहा ओषध ग्रहण करना । यहां पुटनविधि समाप्त हुआ ।

(१३)अभ्यस्तकर्मविधिभि-
र्बालकुशाग्रीयबुद्धिभिर्लक्ष्यम् ।
लोहस्य पाकमधुना
नागार्जुनशिष्टमधिदध्मः ॥ ७७ ॥
लोहारकूटताम्रज-
कटाहे दृढमृण्मये प्रणम्य शिवम् ।
तदयः पचेदचपलः
काष्ठेन्धनेन वह्निना मृदुना ॥ ७८ ॥
निक्षिप्य त्रिफलाजल-
मुदितं यत्तद्घृतं च दुग्धं च ।
संचाल्य लौहमय्या
दर्व्या लग्नं समुत्पाट्य ॥ ७९ ॥
मृदुमध्यखरभावैः
पाकस्त्रिविधोऽत्र वक्ष्यते पुंसाम् ।
पित्तसमीरणश्लेष्म-
प्रकृतीनां मध्यमस्य समः ॥ ८० ॥
अभ्यक्तदर्विलोहं
सुखदुःखस्खलनयोगिमृदुमध्यम् ।
उज्झितदर्विखरं परि-
भाषन्ते केचिदाचार्याः ॥ ८१ ॥

अन्ये विहीनदार्वी-
प्रलेपमाखूत्कराकृतिं ब्रुवते ।
मृदुमध्यमर्धचूर्णं
सिकतापुञ्जोपमं तु खरम् ॥ ८२ ॥
त्रिविधोऽपि पाक ईदृक्
सर्वेषां गुणकृदेव न तु विफलः ।
प्रकृतिविषये च सूक्ष्मो
गुणदोषौ जनयतीत्यल्पम् ॥ ८३ ॥
विज्ञाय पाकमेवं
द्रागवतार्य क्षितौ क्षणान्कियतः ।
विश्राम्य तत्र लोहे
त्रिफलादेः प्रक्षिपेच्चूर्णम् ॥ ८४ ॥
यदि कर्पूरप्राप्ति-
र्भवति ततो विगलिते तदुष्णत्वे ।
चूर्णीकृतमनुरूपं
क्षिपेन्न वा न यदि तल्लाभः ॥ ८५ ॥
पक्वं तदश्मसारं
सुचिरघृतस्थित्यभाविरूक्षत्वे ।
गोदोहनादिभाण्डे
लौहभाण्डाभावे सति स्थाप्यम् ॥८६॥
यदि तु परिप्लुतिहेतो-
र्घृतमीक्षेताधिकं ततोऽन्यस्मिन् ।
भाण्डे निधाय रक्षे-
द्भाव्युपयोगो ह्यनेन महान् ॥८७॥
अयसि विरूक्षीभूते
स्नेहस्त्रिफलाघृतेन सम्पाद्यः ।
एतत्ततो गुणोत्तर-
मित्यमुना स्नेहनीयं तत् ॥ ८८ ॥
अत्यन्तकफप्रकृते-
र्भक्षणमयसोऽमुनैव शंसन्ति ।
केवलमपीदमशितं
जनयत्ययसो गुणान्कियतः ॥ ८९ ॥

(१३ लोहपाकःअमृतसारः) अभ्यास किया है कर्मविधि जिन्होंने और छोटा कुशाके अग्रभागके समान बुद्धियोंवाले ऐसे वैद्योंनें नागार्जुन शिष्टसें मथी हुई दहीसें साररूप लोहाके पाककों अब कहते है । लोहा पितल तांबा इन्होंके कडाहमें अथवा माटीके दृढरूप पात्रमें लोहा घाल शिवकों प्रणाम कर काष्ठकरकै कोमल अग्निसें पकावै । उसमें कहा हुआ त्रिफला जल घृत और दूधकों डाल लोहाकी कडछीसें चलाकै लगा हुआकों खुरच कोमल मध्य तीक्ष्ण भावोंसें यहां तीन प्रकारका पाक कहतेहै । पित्त वात कफकी प्रकृतिवाले पुरुषोंकों क्रमसें हितहै । करछीके लगाहुआ लोहा कोमल होताहै । सुखदुःखसे जो संचालित हो वह लोहा मध्यम होताहै । जो करछीसे अलग होताहै वह लोहा खर होताहै । इसप्रकार कितनेक आचार्य कहतेहैं । अन्य वैद्य जो करछीकै लिपै नहीं उसकों आखुत् कटाकृति कोमल पाक होताहै । आधा चूर्णवाला मध्य होताहै । मिश्रीका समूहके समान आकृतिवाला खर होताहै। इसप्रकारसें तीन प्रकारवाला पाकभी सबोंकों गुण करताहै। और निष्फल नहीं होता प्रकृतिके विषयमें सूक्ष्मभी कछुक गुणदोषकों उपजाताहै । इस प्रकार पाककों जानकर शीघ्र उतार पृथिवीमें कितनेक क्षणभर धर उस लोहामें त्रिफला आदिके चूर्णकों मिलावै जो कपूरकी प्राप्ति करनी हो तो पीछे विगलित किये इस गरमरूपमें उसके अनुरूप चूर्ण किया गेरना । उसका लाभ नहीं हो तो पकाया हुआ वह सारलोहा बहुतदिन घृतकी स्थितिसें युत और रूषा नहीं हो ऐसा गोदोहन आदि पात्रमें लोहाका पात्रके अभावमें स्थापित करना । जो परिप्लुतिके कारणसे अधिक घृत दीखै तो उस्से अन्य पात्रमें घाल रक्षा करै इसकरकै बडाभारी उपयोग होताहै । लोहा रूषा हो जावै तो तिल और घृतसें स्नेह प्राप्त करना उस्सें यह अधिक गुणवाला हो इसकरकै वह स्नेहित करना योग्यहै । अत्यंत कफकी प्रकृतिवालाकों लोहाका भक्षण इसीकरकै प्रशंसित करतेहैं । अकेलाभी यह भक्षण किया जावै तो लोहाके कितनेक गुणोंकों करताहै । यह अमृतसार है ।

(१४)अथवा वक्तव्यविधिः
संस्कृतकृष्णाभ्रकचूर्णमादाय ।
लौहचतुर्थांशसम-
द्वित्रिचतुःपञ्चगुणभागम् ॥ ९० ॥
प्रक्षिप्यायः प्राग्वत्
पचेदुभाभ्यां भवेदयो यावत् ।
तावन्मानानुस्मृतेः
स्यात्त्रिफलादिद्रव्यपरिमाणम् ॥ ९१ ॥

इदमाप्यायिकमिदमति-
पित्तनुदिदमेव कान्तिबलजननम् ।
स्तभ्नाति तृट्क्षुधौ तत्
परममधिकमात्रया युक्तम् ॥ ९२ ॥

(१४ द्वितीयः पाकविधिः) अथवा पकानेके योग्य विधिकरकै संस्कार किये कृष्ण अभ्रकके चूर्णकों लेकै लोहका दो तीन चार पांच भाग गेरकै पहलेकी तरह लोहाकों पकावै। दोनोंकरकै जबतक लोहा हो उतनाही परिमाणकी अनुस्मृतिसे त्रिफला आदि द्रव्यका परिमाण लेना । यह पुष्टि करताहै पित्तकों अत्यंत नाशताहै कांति और बलकों उपजाताहै और अधिक मात्रा देनेसें भूख प्यासकों रोकताहै । यहां पाकविधि समाप्त हुआ ।

(१५)कृष्णाभ्रकमेकवपु-
र्वज्राख्यं चैकपत्रकं कृत्वा ।
काष्ठमयोदूखलके
चूर्णं मुसलेन कुर्वीत ॥ ९३ ॥
भूयो दृषदि च पिष्टं
वासः सूक्ष्मावकाशतलगलितम् ।
मण्डूकपर्णिकायाः
प्रचुररसे स्थापयेत्रिदिनम् ॥ ९४ ॥
उद्धृत्य तद्रसादथ
पिष्याद्धैमन्तधान्यभक्तस्य ।
अक्षोदात्यन्तास्ल-
स्वच्छजलेन प्रयत्नेन ॥ ९५ ॥
मण्डूकपर्णिकायाः
पूर्वं स्वरसेनालोडनं कुर्यात् ।
स्थालीपाकं पुटनं
चाद्यैरपि भृङ्गराजाद्यैः ॥ ९६ ॥
ताडादिपत्रमध्ये
कृत्वा पिण्डं निधाय भस्त्राग्नौ ।
तावद्दहेन्न याव-
ल्लीनोऽनिर्दश्यते सुचिरम् ॥ ९७ ॥
निर्वापयेच्च दुग्धे
दुग्धं प्रक्षाल्य वारिणा तदनु ।
पिष्ट्वा घृष्ट्वा वस्त्रे
चूर्णं निश्चन्द्रिकं कुर्यात् ॥ ९८ ॥

(१५ अभ्रकविधिः) अनेक प्रकारका कृष्ण अभ्रककों और अनेक प्रकारका वज्रका एक पत्ता बनाकै काष्ठके ऊखलमें मूसलसें चूर्ण करै । फिर पत्थरपर पीस मिहीन वस्त्रसें छानै पीछे मंडूकपर्णीके बहुतसे रसमें तीनदिन स्थापित करै । उस रससें निकास पीस पीछे हेमंत ऋतुमें उपजे चावलोंके स्वच्छ जलकरकै जतनसें धोवै । मंडकपर्णीके स्वरसकरकै प्रथम आलोडित करै। स्थालीपाक और पुटन भंगरा आदिकरकै ताड आदिका पत्ताके मध्यमें कर गोला बनाय फूंकनीकी अग्निमें स्थापित कर तवतक बहुत देर दग्ध करै जवतक लीन हुआ अग्नि नहीं दीखै। दूधमें बुझाकै पीछे पानीसें धोकै पीस और घिस चंद्रिकासें रहित बनावै। यह अभ्रकविधि समाप्त हुआ ।

(१६)नानाविधरुक्शान्त्यै
पुष्ट्यै कान्त्यै शिवं समभ्यर्च्य ।
सुविशुद्धेऽहनि पुण्ये
तदमृतमादाय लौहाख्यम् ॥ ९९ ॥
दशकृष्णलपरिमाणं
शक्तिवयोभेदमाकलय्य पुनः ।
इदमधिकं तदधिकतर-
मियदेव न मातृमोदकवत् ॥ १०० ॥
सममसृणामलपात्रे
लौहे लौहेन मर्दयेद्दृढं भूयः ।
दत्वा मध्वनुरूपं
तदनु घृतं योजयेदधिकम् ॥ १०१ ॥
बन्धं गृह्णाति यथा
मध्वपृथक्त्वेन पङ्कमविशिंषेत् ।
इदमिह दुष्टोपकरण-
मेतद् दृष्टं तु मन्त्रेण ॥ १०२ ॥
स्वाहान्तेन विमर्दो
भवति फडन्तेन लोहबलरक्षा ।
सनमस्कारेण बलि-
र्भक्षणमयसो हुमन्तेन ॥ १०३ ॥
"ओं अमृतोद्भवाय स्वाहा ।
ओं अमृते ह्रीम् फट्
ओं नमश्चण्डवज्रपाणये ।
महायक्षसेनाधिपतये

सुरगुरुविद्यामहाबलाय स्वाहा ।
ओं अमृते ह्रीम् ॥ १०४ ॥"

(१६ अभ्रकस्य समंत्रो विधिः) अनेक प्रकारपीडा शांति और पुष्टि कांति करनेके अर्थ शिवजीकी पूजा कर सुंदर शुद्ध पवित्र दिनमें उस लोहनामक अमृतकों दश रत्तीप्रमाण लेकै फिर शक्ति अवस्थाके भेदकों जान यह अधिक है व यह अत्यंत अधिक है। माताका दिया लड्डूकी तरह नहीं समझै। कठिनरूप और मलसें रहित लोहाके पात्रमें लोहाके डंडेसें वारंवार मर्दित करै। उसके अनुरूप शहद देकै पीछे अधिक घृत देना। जैसे शहदसे अलग नहीं होकै बंध जावै तैसा करै । यहां दुष्ट उपकरणवाला देखा है स्वाहांत मंत्रकरकै मर्दित होताहै । फडंत मंत्रकरकै लोहके बलकी रक्षा होती है। नमःसहित मंत्रसें बलि देना। हुं है अंतमें जिसके ऐसे मंत्रकरकै लोहाकों खाना "ॐ अमृतोद्भवाय स्वाहा ॐ अमृते ह्रीं फट् ॐ नमश्चण्डवज्रपाणये महायक्षसेनाधिपतये सुरगुरुविद्यामहाबालाय स्वाहा ॐ अमृते ह्रीम्"

(१७)जग्ध्वा तदमृतसारं
नीरं वा क्षीरमेवानु पिबेत् ।
कान्तक्रामकममलं
संचार्य रसं पिबेन्न तु तत् ॥ १०५ ॥
आचम्य च ताम्बूलं
लाभे घनसारसहितमुपयोज्यम् ।
नात्युपविष्टो नात्यति-
भाषी नातिस्थितस्तिष्ठेत् ॥ १०६ ॥
अत्यन्तवातशीता-
तपयानस्नानवेगरोधादीन् ।
जह्याच्च दिवानिद्रा
सहितं चाकालभुक्तं च ॥ १०७ ॥
वातकृतः पित्तकृतः
सर्वान् कट्वम्लतिक्तककषायान् ।
तत्क्षणविनाशहेतून्
मैथुनकोपश्रमान्दूरे ॥ १०८ ॥
अशितं तदयः पश्चा-
त्पततु न वा पाटवं छद्म प्रथताम् ।
अर्तिर्भवति न वात्रं
कूजति भोक्तव्यमव्याजम् ॥ १०९ ॥

(१७ अभ्रकसेवनविधिः) उस अमृतसारकों खाकै पीछे पानी अथवा दूधकों पीवै। कांत क्रामक और अमलरूप रसकों बनाके नहीं पीवै और आचमन कर कपूरसहित नागरपान खाना। अत्यंत बैठै नहीं और अत्यंत बोलै नहीं और अत्यंत स्थित हुआ स्थितभी नहीं रहै। पवन शीत घाम गमन स्नान वेगका रोकना आदि इन्होंकों अत्यंत सेवै नहीं । दिनकी नींद और अकालभोजनकों त्यागै वातकारक पित्तकारक सब कटु तिक्त आम्ल कषायरूप रस तत्काल नाश करनेके कारणोंकों और स्त्रीसंग तथा परिश्रम कों सेवै नहीं। वह लोहा खाकै पडै नहीं चतुराई और कपट करै नहीं । ऐसा भोजन करना कि पीडा होवै नहीं और कपट बोलै नहीं ।

(१८)प्रथमं पीत्वा दुग्धं
शाल्यन्नं विशदसिद्धमक्लिन्नम् ।
घृतसंप्लुतमश्नीयात्
मांसैर्वैहङ्गमैः प्रायः ॥ ११० ॥
उत्तममूषरभूचर-
विष्किरमांसं तथाजमैणादिम् ।
अन्यदपि जलचराणां
पृथुरोमापेक्षया ज्यायः ॥ १११ ॥
मांसालाभे मत्स्या
अदोषलाः स्थूलसद्गुणा ग्राह्याः ।
मद्गुररोहितशकुला
दग्धाः पललान्मनागूनाः ॥ ११२ ॥
शृङ्गाटकफलकशेरु-
कदलीफलतालनारिकेलादि ।
अन्यदपि यच्च वृष्यं
मधुरं पनसादिकं ज्यायः ॥ ११३ ॥
केबुकताडकरीरान्
वार्ताकुपटोलफलदलसमठान् ।
मुद्गमसूरेक्षुरसान्
शंसन्ति निरामिषेष्वेतान् ॥ ११४ ॥
शाकं प्रहेयमखिलं
स्तोकं रुचये तु वास्तुकं दद्यात् ।
विहितनिषिद्धादन्य-
न्मध्यमकोटिस्थितं विद्यात् ॥ ११५ ॥

तप्तदुग्धानुपानं
प्रायः सारयति बद्धकोष्ठस्य ।
अनुपीतमम्बु यद्वा
कोमलफलनारिकेरस्य ॥ ११६ ॥

(१८ अभ्रसेवने भक्षणीयादि) प्रथम दूधकों पीकै अच्छी तरह सिद्ध और नहीं ग्लानिकारक ऐसे शालिचावलकों घृतसें मिलाय और विशेषकरकै पक्षियोंके मांसोंके संग खावै । वरहडा शूर पृथिवीपर विचरनेवाला उत्तम पशु लावा तीतर वर्तक आदिका मांस बकरा और हिरणका मांस और मांस नहीं मिलनेमें दोषसें रहित और नहीं मोटी और उत्तम गुणोंवाली मछली ग्रहण करनी । मद्गुर रोहित और शकुल ये दग्ध मछली मांससें कछुक कम रहती है । सिंगाडा कसेरु केलाकी घड ताडफल नारियल आदि अन्यभी जो मधुर और वृष्य हो पनस आदि वह श्रेष्ठ हैं । केमुक ताडफल वांसफल वार्ताकु परवल फल और पत्ते मूग मसूर ईख इन्होंके रस ये सब मांस नहीं खानेवालोंकों हित हैं । संपूर्ण शाक वर्जित करने । जो रुचि हो तो कछुक वथुवाका शाक देना । विहित और निषिद्धसें अन्य मध्यमकोटिस्थित जानना । गरम दूधका पीना विशेषकरकै बद्धकोठावालाकों दस्त लगाता है । अथवा कोमल नारियलका रसभी इस लोहाके ऊपर पीया जावै तो पूर्वोक्त फल करताहै ।

(१९)यस्य न तथा सरति
स यवक्षारं जलं पिबेत्कोष्णम् ।
कोष्णं त्रिफलाक्वाथस-
नाथं क्षारं ततोऽप्यधिकम् ॥ ११७ ॥
त्रीणि दिनानि समं स्या-
दह्नि चतुर्थे तु वर्धयेत् क्रमशः ।
यावच्चाष्टममासं
न वर्धयेत् पुनरितोऽप्यधिकम् ॥११८ ॥
आदौ रक्तिद्वितयं
द्वितीयवृद्धौ तु रक्तिकात्रितयम् ।
रक्तिपञ्चकपञ्चक-
मतऊर्ध्वं वर्धयेन्नियतम् ॥ ११९ ॥
वात्सरिककल्पपक्षे
दिनानि यावन्ति वर्धितं प्रथमम् ।
तावन्ति वर्षशेषे
प्रतिलोमं ह्रासयेत्तदयः ॥ १२० ॥
तेष्वष्टमासकेषु प्रातर्माषत्रयंसमश्नीयात् ।
सायं च तावदह्नो मध्ये मासद्वयं शेषम्१२१
एवं तदमृतमश्नन्
कान्तिं लभते चिरस्थिरं देहम् ।
सप्ताहत्रयमात्रात्-
सर्वरुजो हन्ति किं बहुना ॥ १२२ ॥
आर्याभिरिह नवत्या
सप्तविधीनां यथावदाख्यातम् ।
अमतिविपर्ययसंशय-
शून्यमनुष्ठानमुपनीतम् ॥ १२३ ॥
मुनिरचितशास्त्रपारं
गत्वा सारं ततः समुद्धृत्य ।
निबबन्ध बान्धवाना-
मुपकृतये कोऽपि षट्कर्मा ॥ १२४ ॥

(१९ अभ्रकसेवने वृद्धिह्रासप्रकारः) जिसकै इस प्रकार दस्त नहीं लगै वह अल्प गरम जलके संग जवाखारकों पीवै । तीन दिन समान ओषध लेवै चौथे दिन क्रमसें वढावै । जबतक आठ मासे हो फिर इसनें अधिक नहीं बढावै आदिमें दोरती और दूसरी वृद्धिमें तीन रत्ती इस्सें उपरंत नित्य प्रति पांच पांच रत्ती वढावै । वर्षभर ओषध लेना हो तो जितने दिन प्रथम वढाया हो वर्षके शेषमें उतनेही दिन उस लोहाकों घटावै । उन आठ महिनोंमें प्रभातविषै तीन मासे खावै और सायंकालमें तीन मासे और मध्याह्नमें दो मासेभर खावै । इस प्रकार उस अमृतकों खाता हुआ मनुष्य कांति और बहुत दिन स्थिर होनेवाला देहकों प्राप्त होता है। इक्कीस दिन इसको सेवनेसे संपूर्ण रोग नष्ट हो जाता है । बहुत करकै क्या है । सात विधियोंका यथावत् ९० आर्या छंदोंकरकै कहा है । नहीं बुद्धिवालाका विपरीत संशयसें शून्य अनुष्ठान कहा है।मुनिरचित शास्त्रके पारकों प्राप्त हो उस्सें सार निकास बांधवोंका उपकारके अर्थ कोईक षट्कर्मवाला निबंध करता भया । यह भक्षणविधि है । अमृतसारलोह समाप्त हुआ ।

(२०)यत्र तत्रोद्भवं लौहं निःशेषं मारितं यदि ।
त्रिफलाव्योषसंयुक्तं भक्षयेद्व्लिनाशनम् ॥१२५॥

सामान्याद्विगुणं चौड्रं कलिङ्गोऽष्टगुणस्ततः ।
तस्माच्छतगुणं भद्रं भद्राद्वज्रं सहस्रधा ॥१२६॥
वज्रात्षष्टिगुणः पाण्डिर्निरविर्दशभिर्गुणैः ।
ततः कोटिसहस्रं वा अयस्कान्तं महागुणम्१२७
रसतस्ताम्रं द्विगुणं
ताम्रात्कृष्णाभ्रकं द्विगुणम् ।
पृथगेवैषां शुद्धि-
स्ताम्रशुद्धिस्ततो द्विविधा ॥ १२८ ॥

(२० लोहसेवनेनुपानादि) जहांतहां उपजा लोहाकों अछी तरह मार जो त्रिफला सोंठ मिरच पीपलसें युत कर खावै वलियोंका नाश होता है । समानपनेसें दुगुना औंड्रदुगुना उस्से कलिंग आठगुना उस्सें भद्र १०० गुना भद्रसें वज्र १००० हजार गुना उस्से पांडि साठगुना उस्सें निरवि दशगुना उस्सें हजार किरोड अधिक गुणवाला कांतलोहा है । रससे तांवा दुगुना है तांवासें कृष्ण अभ्रक दुगुना है इन्होंकी अलग अलग शुद्धि है तिसकारणसें तांबाकी शुद्धि दो प्रकारकी है ।

(२१)पत्रीकृतस्य गन्धक-
योगाद्वा मारणं तथा लवणैः ।
आर्के ध्मापितताम्रे
निर्गुण्डीकल्ककाञ्जिकनिमग्ने ॥ १२९ ॥
यत्पतति गैरिकाभं तत्पिष्टं चार्धगन्धकं तदनु ।
पुटपाकेन विशुद्धं शुद्धं स्यादभ्रकं तु पुनः ॥१३०॥
हिलमोचिमूलपिण्डे
क्षिप्तं तदनु मार्दसंपुटे लिप्ते ।
तीक्ष्णं दग्धं पिष्ट-
मम्लाम्भसा साधुचन्द्रिकारहितम् १३१
रेचितताम्रेण रसः
स्वल्पशिलायां घृष्य पिण्डिका कार्या ।
उत्स्वेद्य गृहसलिलेन
निर्गुण्डीकल्केऽसकृच्छुद्धौ ॥ १३२ ॥
एतत्सिद्धं त्रितयं
चूर्णितताम्रार्द्धिकैः पृथग्युक्तम् ।
पिप्पलिविडङ्गमरिचैः
श्लक्ष्णं द्वित्रिमासिकं भक्ष्यम् ॥ १३३ ॥
शूलाम्लपित्तश्वयथु-
ग्रहणीयक्ष्मादिकुक्षिरोगेषु ।
रसायनं महदेत-
त्परिहारो नियमतो नात्र ॥ १३४ ॥

(२१ ताम्रयोगः) तांबाके पत्ते बनाय गंधकके संयोगसें अथवा नमकोंसें मारण होताहै । संभालूका कल्क और कांजी देकै धमाये हुयेमेंसें आगै जो गेरूके समान कांतिवाला पडै उसकों पीस पीछे आधा गंधक मिलाय पुटपाकसें शुद्ध करना । फिर अभ्रककों शुद्ध करना वथुवाकी जडके गोलेमें घाल पीछे सकोराके संपुटमें घाल कपडमाटीकर तेज दग्ध करै । पीछे खट्टा रससें पीसनेसें चंद्रिकासें रहित होजाताहै । रेचित तांबाकरकै छोटी शिलापर घिसाहुआ रसकी पिंडी बनानी । घरके पानीसें स्वेदित कर संभालूके कल्कमें वारंवार शुद्ध करै । ये तीनों सिद्ध किये आधा भाग चूर्णित किया तांबासें अलग युत करै । पीपल वायविडंग मिरच इन्होंकों मिहीन चूर्ण दो तीन मासेभर खाना शूल अम्लपित्त शोजा संग्रहणी राजरोग आदि कुक्षिरोग इन्होंमें यह उत्तम प्रयोग है । रसायन है यहां नियमसें पहरेज नहीं है ।

(२२)तनु पत्रीकृतं ताम्रं नैपालं गन्धकं समम् ।
दत्त्वा चोर्ध्वमधो मध्ये स्थालिकामध्यसंस्थितम्॥
कृत्वा स्वल्पविधानेन स्थालीमध्ये पिधाय च ।
शर्कराभक्तलेपेन लिप्त्वा सन्धिं तदूर्ध्वतः ॥१३६
वालुकापूरितस्थाल्यां पिहितायां पुनस्तथा ।
सुलिप्तायां च यामैकमधोज्वालां प्रदापयेत् १३७
तत आकृष्टताम्रस्य मृतस्य त्विह योजना ।
अथ कर्षं गन्धकस्य वह्निस्थलोहपात्रगम् ॥१३८॥
शिलापुत्रेण संमर्द्य द्रुतं घृष्टं पुनः पुनः ।
कृत्वा देयं मृतं ताम्रं कर्षमानं ततः पुनः १३९
रसोऽम्लमथितः शुद्धस्तावन्मात्रः प्रदीयते ।
ततस्तथैवं संमर्द्य पुनराज्यं प्रदापयेत् ॥ १४०॥
अष्टबिन्दुकमात्रं च मर्दयेन्मूर्च्छितं तथा ।
सर्वं स्यात्तस्य आकृष्य शिलापुत्रादिकं दृढम् ॥
संहृत्यालम्बुषरसप्रसृतेन विलोडितम् ।
पुनस्तथैव वह्निस्थलौहपात्रे विमर्दयेत् ॥ १४२॥
यावद्द्रवक्षयं पश्चादाकृष्य संप्रपेषितम् ।
अलम्बुषरसेनैव गुडकं संप्रकल्पयेत् ॥ १४३ ॥
तत्पिण्डं वस्त्रविस्तीर्णं पिण्डे त्रिकटुजे पुनः ।

वसनान्तरिते दत्त्वा पोट्टलीं कारयेद्बुधः ॥१४४॥
ततस्तां पोट्टलीमाज्यमग्नां कृत्वा विधारिताम् ।
सूत्रेण दण्डसंलग्नां पाचयेत्कुशलो भिषक् १४५
यदा निष्फेनता चाज्ये पुटिता च दृढा भवेत् ।

(२२ ताम्रभस्मपुटपाकविधिः) नैपालका तांबाकों मिहीन पत्ते बनाय बराबरभाग गंधक ले नीचे ऊपर दे स्थालीके मध्यमें स्थित कर। स्वल्प ढकनासें स्थालीके मध्यमें ढक खांड चावलके लेपसें ऊपरकी संधिकों लीप वालूसें पूरित कटीमें धर दूसरी स्थालीसें ढक अच्छीतरह लीप एक प्रहरतक अग्नि देवै। पीछे मृत किया तांबा मिलाना। पीछे १ तोलाभर गंधककों अग्निमें स्थित किया लोहाके पात्रमें घाल पत्थरके टुकडेसें पीस वारंवार शीघ्र पीसता रहै। उस्सें पीछे फिर मृत किया तांबा देना। खट्टा रससें मथित किया रसकी उतनीही मात्रा देनी। फिर तैसेही मर्दित कर फिर घृत देना और आठ बूंदमात्रकों मूर्छित कर मर्दित करै। पीछे निकास दृढरूप पत्थरके टुकडा आदिकों लेकै द्रव्यकों पीस आठ तोलेभर लज्जावंतीके रसमें आलोडित कर। फिर तैसेही अग्निपर स्थित किया लोहाके पात्रमें मर्दित करै। जबतक द्रवका क्षय हो तब पीसकर लज्जावंतीके रसकरकै गोला बनावै। वह गोला वस्त्रमें घाल सोंठ मिरच पीपलके पिंडमें घाल वस्त्रके मध्यमें देकै पोटली बनावै। पीछे उस पोटलीकों घृतसें भिगोय सूत्रके द्वारा दंडपर धारित कर कुशल वैद्य पकावै। जब घृतमें थोडे झाग आवनेलगै तब पुटित और दृढ होतीहै।

(२३)तदा पक्वं तमाकृष्य पञ्चगुञ्जातुलावृतम्॥
त्रिकटुत्रिफलाचूर्णं तुल्यं प्रातः प्रयोजयेत्।
तक्रं स्यादनुपानं तु अम्लपित्तोच्छ्रये पुनः १४७
त्रिफलैव समादेया कोष्णं वारि पिबेदनु ।
सप्तमे दिवसे रक्तिवृद्धिस्ताम्रात्तु मासकम्१४८
यावत्प्रयोगश्च तथैवापकर्षः पुनर्भवेत् ।
योगोऽयं ग्रहणीयक्ष्मपित्तशूलाम्लपित्तहा १४९
रसायनं चैतदिष्टं गुदकीलादिनाशनम् ।
न चात्र परिहारोऽस्ति विहाराहारकर्मणि १५०

(२३ ताम्रसेवनम्) जब पकजावै तब निकास पांच रत्तीभर ओषध बराबर घृत और सोंठ मिरच पीपल त्रिफलाका चूर्ण बराबर भाग मिलाय प्रभातमें प्रयुक्त करै। फिर अम्लपित्तकी अधिकतामें तक्र अनुपान है। त्रिफला समान देना पीछे अल्प गरम किया पानी पीना। सातवे दिनमें रत्तीकी वृद्धि करै। मासापर्यंत जबतक बढावै तबतकही फिर घटाता रहै। यह योग ग्रहणी राजरोग पित्तशूल अम्लपित्त इन्होंकों नाशताहै। यह रसायन इष्ट है। गुदाके कीलाआदिकों नाशता है। विहार और आहार कर्ममें यहां परिहार नहीं है।

(२४)हेमाद्याः सूर्यसन्तप्ताः स्रवन्ति गिरिधातवः
जत्वाभं मृदुमृत्स्नाच्छं यन्मलं तच्छिलाजतु १५१
अनम्लं चाकषायं च कटुपाकि शिलाजतु ।
नात्युष्णशीतं धातुभ्यश्चतुर्भ्यस्तस्य सम्भवः १५२
हेम्नोऽथ रजतात्ताम्राद्वरं कृष्णायसादपि ।
मधुरं च सतिक्तं च जवापुष्पनिभं च यत् १५३
विपाके कटु तिक्तं च तत्सुवर्णस्य निःस्रवम् ।
राजतं कटुकं श्वेतं स्वादु शीतं विपच्यते॥१५४॥
ताम्राद्बर्हिणकण्ठाभं तीक्ष्णोष्णं पच्यते कटु ।
यत्तु गुग्गुलुसङ्काशं तिक्तकं लवणान्वितम् १५५
विपाके कटु शीतं च सर्वश्रेष्ठं तदायसम् ।
गोमूत्रगन्धः सर्वेषां सर्वकर्मसु यौगिकः ॥१५६॥
रसायनप्रयोगेषु पश्चिमं तु विशिष्यते ।

(२४ शिलाजतुभस्मादि) सोनाआदि पर्वतके धातु सूर्यसें तपकै लाखके समान कांतिवाला कोमल और माटीसें स्वच्छ जो मल हो वह शिलाजीत होताहै। नहीं खट्टा नहीं कसैला कडुवा पाकवाला ऐसा शिलाजीत है न अत्यंत गरम है औ न अत्यंत शीतल है चार धातुओंसें उत्पन्न होताहै। सोना चांदी तांबा और काला लोहा इन्होंसें होताहै परंतु लोहासें झिरा उत्तम है। मधुर कडुआ और दारुंदका फूलके समान कांतिवाला और पाकमें चर्चरा और कडुवा ऐसा शिलाजीत सोनासें उपजाहै। चांदीसें उपजा शिलाजीत चर्चरा और सुपेद होताहै और पकनेमें स्वादु और शीतल होताहै। तांबासें उपजा शिलाजीत मोरका कंठके समान कांतिवाला तीक्ष्ण और गरम होताहै। और पाकमें चर्चरा होताहै। जो गूगलके समान कांतिवाला हो कडुआ है नमकसें युत हो और पाकमें चर्चरा और शीतल हो वह लोहासें उपजा शिलाजीत सबोंसें उत्तम होताहै। सब शिलाजीतोंमें गोमूत्रकैसा गंध आता है। सब कर्मोंमें युक्त करना रसायनके प्रयोगोंमें लोहासें उपजा शिलाजीत उत्तम है।

(२५)यथाक्रमं वातपित्ते श्लेष्मपित्ते कफे त्रिषु॥
विशेषेण प्रशस्यन्ते मला हेमादिधातुजाः ।
लौहकिट्टायते वह्नौ विधूमं दह्यतेऽम्भसि ॥१५८
तृणात्यग्रे कृतं सर्वमधो गलति तन्तुवत् ।
मलिनं यद्भवेत्तच्च क्षालयेत्केवलाम्भसा ॥१५९॥
लौहपात्रेषु विधिना ऊर्ध्वभूतं च संहरेत् ।
वातपित्तकफघ्नैस्तु निर्यूहैस्तत्सुभावितम् ॥१६०
वीर्योत्कर्षं परं याति सर्वैरेकैकशोऽपि वा ।
प्रक्षिप्योद्धृतमावानं पुनस्तत्प्रक्षिपेद्रसे ॥ १६१ ॥
कोष्णे सप्ताहमेतेन विधिना तस्य भावना ।
तुल्यं गिरिजेन जले
चतुर्गुणे भावनौषधं क्वाथ्यम् ॥ १६२ ॥
ततः क्वाथे पादांशे
पूतोष्णे प्रक्षिपेद्गिरिजम् ।
तत्समरसतां यातं
संशुष्कं प्रक्षिपेद्रसे भूयः ॥ १६३ ॥

(२५ भिन्नधातुमलरसायनादि) क्रमके अनुसार वातपित्तमें कफपित्तमें कफमें विशेषकरकै सोना आदि धातुओंसें उपजे मल श्रेष्ठ हैं । लोहाका मैलकी तरह आचरित करता हुआ अग्निमें धूमासें रहित होताहै । जलमें दग्ध होताहै तृणके अग्रभागमें धारण किया तांतकी तरह संपूर्ण नीचै गिरता है । जो मलसें युत हो वह अकेला पानीसें धोय डालना लोहाके पात्रोंमें विधिकरकै ऊपर प्राप्त हुआको ग्रहण करै । वात पित्त कफनाशक क्वाथोंसें भावित किया अत्यंत वीर्यवाला होजाताहै । सब क्वाथोंसें अथवा एकएक क्वाथसें भावना देवै । गेरकै ऊपर आयाकों फिर अल्प गरम किया रसमें गेरै सात दिन इसी विधिसें भावना देनी । चौगुना पानीमें शिलाजीतके समान भावनाके ओषधोंका क्वाथ बनाना पीछे चौथाईभाग शेष रहा वस्त्रसें छाना और गरम रूपमें शिलाजीत डालना । उसके समान रसताको प्राप्त हुआको सुखाकै फिर रसमें डालै ।

(२६)पूर्वोक्तेन विधानेन लौहैश्चूर्णीकृतैः सह ।
तत्पीतं पयसा दद्याद्दीर्घमायुः सुखान्वितम्१६४
जराव्याधिप्रशमनं देहदार्ढ्यकरं परम् ।
मेधास्मृतिकरं धन्यं क्षीराशी तत्प्रयोजयेत्१६५
प्रयोगः सप्त सप्ताहास्त्रयश्चैकश्च सप्तकः ।
निर्दिष्टस्त्रिविधस्तस्य पुरो मध्यो वरस्तथा १६६
मात्रा पलं त्वर्धपलं स्यात्कर्षं तु कनीयसी ।
शिलाजतुप्रयोगेषु विदाहीनि गुरूणि च ।
वर्जयेत्सर्वकालं च कुलत्थान्परिवर्जयेत् ॥१६७॥
पयांसि शुक्तानि रसाः सयूषा-
स्तोयं समूत्रं विविधाः कषायाः ।
आलोडनार्थे गिरिजस्य शस्ता-
स्ते ते प्रयोज्याः प्रसमीक्ष्य कार्यम् ॥१६८

(२६ एतद्रसमसेवने फलम्) पूर्वोक्त विधानकरकै चूर्णित किये लोहोंके संग दूध करकै देकै पीवै तो दीर्घ आयु और सुखसें युत मनुष्य होताहै । बुढापा और रोगकों शांत करताहै । शरीरकों दृढ करताहै मेधा और स्मृतिकों करताहै धन्य है । दूध पीनेवाला इसकों देवै । इसका प्रयोग सात सप्ताह तथा तीन सप्ताह और एक सप्ताह ऐसे उत्तम मध्यम और अल्प कहाहै । चार तोले मात्रा उत्तम है । दो तोले मात्रा मध्यम है । एक तोला मात्रा अल्प है । शिलाजीतके प्रयोगोंमें दाहकारक और भारी पदार्थ और कुलथी इन्होंकों सबकाल वर्जित करै । दूध शुक्त कांजीभेद रस यूष जल गोमूत्र अनेक प्रकारके क्वाथ ये सब शिलाजीतका आलोडन करनेके अर्थ कार्यको देखकर प्रयुक्त करने श्रेष्ठ हैं ।

(२७)चरकोक्तशिलाजतुनो
विधानं सोपस्करं ह्येतत् ।
काले तु रवितापाढ्ये
कृष्णायसजं शिलाजतु प्रवरम् ॥१६९॥
त्रिफलारससंयुक्तं
त्र्यहश्च शुष्कं पुनः शुष्कम् ।
दशमूलस्य गुडूच्या
रसे बलायास्तथा पटोलस्य ॥ १७० ॥
मधुकरसैर्गोमूत्रे
त्र्यहं त्र्यहं भावयेत्क्रमशः ।
एकाहं क्षीरेण तु
तच्च पुनर्भावयेच्छुष्कम् ।
सप्ताहं भाव्यं स्या-
त्क्वाथैनैषां यथालाभम् ॥ १७१ ॥
काकोल्यौ द्वे मेदे
विदारियुग्मं शतावरी द्राक्षा ।

ऋद्धियुगर्षभवीरा
मुण्डितिकाजीरकेंऽशुमत्यौ च ॥ १७२ ॥
रास्नापुष्करचित्रक-
दन्तीभकणाकलिङ्गचव्याब्दाः ।
कटुकाशृङ्गीपाठा
एतानि पलांशिकानि कार्याणि ॥१७३ ॥
अद्रोणे साधितानां
रसेन पादांशिकेन भाव्यानि ।
गिरिजस्यैवं भावित-
शुद्धस्य पलानि दश षट् च ॥ १७४ ॥
द्विपलं च विश्वधात्री
मागधिकायाश्च मरिचानाम् ।
चूर्णं पलं विदार्या-
स्तालीसपलानि चत्वारि ॥ १७५ ॥
षोडश सितापलानि
चत्वारि घृतस्य माक्षिकस्याष्टौ ।
तिलतैलस्य द्विपलं
चूर्णार्धपलानि पञ्चानाम् ॥ १७६ ॥
त्वक्क्षीरीपत्रत्वक्
नागैलानां च मिश्रयित्वा तु ।
गिरिजस्य षोडशपलै-
र्गुडिकाः कार्यास्ततोऽऽक्षसमाः ॥१७७॥
ताः शुष्का नवकुम्भे जातीपुष्पाधिवासिते स्थाप्याः
तासामेका काले भक्ष्या पेयापि वा सततम् १७८

(२७ शिलाजतूद्भवा शिवागुटिका) चरकमें कहा सामग्रीसहित शिलाजीतका विधान यहहै । सूर्यके घामसें युत हुआ कालमें काला लोहासें उपजा शिलाजीत श्रेष्ठ है। त्रिफलाके रससें संयुत कर तीन दिन सुखाय फिर सुखा दशमूल और गिलोयके रसमें तथा खरैंहटी और परवलके रसमें मुलहटीके रसमें और गोमूत्रमें क्रमसें तीन तीन दिन भावना देवै । एक दिन दूधसें फिर सुखाकै यथालाभ इन ओषधोंके काथोंसें सात दिन भावना देवै । काकोली क्षीरकाकोली मेदा महामेदा दोनों विदारी शतावरी दाख ऋद्धि वृद्धि ऋषभक ब्राह्मी मुंडी जीरा सालपर्णी पृश्निपर्णी रास्ना पौहकरमूल चीता जमालगोटाकी जड पीपल कूडा चव्य नागरमोथा कुटकी काकडाशिंगी पाठा ये सब चार चार तोले लेने । एक द्रोणभर पानीमें पकाकै चौथाई भाग शेष रहै उस रसमें भावना देवै । इसप्रकार भावित और शुद्ध करी शिलाजीत अठारापल सोंठ आंवला पीपल मिरच ये दो पल विदारीकंद एक पल तालीशपत्र चार पल मिश्री सोलह पल घृत चार पल शहद आठ पल तिलोंका तेल दो पल इन पांच ओषधोंका चूर्ण आधा पल वंशलोचन तेजपात दालचिनी नागकेशर इलायची इन्होंके पूर्वोक्त चूर्णकों मिलाय सोलह पलभर शिलाजीतकी दश-दश मासेभरकी गोलियां करनी । पीछे सूखी हुई गोलियां चमेलीके फूलोंसें अधिवासित किये कलशेमें स्थापित करनी। तिन्होंमांहसें एक गोली निरंतर खानी अथवा पीनी उचितहै ।

(२८)क्षीररसदाडिमरसाः
सुरासवं मधु च शिशिरतोयानि ।
आलोडनानि तासा-
मनुपाने वा प्रशस्यन्ते ॥ १७९ ॥
जीर्णे लघ्वन्नपयो जाङ्गलिनिर्यूहयूषभोजी स्यात् ।
सप्ताहं यावदतः परं भवेत्सोपि सामान्यः १८०
भुक्त्वापि भक्षितेयं
यदृच्छया नावहेद्भयं किञ्चित् ।
निरुपद्रवा प्रयुक्ता
सुकुमारैः कामिभिश्चैव ॥ १८१ ॥
संवत्सरप्रयुक्ता
हन्त्येषा वातशोणितं प्रबलम् ।
बहुवार्षिकमपि गाढं
यक्ष्माणं चाढ्यवातं च ॥ १८२ ॥
ज्वरयोनिशुक्रदोषप्लीहार्शःपाण्डुग्रहणीरोगान् ।
ब्रध्नवमिगुल्मपीनसहिक्काकासारुचिश्वासान् ॥
जठरं श्वित्रं कुष्ठं पाण्ड्यं क्लैब्यं मदं क्षयं शोषम्।
उन्मादापस्मारौ वदनाक्षिशिरोगदान्सर्वान् १८४
आनाहमतीसारं
सासृग्दरं कामलाप्रमेहांश्च ।
यकृदर्बुदानि विद्रधिं
भगन्दरं रक्तपित्तं च ॥ १८५ ॥
अतिकार्श्यमतिस्थौल्यं
स्वेदमथ श्लीपदं च विनिहन्ति ।
दंष्ट्राविषं समौलं
गराणि च बहुप्रकाराणि ॥ १८६ ॥

मन्त्रौषधियोगादीन्
विप्रयुतान्भौतिकान्भावान् ।
पापालक्ष्म्यौ चेयं
शमयेद्गुडिका शिवा नाम्ना ॥ १८७ ॥
बल्या वृष्या धन्या कान्तियशःप्रजाकरी चेयम् ।
दद्यान्नृपवल्लभतां जयं विवादे सुखस्था च १८८
श्रीमान्प्रकृष्टमेधः
स्मृतिबुद्धिबलान्वितोऽतुलशरीरः ।
पुष्ट्योजोवर्णेन्द्रिय-
तेजोबलसम्पदादिसदुपेतः ॥ १८९ ॥
वलिपलितरोगरहितो
जीवेच्छरदां शतद्वयं पुरुषः ।
संवत्सरप्रयोगाद्
द्वाभ्यां शतानि चत्वारि ॥ १९० ॥
सर्वामयजित्कथितं
मुनिगणभक्ष्यं रसायनरहस्यम् ॥ १९१ ॥
समुद्रभूवामृतमन्थनोत्थः
स्वेदः शिलाभ्योऽमृतवद्गिरेः प्राक् ।
यो मन्दरस्यात्मभुवा हिताय
न्यस्तश्च शैलेषु शिलाजरूपी ॥ १९२ ॥
शिवागुडिकेति रसायन-
मुक्तं गिरिशेन गणपतये ।
शिववदनविनिर्गता यस्मा-
न्नाम्ना तस्माच्छिवागुडिकेति ॥ १९३ ॥

(२८ शिवागुटिकासेवनविधिर्गुणाश्च) दूध अनारका रस मदिरा आसव शहद शीतल पानी उन्होंके आलोडनमें अथवा अनुपानमें श्रेष्ठ है। जीर्ण होनेपर हलका अन्न दूध जांगलदेशके जीवके मांसका क्वाथ और यूषकों भोजन करै। सातदिनपर्यंत इस्सें परै सामान्य भोजन करना। भोजन करकै भक्षण करीभी यह यदृच्छाकरकै कुछभी भय नहीं करतीहै। सुकुमारोंनें और कामियोंनें प्रयुक्त करी यह उपद्रवोंकों दूर करतीहै। वर्षभर प्रयुक्त करी यह प्रबल वातरक्तकों और बहुतवर्षका राजरोगकों और आढ्यवातकों नाशतीहै। ज्वर योनिदोष वीर्यदोष तिल्लीरोग बवासीर पांडु ग्रहणी ब्रध्नरोग छर्दि गुल्म पीनस हिचकी खांसी अरुचि श्वास उदररोग श्वित्र कुष्ठ पंढता नपुंसकता मद क्षय शोष उन्माद मृगीरोग मुखरोग नेत्ररोग शिरोरोग अफारा अतीसार प्रदर कामला प्रमेह यकृत्रोग अर्बुद विद्रधि भगंदर और रक्तपित्त अत्यंत माडापन अत्यंत मुढापा पसीना श्लीपद जाडका विष मूलविष बहुत प्रकारके कृत्रिम विष ब्राह्मणोंकरकै प्रयुक्त मंत्र और ओषधीके योग भौतिक भाव पाप आलक्ष्मी इन सबकों यह शिवागुटिका नाशतीहै। बलकों करतीहै वीर्यकों बढातीहै धन्य है कांति यश और संतानकों करतीहै। राजासें मित्रता करातीहै विवादमें जय देतीहै और सुखमें स्थित करतीहै। लक्ष्मीवान् उत्तम बुद्धिवाला स्मृति और बुद्धिसें युत उत्तम शरीरवाला और पुष्टि पराक्रम वर्ण इंद्रिय तेज बल संपत इन्होंसें युत ऐसा मनुष्य होजाताहै। वली और सपेद बालोंसें रहित होकै पुरुष २०० वर्षपर्यंत जीवताहै। वर्षभर सेवनेसें और दोवर्ष सेवनेसें चारसौ ४०० वर्ष जीवताहै। सर्व रोगोंकों जीतताहै मुनिजनोंकों खाना योग्य है गुप्त रसायन है। पहले मंदराचलपर्वतकी शिलाओंसें अमृत मथनेके समय पसीना निकसा वह ब्रह्माजीनें जगत्का कल्याणके अर्थ पर्वतोंमें शिलाजीतरूप बनाके स्थापित किया है। शिवागुटिकानामक रसायन महादेवजीनें गणेशजीके अर्थ कहाहै। जिस कारण महादेवजीके मुखसें निकसी उसी कारणसें शिवागुडिका नाम बनाया। यह शिवागुटिका शैवसिद्धांतमें कही है।

(२९) सुपक्वभल्लातफलानि सम्यक्
द्विधा विदार्याढकसंमितानि ।
विपाच्य तोयेन चतुर्गुणेन
चतुर्थशेषे व्यपनीय तानि ॥ १९४ ॥
पुनः पचेत्क्षीरचतुर्गुणेन
घृतांशयुक्तेन घनं यथा स्यात् ।
सितोपलाषोडशभिः पलैस्तु
विमिश्र्य संस्थाप्य दिनानि सप्त ॥ १९५ ॥
ततः प्रयोज्याग्निबलेन मात्रां
जयेद्गुदोत्थानखिलान्विकारान् ।
कचान्सुनीलान्घनकुञ्चिताग्रान्
सुपर्णदृष्टिं सुकुमारतां च ॥ १९६ ॥
जवं हयानां च मतङ्गजं बलं
स्वरं मयूरस्य हुताशदीप्तिम् ।

स्त्रीवल्लभत्वं लभते प्रजां च
नीरोगमब्दाद्विशतानि चायुः ॥ १९७ ॥
न चान्नपाने परिहार्यमस्ति
न चातपे चाध्वनि मैथुने च ।
प्रयोगकाले सकलामयानां
राजा ह्ययं सर्वरसायनानाम् ॥ १९८ ॥
भल्लातकशुद्धिरिह प्रागिष्टचूर्णगुण्डनात् ।
घृताच्चतुर्गुणं क्षीरं घृतस्य प्रस्थ इष्यते ॥१९९॥

इति रसायनाधिकारः ।

(२९ अमृतभल्लातकी) सुंदर पके हुये भिलावोंके २५६ तोलेभर फलोंकी अच्छी तरह दो फांक बनाय चौगुने पानीमें पकाकै चौथाई भाग शेष रहे तब निकास चौगुने दूधमें फिर पकावै, जैसे घनरूप हो । पीछे ६४ तोलेभर मिश्री डाल सात दिन स्थापित करै । पीछे अग्निके बलसें मात्राकों प्रयुक्त करै । यह गुदाके संपूर्ण विकारोंकों जीतताहै । सुंदर नीलरूप और सुंदर अग्रभागवाले ऐसे वाल हो जाते हैं । गरुडकी दृष्टिके समान दृष्टि हो जाती है और सुकुमारता उपजतीहै । और घोडोंका वेग हस्तियोंका बल मोरका स्वर अग्निके समान प्रकाश स्त्रियोंका मित्र और संतान इन्होंकों प्राप्त होताहै । रोगसें रहित होकै२०० वर्ष आयु होता है । अन्न और पानमें पहरेज नहीं है। और घाम मार्गगमन स्त्रीसंग इन्होंका पहरेज नहीं है । प्रयोगकालमें सब रोगोंका और सब रसायनोंका यह राजा है । भिलावाकी शुद्धि यहां पूर्व कहे वांछित चूर्णके गुंडनसें । है घृतसें चौगुना दूध ६४ तोलेभर घृत लेना ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां रसायनाधिकारः ।

अथ वृष्याधिकारः ६६

अब वृष्य अर्थात् वाजीकरण अधिकार कहते है ।

(१)पिप्पलीलवणोपेतौ बस्ताण्डौ क्षीरसर्पिषा ।
साधितौ भक्षयेद्यस्तु स गच्छेत्प्रमदाशतम् ॥१॥
बस्ताण्डसिद्धे पयसि साधितानसकृत्तिलान् ।
यः खादेत्स नरो गच्छेत्स्त्रीणां शतमपूर्ववत्॥२॥
चूर्णं विदार्याः सुकृतं स्वरसेनैव भावितम् ।
सर्पिःक्षीरयुतं लीढ्वा शतं गच्छेद्वराङ्गनाः ॥ ३ ॥
एवमामलकं चूर्णं स्वरसेनैव भावितम् ।
शर्करामधुसर्पिर्भिर्युक्तं लीढ्वा पयः पिबेत् ।
एतेनाशीतिवर्षोऽपि युवेव परिहृष्यते ॥ ४ ॥
विदारीकन्दकल्कं तु घृतेन पयसा नरः ।
उदुम्बरसमं खादन्वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ५ ॥
स्वयंगुप्तागोक्षुरयोर्बीजचूर्णं सशर्करम् ।
धारोष्णेन नरः पीत्वा पयसा न क्षयं व्रजेत् ६
उच्चटाचूर्णमप्येवं क्षीरेणोत्तममुच्यते ।
शतावर्युच्चटाचूर्णं पेयमेवं सुखार्थिना ॥ ७ ॥
कर्षं मधुकचूर्णस्य घृतक्षौद्रसमन्वितम् ।
पयोऽनुपानं यो लिह्यान्नित्यवेगः स ना भवेत्
गोक्षुरकः क्षुरकः शतमूली
वानरि नागबलातिबला च ।
चूर्णमिदं पयसा निशि पेयं
यस्य गृहे प्रमदाशतमस्ति ॥ ९ ॥

(१ वाजीकरा उपायाः) बकराके आंडोंकों दूध घृतमें सिद्धकर पीपल नमकसें युत बनाय खावै तो १०० स्त्रियोंकों भोग सक्ता है । बकराके अंडसें सिद्ध किये दूधमें तिलोंकों वारंवार सिद्धकर जो नर खावै वह १००स्त्रियोंसें विना परिश्रम भोग कर सक्ता है । विदारीकंदका चूर्ण बनाय विदारीकंदके स्वरससें भावित कर घृत और दूधसें युत कर चाटै तो १०० स्त्रियोंसें भोग कर सक्ता है । इसी प्रकार आंवलोंका चूर्ण बनाय आंवलोंके स्वरसमें भावित कर पीछे खांड शहद घृत डाल चाटकै ऊपर दूध पीवै। इसकरकै अस्सी वर्षकी उमरवाला पुरुषभी जवानकी तरह भोग कर सक्ता है । विदारीकंदके कल्ककों घृत और दूधके संग ४ तोलेभर खावै तो वृद्धभी जवानकी तरह हो जाताहै। कौंचके बीज तालमखाना इन्होंके चूर्णमें खांड डाल धारसें निकसा दूधके संग पीकै पुरुष क्षयकों नहीं प्राप्त होता है । भूमिआंवलाका चूर्णभी इसीप्रकार दूधके संग उत्तम कहा है । इसी प्रकार शतावरी और भूमिआंवलाका चूर्णभी सुखकी इच्छावालानें पीना उचित है । मुलहटीका चूर्ण १ तोलाभरमें घृत और शहद डाल चाटकै ऊपर दूधकों पीवै तो नित्य वेगवाला पुरुष होजाताहै । गोखरू तालमखाना शतावरी कौंचके बीज बडीखरैंहटी गंगेरन इन्होंका चूर्ण दूधके संग रात्रिमें पीना । जिसकै १०० स्त्रिया हों ।

(२)घृतभृष्टो दुग्धमाषपायसो वृष्य उत्तमः ।
दध्नः सारं शरच्चन्द्रसन्निभं दोषवर्जितम् १०

शर्कराक्षौद्रमरिचैस्तुगाक्षीर्या च बुद्धिमान् ।
युक्त्या युक्तं ससूक्ष्मैलं नवे कुम्भे शुचौ पटे ११
मार्जिते प्रक्षिपेच्छीते घृताढ्यं षष्टिकौदनम् ।
तद्दद्यादुपरिष्टाच्च रसानां मात्रया पिबेत् ।
वर्णस्वरबलोपेतः पुमांस्तेन वृषायते ॥ १२ ॥
आर्द्राणि मत्स्यमांसानि शफरीर्वा सुभर्जिताः ।
तप्ते सर्पिषि यः खादेत्स गच्छेत्स्त्रीषु न क्षयम्

(२ घृत भृष्टमाषाद्यौषधानि) घृतमें उडदोंकों भून दूध में मिलाय खीर बनावै । यह उत्तम वाजीकरण है । दहीसें शरदृऋतुका चंद्रमाके समान कांतिवाला और दोषोंसें वर्जित ऐसा दहीका सर लेकै खांड शहद मिरच वंशलोचन छोटी इलायची इन्होंसे युत कर युक्तिसे नवीन और शुद्ध कपडामें प्राप्त कर छानै । उसमें घृत और सांठी चावल डाल ऊपर मात्राकरकै पीवै । उसकरकै वर्ण और स्वरसें युत होकै पुरुष भोग करनेमें बहुत समर्थ होता है । गीले मछलीके मांस अथवा गरम घृतमें भूनी हुई मछलीकों जो पुरुष खावै वह स्त्रियोंमें क्षीण नहीं होता ।

(३)शतावरीरजःप्रस्थं प्रस्थं गोक्षुरकस्य च ।
वाराह्या विंशतिपलं गुडूच्याः पञ्चविंशतिः ।
भल्लातकानां द्वात्रिंशच्चित्रकस्य दशैव तु १४
तिलानां शोधितानां च प्रस्थं दद्यात्सुचूर्णितम्
त्र्यूषणस्य पलान्यष्टौ शर्करायाश्च सप्ततिः ॥ १५॥
माक्षिकं शर्करार्धेन माक्षिकार्धेन वै घृतम् ।
शतावरीसमं देयं विदारीकन्दजं रजः ॥ १६ ॥
एतदेकीकृतं चूर्णं स्निग्धे भाण्डे निधापयेत् ।
पलार्धमुपयुञ्जीत यथेष्टं चापि भोजनम् ॥ १७ ॥
मासैकमुपयोगेन जरां हन्ति रुजामपि ।
वलीपलितखालित्यमेहपाण्ड्वाद्यपीनसान् ॥१८॥
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि तथाष्टावुदराणि च ।
भगन्दरं मूत्रकृच्छ्रं गृध्रसीं सहलीमकम् ॥१९॥
क्षयं चैव महाश्वासान्पञ्चकासान्सुदारुणान् ।
अशीतिं वातजान्रोगांश्चत्वारिंशच्च पैत्तिकान् २०
विंशतिं श्लैष्मिकांश्चैव संसृष्टान्सान्निपातिकान्
सर्वानर्शोगदान्हन्ति वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥२१॥
स काञ्चनाभो मृगराजविक्रम-
स्तुरङ्गमं चाप्यनुयाति वेगतः ।
स्त्रीणां शतं गच्छति सोऽतिरेकं
प्रकृष्टदृष्टिश्च यथा विहङ्गः ॥ २२ ॥
पुत्रान्सञ्जनयेद्धीरान्नरसिंहनिभांस्तथा ।
नारसिंहमिदं चूर्णं सर्वरोगहरं नृणाम् ॥ २३ ॥
वाराहीकन्दसङ्गस्तु चर्मकारालुको मतः ।
पश्चिमे वृष्टिशब्दाख्यो वराहलोमवानिव ॥२४ ॥

(३ वृष्यं नारसिंहचूर्णम्) शतावरी ६४ तोले गोखरू ६४ तोले वाराहीकंद ८० तोले गिलोय १०० तोले भिलावे १२८ तोले चीता ४० तोले शोधित किये तिलोंका चूर्ण ६४ तोले त्रिकुटा ३२ तोले खांड २८० तोले शहद १४० तोले घृत ७० तोले शतावरीके समान विदारीकंदका चूर्ण इन सबकों मिलाय चूर्ण बनाय चिकने पात्रमें घाल स्थापित करै । दो तोलेभर खाकै मनोवांछित भोजन करै । एकमहीना सेवनेसें बुढापा और पीडाकों नाशताहै । वलीपलित खालित्य प्रमेह पांडुआदि पीनस अठारह कुष्ठ आठ उदररोग भगंदर मूत्रकृच्छ्र गृध्रसी हलीमक क्षय महाश्वास भयंकर पांचों खांसी अस्सी वातरोग चालीस पित्तके रोग वीस कफके रोग मिले हुये और सन्निपातरूप सब प्रकारके ववासीररोग इन्होंकों नाशताहै । जैसे वृक्षकों इंद्रका वज्र । इस नारसिंहचूर्णकों सेवन करनेवाला पुरुष सुवर्णके समान तेजस्वी होताहै और सिंहसरीखा पराक्रमवाला तथा वेगमें घोडाके समान दौडनेवाला होताहै और सामर्थ्यसें १०० स्त्रियोंमें गमन करसकताहै । गरुडके समान करडी दृष्टिवाला होताहै तथा सिंहसरीखे शूरवीर पुत्रोंकों उपजाताहै । यह नारसिंहचूर्ण मनुष्योंके सब रोगोंकों नाश करनेवाला है । विदारीकंद सेवन करनेवाला पुरुष चर्मकार वृक्ष समान दृढलिंगवाला और आलुकके समान खाज (रमणकी उत्कंठा) वाला और सूकरके लोम सरीखा दृढ होताहै । यह २४ वा श्लोक गूढार्थ है ।

(४)गोधूमाच्च पलशतं निःक्वाथ्य सलिलाढके ।
पादावशेषे पूते च द्रव्याणीमानि दापयेत् २५
गोधूमं मुञ्जातफलं माषद्राक्षापरूषकम् ।
काकोली क्षीरकाकोली जीवन्ती सशतावरी २६
अश्वगन्धा सखर्जूरा मधुकं त्र्यूषणं सिता ।
भल्लातकमात्मगुप्ता समभागानि कारयेत् ॥२७॥
घृतप्रस्थं पचेदेकं क्षीरं दत्त्वा चतुर्गुणम् ।
मृद्वग्निना च सिद्धे च द्रव्याण्येतानि निःक्षिपेत्

त्वगेलापिप्पलीधान्यकर्पूरं नागकेशरम् ।
यथालाभं विनिक्षिप्य सिताक्षौद्रपलाष्टकम्॥२९॥
शस्त्वेक्षुदण्डेनालोड्य विधिवद्विनियोजयेत् ।
दाल्योदनेन भुञ्जीत पिबेन्मांसरसेन वा ॥३०॥
केवलस्य पिबेदस्य पलमात्रां प्रमाणतः ।
न तस्य लिङ्गशैथिल्यं न च शुक्रक्षयो भवेत्३१
बल्यं परं वातहरं शुक्रसञ्जननं परम् ।
मूत्रकृच्छ्रप्रशमनं वृद्धानां चापि शस्यते ॥३२॥
पलद्वयं तदश्नीयाद्दशरात्रमतन्द्रितः ।
स्त्रीणां शतं च भजते पीत्वा चानुपिबेत्पयः ३३
अश्विभ्यां निर्मितं चैतद्गोधूमाद्यं रसायनम् ।
जलद्रोणे तु गोधूमक्काथे तच्छेषमाढकम् ॥३४॥
मुञ्जातकस्य स्थाने तु तद्गुणं तालमस्तकम् ।
कल्कद्रव्यसमं मानं त्वगादेः साहचर्यतः ॥३५॥

(४ वृष्यं गोधूमाद्यं घृतम्) गेहूं ४०० तोले भरका २५६ तोलेभर पानीमें क्वाथ बनाय जब चौथाई भाग शेष रहै तब वस्त्रसें छान इन ओषधोंकों डालै। तवाखीर मुंजातफल उडद दाख फालसा काकोली क्षीरकाकोली जीवंती शतावरी आसगंध खिजूर मुलहटी सोंठ मिरच पीपल मिश्री भिलावा कोचके बीज समभाग लेने। चौगुना दूध देकै ६४ तोलेभर घृतकों पकावै। मंदअग्निसें सिद्ध कर ये ओषध मिलावै। दालचिनी इलायची पीपल धनियां कपूर नागकेशर इन्होंमाहसें जितने मिलै उतने लेकै मिश्री और शहद ३२ तोलेभर डालै। ईखके गंडेसें आलोडित कर विधिपूर्वक प्रयुक्त करै। शालिचावलसें भोजन अथवा मांसका रससें पीवै। इसके बलकी ४ तोलेभर मात्राकों पीवै उसका लिंग शिथिल नहीं होता और वीर्य छुटता नहीं। बलकों बढाताहै वातकों हरता है वीर्यकों उपजाता है मूत्रकृच्छ्रकों शांत करता है और वृद्धोंकोंभी श्रेष्ठ है। आठ तोलेभर खावै। सावधान होकै दशरात्रिपर्यंत ऊपर दूधकों पीवै तो१०० स्त्रियोंकों भोगसक्ता है। यह गोधूमाद्य रसायन अश्विनीकुमारोंनें रचाहै। द्रोण १०२४ तोलेभर क्वाथमें आढक २५६ तोलेभर शेष रखना। मुंजातफलकी जगह उसी गुणवाला ताडका मस्तक देना। दालचिनी आदिके साहचर्यसें कल्कका द्रव्यके समान परिमाण है।

(५)घृतं शतावरीगर्भं क्षीरे दशगुणे पचेत् ।
शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुक्तं तद्वृष्यमुच्यते ॥ ३६ ॥

(५ शतावरीघृतम्) दशगुणा दूधमें शतावरीका कल्क डाल घृतकों पकावै। पीछे खांड पीपल और शहदसें युत कर पीवै। यह वीर्यकों बढाता है।

(६)कूष्माण्डकात्पलशतंसुस्विन्नंनिष्कुलीकृतम् ।
प्रस्थं घृतस्य तैलस्य तस्मिंस्तप्ते प्रदापयेत् ॥३७॥
त्वक्पत्रधन्याकव्योषजीरकैलाद्वयानलम् ।
ग्रन्थिकं चव्यमानङ्गपिप्पलीविश्वभेषजम् ॥३८॥
शृङ्गाटकं कशेरुं च प्रलम्बं तालमस्तकम् ।
चूर्णीकृतं पलांशं च गुडस्य च तुलां पचेत् ३९
शीतीभूते पलान्यष्टौ मधुनः संप्रदापयेत् ।
कफपित्तानिलहरं मन्दाग्नीनां च शस्यते ॥४०॥
कृशानां बृंहणं श्रेष्ठं वाजीकरणमुत्तमम् ।
प्रमदासु प्रसक्तानां ये च स्युः क्षीणरेतसः ४१
क्षयेण च गृहीतानां परमेतद्भिषग्जितम् ।
कासं श्वासं ज्वरं हिक्कां हन्ति छर्दिमरोचकम्
गुडकूष्माण्डकं ख्यातमश्विभ्यां समुदाहृतम् ।
खण्डकूष्माण्डवत्पात्रं स्विन्नकूष्माण्डकद्रवः ४३
यत्किञ्चिन्मधुरं स्निग्धं जीवनं बृंहणं गुरु ।
हर्षणं मनसश्चैव सर्वं तद्वृष्यमुच्यते ॥ ४४ ॥

भल्लातकबृहतीफल-
दाडिमफलकल्कसाधितं कुरुते ।
लिङ्गं मर्दनविधिना
कटुतैलं वाजिलिङ्गाभम् ॥ ४५ ॥
कनकरसमसृणवर्तित-
हयगन्धामूलविश्वपर्युषितम् ।
माहिषमिह नवनीतं
गतबीजे कनकफलमध्ये ॥ ४६ ॥
गोमयगाढोद्वर्तितं
पूर्वं पश्चादनेन संलिप्तम् ।
भवति हयलिङ्गसदृशं
लिङ्गं कठिनाङ्गनादयितम् ॥ ४७ ॥

(६ गुडकूष्मांडकः) कोहलाको उबाल और छील ४०० तोलेभर ले उस गरममें ६४ तोले घृत और ६४ तोले तेल देना। दालचिनी तेजपात धनियां सोंठ मिरच पीपल

जीरा दोनों इलायची चीता पीपलामूल चव्य जामन पीपल सोंठ सिंघाडा कसेरु कैथ ताडमस्तक इन्होंकों चारचार तोलेभर ले चूर्ण बनाय मिलाके और गुड ४०० तोले पकावै। शीतल होनेमें ३२ तोलेभर शहद देना। कफ पित्त वात इनकों हरता है और मंदाग्निवालोंकों श्रेष्ठ है। कृश मनुष्योंकों पुष्ट करताहै। उत्तम वाजीकरण है। स्त्रियोंमें आसक्त हुयोंमें जो क्षीणवीर्यवाले हों और क्षयरोगी हों उनकों यह परम ओषध है। खांसी श्वास ज्वर हिचकी छर्दि अरोचक इन्होंकों नाशताहै। यह गुडकूष्मांड अश्विनीकुमारोंनें कहाहै। खंडकूष्मांडकी तरह पात्र और स्वेदित किया कोल्हाका द्रव लेना। जो कछु मधुर चीकना जीवन बृंहण भारी मनको प्रसन्नकारक वह संपूर्ण वृष्य कहाताहै। भिलावा वडी कटेलीका फल अनारका फल इन्होंके कल्कसें सिद्ध किया कडुवा तेल मालिस करनेसें लिंगकों घोडाका लिंगके समान करताहै। धतूराके रसमें कोमल वर्तित कियी आसगंधकी जड और सोंठकों रात्रिभर धर भैंसका घृत मिलाय बीजसें रहित धतूराका फलके मध्यमें धर गाढा गोवरसें प्रथम लीप पीछे इससें लेप करै तो घोडाका लिंगके समान और कठिन तथा स्त्रीकों प्रिय ऐसा होताहै।

(७)अश्वगन्धावरीकुष्ठमांसीसिंहीफलान्वितम्।
चतुर्गुणेन दुग्धेन तिलतैलं विपाचयेत्।
स्तनलिङ्गकर्णपालिवर्धनं म्रक्षणादिदम्॥ ४८॥

(७ **वृष्यंअश्वगंधातैलम्**) आसगंध शतावरी कूट वालछड वडी कटेलीका फल इन्होंके कल्कमें चौगुना दूधमें तिलोंका तेलकों पकावै। यह चुपडनेसें चूंची लिंग कर्णपाली इन्होंकों वढाताहै।

(८)भल्लातकबृहतीफल-
नलिनीदलसिन्धुजलशूकैः।
माहिषनवनीतेन च
करम्बितैः सप्तदिनमुषितैः॥ ४९॥

मूलेन हयगन्धाया माहिषमलमर्दितपूर्वमथ।
लिप्तं भवति लघुकृतरासभलिङ्गं ध्रुवं पुंसाम्
नीलोत्पलसितपङ्कजकेशरमधुशर्करावलिप्तेन।
सुरते सुचिरं रमते दृढलिङ्गो भवति
नाभिविवरेण॥ ५१॥

सिद्धं कुसुम्भतैलं भूमिलताचूर्णमिश्रितं कुरुते।
चरणाभ्यङ्गेन रतेर्वीजस्तम्भादृढं लिङ्गम्॥५२॥

सप्ताहं छागभव-
सलिलस्थं करभवारुणीमूलम्।
गाढोद्वर्तनविधिना
लिङ्गस्तम्भं तथा दृढं कुरुते॥ ५३॥
गोरेकोन्नतशृङ्ग-
त्वग्भवचूर्णेन धूपितं वस्त्रम्।
परिधाय भजति ललनां
नैकाण्डे(?) भवति हर्षार्तः॥ ५४॥
समतिलगोक्षुरचूर्णं
छागीक्षीरेण साधितं समधु।
भुक्तं क्षपयति षाण्ढ्यं
यज्जनितं सुप्रयोगेण॥ ५५॥
योगजवराङ्गवद्धं
मथितेन खालित्यं हरति।
उन्मुखगोशृङ्गोद्भव-
मृल्लेपो(?) योगजध्वजभङ्गहरः॥ ५६॥
कुष्ठैलवालुकैला
मुस्तकधन्याकमधुकजः कवलः।
अपहरति पूतिगन्धं
रसोनमदिरादिजं गन्धम्॥ ५७॥
क्षौद्रेण बीजपूर-
त्वग्लीढाधोवातगन्धनुत्॥ ५८॥

इति वृष्याधिकारः।

(८ **अन्ये वाजीकरणोपायाः**) भिलावा कूट बडी कटेलीका फल कमलिनीके पत्ते सेंधानमक नेत्रवाला शूक इन्होंकों भैंसके नौंनीघृतसे मिलाय सात दिन धरै। आसगंधकी जडसें मिलाय पीवै। भैंसका गोवरसें प्रथम लेप कर पीछे इस्सें लेप करनेसें शीघ्र गधाका लिंगके समान लिंग होजाताहै। नीला कमल सपेद कमलका केशर मुलहटी खांड इनकरकै नाभिके छिद्रपर लेप कर भोग करै तो दृढलिंगवाला होकै बहुत देरतक भोग कर सक्ताहै। सिद्ध किया कुसुंभाके जलमें शंखपुष्पीका चूर्ण डाल पैरोंपर लेप कर भोग करनेसें वीर्य थंभा रहकै लिंग करडा रहताहै। बकराके मूत्रमें इंद्रायणकी जडसें ७ दिन करडा मालिस करनेकरकै लिंगस्तंभकों करताहै। गायका एक ऊंचा शी-

गकी खालके चूर्णकरके धूपित किया वस्त्रकों धारण कर स्त्रीकों भोगै तो बहुत आनंद होताहै। तिल और गोखरूका चूर्ण बराबर भाग ले बकरीका दूधमें सिद्ध कर शहद डाल खावै तो कुत्सित प्रयोगसें उपजी नपुंसकता नष्ट होतीहै। और योगसें उपजा योनिदोषसें उपजा हथरस आदिसें उपजा खालित्यकों हरताहै। गायका ऊपरको मुखवाला शींगकी माटीका लेप योगसें उपजा लिंगभंगकों हरताहै। कूट एलवा इलायची नागरमोथा धनियां मुलहटी इन्होंका कवल अर्थात् ग्रास दुर्गंध लहसन मदिरासें उपजा गंध इन्होंकों नाशताहै। बिजौराकी छालकों शहदमें मिलाय खावै तो अधोवात अर्थात् गुदासें अपशब्द होनेके गंधकों नाशताहै।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां वृष्याधिकारः।

अथ स्नेहाधिकारः ६७

अब स्नेहका अधिकार कहतेहै।

(१)सर्पिस्तैलं वसा मज्जा स्नेहेषु प्रवरं मतम्।
तत्रापि चोत्तमं सर्पिः संस्कारस्यानुवर्तनात् १
केवलं पैत्तिके सर्पिर्वातिके लवणान्वितम्।
देयं बहुकफे चापि व्योषक्षारसमायुतम्॥ २॥
तथा धीस्मृतिमेधाग्निकाङ्क्षिणां शस्यते घृतम्।
ग्रन्थिनाडीक्रिमिश्लेष्ममेदोमारुतरोगिषु॥ ३॥
तैलं लाघवदार्ढ्यार्थे क्रूरकोष्ठेषु देहिषु।
वातातपाध्वभारस्त्रीव्यायामक्षीणधातुषु॥ ४॥
रुक्षक्लेशक्षयात्यग्निवातावृतपथेषु च।
शेषौ वसन्ते सन्ध्यस्थिमर्मकोष्ठरुजासु च।
तथा दग्धाहतभ्रष्टयोनिकर्णशिरोरुजि॥ ५॥
तैलं प्रावृषि वर्षान्ते सर्पिरन्यौ तु माधवे।
साराधणऋतौ स्नेहं पिबेत्कार्यवशादिह॥ ६॥

(**१ स्नेहविचारः**) घृत तेल वसा मज्जा ये स्नेहोंमें उत्तम हैं। तिन्होंमेंभी संस्कार होनेसें घृत उत्तम है। पित्तके रोगमें अकेला घृत और वातके रोगमें नमकसहित घृत और कफके रोगमें सोंठ मिरच पीपल जवाखार इन्होंसें सहित घृत देना। बुद्धि स्मृति उत्तम बुद्धि जठराग्नि इन्होंकी इच्छावालोंकों यह घृत श्रेष्ठ है। ग्रंथि नाडी कृमि कफ मेद वात इन रोगवालोंकोंभी श्रेष्ठ है। हलकापनकी दृढताके अर्थ क्रूर कोठावाले मनुष्योंमें और वात घाम मार्गगमन भारका उठाना स्त्रीसंग कसरत इन्होसें क्षीणधातुवालोंमें और रूषा क्लेश क्षय अत्यंत अग्नि वात इन्होंकरके आच्छादित मार्गवालोंमें तेल देना। वसंतऋतु अर्थात् चैत्र वैशाखमें संधि हड्डी मर्म कोठा इन्होंकी पीडाओंमें तथा दग्ध आहत भ्रष्ट योनि कान शिर इन्होंकी पीडाओंमें वसा मज्जा उत्तम है। वर्षाऋतुमें तेल शरदृऋतुमें घृत और वैशाखमें वसा मज्जा ऐसे लेने। साधारण ऋतुमें कार्यके वशसें यहां स्नेहकों पीवै।

(२)वातपित्ताधिको रात्रावुष्णे चापि पिबेन्नरः
श्लेष्माधिको दिवा शीते पिबेच्चामलभास्करे ७
स्वेद्यसंशोध्यमद्यस्त्रीव्यायामासक्तिचिन्तकाः।
वृद्धा बाला बलकृशा रुक्षक्षीणास्नरेतसः॥ ८॥
वातार्तस्यन्दतिमिरदारुणप्रतिरोधिनः।
स्नेह्या न त्वतिमन्दाग्नितीक्ष्णाग्निस्थूलदुर्बलाः ९
ऊरुस्तम्भातिसारामगलरोगगरोदरैः।
मूर्च्छाछर्द्यरुचिश्लेष्मतृष्णामद्यैश्च पीडिताः॥१०॥
आमप्रसूता युक्ते च नस्ये वस्तौ विरेचने।
स्नेहसात्म्यः क्लेशसहो दृढः काले च शीतले११
अच्छमेव पिबेत्स्नेहमच्छपानं हि शोभनम्।
पिबेत्संशमनं स्नेहमन्नकाले प्रकाङ्क्षितः॥ १२॥
शुद्ध्यर्थं पुनराहारे नैशे जीर्णे पिबेन्नरः।
अहोरात्रमहः कृत्स्नं दिनार्धं च प्रतीक्षते॥१३॥

(**२ स्नेहपाने योग्याः**) वातपित्तकी अधिकतावाला मनुष्य रात्रिमें और गरम समयमें स्नेहकों पीवै। कफकी अधिकतावाला दिनमें शीतल समयमें शुद्ध सूर्य हो तब पीवै। स्वेदित किया शोधित किया मदिरा स्त्रीसंग कसरत इन्होंसें आसक्त चित्तवाले बूढे बालक अल्पबलवाले रूषे क्षीण हुआ रक्त और वीर्यवाले वातसें पीडित स्यंद तिमिरसें दारुण प्रतिरोधवाले अत्यंत मंदाग्निवाले तीक्ष्ण अग्निवाले मोटे दुर्बल ये सब स्नेहित नहीं करने। ऊरुस्तंभ अतीसार आम गलरोग कृत्रिमविष उदररोग मूर्च्छा छर्दि अरुचि कफ तृषा मदिरा इन्होंसें पीडित किये नहीं स्नेहित करने। आम प्रसूता स्त्री नस्य बस्ति विरेचन इन्होंमें स्नेहसात्म्य क्लेशकों सहताहै। और शीतकालमें दृढ है। स्वच्छ किया स्नेहकों पीवै स्वच्छ स्नेहका पीनाही सुंदर है। अन्नकालमें आकांक्षावाला मनुष्य संशमनरूप स्नेहकों पीवै। फिर रात्रिका भोजनकों जीर्ण होनेपर शुद्धिके अर्थ पीवै।

दिनरात्रिभर संपूर्ण दिनभर और दुपहरातक वाट देखता रहै। जीर्ण होनेके प्रति उत्तम मध्यम और ऱ्हस्वमात्रा है।

(३)उत्तमा मध्यमा ह्रस्वा स्नेहमात्रा जरां प्रति।
उत्तमस्य पलं मात्रा त्रिभिश्चाक्षैश्च मध्यमे १४
जघन्यस्य पलार्धेन स्नेहकाथ्यौषधेषु च।
जलमुष्णं घृते पेयं यूषस्तैलेऽनुशस्यते ॥ १५ ॥
वसामज्ज्ञोस्तु मण्डः स्यात्सर्वेषूष्णमथाम्बु वा
भल्लातैतौरवे स्नेहे शीतमेव जलं पिबेत् ॥ १६ ॥
स्नेहपीतस्तु तृष्णायां पिबेदुष्णोदकं नरः।
एवं चानुप्रशाम्यन्तं स्नेहमुष्णाम्बुनोद्धरेत् १७
मिथ्याचाराद्बहुत्वाद्वा यस्य स्नेहो न जीर्यति।
विष्टभ्य वापि जीर्येत्तं वारिणोष्णेन वामयेत् १८
ततः स्नेहं पुनर्दद्याल्लघुकोष्ठाय देहिने।
जीर्णाजीर्णविशङ्कायां पिबेदुष्णोदकं नरः ॥१९॥
तेनोद्गारो भवेच्छुद्धो रुचिश्चान्नं भवेत्प्रति।
भोज्यान्नं मात्रया पास्यन् श्वः पिबन्पीतवानपि।
द्रवोष्णमनभिष्यन्दि नातिस्निग्धमशङ्करम् ॥२०॥

त्र्यहावरं सप्तदिनं परन्तु
स्निग्धो परः स्वेदयितव्य इष्टः।
नातः परं स्नेहनमादिशन्ति
सात्मी भवेत् सप्तदिनात्परं तु ॥ २१ ॥

(३ स्नेहमात्राप्रमाणादि) चार तोलेभरकी उत्तम मात्राहै तीन तोलोंकी मध्यम मात्रा है और दो तोलोंकी ऱ्हस्व मात्रा है। स्नेह काथ और ओषधोंमें यह मात्रा है। घृतपर गरम पानी और तेलपर यूष श्रेष्ठ है। वसा और मज्जापर मंड श्रेष्ठ है। अथवा सबोंपर गरम पानी श्रेष्ठ है। भिलावाका तेलपर और शिरसका तेलपर शीतलही पानी पीना। स्नेह पीनेवालाकों तृषा लगै तो मनुष्य गरम पानीकों पीवै। इसप्रकार शांत होतेहुये स्नेहकों गरम पानीसें उद्धृत करै। मिथ्याचारसें अथवा बहुतपनेसें जिसकै स्नेह जीर्ण नहीं हो अथवा विष्टब्ध होकै जरै उसकों गरम पानीसें वमन करावै। पीछे कोमल कोठावाला मनुष्यकों फिर स्नेहकों देवै। जीर्ण और अजीर्णकी शंकामें गरम जल पीवै। उसकरकै शुद्ध ढकार आताहै। और अन्नके प्रति रुचि उपजती है। भोज्य अन्नको मात्रासें रक्षा करता हुआ आगामि दिनमें पीनेवाला और पीयेहुआ मनुष्य द्रव गरम नहीं। अभिष्यंदी नहीं अतिस्निग्ध और नहीं मिलाय ऐसा स्नेह पीना। तीन दिनसें नीचै और सात दिनसें परै स्निग्ध मनुष्य स्वेदित करना वांछित है। इस्सें परै स्नेहकर्मकों नहीं कहतेहै। सात दिनसें परै स्नेह भोजनके समान हो जाताहै।

(४)मृदुकोष्ठस्त्रिरात्रेण स्निह्यत्यच्छोपसेवया।
स्निह्यति क्रूरकोष्ठस्तु सप्तरात्रेण मानवः ॥ २२ ॥
स्निग्धद्रवोष्णधन्वोत्थरसभुक्स्वेदमाचरेत्।
स्निग्धस्त्र्यहं स्थितः कुर्याद्विरेकं वमनं पुनः २३
एकाहं दिनमन्यच्च कफमुत्क्लेश्य तत्करैः।
वातानुलोम्यं दीप्ताग्निर्वर्चः स्निग्धमसंहतम् २४
स्नेहोद्वेगः क्लमः सम्यक् स्निग्धे रुक्षे विपर्ययः।
अतिस्निग्धे तु पाण्डुत्वं घ्राणवक्त्रगुदस्रवाः २५
रुक्षस्य स्नेहनं कार्यमतिस्निग्धस्य रुक्षणम्।
श्यामाककोरदूषान्नतक्रपिण्याकशक्तुभिः ॥२६॥
बालवृद्धादिषु स्नेहपरिहारासहिष्णुषु।
योगानिमाननुद्वेगान्सद्यः स्नेहान्प्रयोजयेत् ॥२७॥
भृष्टे मांसरसे स्निग्धा यवागूः स्वल्पतण्डुला।
सक्षौद्रा सेव्यमाना तु सद्यः स्नेहनमुच्यते २८
सर्पिस्तैलवसामज्जातण्डुलप्रसृतैः शृता।
पाञ्चप्रसृतिकी पेया पेया स्नेहनमिच्छता ॥२९॥
सर्पिष्मती बहुतिला तथैव स्वल्पतण्डुला।
सुखोष्णा सेव्यमाना तु सद्यः स्नेहनमुच्यते ॥३०
शर्कराघृतसंसृष्टे दुह्याद्गां कलसेऽथवा।
पाययेदक्षमेतद्धि सद्यः स्नेहनमुच्यते ॥ ३१ ॥
ग्राम्यानूपौदकं मांसं गुडं दधि पयस्तिलान्।
कुष्ठी शोथी प्रमेही च स्नेहनेन प्रयोजयेत् ॥३२॥
स्नेहैर्यथास्वं तान्सिद्धैः स्नेहयेदविकारिभिः।
पिप्पलीभिर्हरीतक्या सिद्धैस्त्रिफलया सह ॥३३॥
स्नेहमग्रे प्रयुञ्जीत ततः स्वेदमनन्तरम्।
स्नेहस्वेदोपपन्नस्य संशोधनमथान्तरम् ॥ ३४ ॥

इति स्नेहाधिकारः।

(४ कोष्ठभेदेन सेवनपरिमाणम्) कोमलकोठावाला तीन रात्रिकरकै स्वच्छको सेवनेसें स्निग्ध होताहै। और कठिन कोठावाला मनुष्य सात रात्रिकरकै स्निग्ध होताहै। स्निग्ध द्रव गरम धमासाका रस इन्होंकों भोजन करता हुआ मनुष्य स्वेदकों आचरित करै। स्निग्ध हुआ तीन

दिन स्थित होके फिर जुलाब और वमनकों करै । एक दिन और दो दिन कफकारक औषधोंसें कफकों उत्क्लेशित कर पीछे वातकी अनुलोमता दीप्तअग्नि स्निग्ध और असंहत मल ये होतेहैं । स्निग्ध होनेमें स्नेहका उद्वेग ग्लानि ये होतेहैं। रूक्षमें विपरीत होताहै । अत्यंत स्निग्ध होनेमें पांडुपना और नासिका मुख गुदासें मल झिरताहै। रूक्ष मनकों स्नेहन करना। अत्यंत स्निग्धकों रूक्षण करना । शामाक कोदू तक्र खल शत्तू इन्होंकरकै स्नेहके पहरेजकों नहीं सहनेवाले बाल वृद्ध आदिकोंमें उद्वेगसें वर्जित और शीघ्र स्निग्ध करनेवाले ऐसे इन योगोंकों प्रयुक्त करै । मांसके रसकों भून स्वल्प चावलोंवाली यवागू स्निग्ध होतीहै । उसमें शहद डाल सेवित करी जावे तो तत्काल स्नेहन कहाहै । घृत तेल वसा मज्जा चावल ये आठआठ तोलेभर लेकै पेया बनानी । स्नेहनकी इच्छावालानें पांच प्रसृतिका नामवाली यह पीनी । घृतवाली बहुतसे तिलोंवाली और अल्प चावलोंवाली पेया अल्प गरम करी सेवित करी जावै तो तत्काल स्नेहन करना । खांड और घृतसें लिपे हुये कलशेमें गायके दुहकों पीवै तो तत्काल स्नेहन होताहै । ग्रामका पानी और अनूपदेशका पानी मांस गुड दही दूध तिल इन्होंकों कुष्ठी शोथी और प्रमेहवाला स्नेहनमें नहीं प्रयुक्त करै । यथायोग्य सिद्ध किये और नहीं विकार करनेवाले स्नेहोंसें उन पुरुषोंकों स्निग्ध करै । पीपल और हरडैके साथ तथा त्रिफलाके साथ सिद्ध किये स्नेह हों । आगे स्नेहकों प्रयुक्त करै । इसके पीछे स्वेदकों और स्नेहस्वेदसें उपपन्न हुयेकों संशोधन करना ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां स्नेहाधिकारः ।

अथ स्वेदाधिकारः ६८

अब स्वेदका अधिकार कहते है ।

(१)वातश्लेष्मणि वाते वा कफे वा स्वेद इष्यते ।
स्निग्धरूक्षस्तथा स्निग्धो रूक्षश्चाप्युपकल्पितः ॥१॥
व्याधौ शीते शरीरे च महान्स्वेदो महाबले ।
दुर्बले दुर्बलः स्वेदो मध्यमे मध्यमो मतः ॥ २ ॥
आमाशयगते वाते कफे पक्वाशयाश्रये ।
रूक्षपूर्वो हितः स्वेदः स्नेहपूर्वस्तथैव च ॥ ३ ॥
वृषणौ हृदयं दृष्टी स्वेदयेन्मृदु वा न वा ।
मध्यमं वङ्क्षणौ शेषमङ्गावयवमिष्टतः ।
न स्वेदयेदतिस्थूलरूक्षदुर्बलमूर्च्छितान् ॥ ४ ॥
स्तम्भनीयक्षतक्षीणविषमद्यविकारिणः ।
तिमिरोदरवीसर्पकुष्ठशोषाढ्यरोगिणः ॥ ५ ॥
पीतदुग्धदधिस्नेहमधून्कृतविरेचनान् ।
भ्रष्टदग्धगुदग्लानिक्रोधशोकभयार्दितान् ॥ ६ ॥
क्षुत्तृष्णाकामलापाण्डूमेहिनः पित्तपीडितान् ।
गर्भिणीं पुष्पितां सूतां मृदुवात्ययिके गदे ॥ ७ ॥
स्वेदो हितस्त्वनाग्नेयो वाते मेदःकफावृते ।
निवातगृहमायासो गुरुप्रावरणं भयम् ॥ ८ ॥
उपनाहाहवक्रोधभूरिपानक्षुधातपाः ।
स्वेदयन्ति दशैतानि नरमग्निगुणादृते ॥ ९ ॥
शीतशूलव्युपरमैस्तम्भगौरवनिग्रहे ।
संजाते मार्दवे स्वेदे स्वेदनाद्विरतिर्मता ॥१०॥

(१ स्वेदाधिकारिणः उपायाश्च) वातकफमें अथवा वातमें अथवा कफमें स्वेद इष्ट है। स्निग्ध रूक्ष तथा स्निग्ध और रूक्ष ऐसे उपकल्पितहैं। व्याधिमें और शीतल शरीरमें बहुत बलवाला शरीरमें महान्स्वेद हित है । दुर्बलमें दुर्बल स्वेद और मध्यममें मध्यम स्वेद मानाहै । आमाशयमें प्राप्त वात हो पक्वाशयमें प्राप्त कफ हो तब रूक्षपूर्वक तथा स्नेहपूर्वक स्वेद हित है । वृषण अर्थात् पोते हृदय नेत्र इन्होंकों कोमल स्वेदित करै अथवा नहीं करै । अंडसंधिको मध्यम स्वेदित करै । शेष रहे अंडाके अवयवकों इच्छापूर्वक स्वेदित करै । अत्यंत मोटा रूखा शरीरवाला दुर्बल और मूर्च्छावाला इन्होंकों स्वेदित नहीं करै। स्तंभित हुआ क्षतक्षीण विष और मदिराका विकारवाला और तिमिर उदररोग विसर्प कुष्ठ शोष आढ्यवात इन रोगोंवाले दूध पीयेहुये दहीपीयेहुये स्नेह और शहद पीयेहुये जुलाब लिये हुये भ्रष्ट दग्ध गुदरोग ग्लानि क्रोध शोक और भयसें पीडित भूख तृषा कामला पांडु प्रमेह इन रोगोंवाले और पित्तसें पीडित गर्भिणी फूल आयी हुई प्रसूता ऐसी स्त्रियां कोमल अथवा अत्यंत रोग इन्होंमें अग्निके विना स्वेदकर्म हित है । मेद और कफसें आच्छादित हुये वातमें पवनरहित स्थान परिश्रम भारा आच्छादन और भय उपनाह युद्ध क्रोध बहुतसा पान भूख और घाम ये दशअग्निके बिना मनुष्यको स्वेदित करतेहैं । शीत और शूल दूर होनेमें स्तंभ और भारीपन नष्ट होनेमें कोमल स्वेद उपजनेविषै स्वेदनसें ग्लानि मानी है ।

(२)स्फोटोत्पत्तिः पित्तरक्तप्रकोपो
मदो मूर्च्छाभ्रमदाहौ क्लमश्च ।
अतिस्वेदे सन्धिपीडा तृषा च
क्रियाः शीतास्तत्र कुर्याद्विधिज्ञः ॥११॥

सर्वान्स्वेदान्निवाते तु जीर्णान्ने चावचारयेत् ।
येषां नस्यं विधातव्यं बस्तिश्चापि हि देहिनाम्
शोधनीयास्तु ये केचित्पूर्वं स्वेद्यास्तु ते मताः
पश्चात्स्वेद्या हृते शल्ये मूढगर्भानुपद्रवाः ॥१३॥
सम्यक्प्रजाता काले च पश्चात्स्वेद्या विजानता
स्वेदः पश्चाच्च पूर्वं च भगन्दर्यर्शसस्तथा ॥१४॥
तप्तैः सैकतपाणिकांस्यवसनैः स्वेदोऽथवाङ्गारकै-
र्लेपाद्वातहरैः सहाम्ललवणस्नेहैः सुखोष्णैर्भवेत् ।
एवं तप्तपयोऽम्बु वातशमनकाथादिसेकादिभिः
तप्तैस्तोयनिसेचनोद्भवबृहद्बाष्पैः शिलाद्यैः
क्रमात् ॥ १५ ॥

तापोपनाहद्रवबाष्पपूर्वाः
स्वेदास्ततोऽन्त्यप्रथमौ कफे स्तः ।
वायौ द्वितीयः पवने कफे च
पित्तोपसृष्टे विहितस्तृतीयः ॥ १६ ॥

इति स्वेदाधिकारः ।

(२ अतिस्वेदे उपशमविधिः) फोडोंकी उत्पत्ति पित्तरक्तका कोप मद मूर्च्छा भ्रम दाह ग्लानि संधिपीडा और तृषा ये सब उपद्रव अत्यंत स्वेदमें उपजते हैं । तहां कुशल वैद्य शीतल क्रियाओंकों करै। सब स्वेदोंकों पवनरहित स्थानमें और अन्नकों जीर्ण होनेमें आचरित करै । जिन्होंकों नस्य और बस्तिकर्म करना हो जो शोधन करने होवे प्रथम स्वेदित करने उचित कहेहैं । शल्य दूर होनेमें उपद्रवोंरहित मूढ गर्भवाली पीछे स्वेदित करनी । समयमें अच्छीतरह प्रसूता हुई कुशल वैद्यनें पीछे स्वेदित करनी । पीछे और पहले स्वेद भगंदर और ववासीरमें देना । वालूरेत हाथ कांसीका पात्र कपडा इन्होंकों गरम कर स्वेद देना अथवा अंगारोंसें स्वेद देना अथवा वातनाशक ओषध खट्टा रस नमक स्नेह इन्होंकों अल्प गरमकर लेप करनेसें स्वेद होताहै । इसीप्रकार गरम किया दूध पानी वातनाशक क्वाथ आदिके सेकसे अथवा पानीकी भांफोसें तथा गर्म करी शिला आदिसें स्वेद होताहै । ताप उपनाह द्रव भांफपूर्वक स्वेद है तिसके अनंतर कफमें अंतका और पहला स्वेद हित है । वायुमें और वातकफमें दूसरा स्वेद हितहै पित्तसें मिले वातमें तीसरा स्वेद हितहै।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां स्वेदाधिकारः ।

अथ वमनाधिकारः ६९

अब वमन अधिकार कहतेहैं ।

(१)स्निग्धस्विन्नं कफेसम्यक्संयोगे वा कफोल्बणे।
श्वोवम्यमुत्क्लिष्टकफं मत्स्यमांसतिलादिभिः १
यथाविकारं विहितां मधुसैन्धवसंयुताम् ।
कोष्ठं विभज्य भैषज्यमात्रां मन्त्राभिमन्त्रिताम् २
"ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्कानिलानलाः ।
ऋषयः सोषधिग्रामा भूतसङ्घास्तु पान्तु ते ३
रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा ।
सुधेवोत्तमनागानां भैषज्यमिदमस्तु ते" ॥ ४ ॥
पूर्वाह्णे पाययेत्पीतो जानुतुल्यासने स्थितः ।
तन्मना जातहृल्लासप्रसेकश्छर्दयेत्ततः ॥ ५ ॥
अङ्गुलीभ्यामनायस्तनालेन मृदुनाथवा ।
वषेन्द्रयवसिन्धूत्थवचाकल्कयुतं पिबेत् ॥ ६ ॥

(१वमनविधयः) अच्छीतरह स्निग्ध और स्विन्न कियेकों अथवा कफकी अधिकतावाले संयोगमें आगले दिन वमन करानेके योग्य और उत्क्लिष्ट कफवालाकों मछलीका मांस और तिल आदिकरकै विकारके अनुसार रची हुई शहद और सेंधानमकसें युत कोठाके कोमल और ठिनपनेकों जानकर मंत्रसें अभिमंत्रित करी ओषधमात्राकों देवै। मंत्र यह है " ब्रह्मदक्षाश्विरुद्रेन्द्रभूचन्द्रार्कानिलानलाः । ऋषयः सोषधिग्रामा भूतसंघास्तु पान्तु ते ॥ रसायनमिवर्षीणां देवानाममृतं यथा । सुधेवोत्तमनागानां भैषज्यमिदमस्तु ते"पूर्वाण्ह अर्थात् पहर दिन चढा पहले पान करावै पीकै गोडाके समान आसनमें स्थित रहै । उसीमें मनकों रक्खै थुकथुकी और प्रसेक करता हुआ पीछे छर्दित करै । दो अंगुलियोंसें अथवा कोमल नालसें छर्दि लेवै । पीपल इंद्रजव सेंधानमक वच इन्होंके कल्कसें युत करके पीवै ।

(२)यष्टीकषायं सक्षौद्रं तेन साधु वमत्यलम् ॥
तण्डुलसलिलनिष्पिष्टं यः पीत्वा वमति पूर्वाह्णे ।

फलिनीवल्कलमुष्णं हरति गरं पित्तकफजं च ।
क्षौद्रलीढं ताम्ररजो वमनं गरदोषनुत् ॥ ८ ॥
आटरूषं वचा निम्बं पटोलं फलिनीत्वचम् ।
क्राथयित्वा पिबेत्तोयं वान्तिकृन्मदनान्वितम् ९
काथ्यद्रव्यस्य कुडवं स्थापयित्वा जलाढके ।
चतुर्भागावशिष्टं तु वमनेष्ववचारयेत् ॥ १० ॥
निम्बकषायोपेतं फलिनीगदमदनमधुकसिन्धूत्थं।
मधुयुतमेतद्वमनं कफतः पूर्णाशये सदा शस्तम्
फलजीमूतकेक्ष्वाकुकुटजाः कृतवेधनः ।
धामार्गवश्च संयोज्याः सर्वथा वमनेष्वमी ॥१२॥

(२ पंचकषायाः) शहदसहित मुलहटीके क्वाथकों पीवै । उसकरकै सुंदर वमन करता है । चावलोंके पानीमें कलहारीकी छालकों पीस गरम कर जो प्रभातमें पीवै तो कफपित्तकी पीडा और कृत्रिम विषकों हरताहै । शहदसें युत किया तांबाका चूर्णसें लिया वमन कृत्रिमविषके दोषकों नाशताहै । वांसा वच नींब परवल कलहारीकी छाल मैनफल इन्होंका क्वाथ बनाय पानीकों पीवै तो छर्दि करताहै । क्वाथके योग्य ओषधकों १६ तोलेभर लेकै २५६ तोलेभर पानीमें पकावै । जब चौथाई भाग शेष रहै तब वमनोंमें प्रयुक्त करै । नींब कलहारी कूट मैनफल सेंधानमक इन्होंके क्वाथमें शहद डाल किया वमन कफसें पूरित हुआ आशयमें श्रेष्ठ है । मैनफल ताडका फल कडवी तूंबी कूडा कडुवी तोरी रोहिषतृण सब प्रकारके वमनोंमें ये प्रयुक्त करने ।

(३)क्रमात्कफः पित्तमथानिलश्च
यस्येति सम्यग्वमितः स इष्टः ।
हृत्पार्श्वमूर्धेन्द्रियमार्गशुद्धौ
तनोर्लघुत्वेऽपि च लक्ष्यमाणे ॥ १३ ॥
दुश्छर्दिते स्फोटककोठकण्डू-
कृत्स्वाविशुद्धिर्गुरुगात्रता च ।
तृण्मोहमूर्च्छानिलकोपनिद्रा-
बलातिहानिर्वमितेऽतिविद्यात् ॥ १४ ॥
ततः सायं प्रभाते वा क्षुद्वान्पेयादिकं भजेत् १५
पेयां विलेपीमकृतं कृतं च
यूषं रसं द्विस्त्रिरथैकशश्च ।
क्रमेण सेवेत विशुद्धकायः
प्रधानमध्यावरशुद्धिशुद्धः ॥ १६ ॥

जघन्यमध्यप्रवरे तु वेगा-
श्चत्वार इष्टा वमने षडष्टौ ।
दशैव ते द्वित्रिगुणा विरेके
प्रस्थस्तथा द्वित्रिचतुर्गुणश्च ॥ १७ ॥
पित्तान्तमिष्टं वमनं विरेका-
दर्धं कफान्तं च विरेकमाहुः ।
द्वित्रान्सविट्कावपनीय वेगान्
मेयं विरेके वमने तु पीतम् ॥ १८ ॥

(३ सम्यग्वांतपरीक्षा) जिसकै क्रमसें कफ पित्त और वात अच्छीतरह वमित हो वह इष्ट है । हृदय पसली मस्तक इंद्रिय इन्होंका मार्ग शुद्ध होताहै और शरीर हलका होजाताहै । दुष्ट वमन होनेमें फोडा कोठरोग खाज मुखकी अशुद्धि शरीरका भारीपन ये होतेहैं । अत्यंत वमन होनेमें हृदयमें मोह मूर्च्छा वायुका कोप नींद और बलकी अत्यंत हानि ये उपजते हैं । पीछे सायंकालमें अथवा प्रभातमें भूखवाला पेया आदिकों पीवै । पेया विलेपी अकृत और कृत यूषरस इन्होंमांहसें दो तीन और एककों सेवै । विशेषकरकै शुद्ध शरीरवाला उत्तम मध्यम और कनिष्ठ शुद्धिवाला मनुष्य क्रमसें सेवै । कनिष्ठ शुद्धिविषै वमनमें चार वेग और मध्यम शुद्धिमें छह वेग और उत्तम शुद्धिमें आठ वेग वांछित हैं । जुलाबविषै कनिष्ठ शुद्धिमें दश वेग और मध्यम शुद्धिमें वीस वेग और उत्तम शुद्धिमें तीस वेग तथा दुगुना तिगुना और चौगुना प्रस्थ कहाहै । पित्त आनेपर्यंत वमन वांछित है । और कफ आनेपर्यंत विरेचन अर्थात् जुलाव वांछित है । मलसहित दो तीन वेगोंकों त्याग कर जुलावमें और वमनमें पीया हुआ द्रव्यका प्रमाण करना ।

(४)वमने च विरेके च तथा शोणितमोक्षणे ।
सार्धत्रयोदशपलं प्रस्थमाहुर्मनीषिणः ॥ १९ ॥
अयोगे लङ्घनं कार्यं पुनर्वापि विशोधनम् ।
अतिवान्तं घृताभ्यक्तमवगाह्य हिमे जले ॥ २० ॥
उपाचरेत्सिताक्षौद्रमिश्रैर्लेहैश्चिकित्सकः ।
वमनेऽतिप्रवृत्ते तु हृद्यं कार्यं विरेचनम् ॥ २१ ॥
न वामयेत्तैमिरिकं न गुल्मिनं
न चापि पाण्डूदररोगपीडितम् ।
स्थूलक्षतक्षीणकृशातिवृद्धा-
नर्शोर्दिताक्षेपकपीडितांश्च ॥ २२ ॥

रूक्षे प्रमेहे तरुणे च गर्भे
गच्छत्यथोर्ध्वं रुधिरे च तीव्रे ।
दुष्टे च कोष्ठे क्रिमिभिर्मनुष्यं
न वामयेद्वर्चसि चातिबद्धे ॥ २३ ॥
एतेऽप्यजीर्णव्यथिता वाम्या ये च विषातुराः ।
अत्युल्बणकफा ये च तेच स्युर्मधुकाम्बुना॥२४॥

इति वमनाधिकारः ।

(४ वमनादौ मानम्) वमनमें जुलाबमें और रक्त निकासनेमें साढेतेरह पलके प्रस्थकों वैद्य कहतेहैं । अयोगमें लंघन करना अथवा फिर विशोधन करना । अत्यंत वमनसें युत हुआकों घृतसे चुपड शीतल पानीमें स्थापित करै । मिश्री शहदसें युत किये लेहोंकों वैद्य देवै अत्यंत वमन न होनेमें मनोहर विरेचन करना । तिमिर गुल्म पांडुरोग और उदररोगसें पीडितकों और मोठा क्षतक्षीण माडा अत्यंत वृद्ध ववासीर अर्दितवात और लकुवावातसें पीडितकों वमन नहीं करवावै । रूक्षमें प्रमेहमें तरुण गर्भमें ऊर्ध्वगत रक्तमें कृमियोंसें डसेकोष्ठमें और बढेहुये ववासीरमें मनुष्यकों वमन नहीं करावै । येभी अजीर्णसें और विषसें पीडित हों तो वमनके योग्य हैं । जो अत्यंत बढा हुआ कफवाले हों वे मुलहटीके पानीसें वमन करावे ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां वमनाधिकारः ।

अथ विरेचनाधिकारः ७०

अब विरेचनका अधिकार कहतेहै ।

(१)स्निग्धस्विन्नाय वान्ताय दातव्यं तु विरेचनम्।
अन्यथा योजितं ह्येतद्ग्रहणीगदकृन्मतम् ॥ १ ॥
मृदुः पित्तेन कोष्ठः स्यात्क्रूरो वातकफाश्रयात् ।
मध्यमः समदोषत्वाद्योज्या मात्रानुरूपतः ॥ २ ॥
शर्कराक्षौद्रसंयुक्तं त्रिवृच्चूर्णावचूर्णितम् ।
रेचनं सुकुमाराणां त्वक्पत्रमरिचांशिकम् ।
त्रिवृच्चूर्णं सितायुक्तं पिबेच्छ्रेष्ठं विरेचनम् ॥ ३ ॥
छित्त्वा द्विधेक्षुं परिलिप्य कल्कैः
स्विन्नमण्डिजातैः परिवेष्ट्य बद्ध्वा ।
पक्वं तु सम्यक्पुटपाकयुक्त्या
खादेत्तु तं पित्तगदी सुशीतम् ॥ ४ ॥
पिप्पलीनागरक्षारं श्यामात्रिवृतया सह ।
लेहयेन्मधुना सार्धं कफव्याधौ विरेचनम् ॥ ५ ॥
हरीतकी विडङ्गानि सैन्धवं नागरं त्रिवृत् ।
मरिचानि च तत्सर्वं गोमूत्रेण विरेचनम् ॥ ६ ॥
त्रिवृच्छाणत्रयसमा त्रिफला तत्समानि च ।
क्षारकृष्णाविडङ्गानि तच्चूर्णं मधुसर्पिषा ॥ ७ ॥
लिह्याद्गुडेन गुडिकां कृत्वा वाप्युपयोजयेत् ।
कफवातकृतान्गुल्मान्प्लीहोदरभगन्दरान् ॥ ८ ॥
हन्त्यन्यानपि चाप्येतन्निरपायं विरेचनम् ।

(१ विरेकाधिकारिणो विधिश्च) स्निग्ध स्विन्न और वांत कियेके अर्थ विरेचन देना । अन्यथा योजित किया विरेचन ग्रहणीरोगकों करनेवाला मानाहै । पित्तकरकै कोमल कोठा होताहै । वातकफके आश्रयसे कठिन कोठा होताहै । समान दोष होनेसें मध्यमकोठा होताहै । अनुरूपसे मात्रा प्रयुक्त करनी । खांड और शहदसें युत और निशोतका चूर्णसें अवचूर्णित और दालचिनी तेजपात मिरच इन्होंके भागसे युत ऐसा जुलाब सुकुमारोंकों कहा है । निशोतका चूर्ण और मिश्रीसें युतकों पीवै यह श्रेष्ठ जुलाव है । ईखके बीचसें फाड सपेद निशोतके कल्कसें लीप पुटपाककी युक्तिसें लपेट और बांध अच्छीतरह पकाकै पित्तरोगी शीतल बनाय खावै । पीपल सोंठ जवाखार काली निशोत निशोत शहद इन्होंकों मिलाय कफरोगमें विरेचन देवै । हरडै वायविडंग सेंधानमक सोंठ निशोत मिरच इन सबकों गोमूत्रके संग लेवै तो जुलाब लगताहै । निशोत १ तोला त्रिफला १ तोला जवाखार १ तोला पीपल १ तोला वायविडंग १ तोला इन्होंका चूर्ण बनाय घृत शहदसें मिलाय चाटै अथवा गुडसें गोलियां बनाय प्रयुक्त करै । कफवातके किये गुल्मोंकों प्लीहरोग उदररोग भगंदर और अन्य रोगोंकोभी यह उत्तम विरेचन नाशता है ।

(२)अभया पिप्पलीमूलं मरिचं नागरं तथा ॥९॥
त्वक्पत्रपिप्पलीमुस्तविडङ्गामलकानि च ।
कर्षः प्रत्येकमेषां तु दन्त्याः कर्षत्रयं तथा ॥१०॥
षट्कर्षाश्च सितायास्तु द्विपलं त्रिवृतो भवेत् ।
सर्वं सुचूर्णितं कृत्वा मधुना मोदकं कृतम् ॥११
खादेत्प्रतिदिनं चैकं शीतं चानु पिबेज्जलम् ।
तावद्विरिच्यते जन्तुर्यावदुष्णं न सेवते ॥ १२॥
पाण्डुरोगं विषं कासं जङ्घापार्श्वरुजौ तथा ।
पृष्ठार्तिं मूत्रकृच्छ्रं च दुर्नाम सभगन्दरम् ॥१३॥

अश्मरीमेहकुष्ठानि च दाहशोथोदराणि च ।
यक्ष्माणं चक्षुषो रोगं क्रमं वैद्येन जानता ।
योजितोऽयं निहन्त्याशु अभयाद्यो हि मोदकः १४
एरण्डतैलं त्रिफलाक्वाथेन द्विगुणेन च ।
युक्तं पीत्वा पयोभिर्वा न चिरेण विरिच्यते १५

(२ अभयाद्योमोदकः) हरडै पीपलमूल मिरच सोंठ दालचिनी तेजपात पीपल नागरमोथा वायविडंग आंवला ये सब एक एक तोला और जमालगोटाकी जड ३ तोले मिश्री ६ तोले निशोत ८ तोले सबका चूर्ण वनाय शहदसें मोदक वनाकै नित्य प्रति १ मोदक खाकै ऊपर शीतल पानीकों पीवै । तबतक दस्त लगै जबतक गर्मको नहीं सेवै । पांडुरोग विष खांसी जंघापीडा पसलीपीडा पृष्ठपीडा मूत्रकृच्छ्र, ववासीर भगंदर पथरी प्रमेह कुष्ठ दाह शोजा उदररोग राजरोग नेत्ररोग इन्होंकों क्रम जाननेवाला वैद्यनें योजित किया अभयाद्यमोदक शीघ्र नाशताहै । अरंडके तेलकों दुगुना त्रिफलाके क्वाथसें अथवा दूधसें पीकै शीघ्र दस्त लगताहै ।

(३)स्रोतोविशुद्धीन्द्रियसम्प्रसादौ
लघुत्वमूर्जोऽग्निरनामयत्वम् ।
प्राप्तिश्च विट्पित्तकफानिलानां
सम्यग्विरिक्तस्य भवेत् क्रमेण ॥ १६ ॥
स्याच्छ्लेष्मपित्तानिलसंप्रकोपः
सादस्तथाग्नेर्गुरुता प्रतिश्या ।
तन्द्रा तथा छर्दिररोचकश्च
वातानुलोम्यं न च दुर्विरिक्ते ॥ १७ ॥
कफास्रपित्तक्षयजानिलोत्थाः
सुप्त्यङ्गमर्दक्लमवेपनाद्याः ।
निद्राबलाभावतमःप्रवेशाः
सोन्मादहिक्काश्च विरेचितेऽति ॥ १८ ॥
मन्दाग्निमक्षीणमसद्विरिक्तं
न पाययेत्तद्दिवसे यवागूम् ।
विपर्यये तद्दिवसे तु सायं
पेयाक्रमो वान्तवदिष्यते तु ॥ १९ ॥
यथाणुरग्निस्तृणगोमयाद्यैः
सन्धुक्ष्यमाणो भवति क्रमेण ।
महान्स्थिरः सर्वसहस्तथैव
शुद्धस्य पेयादिभिरन्तराग्निः ॥ २० ॥

(३ सम्यग्विरिक्तलक्षणम्) स्रोतोंकी शुद्धि इंद्रियोंकी प्रसन्नता हलकापन अग्नि वल आरोग्य और मल पित्त कफ और वातकी प्राप्ति ये सब क्रमकरकै अच्छी तरह विरिक्त हुयेकों होते हैं । कफ पित्त और वातका प्रकोप मंदाग्नि शरीरका भारीपन जुखाम तंद्रा छर्दि अरुचि और वातका अनुलोमन ये सब दुष्ट जुलावमें होतेहैं । कफ रक्त पित्त क्षय वात इन्होंसें उपजी पीडा शरीरका ढीलापना अंगमर्द ग्लानि कंपआदि नींद बलका नाश अंधेरी उन्माद हिचकी ये सब अत्यंत जुलाब लगनेमें होतेहैं । मंदाग्निवाला क्षीणहुआ दुष्ट विरिक्त हुआ इन्होंकों उस दिनमें यवागू नहीं पान करानी । उस दिनके विपरीतपनेमें तो पेयाक्रम वांतकी तरह वांछित है । जैसे तृण और उपलोंआदिसें संधुक्ष्यमाण थोरा अग्निभी महान् स्थिर और सब सहनेवाला होजाताहै । तैसे शुद्ध हुआ मनुष्यका पेया आआदिसें उदरका अग्नि वलवान् होजाताहै ।

(४)कषायमधुरैः पित्ते विरेकः कटुकैः कफे ।
स्निग्धोष्णलवणैर्वायोरप्रवृत्ते च पाययेत् ॥ २१ ॥
उष्णाम्बु स्वेदयेच्चास्य पाणितापेन चोदरम् ।
उत्थानेऽल्पे दिने तस्मिन्भुक्त्वान्येद्युः पुनः पिबेत्
अदृढस्नेहकोष्ठस्तु पिबेदूर्ध्वं दशाहतः ।
भूयोऽप्युपस्कृततनुः स्नेहस्वेदैर्विरेचनम् ॥२३॥
यौगिकं सम्यगालोच्य स्मरन्पूर्वमनुक्रमम् ।
दुर्बलः शोधितः पूर्वमल्पदोषः कृशो नरः ।
अपरिज्ञातकोष्ठस्तु पिबेन्मृद्वल्पमौषधम् ॥ २४ ॥
रूक्षबह्वनिलक्रूरकोष्ठव्यायामसेविनाम् ।
दीप्ताग्नीनां च भैषज्यमविरेच्यैव जीर्यति ॥२५॥
तेभ्यो वस्तिं पुरा दद्यात्ततः स्निग्धं विरेचनम् ।
अस्निग्धे रेचनं स्निग्धं रूक्षं स्निग्धेऽतिशस्यते २६
विरूक्ष्य स्नेहसात्म्यं तु भूयः स्निग्धं विरेचयेत् ।
पद्मकोशीरनागाह्वचन्दनानि प्रयोजयेत् ॥ २७ ॥
अतियोगे विरेकस्य पानालेपनसेचनैः ।
सौवीरपिष्टाम्रवल्कलाभिलेपोऽतिसारहा ॥२८॥
अविरेच्या बालवृद्धश्रान्तभीतनवज्वराः ।
अल्पाग्न्यधोगपित्तास्रक्षतपाय्वतिसारिणः ॥२९॥

सशल्या स्थापितक्रूरकोष्ठातिस्निग्धशोषिणः ।
गर्भिणी नवसूता च तृष्णार्तोऽजीर्णवानपि ॥३०

इति विरेचनाधिकारः ।

(४ पित्तादौ भिन्नाविरेकाः) पित्तमें कसैले और मधुर पदार्थोंसें जुलाब होताहै । कफमें चर्चरे पदार्थोंसें जुलाब होताहै । वायुमें स्निग्ध गरम और सलोना पदार्थसें जुलाब नहीं लगै तो गरम पानी पान कराना और हाथकों गरम कर इस रोगीके उदरकों सेकना। उस दिनमें कम दस्त लगै तो भोजन कराकै दूसरे दिनमें फिर पान कराना । अदृढ स्नेहकोठावाला तो दशदिनसें उपरंत पीवै । वारंवार उपस्कृत शरीरवाला स्नेहस्वेदोंसें विरेचन देवै । पूर्वले क्रमकों स्मरण करता हुआ यौगिककों अच्छीतरह आलोडित कर दुर्बल पूर्व शोधित किया अल्प दोषोंवाला और कृश मनुष्य नहीं परिज्ञात कोठावाला कोमलरूप अल्प ओषधकों पीवै । रुक्ष मनुष्य बहुत वातसें कठिन कोठावाला और कसरतकों सेवनेवाले और दीप्तअग्निवाले इन्होंकै ओषधविना दस्त लगायाही जरजाताहै । इन्होंके अर्थ प्रथम बस्ति देकै पीछे स्निग्ध विरेचन देना। रुक्ष मनुष्यकों स्निग्ध रेचन और स्निग्ध मनुष्यकों रुक्ष रेचन देना श्रेष्ठ है । रूक्षपनेसें स्नेह प्रकृतिके माफिक होजाय तो फिर स्निग्धकों देवै । पद्माक खस नागकेशर चंदन इन्होंकों अत्यंत दस्त लगनेमें पान लेप और सेचनके द्वारा प्रयुक्त करै । आंवकी छालकों कांजीसें पीस किया लेप अतीसारकों नाशताहै । बालक वृद्ध परिश्रम पाया डरपोक नवीन ज्वरवाला मंदअग्निवाला अधोगत रक्तपित्तवाला क्षत हुया गुदावाला अतिसारवाला इन्होंकों जुलाब नहीं देना । शल्यवाले कठिन कोठावाले अत्यंत स्निग्ध अत्यंत शोषी गर्भिणी नवीन प्रसूता स्त्री तृषासें पीडित और जीर्णवाला इन्होंकों जुलाब नहीं देना ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां विरेचनाधिकारः ।

अथानुवासनाधिकारः ७१

अब अनुवासनका अधिकार कहतेहै ।

(१)वातोल्बणेषु दोषेषु वाते वा वस्तिरिष्यते ।
यथोचितात्पादहीनं भोजयित्वानुवासयेत् ॥१ ॥
न चाभुक्तवते स्नेहः प्रणिधेयः कथञ्चन ।
सूक्ष्मत्वाच्छून्यकोष्ठस्य क्षिप्रमूर्ध्वमथोत्पतेत् ॥२॥
षट्पली च भवेच्छ्रेष्ठा मध्यमा त्रिपली भवेत् ।
कनीयसी सार्धपला त्रिधा मात्रानुवासने ॥३॥

प्राग्देयमाद्ये द्विपलं पलार्ध-
वृद्धिर्द्वितीये पलमक्षवृद्धिः ।
कर्षद्वयं वा वसुमाषवृद्धि-
र्वस्तौ तृतीये क्रम एष उक्तः ॥ ४ ॥

माषमात्रं पले स्नेहे सिन्धुजन्मशताह्वयोः ।
स तु सैन्धवचूर्णेन शताह्वेन च संयुतः ॥ ५ ॥
भवेत्सुखोष्णश्च तथा निरेति सहसा सुखम् ।
विरिक्तश्चानुवास्यश्चेत्सप्तरात्रात्परं तदा ॥ ६ ॥

(१ अनुवासनायोग्याः) वातकी अधिकतावाले दोषोंमें अथवा वातमें वस्तिकर्म वांछित है । यथोचितसें चौथाईभाग कम भोजन कराकै अनुवासन करावै । नहीं भोजन किये हुयेके अर्थ कभीभी स्नेह नहीं देना । सूक्ष्मपनेसें शून्य कोठावालाकै ऊपरकों और नीचेकों गिर पडताहै । छह पलकी उत्तम तीन पलकी मध्यम और डेढ पलकी अधम इसप्रकार अनुवासनमें तीन मात्रा है । प्रथममें ८ तोलेभर प्रथम देना और २ तोलेभर बढाना । दूसरेमें ४ तोलेभर देना १ तोलाभर बढाना । तीसरामें २ तोलेभर देना और ८ मासे बढाना यह क्रम कहा है । पल अर्थात् ४ तोलेभर स्नेहमें सेंधानमक और सोंप एकएक मासाभर देना । वह सेंधानमकके चूर्णसें और सोंपके चूर्णसें युक्त किया और अल्प गरम किया देना जैसे नैहीं निकसै । विरेचित किंया अनुवासित करना हो तो सातरात्रिसें उपरंत करना ।

(२)सुवर्णरूप्यत्रपुताम्ररीति-
कांस्यायसास्थिद्रुमवेणुदन्तैः ।
नलैर्विषाणैर्मणिभिश्च तैस्तैः
कार्याणि नेत्राणि सुकर्णिकानि ॥ ७ ॥
षड्द्वादशाष्टाङ्गुलसम्मितानि
षड्विंशतिद्वादशवर्षजानाम् ।
स्युर्मुद्गकर्कन्धुसतीलवाहि
छिद्राणि वर्त्या पिहितानि चापि ॥ ८ ॥
यथा यवोऽङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्यां
मूलाग्रयोः स्युः परिणाहवन्ति ।

ऋजूनि गोपुच्छसमाकृतीनि
श्लक्ष्णानि च स्युर्गुडिकामुखानि ॥ ९ ॥
स्यात्कर्णिकैकाग्रचतुर्थभागे
मूलाश्रिते बस्तिनिबन्धने द्वे ।
जारद्गवो माहिषहारिणौ वा
स्याच्छौकरो बस्तिरजस्य वापि ॥ १० ॥
दृढस्तनुर्नष्टशिरोविबन्धः
कषायरक्तः सुमृदुः सुशुद्धः ।
नृणां वयो वीक्ष्य यथानुरूपं
नेत्रेषु योज्यस्तु सुबद्धसूत्रः ॥ ११ ॥

(२ बस्तियंत्रनिर्माणप्रकारः) सोना रूपा रांग तांबा पीतल कांशी लोहा हड्डी वृक्ष वांस दंत नरशल शींग और मणि इन्होंसें सुंदर कर्णिकवाले नेत्र करने । छह वीश बारह इन वर्षोंकी अवस्थावालोंके लिये छह बारह और आठ अंगुल प्रमाणित नेत्र करना । मूंग वेर मटर ये प्राप्त होसकै ऐसे छिद्र बत्तीसें अच्छादित किये बनाने । जैसे जब अंगूठा और कानिष्ठिकाकरकै मूल और अग्रभागमें मुढापावाले कोमल गायका पुच्छके समान आकृतिवाले सुंदर और गोलीहै मुखमें जिन्होंकै ऐसे नेत्र बनाने । कर्णिकाके अग्रभागके चतुर्थभागमें मूलाश्रित बस्तिमें दो बंधन बनाने । बूढी बैलकी बस्ति अथवा भैंसकी बस्ति अथवा हिरणकी अथवा शूरकी अथवा बकराकी बस्ति बनानी । दृढरूप मिहीन नष्ट हुआ है शिरका बंध जिसका कषायसें रक्त सुंदर कोमल अत्यंत शुद्ध और सुंदर सूत्रसें बंधी ऐसी बस्ति मनुष्योंकी अवस्थाकों देख जैसा अनुरूप हो उसके अनुसार नेत्रोंमें योजित करनी ।

(३)निरूहमात्रा प्रथमे प्रकुञ्चो वत्सरे परम् ।
प्रकुञ्चवृद्धिः प्रत्यब्दं यावत्षट् प्रसृतास्ततः॥१२॥
प्रसृतं वर्धयेदूर्ध्वं द्वादशाष्टादशस्य तु ।
आसप्ततेरिदं मानं दशैव प्रसृताः परम् ॥ १३ ॥
यथायथं निरूहस्य पादो मात्रानुवासने ।
कृतचंक्रमणं मुक्तविण्मूत्रं शयने सुखे ॥ १४ ॥
नात्युच्छ्रिते न चोच्छीर्षे संविष्टं वामपार्श्वतः ।
सङ्कोच्य दक्षिणं सक्थि प्रसार्य च ततोऽपरम् ।
बस्तिं सव्ये करे कृत्वा दक्षिणेनावपीडयेत्॥१५॥
तथास्य नेत्रं प्रणयेत्स्निग्धे स्निग्धमुखं गुदे ।
उच्छ्वास्य बस्तेर्वदनं बद्ध्वा हस्तमकम्पयन् ॥१६॥
पृष्ठवंशं प्रति ततो नातिद्रुतविलम्बितम् ।
नातिवेगं न वा मन्दं सकृदेव प्रपीडयेत् ।
सावशेषं प्रकुर्वीत वायुः शेषे हि तिष्ठति॥१७॥
निरूहदानेऽपि विधिरयमेव समीरितः ।

(३ बस्तिविधिः) प्रथमवर्षसें निरूहकी मात्रा ४ तोले भर है । पीछे वर्षवर्षमें चार तोलेभरकी वृद्धि । जबतक छह प्रसृत अर्थात् ४८ तोलेभर हो । उस्सें पीछे प्रसृतभर वढावै । अठारह वर्षकी उमरवालाकों बारह प्रसृत भर देना । ७० वर्षपर्यंत यह प्रमाण है । सत्तरवर्षसें उपरंत दश प्रसृतभर देना । निरूहके यथायोग्य चौथाई मात्रा अनुवासनमे है । किया है चंक्रमण जिसनैं और छोडा है मलमूत्र जिसनै ऐसे रोगीकों सुखपूर्वक पलंगपर शयन करावै । न अत्यंत ऊंचा और न अत्यंत ऊपरको शिरानावाला ऐसे पलंगपर वामें पांसूसें बैठकर दाहिना सक्थिकों संकोचित कर और वाम सक्थि अर्थात् सांथलकों प्रसारित कर । बस्तिकों वामे हाथमें लेकै दाहिना हाथसें पीडित करै । तथा स्निग्ध किया गुदमें स्निग्ध मुखवाले इसके नेत्रकों प्राप्त करै । ऊपरकों श्वास चढाय बस्तिके मुखकों बांध हाथकों नहीं कंपाता हुआ पृष्ठवंशके प्रति नहीं शीघ्र और नहीं विलंबसें न अत्यंत वेगसें और न बहुत मंदसे किंतु एकहीवार पीडित करै । अवशेष सहितकों करै वायु शेषमेंही स्थित रहता है । निरूहके देनेमें भी यही विधि कहीहै ।

(४)ततः प्रणिहिते स्नेहे उत्तानो वाक्शतं भवेत्
प्रसारितैः सर्वगात्रैस्तथा वीर्यं प्रसर्पति ।
आकुञ्चयेच्छनैस्त्रिस्त्रिः सक्थिबाहू ततः परम् ।
ताडयेत्तलयोरेनं त्रींस्त्रीन्वाराञ्छनैः शनैः ॥१९॥
स्फिचोश्चैनं ततः श्रोणिं शय्यां त्रिरुत्क्षिपेच्छनैः
एवं प्रणिहिते बस्तौ मन्दायासोऽथ मन्दवाक्२०
आस्तीर्णे शयने काममासीताचारिके रतः ।
योज्यः शीघ्रं निवृत्तेऽन्यः स्नेहोऽतिष्ठन्न कार्यकृत्॥
सानिलः सपुरीषश्च स्नेहः प्रत्येति यस्य वै ।
विना पीडां त्रियामस्थः स सम्यगनुवासितः ॥
काथार्धमात्रया प्रातर्धान्यशुण्ठीजलं पिबेत् ।
पित्तोत्तरे कदुष्णाम्भस्तावन्मात्रं पिबेदनु ॥२३॥

तेनास्य दीप्यते वह्निर्भक्ताकाङ्क्षा च जायते ।
अहोरात्रादपि स्नेहः प्रत्यागच्छन्न दुष्यति ॥२४॥
कुर्याद्वस्तिगुणांश्चापि जीर्णस्त्वल्पगुणो भवेत् ।
यस्य नोपद्रवं कुर्यात्स्नेहवस्तिरनिःसृतः ॥ २५ ॥
सर्वोऽल्पो वा वृतो रौक्ष्यादुपेक्ष्यः संविजानता ।
अनायन्तमहोरात्रात्स्नेहं सोपद्रवं हरेत् ॥ २६ ॥
स्नेहवस्तावनायाते नान्यः सेको विधीयते ।

(४ अनुवासनोत्तरंकर्तव्यता) पीछे स्नेहप्रणिहत होनेमें १०० को गिनसकै इतना काल सीधा शयन करै । सब अंगोंके पसारनेकरकै वीर्य सब जगह फैलताहै पीछे सक्थि और बाहुको तीनतीनवार हौलें हौलें आकुंचित करै । इस मनुष्यके तलवोंमें हौलें हौलें तीनतीनवार ताडित करै । पीछे इसकी फींचकों और कटिकों ताडित कर शय्याकों हौलें हौलें उत्क्षेपित करै । इसप्रकार वस्तिप्रणिहत होनेमें मंदपरिश्रमवाला और मन्दवाणीवाला और चारित कर्ममें रत हुआ होकै विस्तारित करी शय्यापर इच्छापूर्वक वैठै । निवृत्त होनेमें अन्य स्नेह योजित करना नहीं । स्थित हुआ कार्यकों नहीं करताहै । वायुसहित और मलसहित स्नेह जिसकै उलटा प्राप्त हो विनापीडा तीन पहर स्थित रहै वह अच्छीतरह अनुवासित कहना । क्वाथकी आधी मात्राकरकै प्रभातमें धनियां और सोंठका जल पीना । पित्तकी अधिकतामें अल्प गरम किया पानी उतनाही पीवै उसकरकै इसका अग्नि दीप्त होताहै । और भोजनकी इच्छा उपजतीहै । दिनरात्रसेंभी स्नेह उलटा आता हुआ नहीं दुष्ट होताहै । और वस्तिके गुणोंकों करताहै । जीर्ण हुआ अल्पगुण करताहै । जिसकै नहीं निकसा स्नेहवस्ति उपद्रवकों नहीं करता हो संपूर्ण अथवा स्वल्प वह सूक्ष्मपनेसें कुशल वैद्यनें त्यागना उचित है । दिनरात्रिसें नहीं आया स्नेहकों उपद्रवसहितकों निकासै । स्नेहवस्ति नहीं आनेमें अन्य सेकका विधान नहीं है ।

(५)अशुद्धस्य मलोन्मिश्रः स्नेहो नैति यदा पुनः
तदाङ्गसदनाध्मानशूलाः श्वासश्च जायते ।
पक्वाशयगुरुत्वं च तत्र दद्यान्निरूहणम् ॥ २८ ॥
तीक्ष्णं तीक्ष्णौषधैरेव सिद्धं चाप्यनुवासनम् ।
स्नेहवस्तिर्विधेयस्तु नाविशुद्धस्य देहिनः ॥२९॥
स्नेहवीर्यं तथादत्ते स्नेहो नानुविसर्पति ।
अशुद्धमपि वातेन केवलेनाभिपीडितम् ॥ ३० ॥
अहोरात्रस्य कालेषु सर्वेष्वेवानुवासयेत् ।
अनुवासयेत्तृतीयेऽह्नि पञ्चमे वा पुनश्च तम् ॥३१
यथा वा स्नेहपक्तिः स्याद्तोऽप्युल्वणमारुतान् ।
व्यायामनित्यान्दीप्ताग्नीन्रूक्षांश्च प्रतिवासरम् ३२
इति स्नेहैस्त्रिचतुरैः स्निग्धे स्रोतोविशुद्धये ।
निरूहं शोधनं युञ्ज्यादस्निग्धे स्नेहनं तनोः॥३३॥
विष्टब्धानिलविण्मूत्रः स्नेहो हीनेऽनुवासने ।
दाहज्वरपिपासार्तिकरश्चात्यनुवासने ॥ ३४ ॥

(५ अशुद्धौ निरूहः) अशुद्धके मलसें मिलाय स्नेह जब फिर नहीं निकसै तब अंगोंका टूटना अफारा शूल और श्वास उपजताहै । और पक्वाशयका भारीपन हो तों तहां निरूहणवस्ति देना । तीक्ष्ण ओषधोंसें तीक्ष्ण वस्ति देना । नहीं शुद्ध किया देहवालेकों स्नेहवस्ति नहीं देना । स्नेह वीर्यकों ग्रहण करताहै । और स्नेह नहीं फैलता है । केवल वातसे पीडित हुआ अशुद्धकोंभी सब कालोंमें अनुवासित करै । तीसरे दिन अथवा पांचमें दिन फिर उसकों अनुवासित करै । अथवा जैसे स्नेहका पकना हो इस्सें उपरंत बढा हुआ वातवालोंकों नित्य कसरतवालोंकों दीप्त अग्निवालोंकों और रूखाशरीरवालोंकों रोजरोज देवै । इसप्रकार तीन चार स्नेहोंसें स्निग्धमें स्रोतोंकी शुद्धिके अर्थ निरूह शोधन देवै और अस्निग्धमें स्नेहन देना । हीन अनुवासनमें अधोवात मल मूत्र इन्होंकों रोकताहै । अधिक अनुवासनमें स्नेह दाह ज्वर तृषा इन्होंकों करताहै ।

(६)स्नेहवस्तिं निरूहं वा नैकमेवातिशीलयेत् ।
स्नेहात्पित्तकफोत्क्लेदो निरूहात्पवनाद्भयम् ॥३५॥
अनास्थाप्या येऽभिधेया नानुवास्याश्च ते मताः ।
विशेषतस्त्वमी पाण्डुकामलामेहपीनसाः ॥३६॥
निरन्नप्लीहविड्भेदी गुरुकोष्ठकफोदराः ।
अभिष्यन्दभृशस्थूलक्रिमिकोष्ठाढ्यमारुताः ३७
पीते विषे गरेऽपच्यां श्लीपदी गलगण्डवान् ।
अनास्थाप्यस्त्वतिस्निग्धः क्षतोरस्को भृशं कृशः
आमातिसारी वमिमान्संशुद्धो दत्तनावनः ।
श्वासकासप्रसेकार्शोहिक्काध्मानाल्पवह्नयः ॥ ३९॥
शूलपायुः कृताहारो बद्धच्छिद्रदकोदरी ।
कुष्ठी च मधुमेही च मासान्सप्त च गर्भिणी ४०
न चैकान्ते न निर्दिष्टेऽप्यत्राभिनिविशेद्बुधः ।
भवेत्कदाचित्कार्यापि विरुद्धापि मता क्रिया ४१

छर्दिहृद्रोगगुल्मार्ते वमनं सुचिकित्सिते ।
अवस्थां प्राप्य निर्दिष्टं कुष्ठिनां वस्तिकर्म च ४२

इत्यनुवासनाधिकारः ।

(६वस्त्यादीनां परिणामाः) स्नेहबस्तिकों अथवा निरूहकों एकही वार नहीं देवै । स्नेहबस्तिसें पित्त कफ ग्लानि ये उपजते हैं । निरूहसें पवनका भय होता है। जो स्थापन वस्तिके योग्य नहीं कहे हैं वे अनुवासनकेभी योग्य नहीं हैं । विशेषकरकै ये पांडु कामला प्रमेह पीनस प्लीह विड्भेद गुरुकोष्ठ कफोदर अभिष्यंद अधिक मोटा कृमिकोष्ठ आढ्यवात इन रोगोंवाले विष पीनेमें कृत्रिमविष पीनेमें अपची रोगमें श्लीपदवाला गलगंडवाला ये आस्थापित करने योग्य नहीं हैं । अत्यंत स्निग्ध फटीहुई छातीवाला अत्यंत माडा आमातिसारवाला छर्दिवाला शुद्ध हुआ नस्य लिया हुआ श्वास खांसी प्रसेक ववासीर हिचकी अफारा मंदाग्नि इन रोगोंवाला गुदामें शूलवाला भोजन किया हुआ वद्धोदर छिद्रोदर जलोदर इन रोगोंवाला कुष्ठवाला मधुप्रमेहवाला और सातमहीनोंके गर्भवाली स्त्री इन्होंकों आस्थापित बस्ति नहीं देना। कदाचित् आवश्यक वैद्य समझै तो करै। क्योंकि विरुद्ध क्रियाभी मानी है। छर्दि हृद्रोग और गुल्मसें पीडितकों वमन कहा है। कुष्ठवालोंकै अवस्थाका विचार कर बस्तिकर्म कहा है।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायामनुवासनाधिकारः ।

अथ निरूहाधिकारः ७२ ।

अव निरूहका अधिकार कहते है ।

(१)अनुवास्य स्निग्धतनुं तृतीयेऽह्नि निरूहयेत् ।
मध्याह्ने किञ्चिदावृत्ते प्रयुक्ते वलिमङ्गले ॥ १ ॥
अभ्यक्तस्वेदितोत्सृष्टमलं नातिवुभुक्षितम् ।
मधुस्नेहनकल्काख्यकषायावापतः क्रमात् ॥ २ ॥
त्रीणि षड् द्वे दश त्रीणि पलान्यनिलरोगिषु ।
पित्ते चत्वारि चत्वारि द्वे द्विपञ्चचतुष्टयम् ॥३॥
षट् त्रीणि द्वे दश त्रीणि कफे चापि निरूहणम्।
दत्त्वादौ सैन्धवस्याक्षं मधुनः प्रसृतद्वयम् ॥ ४॥
विनिर्मथ्य ततो दद्यात्स्नेहस्य प्रसृतद्वयम् ।
एकीभूते ततः स्नेहे कल्कस्य प्रसृतं क्षिपेत् ॥५॥
संमूर्च्छितं कषायं तं पञ्चप्रसृतसंमितम् ।
वितरेत्तु यथावापमन्ते द्विप्रसृतोन्मितम् ॥ ६ ॥
वस्त्रपूतस्तथोष्णाम्बुकुम्भीवाष्पेण तापितः ।
एवं प्रकल्पितो वस्तिर्द्वादशप्रसृतो भवेत् ॥ ७ ॥
न धावत्यौषधं पाणिं न तिष्ठत्यवलिप्य च ।
न करोति च सीमन्तं स निरूहः सुयोजितः॥८॥

(१निरूहविधिः कालश्च) अनुवासितकर स्निग्ध शरीरवालाकों तीसरे दिन निरूहबस्ति देवै। मध्यान्हमें कछुक वस्त्र आदिसें आवरण कर बलि और मंगलाचार कर अभ्यक्त स्वेदित त्यागाहै मल जिसनें नहीं अत्यंत भूषा ऐसे उस रोगीकों शहद स्नेह कल्क क्वाथ आतप इन्होंकरकै क्रमसें तीन छह दो दश तीन ये पल वातरोगियोंकेविषै । पित्तमें चार चार दो दो पांच दश चार ये पल।और कफमें छह तीन दो दश तीन ये पल इसप्रकार निरूहबस्ति देना । आदिमें सैंधानमक १ तोलाभर देकै और शहद ८ तोलेभर देकै इन्होंकों मथकर पीछे स्नेह १६ तोले देवै । पीछे स्नेहकों एकीभूत बनाकै ८ तोलेभर कल्क डालना। संमूर्छित किये ४० तोलेभर क्वाथविषै अंतमें १६ तोलेभर आवाप डालै । वस्त्रसें छान कुंभी अर्थात् वोतलकी वांफसें तापित करै । इसप्रकार प्रकल्पित किया वस्ति वारह प्रसृत अर्थात् ४८ तोलेभर होताहै । औषध हाथके प्रति नहीं दौडै और अवलिप्त होकै नहीं ठहरै और सीमंतकों नहीं करै । सुंदर योजित किया वह निरूह होताहै ।

(२)पूर्वोक्तेन विधानेन गुदवस्तिं निधापयेत् ।
त्रिंशन्मात्रास्थितो वस्तिस्ततस्तूत्कटको भवेत् ९
जानुमण्डलमावेष्ट्य दत्तं दक्षिणपाणिना ।
कृष्टेनच्छटाशब्दशतं तिष्ठेदवेगवान् ॥ १० ॥
द्वितीयं वा तृतीयं वा चतुर्थं वा यथार्थतः ।
सम्यक् निरूहलिङ्गे तु प्राप्ते वस्तिं निवारयेत् ॥

प्रसृष्टविण्मूत्रसमीरणत्वं
रुच्यग्निवृद्ध्याशयलाघवानि ।
रोगोपशान्तिः प्रकृतिस्थता च
बलं च तत्स्यात्सुनिरूढलिङ्गम् ॥ १२ ॥

अयोगश्चातियोगश्च निरूहश्च विरिक्तवत् ॥ १३ ॥

स्निग्धोष्ण एकः पवने समांसो
द्वौ स्वादुशीतौ पयसा च पित्ते ॥ १४ ॥
त्रयः समूत्राः कटु कोष्णरूक्षाः
कफे निरूहा न परं विधेयाः ।

एकोऽपकर्षत्यनिलं स्वमार्गात्
पित्तं द्वितीयस्तु कफं तृतीयः ॥ १५ ॥

(२ निरूहकरणप्रकारः) पूर्वोक्त विधान करकै गुदमें वस्तिकों स्थापित करै तीस मात्रा कालतक स्थित बस्ति रहताहै । उस्सें उपरंत उत्कट होजाताहै । जानु अर्थात् गोडोंके मण्डलकों आवेष्टित कर दाहिना हाथसें देवै । नहीं वेगवाला १०० मात्राकालपर्यंत स्थित रहै । दूसरे अथवा तीसरे अथवा चौथे यथार्थसें अछीतरह निरूहके लिंग प्राप्त हों तो निवारण करै । अधोवात मलमूत्र अच्छीतरह उतरै रुचि उपजै अग्नि वढै आशय हलके हों रोगकी शांति हो प्रकृति स्थित हो और बल हो अछीतरह निरूढ हुआके ये लक्षण हैं । निरूहका प्रयोग और प्रतियोग विरेककी तरह है । वातमें समान अंशोंवाला स्निग्धरूप गरम एक निरूह है । पित्तमें स्वादु और शीतल दूधके संग दो निरूह हैं कफमें गोमूत्रके संग चर्चरा गरम और रूखा ऐसे तीन निरूह हैं तीनसें उपरंत निरूह नहीं देने ।

(३)आयामान्तं मुहूर्तान्तं निरूहं शोधनैर्हरेत् ।
निरूहैरेव मतिमान्क्षारमूत्राम्लसंयुतैः ॥ १६ ॥
विगुणानिलविष्टब्धश्चिरं तिष्ठन्निरूहणः ।
शूलारतिज्वराटोपान्मरणं वा प्रयच्छति ॥ १७ ॥
न तु भुक्तवते देयमास्थापनमिति स्थितिः ।
आमं तद्धि हरेद्भुक्तं छर्दिदोषांश्च कोपयेत् ॥१८
आवस्थिकः क्रमश्चापि मत्वा कार्यो निरूहणे ।
अतिप्रपीडितो वस्तिरतिक्रम्याशयं ततः ॥१९॥
वातेरितो नासिकाभ्यां मुखतो वा प्रपद्यते ।
छर्दिहृल्लासमूर्च्छादीन्प्रकुर्याद्दाहमेव च ॥ २० ॥
तत्र तूर्णं गलापीडं कुर्याच्चाप्यवधूननम् ।
शिरःकायविरेकौ च तीक्ष्णौ सेकांश्च शीतलान् ॥
सुनिरूढमथोष्णाम्बु स्नातं भुक्तरसौदनम् ।
यथोक्तेन विधानेन योजयेत्स्नेहवस्तिना ॥ २२ ॥
तदहस्तस्य पवनाद्भयं बलवदिष्यते ।
रसौदनस्तेन शस्तस्तदहश्चानुवासनम् ॥ २३ ॥

(३ निरूहानाधिकारिणः शमनोपायाश्च) नहीं आया निरूहकों दो घडी देखकै शोधन ओषधोंसें हरै परंतु खार गोमूत्र और खट्टा रससें युक्त हुये निरूहोंसें बुद्धिमान् वैद्य हरै । दुष्ट वायुसें विष्टब्ध हुआ और बहुत देरतक स्थित रहा निरूह शूल ग्लानि ज्वर आटोप अथवा मरणकों देताहै । भोजन किया हुआ मनुष्यकों आस्थापन नहीं देना ऐसी स्थिति है । वह भोजन आमकों हरताहै और छर्दि दोषोंकों कोपित करताहै । निरूहणमें मानकै अवस्थाका क्रमभी करना अत्यंत प्रपीडित किया बस्ति आशयकों उलंघित कर पीछे वातसें प्रेरित हुआ नासिकाओंसें अथवा मुखसें प्राप्त होताहै । छर्दि लालोंका पडना मूर्छा आदि और दाह इन्होंकों करताहै तहां शीघ्रही गला पीडकों अथवा अवधूननकों करै तीक्ष्णरूप शिरका जुलाब शरीरका जुलाब शीतलरूप सेक इन्होंकों लेवै । सुंदर निरूढ कियेकों पीछे गरम पानीसें स्नान कराकै मांसका रसके संग चावल खवाकै यथोक्त विधानसें स्नेहबस्ति करकै युक्त करै । उस दिन उसकों पवनसें भय बलवान् वांछित है इसकारणसें रसौदन उत्तम है उसी दिन अनुवासन देना ।

(४)दशमूलीकषायेण शताह्वाक्षं प्रयोजयेत् ।
सैन्धवाक्षं च मधुनो द्विपलं द्विपलं तथा ॥२४॥
तैलस्य पलमेकं तु फलस्यैकत्र योजयेत् ।
अर्धमातृकसञ्ज्ञोऽयं बस्तिर्देयो निरूहवत् ॥ २५॥
न च स्नेहो न च स्वेदः परिहारविधिर्न च ।
आत्रेयानुमतो ह्येष सर्वरोगनिवारणः ॥ २६ ॥
यक्ष्मघ्नश्च शूलघ्नश्च क्रिमिघ्नश्च विशेषतः ।
शुक्रसञ्जननो ह्येष वातशोणितनाशनः ।
बलवर्णकरो वृष्यो वस्तिः पुंसवनः परः ॥२७॥

(४ अर्धमातृको निरूहः) दशमूलके क्वाथसें सौंपके अथवा शतावरीके १ तोलेभर कल्ककों प्रयुक्त करै और सेंधानमक १ तोला शहद ८ तोले तेल ८ तोले मैनफल ४ तोले इन सबकों मिलावै यह अर्धमातृकबस्ति निरूहके तरह देना । नहीं स्नेह और नहीं स्वेद औरनहीं पहरेज करना । आत्रेयजीसें माना हुआ यह सब रोगोंकों नाशताहै और राजरोग शूलरोग कृमिरोग इन्होंकों विशेषकर नाशताहै । वीर्यकों उपजाताहै वातरक्तकों नाशताहै । बल और वर्णकों उपजाताहै वीर्यमें हितहै यह बस्ति पुरुषपनाकों उपजाताहै और उत्तम है ।

(५)स्नेहं गुडं मांसरसं पयश्च
अम्लानि मूत्रं मधुसैन्धवे च ।

एतान्यनुक्तानि च दापयेच्च
निरूहयोगे मदनात्फलं च ॥ २८ ॥
लवणं कार्षिकं दद्यात्पलमेकं तु मादनम् ।
वाते गुडः सितापित्ते कफे सिद्धार्थकादयः २९
सैन्धवाक्षं समादाय शताह्वाक्षं तथैव च ।
गोमूत्रस्य पलान्यष्टौ वस्तिकायाः पलद्वयम् ३०
गुडस्य द्वे पले चैव सर्वमालोड्य यत्नतः ।
वस्त्रपूतं सुखोष्णं च वस्तिं दद्याद्विचक्षणः ३१
शूलं विट्सङ्गमानाहं मूत्रकृच्छ्रं च दारुणम् ।
क्रिम्युदावर्तगुल्मादीन्सद्यो हन्यान्निषेवितः ३२॥

पलशुक्तिकर्षकुडवै-
रम्लीगुडसिन्धुजन्मगोमूत्रैः ।
तैलयुतोऽयं बस्तिः
शूलानाहामवातहरः ॥ ३३ ॥

(५ क्षारबस्तिः) स्नेह गुड मांसका रस दूध खट्टे रस गोमूत्र शहद सेंधानमक और मैनफल ये नहीं कहेभी निरूहके योगमें देने । सेंधानमक १ तोला देना । मैनफल १ पल देना । वातमें गुड पित्तमें मिश्री और कफमें सरसों आदि सेंधानमक १ तोला शतावरी १ तोला गोमूत्र ३२ तोले सांभरनमक ८ तोले गुड ८ तोले इन सबकों जतनसें आलोडित कर वस्त्रसें छान अल्प गरमरूप बस्तिको वैद्य देवै । शूल विड्बंध अफारा भयंकर मूत्रकृच्छ्र कृमिरोग उदावर्त और गुल्मआदि इन्होंकों सेवित किया यह बस्ति शीघ्र नाशताहै । खट्टा रस ४ तोले गुड २ तोले सेंधानमक १ तोला गोमूत्र १६ तोले तेल इन्होंसें युत किया यह बस्ति शूल अफारा और आमवात इन्होंकों हरता है ।

(६)वैतरणः क्षारवस्तिर्भुक्ते चापि प्रदीयते ३४
बदर्यैरावतीशेलुशाल्मलीधन्वनाङ्कुराः ।
क्षीरसिद्धाःसुसिद्धाःस्युः सास्राःपिच्छिलसंगताः
वाराहमाहिषौरभ्रवैडालैणेयकौक्कुटम् ।
सद्यस्कमसृगाजं वा देयं पिच्छिलवस्तिषु ॥३६॥
चरकादौ समुद्दिष्टा बस्तयो ये सहस्रशः ।
व्यवहारो न तैः प्रायो निबद्धा नात्र तेन ते ३७

बस्तिर्वयःस्थापयिता सुखायु-
र्बलाग्निमेधास्वरवर्णकृच्च ।
सर्वार्थकारी शिशुवृद्धयूनां
निरत्ययः सर्वगदापहश्च ॥ ३८ ॥

इति निरूहाधिकारः ।

(६ वैतरणबस्त्यादि) वैतरण क्षारवस्ति भोजन किये हुआके अर्थभी देना । वडवेरी वटपत्री पाषाणभेद ल्हेशवा धमासा इन्होंके कोंपलोंकों दूधमें सिद्ध करै । पिच्छिलसंज्ञक बस्ति होतीहै । शूर भैंसा मेढा बिलाव मृग मुर्गा बकरा इन्होंका तत्काल निकासा हुआ रक्त पिच्छिल बस्तियोंमें देना । चरक आदिमें जो हजारह बस्ति कहीहैं तिन्होंसें विशेष कर व्यवहार नहींहै इसलिये वे यहां नहीं लिखी । बस्ति अवस्थाकों स्थापित करतीहै । सुखपूर्वक आयुकों बढातीहै और बल अग्नि बुद्धि स्वर वर्ण इन्होंकों करतीहै । बालक वृद्ध और जवान इन्होंके सब प्रयोजन करतीहै । इसका फल नष्ट नहीं होता और सब रोगोंकों नाशताहै ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां निरूहाधिकारः।

अथ नस्याधिकारः ७३

अब नस्यका अधिकार कहतेहैं ।

(१)प्रतिमर्शोऽवपीडश्च नस्यं प्रधमनं तथा ।
शिरोविरेचनं चेति नस्तः कर्म च पञ्चधा ॥ १ ॥
ईषदुच्छिङ्घनात्स्नेहो यावान्वक्त्रं प्रपद्यते ।
नस्तो निषिक्तं तं विद्यात्प्रतिमर्शं प्रमाणतः ॥२॥
प्रतिमर्शस्तु नस्यार्थं करोति न च दोषवान् ।
नस्तः स्नेहाङ्गुलिं दद्यात्प्रातर्निशि च सर्वदा ३
न चेच्छिङ्घेदरोगाणां प्रतिमर्शः स दार्ढ्यकृत् ।
निशाहर्भुक्तवन्तोहःस्वप्नाध्वश्रमरेतसाम् ॥ ४ ॥
शिरोभ्यञ्जनगण्डूषप्रस्रावाञ्जनवर्चसाम् ।
दन्तकाष्ठस्य हास्यस्य योज्योऽन्तेऽसौ द्विबिन्दुकः
शोधनः स्तम्भनश्च स्यादवपीडो द्विधा मतः ।
अवपीड्य दीयते यस्मादवपीडस्ततस्तु सः ॥ ६ ॥
स्नेहार्थं शून्यशिरसां ग्रीवास्कन्धोरसां तथा ।
बलार्थं दीयते स्नेहो नस्तः शब्दोऽत्र वर्तते ॥ ७ ॥
नस्यस्य स्नैहिकस्याथ देयास्त्वष्टौ तु बिन्दवः ।
प्रत्येकशो नस्तकयोर्नृणामिति विनिश्चयः ॥ ८ ॥

(१ नस्यप्रकाराः) प्रतिमर्श अवपीड नस्य प्रधमन और शिरोविरेचन ऐसा नस्य कर्म पांच प्रकारका है ।

कछुक ऊंचा सूंघनसें जितना स्नेह मुखमें प्राप्त होताहै। नासिकासें निषिक्त वह जानना वह प्रमाणसें प्रतिमर्श है। दोषवाला प्रतिमर्श नस्यके अर्थकों नहीं करताहै। प्रभातमें और सायंकालमें नासिकासें स्नेहकी अंगुलीकों देवै नहीं। रोगवालोंकों नहीं सुंघावै। प्रतिमर्श दृढपनेकों करताहै। रात्रिदिन भोजन करनेवाले दिनमें सोनेवाले मार्गपरिश्रमसें क्षीणवीर्यवाले शिरकी मालिस कीये हुये कुल्ला किये हुये पसीना लिये हुये अंजन आंजे हुये ऐसे रोगियोंकों दंतधावनके अंतमें दो बूंदमात्र यह नस्य प्रयुक्त करना। शोधन और स्तंभन इस भेदसें अवपीड २ प्रकारका माना है। अवपीडित करकै दिया जाताहै इसवास्तै यह अवपीड कहा है। शून्यशिरवालोंकों स्नेहके अर्थ और ग्रीवा कंधा छाती शून्यवालोंकों बलके अर्थ स्नेह दिया जाताहै। यहां नासिकासें शब्द वर्तता है। नस्यसंज्ञक स्नेहकी आठ बूंद देने। एक-एक नासिकाके छिद्रोंमें यह निश्चय है।

(२)शुक्तिश्च पाणिशुक्तिश्च मात्रास्तिस्रःप्रकीर्तिताः
द्वात्रिंशद्बिन्दवश्चात्र शुक्तिरित्यभिधीयते ॥ ९ ॥
द्वे शुक्ती पाणिशुक्तिश्च देयात्र कुशलैर्नरैः।
तैलं कफे च वाते च केवले पवने वसाम् ॥ १० ॥
दद्यान्नस्तः सदा पित्ते सर्पिर्मज्जा समारुते।
ध्मापनं रेचनश्चूर्णो युञ्ज्यात्तं मुखवायुना ॥ ११ ॥
षडङ्गुलद्विमुखया नाड्या भेषजगर्भया।
स हि भूरितरं दोषं चूर्णत्वादपकर्षति ॥ १२ ॥

(२ नस्यप्रमाणादि) शुक्ति पाणिशुक्ति तीनमात्रा कहीहै। यहां ३२ बूंद शुक्ति कहा जाताहै। चौंसठबूंद पाणिशुक्ति कहातीहै। कुशल मनुष्योंनें देना। कफमें और वातमें तेल देना। अकेला वातमें वसा देनी। पित्तमें घृत और वातपित्तमें मज्जा देनी। ध्मापन और रेचन चूर्णकों मुखकी वायुसें युक्त करै। छह अंगुलकी और दोमुखोंवाली और ओषध है गर्भमें जिसके ऐसी नाडीकरकै कर्म करै। वह चूर्णपनेसें बहुतसा दोषकों दूर करताहै।

(३)शिरोविरेचनद्रव्यैः स्नेहैर्वातैः प्रसाधितैः।
शिरोविरेचनं दद्याद्रोगेषु तेषु बुद्धिमान् ॥ १३ ॥
गौरवे शिरसः शूले जाड्ये स्यन्दे गलामये।
शोषगण्डक्रिमिग्रन्थिकुष्ठापस्मारपीनसे ॥ १४ ॥
स्निग्धस्विन्नोत्तमाङ्गस्य प्राकृतावश्यकस्य च।
निवातशयनस्थस्य जत्रूर्ध्वं स्वेदयेत्पुनः ॥ १५ ॥
अथोत्तानार्धदेहस्य पाणिपादे प्रसारिते।
किञ्चिदुन्नतपादस्य किञ्चिन्मूर्धनि नामिते १६
नासापुटं पिधायैकं पर्यायेण निषेचयेत्।
उष्णाम्बुतप्तं भैषज्यं प्रणाड्या पिचुना तथा १७
दत्ते पादतलस्कन्धहस्तकर्णादि मर्दयेत्।
शनैरुच्छिङ्घ्य निष्ठीवेत्पार्श्वयोरुभयोस्ततः ॥१८॥
आभेषजक्षयादेवं द्विस्त्रिर्वा नस्यमाचरेत्।
स्नेहं विरेचनस्यान्ते दद्याद्दोषाद्यपेक्षया ॥ १९ ॥

(३ शिरोविरेचनम्) शिरकों विरेचन करनेवाले ओषधोंसें अथवा उन ओषधोंसें साधित किये स्नेहोंसें उन रोगोंमें बुद्धिमान् वैद्य शिरोविरेचन देवै। शिरके भारीपनमें शूलमें जाड्यमें अभिष्यंदमें गलके रोगमें और शोष गलगंड कृमि ग्रंथि कुष्ठ मृगीरोग पीनस इन्होंमें स्निग्ध और स्विन्न कियाहै शिर जिसका और प्रभातमें किया है आवश्यक कर्म जिसनैं और वातरहित स्थानमें स्थित ऐसे मनुष्यका जोताके ऊर्ध्वभागकों फिर स्वेदित करै। सीधा किया है आधा शरीर जिसनै प्रसादित किये हैं हाथ पैर जिसनै कछुक ऊपर किया है पैर जिसनै कछुक मस्तककों निवानेमें नासिकाके एक पुटकों ढककै दूसरे नासापुटसें गरम पानीसें तप्त किया ओषधकों नाडीकरकै अथवा रूईका फोहाकरकै सेचित करै। दिये पीछे पैरोंकी तलवे कंधा हाथ और कान आदिकों मर्दित करै। हौलें सूंघकर दोनों पसवाडोंकों थूकै। जबतक ओषधका क्षय हो तबतक दो अथवा तीन वार नस्य लेवै। विरेचनकों अंतमें दोषआदिकी अपेक्षाकरकै स्नेहकों देवै।

(४)त्र्यहात्र्यहाच्च सप्ताहं स्नेहकर्म समाचरेत्।
एकाहान्तरितं कुर्याद्रेचनं शिरसस्तथा ॥ २० ॥
सम्यक्स्निग्धे सुखोच्छ्वासस्वप्नबोधाक्षिपाटवम्।
रूक्षेऽक्षिस्तब्धता शोषो नासास्ये मूर्धशून्यता ॥
स्निग्धेतिकण्डूर्गुरुताप्रसेकारुचिपीनसाः।
सुविरिक्तेऽक्षिलघुतावक्रस्वरविशुद्धयः ॥ २२ ॥
दुर्विरिक्ते गदोद्रेकः क्षामतातिविरेचिते।
तोयमद्यगरस्नेहपीतानां पातुमिच्छताम् ॥ २३ ॥
भुक्तभक्तशिरःस्नातस्नातुकामस्रुतासृजाम्।
नवपीनसरोगार्तसूतिकाश्वासकासिनाम् ॥ २४ ॥
शुद्धानां दत्तवस्तीनां तथाचार्तवदुर्दिने।
अन्यत्रात्ययिके व्याधौ नैषां नस्यं प्रयोजयेत् २५

न नस्यमूनसप्ताब्दे नातीताशीतिवत्सरे ।
न चोनद्वादशे धूमः कवलो नोनपञ्चमे ॥ २६ ॥
न शुद्धिरूनदशमे न चातिक्रान्तसप्ततौ ।
आजन्ममरणं शस्तः प्रतिमर्शस्तु बस्तिवत्॥२७॥
इति नस्याधिकारः। समाप्तश्च पञ्चकर्माधिकारः ।

(४ नस्ये कालपरिमाणम्) तीनतीन दिनसें अथवा सात दिनसें स्नेहकर्मको आचरित करै । एक दिन अंतर देकै शिरका रेचन करै । अच्छी तरह स्निग्ध होनेमें सुखपूर्वक श्वास सोनेमें सुख नेत्रोंका हलकापन रूक्षपनमें नेत्रोंमें गर्वितपना नासिका और मुखमें शोष मस्तकमें शून्यपना ये होतेहैं । अत्यंत स्निग्ध होनेमें खाज भारापन प्रसेक अरुचि पीनस ये होतेहैं । सुंदर विरेचन होनेमें नत्रोंका हलकापन मुख और स्वरकी शुद्धि होतीहै । दुष्ट विरेचनमें रोगकी वृद्धि होतीहै । अत्यंत विरेचनमें शरीरका माडापन होताहै । पानी मदिरा कृत्रिम विष स्नेह इन्हों पीये हुओंकों अथवा पीनेकी इच्छावालोंकों और भातकों भोजन किये शिरकों धोयेहुये अथवा धोनेकी इच्छावालोंकों और रक्त झिरानेवालोंकों नवीन पीनसरोगसें पीडित और सूतिकारोग श्वास खांसी इन रोगोंवाले शुद्ध और दीहुइ बस्तिवाले तथा दुष्ट दिनमें महाअसाध्य रोगके विना इन पूर्वोक्तोंकों नस्य नहीं देवै । सात वर्षसें पहले और अस्शी वर्षसें उपरंत नस्य नहीं देना । बारह वर्षसें पहले धूमा नहीं देना और पांच वर्षसें पहले कवल नहीं देना । दश वर्षसें पहले और सत्तर वर्षसें उपरंत वमन और जुलाब नहीं देना । जन्मसें लेकै मरणपर्यंत बस्तिकी तरह प्रतिमर्श श्रेष्ठ है ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां नस्याधिकारः ।

अथ धूमाधिकारः ७४

अत्र धूमाधिकार कहतेहै ।

(१)प्रायोगिकः स्नैहिकश्च धूमो वैरेचनस्तथा ।
कासहरो वामनश्च धूमः पञ्चविधो मतः ॥ १ ॥
ऋज्वत्रिकोपफलितं कोलास्थ्यग्रप्रमाणितम् ।
बस्तिनेत्रसमद्रव्यं धूमनेत्रं प्रशस्यते ॥ २ ॥
सार्धत्र्यंशयुतः पूर्णो हस्तः प्रायोगिकादिषु ।
नेत्रे कासहरे त्र्यंशहीनः शेषे दशाङ्गुलः ॥ ३ ॥
औषधैर्वर्तिकां कृत्वा शरगर्भां विशोषिताम् ।
विगर्भामग्निसंप्लुष्टां कृत्वा धूमं पिबेन्नरः ॥ ४ ॥
वक्त्रेणैव वमेद्धूमं नस्तो वक्त्रेण वा पिबन् ।
उरःकण्ठगते दोषे वक्त्रेण धूममापिबेत् ॥ ५ ॥
नासया तु पिबेद्दोषे शिरोघ्राणाक्षिसंश्रये ।
गन्धैरकुष्ठतगरैर्वर्तिः प्रायोगिके मता ॥ ६ ॥
स्नैहिके तु मधूच्छिष्टस्नेहगुग्गुलुसर्जकैः ।
शिरोविरेचनद्रव्यैर्वर्तिर्वैरेचने मता ॥ ७ ॥
कासघ्नैरेव कासघ्नी वामनैर्वामनी मता ।
योज्या न पित्तरक्तार्त्तविरिक्तोदरमेहिषु ॥ ८ ॥
तिमिरोर्ध्वनिलाध्मानरोहिणीदत्तबस्तिषु ।
मत्स्यमद्यदधिक्षीरक्षौद्रस्नेहविषाशिषु ॥ ९ ॥
शिरस्यभिहते पाण्डुरोगे जागरिते निशि ।
रक्तपित्तान्ध्यबाधिर्यतृण्मूर्च्छामदमोहकृत् ॥१०॥
धूमोऽकालेऽतिपीतो वा तत्र शीतो विधिर्हितः ।
एतद्धूमविधानं तु लेशतः सम्प्रकाशितम् ॥११॥

इति धूमाधिकारः ।

(१ धूमाधिकारिणस्तदुपायाश्च) प्रायोगिक स्नैहिक धूम वैरेचन और खांसीनाशक वामन ऐसे धूम पांचप्रकारका है । कोमल और त्रिकोपफलवाला और बेरकी गुठलीकों अग्रभागसें प्रमाणित और बस्तिका नेत्रके समान द्रव्यवाला ऐसा धूमसें नेत्र श्रेष्ठ होताहै । प्रायोगिक आदिकोंमें साढेतीन अंशोंसें युत हुआ हाथके प्रमाण और खांसीनाशक नेत्रमें तीन अंशोंसें हीन और शेषधूममें दशअंगुल है । शर है गरभमें जिसकै ऐसी बत्ती ओषधोंसें बनाय सुखावै । फिर शरको निकास अग्निसें जलाय धूमाकों मनुष्य पीवै मुखसेंही धूमाकों उगलै अथवा मुखसें पीकै नासिकासें धूमाकों निकासै । छाती और कंठमें प्राप्त हुआ दोषमें मुखसें धूमाकों पीवै । शिर नासिका और नेत्रोंमें दोष संस्थित हो तो नासिकासें धूमाकों पीवै । प्रायोगिक धूममें कूट और तगरसें वर्जित गंधोंकरकै बत्ती बनानी । स्नैहिकमें तो मौंम स्नेह गूगल राल इन्होंसें बत्ती बनानी । वैरेचनमें शिरकों विरेचन करनेवाले ओषधोंसें बत्ती बनानी । खांसीनाशक ओषधोंसें खांसीनाशिनी बत्ती और वमन करानेवाले ओषधोंसें वामनी बत्ती बनानी । पित्तरक्तसें पीडित जुलाब लिये उदररोगी प्रमेहरोगी और तिमिर ऊर्ध्ववात अफारा रोहिणी इन रोगोंवाले और बस्तिकों लियेहुये मछली मदिरा दही दूध शहद स्नेह विष इन्होंकों पीये हुये शिरमें चोट लगे

हुये पांडुरोगी रात्रिमें जागे हुए इन्होंकों धूमा नहीं देना । देवै तो रक्तपित्त अंधेरी बहरापन तृषा मूर्च्छा मद और मोह इन्होंकों करताहै । अकालमें धूमा पीया जावै और अत्यंत धूमा पीया जावै तहां शीतल विधि हित है । यह धूमविधान लेशमात्र प्रकाशित किया है ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां धूमाधिकारः ।

अथ कवलगण्डूषाधिकारः ७५

अब कवलगण्डूषका अधिकार कहतेहैं ।

(१)स्निग्धोष्णैः स्नैहिको वाते स्वादुशीतैःप्रसादनः पित्ते कट्वम्ललवणै रूक्षैः संशोधनः कफे ॥ १ ॥
कषायस्वादुतिक्तैश्च कवलो रोपणो व्रणे ।
सुखं सञ्चार्यते या तु सा मात्रा कवले हिता २
असञ्चार्या तु या मात्रा गण्डूषे सा प्रकीर्तिता ।
तावच्च धारणीयोऽयं यावद्दोषप्रवर्तनम् ॥ ३ ॥
पुनश्चान्योऽपि दातव्यस्तथा क्षौद्रघृतादिभिः ।
व्याधेरपचयस्तुष्टिर्वैशद्यं वक्त्रलाघवम् ॥ ४ ॥
इन्द्रियाणां प्रसादश्च कवले शुद्धिलक्षणम् ।
दाहतृष्णाव्रणान् हन्ति मधुगण्डूषधारणम्॥ ५ ॥
धान्याम्लमास्यवैरस्यमलदौर्गन्ध्यनाशनम् ।
तदेवाल्पलवणं शीतं मुखशोषहरं परम् ॥ ६ ॥
आशु क्षाराम्लगण्डूषो भिनत्ति श्लेष्मणश्चयम् ।
सुखे हितं वातहरं तैलगण्डूषधारणम् ॥ ७ ॥

इति कवलगण्डूषाधिकारः ।

(१ **कवलगंडूषधारिणः**) वातमें स्निग्ध गरम ओषधोंसें स्नैहिक और पित्तमें स्वादु और शीतल ओषधोंसें प्रसादन और कफमें चर्चरा खट्टा नमक और रूषा ऐसे ओषधोंसें संशोधन देना । कसैला स्वादु और कडुवे ओषधोंसें बनाया कवल घावमें अंकुर लाताहै । जो मात्रा सुखपूर्वक जरजावै वह कवलमें हित है । असंचार्यरूप मात्रा गंडूष अर्थात् गरारोंमें लेनी तबपर्यंत धारण करना । जबतक दोषकी प्रवृत्ति रहै । तथा शहद और घृत आदिसें फिरभी अन्य देना योग्य है । व्याधिकी शांति हो प्रसन्नता हो सुंदरपना हो मुखका हलकापन हो और इन्द्रियोंकी प्रसन्नता हो ये लक्षण कवलमें शुद्धिके हैं । मुखमें शहदका गंडूष धारना दाह तृषा और घावकों नाशैहै । चावलोंकी कांजी मुखमें धारण करी जावै तो मुखकी विरसता मल दुर्गंधपना इन्होंकों नाशताहै । कछुक नमकसहितका कुल्ला मुखके शोषकों हरताहै । खार और खट्टा रसका गंडूष कफके चयकों नाशताहै । तेलका गंडूष धारण करना सुखमें हित है । और वातकों नाशताहै ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां कवलगंडूषाधिकारः ।

अथाश्च्योतनाञ्जनतर्पणपुटपाकाधिकारः ७६

अब आश्च्योतन अंजन तर्पण और पुटपाकका अधिकार कहते है ।

(१)सर्वेषामक्षिरोगाणामादावाश्च्योतनं हितम् ।
रुक्तोदकण्डूघर्षाश्रुदाहरागनिबर्हणम् ॥ १ ॥
उष्णं वाते कफे चोष्णं तच्छीतं रक्तपित्तयोः ।
निवातस्थस्य वामेन पाणिनोन्मील्य लोचनम् २
शुक्तौ प्रलम्बयान्येन पिचुवर्त्या कनीनिके ।
दश द्वादश वा बिन्दून् द्व्यङ्गुलादवसेचयेत् ३
ततः प्रमृज्य मृदुना चैलेन कफवातयोः ।
अन्येन कोष्णपानीयप्लुतेन स्वेदयेन्मृदु ॥ ४ ॥
अत्युष्णातीक्ष्णं रुग्रागदृङ्नाशायाक्षिसेचनम् ।
अतिशीतं तु कुरुते निस्तोदस्तम्भवेदनाः॥ ५ ॥
कषायवर्त्मतां घर्षं कृच्छ्रात्तन्मेहनं बहु ।
विकारवृद्धिमत्यल्पं संरम्भमपरिस्रुतम् ॥ ६ ॥

(१ **नेत्ररोगे आश्च्योतनं**) सब प्रकारके नेत्ररोगोंकी आदिमें आश्च्योतन करना हित है । शूल चमका खाज खोरनी आंशू दाह और राग इन्होंकों दूर करताहै । वातमें गरम कफमें गरम रक्त और पित्तमें शीतल देना । वातसें रहित स्थानसें स्थित हुआके वामे हाथसें नेत्रकों खोल लंबी शीपीसें अथवा अन्य पात्रसें अथा रूईका फोहा तथा बत्तीसें कनीनिकापर दो अंगुल ऊंचासें दश अथवा बारह बूंद छोडने पीछे कोमल वस्त्रसे पूंछ कफ वातमें अल्प गरम कियासे भिगोय करडा कपडासे कोमल स्वेद करै अत्यंत गरमसे नेत्रका सेचना पीडा राग और दृष्टिनाश इन्होंकों करता है । अत्यंत शीतलसे सेचना चमका स्तंभ और पीडाकों करता है ।

(२)अथाञ्जनं शुद्धतनोर्नेत्रमात्राश्रये मले ।
पक्वलिङ्गेऽल्पशोथार्तिकण्डूपैच्छिल्यलक्षिते ॥ ७ ॥

मन्दघर्षाश्रुरागेऽक्षिण प्रयोज्यं घनदूषिके ।
लेखनं रोपणं दृष्टिप्रसादनमिति त्रिधा ॥ ८ ॥
अञ्जनं लेखनं तत्र कषायाम्लपटूषणैः ।
रोपणं तिक्तकैर्द्रव्यैः स्वादुशीतैः प्रसादनम् ९
दशाङ्गुला तनुर्मध्ये शलाका मुकुलानना ।
प्रशस्ता लेखने ताम्री रोपणे काललोहजा १०
अङ्गुला च सुवर्णोत्था रूपजा च प्रसादने ।
पिण्डो रसक्रिया चूर्णं त्रिधैवाञ्जनकल्पना ११
गुरौ मध्यलघौ दोषे तां क्रमेण प्रयोजयेत् ।
अथानून्मीलयन् दृष्टी अन्तः सञ्चारयेच्छनैः १२
अञ्जिते वर्त्मनी किञ्चिच्चालयेच्चैवमञ्जनम् ।
अपेतौषधसम्बन्धं निर्वृतं नयनं यदा ॥ १३ ॥
व्याधिदोषं तु योग्याभिरद्भिः प्रक्षालयेत्तदा ।
दक्षिणाङ्गुष्ठकेनाक्षि ततो वामं सवाससा ॥१४॥
ऊर्ध्ववर्त्मनि संगृह्य शोध्यं वामेन चेतरत् ।
निशि स्वप्नेन मध्याह्नपानान्नोष्णगभस्तिभिः १५
अक्षिरोगाय दोषाः स्युर्वर्धितोत्पीडितद्रुताः ।
प्रातः सायं च तच्छान्त्यै व्यभ्रकेऽतोऽञ्जयेत्सदा
कण्डूजाड्येऽञ्जनं तीक्ष्णं धूमं वा योजयेत् पुनः ।
तीक्ष्णाञ्जनाभितप्ते तु तूर्णं प्रत्यञ्जनं हितम् ॥१७॥

(२ नेत्रमलेऽञ्जनम्) शुद्धशरीरवालाकै नेत्रमात्रमें मल आश्रित होवै। पक्कके लक्षण और अल्प शोजा खाज पिच्छलपना इन्होंसें लक्षित नेत्र होवै मंदघसना आंशू राग ये हों और नेत्रोंमें बहुत ढीढ हों तब अंजन देना । लेखन रोपण और दृष्टिप्रसादन ऐसा अंजन तीनप्रकारका है तिन्होंमें कसैला खट्टा सलोना चर्चरा इन्होंकरकै लेखन अंजन होताहै । कडुवे ओषधोंसे रोपण अंजन होताहै । स्वादु और शीतल ओषधोंसे प्रसादन अंजन होताहै । दश अंगुलवाली मध्यमें मिहीन फूलोंकी कलीके समान मुखवाली ऐसी-तांबाकी शलाई लेखनमें उत्तम है। काला-लोहाकी शलाई रोपणमें उत्तम है । सोनाकी व चांदीकी शलाई प्रसादनमें उत्तम है । भारी मध्यम और हलका ऐसे दोषमें गोली रसक्रिया चूर्ण तीन प्रकारकी यह अंजनकल्पना क्रमसें प्रयुक्त करनी । पीछे नेत्रोंकों खोलकै हौलें भीतर संचारित करै वर्त्मोंकों अंजित कर कछुक अंजनकों चालित करै । जब ओषधके संबंधसे रहित नेत्र हों तब रोगके दोषकों योग्य पानीसें धोवै । दाहिना अंगूठासें वामा नेत्रकों ऊर्ध्व वर्त्ममें ग्रहण कर वामासें दाहिनाको शोधित करै । रात्रिमें शयनसें और मध्यान्हमें पान अन्न गरम किरण इन्होंसें नेत्ररोगोंमें बढकै पीडाकारक दोष ठहरतेहैं । उन्होंकी शांतिके अर्थ प्रभातमें और सायंकालमें मेघसें आच्छादित आकाश नहीं हो तब सब कालमें अंजनकों आंजै । खाज और जडपनासें युत हुये नेत्रमें तेज अंजनकों अथवा तेज धूमाकों फिर योजित करै । तेज अंजनसें तप्त हुआ नेत्रमें शीघ्र शीतलरूप प्रत्यंजन हित है ।

(३)नाञ्जयेद्भीतवमितविरिक्ताशितवेगिते ।
क्रुद्धज्वरितभ्रान्ताक्षशिरोरुक्शोषजागरे ॥ १८ ॥
अदृष्टेऽर्के शिरःस्नाते पीतयोर्धूममद्ययोः ।
अजीर्णेऽप्यर्कसंतप्ते दिवास्वप्ने पिपासिते १९
निर्वाते तर्पणं योज्यं शुद्धयोर्मूर्धकाययोः ।
काले साधारणे प्रातः सायं वोत्तानशायिनः २०
यवमाषमयीं पालीं नेत्रकोणाद्बहिः समाम् ।
द्व्यङ्गुलोच्चां दृढां कृत्वा यथास्वं सिद्धमावपेत् ॥
सर्पिर्निमीलिते नेत्रे तप्ताम्बु प्रविलायितम् ।
नक्तान्ध्यवाततिमिरकृच्छ्ररोधादिके वसाम् २२
आपक्ष्माग्रादथोन्मेषं शनकैस्तस्य कुर्वतः ।
मात्रां विगणयेत् तत्र वर्त्म सन्धिसितासिते २३
दृष्टौ च क्रमशो व्याधौ शतं त्रीणि च पञ्च च ।
शतानि सप्त चाष्टौ च दश मन्थेऽनिले दश २४
पित्ते षट् स्वस्थवृत्ते च बलासे पञ्च धारयेत् ।
कृत्वापाङ्गे ततो द्वारं स्नेहं पात्रे निगालयेत् २५
पिबेच्च धूमं नेक्षेत व्योमरूपं च भास्वरम् ।
इत्थं प्रतिदिनं वाते पित्ते त्वेकान्तरं कफे॥२६॥
स्वस्थे च द्व्यन्तरं दद्यादातृप्तेरिति योजयेत् ।
प्रकाशक्षमता स्वास्थ्यं विशदं लघु लोचनम्॥२७

(३ तर्पणम्) डरपोक वमनकिया हुआ जुलाब लिये हुये भोजन किया हुया वेगवाला क्रोधी ज्वरवाला भ्रांतनेत्रोंवाला शिरमें शूलवाले शोषरोगी रातिमें जागेहुये सूर्यके नहीं दीखनेमें शिरके धोनेमें धूमा और मदिराके पीनेमें अजीर्णमें सूर्यके घाममें दिनके शयनमें पानी पीनेकी इच्छामें शिरकों और शरीरकों शुद्ध कर वातरहित स्थानमें तर्पण युक्त करना । साधारण कालमें प्रभातविषै वा सायंकालविषै सीधा शयन करनेवालाकै । जब और

उडदके चूनसें नेत्रकोणसे बाहिर दो अंगुल ऊंची और समान दृढरूपवाली बनाकै यथायोग्य सिद्ध किया घृतकों गरम पानीकी तरह बनाकै नेत्रोंकी मूंद भरै। रातौंधा वात तिमिर मूत्रकृच्छ्र और रोध आदिमें वसाकों भरै। पलकोंके अग्रभागपर्यंत भरकै हौलें हौलें नेत्रकों खोलै। वर्त्मकी संधिके सुपेद और कृष्णमें मात्राकों गिनै। दृष्टिविषे व्याधिमें क्रमसें ३०० और ५००, ७०० और ८०० वातमेंके मंथमें १००० मात्रातक धारण करै। स्वस्थपनेमें वातविषे दश पित्तविषे छह और कफविषे पांच मात्रातक धारण करै। पीछे नेत्रके समीपमें द्वार बनाकै स्नेहकों पात्रमें निकासै। और धूमाकों पीवै प्रकाशित हुये आकाशकों नहीं देखै। इसप्रकार वातमें प्रतिदिन और पित्तमें एकदिन बीचमें छोडकै और कफमें और स्वस्थपनेमें दो दिन छोडकै तृप्तिपर्यंत योजित करै।

(४)तृप्ते विपर्ययोऽतृप्ते तृप्तेऽतिश्लेष्मजा रुजः।
पुटपाकं प्रयुञ्जीत पूर्वोक्तेष्वेव पक्ष्मसु ॥ २८ ॥
सवाते स्नेहनः श्लेष्मसहिते लेखनो मतः।
तृड्दौर्बल्येऽनिले पित्ते रक्ते स्वस्थे प्रसादनः२९
बिल्वमात्रं पृथक् पिण्डं मांसभेषजकल्कयोः।
उरुबूकवटाम्भोजपत्रैः स्निग्धादिषु क्रमात् ३०
वेष्टयित्वा मृदालिप्तं धवधन्वनगोमयैः।
पचेत् प्रदीप्तैरङ्गाभं पक्वं निष्पीड्य तद्रसम्॥
नेत्रे तर्पणवत् युञ्ज्याच्छतं द्वे त्रीणि धारयेत् ।
लेखनस्नेहनान्त्येषु कोष्णौ पूर्वौ हिमोऽपरः ३२
धूमपोऽन्ते तयोरेव योगास्तत्र च तृप्तिवत् ।
तर्पणं पुटपाकं च नस्यानर्हे न योजयेत् ॥ ३३ ॥
यावन्त्यहानि युञ्जीत द्विगुणो हितभाग्भवेत् ॥

इत्याश्च्योतनाञ्जनतर्पणपुटपाकाधिकारः ।

(**४ पुटपाकः**) तृप्त होनेमें प्रकाश होना स्वस्थपना सुंदरपना हलके नेत्र होतेहैं। नहीं तृप्तमें ये लक्षण विपरीत होतेहैं और अत्यंत तृप्त होनेमें कफकी पीडा उपजती है। पूर्वोक्त पक्ष्मोंमें पुटपाकोंही प्रयुक्त करै। वातसहितमें स्नेहन कफसहितमें लेखन माना हैं। तृषासें दुर्बलपनेमें वातमें पित्तमें रक्तमें और स्वस्थमें प्रसादन हित है। मांस और ओषधके कल्ककों चार तोलेभर ले अलग अलग गोला बनाय आरंड वड कमल इन्होंके पत्तोंसें स्निग्ध आदिमें क्रमसें वेष्टित कर माटी लीप धौ धमासा गोवर इन्होंसें पकावै। जब अग्निके समान कांतिवाला पककर होवै तब उसके रसकों निचोड नेत्रमें तर्पणकी तरह युक्त करै १००, २००, ३००, मात्रातक धारण करै। लेखन स्नेहन और प्रसादनमें पूर्व दोनों अल्प गरम और अल्प शीतल तर्पण पुटपाककों नस्यके अयोग्यके अर्थ नहीं योजित करै। जितने दिन युक्त करै उस्सें दुगुने दिन पहरेज करै।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां आश्च्योतनतर्पणपुटपाकाधिकारः

अथ शिराव्यधाधिकारः ७७

अब शिराव्यधका अधिकार कहतेहै।

(१)अथ स्निग्धतनुः स्निग्धरसान्नप्रतिभोजितः।
प्रत्यादित्यमुखं स्विन्नो जानूच्चासनसंस्थितः॥१॥
मृदुपट्टात्तकोशान्तो जानुस्थापितकूर्परः।
अङ्गुष्ठगर्भमुष्टिभ्यां मन्ये गाढं निपीडयेत् ॥ २ ॥
दन्तसम्पीडनोत्कासगण्डाध्मानानि चाचरेत् ।
पृष्ठतो यन्त्रयेच्चैनं वस्त्रमावेष्टयेन्नरः ॥ ३ ॥
कन्धरायां परिक्षिप्य नस्यान्तर्वामतर्जनीम् ।
एवमुत्थाप्य विधिना शिरां विध्येच्छिरोगताम्॥
विध्येद्धस्तशिरां वाहावनाकुञ्चितकूर्परे ।
बद्ध्वा सुखोपविष्टस्य मुष्टिमङ्गुष्ठगर्भिणम् ॥ ५ ॥
ऊर्ध्वं वेध्यप्रदेशाच्च पट्टिकां चतुरङ्गुले ।
पादे तु सुस्थितेऽधस्ताज्जानुसन्धेर्निपीडिते ॥६॥
गाढं कराभ्यामागुल्फं चरणे तस्य चोपरि ।
द्वितीये कुञ्चिते किञ्चिदारूढे हस्तवत्ततः ॥ ७ ॥
बद्ध्वा विध्येच्छिरामित्थमनुक्तेष्वपि कल्पयेत् ।
तेषु तेषु प्रदेशेषु तत्तद्यन्त्रमुपायवित् ॥ ८ ॥
ततो व्रीहिमुखं व्यध्यप्रदेशे न्यस्य पीडयेत् ।
अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यां तु तलप्रच्छादितं भिषक्॥ ९ ॥
वामहस्तेन विन्यस्य कुठारीमितरेण तु ।
ताडयेन्मध्यमाङ्गुल्याङ्गुष्ठविष्टब्धमुक्तया ॥ १० ॥
मांसले निक्षिपेद्देशे व्रीह्यास्यं व्रीहिमात्रकम् ।
यवार्धमस्थ्नामुपरि शिरां विध्यन्कुठारिकाम् ११

(**१ शिराव्यधाधिकारिणःप्रकारश्च**) स्निग्ध शरीरवाला स्निग्ध रस और अन्नसें योजित किया सूर्यके सन्मुख मुखवाला पसीनासें युत हुआ गोडाकरकै उंचै आसनसंस्थित हुआ कोमल पट्टापै बैठाकै शांत स्वरूपकी

कहनीकों गोडापर स्थापित करा अंगूठासहित मुष्टियोंसें दोनों कंधोंकों करडे पीडित करै। दंतोंका पीडन खांसी गंडोंका आध्मान इन्होंकों आचरित करै। पृष्ठसें यंत्रित कर वस्त्रकों बांधदेवै। कंधरापर उसकी वामी तर्जनीकों गेर इस प्रकार विधिसैं उत्थापित कर शिरकी शिराको वींधै। नहीं आकुंचित करी कुहनीयुत बाहुमें हाथकी शिराकों वींधै। सुखपूर्वक स्थित हुआके अंगूठासहित मुष्टिकों बांध वेध्यप्रदेशसें ऊपर चार अंगुलमें पट्टिका दे सुस्थित हुये पैरमें नीचै गोडाकी संधिकों पीडित कर हाथोंसें करडा टकनातक उसकै ऊपर पैरपर दूसरा पैर कछुक आकुंचित और आरूढ कर पीछे हाथकी तरह शिराकों नित्यप्रति वींधै। नहीं कहोंमेंभी कल्पित करै। तिस तिस प्रदेशोंमें तिस तिस यंत्रकों उपाय जाननेवाला करै। पीछे त्रीहिमुखकों वींधाहुआ प्रदेशमें स्थापित कर पीडित करै। अंगूठा तर्जनीसे वैद्य तल प्रच्छादितको वामा हाथसें और कुठारीकों दाहिना हाथसें स्थापित कर अंगूठासें अलग हुई मध्यमा अंगुलीसें। त्रीहिमात्र त्रीहिमुखकों मांसल प्रदेशमें प्राप्त करै अस्थियोंके ऊपर जवका अर्धभागरूप शिराकों वींधता हुआ

(२)असम्यगस्रे स्रवति बैल्वव्योषनिशानतैः।
सागारधूमलवणतैलैर्दिह्याच्छिरामुखम्।
सम्यक् प्रवृत्ते कोष्णेन तैलेन लवणेन च ॥१२॥
अशुद्धो बलिनोऽप्यस्रं न प्रस्थात्स्रावयेत्परम्
अतिस्रुतौ हि मृत्युः स्याद्दारुणा वानिलामयाः॥
तत्राभ्यङ्गरसक्षीररक्तपानानि भेषजम्।
स्रुते रक्ते शनैर्यन्त्रमपनीय हिमाम्बुना ॥ १४ ॥
प्रक्षाल्य तैलप्रोतार्क बन्धनीयं शिरामुखम्।
अशुद्धं स्रावयेद्भूयः सायमह्न्यपरेऽपि वा॥१५॥
रक्ते त्वतिष्ठति क्षिप्रं स्तम्भनीमाचरेत्क्रियाम्।
लोध्रप्रियङ्गुपत्तुङ्गमाषयष्ट्याह्वगैरिकैः ॥ १६ ॥
मृत्कपालाञ्जनक्षौममसीक्षीरित्वगङ्कुरैः।
विचूर्णयेद्व्रणमुखं पद्मकादिहिमं पिबेत् ॥ १७ ॥
तामेव वा शिरां विध्येद्व्यधात्तस्मादनन्तरम्।
शिरामुखं वा त्वरितं दहेत्तप्तशलाकया ॥ १८ ॥
सशेषमप्यसृग्धार्यं न चातिस्रुतिमाचरेत्।
हरेच्छृङ्गादिना शेषं प्रसादमथवा नयेत् ॥ १९॥

(२ रक्तातिस्रावे शमनम्) अच्छीतरह रक्त नहीं झिरनेमें वेलगिरी सोंठ मिरच पीपल हलदी तगर घरका धूमा नमक तेल इन्होंसें शिराकों लींपै। अच्छीतरह प्रवृत्त हुये रक्तमें अल्प गरम किया तेलसें अथवा नमकसें अशुद्धिमें बलवालेका रक्तभी ६४ तोलेभरसें उपरंत नहीं निकासै। अत्यंत रक्त निकसनेमें मरण अथवा भयंकर वातज रोग उपजते हैं। तहां अभ्यंग मांसका रस दूध रक्त इन्होंकों पीना ओषध है। रक्त झिरनेके पीछे यंत्रकों खोल शीतल पानीसें धोकै तेलसें भिगोकरै शिराके मुखकों बांधना योग्य है। अशुद्ध रक्तकों सायंकालमें अथवा दूसरे दिन फिर निकासै। रक्त नहीं ठहरनेमें शीघ्र रक्तकों थांमनेवाली क्रियाकों आचरित करै। लोध मेंहदी लाल चंदन उडद मुलहटी गेरू मराहुआकी खोपरीका अंजन रेशमी वस्त्रकी स्याही दूधवाले वृक्षोंके कोंपल इन्होंसें घावके मुखकों चूर्णित करै और पद्मक आदि गणके हिमकों पीवै। व्यधप्रदेशसें अनंतर उसी शिराकों वींधै अथवा शीघ्रही शिराके मुखकों गरम शलाई दग्ध करै। शेषसहित रक्त धारण करना। रक्तकों अत्यंत निकासै नहीं। शेष रक्तकों शींग आदिसें हरै अथवा साफ करै।

(३)मर्महीने यथासन्नप्रदेशे व्यधयेच्छिराम्।
नतूनषोडशातीतसप्तत्यब्दस्रुतासृजाम् ॥ २० ॥
अस्निग्धास्वेदितात्यर्थस्वेदितानिलरोगिणाम्।
गर्भिणीसूतिकाजीर्णपित्तास्रश्वासकासिनाम् २१
अतिसारोदरच्छर्दिपाण्डुसर्वाङ्गशोषिणाम्।
स्नेहपीते प्रयुक्तेषु तथा पञ्चसु कर्मसु ॥ २२ ॥
नायन्त्रितां शिरां विध्येन्न तिर्यङ्नाप्यनुत्थिताम्
नातिशीतोष्णवाताभ्रेष्वन्यत्रात्ययिकाद्गदात् २३

नात्युष्णशीतं लघुदीपनीयं
रक्तेऽपनीते हितमन्नपानम्।
तदा शरीरं ह्यनवस्थितासृक्
वह्निर्विशेषेण च रक्षणीयः ॥ २४ ॥
नरो हिताहारविहारसेवी
मासं भवेदाबललाभतो वा।
प्रसन्नवर्णेन्द्रियमिन्द्रियार्था-
निच्छन्तमव्याहतशक्तिवेगम्।
सुखान्वितं पुष्टिबलोपपन्नं
विशुद्धरक्तं पुरुषं वदन्ति ॥ २५ ॥

इति शिराव्यधाधिकारः।

(३ विंधनस्थानानि) मर्मसें हीन समीप प्रदेशमें शिराकों वींधे । सोलह वर्षनीचे और सत्तरवर्षसें ऊपर उमरवाले झिरता हुआ रक्तवाले नहीं स्निग्ध हुये नहीं स्वेदित हुये अत्यंत स्वेदित हुये वातरोगवाले गर्भिणी सूतिका अजीर्णवाले रक्तपित्तवाले श्वास खांसीवाले अतिसारी और उदररोग छर्दि पांडु सर्वांगशोष इन रोगोंवाले स्नेहपीये पंचकर्म प्रयुक्त किये इन्होंकी शिराकों और नहीं यंत्रित करी तथा तिरछी और नहीं उत्थित करी ऐसी शिराकों नहीं वींधे । अत्यंत शीत अत्यंत गरम वात वादल ऐसे समयमें महाअसाध्य रोगके विना शिराकों । नहीं वींधे । रक्त निकसे पीछे न अत्यंत गरम और न अत्यंत शीतल हो हलका और दीपन करने योग्य ऐसा अन्नपान हित है । तब अनवस्थित रक्तवाला शरीर और अग्नि विशेष करकै रक्षाके योग्य है । हित आहार और विहारकों सेवनेवाला मनुष्य एक महीनातक अथवा बलकी प्राप्ति होनेतक रहै । प्रसन्न वर्ण प्रसन्न इंद्रियोंके अर्थ इन्होंकों इच्छित करता हुआ नहीं हत हुआ शक्ति वेगवाला सुखी पुष्टि और बलसें अन्वित ऐसा शुद्ध पुरुष कहताहै ।

इति चक्रदत्तभाषाटीकायां शिराव्यधाधिकारः ।

अथ सुस्थाधिकारः ७८

अब सुस्थका अधिकार कहतेहैं ।

(१)ब्राह्मे मुहूर्ते उत्तिष्ठेत्सुस्थो रक्षार्थमायुषः ।
शरीरचिन्तां निर्वर्त्य कृतशौचविधिस्ततः ॥ १ ॥
प्रातर्भुक्त्वा च मृद्वग्रं कषायकटुतिक्तकम् ।
भक्षयेद्दन्तपवनं दन्तमांसान्यबाधयन् ॥ २ ॥
नाद्यादजीर्णवमथुश्वासकासज्वरार्दितः ।
तृष्णास्यपाकहृन्नेत्रशिरःकर्णामयी च तत् ।
सौवीरमञ्जनं नित्यं हितमक्ष्णोः प्रयोजयेत् ॥३ ॥
सप्तरात्रेऽष्टरात्रे वा स्रावणार्थं रसाञ्जनम् ।
ततो नावनगण्डूषधूमताम्बूलभाग्भवेत् ॥ ४ ॥
ताम्बूलं क्षतपित्तास्त्ररूक्षोत्कुपितचक्षुषाम् ।
विषमूर्च्छामदार्तानामपथ्यं चापि शोषिणाम् ५

(१ दिनचारविधिः) सुखी पुरुष अपनी रक्षाके लिये ब्राह्ममुहूर्त अर्थात् चार घडी अवशेषरात्रमैं ऊठै । शरीरकी चितासें निवृत्त होकै शौचविधि अर्थात् मलत्याग आदिकों करै । प्रातःकालमें कोमल अग्रभागवाला कसैला चर्चरा और कडुवा ऐसा दंतधावनकों दंतके मांसोंकों नहीं पीडा देता हुआ चावकै करै । अजीर्ण छर्दि श्वास खांसी ज्वर तृषा मुखपाक हृद्रोग नेत्ररोग शिरोरोग कर्णरोग इन्होंवाला दंतून नहीं करै। सुरमाके अंजनकों नित्य प्रति नेत्रोंमें प्रयुक्त करै तो हित है । सात रात्रिमें अथवा आठरात्रिमें नेत्रकों झिरानेके लिये रसांजन घालै । पीछे नस्य कुल्ले धूम नागपान इन्होंकों सेवै । क्षती पित्तरक्ती रुक्ष उत्कुपितनेत्रवाला विष मूर्च्छा मदसें पीडित और शोषी इन्होंकों नागरपान अपथ्य है ।

(२)अभ्यङ्गमाचरेन्नित्यं सजराश्रमवातहा ।
शिरःश्रवणपादेषु तं विशेषेण शीलयेत् ॥ ६ ॥
बाह्याभ्यङ्गः कफग्रस्तकृतसंशुद्ध्यजीर्णिभिः ।
शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धनी ॥ ७ ॥
देहव्यायामसंख्याता मात्रया तां समाचरेत् ।
वातपित्तामयी बालो वृद्धोऽजीर्णी च तां त्यजेत्
उद्वर्तनं तथा कार्यं ततः स्नानं समाचरेत् ।
उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेको बलावहः ॥ ९ ॥
तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलकृत् केशचक्षुषोः ।
स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ॥ १० ॥
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ।
नीचरोमनखश्मश्रुर्निर्मलाङ्घ्रिमलायनः ॥ ११ ॥
स्नानशीलः ससुरभिः सुवेषो निर्मलाम्बरः ।
धारयेत्सततं रत्नं सिद्धमन्त्रमहौषधीः ॥ १२ ॥

(२ अभ्यंगादि) अभ्यंगकों नित्यप्रति सेवै बुढापा और परिश्रमकों नाशताहै । और शिर कान पैर इन्होंमें अभ्यंगकों विशेषकरकै सेवै । कफसें ग्रस्त शुद्धि किया हुआ और अजीर्णवाला इन्होंनें बाहिर अभ्यंग करना हित है । शरीरकी जो चेष्टा है वही चेष्टा स्थिर अर्थवाली बलकों बढातीहै । देहके कसरतकी संख्याकी मात्रासें उस चेष्टाकों आचरित करै । वातपित्तरोगी बालक वृद्ध अजीर्णवाला उसकों त्यागै । उवटना मलकै पीछे स्नान करना उचित है । गरम पानीसें नीचाके शरीरका परिषेक करना बलकों देता है । गरम पानीसें शिरकों सेकना वाल और नेत्रके बलकों हरताहै । लकवा वात नेत्ररोग कर्णरोग अतिसार इन रोगवालोंमें अफारावाला पीनसवाला अजीर्णवाला भोजनकिये हुये इन्होंमें स्नान वर्जित है । रोम नख मूंछ इन्होंकों कटाये रक्खै । निर्मल पैर

रक्खै। निर्मल स्थान रक्खै स्नान करता रहै सुगंधसहित रहै। सुंदर वेष धारण करै निर्मल वस्त्र धारण रक्खै। रत्न सिद्धमंत्र और महौषधी इन्होंकों निरंतर धारण रक्खै।

(३)सातपत्रपदत्राणो विचरेद्युगमात्रदृक्।
निशि चात्ययिके कार्ये दण्डी मौनी सहायवान्॥
जीर्णे हितं मितं चाद्यान्न वेगान्धारयेद्बलात्।
न वेगितोऽन्यकार्यः स्यान्नाजित्वासाध्यमामयम्
दशधा पापकर्माणि कायवाङ्मानसैस्त्यजेत्।
काले हितं मितं ब्रूयादविसंवादि पेशलम्॥१५॥
आत्मवत्सततं पश्येदपि कीटपिपीलिकाम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥१६॥
नक्तंदिनानि मे यान्ति कथंभूतस्य संप्रति।
दुःखभाक् न भवत्येवं नित्यं सन्निहितस्मृतिः१७॥

दिनाचारविधिः।

(३ गमनोपाकरणानि) छतरी और जूतीजोडाकों धारण रक्खै। दृष्टिसें देखता हुआ विचरै। रात्रिमें आवश्यक कार्य हो तो दंड धारण करकै मौनी हुआ और सहायवाला होकै विचरै। जीर्ण होनेपर हित और प्रमाणितकों खावै। बलसें वेगोंकों धारै नहीं। वेगवाला होकै दूसरा कार्य करै नहीं। साध्य रोगकोंभी नहीं जीतकै दूसरा कार्य करै नहीं। दशप्रकारके पापकर्मोंकों शरीर वाणी मन इन्होंसें त्यागै। समयमें हित और प्रमाणितकों बोलै। संवादसहित और सुंदर वचन बोलै नहीं। कीडा कीडी आदिकोंभी अपने समान देखै। अपने प्रतिकूल दूसरोंकों नहीं आचरित करै कैसे हुया मुझकों दिनराति प्राप्त होंगे शीघ्र दुःखकों भजनेवाला नहीं हूं ऐसे स्मृतिकों याद रक्खै।

(४)मासैर्द्विसंख्यैर्माघाद्यैः क्रमात्षडृतवः स्मृताः।
बलिनः शीतसंरोधाद्धेमन्ते प्रबलोऽनलः॥१८॥
सेवेतातो हिमे स्निग्धस्वाद्वम्ललवणान् रसान्।
गोधूमपिष्टमांसेक्षुक्षीरोत्थविकृतीः सुराम्॥१९॥
नवमन्नं वसां तैलं शौचकार्ये सुखोदकम्।
युक्त्यार्ककिरणान् स्वेदं पादत्राणं च सर्वदा २०
प्रावाराजिनकौशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम्।
उष्णस्वभावैर्लघुभिः प्रावृतः शयनं भजेत् २१
अङ्गारतापसंतप्तगर्भभूवेश्मनि प्रियाम्।
पीवरोरुस्तनश्रोणीमालिङ्ग्यागुरुचर्चिताम् २२
अयमेव विधिः कार्यः शिशिरेऽपि विशेषतः।
तदा हि शीतमाध्वीकं रौक्ष्यं चादनकालजम् २३
कफश्चितो हि शिशिरे वसन्तेऽर्कांशुतापितः।
हत्वाग्निं कुरुते रोगांस्ततस्तत्र प्रयोजयेत्॥२४॥
तीक्ष्णं वमननस्यादिकवडग्रहमञ्जनम्।
व्यायामोद्वर्तनं धूमं शौचकार्ये सुखोदकम् २५
स्नातोऽनुलिप्तः कर्पूरचन्दनागुरुकुङ्कुमैः।
पुराणयवगोधूमक्षौद्रजाङ्गलशूल्यभुक्।
प्रपिबेदासवारिष्टसीधुमाध्वीकमाधवान्॥ २६॥

(४ ऋतुचर्या) माघआदि दोदो महीनोंकरकै क्रमसें छह ऋतु कहे हैं। बलवालाके शीतके संरोधसें हेमंतऋतुमें अग्नि प्रबल होताहै। इसवास्ते शीतकालमें स्निग्ध स्वादु खट्टा और सलोने रसोंकों सेवै। गेहूंका चून मांस ईख दूधकी विकृति मदिरा नवीन अन्न वसा तेल शौच कर्ममें अल्प गरम किया जल युक्तिसें सूर्यके किरण पसीना और जूतीजोडा इन्होंकों सब कालमें सेवै। प्रावार मृगछाला रेशमी वस्त्र मिहीन जेवरी डोरी आदिसे आस्तृत करी शाय्यपर गरम स्वभाववाले और हलके वस्त्रोंकों ओढकै शयन करै। कोईलोंके अग्निकी तपाईसें गरम हुई पृथिवीवाले मकानमें पुष्टरूप जांघ चूची और कटीवाली और अगरसें चर्चित करी स्त्रीकों सेवै। शिशिर ऋतुमेंभी यही विधि विशेषकरके करना तबही अधिक शीत होताहै। भोजनकालमें रूषापन होताहै। शिशिर ऋतुमें कफ संचित होताहै। वसंतमें सूर्यके किरणोंसें तापित हो अग्निकों नष्ट कर रोगोंकों करताहै। इसवास्तै तहां तीक्ष्ण वमन और नस्य आदि कवलग्रह अंजन इन्होंकों प्रयुक्त करै। कसरत उवटना धूमा और शौचकर्ममें अल्प गरम पानी लेना। स्नान करकै कपूर चंदन अगर और केसरसें अनुलेप करै। पुराने जव गेहूं शहद जांगलदेशके जीवका मांस शूलसें संस्कृत किया मांस इन्होंकों खावै। आसव अरिष्ट सीधु माध्वीक माधव इन्होंकों पीवै।

(५)वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणां काननानां च यौवनम्
गुरूष्णस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नं च वर्जयेत्॥२७॥
मयूखैर्जगतः स्नेहं ग्रीष्मे पेपीयते रविः।
स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं तदा हितम् २८
शीतं सशर्करं मन्थं जाङ्गलान्मृगपक्षिणः।
घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन्ग्रीष्मे न सीदति २९

मद्यमल्पं न वा पेयमथवा सुबहूदकम् ।
मध्याह्ने चन्दनार्द्राङ्गः स्वप्याद्धारागृहे निशि ३०
निशाकरकराकीर्णे प्रवाते सौधमस्तके ।
निवृत्तकामो व्यजनैः पाणिस्पर्शैः सचन्दनैः ३१
सेव्यमानो भजेतास्यां मुक्तामणिविभूषितः ।
लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामं चात्र वर्जयेत् ३२
भूवाष्पान्मेघनिस्यन्दात्पाकादम्लाज्जलस्य च ।
वर्षास्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः ॥३३॥
भजेत्साधारणं सर्वमूष्मणस्तेजनं च यत् ।
आस्थापनं शुद्धतनुर्जीर्णं धान्यं कृतान्रसान् ३४
जाङ्गलं पिशितं यूषान्मध्वरिष्टं चिरन्तनम् ।
दिव्यं कौपं शृतं वाम्भो भोजनं त्वतिदुर्दिने ३५
व्यक्ताम्ललवणस्नेहं संशुष्कं क्षौद्रवल्लघु ।
नदीजलोदमन्थाहःस्वप्नायासातपांस्त्यजेत् ३६
वर्षाशीतोचिताङ्गानां सहसैवार्करश्मिभिः ।
तप्तानामाचितं पित्तं प्रायः शरदि कुप्यति ३७
तज्जयाय घृतं तिक्तं विरेको रक्तमोक्षणम् ।
तिक्तस्वादुकषायं च क्षुधितोऽन्नं भजेल्लघु ३८

(५ वसंतादौ विहारादि) वसंतऋतुमें स्त्रियोंका और बगीचोंके यौवनका अनुभव करै । भारी गरम चिकना और मधुर भोजन और दिनका शयन इन्होंकों वर्जित करै । ग्रीष्मऋतुमें सूर्य किरणोंसें सारके स्नेहकों पीता है । तब स्वादु शीतल द्रव चिकना ऐसा अन्नपान हितहै । शीतल खांडसहित मंथ जांगलदेशके मृग और पक्षी घृत दूध शालिचावल इन्होंकों सेवता हुआ ग्रीष्म ऋतुमें नहीं दुःखित होता है । अल्प मदिरा पीनी अथवा नहीं पीनी । अथवा बहुत पानी मिलाय पीनी । मध्यान्हमें चंदनसें अंगोंकों लेपित कर जलका फुहारा जहां हो ऐसे स्थानमें सोवै । रात्रिमें चंद्रमाकी किरणोंसें युत और पवन लगै और उपरकी हवेली ऐसे मकानमें सोवै । कामदेवकों त्यागकर चंदनसहित पंखोंकी पवनसें सेवित और मोती मणिसें भूषित हुआ होकै इस ग्रीष्म ऋतुमें सोवै । नमक चर्चरा गरम ऐसे रस और कसरतकों यहां वर्जे । पृथिवीकी भांफसें मेघके वर्षनेंसें पाकसें पानीके खट्टेपनसें वर्षा ऋतुमें अग्नि क्षीण होकै वात आदि कुपित होतेहैं । ऊष्माकों तेजकारक जो संपूर्ण साधारण हो उसको सेवै । आस्थापन पुराणा अन्न किये रस जांगलदेशके जीवका मांस यूष मधु बहुत पुराना अरिष्ट आकाशका पानी पकाया कुवाका पानी अत्यंत दुर्दिनमें भोजन खट्टा नमक स्नेह सूखा पदार्थ शहदके तरह हलका नदीका पानी मंथ दिनका सोना परिश्रम और घाम इन्होंको त्यागै । वर्षा ऋतुमें शीतल पदार्थसें युत हुये अंगोंवालोंकै शीघ्रही सूर्यके किरणोंसें तप्तहुओंकै विशेषकरकै शरदऋतुमें पित्त कुपित होताहै । पित्तकों जीतनेके लिये घृत कडुवा ओषध जुलाब रक्त निकासना कडुवा स्वादु कसैला पदार्थ और हलका अन्नकों सेवै ।

(६)इक्षवः शालयो मुद्गाः सरोऽम्भः क्वथितं पयः
शरद्येतानि पथ्यानि प्रदोषे चेन्दुरश्मयः ॥३९॥
शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च
तुषारक्षारसौहित्यदधितैलरसातपान् ॥ ४० ॥
तीक्ष्णमद्यदिवास्वप्नपुरोवातातपांस्त्यजेत् ।
शीते वर्षासु चाद्यांस्त्रीन्वसन्तेऽन्त्यान्रसान्भजेत्
स्वादून्निदाघे शरदि स्वादुतिक्तकषायकान् ।
शरद्वसन्तयो रूक्षं शीतं घर्मघनान्तयोः॥ ४२ ॥
अन्नपानं समासेन विपरीतमतोऽन्यथा ।
नित्यं सर्वरसाभ्यासः स्वस्वाधिक्यमृतावृतौ ४३
ऋतोराद्यन्तसप्ताहावृतुसन्धिरिति स्मृतः ।
तत्र पूर्वो विधिस्त्याज्यः सेवनीयोऽपरः क्रमः ४४
इत्युक्तमृतुसात्म्यं यच्चेष्टाहारव्यपाश्रयम् ।
उपशेते यदौचित्यादोकसात्म्यं तदुच्यते ॥४५॥
देशानामामयानां च विपरीतं गुणं गुणैः ।
सात्म्यमिच्छन्ति सात्मज्ञाश्चेष्टितं चाद्यमेव च४६
तच्च नित्यं प्रयुञ्जीत स्वास्थ्यं येनानुवर्तते ।
अजातानां विकाराणामनुत्पत्तिकरं च यत् ४७
नगरी नगरस्येव रथस्येव रथी यथा ।
स्वशरीरस्य मेधावी कृत्येष्ववहितो भवेत् ४८

इति सुस्थाधिकारः ।

(६ शरदादौ सेवनीयम्) ईख शालिचावल मूंग तलावका पानी क्वथित किया दूध और प्रदोषमें चंद्रमाके किरण शरदऋतुमें ये पथ्य हैं । शरदमें उपजे पुष्पोंकी माला मलरहित वस्त्र तुषार खार तृप्तिकारक अन्न दही तेल रस घाम इन्होंकों त्यागै । तीक्ष्ण मदिरा दिनका शयन पूर्वका वात घाम इन्होंकों त्यागै । शीतकालमें और

वर्षामें कसैला मधुर नमक इन रसोंकों सेवै । वसंतमें कडुवा चर्चरा खट्टा इन रसोंकों सेवै । ग्रीष्मऋतुमें और शरदऋतुमें स्वादु कडुवा कसैला इन रसोंकों सेवै । शरद और वसंतमें रूक्ष रसकों ग्रीष्म और शरदमें शीतल रसकों सेवै । विस्तारसें अन्न पान यह है इस्सें अन्य तरह अपथ्य है । नित्यप्रति सब रसोंका अभ्यास करै । ऋतुऋतुमें ऋतु ऋतुके योग्य रसकी वृद्धि करै । ऋतुका आदिअंतके सात दिनसें ऋतुसंधि कहीहै । तहां पूर्वविधि त्यागना और अपर विधि सेवना योग्य है । ऋतुसात्म्य यह कहाहै । जो इष्ट आहार आदिका आश्रयकों देखता रहै । देशोंका और रोगोंका गुणोंसें गुण विपरीत है । सात्म्य अर्थात् प्रकृतिकों जाननेवाले सात्म्यकी इच्छा करते हैं । चेष्टितकी और आयकी इच्छा करतेहैं । जिसकरकै सात्म्य प्राप्त हो वह पदार्थ नित्य प्रयुक्त करै नहीं । उपजे विकारोंकों जो नहीं उपजावै वह पदार्थ प्रयुक्त करै । नगरकों नगरवालाकी तरह जैसे रथकों रथी वैसा अपना शरीरकों जान बुद्धिमान् कृत्योंमें सावधान रहै ।

(७)गौडाधिनाथरसवत्यधिकारिपात्र-
नारायणस्य तनयः सुनयोऽन्तरङ्गात् ।
भानोरनुप्रथितलोध्रवलीकुलीनः
श्रीचक्रदत्त इह कर्तृपदाधिकारी ॥ १ ॥

यः सिद्धयोगलिखिताधिकसिद्धयोगा-
नत्रैव निक्षिपति केवलमुद्धरेद्वा ।
भट्टत्रयत्रिपथवेदविदा जनेन
दत्तः पतेत्सपदि मूर्धनि तस्य शापः ॥ २ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

(७ ग्रंथकारप्रशंसा) गौडवंशमें होनेवाला अधिकारियोंका पात्र और सुंदर नम्ररूप और नारायणका पुत्र और उत्तम कुलमें जन्मा ऐसा चक्रदत्त नामसें विख्यात इसग्रंथका कर्त्ता अर्थात् करनेवाला है । जो सिद्धयोग और असिद्ध योगोंकों इसमें लिखै अथवा इसमाहसें निकासै उस मनुष्यके शिरपर वेदपाठी मनुष्योंका दिया शाप शीघ्र पडै ।

इति वेरीनिवासि गौडवंशावतसबुधशिवसहायपुत्ररविदत्त-
शास्त्रिराजवैद्यविरचिताचक्रदत्तसंहितार्थप्रकाशिका
भाषाटीका समाप्ता ।

वसुवेदांकभूम्यब्दे १९४८ कार्तिके मासि धीमता ।
रविदत्तेन वैद्येन भाषाटीका सुकल्पिता ॥ १ ॥
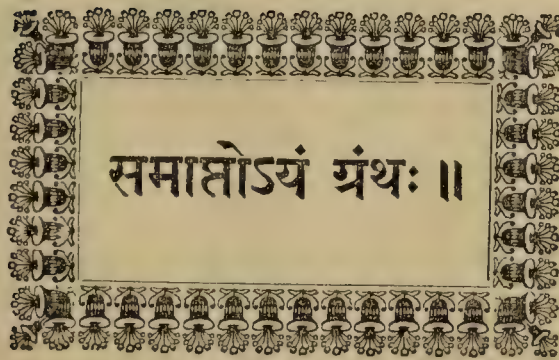
वैद्यकग्रंथाः

नाम	कि०	डा० म०
भावप्रकाशटिप्पणसहित	७	·।।।·
वाग्भट्ट सटीक	८	१
वीरसिंहावलोकन	१।।।	·।·
अनुपाननाडीज्ञानतरंगिणी भाषाटीका	१	८=
बालबोधपाकावली	८=	८॥
नैनसुखभाषाटीका	८=	८॥
अमृतसागरकोशसहित भाषा	३	·।=
योगचिंतामणि	१॥	·।·
वाग्भट्ट भाषाटीका	१०	१
वङ्गसेन	६	१
शार्ङ्गधर भाषाटीका	३	·॥·
माधवनिदान हिंदुस्थानी भा० टी०	२	·।≡
वैद्यकल्पद्रुम हिंदुस्थानी भाषाटीका	९	·॥=
लोलिम्बराज भाषाटीका	१।	·।·
बृहन्निघंटरत्नाकर भा० १। २। ३ प्रत्येक भागकी	३	·।=
चिकित्साक्रमकल्पवल्ली	३	·॥·
चर्याचन्द्रोदय	२	·।·
अंजननिदान भाषाटीका	·॥·	८-
वैद्यरहस्य	२।	·।·
रसमंजरी	·॥·	८-
हरीतक्यादिनिघंट भाषाटीका	३	[illegible]

चंपूग्रंथाः

नाम	कि०	डा० म०
भारतचंपूसटीक	४	·।=
नृसिंहचंपू	·।=	८-
रामायणचंपू	·।।।·	८=
बालकृष्णचंपू	४	·॥·
भागवतचंपू	१	८=
रघुनाथविजयचंपू	·॥·	८-
भार्गवचंपू	१	८=
श्रीनिवासचंपू	·।।।·	८=

हरिप्रसाद भगीरथजी,

(मुंबई.)